TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180531
UNIVERSAL LIBRARY

पुनर्जीवन

पुनर्जीवन

[सम्पूर्ण तथा असंक्षिप्त]

तालस्ताय

प्रभात प्रकाशन

दिल्ली • मथुरा

सर्वोदय साहित्य मंदिर,
कोठी, (बसस्टेण्ड,) हैदराबाद द.

प्रकाशक :

प्रभात प्रकाशन

२०५, चावड़ी बाजार

दिल्ली

**

अनुवादक :

सूरजनारायण अग्रवाल

**

प्रथम संस्करण

अक्टूबर १९५९

**

सर्वाधिकार सुरक्षित

**

मुद्रक :

सुभाष प्रिंटिन्ग प्रेस

मथुरा

**

मूल्य :

दस रुपया

आमुख

यह 'पुनर्जीवन' उस सच्ची घटना पर आधारित है जो लेखकको सन् १८८८ के लगभग सुननेको मिली और ग्यारह वर्ष के अथक परिश्रम एवं गहन अध्ययन के पश्चात् वह इस उपन्यास को प्रकाश में ला सका। प्रकाशित होने के तुरन्त बाद ही यह पुस्तक अनेक भाषाओं में अनूदित हो गई और समूचे संसार में इसकी बड़ी माँग हुई। महान् लेखक और उसकी लोकप्रियता का क्या यह पर्याप्त प्रमाण नहीं ?

इंगलैण्ड में, हाँ, केवल इंगलैण्ड में ही इस पुस्तक को एक 'अनैतिक' पुस्तक ठहराया गया और इसे लेकर बड़ा तूफान मचा। महात्मा ताल्स्ताय ने इस कटु आलोचना का जो उत्तर दिया, साहित्य-संसार की सहिष्णुता में उल्लेखनीय है। उन्होंने एक आलोचक को उत्तर दिया था, "हम लोगों का न्याय-विचार हमारी अन्तरात्मा और परमेश्वर द्वारा हो और हमारे कार्यों को सामने न रख कर हमारे उद्देश्यों को ही सामने रखा जाय। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक के लिखने में मेरा उद्देश्य बुरा नहीं था।"

यह उपन्यास अपराधियों, न्याय-विचार एवं अन्य सम्बन्धित समस्याओं को लेकर इस गति से बढ़ता है कि पाठक के हृदय पर उसकी छाप गहरी—अति गहरी होती चलती है। नायक नेखलूदोव जो एक प्रतिष्ठित, संभ्रान्त और धनी व्यक्ति है, अपने यौवनकाल में किए पाप का प्रायश्चित कर विष देकर हत्या करने वाली माशलोवा के साथ एक मानवीय जीवन बिता कर अपनी अन्तरात्मा के न्याय का पालन करने को कटिबद्ध होता है और इसके लिए वह सारे वैभव, सुख, ऐश्वर्य को भी लात मार कर अथक परिश्रम से माशलोवा की पीड़ित आत्मा को सुखी करना चाहता है। किन्तु उसके प्रेम-रस में अगम्य गहराई तक डूबी कलंकित वेश्या माशलोवा उसके जीवन को नष्ट नहीं करने देना चाहती और उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। वह इससे दुखी एवं लज्जित अवश्य हुआ लेकिन परेशान नहीं। उसे अब एक दूसरा

कार्य और करना था—भयानक कुरीतियों से पीड़ित मानव की मुक्ति, स्वर्ग की राजधानी पृथ्वी पर स्थापित करने को भगवान के राज्य के लिए पुण्य-मार्ग की खोज। कार्य आसान न होते हुए भी नेखलूदोव के जीवन का यही उद्देश्य बन गया।

एक दो ही नहीं कितने ही प्रसंग ऐसे हैं इस पुस्तक में जो साहित्य की दृष्टि से श्रेष्ठतम कहे जा सकें—जो जन-जीवन को एक सत्य-मार्ग पर बढ़ने को निरन्तर प्रेरणा देते रहेंगे। इसकी कथा-वस्तु जहाँ चित्रकारों, नाटककारों तथा लेखकों को प्रचुर मात्रा में मानसिक खाद्य-सामग्री देती है, वहीं हर जन-साधारण भी अपने जीवन की यथार्थ झाँकियों का सजीव चित्रण देखता है।

अत्युक्ति नहीं यदि कहा जाय कि उपन्यास की ऐसी पृष्ठ-भूमि पर ऐसी अख्यायिका खड़ी करने वाला लेखक भारतीय संस्कारों से प्रभावित है और कदाचित् यह भी सत्य हो कि वह पूर्वजन्म का कोई महान् भारतीय ऋषि ही हो।

इस महान् रूसी लेखक का दृष्टिकोण सदा आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रहा। मानव-हृदय और मस्तिष्क एवं परिस्थितियों का विश्लेषण कर सत्य का दर्शन कराना उसकी विशेषता है। पाठक के जीवन पर उसकी कृतियों का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। महात्मा गान्धी के शब्दों में यह महान् कलाकार अपने युग का सत्य और अहिंसा का एक प्रवर्त्तक था।

प्रस्तुत पुस्तक के अनुवाद करने में लेखक के मूलविचारों और उसकी अपनी शैली को ही अपनाने तथा उसके अत्यधिक निकट रहने का प्रयास किया गया है। इस अनुवाद की एक विशेषता यह भी है कि यह एकदम सम्पूर्ण और असंक्षिप्त है। आशा है इस विश्वविश्रुत लेखक की अन्य कृतियों की भाँति हिन्दी-भाषा-भाषी पाठक इससे भी लाभान्वित होंगे।

—प्रकाशक

पुनर्जीवन

'तब पीटर उसके पास आकर बोला, प्रभु, मेरा भाई मेरे साथ कितनी बार अन्याय करेगा और मैं कब तक उसे क्षमा करता रहूँगा ? सात बार तक ?'

'ईसू बोले, मैं कहता हूँ केवल तेरे साथ ही नहीं और सात बार ही नहीं, किंतु सात के सत्तर गुने तक।'

× × ×

'और तू अपने भाई की आँख के धूलि-कण को ही क्यों देखता है ? क्यों नहीं उस लट्ठे के बारे में सोचता जो कि तेरी अपनी आँख में विद्यमान है ?'

× × ×

'तुम लोगों में से जो व्यक्ति निष्पाप है पहले उसको ही उस स्त्री की ओर पत्थर फेंकने दो।'

× × ×

'शिष्य अपने स्वामी से ऊँचा नहीं हो सकता; किन्तु पूर्णता प्राप्त करने के पश्चात् वह अपना स्वामी अवश्य हो सकता है।'

१

घने रूप से बसे हुए उन लाखों व्यक्तियों ने यद्यपि उस छोटे-से भूभाग को विरूप करने की भरसक चेष्टा की—पत्थरों से भूमि को पाट कर मार्ग बना दिए, उसके चौड़े भाग से उगी घास खोद डाली, वृक्षों की शाखाएँ, टहनियाँ काट डालीं, वनस्पति को जड़-मूल से नष्ट कर दिया, पशु-पक्षियों को भगा दिया, वातावरण में कोयले और तेल के धुँए भर दिए—फिर भी बसंत तो बसंत ही था, लाख नगर ही क्यों न हो।

धूप में उष्णता थी और वायु में सुगंधि। फर्श पाटने वाले पत्थरों की संधियों में तथा दोनों ओर से बड़े वृक्षों से घिरी हुई सड़कों के लॉन की पतली पगडण्डियों में घास फिर वहीं हरी-भरी हो उठी जहाँकि वह जड़ से खोदी न जा सकी थी। भोजपत्र, चिनार, बर्डचेरी* के वृक्षों में चिकनी, सुगंधित पत्तियाँ प्रस्फुटित होने लगीं। चकोतरे के वृक्ष में नई कोपलें आने लग गईं। कौओं, गौरैयों तथा कबूतरों ने वातावरण को बसंत के आनन्द से भर दिया और लग पड़े वे अपने घोंसले निर्माण करने। धूप की उष्णता से प्रफुल्ल हो मक्खियाँ दीवालों पर भनभनाने लगीं। पौधे, कीड़े, चिड़ियाँ, बच्चे सब ही प्रसन्न हो रहे थे किन्तु मनुष्यों

* विलायती वृक्ष जिसका फल लाल होता है।

ने—प्रौढ़ स्त्री-पुरुषों ने—दूसरों को तथा स्वयं को ठगना एवं कष्ट देना नहीं त्यागा। उन लोगों को बसंत के प्रभात का तथा सुन्दरता का—उस संसार की सुन्दरता का कोई पावित्र्य अथवा महत्त्व नहीं था जो संसार के प्राणिमात्र को लाभ पहुंचाने के लिए भगवान् ने बनाया है। उनके लिए यदि किसी बात का महत्त्व था तो इस बात का, कि एक दूसरे के ऊपर अपना प्रभुत्त्व किस युक्ति से जमाया जाय।

इसी प्रकार, सरकारी बन्दीगृह में भी इस बात को वास्तव में कोई पवित्रता अथवा महत्ता नहीं दी गई कि यह बसंत की प्रसन्नता तथा दया मनुष्यों एवं पशुओं को प्रदान की गई है। किन्तु एक दिन पहले एक रजिस्टर्ड नोटिस प्राप्त हुआ जिस पर मुहर लगी हुई थी। २८ अप्रेल को ६ बजे सुबह न्यायालय में तीन बन्दी उपस्थित करने थे—एक पुरुष तथा दो स्त्रियाँ। स्त्रियों में से एक थी मुख्य अपराधिनी तथा उसका प्रबन्ध अलग था। इसलिए आज २८ अप्रेल को सुबह ८ बजे दुर्गन्ध एवं अन्धकार से युक्त कारागार के जनाने बरामदे में चीफ वार्डर आया। उसके पीछे थी एक स्त्री भूरे घुँघराले बालों वाली जिसके चेहरे पर दुःख की झलक थी। उसकी बर्दी की आस्तीनों पर सुनहरी खीनखाप की गोट थी तथा उसकी बैल्ट नीली थी।

वार्डर ने लोहे का ताला खड़काया, कारा की कोठरी का द्वार खोला जिसके खुलते ही अन्दर से बरामदे से भी अधिक दुर्गंधित वायु का झोंका आया तथा उसने द्वार पर से पुकारा "माशलोवा! न्यायालय चलने के लिए तैयार हो जाओ।" और द्वार बन्द कर दिया।

बाहर स्वच्छ वायु बह रही थी खेतों और मैदानों को स्वास्थ्य एवं सजीवता प्रदान करने वाली वायु मंद पवन के साथ बन्दीगृह के आँगन में भी आ पहुंची थी। किन्तु बराम्दे की कीटाणुयुक्त वायु मे मल, कोलतार तथा सड़ान की दुर्गन्ध थी एवं जो कोई वहाँ पहिली ही बार आ फँसता वही उस वायु के कारण व्यग्र एवं उदास हो जाता। स्त्री वार्डर यद्यपि यहाँ रहते-रहते इस वायुमण्डल की अभ्यस्त हो चुकी थी किन्तु फिर भी बाहर से आने के पश्चात् जब वह बराम्दे में प्रविष्ट हुई तब उसे निद्रा एवं थकान की-सी भावना ने घेर लिया।

हलचल, स्त्रियोचित स्वर तथा फर्श पर नंगे पाँवों चलने की ध्वनि बंदीगृह की कोठरी से आ रही थी।

"अच्छा! शीघ्रता करो।" वार्डर ने पुकारा। उसके पुकारने के दो

मिनट बाद ही मध्यम कद एवं उन्नत उरोजों वाली एक युवती द्वार से निकली तथा त्वरित गति से चलकर उसके पास आ खड़ी हुई। वह सफेद कुरती, जाकिट तथा उनके ऊपर एक भूरा-सा लबादा पहिने हुए थी। उसके पाँवों में लिनन के मोजे और जेली जूते थे। अपने काले बालों के छल्ले माथे पर निकाल कर उनके ऊपर उसने सफेद रूमाल बाँधा हुआ था। युवती के मुख का रङ्ग इतना सफेद था जितना कि वहुत समय से बंदीगृह में बंद लोगों का हो जाया करता है। उसका यह रङ्ग तहखाने में रखे आलुओं के अंकुर का स्मरण दिलाता था। उसके चौड़े हाथों तथा उसकी भरी गर्दन का रङ्ग, जो कि उसके खुले गले के लबादे में से दिखलाई देती थी, वैसा ही था। उसके चमकदार काले नेत्रों, जिनमें से एक कुछ तिरछा था, तथा उसके पीले पड़े हुए चेहरे में आश्चर्यजनक अन्तर था। अपना भरा वक्ष उभार कर वह बिल्कुल सीधी तनकर चलती हुई जेलर के पास बरामदे में आई थी तथा उसकी प्रत्येक आज्ञा के पालन के लिए तत्पर हो अपना सिर कुछ पीछे की ओर कर सीधी उसके नेत्रों में निहार रही थी।

वार्डर द्वार में ताला लगाने जा ही रहा था कि कठोर तथा झुर्रीदार मुख वाली एक वृद्धा अन्दर से द्वार में आकर माशलोवा से कुछ कहने लगी, किन्तु उसके सिर को किवाड़ों से धक्का दे वार्डर ने द्वार बंद कर दिया। कोठरी में से एक स्त्री की हँसी की खिलखिलाहट सुनाई दी और माशलोवा उधर ही मुड़ एक छोटी-सी दरार में से मुस्कुराई। किवाड़ों की उस झिरी पर वृद्धा ने अपना मुँह रखा तथा रूखे स्वर में बोली—

"ध्यान रखो, जब तुमसे प्रश्न किए जाँय तो अपनी एक ही बात पर दृढ़ रहना और उसी को दोहराती रहना। इधर-उधर की बातें मत करना।"

"खैर! इससे भी क्या बदतर होगा। फिर भी मैं चाहती हूँ कि इधर या उधर कुछ-न-कुछ निर्णय तो हो।"

"निःसन्देह! निर्णय जो भी होगा, एक होगा।" चीफ वार्डर ने परिहास-कुशल की-सी श्रेष्ठता प्रदर्शित करते हुए कहा "अच्छा! अब चलो।"

वृद्धा दरार के पास से हट गई और माशलोवा भी बरामदे के मध्य भाग की ओर बढ़ दी। चीफ वार्डर उससे भी अधिक गंदी कोलाहलपूर्ण पुरुष बंदियों से युक्त कारागार की कोठरियों के सामने से निकला। दरवाजों में से

सैकड़ों दृष्टियाँ उन लोगों पर जमी हुई थीं। पत्थर की सीढ़ियों से नीचे उतर कर वे कार्यालय में घुसे। वहाँ पर माशलोवा को ले जाने के लिए दो सिपाही पहिले से ही प्रतीक्षा कर रहे थे। वहाँ बैठे लिपिक ने सिपाहियों को तम्बाकू की दुर्गन्ध से भरा एक कागज़ दिया, और बंदिनी की ओर इङ्गित कर बोला—"इसे ले जाओ।"

एक सिपाही, निज़नी नोवगोरद[1] का किसान था और उसके लाल मुँह पर चेचक के निशान थे। उसने अपने कोट की आस्तीन में कागज रखा और बंदिनी की ओर एक दृष्टि डालने के पश्चात् अपने साथी सिपाही की ओर कटाक्ष किया। उसका साथी चुवाश[2] था जिसके गालों की हड्डियाँ बहुत अधिक उभरी हुई थीं। तब बंदिनी और सिपाही कारागार के अहाते से प्रधान द्वार की ओर गए और फिर नगर में होते हुए पथरीली सड़क के मध्य तक।

गाड़ीवान, व्यापारी, रसोइए, मजदूर, लिपिक चलते-चलते रुक जाते और बंदिनी की ओर कौतूहल से देखते। कुछेकों ने सिर हिलाते हुए सोचा—"बुरे कर्मों के उन अकर्मों के जिन्हें हम नहीं करते—क्या परिणाम होते है।" बच्चे रुके और डाकू स्त्री की ओर भयभीत दृष्टि से देखने लगे; किन्तु यह विचार उठते ही उनका भय कम हो गया कि सिपाहियों ने उसे पकड़ कर अच्छा ही किया; अब यह अधिक हानि नहीं पहुँचा सकती। अपना कोयला बेच कर आए हुए एक किसान ने जो चाय भी पी चुका था बंदिनी के पास से निकलते हुए क्रॉस का चिह्न बनाया और उसे एक कोपेक[3] दिया। वह लज्जित हो उठी और कुछ बड़बड़ा दी।

सकड़ों दृष्टियाँ अपनी ओर लगी हुईं जानकर, बिना सिर घुमाए हुए ही उसने प्रत्येक की ओर, जो उसे घूर रहा था, तिरछी दृष्टि से देखा। इतने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित देखकर उसे प्रसन्नता हुई। कारा से कहीं अधिक स्वच्छ वायु ने भी उसे आह्लादित कर दिया था। किन्तु चलने फिरने की अभ्यस्त न रहने और बन्दीगृह के खराब जूतों के कारण उसे भौंड़े पत्थरों पर चलने में कष्ट हो रहा था। इसलिए वह अधिकाधिक आराम से चल रही थी। एक गल्ले की दूकान के सामने कुछ कबूतर अकड़ते हुए चल रहे थे;

---

१. लेनिनग्राद से दक्षिण पूर्व ११० मील पर एक छोटा नगर है।

२. रूस की परा[illegible] [illegible]।

३. नए चार पैसे के बराबर के [illegible] का सिक्का जो ज़ार के समय था।

उन्हें कोई छेड़ नहीं रहा था । दूकान के सामने से निकलते समय बंदिनी के पाँव से एक हल्के मिलेटी रङ्ग का पक्षी छू गया । पक्षी ने पर फड़फड़ाए तथा उसके कान के पास पंखों से हवा फेंकता हुआ उड़ गया । वह मुस्करा दी, किन्तु अपनी स्थिति याद आते ही उसने एक गहरी साँस ली ।

२

बंदिनी मासलोवा की जीवन-कथा बहुत ही साधारण थी ।

मासलोवा की माँ एक ग्रामीण स्त्री की अविवाहित लड़की थी जो कि अविवाहित महिलाओं के एक डेरीफार्म में नौकरी करती थी । महिलाएँ जमींदार थीं । इस अविवाहित स्त्री के भी, जैसा कि गाँव की स्त्रियों में आमतौर से होता है, प्रतिवर्ष एक बच्चा होता । अपने प्रत्येक अवांछनीय बालक के प्रति, जब उसका ठीक-ठाक बपतिस्मा[1] हो जाता, माँ असावधान हो जाती क्योंकि वह उसके कार्य में बाधा उत्पन्न करता; और वह बालक भूखा मरने के लिए विवश हो जाता । इसी प्रकार उसके पाँच बच्चे जाते रहे । उसने उन सबके बपतिस्मे कर दिए, फिर ढङ्ग से खाना नहीं खिलाया और मरने की छूट दे दी । छठा बालक भी, जिसका कि पिता जिप्सी भिखमंगा था, उसी दुर्भाग्य को प्राप्त होने वाला था कि उन कुमारी महिलाओं में से एक महिला नौकरानियों को डाँटने के लिए खेत में आ गई कि ऐसी क्रीम क्यों भेजी गई जिसमें गाय की गंध आती थी । नौजवान स्त्री गाय बाँधने के एक छप्पर के नीचे अपने सुन्दर, स्वस्थ नवजात शिशु के साथ लेटी हुई थी । वृद्ध कुमारी महिला ने नौकरानियों को बुरा-भला कहा कि उन्होने उस स्त्री को (जिसने अभी प्रसव किया था) गाय के छप्पर में लेटने क्यों दिया । वह जाने ही वाली थी कि बालक को देखकर उसे दया आ गई और उसने उस नन्हीं लड़की को अपनी धर्मपुत्री बना लिया । स्वामिनी को बच्ची पर करुणा हो आई और उसने उसकी माँ को दूध तथा थोड़ा रुपया दे दिया जिससे कि वह बच्ची को खिला-पिला सके और बच्ची जीवित रही आई । वृद्ध महिलाएँ उसे 'रक्षिता' के नाम से पुकारतीं ।

जब लड़की तीन वर्ष की हुई उसकी माँ बीमार पड़ी और मर गई, तब उन महिलाओं ने बच्ची को उसकी वृद्धा दादी से ले लिया, क्योंकि उसके लिए

---

१. ईसाई मतावलम्बियों का एक संस्कार

तो वह एक भार स्वरूप थी।

काली आँखों वाली छोटी बच्ची इतनी सुन्दर और चंचल निकली कि महिलाओं का उससे मनोविनोद होता।

उसकी धर्म माँ सोफिया इवानोव्ना के हृदय में दयालुता अधिक थी। उसकी बड़ी बहिन जिसका नाम मेरिया इवानोव्ना था कुछ रूखी थी। सोफिया इवानोव्ना लड़की को अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनाती तथा लिखाती-पढ़ाती ताकि बड़ी होकर वह संभ्रात महिला बन सके। मेरिया इवानोव्ना ने लड़की को काम में लगाने को सोचा और उसे ऐसी शिक्षा दी जिससे कि वह अच्छी नौकरानी बन सके। वह निर्दयी थी, दण्ड देती और कभी-कभी क्रोध में उस छोटी लड़की को मार भी बैठती। वह उसे कातूशा के नाम से पुकारती, जो काँटेका से कम सुन्दर लगता किन्तु यह काटका की भाँति प्रचलित नहीं था। कातूशा कपड़े सींती, कमरों को साफ करती, मूर्तियाँ वाले धातु के बक्सों पर खड़िया मिट्टी से पालिश करती और दूसरे हलके-पतले काम करती रहती। कभी-कभी वह महिलाओं के पास बैठ कर उन्हें पढ़कर भी सुनाती।

यद्यपि कई स्थानों से उसके विवाह की बातें भी चलीं किन्तु कातूशा ने विवाह नहीं किया। उसने सोचा कि किसी मजदूर की पत्नी बनकर रहना मेरे लिए बहुत कठिन है और वहाँ उसके अनुशासन में मुझे ये आराम भी नहीं मिलेंगे, क्योंकि वह आराम पसंद हो चुकी थी।

१६ वर्ष की आयु तक वह इसी भाँति रही किन्तु जब एक धनवान युवक, जो कि विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था, अपनी बुआ (इन्हीं महिलाओं) के यहाँ ठहरने आया तब कातूशा को उससे प्रेम हो गया। यद्यपि स्वयं कातूशा भी इस सत्य को स्वीकार करने का साहस नहीं कर पाती थी।

दो वर्ष बाद जब वही भतीजा रेजीमेंट जाने से पूर्व अपनी बुआ के यहाँ चार दिन ठहरा तो जाने से एक दिन पूर्व रात को उसने कातूशा का कौमार्य भङ्ग कर दिया और अगले दिन सौ रूबल का एक नोट उसे देकर वह चला गया। उसके पाँच महीने बाद ही पक्की तौर से उसे पता चल सका कि अब मेरे पेट में गर्भ है।

इसके बाद उसे हर वस्तु प्रतिकूल लगने लगी। अब उसके मस्तिष्क में एक ही बात टकराती कि इस लजा और अपवाद से कैसे बचा जाय। अब वह वृद्ध महिलाओं की सेवा लापरवाही से करती तथा उससे जी चुराती किन्तु एक

दिन अनजाने में ही न जाने कैसे वह उनसे असभ्य व्यवहार कर बैठी। उसे इस पर पश्चाताप भी बहुत हुआ और उनसे अन्त में उसने छुट्टी माँग ली। महिलाओं को दुःख तो बड़ा हुआ पर उन्होंने उसे छुट्टी दे दी। तब उसने एक पुलिस अफसर के घर में नौकरी करली किन्तु वहाँ तीन महीने से अधिक न टिक सकी क्योंकि पुलिस अफसर, जो पचास वर्ष का था, उसे तंग करने लगा। और एक बार जब वह बहुत आवेग में था वह उस पर बरस पड़ी। 'बेवकूफ' और 'बूढ़ा खूँसट' कहते हुए उसने इतनी जोर से उसे धक्का दिया कि वह गिर पड़ा। अपनी इस असभ्यता के कारण उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। अब दूसरी नौकरी खोजने में कोई लाभ नहीं था क्योंकि उसका प्रसवकाल समीप आ रहा था इसलिए वह गाँव की दाई के घर गई। दाई चोरी से मदिरा बेचती थी। बच्चा आराम से हो गया किन्तु दाई के पास गाँव के किसी रोगी का इलाज चल रहा था, वह रोग कातूशा को लग गया और उसका नवजात शिशु अनाथों के अस्पताल में भेज दिया गया। जो वृद्धा उसे अस्पताल ले गई उसने बतलाया कि वहाँ पहुँचते ही बच्चा मर गया।

जब कातूशा दाई के पास पहुँची थी तब उसके पास १२७ रूबल थे—२७ उसके कमाए हुए और १०० उसके दूषित करने वाले के दिए हुए। और जब वह वहाँ से चली तो उसके पास केवल ६ रूबल बचे। उसे मालुम ही न था कि धन का संग्रह कैसे किया जाता है। कुछ रुपए तो वह अपने ऊपर व्यय कर डालती, बाकी जो भी जितना माँगता उसे दे डालती। दाई ने दो महीने तक अपने यहाँ रखने और उसकी देखभाल करने के ४० रूबल ले लिए, २५ रूबल बच्चे को अस्पताल में दाखिल कराने में चले गए, और ४० रूबल दाई ने गाय खरीदने को उधार लिए। करीब २० रूबल कपड़े लत्ते, मिठाई आदि में व्यय हो गए। गुजर-बसर के लिए जब गाँठ में धेला भी न रहा तो कातूशा को नौकरी तलाश करनी पड़ी और जंगल के किसी अधिकारी के यहाँ उसे नौकरी मिल भी गई। अधिकारी विवाहित था, किन्तु वह भी उसे पहिले दिन से ही छेड़ने लगा। कातूशा को वह पसन्द न था और उसने उसे टालने की कोशिश की। वह उसका मालिक था साथ ही बहुत ही अनुभवी और चालाक भी। वह उसे कहीं भी भेज सकता था। उसने उसे भ्रष्ट कर दिया। उसकी पत्नी को यह मालूम पड़ गया और जब उसने कातूशा तथा अपने पति को एक कमरे में पकड़ लिया तब वह कातूशा को पीटने लगी। कातूशा ने अपना बचाव किया, तो दोनों में मार पीट हो गई और उन्होंने बिना तनख्वाह दिए ही कातूशा को निकाल दिया। वह

अपनी चाची के पास रहने के लिए नगर में चली गई। उसका चाचा जिल्दसाज था। वह कभी अच्छा खाता-कमाता था किन्तु अब उसके ग्राहक छूट गए थे और वह मदिरा पीने लग गया। अब तो जो भी उसके पल्ले पड जाता उसी को वह मदिरालय में उड़ा देता।

चाची ने एक छोटी-सी लॉण्डरी खोल रखी थी और उससे ही वह अपनी, अपने बच्चों, और अपने नराधम पति की गुजर-बसर चलाती। उसने कातूशा को धोबिन की जगह काम करने को कहा, किन्तु धोबिनों की दुख-भरी और महनती जिंदगी देखकर कातूशा हिचकिचा गई। उसने रजिस्ट्री के दफ्तर में नियुक्ति के लिए प्रार्थना-पत्र भेज दिया। उसकी नियुक्ति एक महिला के यहाँ हो गई, जो अपने दो लड़कों के साथ रहती थी। उसके लड़के व्यायामशाला के शिष्य थे। कातूशा को घर में काम करते एक सप्ताह ही बीता होगा कि बडा लड़का, जिसके मूँछें निकल आई थीं, पढ़ाई लिखाई छोड उसके पीछे पड गया और उसे चैन न लेने देता। उसकी माँ ने सारा दोष कातूशा के मत्थे मढा और वहाँ से भी उसे नोटिस मिल गया।

कितने ही निरर्थक प्रयत्नों के बाद कातूशा रजिस्ट्री आफिस में गई और वहाँ एक स्त्री से मिली जिसकी नङ्गी मोटी बाँहों में बाजूबन्द पड़े थे तथा अधिकांशतया सभी उङ्गलियों में अँगूठियाँ पड़ी हुई थीं। यह ज्ञान होने ही कि कातूशा को नौकरी की अत्यन्त आवश्यकता है उसने अपना पता दिया और घर पर आने को आमंत्रित किया। कातूशा उसके घर गई। स्त्री ने बड़े स्नेह से उसका स्वागत किया, केक खिलाई और मीठी शराब पिलाई। पुनः एक पत्र लिखकर किसी को देने के लिए अपने नौकर को भेजा। सायंकाल लम्बे भूरे बालों और सफेद दाढ़ी वाला एक लम्बा आदमी कमरे में घुसा और तुरन्त ही कातूशा के पास बैठ कर उसे चमकदार नेत्रों से मुस्कुराता हुआ घूर कर देखने लगा। वह उससे परिहास करने लगा। आतिथेया ने उसे कमरे में बुला लिया। कातूशा ने सुना कि वह कह रही थी 'गाँव का ताजा माल'। तब स्त्री ने कातूशा को बुलाया और उसे बतलाया कि यह व्यक्ति एक लेखक है, और उसके पास बहुत धन है। अगर यह तुम्हें पसन्द कर ले तो किसी बात से असंतुष्ट नहीं होने देगा। लेखक ने उसे पसंद कर लिया तथा भविष्य में पुनः मिलने का वचन दे उसे २५ रूबल दिए। वह पच्चीसों रूबल बहुत शीघ्र समाप्त हो गए। कुछ तो उसने अपनी चाची को रहने और खाने के दे दिए और बाकी एक पोशाक, हैट और

रिबन खरीदने में व्यय हो गए। कुछ दिनों बाद लेखक ने उसे बुलाया और जब वह उसके पास गई तो उसने उसे २५ रूबल और दिए तथा उसके रहने की अलग व्यवस्था कर दी।

निवास स्थान से अगले द्वार पर एक प्रसन्नवदन सहकारी दूकानदार रहता था। कातूशा उसे प्रेम करने लगी। उसने लेखक को अपनी प्रेम-कथा बतला दी तथा अपने एक छोटे से कमरे में जाकर रहने लगी। सहकारी दूकान-दार, जिसने उसे विवाह करने का वचन दिया था, उसे बिना बतलाए व्यापार के काम से निजनी नोवोगोरद चला गया। उसने प्रत्यक्ष रूप से उसे त्याग दिया और अब कातूशा अकेली रह गई। वह अकेली ही उसी मकान में रही आना चाहती थी किन्तु पुलिस ने उसे सूचना दी कि ऐसा करने में उसे एक पीला पास (वेश्याओं का) लेना होगा और उसकी डाक्टरी जाँच होगी। वह अपनी चाची के पास लौट आई। उसकी शानदार पोशाक, हैट और ओढ़ना देखकर चाची ने धोबिन का काम करने को नहीं कहा। उसकी धारणा थी कि अब मेरी भतीजी उस कार्यश्रेणी से ऊँची उठ गई है। कातूशा के सामने यह विचार नहीं था कि अब उसे धोबिन का काम करना है अथवा नहीं। पतली-दुबली, श्रमव्याप्त धोबिनों को देखकर, जिनका कि यौवन तथा स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था तथा जिनमें से कुछ अपनी पतली बाँहों से गर्म भट्टी के सामने कपड़ों को धो रही थीं या उन पर लोहा कर रही थीं, उसे तरस आता। भट्टी वाले कमरे में हमेशा साबुन की भाप निकलती रहती और गर्म वायु के झकोरे आते रहते। यह सोचकर वह भयभीत हो उठी कि एक दिन मेरी भी यही हालत होती।

ठीक ऐसे समय में, जब कि कातूशा इतने संकरे मार्ग पर खड़ी थी कि कोई बचाने वाला नहीं दिखलाई दे रहा था, एक कुटनी आयी।

कातूशा ने कुछ दिनों से सिगरेट पीना आरम्भ कर दिया था और जब से नवयुवक सहकारी दूकानदार ने उसे धोखा दिया तब से वह अधिक मदिरा-पान करने लगी। वह स्वाद के लिए मदिरा नहीं पीती थी; वास्तव में मदिरा से उसे अपने दुख भूलने का अवसर मिलता और ऐसा करने से वह स्वतंत्र हो जाती तथा अपने मूल्य के प्रति विश्वस्त भी, जो उसे गंभीरता की अवस्था में प्राप्त नहीं होती थी। मदिरा के अभाव में वह उदास तथा लज्जित-सी रही आती।

कुटनी भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन तथा मदिरा भी लाई थी। भोजन तो कातूशा ने अपनी चाची को दे दिया और मदिरा स्वयं पी ली। जब कातूशा

मदिरा पी चुकी तब उसने उसे नगर के सबस बड़े वेश्यालय में भरती होने को कहा तथा उसे बतलाया कि उस स्थिति में तुम्हें क्या सुविधाएँ और लाभ प्राप्त होंगे। कातूशा के सामने दो मार्ग थे : या तो कहीं नौकरी कर अपमानित होना, शायद पुरुषों की दृष्टि से तंग होने और गाए-बगाए गुप्त लैंगिक संबन्ध स्थापित करने के कारण; अथवा शासन की दृष्टि मे उपयुक्त एवं सुविधाजनक सुरक्षित स्थिति में रहना जिसमें खुले रूप में, पूरे मूल्य पर, नियमित ढङ्ग से विषयभोग होता है। उसे इन दोनों में से एक मार्ग चुनना था और उसने दूसरा चुन लिया। इसके अतिरिक्त उसे लगा कि मैं अपना सतीत्व नष्ट करने वाले, सहकारी दूकान-दार, और उन सबसे बदला ले सकती हूँ, जिन्होंने मुझे ठेस पहुंचाई है। उसके निर्णय को प्रभावित करने और उसे आकृष्ट करने वाली बातों में एक लालच यह भी था जो कि उसे कुटनी ने दिया था कि वह अपने वस्त्र स्वयं बनवा सकती है—मखमल, सिल्क, सैटिन, नृत्य की पोशाकें, जो भी उसे पसंद हो। उसने कल्पना की कि मैं काली मखमल की झालरदार पीली सिल्क की चमकीली ड्रेस पहिने हुए हूँ, जिसकी बाहें छोटी और गर्दन का कालर नीचा है। इस कल्पना ने उसका मन मोह लिया और उसने अपना पासपोर्ट बनवा लिया। उसी दिन शाम को उसे एक गाड़ी में बैठाकर कुटनी एक कुख्यात घर पर ले गई जिसकी मालकिन थी—श्रीमती किताएवा।

उस दिन से कातूशा माशलोवा का जीवन मानवीय और दैवी नियमों के विरुद्ध गम्भीर पाप के रूप में प्रारंभ हो गया। ऐसा जीवन, जिसे लाखों स्त्रियाँ विताती हैं और जिसे कि सरकार—वह सरकार जो अपनी प्रजा का हित करने को इच्छुक है—न केवल सहन ही करती है वरन उसे विताने की आज्ञा भी देती है। ऐसा जीवन जिसमें दस में से नौ स्त्रियों का अन्त दुखद रोग में, असमय में, बुढ़ापे की निर्बलता में और मृत्यु में होता है।

रात की रंगरेलियों के बाद दोपहर तक खूब सोना। तीन-चार वजे के बीच गंदे बिस्तर से थकान लिए उठना; सोडावाटर, काफी, सोने के गाउन और ड्रेसिङ्ग जाकेट पहिने कमरे में इधर-से-उधर लापरवाही से चहलकदमी करना, खिड़कियों की खुली हुई चिकों से बाहर अलसाते हुए झाँकना; आपस में व्यर्थ के झगड़े करना; उसके बाद नहाना-धोना, सुगन्धियाँ मलना, बालों और शरीर में तेल लगाना, ड्रेसों का पूर्वाभ्यास करना और अपने मकान मालिक से झगड़ना दर्पण में शक्लें निहारना, चेहरे व भौंहों को रङ्गना, कीमती और सुस्वादु भोजन करना, पुनः अपने शरीर को अधिक-से-अधिक चमकाते हुए भड़कीली

सिल्क की पोशाकें पहिनना और फिर प्रकाश से जगमग अत्यन्त सजे-सजाए ड्राईङ्ग-रूम में नीचे आना; फिर दर्शकों का आगमन, गायन, नृत्य, विषयभोग—लैंगिक संबन्ध—वृद्ध, युवक और प्रौढ़ों से, लड़कों और निर्बल बुड्ढों से, अविवाहित, व्यापारियों, लिपिकों, आरमीनियनों, यहूदियों और तारतारों से, प्रत्येक श्रेणी, अवस्था और चालचलन के—धनवान और निर्धन, रोगिल और स्वस्थ, मदिरा पिए और बेपिए, कठोर और कोमल, सैनिक और नागरिक, विद्यार्थी और स्कूल के लड़कों से और चीखें, चिल्लाहटें और मजाक, और गुर्राना और गाना, और तम्बाकू और शराब, और शराब और तम्बाकू और गाना साँझ से लेकर भोर तक, सुबह तक थोड़ा-सा भी चैन नहीं और फिर गहरी नींद; यही क्रम नित्य और पूरे सप्ताह भर। सप्ताह के बाद प्रशासनिक नियम के अनुसार पुलिस चौकी पर उपस्थिति, जहाँ पुरुष डाक्टर जो सरकारी नौकर थे; कभी गम्भीरता से, कभी कठोरता से, कभी थोड़ी चपलता से मर्यादा को—जो भगवान ने केवल मनुष्यों ही नहीं पशुओं के भी संरक्षण के लिए बनाई है—बिल्कुल समाप्त कर स्त्रियों की जांच करते तथा उन्हें और उनके अपराध में साथ देने वाले मनुष्यों को, जो पूरे सप्ताह तक पाप बटोरते रहे हैं, पाप करते रहने की लिखित आज्ञा प्रदान करते। पुनः उसी ढङ्ग से अगला सप्ताह चलता, सदा हर रात को यही क्रम चलता गर्मी हो या सर्दी, काम के दिन या छुट्टियाँ।

और इसी ढङ्ग से कातूशा माशलोवा ने सात वर्ष व्यतीत किए। इस बीच उसने एक-दो बार मकानों की आगे-पीछे की तरफ अदला बदली भी की, और एक बार अस्पताल भी हो आई। चकले के जीवन के सातवें वर्ष में, जबकि वह छब्बीस वर्ष की थी एक ऐसी घटना घटी जिसके कारण उसे जेल जाना पड़ा और जिसका कि अब, जबकि तीन माह से अधिक चोरों और हत्यारों के बीच कारा की दम घोटने वाली वायु में वह बन्द रह चुकी थी, उस पर अभियोग चलाया जा रहा था।

३

जिस समय दोनों सिपाहियों से घिरी हुई माशलोवा न्यायालय-भवन में पहुँची उस समय उसके सतीत्व का अपहरण करने वाला प्रिन्स दिमीत्री इवानोविच नेखलूदोव अपनी ऊँची चारपाई पर लेटा हुआ था। चारपाई के

सिरहाने पंखों का बना तकिया लगा था। उसने अच्छी ताजा धुली कमीज पहिन रखी थी और मुँह में सिगरेट दबाए वह सोच रहा था कि कल क्या हुआ और आज उसे क्या-क्या करना है।

कल शाम उसने कोरचागिन परिवार के साथ बिताई थी। कोरचागिन परिवार धनी-मानी और शाही परिवार था। जब उसे ध्यान आया कि हर किसी की यही धारणा है कि मैं कोरचागिन परिवार की किसी लड़की के साथ विवाह करूँगा तो उसने आह भरी और सिगरेट के बचे टुकड़े को फेंक दिया। चाँदी के सिगरेट केस से वह दूसरी सिगरेट निकालने लगा कि उसका विचार पलट गया और अपने चिकने सफेद पाँवों को नीचे लटका कर उसने स्लीपरें पहन लीं। उसने अपने माँसल कन्धो पर सिल्क का ड्रेसिंग गाउन पटका और भारी कदमों से चलते हुए तेजी से अपने ड्राइङ्ग-रूम में चल दिया। ड्रेसिंग रूम में यू-डी-कोलन और फिक्सेसर की सुगन्धि भरी थी। वहाँ उसने सावधानी से एक विशेष मंजन से दाँत साफ किए, सुगन्धित माउथवाश[1] से कुल्ले किए, फिर सुवासित साबुन से हाथ धोए, विशेषतः अपने लम्बे नाखूनों को साफ करने पर ध्यान दिया, और संगमरमर के बने हाथ-मुँह धोने के टब पर अपना चेहरा और मोटी गर्दन धोकर वह तीसरे कमरे में गया जहाँ उसके नहाने के लिए फव्वारा लगा हुआ था। अपने मोटे, माँसल, दृढ़ शरीर को स्वस्थता प्रदान करने और उसे सूखे तौलिए से पोंछने के बाद उसने अन्डरवीयर, बनियान तथा पालिशदार जूते पहिने और शीशे के सामने अपनी छोटी काली दाढ़ी और घुँघराले बाल ब्रुश से काढ़ने को बैठ गया जो कि माथे से ऊपर कम होने लग गए थे।

जो भी उसके श्रृङ्गार प्रसाधन थे—उसकी लिनन, उसके कपड़े, जूते, नैकटाई, पिन, बटन—सब ही सर्वोत्तम प्रकार के वहुत ही सादे, टिकाऊ एवं मूल्यवान थे।

लगभग दस विभिन्न प्रकार की टाइयों और स्कॉर्फ पिनों में से जो सबसे पहिले उसके हाथ में आई, वही ले ली। कभी जमाना था कि यह सब उसे नए और आकर्षक लगते थे किन्तु अब यह बात नहीं रही थी।

नेखलूदोव ने वही कपड़े पहिने जो कि कुर्सी पर ब्रुश से साफ कर उसके लिए रखे गए थे। और स्वच्छ एवं सुवासित होकर वह भोजनगृह में गया। कमरा बहुत बड़ा था और परसों ही तीन आदमियों ने मिलकर उसके फर्श की

[1] कुल्ले करने का एक सुगन्धित तरल।

पालिश की थी । कमरे में एक टेबिल रखी थी, जिसके चारों पाए सिंह पंजों के सदृश्य थे साथ ही एक बड़ा साइनबोर्ड लगा था जो उससे मेल खाता था । मेज वड़ी भव्य दिखलायी दे रही थी । टेबिल के ऊपर एक कलफ किया सुन्दर कपड़ा बिछा था जिस पर एक बड़ा सा मोनोग्राम बना था और उसके ऊपर सुगन्धित कॉफी से भरा एक चाँद का काफी पॉट, एक शुगर-पॉट, गर्म क्रीम की बोट और रोटी की टोकरी रखी थी जिसमें कि ताजा रौल, दुबारा पकाए हुए रोटी के टुकड़े और विस्कुटें थीं । इन सबके अतिरिक्त रेव्यू डस डिग्रक्स मोन्डस का सबसे ताजा अङ्क और कुछ पत्र रखे थे ।

नेखलूदोव अपने पत्रों को खोलने ही वाला था कि सवेरे के वस्त्र पहिने एक स्वस्थ प्रौढ़ा स्त्री अपने उड़ते हुए बालों को फीते की टोपी से ढके कमरे में प्रविष्ट हुई यह अग्रफेना पेत्रोव्ना थी जो पहिले नेखलूदोव की माँ की विश्वासपात्र सेविका थी । अभी थोड़े ही दिन पूर्व इसी मकान में उसकी स्वामिनी मरी थी और वह उसके पुत्र के यहाँ गृहरक्षिणी के रूप में काम करती रही आई ।

अग्रफेना पेत्रोव्ना ने कितनी ही बार करके लगभग दस वर्ष नेखलूदोव की माँ के साथ व्यतीत किए थे । उसकी सूरत-शक्ल, रहन-सहन सब महिलाओं की ही भाँति था । वह नेखलूदोव परिवार में अपने बचपन से ही रही थी और दिमीत्री इवानोचिव को वह उसके वचपन से ही जानती थी । तब उसे मितेन्का के नाम से पुकारा जाता था ।

"गुड मारनिंग, दिमीत्री इवानोविच !"

"गुड मारनिंग, अग्रफेना पेत्रोव्ना ! क्या लाई हो !" नेखलूदोव ने पूछा ।

"प्रिन्सेज का पत्र ! माँ या पुत्री दोनों में से किसी एक ने भेजा है अभी कुछ पहिले ही नौकरानी लेकर आई थी । वह मेरे कमरे में बैठी है ।" अर्थपूर्ण मुस्कान से अग्रफेना पेत्रोव्ना ने उसे पत्र दिया ।

"अच्छा ! एक सेकिंड !" नेखलूदोव ने अग्रफेना पेत्रोव्ना की मुस्कराहट को देख भों चढ़ाकर कहा—और उससे पत्र ले लिया ।

उस मुस्कान में निहित था कि पत्र कुमारी प्रिन्सेज कोस्वागिना ने लिखा है और अग्रफेना पेत्रोव्ना को आशा थी कि नेखलूदोव उसी से विवाह करेगा । उसके इस अनुमान से नेखलूदोव उद्विग्न हो उठा ।

"तो मैं उससे कहे देती हूँ कि वह रुक जाय" कह कर अग्रफेना पेत्रोव्ना ने रोटी काटने के चाकू को, जो अपनी जगह पर नहीं रखा था, उठाकर ठीक से रख दिया और कमरे से बाहर चली गई ।

पत्र को खोलकर नेखलूदोव पढ़ने लगा।

पत्र मोटे भूरे सुवासित कागज पर लिखा हुआ था। लिखावट नुकीली और दूर-दूर लिखी हुई थी। उसमें लिखा था—

आपकी स्मरण शक्ति के काम का भार अपने ऊपर लेने के कारण मैं आपको यह ध्यान दिलाने की धृष्टता करती हूँ कि आज २८ अप्रेल को आपको लॉ कोर्ट में जूरी बनकर जाना है जिसके परिणामस्वरूप आप हमारे और कोलोशोव के साथ चित्रालय तक किसी भी मूल्य पर नहीं जा पाएँगे—जैसा कि आपने अपनी स्वाभावगत चपलता में हमसे कल वायदा किया था। हाँ, अगर आप अदालत को तीन सौ रूबल जुर्माने के दें तो आप चल सकेंगे। लेकिन तीन सौ रूबल तो वह रकम है जिसके लिए आपने घोड़ा नहीं खरीदा।

मुझे रात तब याद आया जब आप चले गये इसलिये भूलियेगा नहीं।

"प्रिन्सेज एम० कोरचागिना"

पत्र की उल्टी ओर लिखा था, पुनश्च—

"मामा कहती हैं कि मैं आपको यह लिख दूँ कि आपके लिये रात तक जगह रिजर्व रहेगी, आप जरूर आइए, चाहे कितनी ही देर क्यों न हो जाए।"

" एम० को० "

नेखलूदोव ने मुँह बनाया। यह पत्र उसी चतुराई भरे कपट जाल के सिलसिले में था जिसके अदृश्य धागों से प्रिन्सेज कोरचागिना लगातार दो महीने से उसे कसने का प्रयत्न करती चली आ रही थी। किन्तु जिनकी विवाह करने की अवस्था निकल चुकी है उन व्यक्तियों में स्वाभाविक संकोच उत्पन्न हो जाता है। यह बात दूसरी है कि किसी से प्रेम ही इतना पड़ जाय। इस बात के अतिरिक्त, यदि नेखलूदोव विवाह करने के लिये तैयार भी हो जाता तो भी वह इस बात के ढेरों कारण गिना सकता था कि मैंने विवाह का प्रस्ताव शीघ्र ही क्यों नहीं रखा। दस वर्ष पहिले की सी बात अब नहीं थी जब कि उसने माशलोवा को भ्रष्ट कर उसे त्याग दिया था; वह उस घटना को बिल्कुल भूल चुका था और विवाह न करने का यह भी एक कारण हो सकता है ऐसा तो वह सोच भी नहीं सकता था। वह कोई कारण नहीं था कारण तो यह था कि एक विवाहित स्त्री के साथ उसका अनैतिक सम्बन्ध था। उसकी दृष्टि में यद्यपि वह सम्बन्ध समाप्त हो चुका था किन्तु स्त्री ऐसा नहीं मानती थी।

नेखलूदोव स्त्रियों के सामने किंचित लज्जालु हो उठता था और उसकी इसी लज्जालुता ने उस जिले के, जिसमें कि नेखलूदोव ने वोट दी थी, मार्शल की विवेकहीन पत्नी में एक भावना उत्पन्न की। वह भावना थी नेखलूदोव को पराजित करने की। इस स्त्री ने उससे अपना सम्पर्क बढ़ाया जिसमें कि वह अधिकाधिक फंसता गया किंतु नेखलूदोव को यह असह्य होता गया इस लालच के अधीन हो जाने से नेखलूदोव को लगता कि वह अपराधी है और इसलिये उस सम्बन्ध को बिना उसकी सम्मति के तोड़ डालने का उसे साहस नहीं होता। और यही एक बाधा थी जिसके कारण वह कुमारी प्रिन्सज कोरचागिना से यदि चाहता तब भी विवाह प्रस्ताव नहीं कर पाता।

मेज पर जितने पत्र रखे हुए थे उनमें से एक पत्र इस स्त्री के पति का भी था। उसकी लिखावट और पोस्ट मार्क देखते ही नेखलूदोव लज्जा से लाल पड़ गया और उसे प्रतीत हुआ कि मेरी शक्तियाँ जागृत होने लगी हैं। वे तबही जागृत होतीं जब उसके सम्मुख किसी प्रकार का भय होता।

किंतु उसकी उत्तेजना तुरंत ही शान्त हो गयी। जिले के मार्शल ने, जिसके क्षेत्र में उसकी सबसे बडी जमींदारी थी, नेखलूदोव को पत्र सिर्फ यह बतलाने के लिये लिखा था कि मई के अन्त में एक विशेष बैठक होने जा रही है। वहाँ स्कूलों और सडकों के ऊपर डिबेट है जिसमें प्रतिक्रियावादी संस्था विरोध में बोलेगी तथा नेखलूदोव को वहाँ आना आवश्यक है।

मार्शल उदार दल का सदस्य था और उन थोड़े से लागों के साथ, जो उसके विचारों से सहमत थे, वह उस क्रियात्मक विचारधारा से डटकर टक्कर लेना जो अलेक्जेंदर तृतीय के शासन काल में फैली हुई थी। इस विवाद में वह इतना रत रहता था कि उसे अपने पारिवारिक दुर्भाग्य का पता भी न लग सका।

इस भयानक व्यक्ति से सम्बन्धित सभी वीभत्स क्षण नेखलूदोव को स्मरण हो आये : उसे याद आया कि किस तरह एक दिन मैंने सोचा कि उसके पति ने मुझे देख लिया है और मैं उसको चुनौती देने जा रहा था और किस तरह से मैंने हवा में फायर करने का निश्चय किया। उसे स्त्री के साथ का भयंकर दृश्य भी स्मरण हो आया जबकि वह निराश और दुखी हो डूबकर मरने के लिये पार्क में भागकर गयी थी और ढूँढ़ने के लिये उसे भी जाना पड़ा था।

"खैर ! मैं अब नहीं जा सकता, और 'तब तक कुछ नहीं कर सकता

जब तक कि उसका उत्तर मुझे न मिल जाय नेखलूदोव ने सोचा। एक सप्ताह पूर्व उसने उसे अपना निर्णय लिखकर भेजा था जिस में उसने अपना अपराध स्वीकार किया था और प्रायश्चित करने को तैयार था, किंतु साथ ही उसने लिखा कि उनके संबंध समाप्त हो जाने चाहिये। उसने प्रदर्शित किया था कि इसमें 'उसका ही' लाभ होगा। इस पत्र का उसके पास अभी तक कोई उत्तर नहीं आया था। इसके पीछे अच्छाई की संभावना थी। यदि वह सम्बन्धों को समाप्त करने को राजी न होती तो शीघ्र ही लिखती, या स्वयं आ टपकती, जैसे कि वह पहिले भी कर चुकी थी। नेखलूदोव ने सुना भी था कि एक अधिकारी उसपर अनुरक्त है। यद्यपि इससे उसको ईर्ष्या उत्पन्न होने से दुख तो अवश्य होता था किंतु साथ ही अपनी अशोभनीय स्थिति से बच निकलने की आशा में उसे उत्साह भी प्राप्त हुआ।

दूसरा पत्र उसके प्रधान कारिंदा का था। उसने नेखलूदोव को लिखा था कि उसे अपनी जमीदारी में अवश्य आना चाहिये ताकि उसपर वह अपना अधिकार कर सके और यह भी तय करे कि भविष्य में जमींदारी का प्रबन्ध उसी तरह से हो जैसे कि माँ के जीवन काल में चलता था या जिस भाँति उसने (कारिंदा ने) उसकी दिवंगत माँ प्रिन्सेज को बतलाया था और जैसा अब उसको बतला चुका है कि अपना स्टाक बढ़ाने के बजाय सारी भूमि को, जो कि किराये पर उठी हुई है, किसानों से लेकर स्वयं खेती करे। कारिन्दा ने लिखा था कि जमींदारी का प्रबन्ध करने में यह ढंग कहीं अधिक लाभप्रद सिद्ध होगा। साथ ही उसने पहिली तारीख को जो तीन हजार रूबल भेजने थे न भेजे जा सकने के लिये क्षमा भी माँगी। यह धन अगली डाक से भेजा जायगा। विलम्ब का कारण यह था कि किसानों से समय पर रुपया नहीं मिला। किसान इतने अविश्वसनीय हो गये हैं कि उसे अधिकारियों से अपील करनी पड़ी है। यह पत्र अंशतः अरुचिकर था और अंशतः रुचिकर। रुचिकर तो इसलिये कि उसके अधिकार में इतनी बड़ी जमींदारी थी, और अरुचिकर इसलिये कि नेखलूदोव हरबर्ट स्पेन्शर का विशेष प्रशंसक रह चुका था। स्वयं एक बड़ी सम्पति का वारिस होने के नाते वह स्पेन्सर की लिखी हुई सोशल स्टेटिक्स (सामाजिक अङ्कशास्त्र) नामक पुस्तक में जो दृष्टिकोण लिया गया उससे विशेष प्रभावित था। पुस्तक का दृष्टिकोण था कि न्याय व्यक्तिगत भूमि रखने का निषेध करता है। उसने अपनी आयु की सरल दृढ़ता से न केवल इस मत का प्रतिपादन ही किया, व विश्वविद्यालय में निबन्ध ही लिखे वरन् अपने निश्चय के अनुसार कार्य भी किया

था। भूमि संबंधी सम्पत्ति का स्वामी बनना अनुचित समझ उसने अपने पिता से प्राप्त ५०० एकड़ भूमि किसानों को दे दी थी।

माँ की विशाल जमींदारी का अधिकारी बनते ही वह जमींदार बन गया। उसे दो में से एक चुनना था : या तो दस वर्ष पूर्व जैसे उसने अपने पिता की सम्पत्ति त्याग दी थी उसी प्रकार इसे भी त्याग दे अथवा चुपचाप यह स्वीकार करले कि उसके पहिले विचार गलत और झूंठे थे।

पहिले को वह स्वीकार न कर सका, क्योंकि उसकी आय का साधन कोई अन्य नहीं था, सिवाय जमींदारी के (सरकारी नौकरी की उसे परवाह नहीं थी); इसके अतिरिक्त उसकी आदतों में रईसी आगई थी, जिसके विषय में उसे यह विश्वास कि वह उससे छूट ही नहीं सकती है। इसके अतिरिक्त अब उसमें पहिले की भाँति उत्साह नहीं था। उसके दृढ़ निश्चय, यौवन की दृढ़ता, तथा कुछ ऐसा करने की महत्त्वाकाँक्षा जो असाधारण हो, सब समाप्त हो चुके थे। और जहाँ तक दूसरे मार्ग का प्रश्न था, जमींदारी को बनाए रखना अन्याय है इस बात की पुष्टि के स्पष्ट और लाजवाब प्रमाणों के होते हुए भी वह उधर से अपनी आँखें मींच ले, उसके लिए यह बिल्कुल असंभव था। यह प्रमाण उसे स्पेन्सर की 'सोशल स्टेटिक्स' पुस्तक से प्राप्त हुए थे जिनका कि, जैसा उसने बाद में पढ़ा था, हेनरी जार्ज ने प्रबल समर्थन किया था।

और इसलिए उसे कारिंदा का पत्र अरुचिकर लगा था।

४

कॉफी पीने के बाद नेखलूदोव अपने अध्ययन-कक्ष में सम्मनों को देखने गया कि उसे न्यायालय में कितने बजे पहुँचना है; साथ ही उसे प्रिन्सेज के पत्र का उत्तर भी लिखना था। चित्रशाला के सामने से जाते हुए जब उसने चौखटे में लगा अपूर्ण चित्र तथा दीवालों पर लटके कुछ चित्र देखे तब उसके हृदय में भावना आई कि मैं कला के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकता। यह भावना बहुत पुरानी थी और बहुधा उस पर छा जाया करती थी। वह इसका कारण ठहराता—ललितकलाओं के प्रति अपनी ऊँची अभिरुचि को। किंतु फिर भी इस विचार से उसको ठेस ही पहुँचती।

सात वर्ष पूर्व जब कि उसने सेना से पदत्याग नहीं किया था, उसको

दृढ़ विश्वास था कि मुझमें कला की प्रतिभा है और अपने कलात्मक दृष्टिकोण के उच्चशिखर से जब वह अन्य कार्यों की ओर दृष्टिपात करता तो वे सारे के सारे उसे तुच्छ प्रतीत होते। और अब यह सिद्ध हो चुका था कि ऐसा करने का उसे कोई अधिकार नहीं था। इसलिए जो भी बात उसे यह स्मरण कराती, वही उसे अरुचिकर लगती। उसने चित्रशाला की बहुमूल्य सज्जा को भारी मन से एकदृष्टि देखा और अध्ययन-कक्ष में पहुंचते-पहुंचते उसकी प्रसन्नता समाप्त हो ली। अध्ययन-कक्ष विशाल तथा भव्य था। उसका सारा साजोसामान आराम और सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से जुटाया गया था।

लिखने की बड़ी मेज की दराज में सम्मन रखे थे। दराज पर लिखा था 'आवश्यक'। उसे ११ बजे न्यायालय पहुँचना था।

प्रिन्सेज के पत्र का उत्तर लिखने के लिए वह बैठ गया। वह उसके निमन्त्रण के लिए धन्यवाद देना चाहता था और चाहता था रात्रि के भोजन में आने की चेष्टा करने का वचन देना। उसने एक पत्र लिखा और उसे फाड़ दिया क्योंकि उसे लगा कि मैंने इसमे घनिष्टता का प्रदर्शन अधिक कर दिया है। उसने दुबारा लिखा किन्तु इसमें जान नहीं थी। इस भय से कि यह उचित नहीं है उसे भी उसने फाड़ दिया। उसने बिजली का बटन दबाया और उसका वृद्ध नौकर, जो चिड़चिड़ा-सा लगता था और जिसकी बड़ी मूछें तथा सफाचट दाढ़ी थी, भूरे रङ्ग का सूती कोट पहिने कमरे मे घुसा।

"कृपया एक गाड़ी मंगाओ।"

"जी, श्रीमान्।"

"और देखो! कोरचागिन परिवार की जो नौकरानी यहाँ आई हुई है उससे कहना कि मैं उनके निमन्त्रण के लिए कृतज्ञ हूँ और उनके यहाँ जाने की काशिश करूँगा।"

"अच्छा जी!"

नेखलूदोव ने सोचा "यह विनम्रता नहीं है; किन्तु करूँ भी क्या? लिख भी तो नहीं पा रहा! कोई वात नहीं, मै उससे शाम को मिल लूँगा।" और अपना ओवरकोट लेने के लिए वह उठा।

जब वह घर के बाहर आया तो एक गाड़ी जिसके पहियों पर रबड़ के टायर चढ़े थे, दरवाजे पर उसको तैयार मिली। कोचवान उसका जाना-पहिचाना था।

"कल आप प्रिन्स कोरचागिन के घर से चले ही होंगे", गाड़ीवान ने उसकी ओर मुड़ते हुए कहा, "कि मैं वहाँ पहुँचा तो दरबान ने कहा कि अभी गए हैं।"

"गाड़ीवान भी कोरचागिन परिवार के साथ मेरे सम्बन्धों के विषय में जानते हैं ?" नेखलूदोव ने सोचा और उसके मन में यह प्रश्न फिर से उठ खड़ा हुआ कि मुझे प्रिन्सेज कोरचागिना से विवाह करना चाहिए अथवा नहीं। यह भी सवाल था और भी दूसरे सवाल थे जो इस समय उसके दिमाग में उठ रहे थे, लेकिन हल उसे किसी का भी नहीं मिला।

साधारणतः जैसा सभी सोचते हैं कि विवाह होने से चूल्हे-चक्की का आराम हो जाता है, इस बात को मानते हुए भी नेखलूदोव का विचार था कि इससे जीवन में नैतिकता की सम्भावना हो जाती है और मुख्यतः बाल-बच्चे होने से उसे आशा थी कि उसका रिक्त जीवन भर उठेगा। विवाह के विरोध में साधारणतः वही युवक होते हैं जिनका कि यौवन का पहला दौर समाप्त हो चुका होता है। क्योंकि उन्हें इस बात का भय रहता है कि उनकी स्वतन्त्रता नष्ट हो जायगी और पत्नी-रूप में आने वाला गूढ़ प्राणी न-जाने कैसा होगा।

इस विशेष केस में, मिस्सी से विवाह करने के पक्ष में (उसका नाम था तो मेरिया किन्तु कुछ लोगों ने उसे चिढ़ाने के लिए यह नाम रख दिया था) विचार उठता कि वह एक अच्छे परिवार की लड़की है और उसकी प्रत्येक बात निराली है—बोलना, चलना, हँसना, साधारण लोगों से भिन्न (यह बात नहीं कि वह कुछ अजीब हो वरन् वह 'सुसभ्य' थी—जिसका कि वह बहुत आदर करता था और जिसे प्रकट करने के लिए उसे दूसरा शब्द ही नहीं मिल पाता था।) और इसके अतिरिक्त, वह उसके बारे में अन्य लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक चिंता करती—इसलिए स्पष्टतया वह उसे अधिक पहिचानती थी। उसका यह विचार कि वह मेरी महत्ता को स्वीकार करती है नेखलूदोव के लिए लड़की की सुबुद्धि एवं उचित निर्णय का प्रमाण था। मिस्सी से विवाह करने के विरुद्ध उसके हृदय में विचार उठता कि उससे हर गुण में अपेक्षाकृत योग्य दूसरी लड़की भी मिल सकती है और दूसरी बात यह कि अब वह सत्ताईस वर्ष की हो चली है और किंचित मेरे साथ उसका यह पहिला ही प्रेम नहीं है। इस अन्तिम विचार से उसको दुख होता था। उसका स्वाभिमान यह सहन नहीं कर सकता था कि उसने अतीत में भी किसी दूसरे से प्रेम किया है। यह सही

है कि उसे इस बात का ज्ञान भी नहीं रहा होगा कि कभी वह नेखलूदोव से मिलेगी भी, किंतु वह इस विचार मात्र से ही असन्तुष्ट हो जाता था कि वह अन्य किसी को भी प्यार कर सकती है।

अत: उसके पास शादी के विरोध में कितने ही कारण थे। कुछ भी हो, नेखलूदोव की दृष्टि में उन सबका मूल्य एक-सा था। नेखलूदोव अपने ऊपर आप ही हँसता और वह स्वयं को कहानी के उस गधे के रूप में मानता जो कि घास के विशाल ढेरों को उलटने के बारे में कोई निर्णय न कर पाया।*

"बहरहाल, जबतक कि मेरिया वेसीलियेव्ना (मार्शल की पत्नी) का कोई उत्तर नहीं आता, और उससे संबंध बिल्कुल ही टूट नहीं जाते, मैं कुछ नही कर सकता।" उसने मन-ही-मन सोचा। "और यह निश्चय सुविधाजनक था कि मेरे निर्णय में विलम्ब हो जायगा, या हो जाना चाहिए। खैर! यह सब बाद में सोचूँगा।" उसने उस समय मन-ही-मन सोचा जबकि गाड़ी कोलतार की सड़क पर धीरे-धीरे न्यायालय के द्वार के पास जा रही थी।

"अब मुझे अपने सार्वजनिक कर्तव्यों का सजगता से पालन करना चाहिए जैसी कि मुझे आदत है और जिसे कि मैं उचित भी समझता हूँ। अतिरिक्त उसके इस काम में दिलचस्पी भी आती है।" और दरबान से आगे बढ़कर वह लॉ-कोर्ट के हॉल में चला गया।

५

न्यायालय के अहातों में काम हो रहा था। परिचारकों के दम फूल रहे थे, भूमि पर पैरों को घसीटते हुए हर प्रकार की सूचनाएँ और कागज लिए वे शीघ्रता में इधर-से-उधर आगे-पीछे आ-जा रहे थे। आवाज देने वाले, वकील और न्यायालय के अधिकारी इधर-से-उधर निकल जाते। वादी और प्रतिवादी जो हिरासत में नहीं थे, दीवाल के सहारे उदासी से चक्कर काट रहे थे या बैठे हुए

---

*गधे के विषय में ऐसी बात है कि यदि उसके दोनों ओर घास के दो ढेर समान दूरी पर रख दिए जाँय तो गधा असमंजस में पड़ जाता है और किसी भी ढेर की ओर नहीं बढ़ पाता है। वह खड़ा-खड़ा भूखा मर जाएगा किंतु खाएगा नहीं। वह यही सोचता रह जाता है कि पहले किस ढेर को खाऊँ।

प्रतीक्षा कर रहे थे।

"लॉ-कोर्ट कहाँ है ?" नेखलूदोव ने एक परिचारक से पूछा।

"कौनसी ? दीवानी या फौजदारी ?"

"मैं पञ्च हूँ।"

"आपका मतलब फौजदारी से है। यहाँ से इधर दाहिने फिर बाँएँ जाकर दूसरा दरवाजा है।" नेखलूदोव उसी ओर चल दिया।

दरवाजे पर दो व्यक्ति खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें से एक लम्बा, मोटा, दयालु हृदय व्यापारी था। मालुम होता था कि उसने कुछ नाश्ता-पानी कर लिया है। वह प्रसन्न मुद्रा में था। दूसरा यहूदी कुलोत्पन्न सहायक दूकानदार था। वे ऊन के दामों के विषय में बातें कर रहे थे कि नेखलूदोव ने वहाँ आकर उनसे पूछा "पंचों के बैठने का कमरा कहाँ है ?"

"जी, श्रीमान्जी यही है। क्या हम में से किसी से काम है ? क्या आप भी पञ्च हैं ?" व्यापारी ने प्रसन्नता से कटाक्ष करते हुए कहा।

"ओह ! यह अच्छा रहा अब हम सब एक साथ चलेंगे।" जब नेखलूदोव ने स्वीकृति में सिर हिला दिया तो वह कहने लगा, "मेरा नाम बाक्लाशोव है। मैं द्वितीय संघ का व्यापारी हूँ।" और अपना चौड़ा, मुलायम, लचीला हाथ आगे बढ़ाते हुए बोला, "जो बन पड़ेगा हम करेंगे !...मुझे किनसे बातें करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है ?"

नेखलूदोव ने अपना नाम बतलाया और पंचों के बैठने के कमरे में चला गया।

कमरे में भिन्न-भिन्न प्रकार के लगभग दस व्यक्ति थे। वे सब अभी ही आए थे। उनमें से कुछ बैठे थे, कुछ एक-दूसरे को देखते, उनसे परिचय करते इधर-उधर घूम रहे थे।

वहाँ अपनो यूनीफार्म में एक रिटायर्ड करनल था। कुछेकों ने फ्रॉक-कोट पहिन रखे थे तो कुछों ने सबेरे के समय पहिनने वाले कोट। एक ऐसा भी था जिसने किसानों की पोशाक पहिनी हुई थी।

उन सबके मुख-मंडलों पर सार्वजनिक कार्य करने की भावना से उत्पन्न संतुष्टि वर्तमान थी। यद्यपि उसके लिए अधिकांशों को अपने २ काम छोड़ कर आना पड़ा था, और बहुत से उसकी शिकायत कर भी रहे थे।

पंच लोग आपस में ऋतुओं, बसंत के आरम्भ और व्यापारिक अवस्थाओं

के विषय में बातें कर रहे थे। कुछेकों का तो परिचय भी हो चुका था और दूसरे अनुमान लगा रहे थे कि कौन क्या हो सकता है। जो व्यक्ति नेखलूदोव से परिचित नहीं थे उन्होंने उसका आदर करने के लिए उससे परिचय करने की शीघ्रता की। और जैसा कि सदा ही वह अपरिचितों के मध्य अनुभव करता कि मेरा सम्मान तो होना ही चाहिए उसने उस सम्मान को ग्रहण किया। यदि उससे कोई पूछता कि तुम अपने आपको अधिकांश व्यक्तियों से अधिक ऊंचा क्यों समझते हो, वह उसका उत्तर दे नहीं सकता था। उसका जीवन कोई विशेष प्रशंसा योग्य नहीं रहा था। यह बात नहीं कि वह यह न जानता हो कि अपने अंग्रेजी, फ्रेन्च, जरमन भाषा बोलने के ढंग और नगर के सबसे ऊंचे दूकानदारों से खरीदे हुए सर्वोत्तम कपड़े, टाई और बटनों तथा अत्यधिक अर्वाचीन लिनन पहिनने मात्र से ही मैं अपनी श्रेष्ठता जतलाता था और जो सम्मान प्राप्त होता उसे अपना अधिकार समझकर वह ग्रहण करता और यदि उसे यह आदर नहीं मलता ता उसको ठेस पहुँचती। पंचों के बैठने के कमरे में निरादृत व्यवहा रसे भावनाओं को चोट पहुँची। पंचों के बीच एक ऐसा व्यक्ति भी था जिसे कि वह जानता था। उसका नाम था प्योत्र गिरासीमोविच। वह उसकी बहिन के बच्चों को पहिले घर पर पढ़ाने आया करता था। नेखलूदोव अब तक उसका उपनाम नहीं जान पाया था। और उसने इसके विषय में कुछ वृथा स्तुति भी कर दी थी यह व्यक्ति अब एक सार्वजनिक विद्यालय में अध्यापक था। नेखलूदोव को प्योत्र गिरासिममोविच से अपनी जान पहिचान, उसकी आत्मतुष्ट हंसी उसका लौकिक व्यवहार कुछ भी अच्छा नहीं लगा।

"अहा! आपको भी फंसा लिया" यह शब्द थे जिन्हे प्योत्रगिरासिमोविच ने नेखलूदोव से हाथ मिलाते समय अट्टहास कर कहे "सो अब आप निकल भी नहीं सकते।"

"मैंने निकलने की कभी चेष्टा भी नहीं की।" नेखलूदोव ने गंभीर एवं रूखे स्वर में उत्तर दिया।

"बिल्कुल ठीक—मैं इसी को सार्वजनीनभावना कहता हूँ किंतु प्रतीक्षा कीजिये उस समय की जबकि भूख सताने लगे और नींद आने लगे—तब आप स्वयंमेव दूसरा राग छेड़ बैठेंगे।"

"यह पादरी का बच्चा थोड़ी ही देर बाद मेरे कंधे थपथपाने लगेगा।" नेखलूदोव ने सोचा और गंभीर हो वह वहां से हट गया। उसके मुख पर ऐसी गंभीरता

आयी जैसे कि उसने यह समाचार सुना हो कि उसके सब रिश्तेदार मर गये। वह दूसरी गोष्ठी में गया जहाँ एक क्लीन शेव्ड लम्बा भव्य व्यक्ति बड़े उल्लास में कुछ दुबारा गिन रहा था यह भव्य पुरुष वीवानी में चल रहे एक अभियोग की बातें इस तरह से कर रहा था। वह न्यायाधीशों तथा वकीलों के नामों का बड़े प्रशंसात्मक रूप में ले रहा था वह वह रहा था कि एक ख्यातिप्राप्त एडवोकेट ने एक मामले को किस चतुराई से पलट दिया कि एक वृद्ध महिला को जिसका कि पक्ष न्यायपूर्ण था, अपने विरोधी का बहुत बड़ी धनराशि व्यर्थ में ही चुकानी पड़ेगी।

"एडवोकेट प्रतिभाशाली है।" उसने कहा।

श्रोता बड़े आदर और ध्यान से सुन रहे थे। उनमें से थोड़े से व्यक्तियों ने कुछ कहना चाहा किंतु उसने उनकी बात काट दी मानो कि उसके अतिरिक्त कोई अन्य उस विषय में कुछ जानता ही नहीं था।

यद्यपि नेखलूदोव को आने में स्वयं देर हो गयी थी फिर भी उसे काफी देर रुकना पड़ा। अदालत का एक सदस्य अभी तक नहीं आ पाया था और वे सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

६

कोर्ट का प्रेसीडेंण्ट जल्दी आ गया था। वह लम्बा, तगड़ा व्यक्ति था और उसके लम्बे तथा भूरे गलमुच्छे थे। उसका विवाह हो चुका था फिर भी वह बहुत विलासपूर्ण एवं भ्रष्ट ढंग से रहता। उसकी पत्नी भी ऐसे ही रहती। अतः दोनों में से कोई भी किसी के मार्ग में रोड़ा नही अटकाता। आज सुबह उसे एक स्विस लड़की का पत्र मिला। यह लड़की उसके घर में पहिले प्रवन्धक रह चुकी थी और आज वह दक्षिणी रूस से पीतर्सबर्ग आ रही थी। उसने लिखा था कि पाँच से छह बजे तक मैं इतालिया होटल में आपकी प्रतीक्षा करूंगी। वह लाल बालों वाली इस युवती क्लारा वैसिलेएव से ६ बजे से पहिले ही जाकर मिल लेना चाहता था इसलिए उसकी इच्छा थी कि बैटक जल्दी आरम्भ हो जाय ताकि शीघ्र समाप्त भी हो सके। पिछली गर्मियों से में ही उसने उसके साथ रोमांस शुरू किया था।

वह एक प्राइवेट कमरे में गया, दरवाजा बंद कर सिटकिनी चढ़ाई और हाथ में डम्बिलों का एक जोड़ा ले उसने बीस बार ऊपर नीचे इधर -उधर किया तथा डम्बिलों को सिर से ऊंचा उठा तीन बार थोड़े-थोड़े घुटने झुकाये।

"ठंडे पानी के स्नान और कसरत से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु स्वास्थ्य बनाने वाली नहीं।" उसने अपने दाँऐ हाथ के पुट्ठे को बाँये हाथ से दबाते हुए कहा। बाँये हाथ की अनामिका में उसने सोने की अंगूठी पहिन रखी थी। उसे अभी कुछ व्यायाम और करना था (क्योंकि अधिक काल तक बैठने के पूर्व वह हमेशा दो प्रकार के व्यायाम किया करता था)। दरवाजे पर खटखटाहट हुई। प्रेसीडेण्ट ने डम्बिलों को तुरन्त रख दिया और किवाड़ खोलते हुए बोला, "मुझे दुख है कि मेरे कारण आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी।"

ऊंचे कंधों एवं असंतुष्ट चेहरे वाला न्यायालय का एक सदस्य सोने का चश्मा चढ़ाये कमरे में प्रविष्ट हुआ।

"मातवेईनिकितिच फिर नहीं आये।" उसने असंतुष्ट स्वर में कहा।

"अभी नहीं!" प्रेसीडेण्ट ने अपनी वर्दी पहिनते हुए कहा। "वह हमेशा देर से आते है।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि उसे शर्म क्यों नहीं आती।" सदस्य ने बैठते समय सिगरेट निकालते हुए क्रोध में कहा।

उस सदस्य का, जो कि नियमों का बहुत पावन्द था, आज प्रभात में अपनी पत्नी से असुखद झगड़ा हो गया। पत्नी ने अपना एलाउन्स महीना खतम होने से पहिले ही व्यय कर दिया था और एडवांस में भी कुछ रुपये माँगे किन्तु वह देना नहीं चाहता था अतः उन दोनों में कहा सुनी हो गई। पत्नी ने कह दिया था कि यदि आप इस ढङ्ग का व्यवहार करते हैं तो आपको शाम के भोजन की आशा नहीं रखनी चाहिए। आज उसके लिए घर में कोई भोजन नहीं बनेगा। इस बात पर उसने झगड़ना बन्द कर दिया। वह डरता था कि कहीं वह अपनी धमकी को कार्यान्वित न कर बैठे क्योंकि उसकी पत्नी हर कुछ करने में समर्थ थी। "नैतिक ढंग से रहने का यही परिणाम होता है।" उसने स्वस्थ, प्रसन्न वदन, आभायुक्त और दयालु प्रेसीण्डेन्ट की ओर देखते हुए सोचा। उस समय प्रेसीडेन्ट अपने गोरे हाथों से कोहनियों को ऊँचा उठाए अपने मोटे, भूरे गलमुच्छों पर ताव दे रहा था, जो कि उसकी बर्दी के कढ़े कालर के ऊपर थे।

मंत्री किसी कागज को लेकर अन्दर आया।

"बहुत धन्यवाद।" प्रेसीडेन्ट ने सिगरेट जलाते हुए कहा "कौन सा अभियोग पहिले लें?"

"मेरा विचार है विष देने वाला।" मंत्री ने विना किसी पक्षपात के कहा

"ठीक है विष वाला ही सही।" प्रेसीडेन्ट ने यह सोच कर कहा कि यह केस चार बजे तक समाप्त हो जायगा और फिर मैं चला जाऊँगा। और मोतवेई निकितिच; क्या वह आगये ?"

"अभी नहीं।"

"और ब्रवे ?"

"वह उपस्थित हैं।" मन्त्री ने उत्तर दिया।

"तो देखिये, यदि वह मिल जाँय तो उनसे कह दीजियेगा कि विष वाले अभियोग से प्रारम्भ करेंगे।"

ब्रवे पबलिक प्रोसीक्यूटर[1] था, उसके ही हाथ में यह केस था।

दालान में मन्त्री को ब्रवे दिखलाई दिया वे एक बाँह में सरकारी कागजातों का एक बस्ता दबाए, दूसरे हाथ में झोला लटकाए अपनी एड़ियों से खटखट करता बरामदे में तेजी से चला आ रहा था।

"मिखाइल पेत्रोविच ने पूछा है कि आप तो तैयार हैं न ?" मन्त्री ने पूछा।

"बिलकुल। मैं तो सदा तैयार रहता हूँ।" पबलिक प्रोसीक्यूटर ने कहा "कौनसा अभियोग पहिले होगा।"

"विष वाला।"

"ठीक रहेगा।" पबलिक प्रोसीक्यूटर बोला, किंतु था इसके बिलकुल विपरीत। उसने पिछली रात तो एक होटल में अपने मित्र की विदाई पार्टी में बिताई थी। और सुबह के पाँच बजे तक वे मदिरा पीते और ताश खेलते रहे इसलिए उसे विष वाले केस को देखने का समय ही न मिल सका—वह अब उसे देखना चाहता था। मन्त्री पहिले से ही इस बात से परिचित था इसीलिए उसने प्रेसीडेन्ट को विष वाला अभियोग पहिले लेने को कहा। ब्रवे कन्ज़रवेटिव था और रूस में रहने वाले प्रत्येक जरमन की भाँति वह भी सत्यधर्मावलम्बी था। मन्त्री उससे घृणा तथा उसकी इस स्थिति से ईर्ष्या करता था।

"क्यों, स्कोप्टसी[2] के क्या हाल-चाल हैं ?" मन्त्री ने पूछा।

"मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि बिना साक्षियों के इस अभियोग को नहीं

---

१. वह व्यक्ति जो नगर के अभियुक्तों का चालान करता है तथा अदालत में मुद्दई की तरह खड़ा होता है।

२. एक धार्मिक सम्प्रदाय।

ले सकता और यही मैं न्यायालय में कहूँगा।"

"प्यारे ! इससे अन्तर क्या पड़ता है ?"

"मैं नहीं ले सकता !" ब्रवे ने अपना हाथ जोर से हिलाते हुए कहा और अपने प्राइवेट रूम में चला गया।

वह स्कोप्टसी के केस को एक ऐसी साक्षी के कारण टाल रहा था जिसका कि कोई महत्व नहीं था। वास्तव में कारण तो यह था कि यदि उनका केस पढ़े लिखे पंचों के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया जाता तो वे निर्दोष घोषित होकर छूट सकते थे। इसलिए प्रेसीडेण्ट के साथ हुए समझौते के अनुसार प्रादेशिक नगर में अगले ग्रीष्म-काल में यह अभियोग चलाया जाता था, जहाँ कि किसान अधिक होंगे और दोष-सिद्धि की सम्भावना बढ़ जायगी।

बरामदे की हलचल बढ़ गई। लोग दीवानी अदालत के द्वार पर काफी संख्या में एकत्रित हो गये, जहाँ कि अदालती कामों में अत्यन्त प्रवीण व्यक्ति द्वारा एक केस की सफाई दी जा रही थी।

मध्यांतर हुआ और न्यायालय के कमरे से एक वृद्धा बाहर निकली जिसकी सम्पत्ति एक एडवोकेट की प्रतिभा के कारण उससे छीन कर उसके मुवक्किल को दे दी गई थी। एडवोकेट का मुवक्किल था एक व्यापारी जिसका उस सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं था। न्यायाधीशों की जानकारी में सब बातें थीं और एडवोकेट तथा उसका मुवक्किल उनकी अपेक्षा अधिक जानता था किन्तु उन्होंने जो पग उठाने के लिए खोजे वे ऐसे थे कि सम्पत्ति वृद्धा से अनिवार्यत: छीन कर उस व्यापारी को देनी पड़ी।

वृद्धा हृष्ट पुष्ट थी और वस्त्र अच्छे पहिने थी। उसकी टोपी में बड़े-बड़े फूल लगे हुए थे। द्वार से बाहर निकलते ही वह रुकी और अपने एडवोकेट की तरफ मुड़कर अपनी छोटी मोटी बांहें फैलाती हुई बोली "इस सब का क्या मतलब है ? सूझ ! यह कैसे सम्भव हो सकता है ?"

एडवोकेट उसकी टोपी में लगे फूलों को देख रहा था—वास्तव में वह उसकी बातें नहीं सुन रहा था वरन् कुछ और ही सोच रहा था।

उस वृद्धा के पीछे-पीछे दीवानी अदालत के द्वार से वह ख्यातिप्राप्त एडवोकेट निकला जिसने कि इस मामले को ऐसे ढङ्ग से सुलझाया था कि फूल वाली महिला अपना सब कुछ हार गई और व्यापारी उसे दस हजार रूबल देकर दस लाख रूबल पा गया। एडवाकेट ने नीचा कटा हुआ वेस्ट कोट पहिन रखा था

जसके नीचे से उसकी चौड़ी कलफ़ लगी कमीज चमक रही थी । उसकी चाल तेज थी और चेहरे पर सन्तुष्टि और आत्मतुष्ट के भाव वर्तमान थे। उसे ज्ञात था कि सबके नेत्र मुझ पर ही जमे हुए हैं। सब मिलाकर उसका भाव था कि आदर की प्रदर्शित करने की कोई आवश्यकता नहीं।

७

आखिर मातवेई निकितिच भी आ गया और प्रवेशक, जो पतला दुबला लम्बी गर्दन वाला व्यक्ति था तथा कुछ तिरछी सी चाल से चलता था एवं जिसका निचला होंठ एक तरफ को उभड़ा हुआ था, पंचों के कमरे में आया। प्रवेशक ईमानदार था और विश्वविद्यालय में पढ़ चुका था किन्तु मदिरा पीने के स्वभाव के कारण वह किसी एक जगह अधिक नहीं टिक पाता था। तीन महीने पहिले एक काउन्टेस ने, जिसने कि उसकी पत्नी को आश्रय दिया था, उसे यह जगह दिला दी थी और इतने दिनों तक इस पर टिके रहने के कारण वह बहुत प्रसन्न था।

"भद्र पुरुषो ! क्या सब सज्जन यहाँ उपस्थित हैं ?" उसने अपना नाक-चश्मा नाक पर चढ़ाकर चारों तरफ देखते हुए पूछा।

"मेरे विचार से सब ही उपस्थित हैं।" प्रसन्न-वदन व्यापारी ने कहा।

"अच्छा, अभी ज्ञात हुआ जाता है।" और अपनी जेब से एक सूची निकाल कर वह उन लोगों की ओर कभी चश्मे में से और कभी उसके ऊपर से देखते हुए नाम पुकारने लगा।

"राज्य के सलाहकार ई० म० निकिफोरोव !"

"मैं हूँ।" भव्य दिखने वाले पुरुष ने कहा जो लॉ-कोर्ट के कार्य व्यापार में दक्ष था।

"इवान सेमियोनोविच—रिटायर्ड करनल।"

"उपस्थित।" एक पतले दुबले आदमी ने कहा जो कि अवकाश प्राप्त अधिकारी की पोशाक में था।

"द्वितीय संघ के व्यापारी प्योत्र वाकलाशोव !"

"हम सब तैयार हैं।" प्रसन्न-वदन व्यापारी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"रक्षक दल के लेफ्टीनेन्ट, प्रिन्स दिमीत्री नेखलूदोव।"

"मैं हूँ।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया।

प्रवेशक ने नक-चश्मे से ऊपर देखते हुए नेखलूदोव को विनम्रता और प्रसन्नता से झुककर नमस्कार किया मानो कि वह अन्यों की अपेक्षा उसे विशेष महत्त्व देने का इच्छुक हो।

"कप्तान यूरी दिमीत्रीएविच दानचन्को; ग्रिगोरी एफीमोविच कूलेशोव, व्यापारी," इत्यादि इत्यादि। दो को छोड़कर बाकी सब उपस्थित थे।

"सज्जनो अब कृपा कर आप न्यायालय में पधारिए।" प्रवेशक ने अपने हाथ को प्रिय ढङ्ग से हिलाते हुए द्वार की ओर इगित किया।

सब ही द्वार की ओर चल दिये—एक दूसरे को निकलने का मार्ग देते हुए। तब वे बरामदे से होते हुए न्याय-निकेत में चले गए।

न्याय-निकेत बड़ा और लम्बा था। एक ओर एक चबूतरा बना था जिस पर चढ़ने को तीन सीढ़ियाँ थीं। चबूतरे के ऊपर एक मेज थी जिस पर गहरे ही रङ्ग की झालरदार हरा कपड़ा बिछा था मेज के पीछे तीन बहुत ऊँची कुर्सियाँ रखी थीं जिनकी कि पीठिकाऐं ओक लकड़ी की थीं। उन पर पच्चीकारी हो रही थी। और उनके पीछे दीवाल पर चौखटे में मढा सम्राट का वर्दी पहिने हुए चित्र टँगा था। चित्र के रङ्ग बहुत चमकदार थे। चित्र में सम्राट का एक पैर आगे बढ़ा हुआ था और हाथ में तलवार थी। दाहिने कोने में एक बक्सा लटका था जिसमें कि ईसा मसीह की मूर्ति थी। उनके सिर पर काँटों का ताज रखा हुआ था। उसके नीचे एक मेज लगी हुई थी। गिरिजा घर में पढ़ने की मेज थी और उसी ओर पबलिक प्रोसीक्यूटर की डेस्क लगी हुई थी। बांई ओर डेस्क के सामने मन्त्री की मेज थी और उससे आगे जनता के पास ओक की लकड़ी का कटघरा बना हुआ था। उसमें बन्दियों के खड़े होनेका स्थान था तथा वह अभी तक खालीपड़ा हुआ था चबूतरे पर दाहिनी ओर पंचोंके लिये ऊँची पीठिकाकी कुर्सियाँ थीं और फर्श पर वकीलों के लिए मेजें लगी हुई थीं। ये सब वस्तुऐं न्याय-निकेत के सामने वाले भाग में थीं। जिन्हें कि पीछे वाले हिस्से से एक कठघरा अलग कर रहा था।

पिछले हिस्से में पंक्तियों में कुर्सियाँ लगी हुई थीं। सामने वाली कुर्सियों पर चार स्त्रियाँ जो कि या तो नौकरानियाँ थीं या मजदूरनियाँ—और दो मजदूर

बैठे थे। ये सब कमरे की शान से आश्चर्यचकित थे। और उनको साहस ही नहीं हो रहा था कि काना-फूसी से अधिक ऊँचे स्वर में बातें भी कर सकें।

पंचों के आते ही प्रवेशक अपनी तिरछी चाल से आया और सामने की ओर बढ़ कर ऊँचे स्वर में इस भाँति पुकार कर बोला मानो जो भी वहाँ उपस्थित थे वह उन्हें डराना चाहता हो।

उसने कहा "अदालत आ रही है !"

सब खड़े हो गये और न्यायालय के सदस्य चबूतरे पर चढ़े। सबसे पहिले प्रेसीडेन्ट आया। उसके बाद खिन्न सदस्य, जो अभी अपने साले से मिल कर आया था। उसके साले ने बतलाया कि मैं अपनी वहिन (सदस्य की पत्नी) से मिलकर अभी आया हूँ और उसने कहा है कि आज शाम को खाना नहीं बनेगा। इसलिए वह पहिले से भी अधिक खिन्न था।

"तब तो निश्चित ही हमें कहीं होटल वाले के पास जाना पड़ेगा।" साले ने हँसते हुए कहा।

"यह हँसने की बात नहीं है।" खिन्न सदस्य ने कहा और पहिले से भी अधिक खिन्न हो उठा।

तव, अन्त में, न्यायालय का तीमरा सदस्य मातवेई निकितिच भी जो सदा देर से आता था चबूतरे पर आया। उसके दाढ़ी थी और उसकी बड़ी गोल आँखों में थी करुणा की झलक। उसको पेट का श्लेष्मा था और अपने चिकित्सक की राय से उसने आज सुबह से नई चिकित्सा आरम्भ की थी जिसके कारण कि उसे आज नित्यप्रति से कहीं अधिक समय तक घर पर रुकना पड़ा था। प्लेटफार्म पर चढ़ते समय उसके मुख पर चिन्ता की रेखाएें थीं। वह अजीबोग़रीब ढङ्ग से अपने हृदय में उठने वाली सब शंकाओं का समाधान स्वयं कर लेता, और उसके इस स्वभाव के कारण उसका चेहरा उदास हो उठता। अभी २ उसने सोचा था कि इस नई चिकित्सा से मुझे लाभ होगा कि नहीं, और उसने निश्चय भी कर लिया कि यदि उसके मकान से यहाँ कुर्सी तक के डग एक तिहाई रह जाँय तो उसका श्लेष्मा दूर हो जाय। उसने छब्बीस डग भरे थे और कुर्सी तक आने में उसे सत्ता-ईसवाँ छोटा डग भरना पड़ा था।

सदस्यों और प्रेसीडेन्ट की आकृतियाँ उनकी पोशाकों तथा कालरों पर सुनहरी कशीदाकारी के कारण बहुत भव्य लग रही थीं। प्रतीत होता था कि उन्हें

स्वयं इस बात का ज्ञान था और वे मेज के पीछे रखी हुई ऊँची पीठिका वाली कुर्सियों पर शीघ्रता से बैठ गए मानो अपनी भव्यता से वे स्वयं अत्यधिक प्रभावित थे। मेज के ऊपर एक तिकोनी वस्तु रखी थी जिसके सिरे पर एक ईगल था, और दो काँच के गुलदस्ते, जिनकी शकल कुछ ऐसी थी जैसी कि रेस्टोरेण्टों में रखे जाने वाले उन बर्तनों की होती है जिनमें मिठाई रखी जाती है। एक कलमदान, कलम, सफेद कागज और हाल की छिली हुई पेन्सिलें भी मेज पर थीं।

पबलिक प्रोसीक्यूटर न्यायाधीशों के साथ आया। अपने सरकारी कागजातों के एक बस्ते को बगल में दबाए दूसरे को हाथ में हिलाते हुए वह जल्दी से आकर खिड़की के पास लगी अपनी मेज पर बैठ गया। वह चाहता था कि अभियोग आरंभ होने तक वह तैयार हो जाय इसलिए एक क्षण भी बिना नष्ट किए वह कागजों को देखने तथा उन्हें पढ़ने में तल्लीन हो गया। थोड़े ही दिन पहले वह इस पद पर नियुक्त हुआ था और इससे पहिले वह केवल चार बार मुद्दई बना था। वह अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी था और उसने अपना भविष्य बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। अतः उसके लिए यह आवश्यक था कि जो भी केस वह पकड़े उसमें दंड अवश्य दिलवाए। उसके मस्तिष्क में विष वाले मामले की रूपरेखा थी, उसने अपने भाषण का ढाँचा भी तैयार कर लिया था। फिर भी उसे कुछ बातें जानने की आवश्यकता थी और उन्हें वह शीघ्रता से नोट करने लगा।

चबूतरे के उल्टे हाथ पर मंत्री बैठा हुआ था। उसके सब कागज तैयार थे और समाचार-पत्र में छपे सेन्सर द्वारा निषिद्ध समाचार को वह पढ़ रहा था। समाचार उसे परसों ही प्राप्त हुआ था, तथा उसने सुना भी दिया था। वह चाहता था कि इस विषय पर दाढ़ी वाले से बातें की जाँय क्योंकि उन दोनों के विचार आपस में मेल खाते थे, किन्तु बातें करने से पूर्व वह एक बार उसे फिर से पढ़ लेना चाहता था।

८

कागजात देखने के बाद प्रेसीडेन्ट ने प्रवेशक और मंत्री से कुछ बातें पूछीं और उनका 'हाँ' में उत्तर मिलने पर उसने बंदियों को उपस्थित करने की आज्ञा दी।

तुरंत कठघरे के पीछे का द्वार खुला। सिरों पर टोपी लगाए, हाथों में नंगी तलवार लिए दो सिपाही बन्दियों को लेकर अन्दर आए। कैदी तीन थे : एक लाल बालों वाला पुरुष जिसके शरीर पर पीले धब्बे पड़े थे तथा दो स्त्रियां। पुरुष ने

जेली लबादा पहिन रखा था जो उसे देखते हुए बहुत लम्बा और ढीला था। उसके अँगूठे भिंचे हुए थे और बांह बगलों से चिपकी हुई। इस तरह से उसने लबादे की अत्यधिक लम्बी बाहों को हाथों के नीचे लटक जाने से रोक रखा था। न्यायाधीशों की ओर देखे बिना ही वह बेंच को घूरता हुआ उसके एक नुक्कड़ पर बैठ गया ताकि दूसरों के लिए काफी स्थान रिक्त रहा आवे। उसने प्रेसीडेन्ट पर अपनी आँखें जमा दीं और मुँह को इस तरह से हिलाने लगा मानो कुछ फुसफुसा रहा हो। जो स्त्री उसके बाद आई वह भी जेली लबादा पहिने हुए थी और जेली रूमाल उसके सिर पर बँधा हुआ था। वह प्रौढ़ा थी तथा उसके चेहरे का रंग भूरा था। न तो उसके भौंहें ही थीं और न बरौनियाँ ही। उसकी आँखें लाल थीं। वह बिल्कुल शांत दिखलाई दे रही थी। अपने लबादे को किसी वस्तु से पकड़कर उसने सावधानी से उठाया और बिना किसी शीघ्रता के बैठ गई।

तीसरी थी माशलोवा।

उसके आते ही न्यायालय के सब मनुष्यों के नेत्र उसकी ओर घूम गए और उसके श्वेत चेहरे, उसकी काली चमकीली आँखों, उसके उन्नत विशाल वक्ष पर, जो कि जेल के लबादे में भी उठा हुआ दिखलाई दे रहा था, आकर जम गए। और तो और सिपाही भी, जिसके पास से होती हुई वह निकली थी, उसकी तरफ से जब तक वह बैठ न गई अपनी दृष्टि नही हटा पाया। फिर मानो अपने अपराध से सजग हो उसने शीघ्र घूमकर अपने सामने की खिड़की की ओर देखा।

बन्दियों के बैठने तक प्रेसीडेन्ट रुका रहा और माशलोवा के बैठते ही वह मन्त्री की ओर मुड़ा।

तब नित्यप्रति का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ: अर्थात पंचों की गणना, अनुपस्थितों के ऊपर टिप्पणियाँ, उनसे वसूल करने के लिए अर्थदन्ड, जो कम कराना चाहते थे उनके बारे में निर्णय, और विशेष पंचों की नियुक्तियाँ।

कागज के टुकड़ों को मोड़कर काँच के फूलदान में रखने के बाद प्रेसीडेण्ट ने अपनी पोशाक के सुनहरी कामदार कफों को थोड़ा-थोड़ा उलट दिया जिससे कि उसकी बालों से भरी कलाई उघड़ गयी। फिर उसने एक-एक कर लाटरी डालनी और खोलनी शुरू की। उस समय उसकी मुद्रा एक जादूगर के समान लग रही थी। फिर कफों को नीचे कर प्रेसीडेण्ट ने पादरी से न्यायालय में शपथ दिलाने को प्रार्थना की।

पादरी का मुर्झाया मुख धुँधले पीले रंग का था और उसने ब्राउन रंग

का गाउन पहिन रखा था। वृद्ध पादरी के पास सोने का मैडिल और एक क्रास था। उन्हें लिए वह कासक+ के नीचे से अपनी न मुड़ने वाली टाँगों को घसीटता हुआ मूर्ति के नीचे रखी हुई गिरजाघर में रखी जानी वाली पढ़ने की मेज के पास आया। पंच उठकर उस मेज के चारों ओर जा कर खड़े हो गए।

"इधर आइए!" पादरी ने अपने स्थूल हाथों से क्रास को अपने सीने पर रखते हुए कहा और जब तक सब पंच पास न आ गए, वह रुका रहा।

पादरी को कार्यालय में छियालीस वर्ष हो गए थे और तीन वर्ष बाद वह अपनी जुबली मनाने वाला था। वह उसे उसी रूप में मनाना चाहता था जिसमें कि छोटे मुख्य पादरी ने थोड़े ही दिन पहिले मनायी थी। फौजदारी अदालत में वह तभी से था, जबसे कि न्यायालय खुला था। उसे गर्व था कि मैंने बीसों हजार व्यक्तियों को शपथ दिलायी हैं और इस पूज्य अवस्था के उपरांत भी मैं गिरजाघर की, पितृ-भूमि की, और अपने परिवार की भलाई के लिए परिश्रम करता हूँ। उसे आशा थी कि मैं अपने परिवार के लिए अपने मकान के अतिरिक्त तीस हजार रूबलों के ब्याजी कागजात दे जाऊंगा। उसके ध्यान में यह बात कभी नहीं आयी कि मेरी सी स्थिति के व्यक्ति के लिए यह उचित नहीं है कि वह इंजील पर शपथ दिलाए जिसमें कि शपथ दिलाना ही वर्जित है। इसका उसे कोई दुख नहीं था। विपरीत इसके उसे अपना यह पूर्व परिचित कार्य-व्यापार अत्यंत पसंद था क्योंकि इससे उसका अच्छे-अच्छे लोगों से परिचय हो जाता। यह क्या कम प्रसन्नता की बात थी कि अब ख्यातिप्राप्त एडवोकेट से उसकी जान पहिचान हो गयी, जिसने कि फूलदार टोपी वाली उस वृद्धा स्त्री से केस लड़ाने के दस हजार रूबल प्राप्त किए थे, इसी कारण से पादरी के हृदय में उसके प्रति अगाध सम्मान उत्पन्न हो गया था।

जब वे सब लोग चबूतरे की सीढ़ियों पर चढ़ गए तब पादरी ने अपना गंजा भूरा सिर गंदी चिकनी ओढ़नी के छेद में डालकर इधर-उधर घुमाया और अपने पतले बालों को ठीक कर वह पंचों की तरफ मुड़ा। "अब आप लोग अपनी दाहिनी भुजाओं को इस भाँति उठाइए और उंगलियों को ऐसे रखिए।" उसने अपने मोटे गड्ढेदार हाथ को उठाकर, अंगूठे और उंगलियों को इस प्रकार रखते हुए कँपायमान स्वर में कहा मानो वह किसी चीज की चुटकी भर रहा

+ गाउन के नीचे पहिनने का एक वस्त्र।

हो। "अब मेरे साथ दोहराइए ! 'मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर की, उसकी पवित्र इंजील की, और अपने पुत्र के प्राणदायक क्रॉस की सौगन्ध खाता हूँ और प्रण करता हूँ कि इस काम में जो कि" वह हर एक वाक्य पर रुकता हुआ बोला—"बाहें नीची मत होने दीजिए; इस भाँति रखिए।" उसने एक नवयुवक से कहा जिसने कि अपनी बाहें नीची करली थीं—"कि इस काम में जो कि····· "

गलमुच्छों वाले व्यक्ति ने, करनल ने, व्यापारी ने और थोड़े से लोगों ने अपनी बाहें और उँगलियाँ बहुत ऊँची तथा उसी ढंग से रखीं जैसे पादरी चाहता था, मानो उन्हें ऐसा करना पसंद हो। दूसरे इस कार्य को अनिच्छा और असावधानी से कर रहे थे। कुछेकों ने शब्दों को जोर से और निर्भीक स्वर में दोहराया, मानो कि उनके कहने का तात्पर्य था "कुछ भी हो मुझे कहना ही चाहिये और मैं कहूँगा ही।" बाकी दूसरे लोग बहुत धीमे स्वर में धीरे-धीरे कह रहे थे, मानो घबड़ाकर पादरी का साथ देने की शीघ्रता कर रहे हों। कुछेकों ने उँगलियों को इतना कस कर दबा रखा था जैसे उन्हें डर हो कि उनकी चुटकी में से कोई अदृश्य वस्तु जिसे उन्होंने दबा रखा है गिर पड़ेगी। कुछ उन्हें खोल-मूँद रहे थे। पादरी को छोड़कर बाकी सबको यह भद्दा लग रहा था किंतु पादरी को पूरा विश्वास था कि वह एक बहुत ही लाभदायक और महत्वपूर्ण कर्त्तव्य का पालन कर रहा है।

जब शपथ-ग्रहण हो चुकी तब प्रेसीडेण्ट ने पंचों से प्रार्थना की कि वे अपना सरपंच चुन लें; और दरवाजे पर भीड़ करते हुए सब लोग वाद-विवाद-प्रकोप में चले गए। लगभग सभी व्यक्ति वहाँ पहुँचते ही सिगरेट पीने लगे। किसी ने उस भव्य पुरुष का नाम लिया और वह एकमत से चुन लिया गया। तब पंचों ने अपनी सिगरेटें बुझाकर फेंक दीं तथा न्याय-निकेत में लौट आए। उस भव्य-पुरुष ने प्रेसीडेण्ट को जाकर सूचना दी कि मैं सरपंच चुन लिया गया हूँ और फिर सब लोग ऊँची पीठिकाओं वाली कुर्सियों पर बैठ गए।

हर चीज निर्विघ्न, फुर्ती व सत्वरता से और पक्षपातविहीन चल रही थी। यह यथार्थता, सुव्यवस्था और गंभीरता उन भाग लेने वाले लोगों के चित्त को प्रसन्न करती। इससे उनके इस विचार को शक्ति मिलती कि हम जनता के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। नेखलूदोव को भी ऐसा ही लगा।

पंचों के बैठते ही प्रेसीडेन्ट ने उनके अधिकारों, कृतज्ञताओं, और उत्तर-दायित्वों के ऊपर एक भाषण दिया। भाषण देते समय वह एकसी स्थिति में नहीं

रहा। कभी दाँये घूमता कभी बाँये, कभी पीछे फिर कभी कुर्सी के हत्थों पर और कभी कागजों को सीधे रखता, कभी पेंसिल पकड़ता तो कभी चाकू हाथ में ले लेता गरज यह कि उससे सीधा खड़ा नहीं रहा गया।

उसने बतलाया कि मेरे द्वारा आप लोग बंदियों से प्रश्न कर सकते हैं, कागज पेन्सिल का प्रयोग कर सकते हैं और साक्षी में पेश की गयी चीजों का परीक्षण कर सकते हैं। आप लोगों का कर्तव्य है कि आप सत्य का पक्ष लें, असत्य का नही। उत्तरदायित्व का अर्थ है कि वाद-विवाद की गुप्तता समाप्त नहीं हो अथवा बाहरी लोगों से उस विषय में सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जाय अन्यथा ऐसा करने वालों को दण्ड दिया जा सकता है। हर कोई इसे बड़े आदर और ध्यान से सुन रहा था। अपने चारों तरफ ब्रांडी की सुगंध उड़ाता और हिचकियाँ लेता हुआ व्यापारी प्रत्येक वाक्य पर अनुमोदन में अपना सिर हिला रहा था।

९

अपना भाषण समाप्त करने के बाद प्रेसीडेण्ट अभियुक्तों की ओर मुड़ा "सीमन कारतिंकिन ! खड़े हो जाओ।"

सीमन अपने ओठों को और भी तेजी से हिलाता हुआ उछल पड़ा।

"तुम्हारा नाम ?"

"सीमन पेत्रोविच कारतिंकिन।" उसने तेजी से कड़कते स्वर में कहा। उसका उत्तर तैयार था।

"किस श्रेणी के हो ?"

"किसान।"

"कौन-सी सरकार, जिला और प्रदेश ?"

"तुला सरकार, क्रापीवन्सकाई जिला, कपाईग्रान्सकी प्रदेश ; गाँव बोरकी।"

"तुम्हारी अवस्था ?"

"तेतीस। मैं पैदा हुआ था सन् एक हजार आठ सौ.........."

"धर्म ?"

"रूसी धर्म, सनातनी।"

"विवाहित ?"

"ओह नहीं सरकार।"

"तुम्हारा पेशा ?"

"मैं होटल मौरीतानिया में दास था।"

"क्या तुम पर पहिले कभी अभियोग चल चुका है ?"

"नहीं सरकार, कभी नहीं। क्योंकि हम पहले·········"

"यानी तुम पर कभी अभियोग नहीं चलाया गया ?"

"भगवान बचाए ! कभी नहीं।"

"क्या तुम्हें अभियोग-तालिका मिल गयी ?"

"जी हाँ ! मेरे पास है।"

"बैठ जाओ।"

"येवफिमीया इवानोव्ना बोचकोवा।" प्रेसीडेण्ट ने दूसरे बंदी की तरफ मुड़ते हुए कहा।

किंतु सीमन बोचकोवा के सामने खड़ा ही रहा।

"कार्तिकिन, बैठ जाओ।"

किंतु कार्तिकिन तब ही बैठा जब अपने सिर को झुकाए प्रवेशक ने अमानुषी चौड़ी खुली आँखों से उसकी तरफ देखा और दौड़ते हुए उसके पास आकर कान में बोला "बैठ जाओ ! बैठ जाओ !" और तब वह उसी तेजी से बैठ गया जिससे खड़ा हुआ था। उसने अपना लबादा अपने चारों तरफ लपेट लिया और फिर अपने मुंह को चुपचाप चलाने लगा।

"तुम्हारा नाम ?" प्रेसीडेन्ट ने थकान से आह लेते हुए कहा। उसने बंदिनी की ओर नहीं वरन् एक कागज की ओर देखा जो उसके सामने रखा हुआ था। प्रेसीडेण्ट अपने काम में इतना दक्ष था कि काम का शीघ्र निपटारा करने के लिए वह एक साथ दो काम करता था।

बोचकोवा तेतालीस वर्ष की थी और कोलोमा नगर से आयी थी। वह भी होटल मौरीतानिया में नौकरी कर चुकी थी।

"मुझ पर पहले कोई मुकदमा नहीं चलाया गया और अभियोग-तालिका मिल चुकी है।" उसने साहसिक स्वर में उत्तर दिया। उसके उत्तर का रुझान कुछ ऐसा था मानो वह अपने हर उत्तर के पीछे जोड़ना चाहती थी "हाँ ! मेरा नाम येवफिमीया बोचकोवा है और मुझे अभियोग-तालिका मिल चुकी है;

ग्रौर न तो मुझे उसकी चिंता है, प्रत्येक इसे जानता है, ग्रौर न मैं कोई बदतमीजी ही सहन कर सकती हूँ।"

ग्रंतिम प्रश्न का उत्तर दे वह स्वयं ही बैठ गयी। उसने प्रतीक्षा नहीं की कि कोई उससे बैठने को कहे।

"तुम्हारा नाम ?" नारी-प्रेमी प्रेसीडेण्ट ने विशेष विनम्रता से तीसरे बंदी की ग्रोर मुड़ते हुए पूछा "तुमको उठना होगा।" उसने माशलोवा को बैठा देखकर बड़ी मृदुलता से कोमल स्वर में कहा।

माशलोवा तुरंत उठ खड़ी हुई ग्रौर ग्रपना वक्ष तानकर उसने प्रेसीडेण्ट की ग्रोर देखा; उसकी मुस्कुराती काली ग्राँखों में सजगता का विचित्र भाव था।

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"ल्यूबोव।" उसने तुरंत उत्तर दिया।

जब बंदियों से प्रश्न किए जा रहे थे तब उनको देखकर नेखलूदोव को ग्रपना नक-चश्मा पहिनना पड़ा।

"नहीं ! यह ग्रसम्भव है।" उसने बंदिनी की ग्रोर से ग्राँखें न हटाते हुए सोचा। "ल्यूबोव ! वह नहीं हो सकती है ?" उसने उसका उत्तर सुनकर मन-ही-मन सोचा।

प्रेसीडेण्ट प्रश्न करने ही वाला था कि चश्मे वाले सदस्य ने क्रोध में कुछ कानाफूसी कर उसके प्रश्न में बाधा डाली। प्रेसीडेण्ट ने सिर हिलाया ग्रौर बंदिनी की ग्रोर मुड़ा।

"यह क्या बात है ?" वह बोला "यहाँ तुम्हारा नाम ल्यूबोव नहीं लिखा गया है।"

बंदिनी चुप रही ग्रायी।

"मैं तुम्हारा सही नाम जानना चाहता हूँ।"

"बपतिस्मा के समय तुम्हारा क्या नाम रखा गया था ?" क्रोधित सदस्य ने पूछा।

"पहले मुझे कातरीना कहते थे।"

"नहीं, यह नहीं हो सकता।" नेखलूदोव ने मन-ही-मन सोचा। उसे विश्वास हो गया था कि यह वही थी। वही लड़की—ग्रर्ध-रक्षिता ग्रर्ध-सेविका, जिसके साथ एक बार मैं प्रेम में—सच्चे प्रेम में था ग्रौर जिसको कि मैंने वासना में ग्रंधे हो क्षण भर में भ्रष्ट कर त्याग दिया था तथा फिर उसकी ग्रोर

ध्यान भी नहीं किया; क्योंकि उसकी स्मृति बहुत दुखदायी होती, वह मुझे स्पष्टतया अपराधी घोषित कर देती, सिद्ध कर देती कि मैंने भी, जो अपनी सत्यता पर इतना गर्व करता हूँ, इस स्त्री के साथ द्रोही और कलंकियों के समान व्यवहार किया है।

हाँ, वह यही थी। उसे अब उसके मुख पर वह विचित्र अनिवर्णनीय आत्माभिमान स्पष्ट दिखलायी दे रहा था जो उसके तथा दूसरों के मुखों पर अंतर स्पष्ट करता था। वह कोई विचित्र ही वस्तु थी जो सब उसी की थी और किसी दूसरे में मिल नही सकती थी। चेहरे पर अस्वस्थ पीलिमा और मोटाई होते हुए भी वह वहाँ विद्यमान थी। उसके विचित्र मधुर व्यक्तित्व में, उन ओठों में, उसकी आँखों की न्यून कटाक्षों में, स्वर में, विशेषतया उसकी सरल मुस्कान तथा मुख एवं तन में—सबमें उत्साह का भाव वर्तमान था।

"तुमको यही बतलाना था।" प्रेसीडेण्ट ने कहा और फिर कोमल स्वर में बोला "तुम्हारे गोत्र का नाम ?"

"मैं वर्णशङ्कर हूँ।"

"अच्छा ! तो धर्म-पिता के ऊपर तुम्हारा नाम नहीं रखा गया ?"

"जी हाँ ! मिखाईलोव्ना !"

"और इसने अपराध क्या किया है ?" नेखलूदोव सोचता रहा। उसे बड़ी उत्सुकता हो रही थी।

"तुम्हारा पारिवारिक नाम—मेरा मतलब तुम्हारे उपनाम से है ?" प्रेसीडेण्ट ने पुनः पूछा।

"मुझे मेरी माँ के उपनाम माशलोवा से बोलते थे।"

"कौन-सी श्रेणी ?"

"नगर की गरीब मध्यमवर्गीय श्रेणी।"

"धर्म-सनातन ?"

"सनातन।"

"पेशा ? तुम्हारा पेशा क्या था ?

माशलोवा चुप रही आयी।

"तुम काम क्या करती थीं ?"

"मैं एक व्यवसाय करती थी।"

"कौन सा व्यवसाय ?" चश्मे वाले सदस्य ने कठोरता से पूछा।

"आप स्वयं जानते हैं।" कहते हुए वह मुस्कुरा दी। फिर शीघ्रता से चारों ओर दृष्टि डालते हुए वह प्रेसीडेन्ट की ओर देखने लगी।

उसके चेहरेके भावों में कुछ इतनी असाधारणता थी और उसके कहे हुए शब्दों के अर्थों उसकी इस मुस्कान और उसकी शीघ्र दृष्टि में, जो उसने कमरे के चारों ओर फेंकी थी, इतनी भयंकरता और करुणा थी कि प्रेसीडेन्ट लज्जित हो गया और निकेत में क्षण भर के लिये सन्नाटा छा गया।

इस चुप्पी को जनता में से किसी एक ने हँसकर और दूसरे ने "सि सि..." कह कर भंग कर दिया। प्रेसीडेन्ट ने ऊपर देखकर आरंभ किया।

"तुम पर पहिले भी कभी अभियोग चल चुका है ?"

"कभी नहीं।" माशलोवा ने धीमे से उत्तर दिया और एक आह भरी।

"क्या तुम्हें अभियोग-तालिका मिल गई ?"

"जी हाँ।" उसने उत्तर दिया।

"बैठ जाओ।"

बन्दिनी अपनी कुरती को ठीक से उठाने के लिए इस भाँति पीछे झुकी, जैसे एक अभिजात महिला अपनी ट्रेन पकड़ती है—और अपने छोटे श्वेत हाथों को लबादे की बाहों में छिपाते हुए वह बैठ गई। उसकी आँखें अभी भी प्रेसीडेन्ट पर स्थिर थीं।

साक्षियों को बुलाया गया, कुछोंको लौटा दिया गया। डाक्टर, जिसे सुदक्ष व्यक्ति की भाँति काम करना था, चुना गया और उसे न्यायनिकेत में बुलाया गया।

तब मन्त्री खड़ा होकर अभियोग पढ़ने लगा। वह स्पष्ट रूप से व जोर से पढ़ रहा था (यद्यपि ल और र को एक समान ही बोलता था) किन्तु पढ़ इतनी शीघ्रता से रहा था कि शब्द एक दूसरे में घुस जाते और इससे अभियोग एक समझ में न आने वाला भयानक हम्बग बन गया।

न्यायाधीश कभी अपनी कुर्सियों के एक हत्थे पर झुकते, तो कभी दूसरे पर, तो कभी मेज पर, फिर पीठ से कुर्सी का सहारा ले लेते, कभी आँखें बन्द कर लेते, तो कभी खोल लेते और एक दूसरे से बहुत धीमे स्वर में बातें करते। एक सिपाही तो कई बार जम्हाई लेते-लेते रुक गया।

बन्दी कार्तिन्किन ने अपना मुँह चलाना अभी तक बन्द नहीं किया। बोचकोवा बिल्कुल चुप और सीधी बैठी हुई थी, सिर्फ कभी २ रूमाल से बँधे सिर को खुजा लेती थी।

माशलोवा रीडर की ओर देखती हुई अविचलित बैठी रही। कभी २ वह तनिक हिल पड़ती मानो कुछ उत्तर देना चाहती हो। कभी वह लज्जा से आरक्त हो उठती, गहरी निश्वासें भरती, अपने हाथों की स्थिति बदलती, चारों ओर देखती, और फिर रीडर पर अपने नेत्र जमा लेती।

नेखलूदोव सामने वाली पंक्ति में अन्तिम से दूसरी ऊँची पीठिका वाली अपनी कुर्सी पर से माशलोवा को ध्यान से देख रहा था। उसने अपना नक-चश्मा उतार रखा था। उसकी आत्मा में एक भयंकर चुभन-पूर्ण द्वन्द्व चल रहा था।

१०

अभियोग इस प्रकार था :

" १७ जनवरी १८८–, साईबेरिया के कुरगान नगर के द्वितीय-संघ के व्यापारी फरापोन्त स्मेलकोव की एक दिन होटल मोरीतानिया में एकाएक मृत्यु होगयी।

" चौथे जिले के स्थानीय पुलिस डाक्टर ने इस बात के प्रमाण दिये कि मृत्यु अधिक शराब पी लेने से दिल के फट जाने के कारण हुई है। उक्त स्मेलकोव की लाश दफ़ना दी गयी।

" कुछ दिनों बाद स्मेलकोव का नगर-निवासी मित्र तिमोखीन एक टूर से पीतर्सबर्ग लौटा। उसने उन सारी परिस्थितियों की जानकारी की कि स्मेलकोव की मृत्यु कैसे हुई। फिर उसने सूचना दी कि मुझे संदेह है कि मेरे मित्र का धन चुराने के लिए उसे विष दिया गया है।

" उसके संदेह की पुष्टि एक प्रारंभिक खोज से होती थी, जिससे मालुम होता था—

" (१) कि स्मेलकोव की मृत्यु से कुछ समय पूर्व उसे बैंक से ३८०० रूबल मिले थे, किन्तु मृतक की तलाशी के समय उस पर कुल ३१२ रूबल १६ कोपेक निकले।

"(२) कि स्मेलकोव ने अपनी मृत्यु वाली रात और उससे पहिला सारा दिन होटल मोरीतानिया के अपने कमरे और वेश्यागृह में लूबका (कातरीना माशलोवा) नामक वेश्या के साथ बिताया। होटल के उसके कमरे में उसकी प्रार्थना पर,

उसकी अनुपस्थिति में कातरीना माशलोवा वेश्यागृह से रुपये लेने गयी। येवफीमिया बोचकोवा और सीमन कार्तिन्किन, जो कि दोनों होटल के नौकर हैं, की उपस्थिति में माशलोवा ने चमड़े की अटैची जिसमें कि रुपये रखे थे खोली और बन्द की। स्मेलकोव ने उसको चाभी स्वयं दी थी। जब अटैची खोली गयी बोचकोवा और कार्तिन्किन दोनों ने इस बात की पुष्टि की कि उन्होंने सौ-सौ रूबलों के नोटों के बन्डल अटैची में रखे देखे थे।

"(३) कि वेश्यागृह से होटल मोरीतानिया लौटते समय स्मेलकोव के साथ वेश्या लूबका आई। उसने कार्तिन्किन की सम्मति से कार्तिन्किन द्वारा दिया गया एक सफेद पाउडर एक ग्लास ब्राँडी में बुरका। वही ब्राँडी स्मेलकोव को पीने को दी गयी।

"(४) कि उस दिन प्रातः लूबका (कातरीना माशलोवा) ने अपनी स्वामिनी (गवाह कितायेवा, वेश्यालय की स्वामिनी) को एक हीरे की अँगूठी बेची थी जिसके बारे में माशलोवा ने बतलाया था कि वह अँगूठी स्मेलकोव ने उसे भेंट की थी।

"(५) कि स्मेलकोव की मृत्यु के दूसरे दिन भठियारिन येवफीमिया बोचकोवा ने १८०० रूबल बैंक में करेन्ट एकाउन्ट में जमा कराए थे।

"(६) स्मेलकोव के शव की डाक्टरी जाँच, चीरफाड़ और उसके शरीर के पाचन यन्त्रों की रसायनिक विवेचना से भी ज्ञात हुआ है कि उसमें विष विद्यमान था। इससे सिद्ध होता है कि उसकी मृत्यु विष देने के कारण हुई थी।

"माशलोवा, बोचकोवा और कार्तिन्किन सभी अभियुक्त अपने को निरपराध सिद्ध करते थे। माशलोवा ने बतलाया था कि जब व्यापारी स्मेलकोव उसके वेश्यालय में था जहाँ वह काम करती थी—जैसा कि वह बतलाती है—उसे स्मेलकोव ने होटल मोरीतानिया से कुछ रुपए लाने के लिए भेजा। और उसने व्यापारी द्वारा दी हुई ताली से अटैची खोलकर चालीस रूबल निकाले—जितने कि उसे लाने को कहा गया था। उसने इससे अधिक कुछ नहीं निकाला। बोचकोवा और कार्तिन्किन जिनकी उपस्थिति में उसने अटैची का ताला खोला और बन्द किया, उसके इस बयान की साक्षी दे सकते हैं।

"फिर उसने साक्षी दी कि जब वह होटल में दुबारा आयी तब सीमन कार्तिन्किन के प्रोत्साहन पर उसने स्मेलकोव को कोई पाउडर, जिसे कि उसने

नींद लाने वाली दवा समझा था, एक गिलास ब्राँडी में मिलाकर दिया। उसे आशा थी कि वह सो जायगा और इस तरह से उससे उसका पिण्ड छूट जायगा। जहाँ तक कि अँगूठी का प्रश्न था स्मेलकोव ने उसे पीटा था जिस पर वह रोयी और वहाँ से चले जाने की धमकी दी। इस पर स्मेलकोव ने वह अँगूठी स्वयं उसे दी।

"जिरह में अभियुक्ता येवफीमिया बोचकोवा ने वतलाया कि वह खोये हुए धन के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानती है और कि वह स्मेलकोव के कमरे में गयी भी नहीं थी, केवल लूबका अकेली ही वहाँ व्यस्त रही; कि अगर कोई चीज चुराई गयी है तो वह लूबका ने ही चुराई होगी; और उस समय चुराई होगी जब कि वह व्यापारी से ताली लेकर रुपया लेने गयी थी।

इस बात पर माशलोवा विचलित हो उठी। उसने अपना मुँह खोला और बोचकोवा की ओर देखा।

"जब" मन्त्री ने अपना कथन प्रारम्भ रखा "एक हजार आठ सौ रूबलों की बैंक की रसीद बोचकोवा को दिखलाई गयी और उससे पूछा गया कि यह धन उसे कहाँ से प्राप्त हुआ तो वह बोली कि यह बारह वर्षों की उसकी अपनी और सीमन की कमाई है जिसके साथ वह विवाह करने वाली है।

"अभियुक्त सीमन कार्तिन्किन की जब पहिले पहल जाँच हुई तब उसने स्वीकार किया था कि उसने और बोचकोवा ने माशलोवा के प्रोत्साहन पर रुपए चुराए और आपस में तीनों ने बराबर बाँट लिए। रुपए उस समय चुराये गए थे जब माशलोवा वेश्यालय से अपने साथ ताली लेकर आई थी।

यहाँ माशलोवा पुनः विचलित हो उठी और लज्जा से उसका चेहरा गहरा लाल होगया। वह खड़ी होकर बोलने भी लगी कि प्रवेशक ने उसे रोक दिया।

"अन्त में" मंत्री पढ़ता रहा "कार्तिन्किन ने स्वीकार कर लिया कि उसने स्मेलकोव को नींद में अचेत करने के लिए पाउडर दिया था। पुनः जाँच में उसने स्पष्ट अस्वीकार कर दिया कि रुपयों के चुराने या माशलोवा को पाउडर देने में उसका कोई हाथ था और कि उस सब की उत्तरदायी अकेली माशलोवा थी। बोचकोवा ने जो रुपया बैंक में जमा कराया था उसके विषय में उसने भी वही कहा जो बोचकोवा ने कहा था अर्थात् कि यह धन होटल में ठहरने वालों ने उन दोनों को उनकी बारह वर्ष की नौकरी के काल में पुरस्कार स्वरूप दिया था।

तब वन्दियों की आमने-सामने होने के समय की जिरह, गवाहों की शपथ-पूर्वक दी गयी साक्षियाँ, और विशेषज्ञों की सम्मतियाँ पढ़ी जाने लगी। अभियोग-पत्र का उपसंहार था :

"पूर्वकथनानुसार बोरकी गाँव के ३३ वर्षीय किसान सीमन कार्तिन्किन, तेतालीस वर्षीय दीन मध्यमवर्गीय येवफीमिया बोचकोवा और सत्ताईस वर्षीय शहरी दीन मध्यमवर्गीय कातरीना माशलोवा–तीनों पर यह दोष लगाया जाता है कि इन्होंने मिलकर उक्त व्यापारी का रुपया और हीरे की अँगूठी चुरायी जिनका कि मूल्य ढाई हजार रूवल होता है और उक्त व्यापारी के प्राण लेने की इच्छा से, ताकि उनका अपराध प्रगट न हो सके, उसे विष पिलाया। परिणाम यह हुआ कि वह मर गया।

"इस अभियोग के लिए पेनल कोड की धारा १४५३ है; इसलिए, और फौजदारी न्यायालय के कानून की धारा २०१ के अनुसार किसान सीमन कार्तिन्किन, दीन मध्यमवर्गीय येवफीमिया बोचकोवा, और शहरी दीन मध्यमवर्गीय कातरीना माशलोवा यहाँ डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में अपराधी के रूप में पंचों के सामने न्याय विचार के लिए खड़े है।"

इस प्रकार मन्त्री ने अभियोग-कथन का लम्बा कार्य समाप्त किया और कागजों को मोड़कर अपने लम्वे वालों को हाथों से काढ़ता हुआ कुर्सी पर बैठ गया। सबने चैन की साँस ली कि अब खोजबीन प्रारम्भ होगी और सब स्पष्ट हो जायगा तथा न्याय संतुष्ट हो जायगा। सिर्फ नेखलूदोव ही इस भावना से आविर्भूत नहीं हुआ। वह इस विचार से भयभीत हो उठा था कि माशलोवा, जो कि आज से दस वर्ष पूर्व जब वह उसे मिली थी कितनी भोली और आकर्षक थी, क्या कर गुजरी।

११

जब अभियोग का पढ़ना समाप्त हो गया तो प्रेसीडेन्ट ने सदस्यों से परामर्श लिया, फिर वह कार्तिन्किन की ओर मुड़ा। उस समय उसके मुख पर ऐसा भाव प्रकट हो रहा था कि अब हम सारी सच्चाई—उसकी छोटी से छोटी बात भी, जान जायेंगे।

"किसान सीमन कार्तिन्किन।" उसने बाँयी ओर झुकते हुए कहा।

सीमन कार्तिन्किन उठकर खड़ा हो गया और भुजाएँ नीचे फैलाते हुए समस्त शरीर को आगे झुका कर मुँह को चलाता हुआ चुप रहा आया।

"तुम पर आरोप है कि १६ जनवरी १८८--को येवफीमिया बोचकोवा और कातरीना माशलोवा के साथ तुमने एक व्यापारी स्मेलकोव की कपड़े रखने की चमड़े की अटेची में से रुपए चुराए। फिर संखिया लाकर तुमने कातरीना माशलोवा को फुसलाया कि वह एक गिलास ब्राँडी में संखिया डाल दे और उसे पिलादे जिसके फलस्वरूप स्मेलकोव की मृत्यु हो गई। क्या तुम अपराध स्वीकार करते हो?"

"नहीं! बिल्कुल नहीं! क्योंकि हमारा तो काम ही अतिथियों की सेवा करना है, और..."

"यह सब तुम बाद में कह सकते हो। क्या तुम अपराध स्वीकार करते हो?"

"ओह नहीं! श्रीमान् मैं तो..."

"यह तुम हमें पीछे बतलाना। क्या तुम अपराध स्वीकार करते हो?" प्रेसीडेन्ट ने शांति और दृढ़ता से कहा।

"मैं ऐसे कार्य नहीं कर सकता क्योंकि...।"

प्रवेशक ने फिर सीमन कार्तिन्किन के पास जाकर शोकजनक फुसफुसाहट से उसे रोका।

जिस हाथ में प्रेसीडेन्ट ने कागज ले रखा था उसे हटाया और कोहनी को ऐसे गर्वीले ढंग से रखा मानो कि वह कह रहा हो "यह समाप्त।" वह येवफीमिया बोचकोवा की ओर मुड़ा।

"येवफीमिया बोचकोवा, तुम पर दोष लगाया गया है कि १७ जनवरी १८८--को होटल मोरीतानिया में तुमने, सीमन कार्तिन्किन और कातरीना माशलोवा के साथ व्यापारी स्मेलकोव की अटेची में से रुपए और अँगूठी चुराई है और रुपयों को आपस में बाँट कर स्मेलकोव को विष दे दिया जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई। क्या तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो?"

"मेरा कोई अपराध नहीं है!" बन्दिनी ने साहस और दृढता से कहा—"मैं कमरे में घुसी भी नहीं किन्तु जब यह भीतर गई तब स्वयं इसने ही सब कार्य किया।"

"यह तुम बाद में कह सकती हो।" प्रेसीडेन्ट ने शांति और दृढ़ता से कहा—"अर्थात् तुम अपराध नहीं स्वीकार करती हो ?"

"मैंने न तो रुपया लिया, न शराब पिलाई, और न उसके कमरे में ही गई। यदि मैं भीतर गई होती तो इसे ठोकर मार कर बाहर निकाल देती।"

"अर्थात् तुम अपराध स्वीकार नहीं करती हो ?"

"कभी नहीं।"

"बहुत अच्छा।"

"कातरीना माशलोवा !" प्रेसीडेन्ट ने तीसरे वन्दी की ओर मुड़कर कहा—"तुम्हारे विरुद्ध अभियोग है कि वेश्यालय से व्यापारी स्मेलकोव की अटेची की ताली के साथ जब तुम आईं तब तुमने उसकी अटेची में से रुपए और अँगूठी चुराई।" वह अपने बाँई ओर के सदस्य की ओर झुकते हुए, जो कि उसके कान में कह रहा था कि साक्षी में प्रस्तुत किया गया एक जार खो रहा है, ऐसे बोला मानो कि यह पाठ उसने घोट रखा हो। उसने दोहराया—"उसकी अटेची में से कुछ रुपए और अँगूठी चुराई और उसको आपस में बाँट लिया। तब स्मेलकोव के साथ होटल मोरीतानिया लौटने पर तुमने उसको पेय में विष दिया जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई। क्या तुम अपराध स्वीकार करती हो ?"

"मेरा कोई अपराध नहीं है।" उसने जल्दी-जल्दी कहना प्रारम्भ किया। "जैसा मैं कह चुकी हूँ, फिर कहती हूँ मैंने नहीं लिया—मैंने नहीं लिया—मैंने कुछ भी नहीं लिया और अँगूठी उसने मुझे स्वयं दी।"

"तुम अस्वीकार करती हो कि तुमने दो हजार पाँच सौ रूवल चुराए ?" प्रेसीडेन्ट ने पूछा।

"मैं पहिले ही कह चुकी हूँ कि सिवाय चालीस रूबलों के मैंने कुछ नहीं लिया।"

"अच्छा, क्या तुम यह स्वीकार करती हो कि तुमने व्यापारी स्मेलकोव को शराब में पाउडर पिलाया था ?"

"हाँ ! यह मैंने किया। मैंने तो इन लोगों की बात पर भरोसा भर किया था कि यह पाउडर कोई हानि नहीं पहुँचाएगा—यह तो केवल नींद लाने के लिए है। यह तो मेरे ध्यान में भी नहीं था और न मेरी ऐसी कोई इच्छा थी...।भगवान मेरा साक्षी है ऐसा मेरा अभिप्राय कभी नहीं था।" वह बोली।

"अर्थात् तुम कहती हो कि तुमने रुपए और अँगूठी चुराने का अपराध नही किया लेकिन यह स्वीकार करती हो कि तुमने उसे पाउडर दिया।" प्रेसीडेन्ट बोला।

"हाँ, मैं इसे स्वीकार करती हूँ, किन्तु मैंने समझा था कि यह पाउडर सुलाने की दवा है। मैंने सिर्फ उसे सुलाने के लिए दिया था। इससे अधिक बुरा न तो मैंने कभी समझा और न चाहा।"

"बहुत अच्छा।" प्रेसीडेन्ट ने प्राप्त परिणाम से सन्तुष्ट होते हुए कहा—"अब हमें बतलाओ कि यह सब कैसे हुआ ?" और मेज पर हाथों को रख वह कुर्सी में पीछे धसक गया "इसके बारे में जो कुछ तुम्हें ज्ञात है, बतलाओ। उदार हृदय से यदि पूर्ण रूपेण स्वीकार करोगी तो उसमे तुम्हें ही लाभ होगा।"

माशलोवा प्रेसीडेन्ट की ओर चुपचाप सीधी देखती रही।

"बतलाओ यह सब कैसे हुआ।"

"यह कैसे हुआ।" माशलोवा ने एकाएक जल्द-जल्दी बोलना शुरू किया, "मै होटल में आई और मुझे कमरा दिखलाया गया। वह उस कमरे में बहुत पिये पड़ा था।" उसने शब्द 'वह' इस तरह दोहराया कि उसकी चौड़ी खुली आँखों में भय छा गया "मैं लौट जाना चाहती थी किन्तु उसने जाने न दिया।" वह रुक गई मानो कि सूत्र उसके हाथ से निकल गया हो या कुछ और स्मरण हो आया हो।

"फिर ?"

"फिर क्या ? मैं थोड़ी देर रुकी और घर वापिस लौट आई।"

इस बात पर पब्लिक प्रोसीक्यूटर एक कोहनी पर झुकता हुआ भद्दे ढंग से थोड़ा-सा उठा।

"आप कोई प्रश्न करना चाहते है ?" प्रेसीडेन्ट ने पूछा। और 'हाँ' में उत्तर पाने पर उसने प्रोसीक्यूटर को बोलने की अनुमति देने की मुद्रा बनाई।

"मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या बन्दी सीमन कार्तिन्किन से पहिले से परिचित था ?" पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने माशलोवा की ओर बिना देखे ही कहा। प्रश्न करने के बाद उसने होंठ भीचे और गुर्राया।

प्रेसीडेन्ट ने प्रश्न दोहरा दिया। माशलोवा ने पब्लिक प्रोसीक्यूटर की तरफ घूम कर भयभीत दृष्टि से देखा।

"सीमन से ? हाँ !" वह बोली।

"मैं यह जानना चाहूँगा कि बन्दी का कार्तिन्किन मे मेल-मिलाप था। क्या वे कभी-जभी मिलते भी रहने थे ?"

"कैसा, क्या ?...वह मुझे अतिथियों के लिए निमंत्रित करता था। इसे मेल-मिलाप नहीं कहा जा सकता।" माशलोवा ने उत्सुकता से प्रेसीडेन्ट पर से पब्लिक प्रोसीक्यूटर की ओर, और फिर प्रेसीडेन्ट की ओर देखते हुए कहा।

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि कार्टिन्किन अतिथियों के लिए माशलोवा को ही क्यों बुलाता था और किसी दूसरी लड़की को क्यों नहीं ?" पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने चातुर्य से मुस्कुराते हुए अधखुली आँखों से कहा।

"मुझे नहीं ज्ञात ! यह मैं कैसे जान सकती हूँ ?" माशलोवा ने चारों ओर भयभीत दृष्टि डालकर क्षण भर के लिए नेखलूदोव पर दृष्टि जमाते हुए कहा—"वह जिसे चाहता उसे बुलाता।"

"क्या यह हो सकता है कि इसने मुझे पहिचान लिया है ?" नेखलूदोव ने सोचा और उसकी मुखाकृति पर रक्त झलक आया। किन्तु माशलोवा के लिए उसमें और दूसरों में कोई अन्तर नहीं था। वह मुड़ी और उसने उत्सुकता से प्रोसीक्यूटर पर दृष्टि जमा दी।

"अर्थात् बन्दिनी इस बात को स्वीकार करती है कि उसकी कार्तिन्किन से घनिष्टता थी ? बहुत ठीक, मुझे अब कुछ नहीं पूछना है।"

और पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने डेस्क से अपनी कोहनी हटाली और कुछ लिखने लगा। वास्तव में वह कुछ लिख नहीं रहा था किन्तु वह सम्पादकों और वकीलों को देखकर अपनी व्याख्या के शब्दों की प्रतिलिपि :कर रहा था। विवेक से एक प्रश्न करने पर प्रत्येक चर्चा को लिखना जो कि विरोधी को घबड़ा देने वाली होती।

प्रेसीडेन्ट ने तुरन्त ही बंदिनी से प्रश्न नहीं किया क्योंकि वह चश्मे वाले सदस्य से पूछ रहा था कि आप सब प्रश्नों को उचित समझते है या नहीं (जो सब पहिले ही तैयार कर लिए गए थे और लिखे जा चुके थे)।

"अच्छा ! फिर क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"मैं घर आई।" माशलोवा ने पिहले से अधिक साहस से केवल प्रेसीडेन्ट की ओर देखते हुए कहा, "स्वामिनि को रुपए दिए और सो गई। अभी सोई ही

थी कि हममें से एक लड़की बर्था ने मुझे जगा दिया 'जाओ ! तुम्हारा व्यापारी फिर आ गया है ।' मेरी जाने की इच्छा नहीं थी किन्तु स्वामिनि ने मुझे जाने की आज्ञा दी । वह..." उसने फिर शब्द 'वह' को भयभीत होते हुए कहा—"वह हमारी लड़कियों को उत्तम भोजन खिलाता रहा तथा शराब और मँगाना चाहता था; किंतु उसका सब रुपया समाप्त हो चुका था और मालकिन को उस भरोसा था नहीं । तब उसने मुझे अपने निवास पर जाने को कह यह बतलाया कि फलाँ जगह रुपया रखा है और इतना लाना है । इसलिए मैं चली गई ।"

प्रेसीडेन्ट अपने बाँई ओर वाले सदस्य से कानाफूँसी कर रहा था किन्तु यह दिखलाने के लिए कि वह सुन रहा है उसने उसके अन्तिम शब्दों को दोहराया ।

"इसलिए तुम गईं, अच्छा फिर ?"

"मैं गई और मैंने वह सब किया जो मुझे उसने बतलाया था । उसके कमरे में गई । मैं अकेली नहीं गई; किन्तु मैंने सीमन कार्तिन्किन और उस स्त्री को बुला लिया ।" उसने बोचकोवा की ओर उङ्गली उठा कर कहा ।

"यह झूठ है । मैं अन्दर गई ही नहीं ।" बोचकोवा ने कहना प्रारम्भ किया, किंतु उसे रोक दिया गया ।

"इनकी उपस्थिति मे मैंने दस-दस रूबल के चार नोट निकाले ।" माशलोवा बोचकोवा की ओर बिना देखे ही त्यौरी चढ़ाकर कहती रही ।

"हाँ ! किन्तु क्या बन्दिनी ने देखा" प्रोसीक्यूटर ने फिर पूछा, "कि जब वह चालीस रूबल निकाल रही थी तो उसमें कितने नोट थे ?"

जब प्रोसीक्यूटर ने उससे पूछा तो माशलोवा थर्रा गई । वह यह नहीं जान पाई कि ऐसा क्यों हुआ किन्तु उसे अनुभव हुआ कि यह मेरा बुरा चाहता है ।

"मैंने उन्हें गिना नहीं किन्तु देखा भर था कि लगभग सौ रूबलों के नोट थे ।"

"आह ! बन्दिनी ने देखा कि एक सौ रूबलों के नोट थे । बस ।"

"ठीक, तो तुम रुपया वापिस लायीं ।" प्रेसीडेन्ट ने घड़ी की ओर देखते हुए पूछा ।

"जी हाँ ।"

"अच्छा तो फिर ?"

"तब वह मुझे अपने साथ लिवा ले गया।" माशलोवा बोली

"अच्छा, तो तुमने उसे पाउडर कैसे खिलाया ? मदिरा में ?"

"मैंने कैसे दिया ? मैंने उसमें डाल दिया और उसे दे दी।"

"तुमने उसे क्यों दिया ?"

उसने उत्तर तुरन्त ही नहीं दिया। एक गहरी और दुखभरी साँस ली।" क्षण भर रुकने के बाद बोली, "वह मुझे जाने नहीं देता था और मैं बिल्कुल थक चुकी थी और इसलिए मैं रास्ते में गई और सीमन से बोली—'मैं इतनी थक गई हूँ कि इससे मेरा पिंड छूट जाए तो बहुत अच्छा हो।' और वह बोला, 'हम भी इससे ऊब गए हैं। हम इसको नींद की दवा देना चाहते हैं; उससे यह सो जाएगा और तुम भी जा सकोगी।' इसलिए मैंने कहा, 'बहुत अच्छा'। मैंने सोचा कि उसमें कुछ हानि नहीं है और उसने मुझे पुड़िया दे दी। मैं भीतर आ गई। वह पार्टीशन के पीछे लेटा हुआ था। उसने ब्रांडी माँगी। मैंने मेज पर से ब्राँडी की बोतल उठाई, दो गिलासों में डाली—एक में उसके लिए दूसरे में अपने लिए और उसके में पाउडर बुरक दिया और गिलास उसे दे दिया। यदि मुझे ज्ञात होता तो मैं उसे कैसे दे देती ?"

"अच्छा तो अँगूठी तुम्हें कैसे मिली ?" प्रेसीडेन्ट ने पूछा।

"उसने स्वयं मुझे दी।"

"कब दी ?"

"जब कि हम उसके निवास-स्थान पर आए। मैं वापिस चली जाना चाहती थी तो उसने मेरे सिर पर घूँसा मारा जिससे मेरे कंघे में चोट आ गई। मैं क्रुद्ध हो गई और बोली 'मैं तो जाऊँगी' और उसने अपनी उङ्गली से अँगूठी उतार कर मुझे दे दी ताकि मैं चली न जाऊँ।" वह बोली।

तब पब्लिक प्रोसीक्यूटर फिर थोड़ा-सा उचका और साधारण भाव से उसने कुछ प्रश्न करने की आज्ञा माँगी। आज्ञा प्राप्त करने पर कसीदायुक्त कॉलर से ऊपर उसने सिर झुकाते हुए कहा :

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि बंदिनी व्यापारी स्मेलकोव के कमरे में कितनी देर रही।"

माशलोवा फिर घबड़ा-सी गई। उसने फिर उत्सुकता से पब्लिक प्रोसी-

क्यूटर की ओर, फिर प्रेसीडेन्ट की ओर देखा और जल्दी-जल्दी बोली :

"मुझे ध्यान नहीं कि कितनी देर रही ।"

"हाँ ! किंतु क्या बंदिनी को यह स्मरण है कि स्मेलकोव के पास से चले आने के बाद वह होटल में कहीं और गई ?"

माशलोवा ने क्षण भर सोचने के पश्चात् कहा, "हाँ ! मैं उसके पास वाले खाली कमरे में गई थी ।"

"हाँ ! तो वहाँ क्यों गईं ?" पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने अपने अस्तित्व को विस्मरण करते हुए उससे सीधा प्रश्न किया ।

"मैं थोड़ी देर आराम करने के लिए तथा इस प्रतीक्षा में रुकी कि गाड़ी आ जाए ।"

"और कार्तिन्किन भी बंदिनी के साथ कमरे में था या नहीं ?"

"वह आया था ।"

"वह अंदर क्यों आया ?"

"व्यापारी की मदिरा बची हुई थी वह हम दोनों ने पी डाली ।"

"ओह! दोनों ने पी डाली ! बहुत अच्छा! और क्या बंदिनी की कार्तिन्किन से बातें हुई थीं, और यदि हुईं तो किस विषय में ?"

माशलोवा ने एकाएक भोंहें चढ़ा लीं, लाल पड़ गई और जल्दी से बोली :

"किस विषय में ? मैंने उससे कोई बात नहीं की और बस, मैं इतना ही जानती हूँ । आपकी इच्छा हो जो करें, मै अपराधिनी नहीं हूँ । बस यही सब कुछ है ।"

"मुझे कुछ और पूछना नहीं है ।" पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने कहा । वह अपने कंधों को अप्राकृतिक ढङ्ग से हिलाते हुए अपने भाषण के लिए लिखी हुई टिप्पणियों में लिखने लगा कि बंदिनी की स्वय की साक्षी के अनुसार वह कार्ति-न्किन के साथ खाली कमरे में रही थी ।

थोड़ी देर चुप्पी छाई रही ।

"तुम्हें और कुछ कहना है ?"

"मैं सब कुछ कह चुकी ।" उसने आह भरकर कहा और बैठ गई ।

तब प्रेसीडेन्ट ने कुछ लिखा और अपनी बाँई ओर बैठे सदस्य के धीमे

स्वर को सुनकर कुछ काल के लिए बैठक स्थगित कर वह शीघ्रता में उठा और कमरे से बाहर चला आया। उस दयालु आँखों तथा लम्बी दाढ़ी वाले सदस्य ने उससे कहा था कि मेरे पेट में हल्की-सी गड़बड़ी हो रही है इसलिए मैं कुछ मालिश करना तथा कुछ शराब पीना चाहता हूँ। इसी कारण से बैठक स्थगित की गई थी।

जब न्यायाधीश उठे तभी एडवोकेट, पंच और गवाह भी उठ दिए। सबको इस बात की प्रसन्नता हुई कि इस गोरखधंधे का मुख्य भाग समाप्त हो गया। वे सब भिन्न दिशाओं में चल दिए।

नेखलूदोव पंचों के कमरे में गया और खिड़की के पास बैठ गया।

१२

"हाँ ! यह कातूशा ही थी !"

कातूशा और नेखलूडोव में यह सम्बन्ध थे :

नेखलूदोव ने जब कातूशा को प्रथम बार देखा था तब वह विश्वविद्यालय में तीसरे वर्ष का विद्यार्थी था। और गर्मियों की छुट्टियों में भूस्वामित्व के नियमों पर एक निबंध तैयार कर रहा था, ये दिन उसने अपनी बुआ के यहाँ बिताए थे। उससे पूर्व वह अपनी माँ और बहिन के साथ, मास्को के पास स्थित अपनी माँ की बड़ी जमींदारी में गर्मियों को छुट्टियाँ बिताता था। किंतु उस वर्ष उसकी बहिन का विवाह हो चुका था और उसकी माँ कहीं सुदूर झील के किनारे स्थित नगर में गई हुई थी। निबंध लिखने के लिए उसने अपनी बुआ के साथ गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने का निश्चय किया। उनकी अलग जमींदारी में बहुत शांति थी और वहाँ उसके मस्तिष्क को व्याकुल करने वाली कोई बात नहीं थी। उसकी बुआएँ अपने भतीजे को, जो कि उत्तराधिकारी था, बहुत प्यार करती थीं। और उसे भी उनका सादा पुराने ढङ्ग का जीवन बहुत प्यारा लगता था।

नेखलूदोव ने अपनी बुआ की जमींदारी में गर्मियों के वे दिन बहुत आनंद में बिताए। वह अवस्था ही ऐसी थी जब कि नवयुवक पहिली बार बिना किसी दूसरे से पूछे स्वयं ही जीवन के समस्त सौंदर्य और अभिप्राय को तथा जीवन में मनुष्य के लिए सोंपे हुए कार्य के महत्त्व को अनुभव करता है तथा यह समझकर कि अपनी तथा समस्त संसार की पूर्णता की ओर उन्नति की संभावनाएँ अमित

हैं वह अपने कार्य में न केवल आशान्वित ही होकर वरन् अपनी कल्पना के अनुसार कार्य की पूर्णता की ओर पूरे निश्चय से उसमें लग जाता है। यूनीवर्सिटी में उसने उसी वर्ष स्पेन्सर द्वारा लिखित पुस्तक "सोशल स्टेटिक्स" पढ़ी थी। और स्वयं बहुत बड़ी जमींदारी का उत्तराधिकारी होते हुए भी वह स्पेन्सर के भूमि संबन्धी अधिकारों के दृष्टिकोण से प्रभावित हो उठा था। उसका पिता बहुत धनवान नहीं था किंतु उसकी माँ को दहेज में पच्चीस हजार एकड़ भूमि मिली थी। उस समय जमींदारी में होने वाले अन्याय और अत्याचार उसके सम्मुख स्पष्ट रूप से साक्षात् हो गए थे और वह ऐसा व्यक्ति था जिसे कि अपनी आत्मा की माँग पर त्याग करने में अत्यन्त उच्च नैसर्गिक आनन्द की प्राप्ति होती है। उसने अपने अधिकारों को सीमित न रख उत्तराधिकार में अपने पिता से प्राप्त जमीन को किसानों को दे डालने का निश्चय किया। वह भूमि की इसी समस्या पर लेख लिख रहा था।

बुआ की जमींदारी में उसका कार्यक्रम इस भाँति था कि वह सुबह ही उठ बैठता—कभी-कभी तो तीन बजे—और सूरज निकलने से पहिले कुहरे में ही पहाड़ी के नीचे बहने वाली नदी में नहाने चला जाता। फूलों और घासों की ओस सूखने से पहिले ही लौट आता। कभी काफी पीकर निर्देश-पुस्तकों को लिखने के लिए कागज लेकर बैठ जाता। किंतु बहुधा किताबें पढ़ने या लिखने के स्थान पर वह घर से निकल देता और खेतों तथा जङ्गलों में घूमता रहता। रात के भोजन से पहिले वह किसी बाग-बगीचे में कहीं सो जाता। भोजन के समय वह अपने चित्त की प्रसन्नता से अपनी बुआओं का मनोविनोद करता। फिर घुड़सवारी करता या नदी में नाव खेने पहुँच जाता और शाम को बैठकर पढ़ता या बुआओं के साथ ताश खेला करता।

रातों वह सो नहीं पाता, विशेषतया चाँदनी रात को केवल इसलिए कि जीवन के भावपूर्ण आनन्द में डूब जाता। और सोने के स्थान पर वह अपने विचारों एवं स्वप्नों को सँजोए बाग-बगीचों में घूमता रहता; कभी-कभी तो उसे प्रभात हो जाता। इस प्रकार शाँति और आनन्द में उसने अपनी बुआ के यहाँ प्रथम मास बिताया। अब तक उसने अर्धरक्षिता, अर्धदासी, काली व चमकीली आँखों और तेज चाल वाली कातूशा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उस समय तक (१६ वर्ष की आयु में) नेखलूदोव अपनी माँ के संरक्षण में पलने के कारण बिल्कुल पवित्र था। यदि स्त्री के विषय में उसने सोचा था तो वह केवल अपनी

पत्नी के रूप में। वे स्त्रियाँ जिनसे उसका विवाह नहीं हो सकता था उसके लिए स्त्रियाँ नहीं थीं—केवल प्राणी थीं।

किन्तु उन्हीं गर्मियों में 'अधिरोहण-दिवस' पर उसकी बुआओं की एक पड़ौसिन अपनी दो तरुण पुत्रियों और एक स्कूल के विद्यार्थी तथा किसी किसान कलाकार के साथ, जो कि उनके साथ रहता था, उनके घर पर आईं। चाय पीने के बाद वे सब घर के सामने एक चरागाह में खेलने गए। चरागाह की घास हंसिए से काटी जा चुकी थी। वह 'विडो' खेल रहे थे—कातूशा उनमें सम्मिलित हो गई। बारबार दौड़ने और अपना स्थान बदलने में नेखलूदोव ने कातूशा को पकड़ लिया और वह उसकी सहेलन बन गई। इस समय से पूर्व वह कातूशा को पसन्द अवश्य करता था किन्तु उसके साथ घनिष्ठता स्थापित होने की कोई संभावना भी न थी।

"इन दोनों को तब तक पकड़ना असंभव है जब तक कि वे चूकें नहीं।" प्रसन्न नवयुवक कलाकार ने कहा। अब पकड़ने की उसकी बारी थी। वह अपने मुड़े हुए घुटनों वाली, छोटी किन्तु तगड़ी, किसानी टाँगों से अत्यन्त तीव्र गति से दौड़ता था।

"तुम!...और हमको नहीं पकड़ पाओ?" कातूशा बोली।

"एक–दो–तीन!" कह कर कलाकार ने ताली बजाई।

कठिनता से हँसी रोकती हुई कातूशा ने कलाकार के पीछे से अपना स्थान बदला और अपने छोटे खुरदरे हाथ से उसका लम्बा हाथ दबा कर अपने कलफ लगे पेटीकोट को खड़खड़ाते हुए बाँई ओर दौड़ी।

नेखलूदोव दाँई ओर तीव्रता से भागा। वह कलाकार से बचना चाहता था किंतु उसने घूमकर देखा कि कलाकार कातूशा के पीछे भाग रहा है और कातूशा अपनी तगड़ी छोटी टाँगों से उससे आगे दौड़ रही है। उनके सामने बकाइन की एक झाड़ी पडती थी। कातूशा ने नेखलूदोव को अपने साथ आने को संकेत किया जिससे कि वह एक बार फिर से हाथ मिलाले तो वह पीछा करने वाले से बच जाँए। यह इस खेल का नियम था। उसने संकेत देख लिया और झाड़ी के पीछे से भागा लेकिन उसे मालूम नहीं था कि बिच्छू के पेड़ों से ढका हुआ एक छोटा सा गड्ढा है। टकरा कर वह ओस से भींगी हुई झाड़ियों में जा गिरा चुभन के दर्द से हाथों को झटका देता हुआ वह अपनी भूल पर हँसा और शीघ्र खड़ा हो गया।

कातूशा की गहरी काली आँखें तथा प्रसन्नता से व्याप्त उसका मुखमंडल चमक रहा था। वह उसकी ही ओर भगी चली आ रही थी और उन दोनों ने एक दूसरे के हाथ पकड़ लिए।

"डंक लग गया, मैं कह सकती हूँ?" हाँफते-हाँफते अपने बालों को हाथों से ठीक करते हुए उसकी ओर सुमधुर मुस्कान से सीधी देखती हुई वह बोली।

"मुझे ज्ञात नहीं था कि यहाँ गड्ढा है।" उसने भी मुस्कुराकर अपने हाथ में उसका हाथ ले लिया। वह उसके पास आई और वह भी न जाने क्यों उसकी ओर झुका। वह वहीं खड़ी रही और उसने उसके हाथ को कसकर दबा दिया तथा उसके होठों को चूम लिया।

"ओह! तुम माने नहीं!" वह बोली और झटके से अपना हाथ छुड़ाकर उसके पास से भाग गई।

सफेद बकाइन की दो टहनियाँ तोड़कर उनसे अपने तप्त मुख की हवा करने लगी फिर सिर घुमाकर उसकी ओर पीछे देखकर शान से अपनी दोनों बाँहों को हिलाती हुई वह चली गई तथा दूसरे खिलाड़ियों के साथ खेलने लगी।

इसके बाद नेखलूदोव और कातूशा के सम्बन्ध उन पवित्र नवयुवक और नवयुवतियों के समान हो गए जो कि एक दूसरे की ओर आकर्षित हो जाते हैं।

कातूशा के कमरे में आते ही, या यों कहिए उसके सफेद एप्रन* को दूर से देखते ही, नेखलूदोव की आँखों में सब चीजें ऐसे ही चमक उठीं जैसे कि सूर्योदय होते ही प्रत्येक वस्तु पहिले से अधिक महत्वपूर्ण प्रसन्नता प्रदान करने वाली और चित्ताकर्षक हो जाती है। उसे समस्त जीवन ही आनन्द से भरा हुआ दिखलाई दिया। और कातूशा को भी ऐसा ही लगा। किन्तु नेखलूदोव को केवल कातूशा की उपस्थिति के कारण ही ऐसा नहीं लग रहा था वरन् इतनी ही बात कि 'कातूशा है' (और उसके लिए नेखलूदोव है) उसी प्रभाव को उत्पन्न करने में समर्थ होती।

माँ का अप्रिय पत्र प्राप्त कर, अथवा लेख न लिख पाने पर या अकारण ही उदास हो जाने पर जैसा अनुभव हर नवयुवक को बहुधा होता है वैसा ही नेखलूदोव को भी होता किंतु कातूशा का स्मरण आने या उसकी देखने भर की देर होती कि सब ठीक हो जाता।

---

*वस्त्रों की रक्षा ऊपरी का पहिनावा

कातूशा को घर में पर्याप्त काम करना पड़ता किन्तु फिर भी वह पढ़ने के लिए अवकाश निकाल ही लेती। और नेखलूदोव ने उसको डोस्तोयेवस्की और तुर्गनेव की पुस्तकें (जिन्हें कि उसने अभी पढ़ा था) पढ़ने को दे दीं। उसे तुर्गनेव की पुस्तक 'शांत निर्जन' बहुत पसन्द थी। काम के समय में भी जब कभी वे बरामदे या आँगन में, मार्ग में मिल जाते तो उनकी बातें होतीं। कभी-कभी बुआ की पुरानी भृत्या मेत्रोना पावलोना के साथ वह चाय पीता था। तथा कभी-कभी उसके ही कमरे में, जहाँ कातूशा रहती थी, उनमें बातें होती थीं। मेत्रोना पावलोना की उपस्थिति में इन बातों में बड़ा आनन्द आता। जब वे अकेले होते तब ठीक नहीं रहतीं। शीघ्र ही उनकी आँखें मुँह की बातों से कहीं अधिक भिन्न बातें करने लगतीं। उनके होंठ फड़कने लगते और उनमें एक प्रकार के भय का संचार होने लगता जिसके कारण कि वे शीघ्र ही अलग हो जाते।

इस बार जबतक नेखलूदोव अपनी बुआ के यहाँ रहा उनके सम्बन्ध ऐसे ही बने रहे। उन्होंने यह देखा तो वे भयभीत हो गईं और नेखलूदोव की माँ प्रिन्सेज-येलेना इवानोव्ना को भी लिख दिया। उसकी बुआ मेरी इवानोव्ना को यह भय था कि नेखलूदोव कातूशा के साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित कर लेगा; किन्तु उनका भय निरर्थक था क्योंकि नेखलूदोव को स्वयं इस बात का ज्ञान नहीं था कि वह कातूशा से प्रेम करता है। वह उसे केवल उन लोगों की भाँति प्यार करता था जो पवित्र हैं, और इस प्रकार कातूश तथा उसकी दोनों की सुरक्षा थी। उसकी यह इच्छा ही नहीं थी कि वह उसको शारीरिक रूप से प्राप्त करे। साथ ही इस बात का विचार मात्र ही उसको भय से आविर्भूत कर देता। अतिभावुक सोफिया इवानोव्ना के भय में सार अधिक था कि शांत और दृढ़ स्वभाव दिमीत्री किसी लड़की से प्रेम करने के पश्चात्, बिना यह सोचे समझे कि उसका कुल या श्रेणी क्या है, उससे विवाह करने का निश्चय कर सकता है।

काश ! नेखलूदोव को मालूम होता कि मैं कातूशा से प्रेम करता हूँ और विशेषतया यदि उसे बतलाया गया होता कि कातूशा जैसी किसी लड़की से तुम्हें किसी भी मूल्य पर अपना जीवन नहीं बाँधना चाहिए तो उसे अपनी स्वाभाविक स्पष्टवादिता के कारण यह निर्णय करने में कोई देर नहीं लगती कि यदि मैं किसी लड़की से, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, प्रेम करने लगूँ तो कोई भी ऐसा समुचित और सम्भव कारण नहीं है कि मैं उससे विवाह न करूँ। लेकिन उसकी बुआओं से उसने अपनी आशंकाएँ प्रगट नहीं कीं। और जब वह वहाँ से चला गया तब

भी उसे पता नहीं लगा कि मैं कातूशा से प्रेम करता हूँ।

उसको विश्वास था कि कातूशा के प्रति उसकी अनुभूति केवल इतनी थी कि जीवन के आनन्द के स्पष्टीकरण में—जो कि उसकी सम्पूर्ण आत्मा को भर देता है—उस आनन्द में, यह मधुर-भाषिणी और प्रसन्नवदना कन्या उसका हाथ बँटाती थी। फिर भी जब वह जा रहा था और अपनी बुआ के साथ ड्योढ़ी पर खड़ी कातूशा ने अपनी तनिक तिरछी काली आँखों में आँसू भर उसकी ओर देखा तब उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वह कोई सुन्दर, बहुमूल्य वस्तु छोड़े जा रहा है—ऐसी वस्तु जो उसे दुबारा नहीं मिलने की। और वह बहुत उदास हो गया।

"नमस्ते ! कातूशा !" वह सोफिया इवानोव्ना की टोपी के दूसरी ओर देखता हुआ बोला और जब वह गाड़ी में चढ़ा तो बोला—"तुम्हें हर बात के लिए धन्यवाद।"

"नमस्ते ! दिमीत्री इवानोविच !" वह प्रसन्न करने वाले कोमल स्वर में अपने आँसुओं को रोकती हुई बोली जो उसकी आँखों में भरे थे। और भाग कर अन्दर बड़े कमरे में चली गई जहाँ जाकर वह शांति से रो सके।

१३

इसके बाद नेखलूदोव कातूशा से तीन वर्ष तक नहीं मिला। जब उसने उसे दुबारा देखा तब वह सेना में अधिकारी नियुक्त हो चुका था और अपनी रेजीमेन्ट में उपस्थिति देने जा रहा था। रास्ते में उसकी बुआओं की जमींदारी पड़ती थी अतः वह कुछ दिनों के लिए वहाँ ठहर गया; किन्तु उसमें और तीन साल पहिले के नेखलूदोव में जमीन आसमान का अन्तर था। तब वह सच्चा, निस्वार्थ लड़का था जो किसी भी अच्छे काम के लिए सबकुछ अर्पण कर सकता था। अब वह राचारी और अहंकारी हो चुका था और केवल अपने आनन्द की चिन्ता करता दुथा। तब भगवान की सृष्टि उसे रहस्यमय लगती जिसे अनावरित करने में उसे बहुत आनन्द और उत्साह प्राप्त होता। अब जीवन में प्रत्येक वस्तु उसे सीधी और साफ लगती जिसे कि वह अपने जीवन के अनुसार सोचता। तब उसे प्रकृति के साथ सम्पर्क की आवश्यकता और उसका महत्व प्रतीत होता और कवियों और दार्शनिकों के लिए भी प्रतीत होता जो कि उससे पहिले हुए थे, जिन्होंने कि वह सब

सोचा और उससे पहिले अनुभव किया था। अब उसके लिये मानवी संस्थाएँ और अपने साथियों के साथ वार्तालाप ही आवश्यक और महत्त्वपूर्ण था। तब नारी उसे रहस्यमय और आकर्षक लगती—आकर्षक उस रहस्य के कारण जिसमें वह आवरित रहती। किन्तु अब नारी का उद्देश्य, अपने परिवार की और अपने मित्रों की पत्नियों को छोड़कर, बिल्कुल निश्चित था : एक अनुभवजन्य आनन्दोपभोग का ही नारी सर्वोत्तम साधन थी। तब धन की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि माँ द्वारा दिए गए अलाउन्स का एक तिहाई भाग भी उसे नहीं चाहिए था और पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त जमींदारी को स्वयं स्वीकार न कर किसानों को दे डालना सरल था। किन्तु अब १५०० रूबल प्रतिमास का अलाउन्स उसे कम पड़ता और इस प्रसंग को लेकर उसमें तथा उसकी माँ में अप्रिय वार्तालाप भी हो चुका था। तब वह अपनी आत्मा को 'अहं' करके मानता था और अब दुर्दान्त पाशविक अहं को 'मैं' करके मानता था।

और यह भयंकर परिवर्तन उसमें इसलिए आया क्योंकि अब वह अपनी आत्मा पर श्रद्धा न कर दूसरों के ऊपर करता था। यह उसे इसलिए करना पड़ा कि अपने ऊपर श्रद्धा करना बड़ा कठिन है। अपने ऊपर श्रद्धा करने में व्यक्ति का प्रत्येक प्रश्न अपने पाशविक अहम् के पक्ष में नहीं वरन् लगभग सभी का निर्णय विपक्ष में करना पड़ता है। पाशविक अहं सदा बिना किसी श्रम के ही तृप्ति की खोज में रहता है। दूसरों पर श्रद्धा करने में कुछ निर्णय नहीं करना पड़ता। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर है, वह भी पाशविक अहं के पक्ष में और आत्मा के विपक्ष में। यहीं अन्त नहीं था। अपनी आत्मा में श्रद्धा करने से वह अपने चारों ओर के समुदाय की निन्दा का भाजन बनकर स्वयं आपत्ति में पड़ जाता। दूसरों में श्रद्धा रखने से उनका अनुमोदन प्राप्त करता।

इस तरह जब नेखलूदोव जीवन के—भगवान, सचाई, सम्पन्नता, निर्धनता आदि—गंभीर विषयों पर बातें करता, जो कि उसके चारों तरफ छाई हुई थीं और जिन्हें कि वह बीते समय की और हास्यप्रद बातें समझता, तब उसकी माँ और बुआएँ उससे मधुर व्यंग में दार्शनिक कहतीं। किन्तु जब वह उपन्यास पढ़ता, बेढंगी कथाएँ सुनाता, फ्रांसीसी थियेटरों में हास्यपूर्ण विविध मनोरञ्जन देखने जाता और आकर उन परिहासों को दोहराता तब हरएक कोई उसकी प्रशंसा करता और उसको प्रोत्साहन देता। जब वह अपनी आवश्यकताओं को कम करने, पुराना ओवरकोट पहिनने, मदिरा न पीने को ठीक समझता तब सभी उसे भद्दा

समझते और कहते कि वह बनता है। किन्तु जब उसने हजारों रुपए शिकार या अपने लिए विशेष और विलासपूर्ण अध्ययन-कक्ष बनवाने पर व्यय कर दिए तब सबने उसकी रुचि की सराहना की और उसकी रुचि को प्रोत्साहन देने के लिए मूल्यवान उपहार भेंट किए। जबतक वह ब्रह्मचर्य मे रहा और विवाह तक ऐसे ही रहे आने के लिए सोचता था तब उसके मित्र उसके स्वास्थ्य के प्रति शंकालु हो उठे। और उसकी माँ को भी यह सुनकर, कि उसने अपने एक मित्र से एक फ्रांसीसी स्त्री प्राप्त कर ली है, दुख नहीं हुआ वरन् प्रसन्नता ही हुई थी कि अब वह एक 'सच्चा' आदमी बन गया है। जहाँ तक कातूशा की किंवदंती का प्रश्न था प्रिन्सेज़ को भय था कि कहीं वह उससे विवाह करने तो नहीं आया।

इसी प्रकार, जब नेखलूदोव वयस्क हुआ तो अपने विचार के कारण, कि जमीदारी बनाए रखना अन्याय है, उत्तराधिकार में प्राप्त अपने पिता की छोटी-सी जमींदारी को उसने किसानों को दे दिया। इस कार्य से उसकी माँ और उसका परिवार अप्रसन्न हो उठा और उसके सब सम्बन्धियों को परिहास करने का अवसर प्राप्त हो गया। किन्तु नेखलूदोव ने रक्षक दल में नियुक्त होने के पश्चात् जब इतना पैसा जुए में तथा अन्य व्यसनों में अपने धनी मित्रों के साथ व्यय कर डाला कि उसकी माँ एलेना इवानोव्ना को अपनी पूँजी में से देना पड़ा तो माँ को तनिक भी दुख नही हुआ। वह सोचती थी कि यह स्वाभाविक है और अच्छा भी है कि जङ्गली जई को और अच्छे संग साथ को पहिले से ही बोना चाहिए जैसे कि मेरा लड़का कर रहा है।

पहिले नेखलूदोव ने संघर्ष किया: जब वह अपनी आत्मा में श्रद्धा रखता था तब वह जिसे अच्छा समझता वह अनुचित समझा जाता था और जिसे वह अपराध समझता था उसे वह लोग, जिनमें वह रहता था, उचित समझते; किन्तु संघर्ष बहुत कठिन हो गया। और अन्त में नेखलूदोव ने पराजय स्वीकार कर ली अर्थात् उसने आत्मा पर श्रद्धा करना छोड़ दूसरों पर विश्वास करना प्रारम्भ कर दिया। आरम्भ में तो यह सुखद नहीं रहा किन्तु यह अधिक दिनों नहीं चला। उस समय उसने सिगरेट और मदिरा पीने की कुटेब डाल ली। और इस असुखद भावना पर शीघ्र ही अधिकार पा लिया यहाँ तक कि उसे बड़ा आराम भी मिला।

नेखलूदोव ने अपने स्वभाव की उत्कटता के कारण जीवन के नए ढङ्ग को निस्संकोच हो अपना लिया जिसका कि उसके इष्ट मित्रों ने अत्यधिक समर्थन

किया और उसने अपनी आत्मा की पुकार को दबा दिया जो इससे कुछ भिन्न चाहती थी। यह उसके पीतर्सबर्ग जाने के पश्चात् आरम्भ हुआ और जब वह सेना में भरती हुआ तो यह अपने शिखर पर पहुँच चुका था।

साधारणतया सैनिक जीवन मनुष्यों को कलुषित करता है। वह मनुष्य को नितांत भ्रष्ट बना देता है अर्थात् विचारवान उपयोगी कार्यों का अभाव हो जाता है, उनको अपने दैनिक मानवी कर्तव्यों से वंचित कर देता है; उनके स्थान पर रेजीमेंट, वर्दी और ध्वज के सम्मान के केवल लौकिक कर्तव्यों को स्थापित करता है। एक व्यक्ति को दूसरे पर सर्वाधिकार देता है तथा साथ ही अपने को ऊँचे पदों पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों की चापलूसी भरी आज्ञाकारिता में डालता है।

किंतु जब, सेना की नौकरी से उत्पन्न सर्वसाधारण कलुषता, आदर, वर्दी, ध्वज, हिंसा और हत्या से धनवानों और राजकीय परिवारों के सदस्यों के साथ (जैसा कि रक्षक दल में था जिसमें सब ही अधिकारी धनी और उच्च परिवारों के थे) घुलेमिले सम्पर्क से उत्पन्न कलुषता को मिला दिया जाता है तब यह कलुषता स्वार्थ के पूरे उन्माद में बदल जाती है। और नेखलूदोव में 'स्वार्थ का उन्माद उसके सेना में भरती होने के साथ ही घुस गया था और वह अपने अन्य साथियों की भाँति रहने लगा। उसको कोई काम न था केवल दूसरों के द्वारा निर्मित और स्वच्छ की गई ड्रेस को पहिनना, और दूसरों के द्वारा ही दिए और स्वच्छ किए गए हथियारों को ग्रहण करना, तथा दूसरों के ही द्वारा उत्पन्न किए गए, पाले और पनासे, खिलाए पिलाए गए उत्तम घोड़ों की सवारी करना, परेड करना। वहाँ, अपने 'सरीखे व्यक्तियों के साथ ही उसे तलवार घुमानी पड़ती, बन्दूक चलानी पड़ती और दूसरों को भी यही करना सिखाना पड़ता। उसके पास कोई अन्य कार्य नहीं था और उच्च पदाधिकारी, युवक और वृद्ध, जार और उसके सम्पर्क के व्यक्तियों ने न-केवल इसकी आज्ञा हीदी वरन इसके लिए उसकी प्रशंसा की और धन्यवाद भी दिया।

इसके अतिरिक्त वहाँ क्या अच्छा और महत्वपूर्ण समझा जाता था-- अच्छे रेस्त्राओं, और अधिकारियों के क्लबों में खाना खाना विशेषतया शराब पीना, हजारों रुपये वृथा व्यय करना--वह धन व्यय करना जो अदृश्य सूत्रों से प्राप्त होता। इसके बाद थिएटर, नृत्य-घर, स्त्रियाँ फिर वही घोड़े की पीठ पर चढ़ना, तलवारें चलाना और कूदना और फिर पैसे की बरबादी--शराब, ताश और औरतें।

इस प्रकार का जीवन अन्यों की अपेक्षा सैनिकों को अधिक कलुषित करता है, क्योंकि सैनिकों के अतिरिक्त यदि कोई दूसरा ऐसा जीवन व्यतीत करे तो वह अपने ऊपर लज्जित हुए बिना नहीं रह सकती। इसके विपरीत, मैनिक इस जीवन पर गर्व करता है, विशेषतया युद्ध काल में और नेखलूदोव सेना में उस समय प्रविष्ट हुआ जब तुर्कों के साथ युद्ध घोषित :ही हुआ था।" हम युद्ध में अपना जीवन निसर्ग करने को तैयार है, इसलिए प्रसन्न एवं प्रमत्त जीवन हमारे लिए क्षम्य ही नहीं तो आवश्यक भी है। अतः हम अपना जीवन इस प्रकार बिताते हैं।"

ऐसे भ्रमपूर्ण विचार थे नेखलूदोव के जीवन के इस काल में और उसे नैतिक बंधनों से, जिनमें कि वह पहिले रहा करता था, छुटकारा पाने की प्रत्येक ममय प्रसन्नता बनी रहती थी। और जिस अवस्था में वह इस समय था वह स्वार्थपरता का दीर्घवस्थायी उन्माद था।

जब वह अपनी बुआओं के यहाँ उनमे मिलने पुनः आया था उस समय वह इसी अवस्था में था।

१

नेखलूदोव रेजीमेंट में उपस्थिति देने जा रहा था। मार्ग में उसकी बुआओं की जमींदारी पड़ती। उसकी बुआओं ने बहुत अनुग्रह मे उसे अपने यहाँ आने को कहा था—इसलिए वह उनसे मिलने मार्ग में उतर गया—विशेषतया तो इसलिए कि वह कातूशा से मिलना चाहता था। कदाचित् उसके अंतरतम में कातूशा के प्रति अनुचित भाव उत्पन्न हो चुके थे—वे अनुचित भाव जिनके उत्पन्न करने में सहायक था उसका उच्छृंखल पाशविक अहं। किन्तु वह इधर मे अनजान था। वह तो केवल उस स्थान को फिर से देखना चाहता था जहाँ कि उसे असीम प्रसन्नता प्राप्त हुई थी। अपनी प्रिय, दयालुहृदया वृद्धा बुआओं से मिलना चाहता था जो उसके अनजाने में ही उसके चारों ओर प्रेम और प्रशंसा का वातावरण निर्माण कर देतीं। वह मधुर भाषिणी कातूशा से मिलना चाहता था जिसके लिए कि उसके हृदय में मधुर स्मृति थी।

वह मार्च के अन्त में, बड़े शुक्रवार को आया जब बर्फ का पिघलना प्रारम्भ हो गया। वर्षा हो रही थी इसए वह बिल्कुल भींग गया था। उसे बहुत ठंड लग रही थी किंतु फिर भी, जैसे कि वह ऐसी प्रत्येक ऋतु में रहा करता, शक्ति और स्फूर्ति का अनुभव कर रहा था। जब वह अपने चिर-परिचित,

पुराने फैशन के बने आँगन में पहुँचा जोकि ईंटों की एक नीची दीवाल से घिरा हुआ था तब उसने सोचा "क्या वह अब भी इन्हीं के यहाँ रहती है ?" आँगन में चारों ओर बरफ जमी हुई थी ।

उसे आशा थी कि स्लेज गाडी की घंटियों को सुनते ही वह बाहर आवेगी किंतु वह नहीं आई । दो स्त्रियाँ नंगे पाँव हाथों में बाल्टियाँ लिए और कुरतियों को मोड़े हुए पार्श्व द्वार से निकलीं । स्पष्ट प्रगट था कि वे फर्श को धो रही थीं । 'वह' सामने के द्वार पर भी नहीं थी; उनका नौकर तिखोन अपने ऐप्रन को पहिने ड्योढी पर आया । वह भी सफाई में ही लगा हुआ था । गलियारे में केवल उसकी बुआ सोफिया इवानोव्ना मिली । वह सिल्क के कपड़े और टोपी पहिने हुए थी ।

"तुमने यहाँ आकर बहुत अच्छा किया ।" सोफिया इवानोव्ना उसको आलिंगन करती हुई बोली, "मेरी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, वह गिरजाघर मे थक गई थी । हम लोग ईसामसीह की स्मृति के भोज में गए थे ।"

"बुआ सोफिया, मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ ।" नेखलूदोव ने सोफिया इवानोव्ना के हाथ का आलिंगन करते हुए कहा—"ओह ! मैं क्षमा चाहता हूँ, मैंने आपको भिगो दिया ।"

"जाओ, अपने कमरे में जाओ । अरे ! तुम तो पानी से तर हो । ओह मेरे बच्चे ! तुम्हारे तो मूँछें निकल आई हैं !...कातूशा ! कातूशा ! इनके लिए काफी लाओ, जल्दी करो ।"

"अभी लाई ।" मार्ग से भली प्रकार पहिचाने प्रसन्न कंठ का स्वर सुनाई दिया । और नेखलूदोव का अन्तर चीख उठा "यह यहीं है !" और उसे ऐसा लगा मानो कि बादलों को चीर कर सूरज निकल आया ।

तिखोन के साथ प्रसन्न हो नेखलूदोव अपने पुराने कमरे में सामान बदलने गया । वह तिखोन से कातूशा के विषय में पूछना चाहता था : प्रसन्न तो है, क्या करती है, विवाह करेगी कि नहीं? किंतु तिखोन उसका बहुत आदर करता था और साथ ही उसका स्वभाव तीखा भी था, उसके लिए केतली में पानी उड़ेलने में दृढ़तापूर्वक इतना आग्रह करता रहा कि नेखलूदोव उससे कातूशा के विषय में पूछने का साहस ही न कर सका । उसने उससे केवल उसके नाती, उसके पुराने 'भाई के घोड़े' कहे जाने वाले, और कुत्ते पोलकन के सम्बन्ध में ही पूछा ।

पोलकन के अतिरिक्त सब जीवित थे। पोलकन पिछली गर्मियों में पागल हो गया था।

जब उसने अपने सब भींगे कपड़े उतार डाले और दूसरे पहिनने लगा तब उसने तीव्र पदों की चाप और दरवाजे पर खटखटाहट सुनी। नेखलूदोव पदचापों और खटखटाहट दोनों को पहिचानता था। उसके अतिरिक्त और कोई इस प्रकार न तो चलता था और न खटखटाता था।

कंधों पर भूरे रङ्ग का अपना भीगा लम्बा कोट डालकर उसने द्वार खोला।

"भीतर आओ।" यह थी कातूशा। उसमें कोई अन्तर नहीं—हाँ! केवल पहिले से अधिक सुन्दर अवश्य हो गई थी। काली कजरारी सरल आँखें पहिले ही की भाँति देखतीं। अब भी, पहिले की भाँति वह श्वेत ऐप्रन पहिने हुए थी। वह उसकी चाची के पास से एक सुगन्धित साबुन, जिसका खोल ही अभी उतारा गया था, और दो तौलिया लेकर आई। एक तौलिया पर तो लम्बी रूसी कसीदा कारी की हुई थी और दूसरी स्नान के समय की थी। लिखावट सहित नया साबुन, तौलियाँ और वह स्वयं भी—सब ही समान स्वच्छ ताजा, बेदाग और भले लगने वाले थे। उसको देखने से उत्पन्न हर्ष की प्रकट मुस्कान ने कातूशा के दृढ़ ओठों पर वृद्धा की सी झुर्रियाँ डाल दी।

"दिमीत्री इवानोविच, आप प्रसन्न तो है?" बडी कठिनाई से वह कह पाई। उसके मुख पर लज्जा से उत्पन्न अरुणिमा व्याप्त हो गई।

"नमस्ते! तुम तो प्रसन्न हो?" उसने भी सलज्ज हो कहा, "प्रसन्न और जीवित?"

"हाँ। भगवान् की कृपा है! यह देखिए, यह आपकी पसंद का गुलाबी साबुन और तौलियाँ हैं। आपकी बुआजी ने भेजी है।" उसने साबुन को मेज पर रखकर तथा तौलियों को कुर्सी की पीठ पर टाँगते हुए कहा।

"यहाँ भी सब कुछ मौजूद है।" तिखोन ने अतिथि की आत्मनिर्भरता के पक्ष को लेकर कहा और नेखलूदोव के ड्रेसिङ्ग-केस की ओर इंगित किया जिसमें ब्रुश, सुगंधियाँ, फिक्सेटिव, और चाँदी के ढक्कन की बहुत-सी बोतलें तथा हर प्रकार के सौंदर्य प्रसाधन की सामग्री रखी हुई थी।

"कृपया बुआजी को मेरी तरफ से धन्यवाद कहिएगा! मुझे यहाँ आकर

बहुत प्रसन्नता है।" नेखलूदोव बोला। उसके हृदय में पहिले की-सी कोमलता और प्रकाश भर गया।

इन शब्दों को सुनकर वह मुस्कुरा दी और चली गई।

बुआओं ने पहिले से भी अधिक प्रेम से उसका स्वागत किया। वैसे तो वे उसे सदैव ही प्यार करती थीं; किन्तु अब दिमित्री युद्ध पर जा रहा था और वहाँ जाने पर क्या हो—चोटें आवें या मृत्यु को प्राप्त हो जाए—इस संभावना से वृद्धाओं का हृदय हिल उठा।

नेखलूदोव एक दिन और एक रात ही अपनी बुआओं के साथ ठहरना चाहता था किंतु जब उसने कातूशा को वहाँ देख लिया तो वह अधिक समय अर्थात् ईस्टर तक रुकने को सहमत हो गया। उसने अपने मित्र शेनबोक को तार दिया कि तुम अब मेरी बुआ के यहाँ आकर मिल लो। पहिले उसने उससे ओदेसा में मिलने का निश्चय किया था।

कातूशा को देखने के बाद से ही नेखलूदोव में उसके प्रति पहिली भावनाओं का उदय होने लगा। फिर, पहिले की ही भाँति, वह उसके सफेद एप्रन को देखता तो उसमें आवेग आए बिना न रहता। जब वह उसकी पद-चाप, उसकी आवाज, उसकी हँसी को सुनता तो प्रसन्न हुए बिना न रहता। वह उसकी आँखों, जङ्गली बेरों की तरह काली आँखों, को देखता तो उसके हृदय में कोमलता की भावना जागृत हुए बिना न रहती—विशेषतया तो उस समय जब कि वह मुस्कुराती थी। और इन सबसे अधिक तो तब जब कि दोनों की आँखें एक दूसरे से मिल जातीं तब वह भ्रम में पड़े बिना न रहता। उसे लगा कि मैं इससे प्रेम करने लगा हूँ किंतु पहिले की भाँति नहीं जब यह प्रेम उसके लिए रहस्य की भाँति था और वह स्वयं भी यह स्वीकार नहीं करना चाहता था कि मैं प्रेम करता हूँ। तब वह विश्वास करता था कि व्यक्ति एक ही बार प्रेम कर सकता है। अब वह जानता था कि वह उससे प्रेम करता है और उसे इस बात से प्रसन्नता थी। उसे एक संदेह था जिसे कि वह अपने ऊपर भी छाने नहीं देना चाहता था, कि यह प्रेम कैसा और इसका परिणाम क्या होगा। प्रत्येक व्यक्ति की तरह नेखलूदोव में भी दो व्यक्ति थे: एक तो आध्यात्मिक,जो कि अपने लिए ऐसी प्रसन्नता की खोज करता है जो प्रसन्नता कि सब को प्रसन्न करने वाली हो; दूसरा पाशविक, जो केवल अपनी प्रसन्नता खोजा करता है और अपनी प्रसन्नता के लिए सारे

विश्व की प्रसन्नताएँ निछावर कर सकता है। इस अवसर पर उस पर अहं-मन्यता का पागलपन सवार था, जिस पागलपन को वह पीतर्संबर्ग और सेना से अपने साथ लेकर आया था। इस समय उस पर यह पाशविक व्यक्ति सवार था और उसने उसकी आत्मा को बुरी तरह कुचल दिया था।

किन्तु जब उसने कातूशा को देखा तो उसके अन्दर आज से तीन वर्ष पूर्व की वही पुरानी भावनाएँ उदित हो आईं और उसकी आत्मा ने सिर उठाना तथा अपने अधिकारों की माँग करना प्रारम्भ कर दिया और ईस्टर तक, पूरे दो दिन, अस्वीकृत और कभी न रुकने वाला द्वन्द्व उसमे चलता रहा।

अपने अन्तंमन में वह समझ चुका था कि मुझे यहाँ से चला जाना चाहिए, बुआ के पास ठहरने का कोई सच्चा कारण नहीं है—वह जानता था कि इसमे कोई भलाई नही होने की किन्तु फिर भी यहाँ सबकुछ इतना भला और गुदगुदी पैदा करने वाला लगा कि उसने ईमानदारी से सच्ची बात को स्वीकार नही किया और वह रुका रहा।

ईस्टर की संध्या को बड़े पादरी और छोटे पादरी को प्रार्थना के लिए वृद्धा महिलाओं के घर आने में बहुत कठिनाई हुई थी। एक तो घर गिरजाघर से तीन मील दूर था, दूसरी बात कि रास्ते में ओखरी पोखरी पड़तीं जिनसे स्लेजगाड़ी को यहाँ तक लाने में बडी दिक्कत हुई।

नेखलूदोव अपनी बुआओं और नौकरों के साथ प्रार्थना में सम्मिलित हुआ और द्वार के पास खडी कातूशा को देखता रहा। कातूशा पादरियों के लिए धूप-दान लेकर आई थी। फिर पादरियों और बुआओं को ईस्टर का चुम्बन देकर, यद्यपि इस समय अर्द्ध रात्रि नही थी अतः ईस्टर भी नही था, वह अपने सोने के कमरे में जा रहा था कि उसने वृद्धा नौकरानी मेत्रोना पाव्लोना को ईस्टर की केक और मिठाइयाँ लाने के लिए चर्च की तैयारी करते देखा। अर्द्ध रात्रि की प्रार्थना के पश्चात् गिरजाघर से प्रसाद मिला करता है। उसने सोचा—"मैं भी जाऊँगा।"

गिरजाघर जाने की सड़क पर स्लेज या पहिएदार गाडी नहीं चल सकती थी, इसलिए नेखलूदोव ने बुड्ढे घोड़े 'भाई के घोड़े' पर जीन कसने को कहा। वह चाची के घर को अपना ही जो समझता था। और बजाय सोने के उसने अपनी सुन्दर यूनीफार्म पहिनी, कसी हुई ब्रीचें चढ़ाईं और ओवरकोट लादा तथा खूब

खिलाए पिलाए तथा मोटे-ताजे बुड्ढेघोड़े पर चढ़कर चर्च की तरफ बर्फ और खार-खड्डों को पार करता हुआ चल दिया। घोड़ा रास्ते भर हिनहिनाता रहा।

१५

आरम्भ का यह धर्मसमाज नेख्लूदोव के जीवन में हमेशा के लिए सबसे सुन्दर और वर्णनात्मक स्मृतियों में से एक बनकर रह गया। मार्ग में अँधेरा था बस इधर-उधर बर्फ के ढेर के कारण ही सफेदी दिखलाई देती थी। जब वह इस अंधेरे से निकलकर चर्च के दालान में पहुंचा तब प्रार्थना शुरू हो चुकी थी। दालान रोशनी से जगमगा रहा था, क्योंकि चर्च पर दीपकों की कतारें चारों तरफ सजाई गई थी।

मेरी इवानोव्ना के भतीजे के पहिचानते ही किसानों ने उसको चर्च में पहुंचा दिया और उसके घोड़े को, जो कि रोशनी को देखकर कानों को ऊँचा उठाए हुए था, एक सूखी सी जगह ले जाकर बाँध दिया। चर्च में बहुत भीड़ थी।

दाहिनी ओर खड़े हुए थे किसान : घर के बुने हुए कोट पहिने वृद्ध लोग, जिन्होंने अपनी टाँगों पर सफेद धारीधार पट्टियाँ बाँध रखी थीं; और नए कोट पहिने, कमर पर चमकीले तेज रंगों की पट्टियाँ बाँधे तथा पालिशदार जूते कसे नवयुवक।

बाँई तरफ अपने सिरों पर लाल रूमाल बाँधे, काली मखमल की बाँहों वाली जाकिटें, गहरे लाल रंग की बाँहदार कमीजे, हरी, नीली, लाल चमकीले रङ्ग की कुर्तियाँ और चमड़े के नालदार जूते पहिने युवतियाँ खडी हुई थीं। वृद्धा स्त्रियों के कपड़े कम भड़कीले थे। वह उनके पीछे खड़ी थी। उन्होने सफेद रूमाल बाँध रखे थे, घर के बुने कोट, पुराने फैशन की कुर्तियाँ जो घर के बुने सामान की बनी हुई थी, और जूते पहिन रखे थे। चमकीले वस्त्र पहिने, तेल फुलेल युक्त बालों वाले बच्चे अन्दर बाहर आ जा रहे थे।

पुरुषवर्ग, क्रास का चिह्न बनाकर, सिर झुकाते और फिर उठा लेते और अपने बालों को पीछे करते।

स्त्रियां, विशेषतया वृद्धा, मूर्तियों पर अपनी दृष्टि जमातीं तथा क्रास का

चिह्न बनातीं। मूर्त्तियों के चारों तरफ मोमबत्तियाँ जल रही थीं। और वे अपने जुड़े हुए हाथों से माथों, कन्धों और पेटों पर लगे रूमालों को जोर से दबाते हुए कानाफूसी करती हुई झुकतीं या घुटनों के बल बैठ जातीं। बच्चे जब देखते कि लोग उनकी ओर देख रहे हैं तो वे बड़े लोगों की नकल करते हुए सच्चे दिल से प्रार्थना करते। मूर्त्तियों के बक्सों पर सोने के पानी का मुलम्मा हो रहा था और उनके चारों तरफ चक्राकार सुनहरी सजावटों में रखी लम्बी मोमबत्तियां जल रही थी जिनके प्रकाश से कि वे प्रकाशित हो रहे थे। मोमबत्तीदानों में छोटी बत्तियाँ भरी पड़ी थी। समवेत गान में अवैतनिक गायकों की मस्त धुनें निकल रही थीं जिनमे लड़कों की मोटी पतली आवाजें निराली ही थीं।

नेखलूदोव सामने आया। चर्च के मध्य भाग में नगर के धनीमानी लोग थे: एक धनी अपनी पत्नी और लड़के के साथ (लड़का नाविक की पोशाक में था), पुलिस अफसर, तारबाबू, बढ़िया जूते पहिने एक व्यापारी, और अपने सीने पर तमगा लटकाये गाँव का मुखिया; और गिरजे के चबूतरे की दाँई ओर धनी की पत्नी के ठीक पीछे मात्रोना पाव्लोव्ना लिलक की चुभीली पोशाक पहिने और झालरदार सफेद शाल ओढ़े खड़ी थी और वहीं खड़ी थी कातूशा। उसने श्वेत ड्रेस, तह की हुई चोली पहिनी हुई थी, उस पर नीला पटका बाँधा था तथा अपने काले बालों में लाल फीता लगा रखा था।

प्रत्येक वस्तु उत्सव सम्बन्धी, गम्भीर, चमकदार और सुन्दर लग रही थी: पादरी सफेद खीनखाप के लबादे पर लटके हुए सोने के क्रास में, छोटा पादरी, तारबाबू और मंत्रोच्चारण कराने वाले रुपहरी और सुनहरी पोशाकों में; अवैतनिक गायक अपने सर्वश्रेष्ठ कपड़ों में तथा तेल युक्त कढ़े बालों में; छुट्टी के गीतों की मस्त धुनें जो कि नृत्य के संगीत के समान लग रही थी; और पादरी का, जिसने फूलों से सजी मोटी मोमबत्ती ले रखी थी, लोगों को लगातार आशीर्वाद देते रहना; और "ईसू जाग गया, ईसू जाग गया।" की बार-बार दोहराने वाली ध्वनियाँ! सब ही सुन्दर था; किन्तु इन सबसे अधिक सुन्दर थी सफेद ड्रेस, नीला पटका पहिने हुए और बालों में लाल फीता बाँधे हुए कातूशा की आँखें जो अत्यन्त प्रसन्नता से चमक रही थीं।

नेखलूदोव समझ गया कि उसने मेरी ओर देखा नहीं तो क्या है किन्तु वह जान गई है कि मैं यहाँ उपस्थित हूँ। उसने यह ध्यान तब किया जब कि वह वेदी के पास जाते समय उसके पार्श्व से निकली। उसे कुछ बात नहीं करनी थी

किन्तु उसने सोच निकाली और जब वह उसके पास से निकली तो वह धीमे स्वर में बोला—"चाची ने मुझसे कहा था कि वह अपना व्रत तब खोलेगी जब धर्म-समाज समाप्त हो जायगा ।"

कातूशा की सुन्दर मुखाकृति पर नया रक्त दौड़ गया । वह जब भी उसकी तरफ देखती तभी ऐसा होता था । आनन्द से भरी, हँसती हुई आँखों से उसने सरलता से नेखलूदोव की ओर देखा और उसकी आँखें वहीं जम गईं ।

"मैं जानती हूँ ।" उसने मुस्कुराकर कहा ।

इसी समय हाथ में ताँबे के बर्तन में पवित्र पानी भर कर तारबाबू बाहर जा रहा था और कातूशा को न देख पाने के कारण उसका श्वेत वस्त्र कातूशा से छू गया । वास्तव में वह कातूशा से इसलिए भिड़ गया कि नेखलूदोव से वह उसके सम्मान-स्वरूप कुछ अन्तर से निकलना चाहता था । और नेखलूदोव को आश्चर्य हुआ कि यह तारबाबू यह नहीं समझता कि प्रत्येक वस्तु जो यहाँ है—यहीं की नहीं समस्त संसार की प्रत्येक वस्तु, कातूशा के ही लिए है । और यह कि सब चीजें गौण मानी जा सकती हैं वह नहीं, क्योंकि उन सबका केन्द्र वही है; उसके लिए ही सब मोमबत्तीदानों में ये मोमबत्तियाँ और लालटेनें जलाई गई हैं; उसके लिये गाए गए हैं ये आनन्दपूर्ण गीत "प्रभु का त्यौहार देखो ! हर्ष मनाओ आप !" जो कुछ भी संसार में उत्तम वस्तुएँ हैं—सब उसके लिए हैं । और उसको लगा कि कातूशा जानती है कि सब उसके ही लिए हैं । जब उसने उसकी सुन्दर आकृति, तह किया हुआ श्वेत लिबास और आनन्द एवं प्रफुल्लता से व्याप्त उसका मुखमंडल देखा तो उसे अनुभव हुआ कि इस समय जो मधुर गान मेरी आत्मा में हो रहा है वही गान कातूशा की में भी हो रहा है ।

पहिलो और बाद की प्रार्थना के बीच मध्यान्तर में नेखलूदोव चर्च से चल पड़ा । लोगों ने उसे निकलने का मार्ग दे दिया और सम्मान में मस्तक झुकाए । कुछ तो उसे पहिचानते थे, और बहुत सों ने पूछा कि यह है कौन ?

सीढ़ियों पर वह रुक गया । भिखारियों ने पैसे माँगते हुए उसे चारों तरफ से घेर लिया । अपनी जेब की सब रेजगारी उसने उन लोगों में बाँट दी ।

दिन तो निकलने लगा किन्तु अभी सूर्योदय नहीं हुआ । लोग चर्च के आँगन में कब्रों के पास एकत्रित होने आरम्भ हो गए । कातूशा अभी बाहर नहीं आई थी और नेखलूदोव उसकी प्रतीक्षा कर रहा था ।

लोग अब भी पत्थर की सीढ़ियों पर जूतों से खटखट करते बाहर निकल रहे थे और चर्च के आँगन में फैलते जा रहे थे।

उसकी चाची के अत्यन्त वृद्ध रसोइए ने नेखलूदोव को रोका ताकि वह ईस्टर के उपलक्ष में उसका चुम्बन ले सके। रसोइए की वृद्धा पत्नी ने, जिसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, अपने रूमाल में से एक पीला रँगा हुआ अण्डा निकाल कर नेखलूदोव को दिया। नया कोट पहिने, हरी बैल्ट बाँधे एक किसान नव-युवक मुस्कुराता हुआ उनके पास आकर खड़ा हो गया।

"ईसू जाग गया।" प्रसन्न नेत्रों से वह बोला और नेखलूदोव के पास आकर उसने अपनी भली लगने वाली किसानू सुगन्धि से उसे आवृत कर दिया तथा अपनी घुँघराली दाढ़ी चुभोते हुए कठोर तरुण ओठों से तीन बार उसका चुम्बन लिया।

इधर तो किसान-युवक नेखलूदोव का चुम्बन ले रहा था और उसे एक गहरे ब्राउन रंग का अण्डा दे रहा था, उधर नेखलूदोव को मात्रोना पाव्लोव्ना की लिलक की पोशाक और लाल फीता युक्त काले बालों वाला उसका सिर दिखलाई दिया।

कातूशा के सामने सहस्रों की भीड़ थी फिर भी उसने उसे पहिचान लिया और नेखलूदोव ने देखा कि कातूशा का चेहरा एकदम से खिल उठा है।

वह मात्रोना पावलोव्ना के साथ ड्योढ़ी तक आई और भिक्षुकों को दान देते देते रुक गई। उसके पास एक भिखारी आया जिसकी नाक की जगह पर लाल पपड़ी पड़ी हुई थी। उसने उसे कुछ पैसे दिए, अपने पास खींचा और बिना किसी घृणा के उसका तीन बार चुम्बन लिया। उसकी आँखों में आनन्द की वही झलक थी। और ऐसा करते समय उसके नेत्र नेखलूदोव से जा मिले—तब उसने उसे इस प्रकार देखा मानो कि वह पूछ रही हो "क्या मैं ठीक मार्ग पर हूँ ?" "हाँ प्रिये, हाँ ! ठीक है। सब बातें ठीक हैं, सब वस्तुएँ सुन्दर हैं ! मैं तुमसे प्रेम करता हूँ !"

वे ड्योढ़ी की सीढ़ियों से नीचे उतरे और वह जा पहुँचा उसके पास। वह उसको ईस्टर का चुम्बन नहीं देना चाहता था किन्तु केवल उसका सामीप्य चाहता था।

मात्रोना पावलोव्ना ने अपना सिर झुकाया और मुस्करा कर बोली— "ईसू जाग गया है।" उसका स्वर कह रहा था "आज हम सब बराबर हैं।"

उसने गेंद की तरह लिपटे हुए रूमाल से अपना मुँह पोंछा और उसकी तरफ ओठ बढ़ाए ।

"निश्चय ही ।" नेखलूदोव ने उसका चुम्बन लेते हुए कहा । तब उसने कातूशा की ओर देखा । वह लजा गई और उसके पास आई "दिमीत्री इवानोविच, ईसू जाग गया है ।" "सचमुच वह जाग गया है ।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया और वे दोनों दो बार चुम्बन लेकर रुक गए, मानों सोच रहे हों कि तीसरा चुम्बन आवश्यक है या नही, और यह निश्चय करने पर कि आवश्यक है उन्होंने तीसरी बार चुम्बन लिया तथा मुस्कुरा दिए ।

"क्या आप पादरी के पास नही जा रहीं ?" नेखलूदोव ने पूछा ।

"नहीं ! दिमित्री इवानोविच, यहाँ हम थोड़ी देर बैठेंगे ।" कातूशा ने सश्रम कहा (मानो कि उसने कोई आनन्दप्रद कार्य समाप्त किया हो) । उसके वक्ष दीर्घ निःश्वासों के कारण हिल रहे थे । वह सीधी नेखलूदोव की ओर अपनी तिरछी आँखों में समर्पण, कौमार्य-पावित्र्य एवं प्रेम भर कर देखने लगी ।

पुरुष और नारी के मध्य प्रेम में सदा एक ऐसा क्षण आता है जब यह प्रेम पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है—एक ऐसा क्षण जब प्रेम में चेतनता नहीं रहती, विवेक नहीं रहता और कुछ ज्ञान नही रहता । ऐसा ही क्षण नेखलूदोव के जीवन में उस ईस्टर की रात को आया । अब कातूशा के स्मरण में उसे सबकुछ विस्मरण हो गया; चिकना चमकदार काला सिर, श्वेत तह की हुई लिबास जिसने कि उसके कौमार्य की समस्त सुन्दर आकृति को आवरित कर रखा था, उसके अर्ध-विकसित वक्ष, सलज्ज कपोल,कोमल प्रभावपूर्ण काले दृग, एवं उसकी सम्पूर्ण आत्मा जिस पर छाप वर्तमान थी उन दो महत्त्वपूर्ण गुणों की—पावित्र्य एवं पवित्र प्रेम की—प्रेम केवल मेरे ही लिए नहीं (वह इसे जानता था) किन्तु प्रत्येक के लिए और प्रत्येक वस्तु के प्रति, उस भिक्षु के प्रति भी जिसका कि उसने चुम्बन लिया था ।

वह जानता था कि उसके अन्दर वह प्रेम वर्त्तमान है क्योंकि उसे उस रात्रि और प्रभात का ज्ञान था जब कि स्वयं उसकी आत्मा में भी वह प्रेम विद्यमान था और वह यह भी जानता था कि इसी प्रेम के कारण हम दोनों के व्यक्तित्व मिल-कर एक हो गए हैं ।

आह ! काश उस रात को वह उस स्थिति पर न पहुंचता ! "हाँ ! वह सब वीभत्स कांड ईस्तर की रात को नहीं हुआ ।" पञ्चों के कमरे की खिड़की के पास बैठते हुए उसने सोचा ।

१६

चर्च से लौटने के बाद नेखलूदोव ने अपनी बुआओं के साथ व्रत तोड़ा और स्प्रिट का एक गिलास तथा कुछ मदिरा पी। रेजीमेन्ट से ही उसको पीने की आदत पड़ चुकी थी। और कमरे में पहुँचने के बाद वह कपड़े पहिने ही सो गया। द्वार की खटखटाहट ने उसे जगा दिया। वह पहिचान गया कि यह किसकी खटखटाहट है; और आँखें मलता, ऐंड़ता हुआ उठ बैठा।

"कातूशा, क्या तुम हो? अन्दर आ जाओ।" वह बोला।

उसने उठकर द्वार खोल दिया।

"भोजन तैयार है।" वह बोली। वह अभी तक वही श्वेत लिबास पहिने हुए खडी थी, सिर्फ बालों में फीता नहीं था। उसने उसे मुस्कुरा कर देखा मानो वह उसे कोई बहुत ही सुन्दर समाचार देने वाली हो।

"मैं आ रहा हूँ।" उठते ही उसने बालों को काढ़ने के लिए कंघा उठाते हुए कहा।

वह एक मिनिट चुपचाप खडी रही। यह देखकर नेखलूदोव ने कंघा पटक उसकी ओर एक कदम बढ़ाया किन्तु उसी क्षण वह एकाएक मुडी और त्वरित गति से निःशब्द चटाई की धारियो पर होती गैलरी के मध्य चली गई।

"मैं कितना मूर्ख हूँ।" नेखलूदोव ने सोचा—"मैंने उसे रोका क्यों नहीं?" और दौड़कर वह उसके पास आ गया।

मैं उससे क्या करना चाहता था यह वह स्वयं ही नहीं जानता था किंतु उसे लगा कि जब वह कमरे में आई थी तब मुझे कुछ-न-कुछ करना चाहिए था—कुछ ऐसा जो कि ऐसे अवसरों पर साधारणतया किया जाता है और मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।

"कातूशा रुको।" वह बोला।

"कहिए, क्या काम है?" उसने रुकते हुए कहा।

"कुछ नही केवल..." और चेष्टा कर उसने स्मरण किया कि लोग उसकी जैसी स्थिति में कैसा व्यवहार करते हैं और उसने उसकी कटि में हाथ डाल दिया।

चुपचाप खड़ी होकर उसने उसके नेत्रों में देखा।

"नहीं, दिमीत्री इवानोविच ! ऐसा मत करो ! आपको यह शोभा नहीं देता ।" वह बोली । लज्जा से उसके नेत्रों में अश्रु आ गए और उसकी बाँह को उसने अपने सशक्त कठोर हाथों से अलग हटा दिया ।

नेखलूदोव ने उसे रोका नहीं । क्षण मात्र के लिए वह न केवल भ्रम एवं संकोच में पड़ गया किन्तु उसे स्वयं से घृणा भी हो आई । इस समय उसे अपनी आत्मा पर श्रद्धा कर लेनी चाहिए थी और उसे जान लेना चाहिए था कि यह भ्रम एवं संकोच उत्पन्न करने वाली मेरी अपनी आत्मा है जो स्वतंत्र होना चाहती है; किन्तु उसने सोचा कि यह मेरी मूर्खता है, और कि मुझे उसी प्रकार व्यवहार करना चाहिए जैसे कि अन्य सब करते हैं । वह उसके पास फिर पहुँच गया तथा उसने उसकी ग्रीवा का चुम्बन ले लिया ।

यह चुम्बन उस पहिले विचारहीन चुम्बन से, जो कि बकाइन की झाड़ियों के पीछे लिया गया था तथा उस चुम्बन से जो कि आज प्रातःकाल चर्च के आँगन में लिया था, नितांत भिन्न था । यह चुम्बन भयानक था और कातूशा को भी यही अनुभव हुआ ।

"ओह ! आप क्या कर रहे हैं ?" वह ऐसे स्वर में चिल्लाई जिससे यह प्रकट होता था कि नेखलूदोव ने किसी अमूल्य वस्तु को तोड़कर इस अवस्था में पहुँचा दिया हो कि उसका सुधार ही सम्भव नहीं; और वह शीघ्र ही वहाँ से भाग दी ।

वह भोजन कक्ष में आया । सुन्दर वस्त्र पहिने हुए उसकी दोनों बुआ, उनका पारिवारिक चिकित्सक, तथा एक पड़ौसी पहिले से ही वहाँ उपस्थित थे । प्रत्येक वस्तु अत्यन्त सादा थी किन्तु नेखलूदोव के हृदय में आँधी उठ रही थी । जो बातें हो रही थीं उनमें से कोई उसकी समझ में नहीं आ रही थी और वह कभी जभी 'हूँ' 'हाँ' कर देता । वह उस समय केवल कातूशा के विषय में सोच रहा था । उसने मार्ग में कातूशा को पकड़ कर जो अन्तिम चुम्बन लिया था केवल उसी से उत्पन्न इन्द्रियजनित अनुभव को वह बार-बार स्मरण कर रहा था । उससे दूसरी बात सोची ही नहीं जा रही थी । जब वह कमरे में आई तब उसकी ओर बिना देखे ही उसने अपने सम्पूर्ण मन से उसकी उपस्थिति का आभास प्राप्त किया तथा प्रयत्नपूर्वक चेष्टा की कि मैं उसकी ओर न देखूँ ।

भोजन के बाद तुरन्त ही वह अपने कमरे में चला गया और काफी देर तक बड़ी उत्तेजना में चहलकदमी करता रहा । वह घर में उठने वाली हर आवाज को सुनता हुआ उसके पदचापों की प्रतीक्षा करने लगा । उसके पाशविक अहं ने

अब अपना सिर ही नही उठाया वरन जब वह पहिली बार यहाँ आया था तब की और आज सुबह की भी आत्मा पैरों तले रोंद डालने में सफलता प्राप्त कर ली। अब इस दुर्दान्त पाशविक अहं का उस पर एकछत्र साम्राज्य हो गया।

यद्यपि दिन भर वह कातूशा से मिलने का अवसर देखता रहा किन्तु वह उसे एकान्त में न मिल पाई। कदाचित् वह उससे बचना चाहती थी। किसी कारण से, सायंकाल कातूशा को नेखलूदोव से अगले वाले कमरे में जाना पड़ा। डाक्टर को रात में वहीं रोक लिया गया था अतः कातूशा को उसका बिस्तर लगाना था। जब कमरे में कातूशा के जाने की आहट नेखलूदोव ने सुनी तो उसने साँस रोक कर निःशब्द चलते हुए उसका पीछा किया मानो कि वह कोई अपराध करने जा रहा है। दो कोने पकड़े वह तकिए पर एक साफ खोली चढा रही थी। खोली में उसकी बाँहें अन्दर थी। वह मुडी और मुस्कुरा दी; किन्तु उस हँसी में प्रसन्नता एवं आनंद नहीं था वरन् था भय एवं आर्द्रता। मुस्कान मानो कह रही थी कि जो कुछ भी तुम कर रहे हो, अनुचित है। वह क्षण भर के लिए रुक गया। संघर्ष की भी संभावना थी। उसके सत्य प्रेम की आवाज यद्यपि क्षीण थी किंतु अब भी वह उसके, उसकी भावनाओं के और उसके जीवन के पक्ष में बोल रही थी। दूसरी आवाज कह रही थी "सावधान ! अपनी प्रसन्नता, अपने आनन्द का अवसर मत चूको !" और इस दूसरी आवाज ने पहिली आवाज का गला घोट दिया। वह स्थिर डगों से उसके पास गया, और एक भयानक दुर्दान्त पाशविक वासना ने उस पर अधिकार कर लिया।

उसकी कमर में बाँह डालकर उसने उसे बिस्तर पर बैठा दिया; और यह अनुभव कर कि अभी कुछ और करना शेष है वह उसके पास बैठ गया।

"दिमीत्री इवानोविच ! प्रिय ! कृपया मुझे जाने दीजिए।" आर्द्र स्वर में वह बोली—"मात्रोना पावलोव्ना आ रही हैं।" वह उससे छूट कर अलग हट गई। सचमुच ही कोई दरवाजे पर आ रहा था।

"अच्छा, तो मैं तुम्हारे पास रात में आऊँगा।" वह बहुत धीमे स्वर में बोला—"अकेली मिलोगी न ?"

"आप क्या सोच रहे हैं ? बिल्कुल नही ! नहीं ! नहीं !" —वह बोली ; किन्तु यह तो केवल होंठ ही बोले, उसके सम्पूर्ण मन के काँपते हुए भ्रम ने कोई बिल्कुल ही भिन्न बात कही।

यह मात्रोना पावलोव्ना ही थी जो द्वार पर आई थी। वह अपनी बाँहों

पर कम्बल डालकर लाई थी। उसने नेखलूदोव की ओर घृणा से देखा और कातूशा को गलत कम्बल लाने के ऊपर क्रोध में झिड़कने लगी।

नेखलूदोव चुपचाप बाहर तो चला गया किन्तु उसे लज्जा नहीं लगी। यह वह मात्रोना पावलोव्ना के चेहरे को देखकर अन्दाज लगा सकता था कि वह मुझे ही दोष दे रही है। वह जान गया कि वह मुझे अकारण ही दोष नहीं दे रही है तथा उसने अनुभव किया कि मैं अनुचित कर रहा था। किंतु वह विलक्षण, नीच, पाशविक उत्तेजना कातूशा के प्रति सच्चे प्रेम की पुरानी भावनाओं से बिल्कुल स्वतन्त्र हो चुकी थी और दूसरी चीजों के लिए बिना कोई स्थान छोड़े मन पर एकछत्र अधिकार जमाए बैठी थी। अब वह जान गया कि इस भावना को सन्तुष्ट करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए और सोच यह रहा था कि इसे करने के लिए मौका कैसे निकाला जाय।

पूरी शाम वह उन्मत्त की भाँति घूमता रहा; कभी अपनी बुआ के कमरे में जाता, फिर लौटकर अपने कमरे में आता, फिर बाहर ड्योढ़ी पर। बस उसके मस्तिष्क में एक ही विचार था कि एकान्त में वह मुझे कैसे प्राप्त हो; किन्तु कातूशा उससे बचती रही, और मात्रोना पावलोव्ना उस पर कठोर दृष्टि रखने लगी।

१७

इसी भाँति शाम बीत गई, रात हुई। डाक्टर सो गया। नेखलूदोव की दोनों बुआ भी सो गईं और उसे ज्ञात था कि मात्रोना पावलोव्ना अब शयनकक्ष में बुआ के पास है इसलिए कातूशा नौकरानियों के कमरे में बिल्कुल अकेली होगी। वह फिर ड्योढ़ी पर गया। द्वार के बाहर अंधेरा, नमी और गर्मी थी और बसन्त का सफेद कुहरा, जो कि अन्तिम बर्फ को भगा देता है या अन्तिम बर्फ के पिघलने के फलस्वरूप उत्पन्न होता है, वायु में भरा पड़ा था।

पहाड़ी के नीचे सरिता से, जो कि सामने के द्वार से सौ पग दूर थी, एक विचित्र ध्वनि आ रही थी। यह बर्फ की पिघलन थी।

नेखलूदोव सीढ़ियों से उतरा और चमकती हुई बर्फ की तहों से ढके गड्ढों के ऊपर होता हुआ नौकरानियों के कमरे की खिड़की के पास पहुँचा। उसके वक्ष

की धड़कन इतनी तीव्र थी कि स्पष्ट सुनाई दे रही थी। कठिनाई से लिया हुआ साँस लम्बी गहरी साँसों में आ जा रहा था। कमरे में एक छोटा लैम्प जल रहा था और एक मेज के पास सामने देखती हुई विचारमग्न कातूशा अकेली बैठी थी। बिना हिले डुले नेखलूदोव काफी देर तक खड़ा रहा और यह देखने के लिए प्रतीक्षा करता रहा कि, बिना यह जाने कि मुझे कोई देख रहा है, वह क्या करती है। एक या दो मिनट तक तो वह हिली भी नहीं; फिर उसने अपने नेत्र उठाए, मुस्कुराई तथा अपना सिर हिलाया मानो कि वह स्वयं को कोस रही हो, फिर अपनी मुद्रा बदली और अपनी दोनों बाँहें मेज पर रख दीं, फिर अपने सामने नीचे देखने लगी।

हृदय की धडकन तथा सरिता की विचित्र ध्वनि उसे सुनाई देती रही तथा वह खड़ा २ कातूशा को देखता रहा। कुहरे में नदी पर अधिक परिश्रम होता रहा और किसी चीज के टूट २ कर गिरने तथा रोने व चटकने की भी ध्वनियाँ आती रहीं। इन ध्वनियों के साथ एक दूसरे से टकरा कर बर्फ के टुकड़ों के टूटने की (काँच टूटने के समान) ध्वनि भी मिली हुई थी।

वहाँ खड़ा हुआ वह कातूशा के उदास, दुखभरे चेहरे को देखता रहा। उसके चेहरे पर अन्तरात्मा के संघर्ष की छाप दिखलाई दे रही थी। उसे उस पर दया आ गई। किन्तु आश्चर्य की बात है कि उस दया ने उसकी कामुकता को उत्तेजित ही किया।

कामुकता ने उस पर पूर्णतया अधिकार कर लिया।

उसने खिड़की खटखटाई। कातूशा काँप उठी मानो बिजली का करेंट मार गया हो, उसके समस्त अवयव काँप गए एवं चेहरे पर भय छा गया। तब वह कूद कर खिड़की के पास पहुँची और खिड़की के काँच से मुँह सटा लिया। उसने अपने हाथों से आँखों को मीड़ा और काँच में से झाँकी। भय उसके चेहरे पर अभी भी छाया हुआ था; वह उसे पहिचान गई। उसका चेहरा बहुत उदास था— इतना उदास जितना कि उसने कभी नहीं देखा। वह मुस्कराई किन्तु केवल इसलिए कि वह उसका आदर करती थी। उसकी आत्मा में प्रसन्नता नहीं थी वरन् भय छाया हुआ था। नेखलूदोव ने बाहर आकर आँगन में मिलने को हाथ से इङ्गित किया। किन्तु उसने सिर हिला दिया और खिडकी के काँच के पास ही खड़ी रही। वह काँच के पास आया, और उसे बुलाना ही चाहता था कि वह दरवाजे की ओर मुड़ी। प्रगट था कि किसी ने उसे आवाज दी थी। नेखलूदोव

खिड़की से परे हट गया। कुहरा इतना घना था कि पाँच कदम दूर से खिड़कियाँ नहीं दिखलाई पड़ती थी, किन्तु लैम्प का प्रकाश उस काले अन्धकार में लाल-लाल चमक रहा था। नदी से वही विचित्र ध्वनि--रोना, टूटना, खड़खड़ाना और तड़काहट आ रही थी। कुहरे में पास में कहीं मुर्गा बोला, दूसरे ने उत्तर दिया, फिर गाँव में कहीं दूर से अन्य चिल्लाने लगे और तब तक चिल्लाते रहे जब तक कि उनके स्वर मिलकर एकाकार न हो गए। उस रात को इस बार मुर्गों ने दूसरी बार बाँग दी थी।

मकान के कोने के पीछे नेखलूदोव इधर-उधर घूमता रहा। एक दो बार तो वह गड्ढों में भी चला गया। तब फिर वह खिड़की के पास आया। लैम्प अभी तक जल रहा था और कातूशा मेज पर अकेली बैठी थी मानों उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह खिड़की तक पहुंचा भी न था कि कातूशा ने सामने देखा। उसने खिड़की पर थाप दी। यह जाने बिना ही कि थाप किसने दी, वह एकदम द्वार की ओर भागी और नेखलूदोव ने बाहर का दरवाजा थोड़ा-सा खुलने की आवाज सुनी। वह ड्योढ़ी की बगल में रुक गया अब बिना कुछ कहे सुने उसने उसकी कमर पकड़ ली। वह उससे चिपक गई और अपना मुँह उठाकर उसने अपने ओठो पर उसके आलिंगन को स्वीकार किया। वे दोनो ड्योढ़ी की बगल के किनारे पर खड़े हुए थे जहाँ कि सब बर्फ पिघल चुकी थी। नेखलूदोव पीड़ादायक व असन्तुष्ट कामुकता से भरा पड़ा था। तभी द्वार उतना-सा ही फिर खुला और मात्रोना पावलोव्ना का क्रोधी स्वर सुनाई दिया—"कातूशा!"

वह उससे उछट कर नौकरानियों के कमरे में चली गई। सिटकनी लगाने की आवाज आई और फिर घोर शांति छा गई। लाल बत्ती बुझ गई। केवल कुहरा और नदी की कलकल ध्वनि ही बची रही।

नेखलूदोव खिड़की के पास गया। वहाँ उसे कोई नहीं दिखलाई दिया। उसने थाप दी किन्तु कोई उत्तर नही मिला। सामने के द्वार से वह फिर घर में गया किन्तु उसे नींद नहीं आई। वह उठकर बैठा हो गया और नंगे पाँवो उसके दरवाजे के मार्ग पर पहुंचा। उसका प्रकोष्ठ मात्रोना पावलोव्ना से अगला था। उसने मात्रोना पावलोव्ना के खर्राटे सुने। वह आगे बढ़ना ही चाहता था कि वह खाँसी और उसने अपने बिस्तरे पर करवट ली। नेखलूदोव का हृदय धक से रह गया और पाँच मिनट तक वह जहाँ का तहाँ रहा। जब फिर शांति छा गई और आराम से फिर वह खर्राटे भरने लगी, वह उन तख्तों पर चलते हुए, जो चरमराते

नही थे, आगे बढ़ा और कातूशा के कमरे के सामने आ गया। शायद वह जाग रही है, वहाँ कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही अन्यथा उसे उसकी साँस तो सुनाई देती। किन्तु ज्यों ही उसने फुसफुसाकर कहा—"कातूशा !" वह उछल पड़ी और मानो क्रोध में वहाँ से चले जाने का आग्रह करने लगी।

"क्या अभिप्राय है ? आप क्या चाहते है ? आपकी बुआ को इसका पता लग जायगा।" यह तो जबान कह रही थी किन्तु उसकी सम्पूर्ण आत्मा कहती थी— "मैं तुम्हारी हूँ।" और नेखलूदोव ने केवल इतना ही समझा।

"क्षण भर के लिए मुझे अन्दर आ जाने दो ! मैं तुम्हारे हाथ जोडता हूं !" उसे स्वयं ही नहीं ज्ञात था कि मैं कह क्या रहा हूँ।

वह चुप थी; तब उसने देखा कि कातूशा का हाथ मिटकनी की ओर आया। मिटकनी चटकी और वह कमरे में प्रविष्ट हुआ। उसने उसे, जैसी भी वह उस समय थी, पकड लिया और उसे उठा कर बाहर ले गया। वह मोटी व कडी कुरती पहिने हुए थी और उसकी बाँहें नङ्गी थीं।

"प्रियतम ! आप क्या कर रहे है ?" धीमे से वह बोली; किन्तु उसने उसकी बात की तरफ कोई ध्यान नही दिया और उसे बाहर ले गया।

"आह नहीं ! आपको ऐसा नहीं करना चाहिए ! मुझे छोड दीजिए !" वह उससे सटती हुई बोली।

× × ×

जब वह चुपचाप काँपती हुई उसके पास से चली तो उसने नेखलूदोव की किसी बात का उत्तर नहीं दिया। नेखलूदोव फिर ड्योढी में चला गया और हॉल की घटना को समझने की चेष्टा करता खडा रहा।

प्रकाश बढता जा रहा था। नीचे नदी से चटकने, टूटने और रोने की तथा बर्फ के टूटने की ध्वनि पहिले से भी जोर से आती रही। अब तो गडगडाहट भी सुनाई पडती थी। कुहरा हटने लगा था और उसमें से उसके ऊपर के क्षीण चन्द्रमा की मद्धिम चांदनी भी कुछ काली और विलक्षण-सी दिखलाई दे रही थी।

"इस सबका क्या अर्थ है ? यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है अथवा दुर्भाग्य की, जिसने कि मेरा पतन कर दिया ?" उसने मन-ही-मन सोचा।

"ऐसा तो प्रत्येक के साथ होता है, हरएक ऐसा ही करता है।" उसने सोचा और वह सोने चला गया।

अगले दिन सुन्दर, प्रसन्न-वदन एवं चतुर शेनबोक नेखलूदोव की बुआ के घर पर उससे मिलने आया और उसने अपने सुसंस्कृत एवं मधुर व्यवहार, दयालुता तथा नेखलूदोव के प्रति प्रेम से उनका हृदय जीत लिया। यद्यपि वृद्धा महिलाओं ने उसकी दयालुता की सराहना की किंतु उसने उन्हें भ्रम में डाल दिया क्योंकि वह आवश्यकता से कहीं अधिक थी। उसने एक अन्धे भिखारी को जो द्वार पर आया था एक रूबल दे दिया, नौकरों को इनाम में पन्द्रह रूबल दिए और जब सोफिया इवानोव्ना के पालतू कुत्ते का पंजा घायल हो गया और उससे रक्त बहने लगा तो उसने अपना केम्ब्रिक का रूमाल चीर-चीर कर डाला और उसकी पट्टी बनाकर कुत्ते के पंजे में बाँध दी। (रूमाल की कीमत सोफिया इवानोव्ना के अनुसार १५ रूबल प्रति दर्जन से कम न थी।) वृद्ध महिलाओं को कभी ऐसे आदमी से पाला न पड़ा था और उन्हें यह ज्ञात न था कि शेनबोक के ऊपर बीस लाख रूबल का ऋण था जिसमें से वह धेला भी लौटाने वाला नहीं था और इसलिए २५ रूबल कम या अधिक इसकी उसे कोई चिंता न थी।

शेनबोक दिन भर रहा फिर वह तथा नेखलूदोव दोनों ही रात को रवाना हो गए। अब वह रेजीमेन्ट में छुट्टी नही ले सकते थे क्योंकि उनकी छुट्टियाँ बिलकुल समाप्त हो आई थी।

अपनी दोनों बुआओं के पास रहने के अन्तिम दिन, जब कि नेखलूदोव को पिछली रात की सब बातें याद थीं, उसके हृदय में दो भावनाओं में द्वन्द्व चलता रहा—एक तो पाशविक प्रेम की वासनादग्ध स्मृति, जिसके साथ ध्येय प्राप्ति की सन्तुष्टि भी थी; और दूसरी थी इस बात की चेतना कि उसने बहुत अनुचित काम किया जिसे कि केवल कातूशा के ही लिए नही वरन् अपने लिए भी सुधार करना होगा।

इस समय नेखलूदोव में इतनी स्वार्थान्धता घुस चुकी थी कि वह अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ नहीं सोच पाया। उसे आश्चर्य तो यह था कि यदि उसके काम का किसी को पता चल जाय तो उसकी बदनामी कितनी होगी—कम या अधिक। वह यह नहीं सोच पाया कि कातूशा की अवस्था क्या होगी और उसका भविष्य क्या बनने वाला है।

जब उसने देखा कि शेनबोक को उसके और कातूशा के संबंधों का पता लग

गया है तो इससे उसका अहंकार ही बढ़ा ।

"ओह, यह बात है ! इसलिए तुम अपनी बुआ के पास लगभग एक सप्ताह से ठहरे हुए थे ।" शेनबोक ने कातूशा को देखकर कहा—"खैर, मुझे इस पर कोई आश्चर्य नही, मैने भी ऐसा ही किया होता । लड़की सुन्दर है ।"

नेखलूदोव भी सोच रहा था कि यद्यपि अपने प्रेम की लालसा की पूर्ण तृप्ति के बिना चले जाना दुखदायक है, फिर भी चले जाने में ही लाभ था । लाभ था उन सम्बन्धों में रोक का लग जाना क्योंकि इस सम्बन्ध का आगे बढ़ाना उसके लिए बहुत कठिन था । तब उसने सोचा कि उसे कुछ रुपए देने चाहिए । रुपए उसके लिए नहीं, इसलिए नहीं कि उसे उनकी आवश्यकता पड़ सकती है, किन्तु क्योंकि मुझे ऐसा करना चाहिए और यदि मैं उसका उपयोग कर उसका मूल्य नहीं चुकाऊँगा तो लोग मुझे बेईमान समझेंगे । इसलिए उसने उसको, अपनी और उसकी स्थिति की तुलना में जो उसे काफी बड़ी रक़म जँचती थी, दी ।

जाने के दिन भोजन के बाद वह बाहर गया और बगल के फाटक पर उसने कातूशा की प्रतीक्षा की । उसे देखते ही वह लजा गई और उसने निकल जाने की चेष्टा की । उसने नौकरानियों के कमरे के खुले द्वार की ओर उसका ध्यान दिलाया किन्तु नेखलूदोव ने उसे रोक लिया ।

"मैं तुमसे विदाई लेने आया हूँ ।" उसने अपने हाथ के लिफाफे की तह करते हुए कहा । लिफाफे मे सौ रूबल का एक नोट था । "वहाँ मैं...।"

वह उसका तात्पर्य समझ गई । उसने अपनी भौंहें सिकोडीं, सिर हिलाया और उसके हाथ को झटका देकर अलग हटा दिया ।

"इसे लो, ओह ! तुम्हे ले लेना चाहिए ।" हकलाते हुए वह बोला और उसकी एप्रन की गद्दी में लिफाफा घुसेड़ दिया तथा अपने कमरे में बड़बड़ाता और व्यग्र होता हुआ भाग गया मानो कि वह स्वयं दुखी हो गया हो । और काफी देर तक वह लम्बे डगों से इधर-से-उधर मानसिक उद्वेग सहन करते हुए चहलकदमी करता रहा और यहाँ तक कि दुखी स्वर में कराहते और जोर से ठोकर मारते हुए, इस अन्तिम दृश्य पर विचार करता रहा ।

"किन्तु मैं और कर भी क्या सकता था ? क्या ऐसी घटना प्रत्येक के साथ नहीं होती है ? शेनबोक स्वयं ही बतला रहा था कि इसका अमुक गवर्नेस के साथ सम्बन्ध है; चाचा ग्रीशा और मेरे पिताजी जब गाँव में रहते थे उनका एक किसान स्त्री से सम्बन्ध था और उससे एक नाजायज लड़का हुआ मीतेन्का, जो अभी तक

मौजूद है। और यदि हर कोई यही करता...खैर मैं मानता हूँ कि इसे रोका नहीं जा सकता था।" इस प्रकार उसने व्यर्थ शांति प्राप्त करनी चाही। अतीत की घटनाओं की स्मृति ने उसकी आत्मा को जला कर राख कर दिया।

अपनी आत्मा में, आत्मा की गहराइयों में, वह जानता था कि मैंने नीच, निर्दय, कायर व्यवहार किया है। और इस कार्य का ज्ञान मुझे न केवल दूसरों की कमियाँ खोजने से रोक देगा वरन् दूसरों की ओर सिर उठा कर देखने भी नहीं देगा। यह लिखने की तो कोई आवश्यकता ही नहीं कि अब उसे स्वयं अपने आपको अच्छा, भलामानुस, ऊँचे विचारों का आदमी समझने की भी सम्भावना नहीं रही, जैसा कि वह सोचा करता था और जैसा कि उसे अपने जीवन को दृढ़ता और प्रसन्नता से व्यतीत करने के लिए आवश्यक था। अब इस समस्या का एक ही समाधान था—इस विषय पर विचार ही न करना। और उसने उस पर विचार करना त्याग दिया।

इसमें उसे सबने सहायता की—इस जीवन ने जिसमे अब वह प्रवेश कर रहा था, नए वातावरण ने, नए मित्रों ने, युद्ध ने। सबने उसे उस घटना को विस्मृत करने में योग दिया। और जितना समय बीतता गया उतना ही वह भूलता गया—यहाँ तक कि अन्त में वह बिल्कुल ही भूल गया।

केवल एक बार युद्ध समाप्ति के पश्चात वह अपनी बुआ के पास कातूशा को देखने की आशा से पहुँचा। वहाँ उसे मालुम हुआ कि जब वह यहाँ इससे पूर्व आया था उसके बाद ही कातूशा कहीं चली गई। उसकी बुआओं ने सुना था कि वह पतित हो चुकी है तथा उसका कही जापा भी हुआ है। यह बाते सुनकर उसके हृदय को ठेस पहुँची। जापे के समय से विचार किया जाय तो बच्चा उसका भी हो सकता था तथा अन्य किसी दूसरे का भी। बुआओं ने उसी को दोष दिया और कहा कि उसकी माँ की कलुष प्रकृति से ही उसमें भी परम्परागत अवगुण आ गया है। उनकी यह धारणा सुनकर नेखलूदोव को प्रसन्नता ही हुई। इससे उसे लगा कि उसका दायित्व समाप्त हो गया है। पहिले तो उसने कातूशा तथा उसके बच्चे को खोजने का निश्चय किया, किन्तु अपनी आत्मा की गहराइयों में जब वह कातूशा का विचार करता तो इतना लज्जित एवं दुखी हो उठता कि कातूशा को खोजने का उसे साहस ही न होता। अब अपने पाप के विषय में सोचना ही समाप्त कर वह उसे विस्मरण कर देना चाहता।

अब इस आश्चर्यप्रद घटना ने उसकी स्मृति को सजग कर दिया तथा

उससे अपनी इस हृदयहीनता व निर्दय कायरता को स्वीकार कर लेने की माँग की जिसने कि हृदय पर पाप का इतना बड़ा बोझ होते हुए भी इन दस वर्षों तक जीने देना सम्भव रखा। किन्तु इस स्वीकारोक्ति से वह अब भी बहुत दूर था और उसको केवल इतना सा भय था कि कहीं वे सब बातें मालुम हो जाँय तथा वह या उसका वकील उन सब बातों को दोहराकर मुझे यहाँ सबके सम्मुख लज्जित न कर दे।

१६

इस मानसिक अवस्था में नेखलूदोव न्याय-निकेत से उठकर पंचों के कमरे में गया। वह खिड़की के पास बैठा हुआ लगातार सिगरेटें पीता जा रहा था तथा अपने चारों ओर होने वाली बातों को सुन रहा था।

मस्त व्यापारी को स्मेलकोव के समय बिताने के ढङ्ग से हार्दिक सहानुभूति हो गई प्रतीत होती थी।

"वह वृद्ध कुछ ऐसा ही था! सच्चे साईबेरियन फैशन का! वह जानता था कि मैं कहाँ हूँ। कोई डर नहीं! मुझे तो स्त्री दुष्टा लगती है।"

सरपञ्च अपनी धारणा बतला रहा था कि विशेषज्ञ की धारणाएँ प्रमुख वस्तु है। प्योत्र गेरासिमोविच यहूदी क्लर्क से कुछ परिहास कर रहा था; और वे ठहाका मार कर हँस पड़े। नेखलूदोव शांति चाहता था। उससे जो भी प्रश्न पूछे जाते वह उनका उत्तर एक दो शब्दों मे ही दे देता।

जब प्रवेशक ने टेड़े चलते हुए पञ्चों को न्याय-निकेत में फिर से बुलाया तब नेखलूदोव भयभीत हो उठा मानो कि वह न्याय करने नहीं जा रहा किन्तु न्याय उसी का होने वाला हो। उसकी अन्तरात्मा कह रही थी कि तू दुष्ट है, तेरा अपमान होना चाहिए जिससे कि लोग तेरी ओर देखे और हँसे। किन्तु फिर भी अपने स्वभावानुरूप वह अपने गर्वीले ढंग से चबूतरे पर चढ़ा और सरपञ्च की बगल में टाँगों पर टाँग रखकर अपने नकचश्मे को हिलाता हुआ बैठ गया।

बंदियों को भी लाया गया जिन्हें पहिले बाहर ले जाया गया था।

न्याय-निकेत मे कुछ लोग नए थे—साक्षी। और नेखलूदोव ने देखा कि जाली के सामने पंक्ति में बैठी हुई एक मोटी सी स्त्री की ओर मासलोवा देख रही है तथा

उसकी आँखें उस पर से हट नहीं पा रहीं। वह स्त्री सिल्क और मखमल का बड़ा भड़कीला लिबास पहिने हुए थी। उसने सिर पर फीता बाँध रखा था तथा ऊँचा सा टोप पहिन रखा था और उसकी बाँह में एक सुन्दर चमकदार बटुआ झूल रहा था। बाँह कोहनी तक उघड़ी हुई थी। उसे यह ज्ञात हो गया कि वह साक्षियों में से थी और उस वेश्यागृह की स्वामिनी थी जिसमें माशलोवा रहती थी।

साक्षियों का परीक्षण आरम्भ हुआ। उनके धर्म, नाम आदि पूछे गए। तब उन प्रश्नों के पश्चात, कि साक्षियों को शपथ लेनी चाहिए कि नहीं, वृद्ध पादरी अपनी टाँगों को मुश्किल से घसीटता और अपने सीने पर लटके हुए सोने के क्रास की तरफ उँगली दिखाता हुआ पुनः अन्दर आया। उसने साक्षियों तथा विशेषज्ञों को उसी ढङ्ग से शपथें दिलाई। उसमें अब भी वही विश्वास था कि मै लाभदायक और महत्वपूर्ण कार्य कर रहा हूं।

शपथ लेने के बाद वेश्यागृह की स्वामिनी कितायेवा के अतिरिक्त सभी गवाह फिर बाहर ले जाए गए। उमसे पूछा गया कि तुम इस मामले में क्या जानती हो। कितायेवा ने हर वाक्य पर अपना सिर और टोप हिलाया और बनावटी ढङ्ग से हंसी। उसने जरमनी टौन से बोलते हुए सम्पूर्ण विवरण बड़े चातुरी-पूर्ण ढंग से दिया--

'सबसे पहिले होटल का नौकर सीमन, जिसे मैं जानती थी, मेरे कमरे पर साईबेरिया के एक धनी व्यापारी के लिए एक लड़की लेने आया। और मैंने (लूबोव) कातूशा को भेज दिया। काफी देर बाद (लूबोव) कातूशा व्यापारी के साथ लौटी। व्यापारी स्वयं किसी 'उत्तम पद' पर प्रतिष्ठित था'—यह कहते समय वह हँसी। 'और लडकियों को घेरे, खिलाते-पिलाते मदिरा पीता रहा। उसके पास पैसा कम हो गया और उसने इसी (लूबोव) कातूशा को निवास स्थान पर भेजा। वह इस पर अनुरक्त हो गया था।' यह कहते समय उसने बन्दिनी की ओर देखा।

जब नेखलूदोव ने देखा कि माशलोवा इस पर मुस्कुरा दी तो वह इस बात से परेशान हो उठा। उसके हृदय में घोर तिरस्कार की दया-मिश्रित एक विचित्र और अस्थाई भावना जागी।

"और माशलोवा के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ?" माशलोवा के लिए नियुक्त वकील ने लजाते तथा कुछ हड़बड़ाते हुए पूछा। उसने न्याय विभाग में एक नौकरी के लिए प्रार्थना पत्र दिया था।

"वू बौत अच्छी।" कितायेवा बोली—"वू नूजुआन औरत परी और कूब-जूरत हाए। वू अच्छा कानदान में पली हाए और फ्रेंच पड़ सकती हाए। कबी वू बौत पी लेती थी मगर मदहोज नेई हुई। एक बौत अच्छी लरकी।"

कातूशा ने पहिले स्त्री की ओर देखा फिर एकाएक पञ्चों की ओर, तब नेखलूदोव पर अपने नेत्र स्थिर कर लिए। उसका (कातूशा का) चेहरा गम्भीर हो गया और दुखी भी। उसकी गम्भीर आँख ने कटाक्ष किया और उन दो विचित्र आँखों ने कुछ देर तक नेखलूदोव को, जो कि भयग्रस्त होते हुए भी उन तिरछी आँखों की तरफ से दृष्टि नहीं हटा सका निहारा जिनकी श्वेत कौड़ी में आश्चर्यजनक चमक थी।

वह उस भयानक रात्रि, कुहरे एवं नीचे सरिता पर हिम की कड़कन विशेषतया क्षीण चन्द्रमा, जिसके दोनों कोने उठे हुए थे और जो प्रभात में काला तथा विलक्षण-सा प्रकाश कर रहा था, के विषय में सोचने लगा। इन दोनों काली आँखों ने अब उसे उस काली और विलक्षण वस्तु का ध्यान दिला दिया।

"यह मुझे पहिचान गई है।" उसने सोचा और अपनी पीठ हिलाई मानो कि कोई घूँसा पड़ने वाला हो। किन्तु कातूशा उसे पहिचान नहीं सकी। उसने एक आह ली तथा प्रेसीडेण्ट की ओर पुनः दृष्टि की। नेखलूदोव ने भी आह भरी "ओह! काश यह शीघ्र समाप्त हो जाय!" उसने सोचा।

इस समय उसे घोर घृणा, दया एवं दुख का वैसा ही अनुभव हुआ जैसा कि उसे आहत पक्षी को मृगया में मारते समय होता था। घायल पक्षी शिकार के बक्से में संघर्ष करता है। उस पर क्रोध भी आता है और दया भी। और ऐसे अवसर पर व्यक्ति उस घायल पक्षी को शीघ्र मार डालने का निश्चय करता है ताकि उस बात को भूल जाय।

साक्षियों की बातें सुनते समय नेखलूदोव का हृदय ऐसी ही मिश्रित भावनाओं से भर उठा।

२०

किन्तु, जैसेकि उससे विरोध करनेको ही वह केस लम्बा होता गया। जब सब गवाहों की अलग-अलग और अन्त में विशेषज्ञ की भी जाँच हो चुकी तथा पब्लिक

प्रोसीक्यूटर और दोनों एडवोकेटों ने महत्ता की गंध में ढेरों व्यर्थ के प्रश्न पूछ डाले तब प्रेसीडेण्ट ने पञ्चों को आमन्त्रित किया कि वे उन वस्तुओं की जाँच करें जो पक्के सबूत के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। एक बड़ी अँगूठी, जिसमें हीरे जड़े थे और जो कि प्रत्यक्षतः तर्जनी उङ्गली में पहिनी गई थी और एक टेस्ट ट्यूब जिसमें कि विष का विश्लेषण किया गया था, उन प्रमाणों में सम्मिलित थीं। इनमें सील तथा लेबिल लगे हुए थे।

पञ्चगण इन्हें देखने ही वाले थे कि पब्लिक प्रोसीक्यूटर उठकर खड़ा हुआ और बोला कि इस काम से पूर्व शव की डाक्टरी जाँच के परिणाम पढ़कर सुनाए जाने चाहिए।

प्रेसीडेण्ट, इस केस को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करना चाहता था ताकि वह अपनी स्विस प्रेयसी से मिल सके। वह जानता था कि इस रिपोर्ट की पढ़ाई से थकान उत्पन्न होगी और डिनर का समय टल जायगा। किन्तु, क्योंकि पब्लिक प्रोसीक्यूटर को यह माँग करने का अधिकार था और वह उसे पढ़वाना चाहता था इसलिए उसे स्वीकृति देने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था।

मन्त्री ने डाक्टरी रिपोर्ट निकाली और उसे अपनी भौंड़ी तोतली बोली में 'र' और 'ल' में कोई अन्तर न करते हुए पढ़ना शुरू किया।

बाहरी जाँच ने सिद्ध कर दिया था कि :

१. थेलापोंट स्मेलकोव की ऊँचाई ६ फुट ५ इञ्च थी।
   ठीक है, कोई बुरा नहीं ! बहुत अच्छा कद।" व्यापारी ने मजे में नेखलूदोव के कान में धीरे-से कहा।
२. उसकी उम्ल कोई चालीस थी।
३. शव फूल लहा था।
४. खाल का लङ्ग हल्नेपन पल था औल कितनी ही जगह काले धब्बे थे।
५. खाल में कितने ही भाप के फफोले उठे हुए थे औल कितनी ही जगह से कतलनें-सी उधल गई थीं।
६. बालों का लङ्ग अखलोट का सा था। बाल मोटे थे औल खाल को छूने से बली आसानी से उखल आते।
७. आँखें बाहल निकल आई थीं औल पुतलियाँ धुँधली पल गई थीं।
८. नथुनों, दोनों कानों औल मुँह से मठे की तलह का एक तलल पदार्थ

टपका हुआ था; मुँह आधा खुला हुआ था।

९. चेहले और सीने की सूजन से गल्दन लगभग छिपी हुई थी।

और यह, और वह...।

नगर में मौज उड़ाने के लिए आए हुए व्यापारी के विशाल, मोटे, सूजे और अंग-भङ्ग शव की बाहरी जाँच के विवरण में पूरे चार पन्नों में सत्ताईस पैराग्राफ लिखे पड़े थे। नेखलूदोव के हृदय में उत्पन्न अस्थाई घृणा शव के इस वर्णन से और बढ़ गई। कातूशा का जीवन, शव के नथुनों से टपकता हुआ मठे के सदृश्य तरल पदार्थ, गड्ढों से बाहर निकली हुई आँखें और कातूशा के प्रति उसका व्यवहार यह सब एक ही समान लगे और उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वह इसी प्रकार की प्रकृति की एक-सी चीजों से पूर्णतया घिरा हुआ है तथा उनमें निमग्न है।

जब बाहरी जाँच की रिपोर्ट की पढ़ाई समाप्त हो गई तो प्रेंसीडेन्ट ने लम्बी साँस ली और यह आशा करते हुए कि यह समाप्त हो गया, अपना सिर उठाया; किन्तु मन्त्री तुरन्त ही भीतरी जाँच पढ़ने लगा।

प्रेसीडेण्ट ने हाथों पर अपना माथा टेक लिया तथा नेत्र बन्द कर लिए। नेखलूदोव के बाद बैठा हुआ व्यापारी बार-बार इधर-से-उधर ऊंघ रहा था, उससे जागा नहीं जा रहा था। बन्दीगण और पुलिस वाले बिल्कुल शांत बैठे थे।

आंतरिक जाँच से स्पष्ट था :

१. खोपली की हड्डियों से खाल आसानी से हटाई जा सकती थी औल वहाँ जमा हुआ लक्त बिल्कुल नहीं था।

२. खोपली की हड्डियों की मोटाई औसत दल्जे की थी औल वे सब ठीक थीं।

३. मस्तिष्क की झिल्ली मटमैली सफेद थी औल उस पल लगभग चाल चाल इञ्च लम्बे दो धव्वे थे।

और इस तरह तेरह पैराग्राफ और भी थे।

तब सहायकों के नाम और हस्ताक्षर प्रारम्भ हुए, और पोस्टमार्टम से पेट में हुए परिवर्तनों तथा आँतों एवं गुर्दों में हुई हल्की बदल के डाक्टरी परिणाम ने बड़ी सम्भावना इस बात की व्यक्त की कि स्मेलकोव की मृत्यु पेट में मदिरा के साथ विष पहुँचने के कारण हुई। पेट की अवस्था से यह तय करना कि विष कौन-सा था बड़ा कठिन था; किन्तु यह मानना आवश्यक था कि मदिरा के साथ विष पेट में पहुँचा था क्योंकि स्मेलकोव के पेट में मदिरा बहुत मात्रा में पाई गई थी।

"वह पी सकता था, कुछ गलत नहीं।" व्यापारी ने जागकर फिर धीमे-से कहा।

इस पढ़ाई में पूरा एक घण्टा लग गया किन्तु पब्लिक प्रोसीक्यूटर की इससे सन्तुष्टि नहीं हुई क्योंकि जब यह पढ़ी जा चुकी तब प्रेसीडेन्ट उसकी तरफ मुड़ा और बोला—"मैं समझता हूँ कि आंतरिक अवयवों की जाँच की रिपोर्ट बिल्कुल व्यर्थ है।"

वह प्रेसीडेन्ट की ओर बिना देखे ही गम्भीर स्वर में बोला—"मैं चाहता हूँ कि वह पढ़ी जाय।"

वह थोड़ा-सा उठा और अपने इस ढङ्ग से उसने प्रदर्शित किया कि इसको पढ़वाने का मुझे अधिकार है और मैं अपने अधिकार की माँग करूँगा और यदि मेरी बात स्वीकार नहीं की गई तो यह अपील का एक आधार बन जायगा।

कोर्ट का सदस्य, जिसकी दाढ़ी लम्बी और आँखें दयापूर्ण थीं, जिनके नीचे छोटी पोटलियों जैसी खाल उभरी हुई थी और जिसके पेट में तकलीफ थी, बिल्कुल थक गया। वह प्रेसीडेन्ट की तरफ मुड़ा और बोला—"यह सब पढ़ने से क्या लाभ ? यह तो केवल टाँग पकड़ कर खींचना है। ये नए मेहतर सफाई ठीक नहीं करते; बस देर लगाते है।"

सुनहरी फ्रेम के चश्मे वाले सदस्य ने कुछ नहीं कहा किन्तु ऊब कर सामने देखा। उसे किसी से अच्छाई की आशा नहीं थी–न अपनी पत्नी से और न दैनिक जीवन से।

रिपोर्ट इस तरह से थी :

"सन् १८८–में १५ फलबली को मैंने—स्वास्थ्य विभाग अधिकाली, निम्न-हस्ताक्षलकल्ता—केस नं० ६३८ की जाँच की।" मन्त्री ने फिर दृढ़ता से अपने स्वर को ऊँचा कर पढ़ना प्रारम्भ किया, मानो कि वह निद्रा को दूर करना चाहता था। निद्रा ने सब ही उपस्थितों को आविर्भूत कर लिया था। "यह आंतलिक अवयवों की जाँच स्वास्थ्य विभाग के सहायक निलीक्षक की उपस्थिति में की गई।

१. दाहिना फेंफला औल ह्लदय (६ पौंड की काँच की बोट में)।
२. पेट के अन्दल के सामान (६ पौंड की काँच की बोट में)।
३. पेट (६ पौंड की काँच की बोट में)।
४. जिगल, तिल्ली और गुल्दे (९ पौंड की काँच की बोट में)।

५. आँतें (६ पौंड की चीनी की बोट में)

इस समय प्रेसीडेन्ट ने एक सदस्य से धीरे-से बात की, तब दूसरे की तरफ झुका और उनकी स्वीकृति ले वह बोला—"न्यायालय इस रिपोर्ट की पढ़न्त को निरर्थक समझता है।"

मन्त्री ने पढ़ना बन्द कर कागज की तह की और पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने क्रोधित होकर कुछ लिखना प्रारम्भ कर दिया।

"अब पंचगरण पक्के प्रमाणों की वस्तुओं का निरीक्षण कर सकते हैं।" प्रेसीडेन्ट ने कहा। सरपञ्च तथा अन्य लोग उठे और बिना यह जाने कि हमें करना क्या है वे मेज के पास गए। उन्होंने बारी २ से अँगूठी, काँच की बाटों और टेस्ट ट्यूब को देखा। व्यापारी ने तो अँगूठी भी पहिन कर देखी।

"आह! इतनी बड़ी उङ्गली।" उसने अपने स्थान पर वापिस पहुँच कर कहा। "ककड़ी की तरह।" उसने फिर कहा। प्रगट रूप से व्यापारी की जिस विशाल मूर्ति की उसने अपने मन में कल्पना की थी उसमें उसे मजा आ रहा था।

२१

पक्के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत की गई वस्तुओं के निरीक्षण के पश्चात प्रेसीडेन्ट ने घोषणा की कि निरीक्षण हो चुका है तथा यह विचार कर प्रोसीक्यूटर को आगे बोलने को कहा कि अन्ततोगत्वा वह भी एक प्राणी है, उसे भी सिगरेट पीने अथवा भोजन करने की इच्छा होगी तथा वह अन्यों पर भी तरस खा सकता है किन्तु पब्लिक प्रोसीक्यूटर था जिसने न स्वयं पर तरस खाया न अन्य किसी पर। वह स्वभाव से ही परले सिरे का धूर्त था। इसके अतिरिक्त जब उसने विश्वविद्यालय में रोम की व्यवस्था के अध्ययन के साथ अपना विद्याध्ययन समाप्त किया तब दुर्भाग्य से "सेवा" पर एक लेख लिखने पर पुरस्कार स्वरूप उसे एक स्वर्ण-पदक प्राप्त हो गया था। और इसलिए उसे अपने ऊपर अत्यधिक मात्रा में विश्वास तथा अपने कार्यों के प्रति उसमें विशेष सन्तुष्टि की भावना उत्पन्न हो गई थी (स्त्रियों को प्राप्त करने में उसे जो सफलता मिली उससे भी उसके अहं में वृद्धि ही हुई)। और इन कारणों से उसकी धूर्तता आवश्यकता से अधिक बढ़ गई थी।

जब उसे बोलने के लिए बुलाया गया तब वह अपनी कसीदा की हुई

लिबास में अपने भव्य मुखमंडल को चमकाता हुआ धीरे से उठा। दोनों हाथों को मेज पर रख कर उसने न्याय-निकेत में चारों ओर दृष्टि घुमाई। उसका सिर थोड़ा-सा झुका हुआ था। आँखें उसने बन्दियों से नहीं मिलाईं और भाषण देना प्रारम्भ कर दिया। उसने यह भाषण तब तैयार कर लिया था जब कि रिपोर्टें पढ़ी जा रही थीं।

"पंचायत के महानुभावो ! यदि मैं अपनी भावनानुसार व्यक्त करूँ तो आपके सम्मुख प्रस्तुत हुआ अभियोग बहुत ही सामान्य है।"

उसके दृष्टिकोण के अनुसार पब्लिक प्रोसीक्यूटर के भाषण में भी उन प्रशंसा प्राप्त एडवोकेटों की भाँति ही खुला महत्त्व होना चाहिए जिन्होंने कि दक्षता प्राप्त कर ली है। यह सत्य था कि श्रोता केवल चार थे—एक दर्जिन, एक रसोइया, सीमन की बहिन, तथा एक कोचवान; किन्तु उसे इस बात की चिन्ता नहीं थी। लोग इस भाँति भी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके है। प्रोसीक्यूटर का सिद्धान्त था : अपनी स्थिति से ऊपर उठे रहना अर्थात अपराध के मनोवैज्ञानिक कारणों की गहनता को समझाना तथा समाज के घावों को उघाड़ देना।

"पंचायत के महानुभावो ! यदि मैं अपनी भावनानुसार इसे व्यक्त करूँ तो आपके सम्मुख इस शताब्दी के अन्त का यह विलक्षण अपराध है, जिसमें उस दुखदाई घटना के खास लक्षण निहित हैं जिसके मूल में भ्रष्टाचार के लिए हमारे समाज के वे तत्व दोषी हैं जिन्हें कि, यदि मैं कहूँ कि इस पद्धति की अति प्रकाशमान किरणें स्पष्ट चमका देती हैं।"

पब्लिक प्रोसीक्यूटर काफी देर तक बोलता रहा। वह अपने मस्तिष्क में सँजोए हुए प्रभावपूर्ण वाक्यों को कहता ही रहा, रुका नहीं तथा लगातार सवा घण्टे तक अपना भाषण देता रहा।

वह केवल एक बार रुका और थोड़ी देर तक खड़ा अपना थूक निगलता रहा, किन्तु तुरन्त ही सम्हल भी गया तथा उस विघ्न को अपनी उच्च वक्तृत्व शक्ति से पार कर गया। अब वह धीरे-धीरे रुकते हुए उकता देने वाले कोमल स्वर में बोलने लगा। वह पंचों की ओर देख रहा था तथा बार-बार अपने पैर बदल रहा था। कभी वह कारोबारी धीमे स्वर में कापी की ओर देखता हुआ बोलता तो कभी दोष लगाता हुआ उच्च स्वर में तथा श्रोताओं की ओर से दृष्टि हटाकर वकीलों की ओर देखने लगता। किंतु बन्दियों से वह दृष्टि चुरा रहा था और बंदी, तीनों-के-तीनों, उस पर दृष्टि गड़ाए खड़े थे। जिन भी सनकों का उन दिनों प्रचार

चल पड़ा था वे सबकी सब उसके भाषण में अप्रत्यक्ष रूप से वर्तमान थीं; वे सनकें जो उन दिनों या उनमें से कुछ आज भी प्रचलित हैं—वैज्ञानिक मत जैसे परम्परागत एवं अनुभवजन्य अपराध, लोम्बरोशो एवं टार्डे, जीवन के लिए संघर्ष एवं क्रांति, मेस्मरेजम का प्रभाव, स्त्रीत्व-क्षय एवं अधोपतन।

उसकी परिभाषा के अनुसार व्यापारी स्मेलकोव ऐसे शक्तिशाली रूसियों में से था जो कभी ठगे नहीं गए। वह अधोपतन के गर्त में पड़े हुए व्यक्तियों के जाल में फँस गया तथा विश्वास कर लेने एवं अपनी दयालु-प्रकृति के कारण जान मे मारा गया।

सीमन कार्तिन्किन के पिता प्रपितामह गँवार एवं सिद्धान्तहीन थे। उनका किसी धर्म पर विश्वास नहीं था। येवफीमिया उसकी स्वामिनी तथा वंश परम्परा से प्राप्त गुणों की मूर्त्ति है। उसमें पतन के सब लक्षण वर्तमान है। प्रमुख भयकारी है, माशलोवा। इसके अन्दर अधोपतन के सब तत्व विद्यमान हैं।

"यह स्त्री!" उसने माशलोवा की ओर देखते हुए कहा—"जैसा कि इसकी स्वामिनी ने न्याय-निकेत में बतलाया, शिक्षिता है। यह केवल पढ़-लिख ही नहीं सकती किंतु फ्रांसीसी भाषा भी जानती है। यह अनाथ है और पूर्ण संभावना है कि अपराध के कीटाणुओं को अपने साथ लेकर पैदा हुई है। इसकी पढ़ाई-लिखाई एक शिक्षित एवं उच्च परिवार में हुई है। हो सकता है कि इसने आरम्भ में सत्यता और परिश्रम से काम किया हो; किन्तु हुआ यह कि इसने अपनी वासनाओं के कारण अपनी संरक्षिकाओं को ठेस पहुँचाई और वासनाओं की तुष्टि के लिए वेश्या-गृह में चली गई। वेश्यागृह में अपनी शिक्षा और विशेषतया—सज्जनो! जैसा कि आपके सम्मुख इसकी स्वामिनी ने बतलाया—दर्शकों को हिप्नोटाइज़ करने की अपनी क्षमता के कारण अन्य लड़कियों से इसे विशेष स्थान प्राप्त था। हिप्नोटाइज करने की शक्ति के विषय में विज्ञान ने, विशेषतया चारकोट के अनुयाइयों ने, बहुत दिन पूर्व खोज की थी। इन रीतियों से इसने उस रूसी, दयालु-हृदय धनी अतिथि का विश्वास प्राप्त किया; और उस विश्वास को प्राप्त कर उसे लूटा, फिर निर्दयता से उसका वध कर दिया।"

"हाँ! अब वह इस पर पुल खड़ा कर रहा है, ठीक बात है ना?" प्रेसीडेन्ट ने दुखी सदस्य की ओर झुककर उससे मुस्कुराते हुए कहा।

"परले सिरे का मूर्ख है!" दुखी सदस्य बोला।

पब्लिक प्रोसीक्यूटर का भाषण चलता रहा।

खिड़की से परे हट गया। कुहरा इतना घना था कि पाँच कदम दूर से खिड़कियाँ नहीं दिखलाई पड़ती थीं, किन्तु लैम्प का प्रकाश उस काले अन्धकार में लाल-लाल चमक रहा था। नदी से वही विचित्र ध्वनि—रोना, टूटना, खड़खड़ाना और तड़काहट आ रही थी। कुहरे में पास से कहीं मुर्गा बोला, दूसरे ने उत्तर दिया, फिर गाँव में कहीं दूर से अन्य चिल्लाने लगे और तब तक चिल्लाते रहे जब तक कि उनके स्वर मिलकर एकाकार न हो गए। उस रात को इस बार मुर्गों ने दूसरी बार बाँग दी थी।

मकान के कोने के पीछे नेखलूदोव इधर-उधर घूमता रहा। एक दो बार तो वह गड्ढों में भी चला गया। तब फिर वह खिड़की के पास आया। लैम्प अभी तक जल रहा था और कातूशा मेज पर अकेली बैठी थी मानो उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह खिड़की तक पहुँचा भी न था कि कातूशा ने सामने देखा। उसने खिड़की पर थाप दी। यह जाने बिना ही कि थाप किसने दी ; वह एकदम द्वार की ओर भागी और नेखलूदोव ने बाहर का दरवाजा थोड़ा-सा खुलने की आवाज सुनी। वह ड्योढ़ी की बगल में रुक गया अब बिना कुछ कहे सुने उसने उसकी कमर पकड़ ली। वह उससे चिपक गई और अपना मुँह उठाकर उसने अपने ओठों पर उसके आलिंगन को स्वीकार किया। वे दोनों ड्योढ़ी की बगल के किनारे पर खड़े हुए थे जहाँ कि सब बर्फ पिघल चुकी थी। नेखलूदोव पीड़ादायक व असन्तुष्ट कामुकता से भरा पड़ा था। तभी द्वार उतना-सा ही फिर खुला और मात्रोना पावलोव्ना का क्रोधी स्वर सुनाई दिया—"कातूशा !"

वह उससे उछट कर नौकरानियों के कमरे में चली गई। सिटकनी लगाने की आवाज आई और फिर घोर शांति छा गई। लाल बत्ती बुझ गई। केवल कुहरा और नदी की कलकल ध्वनि ही बची रही।

नेखलूदोव खिड़की के पास गया। वहाँ उसे कोई नहीं दिखलाई दिया। उसने थाप दी किन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। सामने के द्वार से वह फिर घर में गया किन्तु उसे नींद नही आई। वह उठकर बैठा हो गया और नंगे पाँवों उसके दरवाजे के मार्ग पर पहुँचा। उसका प्रकोष्ठ मात्रोना पावलोव्ना से अगला था। उसने मात्रोना पावलोव्ना के खर्राटे सुने। वह आगे बढ़ना ही चाहता था कि वह खाँसी और उसने अपने बिस्तरे पर करवट ली। नेखलूदोव का हृदय धक से रह गया और पाँच मिनट तक वह जहाँ का तहाँ रहा। जब फिर शांति छा गई और आराम से फिर वह खर्राटे भरने लगी, वह उन तख्तों पर चलते हुए, जो चरमराते

नही थे, आगे बढ़ा और कातूशा के कमरे के सामने आ गया। शायद वह जाग रही है, वहाँ कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही अन्यथा उसे उसकी साँस तो सुनाई देती। किन्तु ज्यों ही उसने फुसफुसाकर कहा—"कातूशा !" वह उछल पड़ी और मानो क्रोध में वहाँ से चले जाने का आग्रह करने लगी।

"क्या अभिप्राय है ? आप क्या चाहते हैं ? आपकी बुआ को इसका पता लग जायगा।" यह तो जबान कह रही थी किन्तु उसकी सम्पूर्ण आत्मा कहती थी—"मैं तुम्हारी हूँ।" और नेखलूदोव ने केवल इतना ही समझा।

"क्षण भर के लिए मुझे अन्दर आ जाने दो ! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ !" उसे स्वयं ही नहीं ज्ञात था कि मैं कह क्या रहा हूँ।

वह चुप थी; तब उसने देखा कि कातूशा का हाथ सिटकनी की ओर आया। सिटकनी चटकी और वह कमरे में प्रविष्ट हुआ। उसने उसे, जैसी भी वह उस समय थी, पकड़ लिया और उसे उठा कर बाहर ले गया। वह मोटी व कडी कुरती पहिने हुए थी और उसकी बाँहें नङ्गी थीं।

"प्रियतम ! आप क्या कर रहे हैं ?" धीमे से वह बोली; किन्तु उसने उसकी बात की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और उसे बाहर ले गया।

"आह नहीं ! आपको ऐसा नहीं करना चाहिए ! मुझे छोड़ दीजिए !" वह उससे सटती हुई बोली।

× × ×

जब वह चुपचाप काँपती हुई उसके पास से चली तो उसने नेखलूदोव की किसी बात का उत्तर नहीं दिया। नेखलूदोव फिर ड्योढ़ी में चला गया और हॉल की घटना को समझने की चेष्टा करता खडा रहा।

प्रकाश बढता जा रहा था। नीचे नदी मे चटकने, टूटने और रोने की तथा बर्फ के टूटने की ध्वनि पहिले से भी जोर से आती रही। अब तो गडगडाहट भी सुनाई पड़ती थी। कुहरा हटने लगा था और उसमें से उसके ऊपर के क्षीण चन्द्रमा की मद्धिम चांदनी भी कुछ काली और विलक्षण-सी दिखलाई दे रही थी।

"इस सबका क्या अर्थ है ? यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है अथवा दुर्भाग्य की, जिसने कि मेरा पतन कर दिया ?" उसने मन-ही-मन सोचा।

"ऐसा तो प्रत्येक के साथ होता है, हरएक ऐसा ही करता है।" उसने सोचा और वह सोने चला गया।

कार्य किया। यह कहकर विजयोन्माद में वह बैठ गया।

तब बन्दियों को अपने बचाव के पक्ष में बोलने की आज्ञा दी गई।

येवफीमिया बोचकोवा ने एक बार पुनः दोहराया कि इस विषय में मुझे कुछ नहीं ज्ञात है। उसने समस्त दोष दृढ़ता से माशलोवा के ऊपर थोप दिया। सीमन कार्तिन्किन ने कई बार केवल यही दोहराया "यह काम आपका है, किन्तु मैं निर्दोष हूँ; यह अन्याय है।"

माशलोवा ने अपने बचाव में कुछ नहीं कहा। जब प्रेसीडेन्ट ने उससे कहा कि तुम भी कुछ कह सकती हो, तो उसने उसकी ओर नेत्र उठाए तथा एक बार घायल पशु की भाँति कमरे में चारों ओर देखा। फिर सिर झुकाकर वह हिल्कियाँ बाँध जोर से रोने लगी।

"क्या बात है?" व्यापारी ने नेखलूदोव के मुँह से निकली विचित्र ध्वनि को सुनकर उससे पूछा। यह आवाज़ नेखलूदोव की बलपूर्वक रोकी हुई हिल्की की थी।

नेखलूदोव अभी तक अपनी स्थिति नहीं समझ पाया था और बड़ी कठिनाई से दबाई हुई हिल्कियों तथा नेत्रों से भरे अश्रुओं को अपनी स्नायुसम्बन्धी कमजोरी समझ रहा था। आँसुओं को छिपाने के लिए उसने नकचश्मा लगा लिया और रूमाल निकाल कर नाक साफ करने लगा।

यदि कोर्ट में प्रत्येक उसके चाल चलन के विषय में जान जाय तो वह लोगों की दृष्टि में गिर जायगा, इस भय ने उसकी अन्तरात्मा की चेतना का गला घोंट दिया। आरम्भ में तो यह भय सबसे अधिक भयावह था।

२२

जब बन्दी अपनी बातें कह चुके तब उन प्रश्नों की सूची, जो कि पञ्चों के सम्मुख किए जाने थे, तैयार हो गई। इसमें भी कुछ समय लगा। अन्त में प्रश्नों का उपसंहार निकाल लिया गया और प्रेसीडेन्ट ने उनका संग्रह करना प्रारम्भ कर दिया।

पञ्चों के सम्मुख अभियोग रखने से पहिले कुछ देर तक वह प्रसन्नता से और आराम से उन्हें यह समझाता हुआ बोलता रहा कि डाका, डाका है और चोरी,

चोरी। ताले कूची लगे स्थान से चोरी करने का तात्पर्य है ताले कूची लगी जगह से चुराना, और बिना ताले कूची के स्थान से चोरी करने का अभिप्राय है बिना ताले कूची की जगह से चुराना। यह समझाते समय उसने नेखलूदोव की तरफ कितनी ही बार देखा मानो कि उस पर इन महत्त्वपूर्ण सत्यों का इस आशा से प्रभाव डालना चाहता हो कि इनको समझकर ग्रहण करने के बाद नेखलूदोव अपने साथ के पञ्चों को भी समझा देगा। यह समझ लेने के बाद कि पञ्चगण इन सत्यों में रंग चुके है उसने अपनी दूसरी घोषणा प्रारम्भ की कि हत्या एक ऐसा काम है जिसके परिणाम में एक प्राणी जान से हाथ धो बैठता है और विष देना भी इसलिए हत्या के नाम से पुकारा जा सकता है। जब उसने समझा कि जूरी ने इस सत्य को भी ग्रहण कर लिया है तब उसने समझाना शुरू किया कि यदि चोरी और हत्या दोनों एक ही समय की गई तो अपराधों के ऐसे संयोग को 'हत्या के साथ चोरी' कहा जायगा।

उस सबकी शीघ्र समाप्ति के लिए वह स्वयं उत्सुक था। यद्यपि वह जानता था कि स्विस प्रेयसी मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी फिर भी वह अपने पेशे का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि एक बार जो बोलना आरम्भ कर दिया तो फिर वह रुक नहीं सकता था। वह जूरी पर विशद व्याख्या सहित प्रभाव डालने लगा कि यदि बन्दी का अपराध सिद्ध हो गया है तो उन्हें अपराध पर न्याय-विचार करने का अधिकार है; और यदि उनके सम्मुख अपराध सिद्ध नहीं हुआ तो वह निर्णय दे सकते है कि व्यक्ति निरपराध है। और यदि उन्हे ज्ञात हो जाता है कि बन्दी एक अपराध के प्रति दोषी है दूसरे के प्रति नहीं ,तब वे फैसला दे सकते है कि व्यक्ति एक अपराध के लिए दोषी है दूसरे के लिए नहीं। तब उसने बतलाया कि उनको यद्यपि यह अधिकार मिला हुआ है किन्तु उन्हें इसका प्रयोग पर्याप्त सोच-विचारकर ही करना चाहिए। वह यह भी कहना चाहता था कि यदि उनसे पूछे गए किसी प्रश्न का उत्तर वह 'हाँ' में देते है तब उन्हे प्रश्न में निहित सब बातों को स्वीकार करना होगा; इसलिए यदि वह किसी पूरे प्रश्न को स्वीकार नहीं करना चाहते तो उन्हे प्रश्न का वह भाग बतलाना चाहिए जिसे कि वह स्वीकार करना चाहते हैं; किन्तु घडी की ओर दृष्टि जाते ही जब उसने देखा कि तीन बजने में केवल पाँच मिनट शेष हैं तो उसने तुरन्त ही उस अभियोग का उपसंहार निकालने का निश्चय किया।

"इस अभियोग की बातें इस प्रकार हैं।" प्रेसीडेन्ट ने कहना प्रारम्भ किया

ग्रौर उस सबकी पुनरावृत्ति की जो एडवोकेटों, पब्लिक प्रोसीक्यूटर तथा साक्षियों ने कितनी ही बार कहा था ।

प्रेसीडेन्ट बोलता रहा ग्रौर उसके पास बैठे सदस्यगण बड़े ध्यान से सुनते रहे; किन्तु वे लोग बार-बार घड़ी की ग्रोर देखते क्योंकि उनके ग्रनुसार भाषण बहुत ग्रच्छा ग्रवश्य था किन्तु था बहुत लम्बा ग्रर्थात् होना भी ऐसा ही चाहिए था । पब्लिक प्रोसीक्यूटर ग्रथवा वकीलों पर ही नहीं, वास्तव में न्याय-निकेन में जितने भी लोग उपस्थित थे सभी पर यही प्रभाव पड़ा था । प्रेसीडेन्ट ने उपसंहार सुना दिया ।

लगता था कि सब कुछ कहा जा चुका है । किन्तु नहीं, प्रेसीडेन्ट ग्रभी तक बोलने के ग्रपने ग्रधिकार को नहीं त्याग सका । ग्रपने स्वर का प्रभावशाली ढङ्ग उसे इतना ग्रच्छा लगा कि उसने जूरी को दिए गए ग्रधिकारों के महत्त्व के ऊपर ग्रौर कुछ कहना ग्रावश्यक समझा कि कितनी सावधानी से उन्हें ग्रपने ग्रधिकारों का प्रयोग करना चाहिए ग्रौर कि उन्हे उनका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए इस विषय में उन्होंने शपथ ली है, कि वे समाज की ग्रात्मा है, कि वाद-विवाद-प्रकोष्ठ की गुप्तता को पवित्र समझना चाहिए, ग्रादि ग्रादि ।

प्रेसीडेन्ट ने जब से ग्रपना भाषण ग्रारम्भ किया मासलोवा ने उस पर से नेत्र नहीं हटाए मानो उसे भय हो कि कहीं कोई शब्द चूक न जाय । ग्रौर नेखलूदोव का मन उन ग्रवस्थाग्रों को पार कर रहा था जिनमें कि वर्षों पश्चात देखा हुग्रा मुख पहिले तो वियोग के बाद हुए बाह्य परिवर्तनों की हम पर छाप लगाता है ग्रौर फिर धीरे-धीरे ग्रपने पहिले के स्वरूप में ग्रधिकाधिक ग्राता जाता है । फिर जब कालांतर में हुए परिवर्तन ग्रदृश्य - से हो जाते है तब हमारे ज्ञान-चक्षुग्रों के सामने एक ग्रसाधारण, ग्रपूर्व, ग्रात्मिक व्यक्तित्व का प्रधान भाव रह जाता है ।

नेखलूदोव को बिल्कुल ऐसा ही ग्रनुभव हो रहा था ।

हाँ ! बन्दीगृह के लबादे के उपरान्त, परिवर्तित मुखमंडल के उपरांत, वक्ष के उभार ग्रौर चेहरे के नीचे भाग के भरने के उपरांत एवं माथे तथा सिर पर कुछ झुर्रियाँ तथा सूजे हुए नेत्र होते हुए भी निश्चित ही यह वही कातूशा है जिसने ईस्टर की रात्रि को मेरी ग्रोर बहुत ही भोलेपन में जीवन ग्रौर ग्रानन्द से पूर्ण ग्रपने मधुर हासयुक्त नेत्रों से देखा था । तब यह मुझे प्रेम करती थी ।

"कितना ग्राश्चर्यजनक संयोग है कि इतने वर्षों पश्चात, जिनमें मैंने उसे

कभी देखा भी न था, यह अभियोग आज तब आया जब कि मैं जूरी में हूँ और वह बन्दियों के कटघरे में। और न जाने इसका अन्त क्या होगा ? ओह ! यदि यह शीघ्रता करें !"

फिर भी पाश्चाताप की एक भावना, जो कि उसके अन्त में उठनी प्रारंभ हो गई थी, उसने दबा दी। उसने उसे एक घटना मात्र समझा और विचार किया कि इससे उसके जीवन के क्रम में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

उसे इस समय अपनी स्थिति उस कुत्ते की तरह लगी जिसका स्वामी गर्दन के टेंटुए से पकड़ कर उसको ले जाता है और उससे उत्पन्न गन्दगी में उसकी नाक रगड़ता है। कुत्ता भौंकता है, पीछे हटता है और अपने दुष्कर्म के परिणामों से जहाँ तक सम्भव हो दूर भागने की चेष्टा करता है किन्तु निर्दय स्वामी उसे हटने नहीं देता।

ऐसे ही अपने किए हुए के प्रति घृणा का अनुभव कर नेखलूदोव को भी लगा कि मेरे ऊपर भी स्वामी का शक्तिशाली हाथ है, किन्तु अभी तक वह अपने कार्य का सम्पूर्ण अर्थ नहीं समझ सका था और स्वामी के हाथ की मन्यता स्वीकार नहीं कर सका था। वह यह विश्वास करने को तैयार नही था कि यह मेरे ही कार्यों का परिणाम है किन्तु सोचता यह था कि स्वामी के निर्दय हाथ ने उसे पकड लिया है और उसे यह चेतावनी दे दी है कि वह बच कर नहीं जा सकता। वह साहस अब भी नहीं हारा और सबसे अगली पंक्ति में टाँग-पर-टाँग रखे, अपने नकचश्मे को हिलाते हुए चिरअभ्यस्त ढङ्ग से बैठा रहा। फिर भी अपनी अन्तरात्मा में अपने इसी कार्य की नहीं वरन् अपने समस्त आत्मप्रवृत्त, कलुषित, निर्दय एवं आलसी जीवन की निष्ठुरता, नीचता एवं कायरता अनुभव कर रहा था। और जिस भयानक आवरण ने एक अवर्णनीय ढङ्ग से दस वर्षों से उसका अपराध उससे तथा उसके बाद के जीवन से आवरित रखा था, वह आवरण हिलने लगा और उस में आवरित बातों की कुछ झलकियाँ दिखलाई देने लगीं।

२३

अन्त में प्रेसीडेन्ट ने अपना भाषण समाप्त कर हाथ को अत्यन्त भद्रता से हिलाते हुए प्रश्नों की सूची सरपञ्च को उठाकर दी। सरपञ्च आकर उसे ले गया। इस बात से प्रसन्न होकर कि वे वाद-विवाद-प्रकोष्ठ में जा सकते हैं एक के बाद एक

कर सब पञ्च उठे और, मानो किसी बात से लज्जित हो तथा यह जाने बिना ही कि उनको अब क्या करना है, न्याय-निकेत से बाहर चले गए। द्वार बन्द होते ही एक सिपाही आया और म्यान से खड्ग खींच, कन्धे पर रख वहाँ खड़ा हो गया। न्यायाधीश उठ खड़े हुए और चले गए। बन्दियों को भी बाहर कर दिया गया।

वाद-विवाद-प्रकोष्ठ में आते ही सबसे पहिले पञ्चों ने सिगरेटें निकाली और पहिले की भाँति कश लगाने लगे। जब वे न्याय-निकेत में अपने स्थानों पर बैठे हुए थे तब उन्हें लग रहा था कि उनकी स्थिति न्यूनाधिक कृत्रिम एवं आडम्बर-पूर्ण है। किन्तु वाद-विवाद-प्रकोष्ठ में पहुँचकर सिगरेट पीना आरम्भ करते ही वह भावना दूर हो गई और उन्होंने चैन की साँस लेते हुए तुरन्त ही हास परिहास करना आरम्भ कर दिया।

"इसमें लड़की का अपराध नहीं है। उसको तो फाँसा गया है।" दयालु व्यापारी ने कहा—"हमें उसके लिए दया का अभिस्ताव करना चाहिए।"

"बस यही हमें विचार करना है!" सरपञ्च ने कहा—"हमें अपनी व्यक्तिगत धारणाओं से बचना होगा।"

"प्रेसीडेन्ट का बनाया हुआ उपसंहार सुन्दर था।" करनल बोला।

"अच्छा? क्यों, मुझे तो नींद आने लगी थी।"

"विशेष बात तो यह है कि मासलोवा के साथ अगर नौकर नहीं होते तो उन्हें रुपयों के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता।" यहूदी लिपिक बोला।

"अच्छा! क्या विचार है आपका? रुपया मासलोवा ने चुराया?" एक पच ने पूछा।

"यह मुझे कभी विश्वास नहीं हो सकता," दयालु व्यापारी ने जोर से कहा "यह उस लाल आँखों वाली डाइन की करतूत है।"

"इनका गिरोह है बढ़िया, सबका ही!" करनल ने कहा।

"किन्तु वह कहती है कि मैं तो कमरे में गई ही नहीं।"

"ओह! उसकी बात पर विश्वास कीजिए! अवश्य कीजिए!"

"मैं उस अड़ियल घोड़ी की बात का भरोसा नहीं कर सकता चाहे दुनियाँ कुछ भी कहे।"

"आपके भरोसा करने न करने से तो प्रश्न हल हो नहीं सकता।" लिपिक ने कहा।

"लड़की के पास ताली थी।" करनल ने कहा।

"अच्छा ! थी भी तो क्या हुआ ?" व्यापारी ने प्रत्युत्तर दिया।

"और अँगूठी ?"

"किन्तु क्या उसने बतलाया नहीं ?" फिर व्यापारी ने उच्च स्वर में कहा, "मृतक का स्वभाव ही निराला था और इसके अतिरिक्त वह अत्यधिक पिए हुए था तथा उसने लड़की को घूँसा मारा; इससे अधिक क्या साफ हो सकता है? उसके बाद उसे अपने किए का दुख होता है—बिल्कुल स्वाभाविक। 'कोई बात नहीं' वह कहता है 'लो यह लो।' क्यों, मैंने सुना है कि वह छह फुट पाँच इञ्च लम्बा था; मेरा विचार है उसका वजन बीस स्टोन तो होगा ही।"

"बात यह नही है," प्योत्र जेरासिमोविच बोला—"प्रश्न है कि इस घटना की जड में दोषी कौन है— वह या नौकर। किसने इस मामले को पकड़ा और उकसाया ?"

"नौकर अकेले कुछ नही कर सकते थे, ताली उसके पास थी।"

काफी देर तक इसी प्रकार बीच-बीच मे बातें चलती रही।

अन्त में सरपंच बोला—"क्षमा कीजिएगा, सज्जनो ! अच्छा हो कि हम सब मेज पर आ जाँय और इसका निर्णय कर लें। आइये कृपाकर।" और वह कुर्सी पर बैठ गया।

"ये दुष्टाएँ सब कुछ कर सकती है।" लिपिक ने कहा तथा अपनी धारणा की पुष्टि के लिए कि मासलोवा ही मुख्य अपराधिनी है उसने अपने मित्र के विषय में कथा सुनाई कि किस भाँति एक चरित्रहीन स्त्री ने चर्च में उसकी घड़ी चुराली।

इसके अनुमोदन में करनल ने चाँदी के समोवर की चोरी के ऊपर उससे भी अधिक आश्चर्यप्रद घटना सुनाई।

"सज्जनो ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि कृपया आप लोग प्रश्नों पर विचार कर लीजिए।" सरपंच ने पेन्सिल से मेज को खटखटाते हुए कहा।

सब शान्त हो गए।

प्रश्न निम्न प्रकार से व्यक्त किए गए थे :

"१, क्या तेतीस वर्षीय सीमन पेत्रोविच कार्तिन्किन, जो कि गाँव बोरकी,

जिला क्रेपीवेन्स्की का कृषक है, दूसरे लोगों की साजिश में, १७ जनवरी १८८– के दिन –नगर में, व्यापारी स्मेलकोव को लूटने व प्राण हरने की इच्छा से विष मिली मदिरा पिलाने का अपराधी है जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई और क्या वह उसके पास से लगभग ढाई हजार रूबल नगद तथा एक हीरे की अगूँठी चुरा लेने की दोषी है ?

"२. क्या तेतालीस वर्षीय येवफीमिया बोचकोवा ऊपर बतलाए गए अपराधों के प्रति दोषी है ?

"३. क्या सत्ताइस वर्षीया कातरीना मिखायलोव्ना माशलोवा पहिले प्रश्न मे वर्णित अपराधों की दोषिणी है ?

"४. यदि बंदिनी येवफीमिया बोचकोवा पहिले प्रश्न में वर्णित अपराध के लिए दोपिणी नहीं है तो क्या वह १७ जनवरी १८८— के दिन –नगर में, जब कि वह होटल मोरीतानिया में नौकरी करती थी, होटल के एक ग्राहक व्यापारी स्मेलकोव के ताले बन्द सूटकेस में से, जो कि होटल में उसके कमरे में रखा था, दो हजार पाँच सौ रूबल, जिनके लिए कि एक ताली लाकर उसने ताला खोला, चुराने की अपराधिनी है ?"

सरपंच ने पहिला प्रश्न पढ़ा।

"सज्जनो, आपका क्या विचार है ?"

प्रश्न का उत्तर शीघ्र ही मिल गया। यह सोचकर कि कार्तिन्किन ने लूटने और विष देने दोनों में भाग लिया सब उसे 'दोषी' बतलाने को सहमत हो गए। केवल आरटल* का एक पुराना सदस्य ही असहमत था जो कि हर प्रश्न में ही निर्दोष घोषित करने के पक्ष में था।

सरपंच ने सोचा कि व्यक्ति लक्ष्य नहीं समझ सका है अतः कार्तिकिन के सब अपराध गिनाने लगा। वृद्ध ने उत्तर दिया कि मैं समझ गया हूँ किंतु फिर भी उस पर दया करना अधिक अच्छा समझता हूँ। "हम स्वयं महात्मा पुरुष नहीं हैं।" वह बोला और अपनी राय़ पर दृढ़ रहा।

पर्याप्त विवादों व चीख चिल्लाहटों के पश्चात बोचकोवा से सम्बन्धित दूसरे प्रश्न का उत्तर "निर्दोष" कह कर दिया गया। क्योंकि इस बात का कोई पुष्ट

* मजदूरों के एक संगठन का सदस्य।

प्रमाण नहीं था कि उसने विष देने में भाग लिया है। इस बात पर उसके एड्वोकेट ने भी बहुत बल दिया था।

माशलोवा को निर्दोष सिद्ध करने को उत्सुक व्यापारी ने बलपूर्वक कहा कि इस सब विवाद को उभाड़ने वाली बोचकोवा ही है। उसके दृष्टिकोण का बहुत से पंचों ने पक्ष लिया किंतु कानून की धाराओं का कड़ाई से पालन करने हेतु सरपंच ने घोषणा की कि इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि बोचकोवा विष देने में सहायक थी। पर्याप्त वाद विवाद के पश्चात सरपंच की राय मान ली गई।

चौथे प्रश्न के उत्तर में बोचकोवा के विषय में उत्तर था "दोषी" किंतु आरटल के सदस्य के दबाव डालने पर उसके लिए दया का अभिस्ताव कर दिया गया।

तीसरे प्रश्न के ऊपर माशलोवा के सम्बन्ध में विवाद बहुत तूल पकड़ गया। सरपंच का कहना था कि वह विष देने और चोरी करने दोनों ही अपराधों के लिए दोषी है किंतु व्यापारी ने इसे स्वीकार नहीं किया। करनल, लिपिक और आरटल का वृद्ध सदस्य व्यापारी के पक्ष में थे, बाकी सब अनिश्चित से थे। सरपंच की राय जमने लगी। उसकी बात जमने का विशेष कारण यह था कि सब पंच थकते जा रहे थे और इसलिए उन्हें वह दृष्टिकोण पसंद था जिससे कि निर्णय शीघ्र हो जाय ताकि वह मुक्त हो सकें।

जो कुछ भी यहाँ कहा सुना गया और जो कुछ भी माशलोवा के सम्बन्ध में उसे पूर्व ज्ञान था उस सब के आधार पर नेखलूदोव को दृढ़ विश्वास था कि माशलोवा चोरी करने तथा विष देने दोनों में ही निर्दोष है; और उसे यह भी निश्चय था कि सबको शीघ्र अथवा विलम्ब से मानना यही पड़ेगा। जब उसने देखा कि व्यापारी का भद्दा बचाव पक्ष (जो स्पष्टतः उसके शारीरिक सौंदर्य की सराहना पर आधारित था और जिसे उसने छिपाने की चेष्टा भी नहीं की थी), सरपंच का अड़ जाना, और विशेषतया हर व्यक्ति की बोरियत—यह सब माशलोवा को दोषी सिद्ध करने पर उतारू हो चुके हैं तो उसने अपनी राय भी प्रकट करनी चाही किंतु उसे भय हुआ कि कहीं उसके तथा माशलोवा के सम्बन्धों का रहस्य न खुल जाय। फिर भी उसे लगा कि मैं न्याय को इस दिशा में जाने नहीं दूँगा। वह लज्जा से पीला पड़ता हुआ बोलना ही चाहता था कि सरपंच के अफसरी ढङ्ग से क्रोधित हो प्योत्र गिरासिमोविच उठा और अपना विरोध प्रगट करने लगा तथा उसने लगभग वही बातें कहीं जो कि नेखलूदोव कहने जा रहा था।

"एक मिनट" वह बोला "आपके अनुसार उसके पास ताली का होना ही उसको दोषिणी सिद्ध करता है, किंतु उसके चले जाने के पश्चात नौकरों द्वारा सूटकेस को जाली ताली से खोल लेना कितना आसान था ?"

"जी हाँ ! जी हाँ !" व्यापारी बोला ।

"वह रुपया नहीं ले सकती थी क्योंकि वैसी स्थिति में उसके लिए यह सोचना बड़ा कठिन था कि वह रुपयों का करेगी क्या ।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ ।" व्यापारी ने आवाज़ कसी ।

"किंतु इस बात की संभावनाएँ अधिक थीं कि उसके जाने के पश्चात नौकरों के मस्तिष्क में यह विचार उठा हो और उन्होंने सारा अपराध उसके सिर मढ़ दिया ।"

प्योत्र गिरासिमोविच इतने क्रुद्ध स्वर में बोला कि सरपच भी क्रुद्ध हो गया और हठ से अपनी वात का पक्ष लेता रहा; किंतु प्योत्र गिरासिमोविच इतने प्रभावशाली ढङ्ग से बोला था कि अधिकांशतः बहुमत उसके पक्ष में हो गया और बहुमत ने निर्णय कर दिया कि उसने रुपया नहीं चुराया था, और अँगूठी उसे दी गई थी ।

किंतु जब विष देने का प्रश्न उठा कि उसमें उसने भाग लिया है तो उसका अति पक्षपाती व्यापारी बोला कि उसे छोड़ देना चाहिए क्योंकि विष देने की उसकी इच्छा रत्ती भर भी नही थी । सरपंच ने कहा कि उसको निर्दोष घोषित करना असम्भव है क्योंकि उसने स्वयं स्वीकार किया है कि उसने पाउडर दिया था ।

"जी ! किंतु यह सोच कर कि वह अफीम थी ।" व्यापारी बोला ।

"अफीम भी प्राण ले सकती है ।" करनल ने कहा, जिसे कि विषय से दूर भटकने का व्यसन था । वह अपनी सलहज के बारे में बतलाने लगा कि एक बार उसकी सलहज ने अधिक अफीम खाली और यदि पास में ही डाक्टर न मिलता तो हाथ की हाथ उपचार न होने से उसका बचना ही कठिन था ।

करनल ने वह कथा इतनी आन, बान और प्रभावोत्पादक ढङ्ग से सुनाई कि उसकी बात काटने का साहस किसी को नहीं हुआ । केवल लिपिक ने अपने उदाहरण की कहानी सुनाकर उसे काटना चाहा "कुछ लोग तो इसके इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि चालीस बूँद तक ले सकते हैं । मेरा एक अपना सम्बन्धी

है...।" किन्तु करनल अपनी बात कैसे कट जाने देता। वह अपनी सलहज पर हुए अफीम के प्रभाव को बतलाता रहा।

"किन्तु सज्जनो ! क्या आपको यह भी ज्ञात है कि पाँच बजने वाले हैं ?" एक पच बोला।

"अच्छा तो सज्जनो ! अब हमें क्या कहना चाहिए ?" सरपंच ने पूछा। "क्या हमें कहना चाहिए कि वह अपराधिनी तो है किन्तु उसकी लूटने की इच्छा नहीं थी। और उसने कुछ नही चुराया। क्या यह ठीक रहेगा ?"

प्योत्र गिरासिमोविच ने अपनी विजय पर प्रसन्न हो स्वीकृति दे दी।

"किंतु उसे दया मिलने का अभिस्ताव करना चाहिए।" व्यापारी ने कहा।

अकेले आरटल के उस वृद्ध सदस्य को छोड़कर सब सहमत हो गए। वह इस पर दवाब देता रहा कि "निर्दोष" कहना चाहिए।

"एक ही बात है।" पंच ने समझाया "लूटने की इच्छा नहीं थी और कुछ चुराया नही था इसलिए निर्दोष—साफ है।"

"ठीक है; इतना ही पर्याप्त है। और हम उसके लिए दया का अभिस्ताव करते है।" व्यपारी ने प्रसन्न होकर कहा।

वाद-विवादों से वे सब इतने थकित एवं व्याकुल हो चुके थे कि किसी के ध्यान में यह जोड़ने का विचार ही उत्पन्न नहीं हुआ कि उसका दोष केवल इतना था कि उसने पाउडर दिया किन्तु उसका उद्देश्य हत्या का नहीं था।

नेखलूदोव भी इतना उत्तेजित था कि वह भी इसकी ओर ध्यान नहीं दे पाया और इसलिए जिन बातों में जिस रूप में लोग सहमत हुए उत्तर लिख दिए गए तथा वे उत्तर न्याय-निकेत में पहुँचा दिए गए।

कितना विचित्र परिहास है कि यदि केस करते समय कोई वकील समस्त नियमों, उपनियमों का हवाला दे, लेटिन में लिखी न्याय-पुस्तिका के बेकार बीस पत्र पढ़ डाले और अन्त में न्यायाधीश से कहे कि तुम लाटरी डाल लो यदि विषम आता है तो वादी सच्चा और सम आए तो प्रतिवादी !

इस अभियोग की भी लगभग वैसी ही अवस्था थी। प्रस्ताव इसलिए नहीं स्वीकार किया गया कि सब सहमत हो गए किन्तु इसलिए कि क्योंकि प्रेसीडेन्ट, जो कि अब तक उपसंहार सुना रहा था, यह कहना ही भूल गया कि उत्तर इस प्रकार भी हो सकता है "हाँ ! अपराधी है किंतु उद्देश्य हत्या का नहीं था।"

वैसे वह हमेशा इस वाक्य को कह दिया करता था । और क्योंकि करनल ने अपनी सलहज की कथा को विशद व्याख्या सहित सुनाया था; क्योंकि अपनी अत्यधिक उत्तेजना में नेखलूदोव "उद्देश्य हत्या का नहीं था" वाक्य पर ध्यान नहीं दे सका कि वह छूट गया है और उसने सोचा कि "लूटने की इच्छा नहीं थी" इससे ही निर्दोषिता सिद्ध हो जाती है; क्योंकि प्रश्नोत्तर सुनाते समय प्योत्र गिरासिमोविच प्रकोष्ठ मे बाहर जा चुका था एवं विशेषतया इस कारण से कि सब थक चुके थे और सब की इच्छा वहाँ से शीघ्रातिशीघ्र जाने की थी वे सब ऐसे किसी भी निर्णय के लिए तैयार थे जो शीघ्र ही सब कार्य-व्यापार को निपटा दे ।

पंचों ने घण्टी बजाई । दरवाजे पर नंगी तलवार लिए खड़े सिपाही ने अपनी खड्ग म्यान में धारण करली तथा अन्दर गया । न्यायाधीशों ने अपनी कुर्सियाँ सम्हाली और एक एक कर सब पंच बाहर आए ।

सरपंच ने गंभीरता से कागज प्रेसीडेन्ट के सम्मुख प्रस्तुत किया । प्रेसीडेन्ट ने उसकी ओर देखा और आश्चर्य में हाथ फैलाकर अपने साथियों की राय लेने के लिए मुड़ा । प्रेसीडेन्ट को आश्चर्य था कि पंचों ने एक वाक्य तो लिख दिया कि "लूटने का उद्देश्य नहीं था" किंतु दूसरा वाक्य "हत्या करने का कोई उद्देश्य नहीं था" नहीं लिखा । पंचों के निर्णय से अर्थ यह निकलता था कि माशलोवा ने न तो उसे लूटा और न चोरी ही की फिर भी बिना किसी स्पष्ट कारण के उस व्यक्ति को विष दे दिया ।

"देखिये ! इनका निर्णय कितना मूर्खतापूर्ण है ।" उसने अपनी बाँयी ओर बैठे एक सदस्य के कान में कहा । "इसका अर्थ है कि वह निर्दोष है फिर भी साइबेरिया में दास वृत्ति का दंड !"

"किंतु यह निश्चित ही है कि आपके कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह निर्दोष है ?" उस दुखी सदस्य ने उत्तर दिया ।

"हाँ ! वह निश्चित ही निर्दोष है । मेरा विचार है कि इस केस में धारा ८१७ लगानी चाहिए ।" (धारा ८१७ में लिखा है कि यदि पंचों के निर्णय को न्यायालय न्यायपूर्ण न समझे तो वह उसे रद्द कर सकता है ।)

"आपका क्या विचार है ?" प्रेसीडेन्ट ने दूसरे सदस्य की ओर मुड़ते हुए कहा ।

दयालु सदस्य कुछ देर चुप रहा। उसने अपने सामने रखे हुए एक कागज पर लिखे आँकड़े देखे और उनका जोड़ लगाया। जोड में तीन का भाग पूरा नहीं जाता था। उसने अपने मनमें निश्चय कर लिया कि यदि जोड़ में तीन का पूरा भाग चला जाता है तो वह प्रेसीडेन्ट की राय को स्वीकार कर लेगा किंतु तीन का भाग नहीं लगा। फिर भी अपने दयालु स्वभाव से लाचार हो उसने प्रेसीडेन्ट की राय का अनुमोदन कर दिया।

"मै भी यही सोचता हूँ कि इसको समाप्त कर देना चाहिए।"

"और आप ?" प्रेसीडेन्ट ने खिन्न सदस्य की ओर मुड़कर पूछा।

"किसी मूल्य पर नहीं।" उसने दृढता से उत्तर दिया "समाचार पत्रों में बराबर निकलता रहता है कि पंच अभियुक्तों को निर्दोष घोषित कर देते है। यदि न्यायाधीशों ने भी यही काम किया तो फिर वे लोग क्या कहेंगे ? मैं आपकी बात पर कदापि सहमत नहीं हो सकता।"

प्रेसीडेन्ट ने अपनी घडी की ओर देखा। वह बोला "यह तो दुख की बात है, किंतु किया क्या जा सकता है ?" और उसने सरपंच के लिए प्रश्नोत्तरी पढ़ने को दे दी।

सब खडे हो गए, और सरपच ने बार-बार पैर बदलते, खाँसते हुए प्रश्नोत्तर पढ़ कर सुनाए। सारी कोर्ट ने—मंत्री, वकीलों और यहाँ तक कि पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने भी—आश्चर्य प्रगट किया।

बन्दी अधीर बैठे थे और स्पष्टतया वे उत्तरों का अर्थ नही समझ पा रहे थे। सब फिर से उठे और प्रेसीडेन्ट ने प्रोसीक्यूटर से पूछा कि बन्दियों को क्या दण्ड देना चाहिए।

माशलोवा के अपराधिनी घोषित होने की अपनी असाधारण सफलता से प्रसन्न हो प्रोसीक्यूटर ने आवश्यक सूचना को खडे होकर सुनाया। वह समझ रहा था कि इस सफलता का श्रेय उसके भाषण को ही है।

"मेरी राय में सीमन कार्तिन्किन पर धारा १४५२ और १४५३ के तीसरे पैरा के अनुसार व्यवहार करना होगा। येत्रफीमिया बोचकोवा पर धारा १६५९ और कातरीना माशलोवा पर धारा १४५४ के अनुसार।"

ये तीनों इतने भारी दंड थे कि इनसे अधिक दिए ही नही जा सकते थे।

"दंड पर विचार करने के लिए न्यायालय स्थगित होता है।" प्रेसीडेन्ट ने उठते हुए कहा।

उसके पीछे सब ही उठ दिए। उन्हें इस बात की प्रसन्नता थी कि काम ठीक-ठाक पूर्ण हो गया। वे कमरे मे या तो बाहर चले गए या उसमे इधर-से उधर घूमने लगे।

"सज्जनो, क्या आप जानते हैं कि हमने सब कितनी बुरी तरह सत्यानाश कर दिया है?" प्योत्र गिरासिमोविच ने, जिससे कि सरपंच कुछ कह रहा था, नेखलूदोव के पास आते हुए कहा—"हमने उसे साइबेरिया क्यों भेजा?"

"आप कह क्या रहे है?" नेखलूदोव के मुँह से आश्चर्य से निकला। इस समय उस अध्यापक का घनिष्ट व्यवहार बुरा नही मालुम दिया।

"हमने उत्तर में यह क्यों नहीं लिखा—'अपराधी है किन्तु हत्या करने का कोई उद्देश्य नहीं था।' मन्त्री ने मुझे अभी बतलाया था कि प्रोसीक्यूटर उसे साइ-बेरिया में पन्द्रह वर्षों तक दास वृत्ति करने का दण्ड दे रहा है।"

"अच्छा! किन्तु निर्णय तो दूसरा हुआ था।" सरपंच ने कहा।

प्योत्र गिरासिमोविच इस बात पर यह कह कर झगड़ने लगा कि जब उसने रुपया लिया ही नहीं तो यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि हत्या करने का उसका कोई उद्देश्य हो ही नही सकता था।

"किन्तु बाहर आने से पहिले मैंने उत्तर पढ़कर सुनाया था।" सरपंच ने अपना बचाव करते हुए कहा—"और किसी ने विरोध नहीं किया।"

"मैं तभी उठकर बाहर गया था," प्योत्र गिरासिमोविच ने नेखलूदोव की ओर मुड़ते हुए कहा—"और आपका ध्यान इधर-उधर की बातों में लगा हुआ होगा कि होने दो जो हो रहा है।"

"मेरे ध्यान में भी नहीं आया..." नेखलूदोव बोला।

"ओह! आपका ध्यान भी नहीं था?"

"किन्तु हम इसे ठीक करा सकते हैं।" नेखलूदोव ने कहा।

"नहीं प्यारे, नहीं! होना था सो हो गया।"

नेखलूदोव ने बंदियों की ओर देखा। वे जिनके भाग्य का निर्णय हो रहा था, कटघरे के पीछे सिपाहियों के सामने स्थिर बैठे थे। माशलोवा हँस रही थी।

नेखलूदोव की आत्मा में एक दुर्भावना जागी। अब तक वह निर्णय नहीं कर पाया था कि मुझे इसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए क्योंकि वह सोच रहा था कि यह छूट जायगी और नगर में ही तो रहेगी। अब इसके साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध बहुत कठिन हो जायगा। किन्तु साइबेरिया और दासत्व के दण्ड ने इस आशा पर ही पानी फेर दिया कि किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखा जा सकता है। अब घायल पक्षी शिकार के थैले में संघर्ष करना बन्द कर देगा और उसे अपनी सत्ता का पुनर्स्मरण नहीं कराएगा।

२४

प्योत्र गिरासिमोविच का अनुमान सत्य था।

प्रेसीडेन्ट मंत्रणागृह से एक कागज लेकर बाहर आया और निम्न भाँति पढ़कर सुनाने लगा :—

"२८ अप्रेल १८८– रूस के आलीजाह सम्राट् की घोषणा के अनुसार, पंचों के निर्णय की शक्ति के आधार पर, और फौजदारी अदालत के कायदे-कानून के अनुसार अदालत फौजदारी यह निर्णय करती है कि ३३ वर्षीय किसान सीमन कार्तिन्किन, और दीन मध्यमवर्गीय शहरी परिवार की सत्ताइस वर्षीया कातरीना मासलोवा अपने धन-सम्पत्ति सम्बन्धी सभी अधिकारों से वंचित हो साइबेरिया में दासवृत्ति का जीवनयापन करेंगे। कार्तिन्किन आठ वर्षों के लिए तथा मासलोवा चार वर्षों के लिए। यह दण्ड कोड की धारा २८ के अनुसार है। दीन मध्यमवर्गीय परिवार की तेतालीस वर्षीया बोचकोवा अपने विशेष वैयक्तिक और प्राप्त अधिकारों से वंचित की जाती है और कोड की धारा ४९ के अनुसार उसे तीन वर्ष के लिए कारावास दिया जाता है। अभियोग का व्यय तीनों बंदी बराबर-बराबर सहन करेंगे; यदि व्यय के लायक उनकी सम्पत्ति नहीं होगी तो धन राज्यकोष के नाम लिख दिया जायगा। प्रमाण की वस्तुएँ बेच दी जाएँगी, अँगूठी लौटा दी जायगी, काँच की बोट तोड दी जाएगी।"

कार्तिन्किन ओठों को चलाता हुआ तथा बाँहों को बगल से सटाए खड़ा रहा। बोचकोवा बिल्कुल चुप थी। दण्ड सुनते ही मासलोवा लज्जा से आरक्त हो उठी। "मैं अपराधिनी नहीं हूँ! मैं अपराधिनी नहीं हूँ!!" एकाएक वह चिल्ला

पड़ी और न्याय-निकेत में उसकी वाणी गूँज उठी। "यह पाप है; मैं दोषिणी नहीं हूँ। मेरी इच्छा भी नहीं थी, मैंने सोचा तक न था ! मैं जो कह रही हूँ सत्य है—सत्य !" और बेंच पर बैठते ही वह हिल्कियाँ बाँधकर रोने लगी।

कार्तिन्किन और बोचकोवा जब बाहर चले गए तब भी वह बैठी रोती रही इसलिए पुलिसमैन को उसके लबादे की बाँह को स्पर्श करना पड़ा।

"नहीं, इस तरह से छोड देना असम्भव है।" नेखलूदोव ने अपने दुर्भावों को विस्मरण कर मन-ही-मन सोचा। उसके पीछे-पीछे बरामदे में जाने की उसने शीघ्रता की। उसे एक बार पुनः देखने की उसकी इच्छा बलवती हो उठी यद्यपि वह नहीं जानता था कि क्यों ! द्वार पर काफी भीड़ थी। एडवोकेट और पंच बाहर जा रहे थे। वे प्रसन्न थे कि कार्य समाप्त हुआ। इसलिए उसे कुछ सैकिंड रुकना पड़ा। और जब वह बरामदे में पहुँचा, माशलोवा सामने काफी दूर पहुँच चुकी थी। बिना यह सोचे कि लोग मुझे देख रहे हैं वह उसके पीछे त्वरित गति से चलकर उसके आगे निकल गया और रुक कर खड़ा हो गया। वह अब रो नहीं रही थी केवल हिल्कियाँ भर रही थी तथा रूमाल के छोर से अपने विवर्ण मुख को पोंछ रही थी। वह उसे देखे बिना ही निकल गई। तब वह प्रेसीडेन्ट से मिलने के लिए लौट पड़ा। प्रेसीडेन्ट पहिले से ही जा चुका था और उसको नेखलूदोव ने लॉबी में जा पकड़ा। उस समय तक वह अपना हल्का भूरा ओवरकोट पहिन चुका था और नौकर उसे चाँदी के मूठ की छड़ी दे रहा था।

"श्रीमन् ! क्या इस अभियोग के विषय में, जिसका अभी निर्णय होकर चुका है, आपसे कुछ बातें कर सकता हूँ ?" नेखलूदोव ने कहा—"मै पंच हूँ।"

"ओह ! निश्चित ही प्रिन्स नेखलूदोव। मुझे प्रसन्नता ही होगी। मुझे कुछ ऐसा ध्यान है कि हम आप कहीं मिले है।" प्रेसीडेन्ट ने नेखलूदोव का हाथ दबाते और उस शाम के आनन्द का स्मरण करते हुए कहा जब कि वह दोनों पहिली बार मिले थे और इतनी प्रसन्नता से नाचे थे कि नवयुवकों को भी मात कर दिया था "मेरे योग्य सेवा ?" वह बोला।

"माशलोवा से सम्बन्धित प्रश्न के उत्तर में एक त्रुटि हो गई है। विष उसने नहीं दिया था फिर भी उसे दासवृत्ति का दण्ड मिला है।" नेखलूदोव ने पहिले से स्थिर और उदास मुख से कहा।

"न्यायाधीशों ने आप लोगों के स्वयं के उत्तरों के अनुसार निर्णय दिया है।" प्रेसीडेन्ट ने सामने वाले द्वार की ओर चलते हुए कहा—"यद्यपि वे बिल्कुल उचित नहीं लगते थे।" और उसे याद आया कि मैं पंचों को समझाने जा रहा था कि जब तक कि यह न जोड़ा जाय 'हत्या करने का उद्देश्य नहीं था,' किन्तु 'अपराधी' का अर्थ था जान बूझकर हत्या करने वाला कार्य...। समाप्ति की शीघ्रता में मैं यह समझाना ही भूल गया था।

"जी हाँ, किन्तु क्या गलती सुधारी नहीं जा सकती ?"

"अपील के लिए आधार तो हमेशा ही खोजा जा सकता है। आपको किसी एड्वोकेट से बातें करनी होंगी।" प्रेसीडेण्ट ने द्वार के पास हैट को एक तरफ कुछ तिरछा लगाते हुए कहा।

"किन्तु यह तो भयावह है।"

"अस्तु ! आप देखते हैं कि माशलोवा के सामने दो विकल्प थे।" प्रेसीडेन्ट ने नेखलूदोव के प्रति यथासम्भव विनम्र एवं प्रसन्न होने की चेष्टा करते हुए उत्तर दिया। तब कोट के कालर से ऊपर अपने गलमुच्छों को उसने ठीक किया तथा नेखलूदोव की कोहनी को हल्के हाथ से पकड़ कर सामने के द्वार की ओर आगे बढ़ता हुआ बोला—"आप भी चल रहे हैं क्या ?"

"जी !" नेखलूदोव ने अपना कोट पहिन कर उसके पीछे चलते हुए कहा।

वे अच्छे लगने वाले तीव्र प्रकाश में बाहर आ गए, और सड़क पर पहियों की खटरपटर के कारण उन्हें अपने स्वर ऊँचे करने पड़े।

"परिस्थिति विचित्र है, देखिए !" प्रेसीडेन्ट ने कहा—"माशलोवा के सामने दो विकल्प थे : या तो लगभग निर्दोष घोषित हो थोड़े ही दिनों के लिए उसे कारा का दण्ड मिलता, या पहिला ही अभियोग सोचकर किंचित इसे बिल्कुल ही कुछ नहीं होता, अथवा साइबेरिया। इन दोनों के बीच में अन्य कुछ नहीं। काश ! आपने शब्द जोड़ दिए होते 'हत्या करने का उद्देश्य नहीं था' तो यह निर्दोष घोषित हो जाती।"

"हाँ ! उनको न जोड़ना मेरा अक्षम्य अपराध है।" नेखलूदोव बोला।

"बस इसी बात का महत्त्व था।" प्रेसीडेन्ट ने मुस्कुराते हुए कहा और अपनी घड़ी की ओर देखा।

उसके पास क्लारा के नियुक्त समय में केवल पौन घण्टा शेष था, फिर वह चली जाती।

"अब यदि आप चाहें तो एडवोकेटों से मिलें। आपको अपील के लिए आधार खोजना पड़ेगा किन्तु वह आसानी से मिल जायगा।" तब एक गाड़ीवान की ओर मुड़कर उसने आवाज दी—"डियोरीग्रान्स्काया चलेगा, तीस कोपेक; मैं इससे ज्यादा नहीं देता हूँ।"

"चलिए श्रीमन् ! मैं आपको ले चलूँगा।"

"अच्छा नमस्ते ! यदि मेरी सेवा की आवश्यकता हो तो मेरा पता है ड्योरनीकोव हाउस, ड्योरीग्रान्सकाया, आसान है याद रहा आवेगा।" और मैत्री-पूर्ण ढङ्ग से मुस्कुराते हुए वह बग्घी में चढ़ गया। बग्घी बढ़ दी।

२५

प्रेसीडेन्ट के वार्तालाप तथा स्वच्छ वायु ने नेखलूदोव को कुछ शांति दी। अब उसने सोचा कि जिन अनुभूतियों का उसने अनुभव किया था वे उस आसाधारण वातावरण के कारण, जिसमें कि मैं आज सुबह से घिरा हुआ था, अधिक विस्तृत हो गई थीं।

"वास्तव में यह विचित्र और मार्मिक घटना है और यह नितांत आवश्यक है कि मुझे अपनी शक्ति भर उसके दुख को घटाने का प्रयास करना चाहिए और वह भी शीघ्रातिशीघ्र ! हाँ, तुरन्त ही ! मुझे यहीं कोर्ट में मालुम कर लेना चाहिए कि फनारिन और मिकीशिन कहाँ रहते है।" उसने दो ख्याति-प्राप्त एडवोकेटों के नाम स्मरण करते हुए विचार किया।

वह कोर्ट आया, कोट उतारा और ऊपर चढ़ गया। पहिले बरामदे में ही उसे फनारिन स्वयं मिल गया। उसने उसे रोका और बोला कि एक काम से मैं आपके ही पास जा रहा था।

फनारिन उसको सूरत और नाम से जानता था। वह बोला कि यदि मैं आपके किसी काम आ सकूँ तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।

"यद्यपि मैं थका सा हूँ, किन्तु फिर भी यदि आपके काम में बहुत समय नहीं लगे तो मुझे बतला दीजिए कि इस समय क्या आज्ञा है, क्या आप यहाँ

अन्दर पधारेंगे ?" और वह नेखलूदोव को एक कमरे में ले गया, शायद वह किसी न्यायाधीश का कक्ष था। वे मेज के पास बैठ गए।

"कहिए, क्या आज्ञा है ?"

"सबसे पहिले मैं चाहता हूँ कि आप इस विषय को गुप्त रखें। मैं नहीं चाहता कि लोगों को यह ज्ञात हो कि मैं इस मामले में रुचि ले रहा हूँ।"

"ओह ! निश्चित ही ! अच्छा ?"

"मैं आज जूरी में था और हमने एक निरपराध स्त्री को सश्रम कारावास का दण्ड दे डाला। इससे मुझे बहुत ठेस पहुँची है।"

नेखलूदोव लज्जा से आरक्त एवं व्याकुल हो उठा। इस पर उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था। फनारिन ने उसकी ओर तुरंत देखा और फिर अधोदृष्टि कर सुनने लगा।

"अच्छा ?" वह बोला।

"हमारे कारण एक निरपराध स्त्री को दण्ड मिला है और मैं उच्च न्यायालय में अपील करना चाहता हूँ।"

"सीनेट से आपका मतलव है ?" फनारिन ने संशोधन करते हुए कहा।

"जी ! और मेरी इच्छा है कि केस आप लड़ाएँ।"

नेखलूदोव सबसे कठिन भाग को समाप्त करना चाहता था। वह बोला—"केस का सारा भार मैं वहन करूँगा, चाहे जितना भी क्यों न हो ?"

"ओह ! वह सब हम तय कर लेंगे।" एडवोकेट ने इस विषय में नेखलूदोव की अनभिज्ञता पर विनम्र हो मुस्कुराते हुए कहा।

"केस क्या है ?"

नेखलूदोव ने सारी घटना सुनादी।

"ठीक ! मैं काम में लग जाऊँगा और केस का अध्ययन कल ही कर लूँगा। तब आप परसों-नहीं-बेहतर रहेगा कि बृहस्पतिवार को आइए। आप छः बजे बाद आइए और मैं आपको निश्चित उत्तर दे दूँगा। अच्छा ! अब हमें विदा होना चाहिए; हमें यहाँ कुछ जाँचें करनी हैं।"

नेखलूदोव ने उससे विदा ली और बाहर चला गया।

एडवोकेट की बातचीतों और इस तथ्य ने कि उसने माशलोवा के बचाव के लिए बीड़ा उठाया है, उसको और भी शांति दी। वह बाहर सड़क पर आया। मौसम सुन्दर था। उसे वसन्त की हवा मे गहरा सांस लेने से प्रसन्नता हुई। तुरन्त ही उसे ले चलने के लिए गाड़ीवान इकट्ठे हो गए किन्तु वह पैदल ही बढ़ दिया। तभी कातूशा की छवि, उसकी स्मृतियाँ और उसके व्यवहार के अनेक चित्र उसके मस्तिष्क में चक्कर काटने लगे। वह उदास हो गया तथा उसे हर वस्तु उदास दिखलाई देने लगी। "नही! मै यह सब पीछे विचार करूंगा; मुझे अब इन सब अरुचिकर विचारों से पिंड छुड़ाना चाहिए।" उसने मन-ही-मन सोचा।

उसे कोरचागिन परिवार के निमन्त्रण की याद आई और उसने घड़ी देखी। अभी भी वहाँ पहुँच सकता था, देर नहीं हुई थी। उसने ट्राम की घण्टी सुनी, उसे पकड़ने को दौडा और कूद कर उस पर चढ़ गया। बाजार मे आते ही वह फिर कूद पडा, एक अच्छी बग्घी पकड़ी और दस मिनट पश्चात ही वह कोरचागिनों के विशाल भवन के प्रवेश-द्वार पर पहुँच गया।

२६

"योर एक्सीलेन्सी! कृपया अन्दर पधारिए, आपकी प्रतीक्षा हो रही है।" कोरचागिनों के विशाल भवन के विनम्र व मोटे ताजे द्वारपाल ने द्वार खोलते हुए कहा। द्वार मे इङ्गलैंड के बने पेटेन्ट हिन्ज लगे हुए थे अतः वह खुलने मे चरमराया। वह बोला—"डिनर शुरू हो गया है किन्तु मुझे आज्ञा दी गई है कि आपके आते ही आपको भेज दूँ।"

द्वारपाल सीढ़ियों पर चढ़ा और उसने घंटी बजाई।

"क्या नए लोग भी आए हैं?" नेखलूदोव ने अपना ओवरकोट उतारते हुए पूछा।

"परिवार के लोगों के अतिरिक्त केवल एम. कोलोशोव और मिखाइल सर्जेयेविच हैं।"

अबाबील की पूंछ के रंग का कोट और दस्ताने पहिने एक अत्यन्त सुन्दर वर्दीधारी नौकर पैरशान से झाँका।

"कृपया, योर एक्सीलेन्सी! ऊपर आइए।" वह बोला—"आपकी प्रतीक्षा

हो रही है।"

नेखलूदोव ऊपर गया और अत्यन्त सुन्दर विशाल नृत्य-कक्ष में से होकर, जिससे वह भली-भाँति परिचित था, भोजन-कक्ष में गया। वहाँ सोफिया वेसीलियेव्ना के अतिरिक्त परिवार के सभी सदस्य मेज के पास बैठे थे। सोफिया वेसीलियेव्ना तो अपने गुप्त कमरे से कभी बाहर निकलती ही न थी। टेबिल के मध्य में वृद्ध कोरचागिन बैठा था; उसकी बाँई ओर डाक्टर और उसके दाँई ओर एक अतिथि इवान इवानोविच कोलोशोव, जो कि पहिले मारशल रह चुका था और अब बैंक का डाइरेक्टर, कोरचागिन का मित्र तथा उदार दल का सदस्य था। बाँई ओर उसके बाद बैठी थीं मिस रेडर, जो कि मिस्सी की छोटी बहिन की गवर्नेस थीं। उनके सामने मिस्सी का भाई पेत्या बैठा था जो कि कोरचागिनों का एकमात्र पुत्र और छठे दर्जे का जिमनेजियम का विद्यार्थी था। उसकी परीक्षाओं के कारण ही उनका सारा परिवार अभी तक नगर में ठहरा हुआ था। उसके बाद विश्वविद्यालय का विद्यार्थी मिस्सी का चचेरा भाई मिखाइल सर्जेयेविच तेलेजीन बैठा था जो कि पेत्या को पढ़ाता था। उसके सामने चालीस वर्षीया अविवाहित महिला स्लावोफील कातरीना एलेक्समेयेव्ना बैठी थी; और मेज के दूसरी ओर स्वयं मिस्सी बैठी थी। उसका समीपस्थ स्थान रिक्त था।

"ओह ! अब ठीक है ! बैठ जाइए। हम तो अभी मछली का ही काम तमाम कर रहे हैं।" वृद्ध कोरचागिन ने अपने नकली दाँतों से सावधानी से चबाते हुए और रक्तपूर्ण आँखों से (जिनके पलक ही नहीं दिखलाई देते थे) उसकी ओर देखकर बड़ी कठिनाई से कहा।

"स्तीफेन !" उसने एक तगड़े, रौबीले रसोइए को नेत्र से उस रिक्त-स्थान की ओर इङ्गित करते हुए भरे मुँह से पुकार कर कहा।

यद्यपि नेखलूदोव कोरचागिन से भली-भाँति परिचित था और उसने उसे डिनर में कितनी ही बार देखा था किन्तु आज उसके लाल चेहरे में शब्द करने वाले सजग ओठों ने, उसके वेस्ट कोट में लगे तौलिए से ऊपर उसकी भारी गर्दन ने, और आवश्यकता से अधिक खाए-पिए उसके सैनिक शरीर ने नेखलूदोव को खिन्न कर दिया। इस व्यक्ति की निर्दयता की जितनी बातें नेखलूदोव जानता था वे उसे अपने आप स्मरण हो आईं कि जब यह सेना में था तब अकारण ही लोगों को कोड़े लगवाता। यहाँ तक कि अकारण ही फाँसी भी लगवाता रहता—केवल इसलिए कि यह धनी था और इसे सहानुभूति दिखलाने की कोई आवश्यकता न थी।

"अभी लीजिए सरकार !" स्तीफेन ने चांदी के वर्तनों से सजी एक बड़ी शोरबे की तश्तरी को साइडबोर्ड से निकालते हुए कहा ! और उसने उस वर्दीधारी सुन्दर नौकर से, जिस पर पारिवारिक कलंगी लगी हुई थी, सिर हिलाकर कुछ इङ्गित किया। नौकर ने मिस्सी की बगल में रिक्त स्थान पर अच्छे ढङ्ग से तह किए हुए तौलिए पर तुरन्त ही नए चाकू और काँटे रखने आरम्भ कर दिए।

नेखलूदोव मेज के चारों ओर सबसे हाथ मिलाता हुआ गया और सिवाय वृद्ध कोरचागिन तथा महिलाओं के सब ही ने उठकर उसका स्वागत किया। मेज के चारों तरफ घूमना, बहुत से व्यक्तियों से, जिनसे उसने कभी बातें भी नहीं की थी हाथ मिलाना भी उसको बहुत सुखद एवं विचित्र सा लगा। उसने देर से आने की क्षमा माँगी और मिस्सी और कातरीना एलेक्सेएवना के बीच में बैठने लगा कि वृद्ध कोरचागिन बोला —"यदि आप वोदका का गिलास नहीं पीना चाहते तो कम-से-कम भूख खोलने के लिए साइड टेबिल पर रखी हुई छोटी तश्तरियों में रखे लोब्स्टर[1], कविएरे[2], चीज[3] और नमकीन हेरिंग[4] में से कुछ तो ले ही लीजिए।"

जब तक नेखलूदोव ने खाना शुरू नहीं किया तब तक उसे मालुम ही न था कि वह कितना भूखा है। रोटी और चीज (पनीर) खाने लगा तो वह खाता ही चला गया।

"अच्छा तो अब आप समाज की जड़ खोदने में सफल हो गए ?" कोलोशोव ने व्यंग से एक प्रतिक्रियावादी समाचार पत्र का वाक्य, जो उसने जूरी के किसी निर्णय के विरुद्ध प्रयोग किया था, दोहराते हुए पूछा।

"अपराधियों को मुक्त कर निरपराध को दण्ड दे दिया। क्यों ?"

"जड़ खोदने में, जड़ खोदने में।" प्रिन्स कोरचागिन ने हँसते हुए दोहराया उसे अपने उदारदलीय मित्र और साथी की बुद्धि एवं विद्वत्ता में अनन्य श्रद्धा थी।

कहीं अशिष्ट न लगे यह सोच नेखलूदोव ने कोलोशोव की बात का उतर नहीं दिया और गर्मागर्म शोरबा पीता रहा।

"आपको खा तो लेने दीजिए।" मिस्सी ने मुस्कुरा कर कहा। उसने सर्व-

---

[1]एक प्रकार के केकड़े का गोश्त [2]एक प्रकार की समुद्री मछली का अचार, [3]दही से बना हुआ पनीर, [4]एक प्रकार की नमक में तली मछली।

नाम का प्रयोग इसलिए किया कि नेखलूदोव के साथ उसकी घनिष्टता का पुनस्मंरण हो जाय।

कोलोशोव जूरी के उस निर्णय के विरुद्ध लिखे गए लेख की विषय-सूची सुनाता रहा जिसने उसे क्रोधित कर दिया था। उसका स्वर तेज था किन्तु कहने का ढङ्ग आकर्षक। मिस्सी के भतीजे मिखाइल सर्जेयेविच ने उसकी प्रत्येक बात का अनुमोदन किया और उसी समाचार पत्र के दूसरे लेख की बातें सुनाईं।

सदैव की भाँति मिस्सी दूसरों से बिल्कुल ही भिन्न, बहुत ही विनम्र एवं सुन्दर वस्त्रों में सज्जित थी।

"आपको थकान और भूख तो बड़े जोर की लग रही होगी।" नेखलूदोव ने जब मुँह का ग्रास खा लिया तब वह बोली।

"नहीं, कोई खास तो नहीं। और आपको ? क्या आप चित्र देखने गई थी ?" उसने पूछा।

"नहीं ! हमने स्थगित कर दिया। शालामातोवों के घर पर हम टेनिस खेलते रहे। यह बात तो बिल्कुल ठीक है कि क्रुक्स महोदय बहुत अच्छा खेलते हैं।"

नेखलूदोव अपने विचारों की दिशा में परिवर्तन करने के लिए यहाँ आया था। उसे इस घर में आना दो कारणों से पसन्द था : एक तो इसकी उच्चकोटि की सुख सुविधाएँ जिनका उस पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता था और दूसरा यहाँ का चाटुकारितापूर्ण विनम्र वातावरण जो उसे घेरे रहता था। किन्तु आश्चर्य ! आज वहाँ की हर वस्तु उसे घृणास्पद लग रही थी। प्रत्येक वस्तु—द्वारपाल, चौड़ी सीढ़ियाँ, पुष्प, वर्दीधारी नौकर, मेज की सज्जा से लेकर स्वयं मिस्सी तक उसे आज अनाकर्षक तथा उदास लग रही थी। कोलोशोव का आत्मविश्वास से भरा, तुच्छ, उदारदलीय बातों का ढङ्ग उसे असुखद लगा; इसी भाँति भैंसे की तरह का कोरचागिन का आत्मसन्तुष्ट चेहरा, कातरीना एलेक्सेएवना के फ्रांसीसी वाक्य, स्लावोफिल—किसी से उसे प्रसन्नता नहीं हुई। गवर्नेस और विद्यार्थी के विवश मुख-मण्डल भी असुखद लगे किन्तु सबसे अधिक नीरस लगा सर्वनाम "आप" जो मिस्सी ने प्रयोग किया था। नेखलूदोव बहुत दिनों से मिस्सी की दो अवस्थाओं को देख सन्देह में पड़ जाता था। कभी तो वह उसे मानो कि चन्द्रमा की चंद्रिका में देखता और उसमें सौंदर्य के अतिरिक्त कुछ नहीं देख पाता। तब वह उसे विकसित और सुन्दर, चतुर और प्रफुल्लित दिखलाई देती। तब एकाएक मानो तेज सूर्य का

तीव्र प्रकाश उस पर पड़ता और उसे उसके दोष दिखलाई देने लगते जिनकी ओर से कि वह अपने नेत्र मूँद नहीं पाता था। आज भी ऐसा ही दिन था। आज उसे उसके चेहरे की प्रत्येक झुर्री, बालों में डाले पट्टे, कुहनियों का नुकीलापन दिखलाई दिया और विशेषतया उसके अंगूठे का बड़ा नाखून जिसमे और उसके पिता के नाखून मे विचित्र साम्य था।

"टेनिस भी कोई खेल में खेल है।" कोलोशोव बोला—"हम लोग बचपन में लाप्टा खेला करते थे। उसमें बहुत आनन्द आता था।"

"ओह! आप टेनिस खेले ही नहीं। इसमें बड़ा ही आनन्द आता है।" मिस्सी बोली। नेखलूदोव को लगा कि उसने शब्द 'बड़ा ही' पर अत्यधिक बल दिया है।

तब एक विवाद छिड़ गया जिसमें गवर्नेस, विद्यार्थी और बच्चों के अतिरिक्त मिखाइल सर्जेयेविच, कातरीना एलेक्सेएवना आदि सबने ही भाग लिया। बच्चे थके-से चुप बैठे थे।

"ओह! ये कभी समाप्त न होने वाले विवाद।" वृद्ध कोर्चागिन ने हँसते हुए कहा और उसने अपने वेस्टकोट से तौलिया खींचा, अपनी कुर्सी को आवाज करते हुए पीछे खिसकाया (जिसको तत्क्षण ही वर्दीधारी नौकर ने सम्हाल लिया) और मेज के पास से उठ गया।

उसके बाद सब उठ गए और दूसरी मेज के पास गए। इस मेज पर प्यालों में गरम सुगन्धित पानी से भरे काँच के गिलास रखे थे। सबने अपने मुँह धोए। पुनः वही तर्क छिड़ गया। तर्क में आनन्द किसी को नहीं आ रहा था।

"क्या आप ऐसा नहीं सोचते?" मिस्सी ने नेखलूदोव से कहा। वह इस बात की सहमति लेना चाहती थी कि मनुष्य का चरित्र जानना कोई खिलवाड़ नहीं है। उसे लगा कि उसका चेहरा उदास और असन्तुष्ट है। इससे वह भयभीत हो गई। वह जानना चाहती थी इसका कारण क्या है।

"मैं नहीं कह सकता! सचमुच मैंने इस पर कभी विचार ही नहीं किया है।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया।

"क्या आप मामा के पास चलेंगे?" मिस्सी ने पूछा।

"जी हाँ!" उसने ऐसे स्वर में कहा जिससे स्पष्ट प्रगट था कि वहाँ जाने की उसकी इच्छा नहीं थी। उसने सिगरेट निकाल ली।

मिस्मी ने उसकी ओर चुपचाप प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा, और वह लजा गया। "किसी के यहाँ आना और उसको उदासीन कर देना।" उसने अपने विषय में सोचा। तब सहृदयता प्रकट करने की चेष्टा करते हुए वह बोला—"यदि प्रिन्सेज आज्ञा देंगी तो मैं सहर्ष चला चलूँगा।"

"जी! मामा आपको देखकर प्रसन्न होंगी। आप वहाँ सिगरेट पी सकते हैं। इवान इवानोविच भी वहीं हैं।"

भवन-स्वामिनी प्रिन्सेज सोफिया वैसीलियेव्ना सदा लेटी ही रहती थीं। आज से आठ वर्ष पूर्व वह अतिथियों के मध्य रिबन और फीतों को बाँधे मखमल को ओढ़े, गिलट, हाथी दाँत, काँसे तथा पुष्पों से घिरी अपने कमरे में लेटी थी तब से वह कमरे से बाहर कभी नहीं निकलती केवल अपने घनिष्ट मित्रों को अपने प्रकोष्ठ में ही बुलाकर उनको सम्मानित करती। उसके घनिष्ठ मित्रों का अर्थ था साधारण श्रेणी के लोगों से भिन्न व्यक्ति।

नेखलूदोव का नाम भी इन मित्रों की सूची में लिख लिया गया क्योंकि उसे चतुर समझा जाता, क्योंकि उसकी माँ इस परिवार की अन्तरंग रह चुकी थी तथा इसलिए कि यह उचित समझा गया था कि मिस्मी को उससे विवाह कर लेना चाहिए।

सोफिया वेसीलियेव्ना का कमरा छोटे और बडे ड्राइंग रूमों से अगला था। बड़े ड्राइङ्ग रूम में मिस्सी, जो कि नेखलूदोव के आगे थी, चुपचाप रुकी और चाँदी की पालिश की एक छोटी कुर्सी की पीठिका पकड़ कर उसकी ओर मुँह करके खडी हो गई।

मिस्सी विवाह करने के लिए बहुत उत्सुक थी, और क्योंकि यह जोडा अच्छा था और वह भी उसे चाहती थी, वह यह सोचने लग पडी थी कि नेखलूदोव उसका ही होकर रह जाए (मिस्सी उसकी हो कर नहीं)। वह अपने ध्येय की ओर उस चतुराई से आगे बढी जिसमें अज्ञान में ही एक हठ सा पड़ जाता है और जो कि बहुधा विकृत मस्तिष्कों की उपज होता है। अब वह उससे इस दृष्टिकोण से बातें करने लगी कि नेखलूदोव अपने मन की बातें कह डाले।

"मुझे लगता है कि कोई नई घटना हो गई है।" वह बोली—"बतलाइए आज बात क्या है?"

उसे न्यायालय की बैठक का स्मरण हो आया। उसकी त्यौरियाँ चढ़ गईं

तथा वह लज्जा से आरक्त हो उठा।

सत्य कहने की इच्छा से वह बोला—"हाँ हुई है। एक अत्यन्त असाधारण एवं गम्भीर घटना।"

"क्या बात है? क्या आप मुझे नहीं बतलाएंगे कि घटना क्या है?"

"अभी नहीं! कृपया अभी बतलाने के लिए आप बाध्य मत कीजिए। मुझे अभी तक इतना समय नहीं मिल सका कि मैं उस पर विचार भी कर सकूं।" और उसके मुख पर पहिले से भी अधिक लालिमा दौड़ गई।

"अच्छा तो आप मुझे नहीं बतलाएँगे।" मिस्सी के चेहरे की एक मांसपेशी फड़की तथा उसने कुर्सी को, जिसे कि वह पकड़े हुए थी, पीछे हटाया।

"जी नहीं! नहीं बतला सकता!" उसने यह अनुभव करते हुए उत्तर दिया कि यह उत्तर भी मेरी अपनी आत्मा का है, जो यह स्वीकार करती है कि इस घटना का मेरे लिए बहुत महत्त्व है।

"अच्छा तो आइए!"

यह कह मिस्सी ने अपना सिर झटका मानो कि वह व्यर्थ के विचारों को मन से निकाल देना चाहती थी। और स्वाभाविक गति से अधिक तेज गति से उसके आगे-आगे चलने लगी।

नेख्लूदोव ने कल्पना की कि मिस्सी का मुँह अश्रुओं को रोकने की चेष्टा में अस्वाभाविक रूप से पिचका हुआ है। उसे दुख था कि मैंने मिस्सी को ठेस पहुँचाई है, किन्तु साथ ही वह यह भी जानता था कि इस समय की तनिक-सी दुर्बलता एक भयानक ज्वालामुखी बन जायगी, अर्थात् मुझे मिस्सी के साथ बाँध देगी। और आज उसे सबसे अधिक यही भय था। वह उसके पीछे-पीछे चुपचाप प्रिन्सेज के गुप्त कमरे की ओर चल दिया।

२७

मिस्सी की माँ प्रिन्सेज वैसिलियेव्ना ने अपना पौष्टिक एवं अत्यन्त सावधानीपूर्वक तैयार किया हुआ डिनर समाप्त कर लिया। (वह हमेशा ही एकांत में भोजन किया करती थी ताकि कोई उसके इस अकवित्वमय कार्य को न देख सके।)

उसकी कोच के पास एक छोटी सी टेबिल थी जिस पर काफी रखी हुई थी और वह सिगरेट पी रही थी। प्रिन्सेज सोफिया वैसिलियेव्ना लम्बी पतली स्त्री थी। उसके बाल साँवले, आँखें बडी और काली, और दाँत लम्बे थे फिर भी वह युवती की भाँति बन ठन कर रहती।

डाक्टर के साथ उसकी घनिष्ठता की सर्वत्र चर्चा थी। नेखलूदोव भी थोड़े ही दिन पूर्व उसकी चर्चा सुन चुका था। किन्तु जब वह उसकी कोच के पास डाक्टर को, जिसकी चिकनी चमकदार दाढ़ी थी जो बीच में से दो भागों में विभक्त हो गई थी, बैठा देखता तब उसे न केवल वे किंवदंतियाँ ही स्मरण हो आतीं किन्तु उसे कुछ बेचैनी का भी अनुभव होने लगता।

मेज के पास एक नीची गद्देदार कुर्सी पर सोफिया वेसिलियेव्ना की बगल में कोलोशोव बैठा अपनी काफी हिला रहा था। मदिरा का एक गिलास भी मेज पर रखा था।

मिस्सी नेखलूदोव के साथ अन्दर आई किन्तु ठहरी नहीं।

"जब मामा आपसे ऊब जांय और आपको भगा दें तब आप मेरे पास आ जांय।" उसने कोलोशोव और नेखलूदोव की ओर मुड़ कर इस तरह कहा मानो कि कुछ हुआ ही न हो। और वह मुस्काती हुई मोटी चटाई पर होकर निशब्द वहां से चली गई।

"कहिए प्रिय मित्र, प्रसन्न तो हैं ? बैठिए, कुछ बातें कीजिए।" प्रिन्सेज सोफिया वेसिलियेव्ना ने अपनी अत्यन्त प्राकृतिक मुस्कान से कहा जो कि बनावटी और कुटिल सी लगती थी। मुस्कराने में उसके सुन्दर लम्बे दाँत दिखलाई दिए उन असली दाँतों की आश्चर्यजनक नकल जैसे उसके कभी पहिले रह चुके थे।

"मुझे ज्ञात हुआ है कि आप न्यायालय से बहुत ही उदास होकर लौटे हैं। मैं समझती हूँ कि जिस मनुष्य के हृदय है उसके लिए यह बहुत ही भयंकर लगता है।" उसने फ्राँसीसी भाषा में कहा।

"जी हां, यही, यही बात है" नेखलूदोव ने कहा—"प्रत्येक बहुधा यही अनुभव करता है कि मेरा प..., प्रत्येक को यह लगता है कि मुझे किसी का न्याय करने का अधिकार नहीं है।"

"COMME C'EST VRAI" वह जोर से बोल उठी, मानो कि इस टिप्पणी की सत्यता से आश्चर्यचकित हो। उसका स्वभाव था कि जिनसे भी बाते

करती उनकी व्यर्थ ही प्रशंसा कर डालती।

"अच्छा आपके चित्र का क्या हुआ ? उसमे मुझे रुचि तो है किन्तु यदि मैं इतनी निर्बल एवं दुखी नहीं होती तो कभी की उसे देखने चली गई होती।" वह बोली।

"मैंने उसे बनाना बन्द कर दिया है।" नेखलूदोव ने रूक्षता से उत्तर दिया, उसकी की हुई प्रशंसा की असत्यता उसे उतनी ही स्पष्ट चमक रही थी जितनी कि उसकी आयु, जिसे कि वह छिपाने की चेष्टा करती थी। और जितनी विनम्रता से उसे व्यवहार करना चाहिए था वह नहीं कर सका।

"ओह ! यह तो बुरा हुआ !...क्यों, आप में कला के लिए सच्ची प्रतिभा है। मुझे रेपिन ने स्वयं बतलाया था।" वह कोलोशोव की तरफ मुड़कर बोली।

"यह क्या बात है, इसको झूँठ बोलने में शर्म क्यों नहीं आती ?" नेखलूदोव ने सोचा और त्यौरियाँ चढ़ा ली।

जब उसे निश्चय हो गया कि नेखलूदोव इस समय आपे मे नहीं है और उसे अच्छे और चतुर वार्तालाप से लुभाया नहीं जा सकता, तब वेसिलियेव्ना ने कोलोशोव की ओर मुड़कर नए खेल के विषय में उसकी राय पूछी। उसने ऐसे ढंग से पूछा मानो कि उसकी राय सब संदेहों को समाप्त कर देगी और कि उस राय का प्रत्येक शब्द स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य होगा। कोलोशोव ने खेल और उसके लेखक दोनों में ही गलतियाँ निकालीं और इससे उसे कला पर अपना दृष्टिकोण प्रकट करने का सहारा मिला। खेल का पक्ष लेते हुए भी प्रिन्सेज सोफिया वेसिलियेव्ना उसके तर्कों की सत्यता से प्रभावित हो गई कि या तो अपनी राय को तुरन्त त्याग दे अथवा कम-से-कम उसमें सुधार तो अवश्य ही कर ले। नेखलूदोव के नेत्र तथा कान उनकी ही ओर थे किन्तु न तो उसने कुछ सुना ही और न देखा ही कि उसके सामने क्या हो रहा है।

पहिले सोफिया वेसिलियेव्ना की ओर फिर कोलोशोव की बातें सुनते हुए नेखलूदोव ने देखा कि उन दोनों में से किसी को भी खेल की या एक दूसरे की चिंता नहीं थी फिर भी वे खाना खा चुकने के कारण गले और जबान की कसरत कर रहे थे। वोदका तथा मदिरा पी लेने के कारण कोलोशोव को थोड़ा सा नशा भी चढ़ चुका था—नशा उन किसानों की भाँति नहीं जो कभी जभी पीते हैं किन्तु उन लोगों की भाँति जिनका कि स्वभाव ही मदिरा पीने का हो गया है। वह न तो लड़खड़ा रहा था और न अशिष्ट बातें ही कर रहा था किन्तु वह ऐसी

अवस्था मे था जिसे साधारण कहा जा सकता है अर्थात् उत्तेजित और आत्म-संतुष्ट। नेखलूदोव ने यह भी देखा कि प्रिन्सेज सोफिया वेसिल्यियेव्ना बेचैनी से खिडकी की ओर देख रही है। खिडकी मे सूर्य की एक तिरछी किरण निकल रही थी। उसे भय था कि यह मेरे वृद्ध चेहरे को प्रत्यक्ष प्रगट कर देगी। किरण उसकी ओर आने लगी थी।

"बिल्कुल सच।" कोलोशोव की बात के उत्तर मे वह बोली और उसने अपनी कोच के बगल में लगी हुई बिजली की घण्टी का बटन दबाया।

डाक्टर उठा और जैसे कि वह अपने ही घर मे हो बिना कुछ कहे सुने कक्ष मे बाहर चला गया। सोफिया वेसिलियेव्ना उसे जाता देखती रही और उसकी बातें चलती रहीं।

"फिलिप! जरा ये पर्दे खींच दो।" उसने खिड़की की ओर इङ्गित कर वर्दीधारी सुन्दर नौकर से कहा जो कि घण्टी को सुनकर अन्दर आया था।

"नहीं, आप कुछ भी कहें उसमें कुछ-न-कुछ रहस्य है; रहस्य के बिना तो कविता हो ही नही सकती।" वह बोली। उसकी एक काली आँख पर्दे खींचते हुए वर्दीधारी नौकर की हरकत को क्रोध से देखती रही।

"कविता के अभाव मे रहस्य अंधविश्वास बनकर रह जाता है और रहस्य के अभाव में कविता गद्य हो जाती है।" वह दुखभरी मुस्कान से बोली। उसकी आँख अभी तक पर्दों और नौकर पर जमी हुई थी।

"फिलिप उस पर्दे को नहीं; इसको बड़ी खिडकी वाले को।" उसने असन्तुष्ट स्वर मे चीखकर कहा। सोफिया वेसिलियेव्ना को स्पष्टत: दुख था कि उसे ये शब्द कहने क्यों पडे। और अपनी भावनाओं को शांत करने के लिए उसने हीरे-माणिक्यों से लदी अपनी अँगुलियों से सुगन्धित सिगरेट अपने अधरो से लगाई।

विशाल वक्ष, दृढ अवयव वाला सुन्दर फिलिप थोड़ा सा झुका, मानो कि क्षमा-याचना कर रहा हो और अपनी चौड़ी पिंडली वाली पुष्ट टांगों से चटाई को अचक से पार करता हुआ आज्ञापालन के भाव मे वह दूसरी खिड़की पर चुपचाप चला गया और प्रिन्सेज की ओर देखते हुए पर्दे को इस प्रकार सावधानी से ठीक करने लगा कि एक भी किरण उसके चेहरे पर पड़ने का साहस न कर सके। किंतु फिर भी वह उसे सन्तुष्ट न कर सका और पुन: प्रिन्सेज को रहस्य के विषय में

अपने वार्तालाप को रोकना पड़ा तथा उस बुद्धिहीन फिलिप को, जो कि उसे इतनी निष्ठुरता से तङ्ग कर रहा था, मरी-सी आवाज में आदेश देना पड़ा। क्षण भर के लिए फिलिप की आँखों में विद्युत कौंध गई।

"तुझे शैतान उठा ले ! तू चाहती क्या है ?" कदाचित् उसने मन-ही-मन यही कहा होगा, नेखलूदोव ने सोचा, जो कि उस सारे दृश्य को देख रहा था। किन्तु शक्तिशाली, सुन्दर फिलिप ने अधीरता के चिह्न शीघ्र ही छिपा लिए और जीर्ण, शीर्ण, आडम्बर से पूर्ण सोफिया वेसिलियेव्ना की आज्ञाओं का चुपचाप पालन करता रहा।

"निःसन्देह डारविन की शिक्षा में पर्याप्त सत्यता है।" कोलोशोव ने, नीची कुर्सी की पीठ से सटते तथा सोफिया वेसिलियेव्ना की ओर उनींदे नेत्रों से देखते हुए कहा—"किन्तु वह तो उसे भी पार कर गया ! अरे हाँ !"

"और आप ? क्या आप वंश परम्परा से प्राप्त गुणों में विश्वास करते हैं ?" सोफिया वेसिलियेव्ना ने नेखलूदोव की ओर मुड़कर उससे पूछा। उसकी चुप्पी उसे खल उठी थी।

"वंश परम्परा से प्राप्त गुणों में ?" नेखलूदोव बोला "नहीं ! मुझे विश्वास नहीं है।" इस समय उसके मस्तिष्क में विचित्र छवियाँ भरी पड़ी थीं जो न जाने कैसे उसकी कल्पना में उभर आई थीं। एक कलाकार के मॉडल की भाँति फिलिप की बगल में उसे कोलोशोव का धूमिल सा, शक्तिशाली और सुन्दर नंगा शरीर दिखलाई दिया—तरबूजे की भाँति पेट, गंजी खोपड़ी, और ढीली-ढाली मूसल की तरह बाँहें। उसी धुँधलके में सिल्क और मखमल से ढके सोफिया वेसिलियेव्ना के कन्धे अपने वास्तविक रूप में उसके मस्तिष्क में उमड़ने लगे। किन्तु यह मानसिक चित्र बहुत भयावह था और उसने उसे अपने मस्तिष्क से निकालने की चेष्टा की।

सोफिया वेसिलियेव्ना ने उसे अपने नेत्रों से लक्ष्य किया।

"अच्छा, किन्तु क्या आप जानते है कि मिस्सी आपकी प्रतीक्षा कर रही है ?" वह बोली—"जाइए उसके पास। वह आपको शूमान का एक गीत सुनाना चाहती है। गीत अत्यन्त मनोहर है।"

"वह कुछ नहीं सुनाना चाहती; किसी कारण यह महिला झूँठ बोल रही है।" नेखलूदोव ने उठकर सोफिया वेसिलियेव्ना के अँगूठियों से लदे हाथ से, जिसकी

हड्डियाँ साफ चमक रही थी, अपना हाथ मिलाते हुए सोचा ।

कातरीना एलेक्सेएव्ना उसे ड्राइङ्ग रूम में मिली और सदैव की भाँति फ्राँसीसी भाषा में बोली :

"देखती हूँ जूरीमेन का कर्तव्य आपको बोझ अनुभव होता है।"

"जी ! क्षमा कीजिएगा आज मैं अनस्थिर हूँ और मुझे अपनी उपस्थिति से दूसरों को थका डालने का कोई अधिकार नही है।" नेखलूदोव बोला ।

"आप अनस्थिर क्यों हैं ?"

"मुझे उसके विषय मे कहने को विवश मत कीजिए ।" उसने अपने हैट को चारों तरफ देखते हुए कहा ।

"आपको स्मरण नही कि आप कहा करते थे कि हमको सत्य बोलना चाहिए ? और कितना कड़वा सत्य आप हम लोगो से कह देते थे । इस समय आप क्यो नही बतलाना चाहते ?...क्यों मिस्सी तुम्हे स्मरण नहीं ?" उसने मिस्सी की ओर जो अभी आई थी, मुड़ते हुए कहा ।

"तब हम खेलते थे ।" नेखलूदोव ने गभीरता से कहा– "खेल में व्यक्ति सत्य बोल सकता है किन्तु वास्तविक जीवन मे हम इतने बुरे है मेरा तात्पर्य है कि मै इतना बुरा हूँ कि कम-से-कम, मै सत्य नहीं बोल सकता ।"

"ओह ! आप इस भाँति मत पलटिए; अच्छा तो यह हो कि आप हमे बतलाएं कि हम इतने बुरे कैसे है ।" कातरीना एलेक्सेएव्ना ने अपने शब्दों से खिलवाड़ करते हुए कहा तथा वह ऐसी बनी मानो कि उसने देखा ही न हो कि इस समय नेखलूदोव कितना गंभीर है ।

"यह स्वीकार करने से अधिक बुरा कुछ नहीं कि मैं अनस्थिर हूँ," मिस्सी बोली—"मैं ऐसा कभी नही करती और इसलिए सदैव प्रसन्न रहती हूँ । अच्छा तो आप आ रहे है ? हम आपके Mauvaise humeur को दूर करने की चेष्टा करेंगे ।"

नेखलूदोव को लगा कि मैं एक ऐसे घोड़े की भाँति हूँ जिसे इसलिए दुलार किया जाता है कि वह अपने मुँह में लगाम लगा लेने दे तथा साज चढ़वा ले, किंतु आज मेरी इच्छा है कि मैं पहिले से कम भार ढोऊँ ।

उसने यह कह कर क्षमा माँगी कि मुझे घर पर काम है और विदा लेने लगा । मिस्सी उसका हाथ नित्य प्रति से अधिक देर तक पकड़े रही ।

"स्मरण रहे जो बात आपके लिए महत्त्वपूर्ण है उसका महत्त्व आपके मित्रों के लिए भी है।" वह बोली---"कल तो आप आएँगे ?"

"शायद नहीं।" नेखलूदोव ने कहा, और यह जाने बिना ही, कि मैं किसके कारण लजा गया अपने ऊपर अथवा उसके ऊपर, एवं आरक्त हो वहाँ से चल दिया।

"क्या बात है ? मेरा कौतूहल कितना बढ गया है।" कातरीना एलेक्सेएव्ना बोली—"मुझे इसकी खोज खबर लेनी होगी। मै समझती हूँ कि यह कुछ निराश उच्च प्रेम से सम्बन्धित है। मेरी प्रिय मात्या। वह अत्यन्त भावुक व्यक्ति है।"

"नहीं गन्दे प्रेम से सम्बन्धित" मिस्सी कहने जा रही थी, किन्तु रुक गई और उसने निस्तेज मुख से नीचे देखा---बिल्कुल ही भिन्न मुख से जिससे उसने नेखलूदोव की ओर देखा था। यहाँ तक कि कातरीना एलेक्सेएव्ना से इतना नीच श्लेष उसने नहीं प्रयोग किया होता, किन्तु उसने केवल यही कहा—"हम सबके अच्छे और बुरे दिन आते है।"

"क्या यह सम्भव हो सकता है कि वह धोका दे जायगा ?" उसने सोचा—"जो कुछ भी अब तक हो चुका है उसके बाद उसकी ओर से यह बहुत बुरी बात होगी।"

यदि मिस्सी को समझाना पडता कि उसके यह कहने का क्या तात्पर्य था। जो कुछ भी अब तक हो चुका है। तो वह कोई निश्चित बात नही बतला सकती थी कि हो क्या चुका है। फिर भी वह जानती थी कि उसने मेरी आशाओं को न केवल उभारा ही है वरन् एक प्रकार से मुझे वचन भी दे दिया है। उन दोनों के बीच कोई निश्चित बात तो नही हुई थी—केवल दृष्टि विक्षेप, विहँसना एवं इङ्गित; किंतु फिर भी वह उसे अपना समझती थी और उसे खो देना उसके लिए अत्यन्त कष्टप्रद था।

२८

"लज्जाजनक और भयावह, भयावह और लज्जाजनक !" अपनी जानी-पहिचानी सड़कों पर जाते हुए नेखलूदोव मन-ही-मन कहता जा रहा था। मिस्सी

से बातें करते समय जो शक्तिहीनता उसे अनुभव हुई थी वह उसके मस्तिष्क से निकलती ही नहीं थी। उसे लगा कि बाह्य रूप से देखने पर मेरा पक्ष सबल है, क्योंकि मैंने उससे कभी ऐसी कोई बात नहीं कही जो उसके लिए बन्धन की हो, उसके सम्मुख कभी प्रस्ताव नहीं रखा; किन्तु वह जानता था कि वास्तव में मैं उससे बँध चुका हूँ, उसकी आशाएँ उभार चुका हूँ। और फिर भी आज उसने तन-मन से अनुभव किया कि मैं उससे विवाह नहीं कर सकता।

"लज्जाजनक और भयावह, भयावह और लज्जाजनक !" उसने मन-ही-मन न केवल मिस्सी और अपने सम्बन्धों के प्रति दोहराया वरन् हरएक वस्तु के लिए कहा—"हर वस्तु भयावह है। लज्जाजनक है।" अपने मकान की ड्योढ़ी में घुसते हुए उसने दोहराया।

"मैं अब रात में भोजन नहीं करूँगा।" उसने अपने नौकर कोरने से कहा, जो उसके पीछे-पीछे भोजन-कक्ष में चला आया था, जहाँ कि भोजन और चाय के लिए कपड़ा बिछा हुआ था। "तुम जा सकते हो।"

"जी श्रीमान् !" कोरने बोला। वह गया नहीं किन्तु मेज पर से सामान हटाने लगा। नेखलूदोव ने कोरने की ओर क्रोध से देखा। वह नितांत एकांत चाहता था और उसे लग रहा था कि मुझसे प्रत्येक व्यक्ति ईर्ष्या करता है इसी-लिए मुझे परेशान कर रहा है। जब कोरने भोजन का सामान ले गया तब नेख-लूदोव समोवर* के पास गया तथा स्वयं ही चाय बनाना चाहता था कि अग्रफेना पेत्रोव्ना के पदचाप सुनाई दिए। तुरन्त ही ड्राइङ्गरूम में जाकर उसने द्वार बन्द कर लिया ताकि वह उसे न देख सके। आज से तीन महीने पहिले उसकी माँ इसी कमरे में मरी थी। कमरे में रिफ्लेक्टर लगे दो लैम्प जल रहे थे। एक तो उसके पिता के चित्र पर प्रकाश डाल रहा था और दूसरा उसकी माँ के चित्र पर। कमरे में प्रवेश करते ही उसे याद आया कि माँ की मृत्यु के दिनों, मेरे और माँ दोनों के आपस में कैसे सम्बन्ध थे। और वे उसे अप्राकृतिक तथा घृणास्पद भी लगे। यह भी लज्जाजनक और भयावह था। उसे याद आया कि उसकी बीमारी के अन्तिम दिनों में मैं सोचा करता था कि काश वह मर जाय। वह मन-ही-मन सोचा करता था कि मैं इसके भले के लिए चाहता हूँ ताकि इसके दुखों का अन्त हो जाय। किंतु वास्तव में वह उसकी मृत्यु अपने हित में चाहता था कि उससे अपनी माँ कष्ट में देखी नहीं जाती थी।

---

*चाय का रूसी पात्र।

अपनी माँ की सुखद स्मृतियों को सजग करने के लिए वह उसके चित्र के पास गया। एक ख्याति प्राप्त चित्रकार ने उस चित्र को पाँच हज़ार रूबल लेकर बनाया था। उसको काली मखमल की खुली गर्दन वाली लिबास पहिनाई गई थी। और स्पष्ट था कि चित्रकार ने उसके सुन्दर जगमगाते हुए कन्धे और गर्दन तथा उसके दोनों कुचों की रूप-रेखाएँ तथा उनके बीच का अन्तर बड़ी सावधानी से चित्रित किया था। यह बिल्कुल विद्रोह था, भयानक था। उसकी माँ के इस अर्द्ध नग्न सौंदर्य में कोई वस्तु अत्यन्त विद्रोह पैदा करने वाली और पाखण्ड से भरी हुई थी। यह इसलिए और भी घृणास्पद थी कि तीन महीने पहिले इसी कमरे में इसी स्त्री का मसाला लगा हुआ मृतक शरीर रखा हुआ था और वही कमरा नहीं वरन् सारा मकान ही उस असह्य एवं अरुचिकर गन्ध से परिपूर्ण हो रहा था। वह गन्ध इतनी तीव्र थी कि किसी वस्तु से भी दूर नहीं की जा सकी। उसे लगा कि वह गन्ध अब भी वर्तमान है। और उसे ध्यान आया कि अपनी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उसने मुझसे अपना दुर्बल हाथ मिलाया, जिसकी अँगुलियों का रंग बदल चुका था। वह मेरी आँखों में देखती हुई बोली—"मीत्या ! यदि कोई ऐसी बात हो गई है कि जो मुझे करना चाहिए था वह मैने नहीं किया हो तो उससे मुझे मत आँकना" और उसकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली तथा कष्ट से वह पीली पड़ गई।

"आह कितना भयानक है !" उसने उस अर्द्धनग्न स्त्री के चित्र की ओर देखकर सोचा, जिसके कन्धे और भुजाएँ अत्यन्त सुन्दर संगमरमर के समान थे, और जिसके ओठों पर विजय की मुस्कान थी। चित्र में अर्द्धनग्न वक्ष ने उसे एक नवयुवती का पुर्नस्मरण करा दिया जिसे उसने इसी मुद्रा में आज से कुछ दिन पूर्व देखा था। यह मिस्सी थी जिसने कि नृत्यगृह जाते समय उसे विशिष्टतया अपने कमरे में बुलाया था ताकि वह उसे नृत्य की पोशाक में देख सके। उसके सुन्दर कन्धे और भुजाएँ देखकर उसे घृणा हो आई। "और उसका भद्दा और पशुतुल्य पिता, उसका संदिग्ध अतीत और उसकी क्रूरताएँ, और उसकी माँ की सुन्दर स्त्रियोचित भावनाएँ, उसकी संदिग्ध ख्याति।" इस सबसे उसे घृणा हुई और इन सबने उसे लज्जित कर दिया। "लज्जाजनक और भयावह, भयावह और लज्जा-जनक !"

"नहीं ! नहीं !!" उसने सोचा—"मुझे मुक्ति मिलनी चाहिए; मुक्ति कोरचागिनों से, मेरिया वेसिलियेव्ना से, और पैतृक सम्पत्ति से एवं बाकी सबसे। ओह ! मुक्ति की साँस लेने को !—विदेश जाने को, रोम जाने को और अपने चित्र बनाने को।" उसे कला के लिए अपनी प्रतिभा के प्रति सन्देह उत्पन्न हुआ।"

ग्रोह ग्रच्छा, तब ग्राराम से साँस लेने को। पहिले कुन्स्तुन्तुनिया, फिर रोम। बस केवल इस जूरी के धन्धे को करलूँ ग्रौर सबसे पहिले एडवोकेटों से मिलकर इसे ठीक करलूँ।"

तब एकाएक उसके मस्तिष्क में काली, तिरछी ग्राँखों वाली बंदिनी का ग्रत्यधिक सजीव चित्र उभर ग्राया ग्रौर उसे यह भी दिखलाई दिया कि जब बंदियों को ग्रन्तिम बातें कहने की छूट मिली तब वह किस भाँति रोने लगी थी। ग्रौर उसने ऐश-ट्रे में सिगरेट दबाकर बुझा दी, दूसरी जला ली ग्रौर इधर-से-उधर कमरे में घूमने लगा। उसके मस्तिष्क में उसके सहवास के समस्त चित्र एक के बाद एक ग्राने लगे। उसके साथ ग्रन्तिम मिलन, पाशविक प्रवृत्ति जिसने मुझे जकड़ लिया था, ग्रौर उसकी संतुष्टि के बाद की निराशा—उसे सब याद ग्राए। उसे वह श्वेत लिबास, नीला रूमाल, प्रथम धर्म-समाज, याद ग्राया। "क्यों, मैंने उसे प्रेम किया, उस रात को मुझे सत्य एवं पवित्र प्रेम हुग्रा था; मैं इससे भी पूर्व उससे प्रेम करता था; हाँ जब मैं ग्रपनी बुग्राग्रों के यहाँ पहिली-बार ठहरा था ग्रौर लेख लिख रहा था तब भी मैं उससे प्रेम करता था।" ग्रौर फिर उसे ध्यान ग्राया कि तब मैं कैसा था। उस नवीनता, यौवन ग्रौर जीवन की पूर्णता ने उसे हिलाकर रख दिया तथा वह ग्रत्यधिक पीड़ित एवं दुखी हो उठा।

उसकी पहिले की ग्रौर ग्रब की ग्रवस्था में विशाल ग्रन्तर था; यदि ग्रधिक नहीं तो उतना ही विशाल जितना कि उस रात गिरजाघर की कातूशा में ग्रौर व्यापारी को मदिरा पिलाती हुई उस वैश्या कातूशा में जिसे कि ग्राज सुबह दण्ड दिया गया था। तब मैं स्वतन्त्र ग्रौर निर्भय था। ग्रौर मेरे सम्मुख ग्रसंख्य ग्राशाएँ थीं। उसे लगा कि ग्रब मैं मूर्ख, खोखले, बेकार ग्रौर भ्रष्ट जीवन के जाल में फँस गया हूँ। जिसमें से चाहने पर भी निकलने का कोई साधन नहीं है। एक-दो बार मैं कोशिश भी कर चुका हूँ। उसे ध्यान ग्राया कि कभी मैं ग्रपनी स्पष्टवादिता का गर्व करता था, किस तरह सदा सत्य बोलने का नियम मैंने बनाया था ग्रौर वास्तव में सत्यवादी रहा भी था। ग्रौर ग्रब ग्रसत्यता में गहरा डूबा हुग्रा हूँ। सबसे भयानक ग्रसत्यता—ग्रसत्यता जिसे मेरे इष्ट-मित्र, मेरे परिचित सब ही सत्य समझते हैं। ग्रौर जहाँ तक उसे वह देख सकता था उसे इन झूठों में से निकलने का कोई मार्ग नहीं दिखलाई दिया। वह कीचड़ में डूब चुका था, उसका ग्रभ्यस्त हो चुका था ग्रौर उसमें लेट चुका था।

मेरिया वेसिलियेव्ना ग्रौर उसके पति से ग्रपने सम्बन्धों को किस प्रकार

समाप्त करूँ कि उनसे और उनके बच्चों से नेत्र मिला सकूँ ? मिस्सी के जाल से कैसे निकलूँ ? मेरी आस्था थी, कि जमींदारी को बनाए रखना अन्याय है और माँ से उत्तराधिकार में प्राप्त जमींदारी को मैंने बनाए रखा—इन दोनों विरोधी बातों से उत्पन्न मत-वैषम्य से मैं कैसे बचूँ ? कातूशा के प्रति किए गए अपने पापों का प्रायश्चित कैसे करूँ ? चाहे कुछ भी हो, यह अन्तिम प्रश्न ऐसे ही नहीं छोड़ा जा सकता। जिस स्त्री को मैंने प्यार किया है उसे वैसे ही नहीं छोड़ सकता और मुझे केवल इसी बात से ही सन्तोष नहीं हो सकता कि उसे साइबेरिया के कठोर परिश्रम से बचाने के लिए किसी एडवोकेट को रुपया दे दिया जाय। उसे कठोर परिश्रम का दंड भी नहीं चाहिए था। रुपया देकर अपनी गलती का प्रायश्चित करना ? तो क्या उस समय जब मैंने उसे रुपया दिया तब यह नहीं सोचा था कि मैं अपने पापों का प्रायश्चित कर रहा हूँ ?"

और उसकी दृष्टि के समक्ष उस क्षण का दृश्य नाच गया जब उसे मार्ग में रोककर उसके एप्रन की गद्दी में नोट घुसेड़ दिए और भाग गया था। उसी घृणा और भय में, जो कि उस समय अनुभव कर रहा था, उसने सोचा "ओह ! वह रुपया।"

"ओह प्रिय ! ओह प्रिय ! कितना घृणास्पद है।" वह जोर से चीखा, जैसे कि वह उस अवसर पर पहिले चिल्ला उठा था "कोई नीच और समाजद्रोही ही ऐसा कर सकता है। और मै—मैं वह समाजद्रोही हूँ—वह नीच हूँ !" वह जोर से कहता रहा "किन्तु क्या यह सम्भव है ?"—वह रुका और शांत खड़ा होगया—"क्या यह संभव है कि मै सचमुच ही समाजद्रोही हूँ ?—हाँ तो मेरे अलावा कौन है ?" उसने मन-ही-मन उत्तर दिया। "और तब क्या यही बात है ?" उसने अपने ऊपर स्वयं दोष मढ़ते हुए कहा—"क्या मेरिया वेसिलियेव्ना और उसके पति के प्रति मेरा व्यवहार नीच और घृणास्पद नहीं था ? और धन की ओर मेरा झुकाव ? और धन का प्रयोग जिसे कि मैं अन्याय समझता था क्योंकि वह मेरी माँ का दिया हुआ है ? और मेरा सम्पूर्ण अकर्मण्य तथा तिरस्कार करने योग्य जीवन ? और सर्वोपरि मेरा कातूशा के प्रति व्यवहार, नीचता और समाजद्रोही था। लोगों की मर्जी आए चाहे जैसा मुझे समझें, मैंने उन्हें तो धोका दे दिया किन्तु स्वयं अपने आपको धोका नहीं दे सकता।"

और एकाएक, उसकी समझ में आ गया कि कुछ दिनों से, विशेषतया आज से, जिस घृणा का वह हर एक को—प्रिन्स को, सोफिया वेसिलियेव्ना को,

ग्रौर कोरने को, ग्रौर मिस्सी को देखकर ग्रनुभव करता था, वह घृणा उनके प्रति नहीं थी वरन् थी स्वयं ग्रपने प्रति। कहते ग्राश्चर्य होता है कि ग्रपनी इस नीचता की स्वीकृति से यद्यपि उसे दुख ग्रवश्य हुग्रा किन्तु फिर भी ग्रानन्द एवं शांति की ग्रनुभूति हुई।

नेखलूदोव के जीवन मे एक से ग्रधिक बार 'ग्रात्मा की सफाई' हो चुकी थी। ग्रात्मा की सफाई से उसका मतलब था मस्तिष्क की वह ग्रवस्था जिसमें कि ग्रात्मिक जीवन की ग्रकर्मण्यता के लम्बे काल के पश्चात, उसके कार्य के पूर्णतया बंद होने के पश्चात, वह सब गंद को निकाल कर बाहर फेंकना शुरू करता जो उसकी ग्रात्मा में इकट्ठा हो चुका होता था ग्रौर जिसके कारण उस जीवन के प्रवाह में ग्रवरोध ग्राता था।

ऐसे जागरण के पश्चात नेखलूदोव ग्रपने लिए सदैव कुछ नियम बना लेता जिनको कि वह जीवन-भर पालन करने की सोचता, डायरी लिखता, ग्रौर नया जीवन ग्रारम्भ करता जिसे फिर बदलने की उसे ग्राशा नहीं होती। "Turning over a new leaf" ग्रपने विषय मे वह ग्रंगरेजी की लोकोक्ति प्रयोग करता। किन्तु प्रत्येक बार सांसारिक लोभ उसको ग्रपने जाल में फँसा लेते ग्रौर बिना देखे ही वह फिर गिर पड़ता—बहुधा पहिले से भी ग्रधिक नीचे।

इस भाँति कितनी ही बार जीवन में वह उठा ग्रौर ग्रपनी शुद्धि की। सबसे पहिली बार यह तब हुग्रा जब वह ग्रपनी बुग्राग्रों के यहाँ गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने गया था; वह उसका ग्रत्यन्त शक्तिप्रद एवम् ग्रानन्दपूर्ण ग्रभिनवीकरण था ग्रौर उसका प्रभाव कुछ समय तक स्थिर भी रहा था। दूसरी बार उसने नवचेतना तब प्राप्त की जब कि युद्ध के समय सिविल नौकरी छोड़कर ग्रपना जीवन उत्सर्ग करने को तत्पर हो मिलिटरी में गया। किन्तु यहाँ उसकी ग्रात्मा की ग्रावाज को बहुत शीघ्र घोंट दिया गया। तब एक बार पुनः चेतना तब ग्राई जब कि फौज को छोड़कर कला की ग्रोर प्रेरित हो वह विदेश चला गया।

उस समय के बाद से ग्रब तक शुद्धिकरण बिना बहुत कालान्तर हो चुका था ग्रौर इसलिए ग्रपनी ग्रात्मा की ग्रावश्यकताग्रों ग्रौर जिस भाँति जीवन-यापन वह कर रहा था, उन दोनों के बीच बहुत बड़ी खाई पड़ चुकी थी, जितनी बड़ी

कि पहले कभी नहीं पड़ी थी। वह उस खाई के फाट की चौड़ाई को देखकर भय से चकित रह गया।

खाई इतनी चौड़ी थी और इसमें मालिन्य इतना भरा पड़ा था कि वह उसकी सफाई के प्रति निराश हो गया। "क्या इससे पूर्व तुमने पूर्ण नहीं होना चाहा और पहले से अच्छा नहीं होना चाहा, और उसमें कुछ भी नहीं बना ?" अंदर से शैतान का स्वर आया। "अब फिर चेष्टा करने से क्या लाभ ? क्या तुमहीं अकेले ऐसे हो ?—सब एक से हैं, जीवन ही ऐसा है।" उस स्वर ने धीरे-से कहा। किंतु स्वतंत्र आत्मिक सत्ता, बस जो ही एक मात्र सत्य है, शक्तिवान है, नेखलूदोव में जागृत हो चुकी थी तथा लाचार हो उसे उस पर विश्वास करना पड़ा। यद्यपि जैसा वह था और जैसा होना चाहता था उसमें महान अन्तर था किंतु उस नवजागृत आत्मसत्ता के लिए कुछ भी कठिन न जान पड़ा।

"कुछ भी क्यों न हो मैं इस असत्यता को समाप्त कर दूंगा क्योंकि यह मेरे लिए बन्धन है; हरएक से सत्य कह दूंगा और सत्य मार्ग पर ही चलूंगा।" उसने दृढ़ स्वर में जोर से कहा "मैं मिस्सी से भी सत्य प्रकट कर दूंगा और उसे बतला दूंगा कि मैं चरित्रभ्रष्ट हूँ और मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकता और व्यर्थ ही मैंने तुमको तङ्ग किया। मैं मेरिया वेसिलियेव्ना से कह दूंगा...ओह। उससे कुछ नहीं कहना है। मैं उसके पति से कह दूंगा कि मैं समाजद्रोही हूँ, कि मैं उसे धोका देता रहा हूँ। मैं अपनी पैतृक सम्पत्ति को इस तरह बाँट दूंगा कि सत्य की प्रतिष्ठा हो। मैं उससे कह दूंगा, कातूशा से, कि मैं समाजद्रोही हूँ और मैंने तेरे साथ पाप किया है और अपनी शक्ति-भर तेरे दुखों को कम करने का प्रयास करूंगा। हाँ ! मैं उससे मिलूंगा और उससे क्षमायाचना करूंगा...

"हाँ मैं उससे क्षमायाचना करूंगा, जैसे बच्चे करते हैं...।" वह रुका—"यदि आवश्यक होगा तो विवाह भी कर लूंगा।"

वह फिर रुका, अपने वक्ष के आगे हाथ बाँधे जैसे कि बचपन में किया करता था, आँखें उठाईं और किसी को सम्बोधित करता हुआ-सा बोला "भगवान ! मेरी सहायता करो, शिक्षा दो, आओ, मेरे अन्दर प्रवेश करो और इस मत्र घृणा से मुझे मुक्त करो।"

उसने प्रभु से सहायता मांगते हुए, अपने अन्दर प्रवेश कर शुद्धिकरण करने की प्रार्थना की। और जिसके लिए वह प्रार्थना कर रहा था वह काम तो हो चुका था; उसके अन्दर का भगवान उसकी आत्मा में जाग चुका था। उसे अनुभव

हुआ कि मैं सर्वशक्तिमान के पास रहने वालों में से एक हूँ और इसलिए न केवल उसने स्वतंत्रता, पूर्णता और जीवन के आनंद का ही अनुभव किया वरन् पवित्रता की समस्त शक्तियों के अपने अन्दर समावेश का भी अनुभव किया। उसे लगा कि मानव जो भी सर्वोत्कृष्ट कार्य कर सकता है वह सब करने की क्षमता मुझ में भी है।

जब वह यह सब बातें सोच रहा था, उसके नेत्रों में आँसू भर आए; अच्छे और बुरे आँसू: अच्छे इसलिए कि उसके अन्दर की आत्मा सत्ता के, जो कितने ही वर्षों से सोई हुई थी, उद्बोध के कारण आनन्द के अश्रु थे, और बुरे इसलिए कि वे अपनी भलाई के ऊपर अपनी दयालुता के भी अश्रु थे।

उसे गर्मी लगी। उठकर उसने खिड़की खोल दी। चाँदनी रात शांत और अभिनव थी; कोई वस्तु खड़खडाकर निकल गई और फिर निस्तब्धता छा गई। लम्बे चिनार के वृक्ष की परछाईं खिड़की के ठीक सामने भूमि पर पड़ रही थी और उसकी पत्ती विहीन डालों की उलझी हुई परछाइयाँ साफ झड़ी हुई ककड़ीली भूमि पर पड रही थीं। छत की बाँई ओर का कोचहाउस चाँदनी में श्वेत-सा चमक रहा था। वृक्षों की उलझी हुई डालों में से सामने ही बाग की दीवाल की काली छाया दिखलाई पड़ रही थी। नेख़लूदोव छत, चन्द्रिकायुक्त बाग, और चिनार के वृक्षों की छाया देखता रहा और बढ़ती हुई तेज स्वच्छ, वायु का सेवन करता रहा।

"कितना सुहावना, कितना सुहावना है; हे भगवान कितना सुहावना है।" उसने कहा। उसका तात्पर्य उसकी आत्मा में उठने वाली अनुभूति से था।

२९

माशलोवा बन्दीगृह की अपनी कोठरी में छह बजे सायं तक पहुँच पाई। वह चलने की अभ्यस्त नहीं थी और उस दिन उसे पत्थर की सड़क पर दस मील आना-जाना पड़ा था इसलिए वह बहुत थक गई थी और उसके पैरों में छाले भी पड़ गए थे। असंभावित निर्दय दंड ने उसका हृदय चकनाचूर कर दिया था और भूख से भी वह व्याकुल हो गई थी।

अभियोग चलते समय जब पहिला मध्यांतर हुआ तब उसके पास बैठे सिपाहियों ने रोटी और उबले अण्डे खाए। उन्हें खाता देख उसके मुँह में पानी भर आया और उसे भी भूख लगने लगी। किंतु माँगना उसने अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझा। तीन घण्टे बाद भूख मर गई और उसे केवल दुर्बलता का अनुभव हुआ। तब ही उसने अप्रत्याशित दंड सुना। पहिले तो उसने सोचा कि वह गलत समझी थी: वह साइबेरिया में अपराधिनी की भाँति अपनी कल्पना भी न कर सकी; और उसे अपने कानों पर विश्वास न हुआ। किंतु न्यायाधीशों और पञ्चों के जिन्होंने इस निर्णय को सुना था, शांत और भावहीन चेहरों को देखकर मानों कि यह सब प्रत्याशित और स्वाभाविक ही हो, उसे क्रोध हो आया और जोर से उसने सारी कोर्ट के सामने घोषणा की कि मैं निर्दोष हूँ। यह देखकर कि मेरी चिल्लाहट को भी बिलकुल स्वाभाविक और प्रत्याशित मान लिया गया है तथा उससे अन्तर कोई नहीं पड़ा उसे बहुत दुख हुआ। और वह यह सोचकर रोने लगी कि मुझे अपने साथ किए गए निर्दय और आश्चर्यजनक अन्याय के सामने घुटने टेक देने चाहिए। सबसे अधिक आश्चर्य तो उसे इस बात पर हुआ कि युवक– या वे लोग जो वृद्ध तो कहे ही नहीं जा सकते—वे युवक ही, जो उसकी ओर प्रशंसात्मक दृष्टि से देखते थे आज उसके विरोध में बोले। (उनमें से एक था पबलिक प्रोसीक्यूटर जिसे कि उसने बिलकुल ही भिन्न प्रकृति में देखा था) अभियोग प्रारम्भ होने से पूर्व मध्यान्तरों में जब वह बन्दियों के प्रकोष्ठ में बैठी थी तब उसने इन युवकों को देखा जो कि कमरे के खुले द्वार पर झाँकते मानो कि उन्हें किसी कार्यवश वहाँ से निकलना था। बहुत से तो कमरे में अन्दर भी गए और उन्होंने उसकी ओर प्रशंसात्मक दृष्टि से देखा। और यद्यपि वह निर्दोष थी फिर भी न जाने किस कारण से इन्हीं युवकों ने उसे सश्रम कारावास का दण्ड दिया। पहिले तो उसे रोना आ गया किंतु फिर वह चुप होगई और स्तम्भित हो बन्दियों के प्रकोष्ठ में बैठ गई कि कोई मुझे वापिस लिवा ले जाय। अब उसकी एकमात्र इच्छा थी—सिगरेट पीने की। बोचकोवा और कार्तिन्किन को दण्ड सुना दिया गया और पुलिसमैन उन्हें उसी कमरे में लिवा लाए। माशलोवा पहले की ही भाँति गुमसुम बैठी थी। बोचकोवा ने आते ही उसे गाली दी और उससे "अपराधी" कहना आरम्भ कर दिया।

"अच्छा! तुम्हें क्या मिला? निरपराध सिद्ध कर लिया, कर लिया! फूहड़ कहीं की! तुम जिस योग्य थीं तुम्हें मिल गया। साइबेरिया जाने पर सजधज खतम कर दोगी—कोई भय नहीं।"

माशलोवा हाथों को आस्तीनों में छिपाए, सिर लटकाए अविचल बैठी सामने गंदे फर्श की ओर देख रही थी। वह इतना ही बोली—"मैं तुम्हें कष्ट नहीं दे रही इसलिए तुम भी मुझे तंग मत करो ..मैं तुम्हें तंग नहीं कर रही, कर रही हूं क्या ?" उसने कितनी ही बार दोहराया और फिर चुप हो गई। जब बोचकोवा और कार्तिन्किन को वहाँ से हटा कर अन्यत्र भेज दिया गया और एक सेवक माशलोवा के पास तीन रूबल लेकर आया तब वह तनिक-सी प्रफुल्लित हो उठी।

"क्या आपका नाम माशलोवा है ?" उसने पूछा—"यह लीजिए; एक महिला ने आपके लिए रुपए भेजे हैं।" रुपए देते हुए वह बोला।

"महिला—कौन-सी महिला ?"

"आप ले लीजिए। मैं आपसे बातें नहीं कर सकता।"

यह धन वेश्यागृह की स्वामिनी किनायेवा ने भेजा था। कोर्ट में जाते समय उसने प्रवेशक से पूछा कि क्या मैं माशलोवा को कुछ रुपए दे सकती हूँ। प्रवेशक ने कहा कि दे सकती हो। आज्ञा पाने के बाद उसने अपने मोटे सफेद हाथ पर चढ़े तीन बटन लगे बकरी के खाल के ग्लोव से अपनी सिल्क स्कर्ट की पिछली जेब से एक अत्यन्त सुन्दर बटुआ निकाला और उसमें से अपने अड्डे में कमाए हुए ब्याजू कागजों से कटे हुए कूपनों के बंडल निकाले, और उनमें से एक कूपन दो रूबल पचास कोपेक का निकाला तथा दो बीस-बीस कोपेक के और एक दस कोपेक का सिक्का निकाला तथा वे सब उसने प्रवेशक को दे दिए। प्रवेशक ने एक सेवक को बुलाया, और उसके सामने ही उसे रुपए दे दिए।

"टीक टीक डेने की किरपा करना।" कारोलिना अलबर्नोव्ना कितायेवा ने कहा।

इस अविश्वास की भावना से सेवक को ठेस पहुँची और इसीलिए उसने माशलोवा से इतनी कठोरता से बातें कीं।

माशलोवा को रुपए मिलने से प्रसन्नता ही हुई, क्योंकि उसी से उसकी ऐच्छिक वस्तु प्राप्त हो सकती थीं।

"काश, मुझे सिगरेट मिल जाती और मैं कश खींच पाती !" उसने मन-ही-मन कहा और उसके सारे विचार अपनी एकमात्र इच्छा–सिगरेट पीने पर केन्द्रित हो गए। उसे सिगरेट पीने की इतनी इच्छा थी कि जब कमरे का बरामदे में खुलने वाला द्वार खुला और उसमें से तमाखू का धुआँ उसके पास पहुँचा तो उसके मुँह

में लाए आ गई। किन्तु प्रतीक्षा उसे काफी देर तक करनी पड़ी क्योंकि मंत्री को जो उसे जाने की आज्ञा देता, बंदियों के बारे में स्मरण ही न रहा कि वे अभी यहीं बैठे हैं। वह एक एडवोकेट से बातें करने और सेन्सर द्वारा निषिद्ध एक लेख के विषय में तर्क करने में तल्लीन था।

भिन्न-भिन्न आयु के कुछ व्यक्ति अभियोग के पश्चात् उस पर एक दृष्टि फेंकने आए और आपस में कुछ कानाफूसी करते चले गए। किन्तु माशलोवा ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अन्त में, पांच बजे के लगभग उसको जाने की आज्ञा मिली! उसको निजनीनोवोगोरद का सिपाही और चुवास पिछले दरवाजे से ले चले। लॉ कोर्ट के प्रवेश द्वार पर आकर उसने उनको दो रोल और कुछ सिगरेट लाने के लिए बीस कोपेक दिए। चुवास हँसा और रुपए लेकर बोला—"अच्छा! मैं ले दूंगा।" और वास्तव में उसने रोल और सिगरेट लाकर उसे दे दी तथा बाकी रेजगारी लौटा दी।

मार्ग में सिगरेट पीने की उसे आज्ञा नहीं थी और अपनी असन्तुष्ट लालसा लिए वह कारागृह तक चलती रही। जब वह कारा के द्वार पर पहुँची तब रेल से आए हुए एक सौ बन्दी अन्दर जा रहे थे।

दाढ़ी वाले, क्लीन शेव्ड, वृद्ध, नवयुवक, रूसी, गैर रूसी, कुछेक जिनका सिर मुड़ा हुआ था अपने पांवों की शृङ्खलाओं को खड़खड़ाते हुए बंदीगण गलियारे को धूल, कोलाहल, और पसीने की तेज दुर्गंध से भर रहे थे। माशलोवा के पास से निकलते हुए सब बंदी उसकी ओर देखने और कुछेकों ने उसके पास आकर जाते हुए उसे धक्का भी दिया।

"ओह! यहाँ एक युवा स्त्री है---सुन्दर-सी।" एक बोला।

"मिस! नमस्ते!" दूसरे ने उसे आँख मारते हुए कहा।

एक काला मुच्छैल जिसका सारा चेहरा, गर्दन का पिछला भाग क्लीन शेव्ड था अपनी शृङ्खलाओं को खडखड़ाता हुआ, जिनमें कि उसके पैर जकड़े हुए थे, उछलकर उसके पास आया और उसने कातूशा का आलिंगन कर लिया। माशलोवा ने उसे धकेल दिया।

"अरे! क्या तुम मुझे नहीं जानती लँगोटिया यार? आओ, आओ, ज्यादा मत बनो।" अपने दाँत फाड़ते हुए और आँखें चमकाते हुए वह चिल्लाया।

"बदमाश ! क्या कर रहा है तू ?" इन्सपैक्टर के सहायक ने पीछे से उसके पास आकर चीख कर कहा ।

बंदी सिकुड़ गया और कूद कर अलग हट गया । सहायक माशलोवा की ओर मुड कर बोला :

"तुम यहाँ क्यों आई हो ?"

माशलोवा कहना चाहती थी कि मैं लॉ कोर्ट से वापिस लौटी हूँ किन्तु वह इतनी थकी हुई थी कि उसे बोलने की भी इच्छा नहीं रही थी ।

"यह लॉ कोर्ट से लौटी है, श्रीमान् !" एक सिपाही ने सामने आकर अपनी अंगुलियों को टोपी के पास ले जाकर कहा ।

"अच्छा ! इसे चीफ वार्डर को सौंप दो । मैं इस प्रकार की बातें पसन्द नहीं करता ।"

"जी श्रीमान् !"

"मोलोकोव ! इसे अन्दर ले जाओ ।" सहायक इन्सपैक्टर चिल्लाया ।

चीफ वार्डर आया और उसने माशलोवा के कंधों पर क्रोध से धक्का दिया और अपने सिर से उसे पीछे आने का इङ्गित कर वह उसे स्त्री वार्ड के बरामदे में चल दिया । वहाँ माशलोवा की तलाशी ली गई और क्योंकि कोई वर्जित वस्तु प्राप्त नहीं हुई (उसने सिगरेट की डिब्बी को एक रौल में छिपा लिया था) उसे उसी कोठरी में पहुँचा दिया गया जिसमें से कि वह सुबह निकली थी ।

३०

जिस कोठरी में माशलोवा बन्द थी वह इक्कीस फीट लम्बी और सोलह फीट चौड़ी थी; उसमें दो खिड़कियाँ और एक ध्वंस स्टोव था । उसका दो तिहाई स्थान पंक्ति बद्ध तख्तों के बिस्तरों से घिरा हुआ था । वे तख्ते ऐंठे हुए और तंग थे । द्वार की सीध में एक काली-सी मूर्ति थी । उसके सामने एक मोमबत्ती तथा सूखे फूलों का एक गुच्छा लगा हुआ था । बाँई तरफ काले पड़े हुए फर्श पर, जो कि द्वार के पीछे था, एक दुर्गन्धित टब था । निरीक्षण हो चुका था और स्त्रियाँ रात्रि

के लिए ताले में बन्द की जा चुकी थी।

इस कमरे मे रहने वालो की सख्या पन्द्रह थी जिसमे तीन बालक भी सम्मिलित थे।

अभी प्रकाश पर्याप्त था। केवल दो स्त्रियाँ ही लेट रही थी एक तपेदिक की मारी क्षीण स्त्री जो चोरी के अभियोग मे बन्दिनी, और एक पागल जिसे कि पारपत्र न होने के कारण बन्दी किया गया था। वह अधिकाश समय सोने ही बिताती थी। क्षीण स्त्री अभी सोई नही थी, किन्तु आँखे खोले लेटी थी, उसका लबादा उसके सिर के नीचे से मुड़ रहा था, वह थूकना नही चाहती थी इसलिए कफ को निगलने की चेष्टा कर रही थी। कफ उसके गले मे अटका हुआ था। अन्य स्त्रियों मे से कुछ ने, जिनमे से बहुतो ने मोटी, भूरी, हौलेंड की जनानी कुर्तियाँ पहिन रखी थी, कुछ नही पहिन रखा था, वे खिड़की पर खड़ी आँगन में खड़े कैदियों की ओर देख रही थीं। तीन स्त्रियाँ बैठी हुई कुछ सी रही थी। इनमें थी वही वृद्धा जिसने माशलोवा को सुबह विदा किया था। उसका नाम था कोरा-बिलियोवा जो एक लम्बी, शक्तिशालिनी, कठोर चेहरे की स्त्री थी तथा जिसकी भौंहे चढ़ी हुई, ठोडी दुहरी गड्ढेदार, बालो मे एक छोटा सफेद बालों का गुच्छा जो कि कनपटी पर भूरा हो गया था, और बालों से युक्त एक मस्सा उसके गाल पर था। उसका पति उसकी लडकी से फँस गया था अतः उसने अपने पति को कुल्हाड़े से मार डाला था तथा इसी अभियोग मे साइबेरिया में उसे सश्रम कारावास हुआ था। वह कोठरी की स्त्रियो की सरदार थी और उसने उनमें शराब बेचने का अपना हिसाब-किताब जमा लिया था। उसकी बगल मे एक अन्य स्त्री बैठी थी, जो एक मोटे कैनवास के बोरे को सी रही थी। यह एक रेलवे के चौकीदार की पत्नी थी। जब गाडी आ रही थी तब वह झण्डे लेकर नहीं निकली और परिणाम स्वरूप गाडियाँ आपस मे लड़ गईं इसलिए इसको तीन माह का कारावास किया गया था। वह ठिगनी थी और उसकी नाक चपटी तथा छोटी, आँखे काली और छोटी थी। वह बहुत बातून थी और उसके हृदय में दया थी। तीसरी सीने वाली स्त्री का नाम फेदोशिया था जोकि बहुत सुन्दर, सफेद और गुलाबी रंग वाली नव-युवती थी तथा उसके नेत्र बच्चों के समान प्रभापूर्ण और बाल लम्बे एवं सुन्दर थे। उसने बालों को अपने सिर के चारों ओर मोड कर काढ़ रखा था। उसका अपराध था कि उसने अपने पति को विष देने का प्रयास किया था। उसने विवाह के तुरन्त पश्चात् ही ऐसा कर डाला था (सोलह वर्ष की आयु में उसकी स्वीकृति

के बिना ही उसका विवाह कर दिया गया था)। किन्तु जमानत पर छूटने के पश्चात् आठ महीनों में उसने अपने पति से सन्धि ही नहीं कर ली तो उससे प्रेम भी करने लग गई थी। अतः अभियोग के दिनों में उनकी मन और आत्मा दोनों ही मिले हुए थे। यद्यपि उसके पति, श्वसुर और विशेषतया उसकी सास ने जो सबके सब उसे प्रेम करने लग गए थे, अपनी शक्तिभर सबकुछ किया। किन्तु वह मुक्त न हो सकी और उसे सार्टबेरिया में सश्रम कारावास का दण्ड हो गया। दयालु हृदया, प्रसन्नचित्ता सदा मुस्कुराने वाली फेदोसिया का तख्ते का बिस्तरा माशलोवा से अगला था और वह माशलोवा पर इतनी अनुरक्त हो गई थी कि हर समय उसकी सेवा में खड़ी रहती। अन्य दो स्त्रियाँ तख्तों के बिस्तरे पर ठाली बैठी थी। उनमें से एक चालीस वर्षीया पतले मुँह की स्त्री थी। कदाचित् पहिले कभी वह सुन्दर रही हो। वह अपने बच्चे को अपने दुर्बल श्वेत वक्ष से चिपटाए बैठी थी। उसका अपराध था कि उसके गाँव में से जब एक नए रंगरूट (किसानों के दृष्टिकोण से) को पुलिस अधिकारी पकड़ कर ले जा रहा था तब गाँव वालों ने उसे घेर लिया और रंगरूट को छुड़ा लिया उस समय उसने ही (लड़के की चाची ने) घोड़े की लगाम सबसे पहिले पकड़ी थी जिस पर कि रंगरूट बैठा हुआ था। दूसरी स्त्री जो कि ठाली बैठी थी दयालु, भूरे बालों वाली वृद्धा थी जिसकी कमर झुक चली थी। वह स्टोव के पीछे बिस्तरे पर बैठी आनन्द से हंसती हुई एक मोटे-ताजे चार वर्षीय बालक को पकड़ने का बहाना कर रही थी, जो कि उसके सामने बार-बार आगे-पीछे आ-जा रहा था। लड़के ने छोटी-सी कमीज पहिन रखी थी और उसके बाल कटे हुए थे। लड़का जब वृद्धा के पास से भाग कर निकल जाता तब उससे कहता --"लो ! पकड़ नहीं लिया !"

यह वृद्धा स्त्री और उसका लड़का लूट-पाट के अभियोग में बन्दी बनाया गया था। वृद्धा का बन्दी जीवन आनन्दपूर्ण था उसे कोई चिंता नहीं थी। यदि थी तो केवल अपने लड़के और विशेषतया अपने वृद्ध पति की। उसे भय था कि मेरे पति की बड़ी दुर्गति हो जाएगी; उसकी सुधि लेने वाला कोई नहीं रहेगा।

इन सात स्त्रियों के अतिरिक्त चार स्त्रियाँ एक खुली खिड़की की लोहे की छड़ों को पकड़े खड़ी थी। वे उन बन्दियों की ओर इङ्गित कर रही थीं तथा चीख रही थीं जो कि माशलोवा को कारागृह में आते समय मिले थे। बन्दी इस समय आँगन में आ-जा रहे थे। इनमें से एक स्त्री लम्बी और भारी थी उसका माँस लटका हुआ और बाल लाल थे तथा उसके मुरझाए पीले चेहरे और हाथों पर

पीले चकत्ते पड़े हुए थे। उसकी मोटी गर्दन खुले कॉलर मे से चमक रही थी। वह कर्कश मोटे भारी स्वर में चिल्लाई और फिर भद्दे ढङ्ग से हँस पड़ी। इसको चोरी के अपराध में कारावास मिला था। उसकी बगल में एक भद्दी, काली ठिगनी स्त्री खड़ी थी जो कि दस वर्ष के बालक से अधिक लम्बी नहीं थी। उसकी कमर मोटी तथा टाँगें बहुत छोटी थीं। उसका चेहरा फूला तथा लाल था, आँखें एक-दूसरे मे काफी अन्तर पर थीं और ओंठ उसके मोटे थे जिनमें से उसके लम्बे सफेद दाँत दिखलाई देते थे। सामने आँगन में जो हो रहा था उसे देखकर वह खिलखिला कर हँस पड़ी और लटो-पोट हो गई। उस पर चोरी और डाकेजनी का अभियोग चलाया जाना था। उसको साज-सज्जा का बड़ा चाव था इसलिए उसका उपनाम खोरोशावका* रख दिया गया था। उसके पीछे बहुत गंदी भूरी कुर्ती पहिने एक पतली-दुबली, दुख की मारी-सी स्त्री खड़ी थी जिस पर चोरी छिपाने का अभियोग था। यह स्त्री चुप खड़ी थी, किन्तु नीचे जो कुछ भी हो रहा था उसके अनुमोदन में प्रसन्न हो मुस्करा रही थी। इनके साथ एक ठिगनी मोटी, बड़ी आंखों वाली प्रिय दर्शन किसान स्त्री खड़ी थी। उसका एक पुत्र था जो कि वृद्धा के साथ खेल रहा था तथा एक कन्या थी जिसकी अवस्था सात वर्ष थी। इन दोनों को उसने अपने साथ कारागृह में इसलिए रखा था कि कोई ऐसा दूसरा व्यक्ति न था जिसके पास वह उन्हें छोड़ आती। उसको नियम के विरुद्ध मदिरा बेचने के अभियोग में बन्दी बनाया गया था। वह खिड़की से कुछ दूर खड़ी मोजा बुन रही थी और यद्यपि उसे अन्य बन्दियों की बात-चीतें सुनाई दे रहीं थी किन्तु वह अपनी आँखें बन्द कर, भौंहों को चढ़ाकर विरोध में अपना सिर हिला रही थी। किन्तु बालों को खोले छोटी कुर्ती पहिने उसकी सात वर्षीया लड़की लाल बालों वाली स्त्री का आँचल पकड़े खड़ी हुई नीली आँखों से आँगन की ओर देख रही थी और स्त्रियों तथा बन्दियों में गालियों के आदान-प्रदान को बड़े ध्यान से सुनती हुई धीरे-धीरे उनको दोहरा रही थी मानोकि वह उन्हें रट लेना चाहती हो। बारहवीं बन्दिनी एक छोटे पादरी की लड़की थी। उसको उन बातों में कोई रुचि नहीं थी। लड़की बहुत लम्बी तथा भव्य लगती थी। उसने अपने वर्णशंकर बच्चे को कुएँ में डुबा दिया था। वह गन्दी कुर्ती पहिने कमरे में नंगे पाँवों घूम रही थी। उसके सुन्दर बालों की मोटी तह खुल गई थी और बेढंगे पने से नीचे लटक आई थी। वह

---

*खोरोशावका रूपान्तर था खोरोशोव का, जिसका अर्थ होता है सुन्दर लगने वाला।

किसी की ओर देखे बिना कमरे की खाली जगह में इधर-से-उधर चहलकदमी कर रही थी तथा हर बार जब दीवाल के पास आ जाती तब एकदम से लौट पड़ती।

३१

जब पैडलॉक खड़का और माशलोवा को कोठरी में बन्द करने के लिए द्वार खुला तब सब ही उसकी ओर घूम पड़ी। और तो और छोटे पादरी की लड़की भी क्षणभर के लिए रुकी और उसने माशलोवा की ओर भौंहें चढ़ाकर देखा, किन्तु बिना कुछ शब्द कहे लम्बे डग भरती रही।

कोराब्लियोवा ने अपनी सुई भूरे बोरे में टाँक दी और चश्मे में से माशलोवा की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा।

"हे भगवान ! फिर वापिस आ गई ? और मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम मुक्त हो जाओगी। तो तुमको यह मिल ही गया ?" वह लगभग एक मनुष्य की सी आवाज में भद्दे मद स्वर में बोली।

उसने अपना चश्मा उतारा और काम को उठा कर बगल में तख्ते के बिस्तरे पर रख दिया।

"और यहाँ वृद्धा चाची और मै कह रही थी 'क्यों, अच्छा हो कि तुम्हें तुरन्त ही मुक्त कर दिया जाय। वे कहती है कि ऐसा भी होता है। बहुतों को तो रुपए भी ढेर सारे मिल जाते है। हरएक के भाग्य पर निर्भर है।'' गाने की-सी ध्वनि में चौकीदार की स्त्री ने कहना आरम्भ किया "और देखो हुआ क्या ? इसका अर्थ तो यह हुआ कि हमारी सभी धारणाएँ गलत निकलीं। भगवान् की इच्छा ही और थी।"वह अपने मीठे स्वर में कहती रही।

"क्या यह सम्भव है ? तुम्हें दण्ड दिया गया है ?" फेदोशिया ने माशलोवा की ओर हल्की नीली बच्चे जैसी आँखों से देखते हुए कोमल स्वर में पूछा और उसका सुन्दर श्री-युक्त मुखमण्डल श्री-हीन हो गया मानो कि वह रो पड़ेगी।

माशलोवा ने उत्तर नहीं दिया किन्तु अपने स्थान पर चली गई जो कि अन्तिम से पहिला था और जाकर कोराब्लियोवा के पास बैठ गई।

"तुम्हें कुछ खाने को मिला ?" थोड़ा उठकर फेदोशिया ने माशलोवा के पास आते हुए पूछा ।

माशलोवा ने कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु रौलों को चारपाई पर रख उसने अपना धूल-धूसरित लबादा उतार कर सिर के काले घुँघराले बालों से रुमाल खोल दिया ।

वृद्धा, जो बच्चे के साथ खेल रही थी अब माशलोवा के सम्मुख खड़ी हो गई । दुख से सिर हिलाते हुए उसने 'त्त्' जैसी जबान से आवाज की ।

लड़का भी उसके साथ चला आया और अपने ऊपरी होंठ को बाहर निकालते हुए माशलोवा द्वारा लाई हुई रौलों की ओर आँखें फाड़ कर देखने लगा । आज दिन भर अपने साथ हुए व्यवहार के पश्चात् माशलोवा ने उसने सबके मुख पर सहानुभूति देखी तो उसके ओंठ काँप उठे और उसे लगा कि मैं रो पड़ूंगी किन्तु वृद्धा और उस बच्चे के आने से पूर्व ही वह अपने अश्रुओं को रोकने में सफल हो गई । जब उसने वृद्धा की दया एवं सहानुभूति पूर्ण वाणी सुनी और बच्चे की गम्भीर दृष्टि देखी, जो कि रौल से हटकर उस पर आ जमी थी, तो उससे और अधिक सहन न हो सका, उसका चेहरा काँप उठा तथा अश्रु बह निकले ।

"क्या मैंने तुमसे पहिले ही नहीं कहा था कि एक ठीक-सा एडवोकेट कर लो ?" कोराबिलयोवा बोली—"हुआ क्या ? निर्वासन ?"

माशलोवा उसका उत्तर न दे सकी किन्तु रौल के अन्दर से उसने एक सिगरेट की डिब्बी निकाली । जिस पर गुलाबी गालों, ऊँचे कढ़े हुए बालों वाली और नीची कटावदार पोशाक पहिने एक महिला का चित्र बना था । वह डिब्बी उसने कोराबिलयोवा को दी । कोराबिलयोवा ने उसे देखा और सिर हिलाया, विशेषतया इसलिए कि वह नहीं चाहती थी कि माशलोवा ऐसी खराब वस्तुओं पर धन व्यय करे । किन्तु फिर भी उसने एक सिगरेट निकाली, लैम्प से जलाई, एक कश खींचा और माशलोवा को दे दी । रोते हुए भी माशलोवा ने तम्बाकू के धुँए का ललचाते हुए कश खींचा ।

"दासी वृत्ति का दण्ड ।" धुँए को बाहर फेंकते हुए वह सिसकती हुई बोली ।

"क्या इन दुष्ट आत्मघातियों को भगवान् से डर नहीं लगता ?" कोराबिलियोवा गुनगुनाई "व्यर्थ में लड़की को दण्ड दे डाला ।"

उसी क्षण खिड़की पर खड़ी स्त्रियों का जोर का ठहाका सुनाई दिया। छोटी लडकी भी हँसी और उसकी —हँसी की पतली आवाज दूसरों के ठहाके मे विलीन हो गई। बाहर किसी बन्दी ने न-जाने ऐसा क्या काम कर दिया था जिससे दर्शकों पर यह प्रभाव हुआ।

"लो! देखो तो इस सिर घुटे कुत्ते को, यह कर क्या रहा है!" लाल बालों वाली स्त्री ने कहा, उसका समूचा शरीर हँसी से बेतरह काँप रहा था। और जाली पर झुकी हुई वह निरर्थक गन्दे शब्द बकने लगी।

"उफ! देखो तो मोटी के भयपूर्ण कडाके के शब्दों को। यह हँस क्यों रही है?" कोराबिलियोवा ने कहा और फिर माशलोवा की तरफ मुडकर बोली, कितने वर्ष का?"

"चार!" माशलोवा ने उत्तर दिया और उसके गालों पर अश्रु बह निकले और उनमें से एक बूँद सिगरेट पर भी गिरी तो उसने क्रोध में सिगरेट मोड कर फेंक दी और फिर दूसरी निकाल ली।

यद्यपि चौकीदार की पत्नी सिगरेट नहीं पीती थी फिर भी उसने माशलोवा की फेंकी हुई सिगरेट उठा ली और उसे सीधी करते हुए लगातार बातें करती रही।

"तो यह सच है।" वह बोली—"सचाई कुत्तों को सौंप दी गई है। वे अपनी मर्जी से चाहे जो करते है और यहाँ हम सब सोच रही थीं कि तुम छूट जाओगी। कोराबिलियोवा कहती थी तुम्हें मुक्ति मिलेगी। मैं कहती थी—"नहीं प्रिये, मेरा हृदय कहता है कि वे उसे अवश्य दण्ड देंगे।' और हुआ भी वही। वह अपनी बात से स्वयं ही प्रसन्न हो तो हुई कहती रही।

खिड़की के पास खडी हुई स्त्रियाँ माशलोवा के पास चली आईं क्योंकि उनका मनोरञ्जन करने वाले कैदी अब चले गए थे। सबसे पहिले नियम विरुद्ध मदिरा बेचने के अपराध में बन्द की गई औरत आई।

"इतना कठोर दण्ड क्यों?" उस स्त्री ने माशलोवा के पास बैठ कर जल्दी-जल्दी बुनाई करते हुए पूछा।

"इतना कठोर क्यों? चूँकि पैसा पास नही था इसलिए। पास में पैसा होता अच्छा वकील कर लिया होता। वह सब चाल बाजियाँ जानता होता और उसने तुम्हें मुक्त करा लिया होता, कोई भय नहीं होता।" कोराबिलियोवा बोली,

"हाँ एक है। क्या नाम है उसका वह लम्बी नाक और बालो वाला। वह तुम्हें खाई से साफ खींच लेता, निश्चय ही। आह, काश कहीं हमने उसे किया होता!"

"सच बात तो यह है।" खोरोशावका ने उनके पास बैठते हुए धीमे से कहा—"अरे! वह तो एक हजार रूबल लिए बिना तुम्हारी तरफ थूकेगा भी नहीं।"

"लगता है कि तुम्हारी जन्म की ग्रह खराब है।" लूटमार के अभियोग में बन्दिनी वृद्धा ने कहा—"बस यही सोचो, कि लड़के की स्त्री को लुभा लो, लड़के को जेल में सड़ने के लिए डाल दो और वृद्धावस्था में मुझे भी।" वह अपनी कहानी सौंवी बार दोहराने लगी "यह भिखमंगों का दल नहीं तो कारागृह है ही। हाँ, भिखमंगों का दल और कारागृह निमंत्रण की प्रतीक्षा नहीं करते।"

"आह! लगता है कि प्रत्येक के साथ ऐसा ही व्यवहार होना है।" स्प्रिट बेचने वाली ने कहा; और अपनी छोटी लड़की के सिर की ओर देखते हुए उसने बुनने का सामान एक ओर रख दिया। बच्ची को अपने घुटनों के पास खींचकर अपनी निपुण उङ्गलियों से उसके सिर को टटोलती हुई वह बोली—"'तुम स्प्रिट क्यों बेचती हो?' उन्होंने मुझसे पूछा। 'क्यों?—तो बच्चों को खिलाती क्या?'

इन शब्दों को सुनते ही माशलोवा की मदिरा पीने की इच्छा जागृत होगई।

"थोड़ी-सी वोदका मिल जाती तो अच्छा था।" उसने अपनी बाहों की आस्तीन से आँसू पोंछते हुए कोराब्लियोवा से कहा।

"अच्छा लाओ पैसे निकालो।" कोराब्लियोवा बोली।

३२

माशलोवा ने रौल में छिपाए हुए रुपए निकाले और कूपन कोराविलियोवा को दे दिए। कोराबिलियोवा यद्यपि पढ़ना नहीं जानती थी किन्तु फिर भी खोरोशावका की बात पर विश्वास करते हुए उसने कूपन ग्रहण कर लिए। वह सब जानती थी और उसने बतलाया था कि कूपन की कीमत दो रूबल पचास कोपेक थी। कोराबिलियोवा ने वेंटीलेटर पर वोदका का एक छोटा-सा फ्लास्क छिपा रखा था वह कूद कर वहीं चढ़ गई। यह देखते ही अन्य स्त्रियाँ, जिनका स्थान दूर

था, वहाँ से हट गई । इस बीच माशलोवा अपने लबादे और रूमाल की धूल झाड़ कर चारपाई पर बैठ गई और एक रौल खाने लगी ।

"मैंने तुम्हारी चाय बचा रखी है ।" फैदोशिया ने एक आलमारी से एक मग कम्बल में लिपटा टीन का टी पॉट उतारते हुए कहा—"किन्तु मुझे भय है कि कहीं यह बिल्कुल ठंडी न हो गई हो ।"

चाय बिल्कुल ठंडी हो चुकी थी और उसमें चाय से अधिक टीन का स्वाद आ गया था फिर भी माशलोवा ने मग भर लिया, और रौल के साथ पीने लगी ।

"फिनास्का, यह लो ।" उसने रौल में से एक टुकड़ा तोड़ कर उस बच्चे को देते हुए कहा जो खड़ा हुआ उसका मुँह देख रहा था । इसी बीच कोरा-बिलियोवा ने वोदका का फ्लास्क और एक मग माशलोवा को दिया । माशलोवा ने उसमें से थोड़ी-सी उसे और थोड़ी-सी खोरोशावका को दी । कारा की इस कोठरी में यह बन्दी शानियर समझे जाते थे क्योंकि इनके पास धन था और ये उसमें से दूसरों को भी हिस्सा देते थे ।

कुछ ही मिनटों में माशलोवा उत्फुल्ल हो उठी और कोर्ट की घटनाओं का उत्साह से वर्णन करने लगी । वह पब्लिक प्रोसीक्यूटर का मजाक बनाने लगी और जिन बातों ने उसे चकित कर दिया उन्हें सुनाने लगी कि किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ने मेरा पीछा किया था । कोर्ट में वे सब मेरी तरफ देखते, वह बोली, और जब मैं बन्दियों के प्रकोष्ठ में बैठी थी तब सब उसी में आते-जाते रहे ।

"और तो और एक रक्षक बोला 'जो भी यहाँ आते हैं तुम्हें ही देखने आते हैं ।' 'फलाँ कागज कहाँ है ?' या और कुछ; किन्तु मैं देखती कि वह कागज लेने नहीं मुझे आँखों ही आँखों में निगलने आता था ।" उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"पेशेवर कलाकार ।"

"हाँ ऐसा ही है ।" चौकीदार की पत्नी मधुर स्वर में बोली—"ऐसे लोग शक्कर के पीछे मक्खी की भाँति पड़े रहते हैं । इस श्रेणी के लोग भूखा रहना पसन्द करेंगे । इन्हें सब कुछ चलेगा किन्तु इसके बिना नहीं ।"

"और यहाँ भी ।" माशलोवा ने टोका—"वही बात हुई । मैं लौट कर आई ही थी कि रेलवे से एक जत्था आया । उन्होंने मुझे इतना तंग किया कि मेरी समझ में ही नहीं आया कि उनसे कैसे छुटकारा पाऊँ । भगवान भला करें उस इन्सपैक्टर का कि उसने उन्हें भगा दिया । एक तो बहुत ही दुष्ट था—मैं बड़ो

कठिनाई से बच सकी ।"

"वह कैसा था ?" खोरोशावका ने पूछा ।

"काला मुच्छैल ।"

"तो वही होगा ।"

"वही, कौन ?"

"अरे, शेगलोव; वही जो अभी इधर से गया था ।"

"शेगलोव कौन है ?"

"अरे, यह शेगलोव को नही जानती ! अरे, वह तो साइबेरिया से दो बार भाग चुका है । अब वह पकड़ लिया गया है किन्तु वह फिर भाग निकलेगा । वार्डर तक उससे डरते है ।" खोरोशावका ने कहा जो कि पुरुष बन्दियो मे पत्रो का आदान-प्रदान करती थी और जानती थी कि कारागार मे मत्रकुचक्र चलता है । "वह भाग जायगा, यह साफ है ।"

"अच्छा तो यदि वह भागता है तो वह हमें साथ नही ले जायगा ।" कोराबिलियोवा ने माशलोवा की तरफ मुडकर कहा— "किन्तु अच्छा हो कि तुम बतलाओ कि पिटीशन के बारे में एडवोकेट की क्या राय है । अभी भी समय है ।"

माशलोवा ने कहा कि मै इस बारे मे कुछ नही जानती ।

उसी समय लाल बालो वाली इस शानियर-दल में आई । वह अपने पतले दुबले हाथों के नाखूनों मे घने बालों को खुजा रही थी ।

"कातरीना ! इस विषय मे मैं सब बता दूँगी ।" वह बोली-- "सर्वप्रथम तुम्हें यह लिखना पडेगा कि तुम इस न्याय से सन्तुष्ट नही हो । उसके बाद प्रोसीक्योटर को एक नोटिस देना पड़ेगा ।"

"तुम्हे क्या चाहिए ?" कोराबिलियोवा ने क्रोध मे पूछा—"शराब की गन्ध सूँघने, क्यों ? हमें तुम्हारी बातों की जरूरत नहीं । हमें मालूम है कि क्या करना चाहिए, तुम्हारी राय की हमें कोई आवश्यकता नहीं ।"

"तुमसे कोई बात भी कर रहा है फिर दालभात में मूसलचन्द कौन ?"

"तुम्हें वोदका चाहिए; इसीलिए छटपटाती हुई तुम स्वयं यहाँ चली आई हो ।"

"अच्छा, थोड़ी-सी दे दो।" माशलोवा ने कहा। वह सदा हर एक को अपनी वस्तु में से हिस्सा देने को तैयार रहती।

"मैं दे दूंगी!"

"लाओ दो फिर।" कोराबिलियोवा की ओर बढ़ती हुई लाल बालो वाली स्त्री बोली--"शायद तुम समझती हो कि मैं तुम्हारी जैसी स्त्रियों से डरती हूँ?"

"हत्यारिनी!"

"कहने वाली स्वयं।"

"मूर्ख!"

"मैं? मूर्ख अपराधिनी! हत्यारिनी!" लाल बालो वाली स्त्री चिल्लाई।

"कहे देती हूँ, चली जा।" कोराबिलियोवा ने उग्रता से कहा किंतु लाल बालो वाली उसके और समीप आ गई और कोराबिलियोवा ने उसकी छाती में धक्का मारा। मानो कि लाल बालों वाली स्त्री इसी प्रतीक्षा में थी और फिर एकाएक आगे बढ़कर उसने एक हाथ से कोराबिलियोवा के बाल पकड़ कर दूसरे से उसके मुँह पर चाँटा मारना चाहा। कोराबिलियोवा ने उसका दूसरा हाथ पकड़ लिया और माशलोवा तथा खोरोशावका दोनों ने उसकी बाहे पकड़ लीं और उसे खींचकर अलग करना चाहा किन्तु उसने वृद्धा के बालों को एक क्षण भर के लिए केवल इसलिए छोड़ा कि वह उनका अलबेटा देकर फिर से मुट्ठी में पकड़ सके। कोराबिलियोवा सिर सहित एक ओर को झुकी हुई एक बाँह से उसके घूसों को रोक रही थी तथा दाँतो से लाल बालों वाली स्त्री के हाथ को पकड़ने की चेष्टा कर रही थी जब कि अन्य स्त्रियाँ उनके चारों तरफ खड़ी दोनों को अलग करने की चेष्टा करते हुए चीख चिल्ला रही थी। यहां तक कि क्षयरोग से ग्रस्ता स्त्री भी खाँसती हुई लड़ाई को खडी देख रही थी। उस कोलाहल के कारण स्त्री वार्डर और एक जेलर आ गया। लड़ने वाली स्त्रियाँ अलग कर दी गई और कोराबिलियोवा ने अपने सिर के टूटे बालो को लेकर तथा लाल बालों वाली स्त्री ने अपनी पीली छाती के ऊपर से फटी कुरती को पकड कर एक दूसरे के विरुद्ध जोर-जोर से शिकायत करना शुरू कर दिया।

"मैं जानती हूँ यह सब वोदका की कृपा है। थोड़ा ठहरो; मैं कल इन्सपेक्टर से कह दूंगी; वह तुम्हें पिलाएगा। क्या मुझे गंध नही आ सकती है? ध्यान रखो। यह सब फेंक-फाँक दो, नहीं तो तुम्हारे लिए बहुत बुरा होगा।"

वार्डर बोली "हमारे पास झगड़े निपटाने को समय नहीं। जाओ ! अपने स्थानों पर जाकर चुपचाप बैठ जाओ।"

किंतु शांति जल्दी ही स्थापित नहीं हुई। काफी देर तक स्त्रियाँ एक-दूसरे से झगड़ती और समझाती रहीं कि यह सब गलती किसकी थी। अन्त में वार्डर और जेलर कारा की कोठरी से चले गए। स्त्रियाँ शांत होने लगीं तथा बिस्तरों पर जाने लगीं और वृद्धा ने मूर्ति के पास जाकर प्रार्थना करनी प्रारम्भ की।

"दो जेली चिड़ियाँ मिल गई।" लाल बालों वाली स्त्री कमरे के दूसरे छोर से भद्दे मोटे स्वर में एक-एक शब्द के साथ बुरी गाली बकती रही।

"ध्यान रहे कि अब दुबारा नहीं बकोगी।" कोराबिलियोवा ने उत्तर दिया साथ ही गाली दी और फिर दोनों चुप हो गई।

"अगर मुझे रोका नहीं होता तो मैं तेरी गंदी आँखें बाहर निकाल ही डालती।" फिर से लाल बालों वाली ने कहना शुरू किया और उसी प्रकार का उत्तर उसे कोराबिलियोवा से भी मिला।

फिर थोड़ी देर की शांति के पश्चात पुनः अधिक गालियाँ प्रारम्भ हो गई। किंतु कालांतर के साथ-साथ चुप्पियों का समय बढ़ता रहा और अन्त में सब शांत हो गई। बाकी सब बिस्तरों में थीं और कुछेकों ने छींकना प्रारम्भ किया किंतु वृद्धा स्त्री, जो सदा ही देर तक प्रार्थना करती रहती, मूर्ति के सम्मुख झुकती रही और छोटे पादरी की लडकी ने, जो कि वार्डर के जाने पर उठ पड़ी थी, कमरे में इधर-से-उधर चहलक़दमी करना प्रारम्भ कर दिया।

माशलोवा सोचती रही कि अब मैं कठोर परिश्रम दंड प्राप्त अभियुक्ता हूँ और मुझे इसका दो बार स्मरण करा दिया गया है - एक बार तो बोचकोवा द्वारा और दूसरी बार लाल बालों वाली स्त्री द्वारा—और वह अपने विचार से सहमत नहीं हो सकी। कोराबिलियोवा ने जो उसकी बगल में लेटी हुई थी, अपने बिस्तरे पर करवट बदली।

"अब वहाँ," माशलोवा ने धीमे स्वर में कहा "किसने सोचा होगा ? देखो दूसरे क्या-क्या करते हैं और उन्हें कुछ नहीं होता साफ बच निकलते हैं।"

"बुरा मत मानो पुत्री ! लोग साइबेरिया में रह लेते हैं। और जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है तुम्हारा कुछ नहीं बिगडेगा।" कोराबिलियोवा ने उसे सांत्वना देने की चेष्टा करते हुए कहा।

"मैं जानती हूँ कि मेरा कुछ नही बिगड़ेगा; फिर भी है तो कठिनाई ही। मै इस प्रकार के जीवन को नहीं चाहती—मैं तो मदा आरामप्रद जीवन व्यतीत करती रही हूँ।"

"ओह, भगवान के प्रतिकूल कौन जा सकता है।" कोराबिलियोवा ने ठंडी साँस लेकर कहा "कोई नही पुत्री !"

"मै जानती हूँ दादी ! फिर भी कठिनाई तो है ही।"

थोड़ी देर वे दोनों चुप रही।

"क्या तुम्हे वह आवाज सुनाई देनी है ?" कोराबिलियोवा ने माशलोवा का ध्यान कमरे के दूसरे सिरे मे आती हुई विचित्र-सी ध्वनि की ओर आकर्षित करते हुए कहा।

यह ध्वनि लाल बालों वाली स्त्री के रोने का दबा स्वर था। वह रो इस लिए रही थी कि उसे गालियाँ की गालियाँ मिलीं फिर भी एक बूँद वोदका पीने को नहीं मिली जिसकी उसे अत्यन्त आवश्यकता थी। उसे याद आया कि जीवन भर उसने अपमान, गालियाँ, व्यंग एवं मार सहने की हैं। अपने हृदय को सान्त्वना देने को उसने फैक्टरी मजदूर फेदका मोलोदेकोव के प्रेम का पुर्नस्मरण किया। यह उसका प्रथम प्रेम था किंतु साथ ही उसे यह भी याद आया कि किस भाँति वह प्रेम समाप्त हो गया था। एक दिन इस मोलोदेन्कोव ने मदिरा में मत्त होकर उसके एक कोमल भाग पर मजाक में गंधक का तेजाब पोत दिया और जब वह दर्द से शरीर को ऐंठ रही थी तब उसने और उसके साथियों ने जोर का ठहाका लगाया। यह याद आते ही उसे अपने ऊपर दुख उत्पन्न हुआ और यह सोच कर कि किसी ने मेरे रोने की आवाज नहीं सुनी है बच्चों की भाँति हिल्कियाँ देकर वह रोने तथा अपने खारे आँसुओं को पीने लगी।

"मुझे इस पर दया आती है।" माशलोवा ने कहा।

"सचमुच हर एक को दुख होता है।" कोराबिलियोवा बोली, "किंतु उसे इस प्रकार हमारे मध्य हस्तक्षेप भी नहीं करना चाहिए।"

३१

अगले दिन सुबह नेखलूदोव उठा तो उसे प्रतीत हुआ कि उसे कुछ हुआ है।

और इससे पूर्व कि वह कुछ ऐसा सोचता कि उसे क्या हुआ ? उसे ज्ञात हुआ कि जो कुछ हुआ अच्छा है, महत्त्वपूर्ण है।

"कातूशा—अभियोग !" हाँ मुझे झूँठ बोलना बंद कर देना चाहिए और सारी सत्यता प्रगट कर देनी चाहिए।

उसी दिन प्रभात में मेरिया वेमिलियेव्ना, मार्शल की पत्नी का चिर प्रतीक्षित पत्र विचित्र ढंग से प्राप्त हुआ—उस पत्र की उसे नितांत आवश्यकता थी। मेरिया ने उसे स्वतन्त्रता दे दी और उसके विवाह के निर्णय पर प्रसन्नता व्यक्ति की।

"विवाह !" उसने व्यंग से दोहराया "मैं उस सबसे इस समय कितनी दूर हूँ।"

और उसने कल के निश्चयों का पुर्नस्मरण किया : मेरिया के पति से प्रत्येक बात कह देने, अपना हृदय पवित्र करने तथा उसे हर प्रकार से संतुष्टि देने की सन्निद्धता का। किन्तु आज यह सब इतना आसान नहीं दिखलाई दिया जितना कि कल। और फिर किसी व्यक्ति पर रहस्य अनावृत कर उसे अप्रसन्न क्यों किया जाय ? हाँ ! यदि वह आए और पूछे तो बतला देना चाहिए, किन्तु केवल इसीलिए जाना और कहना —नहीं ! नहीं ! यह सब अनावश्यक है।

मिस्सी से सारी सत्यता प्रकट कर देना भी आज उतना ही कठिन लगा। और कहने से तो ठेस पहुँचेगी ही। बहुत से सांसारिक कार्यों की भाँति, कुछ न कुछ तो गुप्त रखना ही होगा। वह केवल एक बात पर दृढ था : वहाँ न जाना और यदि कोई पूछ ही बैठे तो सत्य कह देना।

किन्तु कातूशा के सम्बन्ध में कुछ भी गुप्त नहीं रखा जा सकता था।

"मैं कारागृह में जाऊँगा और उससे सबकुछ कह दूँगा और उससे क्षमा-याचना करूँगा। यदि आवश्यकता हुई...हाँ, यदि आवश्यकता हुई तो मैं उससे विवाह भी कर लूँगा।" उसने सोचा।

इस विचार ने कि नैतिकता के आधार पर मैं सबकुछ त्यागने और उससे विवाह करने को सन्निद्ध हूँ, उसे फिर अपने प्रति अत्यन्त भावुक कर दिया।

बहुत दिनों पश्चात नव-प्रभात में उसे इतना उत्साह प्राप्त हुआ। जितनी दृढता वह अपने अंदर समझता था, उससे भी अधिक दृढ़ता से उसने अग्रफेना पेत्रोव्ना के अंदर आते ही उसे बतला दिया कि अब मुझे इस मकान की अथवा

आपकी सेवाओं की आवश्यकता नहीं।" यद्यपि इस बात को मुँह पर कोई नहीं लाता था किंतु सोचते सब ही थे कि उसने इतना बड़ा और खर्चीला मकान इसलिए ले रखा है कि उसे विवाह करना है। इसलिए मकान को छोड़ देने का अर्थ कोई विशेष ही हो सकता था। अग्रफेना पेत्रोव्ना ने आश्चर्य में उसकी ओर देखा।

"अग्रफेना पेत्रोव्ना। आपने जो मेरा पालन किया उसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ, किंतु अब मुझे इतने बड़े मकान और इतने नौकरों की आवश्यकता नहीं। यदि आप मेरी सहायता करना चाहती हैं तो कृपा कर वस्तुओं को वैसे ही रखवा दीजिए जैसे कि मेरी माताजी के जीवन काल में रखी रहती थीं और जब नताशा आएगी तब वह अपने आप सब व्यवस्थित कर लेगी।" नताशा नेखलूदोव की बहिन का नाम था।

अग्रफेना पेत्रोव्ना ने अपना सिर हिलाया। "वस्तुएँ रखवा दूँ? क्यों, उनकी फिर आवश्यकता जो पड़ेगी।" वह बोली।

"नहीं, अग्रफेना पेत्रोव्ना! अब नहीं! मैं आपको विश्वास दिलाता दूँ अब उनकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी।" नेखलूदोव ने उसके सिर हिलाने के अभिप्राय का उत्तर देते हुए कहा, "कृपा कर कोरने से भी कह दीजिए, मैं उसका दो माह का वेतन उसे दे दूँगा किंतु अब मुझे उसकी अधिक आवश्यकता नहीं।"

"यह दुख की बात है दिमीत्री इवानोविच कि आप ऐसा विचार कर रहे।" वह बोली, "यह भी मान लिया जाय कि आप विदेश जाएँगे तब भी लौटने पर तो आपको निवास स्थान की आवश्यकता होगी।"

"आपका ध्यान गलत है अग्रफेना पेत्रोवना। मैं विदेश नहीं जा रहा। यदि मैं कहीं जाऊँगा तो बिल्कुल ही भिन्न दिशा में।" एकाएक वह संकोच से नितांत रक्तिम हो गया। "हाँ मुझे बतला देना चाहिए।" उसने सोचा "कोई रहस्य नहीं; प्रत्येक को बतला देना चाहिए।"

"मेरे साथ कल एक अति विचित्र एवं महत्त्वपूर्ण घटना हुई है। आप मेरी बुआ मेरिया इवानोव्ना की कातूशा को तो जानती होंगी?"

"जी हाँ। मैंने उसे सिलाई करना सिखलाया था।"

"हाँ, तो कल कातूशा पर कोर्ट में अभियोग चलाया गया था और मैं पंच था।"

"हे भगवान् ! भाग्य की बात है।" अग्रफेना पेत्रोवना ने जोर से कहा, "अभियोग क्या था ?"

"हत्या। और यह सब मेरी करतूतें हैं।"

"यह तो विचित्र बात है; यह आपकी करतूतें कैसे हो सकती है ?" अग्रफेना पेत्रोव्ना की वृद्ध आँखों में चमक आ गई।

वह कातूशा वाले मामले को जानती थी।

"हाँ। मैं ही इसकी जड़ हूँ; और यही कारण है कि मेरी समस्त योजनाएँ बदल गईं।"

"इससे आप पर क्या प्रभाव पड़ता है ?" अग्रफेना पेत्रोव्ना ने अपनी मुस्कान छिपाते हुए कहा।

"प्रभाव यह कि क्योंकि उसे इस राह पर लाने वाला मैं हूँ इसलिए मुझे उसकी हर संभव सहायता करनी चाहिए।"

"यह तो आपकी महानता है कि आप ऐसा सोचते है; किंतु वास्तव मे देखा जाय तो आप अकेले ही इसके दोषी नही। यह प्रत्येक के साथ होता है और यदि व्यक्ति युक्तियुक्त है तो वह सब भूल जाता है और सब साफ हो जाता है।" उसने क्रोध से गंभीरता में कहा, "आप इसे अपने ही कारण क्यों समझते हैं ? कोई आवश्यकता नही। मैंने सुन लिया है कि वह मार्ग मे भ्रष्ट हो चुकी है। अच्छा यह किसका अपराध है ?"

"मेरा ! और इसीलिए मैं उसको सुधारना चाहता हूं।"

"सुधारना बड़ा कठिन है।"

"यह मेरा अपना मामला है। किंतु यदि आप अपने विषय में सोचती हैं तो मैं आपको बतला दूं कि जैसी मेरी माताजी ने अपनी इच्छा व्यक्त की—"

"मैं अपने बारे में नहीं सोच रही। आपकी माताजी ने मेरे साथ इतना उदारतापूर्ण व्यवहार किया है कि मैं कुछ नहीं चाहती। लिजान्का" (उसकी विवाहित भतीजी) "मुझे कितनी ही बार बुला चुकी हैं, यदि मेरी यहाँ आवश्यकता नहीं रहेगी तो मैं उसके पास चली जाऊंगी। बस दुख इसी बात का है कि आप उस विषय को इतनी गंभीरता से देख रहे हैं; ऐसा तो प्रत्येक के साथ होता है।"

"खैर ! मैं ऐसा नहीं समझता । और मैं आपसे पुनः प्रार्थना करता हूँ कि आप इस मकान को खाली करने और वस्तुओं को रखवाने में सहायता करेंगी । और कृपा कर मुझ पर क्रोधित न हों । मैं, आपने जो कुछ भी मेरे लिए किया है उसके प्रति तथा आपके प्रति बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ ।"

कितनी विचित्र बात है कि जिस क्षण नेखलूदोव ने यह अनुभव किया कि वास्तव में मैं ही बुरा और घृणास्पद हूँ तब ही से अन्य व्यक्ति उसे घृणास्पद नहीं लगने लगे; उल्टे अग्रफेना पेत्रोव्ना और कोरने के प्रति उसके हृदय में दया और आदर का भाव जागृत हो उठा ।

वह कोरने के पास भी जाकर स्वीकार कर लेता किंतु कोरने उसके प्रति इतना अधिक सम्मानित व्यवहार करता था कि वह उसके पास जाने का निश्चय ही न कर सका ।

लॉ कोर्ट जाते समय, उन्हीं सड़कों से निकलते, उन्हीं गाड़ीवान को देखते उसे आश्चर्य हुआ कि मैं कल से आज कितना बदल गया हूँ ।

कल उसे लग रहा था कि मिस्सी के साथ विवाह होगा-ही-होगा; किंतु वही विवाह अब नितांत असंभव लगने लगा । कल वह सोचता था कि मुझे चुनाव करना है और वह मुझसे विवाह कर निःसंदेह प्रसन्न होगी । आज उसे प्रतीत हुआ कि विवाह करना तो जहाँ की तहाँ है मैं तो उससे घनिष्ठता स्थापित करने के भी योग्य नहीं ।

"यदि उसे ज्ञात हो जाय कि मैं इतना पतित हूँ तो कोई कारण नहीं कि वह मेरा आदर भी करे । कल की ही तो बात है कि मैं मिस्सी में दोष देख रहा था कि वह उस व्यक्ति से चोंचलेबाजी करती है । किंतु नहीं ! यदि उसके साथ मेरा विवाह हो जाता है तो यह जानते हुए भी कि एक तो (माशलोवा) कारागृह में है और आज या कल एक-न-एक दिन साइबेरिया में निर्वासित कर दी जाएगी मैं प्रसन्नता तो दूर शांति भी नहीं प्राप्त कर सकूँगा । जिस स्त्री का जीवन मैंने नष्ट कर दिया वह तो दासी जीवन बिताने को बाध्य होकर साइबेरिया के मार्ग में होगी और मैं अपनी युवा पत्नी के साथ यहाँ निमन्त्रण एवं बधाइयों के ग्रहण करने में व्यस्त होऊँगा अथवा मार्शल (जिसको मैंने अत्यन्त नीचता से धोका दिया) के साथ बैठकों में स्थानीय विद्यालयों के निरीक्षण के पक्ष या विपक्ष की वोटें गिनता होऊँगा और उसकी पत्नी के पास गुप्त रीति से मिलने

जाऊँगा (घृणित विचार !); या मैं अपने चित्र को बनाता होऊँगा, जो कि कभी समाप्त नहीं होगा किंतु अब मेरे पास ऐसी बातों के लिए नष्ट करने को समय नहीं है। अब मैं यह कुछ भी नहीं करता।" नेखलूदोव अपनी अंतरात्मा में होने वाले परिवर्तन पर प्रसन्न हो विचार करता रहा।

"सबसे पहिले तो एडवोकेट से मिलकर मालूम करना चाहिए कि उसने क्या निर्णय किया, और तब...तब जाकर उसे, कल की अभियुक्ता को देखना चाहिए और उसे सबकुछ बतला देना चाहिए।"

जब उसने उस दृश्य की कल्पना की कि किस भांति मैं उससे मिलूँगा और सब बातें बतलाऊँगा, उसके प्रति अपने पाप को स्वीकार करूँगा, और कहूँगा कि मैं इसके प्रायश्चित के लिए यथाशक्ति हर संभव प्रयत्न करूँगा और तुमसे विवाह कर लूँगा, तब उसके हृदय को उल्लास की एक उत्कट भावना ने ग्रस्त कर लिया और उसके नेत्रों में अश्रु छलक आए।

३४

लॉ कोर्ट पहुँचने पर उसको कल वाला प्रवेशक बराम्दे में मिल गया और नेखलूदोव ने उससे पूछा कि दण्ड प्राप्त बंदी कहाँ रखे जाते हैं तथा उनसे मिलने की आज्ञा प्राप्त करने के लिए किसको प्रार्थना-पत्र दिया जाता है। प्रवेशक ने बतलाया कि दण्ड प्राप्त बंदी भिन्न स्थानों पर रखे जाते हैं और जबतक उनका अंतिम निर्णय नहीं हो जाता उनसे मिलने की आज्ञा देना या न देना प्रोक्योरर पर निर्भर करता है।

"बैठक के बाद मैं स्वयं आपके पास आऊँगा और प्रोक्योरर से मिला दूँगा। वह अभी यहाँ आया भी नहीं है। बैठक के बाद ! और अब कृपया अन्दर पधारिए, बैठक आरम्भ होने वाली है।"

नेखलूदोव ने प्रवेशक को (जिस पर उसे आज लगा कि अत्यन्त दया करनी चाहिए) उसकी सज्जनता पर धन्यवाद दिया और पंचों के कमरे में चला गया।

जब वह प्रकोष्ठ में पहुँचा तब अन्य पंचगण कोर्ट में जाने लगे थे।

व्यापारी ने थोड़ा-बहुत नाश्ता कर लिया था और वह आज भी कल की ही भाँति प्रसन्न था। उसने नेखलूदोव से पुराने मित्र की तरह हाथ मिलाया। तथा कल की भाँति नेखलूदोव के हृदय में आज प्योत्र गिरासीमोविच के व्यवहार एवं अट्टाहस से कोई अरुचि उत्पन्न नहीं हुई।

नेखलूदोव ने कल वाली बंदिनी के साथ अपने सम्बन्धों के विषय में प्रत्येक पंचों से कहना चाहा। उसने सोचा "मुझे अधिकार था और अभियोग चलते समय कल ही उठकर मुझे अपना अपराध सबके सम्मुख स्वीकार कर लेना चाहिए था।" किंतु जब वह पंचों के साथ कोर्ट में घुसा तथा पहिले दिन के से ही नियम देखे—"कोर्ट आ रही है।" पुनः यही घोषणा पुनः कसीदाकारी किए हुए कालरों वाले तीन व्यक्तियों का चबूतरे पर चढ़ना, उसी भाँति पंचों का उच्च पीठिका वाली कुर्सियों पर बैठना, वे ही सिपाही, वही चित्र, वही पादरी—तब नेखलूदोव को लगा कि यद्यपि यह कल ही करना चाहिए था किंतु फिर भी आज की भाँति कल भी वह इस व्यस्तता में बाधा पहुँचाने में असमर्थ ही रहता।

अभियोगों की तैयारियाँ ठीक कल की ही भाँति थीं। उनमें से केवल पंचों को शपथ दिलाने और उनके लिए प्रेसीडेन्ट के भाषण का कार्यक्रम ही निकाल दिया गया था।

आज कोर्ट के सम्मुख रात में सेंध मारकर चोरी करने का अभियोग था। नंगी तलवार लिए दो सिपाहियों से घिरा हुआ अभियुक्त बीस वर्ष का एक पतला-दुबला लड़का था। उसने भूरे रङ्ग का लबादा पहिन रखा था तथा उसका चेहरा खून की कमी से पीला और भूरा पड़ा हुआ था। बंदियों के कटघरे में वह अकेला ही बैठा था तथा कोर्ट में प्रत्येक आने-जाने वाले की ओर नीची दृष्टि से देख रहा था। लड़के पर अभियोग था कि उसने अपने एक साथी के साथ एक शेड का ताला तोड़कर कुछ पुरानी चटाइयाँ चुराईं थीं जिनका कि मूल्य तीन रूबल सड़सठ कोपेक था। अभियोग के अनुसार, एक पुलिसमैन ने इस लड़के को अपने साथी के साथ जाते हुए पकड़ा। साथी अपने कंधों पर चटाइयाँ लादे ले जा रहा था। इन दोनों ने तुरंत ही अपना अपराध स्वीकार कर लिया और बंद कर दिए गए। लड़के का साथी लुहार था तथा कारागृह में ही उसकी मृत्यु हो गई अतः लड़के पर ही अभियोग चलाया जा रहा था। पक्के प्रमाण के रूप में पुरानी चटाइयाँ मेज पर रखी थीं।

साक्षी की वस्तुएं, प्रमाण, साक्षियां, शपथें, प्रश्न, विशेषज्ञ और तर्क-वितर्क सब कल की ही भाँति आज भी हुए। प्रेसीडेन्ट, प्रोसीक्यूटर, एडवोकेट, द्वारा उसमें किए गए प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में पुलिसमैन (साक्षियों में एक) बिल्कुल वैसे ही "ऐसा ही" अथवा "कह नहीं सकता" शब्द निकलवा दिए। यद्यपि नियंत्रण की मशीन ने इस गवाह को बिल्कुल मूर्ख और मशीन के पुर्जे की भाँति बना दिया था फिर भी स्पष्ट था कि वह इस बंदी की गिरफ्तारी के विषय में कुछ कहना-सुनना नहीं चाहता था।

दूसरा साक्षी था एक वृद्ध गृहस्वामी जोकि चटाइयों का मालिक था और था प्रत्यक्ष रूप से क्रोधी। जब उससे पूछा गया कि चटाइयाँ तुम्हारी है तो उसने अनिच्छा से स्वीकृति दी। पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने उससे पूछा "तुम इन चटाइयों का क्या करोगे और तुम्हें इनसे क्या लाभ है।" वह क्रोधित होकर बोला, शैतान ले जाय इन चटाइयों को; मुझे इनकी बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं। यदि मुझे मालूम होता कि इतना झंझट होगा तो मैं उन्हें कभी खोजने नहीं जाता और बजाय उन्हें खोजने के एक या दो दस रूबल के नोट इसलिए दे देता कि मुझे यहाँ घसीटा न जाय और ऐसे प्रश्नों से जलील न किया जाय।" लगभग पाँच रूबल तो मेरे गाड़ियों के किराए में ही खर्च हो गए। इसके अतिरिक्त मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मुझे आँत उतरने और गठिया का रोग है।"

यह था जो गवाहों ने कहा। अभियुक्त ने सब स्वयंमेव स्वीकार कर लिया और मूर्खता से चारों ओर देखते हुए उसने जाल में फँसे पशु की भांति रुक-रुक कर सब घटना सुना दी।

कैसा साफ था किंतु पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने कल की भाँति कंधे उचकाकर बाल की खाल निकालते हुए ऐसे सूक्ष्म प्रश्न किए। जैसे किसी धूर्त्त अपराधी को जाल में फँसाने के लिए पूछे जाते है।

उसने अपने भाषण में सिद्ध किया कि चोरी निवास-स्थान में की गई और एक ताला तोड़ा गया; इसलिए उसने तर्क प्रस्तुत किया कि लड़के को कठोर दण्ड मिलना चाहिए।

कोर्ट द्वारा नियुक्त बचाव-पक्ष के एडवोकेट ने कहा कि यद्यपि अपराध अस्वीकार नहीं किया जा सकता किंतु चोरी निवास-स्थान में नहीं हुई और इसलिए कि समाज के लिए यह बंदी इतना भयावह नहीं है जितना कि प्रोसीक्यूटर ने सिद्ध किया है।

प्रेसीडेन्ट ने वही कल की सी निष्पक्षता एवं न्याय का ढोंग रचा और पंचो को वे ही बातें समझाईं तथा उन बातों पर ही बल दिया, जोकि उनको ज्ञात हो चुकी थीं तथा जिन्हें कि वे जाने बिना रह नही सकते थे। कल की ही भाँति मध्यांतर हुआ, लोगो ने सिगरेटें पी और प्रवेशक ने चिल्लाकर कहा, "कोर्ट आ रही है।" और फिर जागते रहने की चेष्टा करते हुए दोनों सिपाहियों ने बंदी का नङ्गी तलवार से पहरा दिया।

कार्यवाही से प्रतीत हुआ कि लड़के के पिता ने उसे तम्बाकू की दूकान पर काम सीखने को बैठा दिया था और वहाँ पर वह पाच वर्ष तक काम करता रहा। इस वर्ष एक हड़ताल के बाद दूकानदार ने उसे निकाल दिया और नौकरी छूट जाने पर वह नगर मे बेकार ही चक्कर काटता रहा। जो कुछ भी उसके पास पैसे बचे थे उनकी उसने शराब पी डाली। एक जगह उसे अपना जैसा ही एक और मिल गया जिसकी नौकरी बन्दी से पहिले ही छूट चुकी थी। वह पेशे से लुहार था और था शराबी भी। एक रात इन दोनो ने पी पाकर एक शेड का ताला तोड डाला और सबसे पहिले जो पल्ले पड़ा उसे उठा लिया। इन्होंने सारा अपराध स्वीकार कर लिया और वे कारागृह में डाल दिए गए। कारागृह मे लुहार तो अभियोग चलने की प्रतीक्षा मे ही संसार से चल बसा। लड़के पर अब एक भयानक प्राणी की भाँति, जिससे समाज की रक्षा की जानी चाहिए, अभियोग चलाया जा रहा था।

"उतना ही भयानक प्राणी जितनी कि कल की बन्दिनी थी।" नेखलूदोव ने अपने सम्मुख होने वाली कार्यवाही को सुनते हुए सोचा "भयानक ये लोग है; हम लोग नहीं जो इन्हे इनका न्याय विचार करते है? मैं ढोंगी हूँ धोकेबाज हूँ, हम सब ही ऐसे हैं। कितने ही लोग जानते है कि मैं कैसा हूं और जो कि इस पर भी मुझसे घृणा नहीं किन्तु आदर करते हैं। क्या वे सबके सब ढोंगी और धोकेबाज नहीं? किन्तु यदि यह भी मान लिया जाय कि यह लड़का इस कमरे में एकत्रित लोगों में समाज के लिए सबसे अधिक भयावह है तो भी क्या एक बार पकड़ लेने पर हमें उसके न्याय करने का अधिकार हो जाता है?

"किन्तु हम करते क्या है? हमारे पंजो में यह लड़का फँस गया तो यह जानते हुए भी कि इसके जैसे हजारों अभी स्वतन्त्र घूम रहे है हम इसके ऊपर शिकारी पक्षियों की तरह झपट पड़े। हम इसे कारागृह में यह जानते हुए भी बन्द कर रहे हैं कि वहाँ पर इसको बिल्कुल ही अकर्मण्य छोड दिया जायगा, या इसके

अन्य साथियों के साथ, जो इसकी ही भाँति दुर्बल और पतित है, व्यर्थ एवं अस्वास्थकर कार्य करने को बाध्य किया जायगा। इतना ही नहीं तो हम प्रजा के धन पर उन्हीं पतित लोगों के साथ मास्को से इर्कुतुस्क सरकारी कारागृह तक इसे निर्वासित करते हैं।

"और जिन परिस्थितियों में ऐसे लोग निर्माण होते हैं उन्हें समाप्त करने के लिए हम कोई पग नहीं उठाते। इतना ही नहीं तो हम ऐसी संस्थाओं को प्रोत्साहित भी करते हैं जो ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करती हैं। हर कोई जानता है कि कारखाने, दूकानें और फैक्टरियाँ, सरायें और मयखाने तथा वेश्यालय इन संस्थाओं की श्रेणी में आते हैं। इनको हम न केवल स्थायित्व ही प्रदान करते हैं किन्तु प्रोत्साहित भी करते हैं, इनके नियम व्यवस्थाएँ बनाते हैं और इन्हें अत्यन्त आवश्यक समझते हैं।

"इस भाँति हम एक को नहीं लाखों को पालते हैं और तब उनमें से एक को पकड़ कर हम समझते हैं कि हमने मोरचा मार लिया। अपराधी को एक बार मास्को से इर्कुतुस्क के सरकारी कारागृह में भेज कर हम कल्पना करते हैं कि हमने अपनी रक्षा कर ली और हमसे इससे अधिक कुछ आशा भी नहीं की जाती।" नेखलूदोव ने विशेष स्पष्टता से सोचा जबकि वह करनल की बगल में बैठा हुआ एडवोकेट, प्रोक्योरर और प्रेसीडेन्ट के गायन के मे स्वरों को सुन रहा था तथा उनकी स्वयं सन्तुष्ट मुद्राओं को देख रहा था। "किन्तु इस अभिनय में कितना विशाल एवं एकाग्र प्रयास करना पड़ता है।" विशाल कमरे के चारों ओर चित्र, लैम्पों, कुर्सियों, यूनीफार्मों, मोटी दीवालों और खिडकियों की ओर देखते हुए नेखलूदोव ने सोचा। उसे भवन की विशालता एवं उससे भी अधिक संस्था की विशालता का ध्यान था: अधिकारियों, लिपिकों, द्वारपालों और कार्यकर्ताओं की विशाल सैना जो केवल यहाँ ही नहीं तो समस्त रूस में फैली हुई है तथा एक ऐमे स्वाँग से वेतन प्राप्त कर रही है जिससे किसी का भला नहीं होता। "क्यों हो" उसने सोचा "यदि इस पर नष्ट की हुई शक्ति का सौवाँ भाग भी इन दुष्ट आचरण वाले व्यक्तियों की सहायता में व्यय कर दिया जाय और इन व्यक्तियों को भी हम अब अन्य लाखों शरीरों और हाथों के समान ही शान्ति और सुख में आवश्यक समझें?"

"जब गरीबी से तंग होकर ये लोग नगर में आए तब यदि किसी ने इस लड़के पर दया दिखलाई होती तो उतना ही पर्याप्त होता।" नेखलूदोव ने लड़के के मुरझाए और भयभीत चेहरे को देखकर सोचा "अथवा इसके बाद में भी जब इसके

उम्र में बड़े साथी फैक्टरी में बारह घण्टे काम करने के पश्चात् इसे मयखाने में ले जा रहे थे, कोई आता और इससे कहता 'वान्या मत जा, यह अच्छी बात नहीं।' तो यह नहीं जाता और कुमार्ग पर न पड़ता तथा तब यह अपराध भी न कर पाता।"

"किन्तु नहीं; तब कोई दयालु व्यक्ति इस अपरेन्टिस के पास नहीं आया जब यह एक साधारण पशु की भाँति नगर में रहता था और बालों को छोटा रखता, ताकि जूँ न हो जाँय तथा मजदूरों के सन्देश लिए इधर-से-उधर दौड़ता रहता था। इसके विपरीत जो कुछ भी इसने अपने से बड़े मजदूरों और साथियों से सुना और देखा वह यह था कि जो भी व्यक्ति ठगता है, मदिरा पीता है, झूँठी कसमें खाता है, दूसरों को भूसे के समान अलग कर देता है, जो हीन चरित्र व्यतीत करता है, वही बढ़िया है।

"बीमार, अस्वस्थकर परिश्रम मदिरा और भ्रष्ट जीवन से बिगड़ा हुआ शरीर-नगर में बिना किसी ध्येय के घूमता हुआ, मानो कि वह स्वप्निल अवस्था में बन्धन मुक्त हो, वह किसी शेड में घुस जाता है और उन पुरानी चटाइयों को ले लेता है जिनकी किसी को आवश्यकता नहीं; और यहाँ हम शिक्षित एवं धनवान पुरुष बजाय यह विचार करने के कि उन कारणों को कैसे नष्ट किया जाय, जिन्होंने इस लड़के को वर्तमान अवस्था में ला पटका है, विचार करते हैं कि इसे दण्ड देकर ही मामला सुधर गया!"

"भयानक! शायद ही कोई जान सकता है कि यहाँ अधिक क्या है, निर्दयता या मूर्खता। लगता है कि ये दोनों ही अपनी चरम सीमा पर हैं।"

यह विचार करते समय नेखलूदोव को कार्यवाही का कोई भी अंश सुनाई नहीं दे रहा था और उसके इस आत्मज्ञान ने उसे भय से जकड़ दिया। उसकी समझ में यह बात नहीं आई कि इससे पूर्व ही मैं यह सब क्यों नहीं देख सका और क्यों नहीं देख पाते थे अन्य व्यक्ति।

३५

बैठक के मध्यान्तर से नेखलूदोव उठकर बरामदे में इस विचार से गया कि अब मैं कोर्ट में वापिस नहीं लौटूँगा। इनकी इच्छा आए सो करते रहें मैं इस

अभद्र एवं विकट मूर्खता के व्यवहार में अब अधिक भाग नहीं ले सकता।

यह पूछकर कि प्रोक्योरर का कार्यालय कहाँ है वह सीधा उसके पास पहुँचा। द्वारपाल ने यह कहकर कि वह व्यस्त है उसे टालना चाहा किंतु उसकी ओर ध्यान न दे नेखलूदोव द्वार पर गया जहाँ उसे एक अधिकारी मिला। नेखलूदोव ने उससे कहा कि मै जूरी-पद पर हूँ और मुझे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण संदेश देना है इसलिए आप मुझे प्रोक्योरर से मिला दीजिए।

उसके पद और अच्छे वस्त्रों से उसे सहायता मिली। अधिकारी ने प्रोक्योरर को सूचना दे दी और नेखलूदोव को प्रवेश मिल गया। प्रोक्योरर खड़ा हुआ था जो इस बात का प्रमाण था कि नेखलूदोव के प्रवेश प्राप्त करने के हठ से वह क्रुद्ध था।

"आपको क्या कार्य है ?" प्रोक्योरर ने क्रुद्ध स्वर में पूछा।

"मैं जूरी-पद पर हूँ, मेरा नाम नेखलूदोव है और मुझे बंदिनी माशलोवा से मिलना नितांत आवश्यक है।" नेखलूदोव ने दृढ़ता से जल्दी में कहा। उसका मुख लज्जा से लाल हो गया और उसने अनुभव किया कि जो पग मैं उठा रहा हूँ उससे मेरे जीवन पर एक निर्णयात्मक प्रभाव पड़ेगा।

प्रोक्योरर काला और ठिगना व्यक्ति था, उसके बाल छोटे और भूरे थे, नेत्र चंचल और तेजस्वी तथा उसके झुके हुए निचले जबड़े पर मोटी कटी हुई दाढ़ी थी।

"माशलोवा ? हाँ सचमुच मुझे उसका स्मरण है। विष देने की अपराधनी।" प्रोक्योरर ने शांतिपूर्वक कहा, "किंतु आप उससे मिलना क्यों चाहते है ?" और तब मानों कि अपने प्रश्न को छिपाने के लिए वह बोला, "मैं यह जाने बिना कि आप मिलना क्यों चाहते हैं, मिलने की आज्ञा नहीं दे सकता।"

"मैं किसी विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य से मिलना चाहता हूँ।" नेखलूदाव ने लाल होते हुए कहा।

"जी ? प्रोक्योरर ने नेत्र उठाकर उसकी ओर ध्यान से देखते हुए पूछा, "उसके केस की सुनवाई हुई कि नही ?"

"उसकी सुनवाई कल हो चुकी और अन्याय से उसको चार वर्ष का सश्रम कारावास हो गया है। वह निर्दोष है।"

"जी ? यदि उसे कल ही दण्ड प्राप्त हुआ है" प्रोक्योरर ने माशलोवा

की निर्दोषिता के विषय में नेखलूदोव की बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और अपना कथन प्रारम्भ रक्खा "जब तक कि अन्तिम रूप से निर्णय उसे नहीं मिल जाता है वह अपने पहिले ही स्थान पर रहेगी। वहाँ निश्चित दिनों पर ही मिला जा सकता है, मैं आपको राय दूँगा कि आप वहीं पूछें।"

"किंतु मुझे उससे यथा सम्भव शीघ्र मिलना होगा।" नेखलूदोव बोला। यह अनुभव करते ही कि वह निर्णयात्मक क्षण पास आता जा रहा है उसके जबड़े काँप गए।

"क्यों, आपको क्यों मिलना है ?" प्रोक्योरर ने कुछ अधीरता से अपनी भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।

"क्योंकि वह निरपराध है और उसे दासीवृत्ति का सश्रम कारावास प्राप्त हुआ है और यह मेरा अपराध है।" नेखलूदोव ने कम्पित स्वर में यह अनुभव करते हुए कहा कि वह जो कुछ भी कह रहा है उसे कहना नहीं चाहिए।

"किस रूप में ?" प्रोक्यूरर ने पूछा।

"क्योंकि मैंने उसका सतीत्व भङ्ग किया और उसे वर्तमान स्थिति में उसे ला पटका है। यदि वह ऐसी न हो गई होती, जैसी कि मैंने बनने में सहायता की थी, तो उसे ऐसा दण्ड मिलने का अवसर ही न आता।"

"फिर वही बात ! मेरी समझ में अभी तक यह नहीं आया कि इस सबसे और मिलाई से क्या सम्बन्ध ?"

"यह कि मैं उसके साथ जाना और...उससे विवाह करना चाहता हूँ।" नेखलूदोव की वाणी काँप उठी और वह अपने व्यवहार से स्वयं आर्द्र हो गया। उसकी आँखों में अश्रु आ गए।

"सचमुच ! प्यारे !" प्रोक्योरर बोला "वास्तव में यह एक बिल्कुल ही विशेष केस है। जहाँ तक मुझे विश्वास है आप क्रासनोपरस्क रूरल एडमिन्स्ट्रेशन के सदस्य हैं ?" उसने पूछा। मानोंकि वह उस नेखलूदोव के विषय में हले ही सुन चुका हो, जो कि इस समय इतनी विचित्र घोषणा कर रहा था।

"क्षमा कीजिएगा किंतु जहाँ तक मैं समझता हूँ उससे तथा मेरी इस प्रार्थना से कोई सम्बन्ध नहीं है।" नेखलूदोव ने क्रोध से लाल होते हुए उत्तर दिया।

"निश्चित ही नहीं ।" प्रोक्योरर ने कठिनाई से दिखलाई देने वाली मुस्क्यान से तनिक भी लज्जित न होते हुए कहा "बस आपकी इच्छा ही इतनी प्रबल और असाधारण है ।"

"अच्छा; तो क्या मुझे आज्ञा-पत्र प्राप्त हो सकता है ?"

"आज्ञा-पत्र ? हाँ ! मैं आपके लिए तुरन्त ही प्रवेश मिल जाय ऐसी आज्ञा दे दूँगा । तशरीफ रखिए ।"

वह मेज के पास गया, बैठा और लिखने लगा । "तशरीफ रखिए ।"

नेखलूदोव खड़ा ही रहा ।

प्रवेश-पत्र बनाकर नेखलूदोव को देने के बाद प्रोक्योरर ने उसका ओर आश्चर्य से देखा ।

"मुझे यह भी कह देना चाहिए कि मैं सैशनों में अब भाग नहीं ले सकता ।"

"तब आपको कोर्ट के सम्मुख अपने अधिकार बतलाते हुए कारण प्रस्तुत करने होंगे जैसे कि वास्तव में आप जानते हैं ।"

"मेरा आधार यह है कि मैं समस्त न्याय करने को न केवल व्यर्थ ही समझता हूँ वरन् अनैतिक भी ।"

"जी ।" प्रोक्योरर ने उसे न दिखलाई देने वाली मुस्क्यान से कहा मानों कि वह दिखलाना चाहता हो कि इस प्रकार की घोषणा बहुत पहिले से उसे अपेक्षित थी और वह एक मजाक का विषय है । "हाँ ! किंतु आप इसे निश्चय ही समझ लेंगे कि मैं, प्रोक्योरर के रूप में, इस विषय में आपके साथ सहमत नहीं हूँ । इसलिए मैं आपको राय देता हूँ कि आप कोर्ट में प्रार्थना-पत्र दें जहाँ कि आपकी घोषणा पर विचार किया जाएगा और वे मालूम कर लेंगे कि यह साधार है या निराधार । यदि निराधार होगी को आप पर दण्ड हो जायगा । तब आप कोर्ट में प्रार्थना पत्र दें ।"

"मैंने अपनी घोषणा करदी और मुझे प्रार्थना-पत्र कहीं नहीं प्रस्तुत करना है ।" नेखलूदोव ने क्रोध में कहा ।

"अच्छा तब ! नमस्ते !" प्रोक्योरर ने सिर झुकाकर कहा । वह इस विचित्र दर्शक से अपना पिंड छुड़ाना चाहता था ।

"यहाँ आपके पास कौन था ?" नेखलूदोव के बाहर निकलते ही कोर्ट के एक सदस्य ने कमरे में प्रवेश करने पर पूछा।

"नेखलूदोव। आप जानते हैं, वही व्यक्ति जो क्रोनोपरस्क रूरल मीटिंगों में विचित्र वक्तव्य दिया करता था। कल्पना कीजिए ! वह पक्ष है, बन्दियों में एक स्त्री अथवा लड़की को दासी वृत्ति का सश्रम कारावास हुआ है, जिसके बारे में वह कहता है मैंने उसका सतीत्व नष्ट किया था और अब मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।"

"आप तो ऐसा नहीं कहना चाहते।"

"उसने मुझे यही बतलाया था। और अत्यन्त ही उत्तेजित अवस्था में।"

"आजकल के नवयुवकों में कोई-न-कोई विशेषता होती ही है।"

"ओह ! किंतु वह इतना छोटा नहीं है।"

"नहीं। किंतु आपका प्रसिद्ध इवाशेनकोव ही कितना परेशान करता था ! वह किसी-न-किसी को थकाते ही दिन बिता देता था। वह बातें करता और ऐसी जो कभी समाप्त ही नहीं होतीं।"

"ओह ऐसे लोगों को रोकना चाहिए अन्यथा वे सच्चे विघ्नोत्पादक हो जाते हैं।"

३६

प्रोक्योरर के पास से नेखलूदोव सीधा कारागृह में गया। वहाँ मशालोवा नाम की कोई स्त्री नहीं मिली और इन्सपैक्टर ने नेखलूदोव को समझाया कि वह शायद पुराने अस्थाई कारागार में होगी। इसीलिए नेखलूदोव वहाँ भी गया। दोनों कारागृहों के बीच अन्तर बहुत था और नेखलूदोव पुराने कारागार तक सांय से पहले न पहुँच सका। वह उस विशाल, क्षोभजनक भवन के द्वार पर जा रहा था कि संतरी ने उसे रोक दिया और घण्टी दी। घण्टी के उत्तर में एक जेलर आया। नेखलूदोव ने प्रवेश-पत्र दिखलाया किंतु जेलर ने बतलाया कि वह इन्स्पैक्टर की आज्ञा के बिना उसे अन्दर नहीं जाने देगा। नेखलूदोव इन्स्पैक्टर से मिलने गया।। सीढ़ियों पर चढ़ते समय उसने पियानो पर किसी गाने की आवाज सुनी।

जब एक आँख पर पट्टी बाँधे एक उदास नौकरानी ने द्वार खोला तो उसे लगा कि वह स्वर कमरे से निकल कर उसके कानों से टकरा रहा है। यह लिज्ट के महाकाव्य का एक टुकड़ा था जो हर किसी को उबा देता। गीत किसी सीमा तक बहुत सुन्दर चल रहा था। जब टुकड़ा समाप्त होता तो फिर वहीं से आरम्भ हो जाता। नेखलूदोव ने पट्टी बँधी नौकरानी से पूछा क्या इन्सपेक्टर साहब अन्दर हैं। उसने उत्तर दिया कि नहीं हैं।

"क्या जल्दी ही लौट आएँगे ?"

टुकड़ा फिर रुक गया, किंतु फिर प्रारम्भ हो गया और पुनः जोर-जोर से और उसी अंश तक सुन्दर रूप में दुहराया जाने लगा।

"मैं अभी पूँछ आती हूँ।" और नौकरानी चली गई।

टुकड़ा अपने शिखर पर पहुँचा ही था कि एकाएक उस सुन्दर अंश तक पहुँचे बिना रुक गया, टूट गया और उसके स्थान पर एक आवाज सुनाई दी।

"उससे कह दो कि वे नहीं हैं और आज नहीं आएँगे। वह बाहर दौरे पर हैं। न जाने क्यों लोग तङ्ग करने आ जाते है ?" द्वार के पीछे स्त्री का स्वर सुनाई दिया; और फिर टुकड़ा बजा और रुक गया और एक कुर्सी को पीछे खिसकाने की आवाज सुनाई दी। सीधी बात थी कि क्रोधित पियानो वाली की इच्छा थी कि असमय आए हुए तङ्ग करने वाले अतिथि को बुरा-भला कहा जाय।

"पापा अंदर नहीं हैं।" पीली बीमार लगने वाली लड़की ने, क्रोध में कहा उसके बाल मुड़े हुए थे तथा उसकी चुन्धी आँखों के पास के गड्ढे झलक रहे थे। वह गलियारे में बाहर आई; किंतु अच्छे कपड़े पहिने नवयुवक को देखकर कोमल पड़ गई।

"कृपया अंदर आ जाइए...आप क्या चाहते हैं ?"

"मैं कारागृह में एक बंदिनी से मिलना चाहता हूँ।"

"मेरा ख्याल है किसी राजनैतिक से ?"

"नहीं। राजनैतिक से नहीं। मेरे पास प्रोक्योरर का दिया हुआ प्रवेश-पत्र है।"

"खैर ! मैं नही जानती और पापा हैं नहीं; किंतु कृपया अंदर आइए।"

वह फिर बोली "या सहायक से मिल लीजिए। इस समय वह कार्यालय में हैं; आप वहाँ जा सकते हैं। आपका शुभ नाम ?"

"धन्यवाद।" नेखलूदोव ने उसके प्रश्न का उत्तर न देते हुए कहा और चला गया।

अभी द्वार बन्द भी नहीं हुआ कि फिर वही सुंदर ध्वनि सुनाई दी जो कि इस स्थान के और बीमार दिखलाई देने वाली लड़की के बिल्कुल अनुपयुक्त थी। और लड़की दृढ़ता से उसका अभ्यास किए जा रही थी। आँगन में नेखलूदोव को छोटी मूँछों वाला एक अधिकारी मिला। उससे उसने सहायक इन्सपैक्टर के विषय में पूछा। वह स्वयं ही सहायक था। उसने प्रवेश-पत्र देखा किन्तु बोला कि वह हिरासत के पारपत्र के आधार पर नहीं प्रवेश करने दे सकता, इसके अतिरिक्त अब देर बहुत हो चुकी है।

"कृपाकर कल फिर आने का कष्ट कीजिए। कल दस बजे सबके लिए प्रवेश खुला है। तब ही आइए और उस समय इन्सपैक्टर साहब भी घर पर होंगे। तब आपकी मिलाई या तो सर्वसाधारण के प्रकोष्ठ में हो सकती है अथवा यदि इन्स-पैक्टर साहब आज्ञा दे देते हैं तो कार्यालय में भी।"

इसलिए नेखलूदोव को उस दिन माशलोवा से मिलने में सफलता नहीं प्राप्त हो सकी तथा वह घर लौट आया। माशलोवा से मिलने के विचार पर उत्तेजित होने के कारण उसे सड़कों पर जाते समय लॉ कोर्ट का कोई विचार नहीं उठा किंतु प्रोक्योरर और सहायक इन्सपैक्टर के साथ हुए वार्तालाप उसकी स्मृति में सजग हो आए।

वह माशलोवा से मिलने की चेष्टा कर रहा था, और प्रोक्योरर को उसने बतला दिया था; और उससे मिलने के लिए दो कारागारों में जा चुका था इस बात से वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि वह बहुत देर में जाकर कहीं शान्त हो पाया। घर जाते ही उसने डायरी निकाली। डायरी बहुत दिनों से अछूती पड़ी थी। उस पर कुछ वाक्य लिखने के उपरान्त उसने निम्नांकित बातें लिखीं—

"दो वर्षों से मैंने अपनी डायरी में कुछ नहीं लिखा और सोचा था कि अब ऐसी मूर्खता कभी नहीं करूँगा। हाँ, यह मूर्खता नहीं है, किंतु अपनी आत्मा से बातें करना है, इस सत्य आत्म सत्ता से जो कि प्रत्येक मनुष्य में निवास करती है। इस आत्मसत्ता की सम्पूर्ण सुषुप्तावस्था में मेरे साथ ऐसा कोई भी नहीं था

जिससे कि मै बात कर सकू । लॉ कोर्ट में हुई एक असाधारण घटना ने २८ अप्रेल को जबकि मै पञ्च था मुझे झकझोर कर रख दिया । मैंने कातूशा को बन्दियों के कटघरे में देखा उसी को जिसका कि मैंने सतीत्व नष्ट किया था । हाँ, उसे बन्दियों के लबादे में देखा । मेरी एक विचित्र गल्ती और अपराध से उसे दासी वृत्ति में सश्रम कारावास का दण्ड प्राप्त हुआ । मैं अभी प्रोक्योरर के पास गया और कारागार में भी गया किंतु मुझे प्रवेश नहीं मिला । किंतु मैंने यथाशक्ति प्रयत्न कर उसे देखने— उसके सम्मुख अपने पाप को स्वीकार करने, तथा यहाँ तक कि विवाह द्वारा भी अपने पाप का प्रायश्चित करने का निश्चय कर लिया है । प्रभु मेरी सहायता करें । मेरी आत्मा को शान्ति है और मै आनन्द से पूर्ण हूँ ।"

३७

उस रात माशलोवा बहुत देर तक आँखें खोले जागती रही और उस द्वार की ओर घूरती हुई विचार करती रही जिसके सम्मुख कि पादरी की लड़की चहल कदमी कर रही थी ।

वह सोच रही थी कि शाखालिन में मुझे किसी अभियुक्त से विवाह करने पर वाध्य नहीं किया जा सकता, किंतु किसी-न-किसी तरह मैं कारागृह के किसी कर्मचारी, लिपिक, वार्डर या सहायक वार्डर से अपना हिसाब-किताब जमा लूंगी । "क्या ये लोग ऐसा नहीं करते ? मुझे बस दुर्बल नहीं होना चाहिए अन्यथा सब समाप्त हो जायगा ।"

उसे स्मरण आया कि मेरे एडवोकेट ने, प्रेसीडेन्ट और उन पुरुषों ने जो मुझे मिले थे तथा उन्होंने भी जो कि कोर्ट में काम से आए हुए थे मेरी ओर किस भाँति देखा था उसे अपनी सहेली बर्था के विषय में ध्यान आया जो कि उससे मिलने कोर्ट में आई थी । मेरी सहेली ने मुझे बतलाया था कि एक विद्यार्थी आया था, जिससे कि मैंने किताएवा के यहाँ "प्रेम" किया था उसने मेरे बारे में पूछा था और मेरे प्रति बहुत सहानुभूति व्यक्त की थी । उसे लाल बालों वाली स्त्री के साथ हुई लड़ाई का ध्यान आया और उसके प्रति दुख उत्पन्न हुआ । उसे रोटी वाले का ध्यान आया जिसने कि उसके लिए एक रौल अधिक भेजा था । उसके मस्तिष्क में अनेकों व्यक्ति घूमे किन्तु नेखलूदोव नहीं । उसने अपने बचपन के दिनों और

यौवन के समागम का तथा नेखलूदोव के प्रति प्रेम का कभी स्मरण नहीं किया था। उसके स्मरण से उसे बहुत टीस उठती थी। वे स्मृतियाँ उसकी आत्मा में कहीं अछूती पड़ी हुई थीं; वह उन्हें विस्मरण कर चुकी थी और उनका कभी ध्यान ही नहीं करती—स्वप्न में भी नहीं। आज कोर्ट में वह उसे जो नहीं पहिचान सकी तो उसका कारण केवल यह नहीं था कि जब उसने उसे अन्तिम बार देखा तो वह वर्दी में था, उसके दाढ़ी नहीं थी और मूंछ छोटी थीं तथा बाल छोटे घुँघराले एवं घने थे और अब वह बड़ा हो चुका था तथा उसके दाढ़ी आ चुकी थी किन्तु कारण यह था कि उसने उसके विषय में कभी विचार ही नहीं किया था। उसने अपनी स्मृति को उस भयानक काली रात्रि को ही दफना दिया था जब वह सेना से रेल में लौटा और अपनी बुआ के यहाँ बिना रुके ही चला गया था।

तब कातूशा को मालूम हो चुका था कि मैं गर्भवती हूँ। जबतक उसे उसके लौट कर आने की आशा थी। उसने अपने गर्भस्थित बालक को भार नहीं समझा था और अपने अन्दर उसकी कोमल एवं आकस्मिक गति-विधियों से बहुधा वह आश्चर्यचकित एवं द्रवित हो उठती थी। किन्तु उस रात्रि को सबकुछ बदल गया और बालक एक भार बन कर रह गया था।

नेखलूदोव की बुआओं को उसके आने की आशा थी और उन्होंने उसे लिखा था कि जाते समय वह आए और उनसे मिलकर जाए; किन्तु उसने तार दे दिया था कि पीतर्सबर्ग में निश्चित समय पर पहुँचने के कारण मैं नहीं आ सकता। जब कातूशा ने यह समाचार सुना तो उसने स्टेशन जाकर उससे मिलने का निश्चय किया। ट्रेन रात्रि के दो बजे वहाँ से होकर जाती थी। वृद्धा महिलाओं को सुलाकर कातूशा ने रसोइए की लड़की माश्का को अपने साथ चलने को मना लिया और अपने पुराने जूते पहिन, सिर पर शाल डाल, पोशाक को सिकोड़कर स्टेशन भागी।

वह शरद को अँधेरी रात्रि थी। वर्षा और आँधी थी। पानी की गरम भारी बूँदे पड़ रही थीं और वर्षा अब फिर बन्द हो गई थी। कातूशा को खेतों के पार मार्ग नहीं दिखलाई दे रहा था और जंगलों में घोर अँधेरा था इसलिए यद्यपि वह मार्ग से भलीभाँति परिचित थी फिर भी भूल कर छोटे स्टेशन पर जा पहुँची जहाँ गाड़ी केवल तीन मिनट ही रुकती थी। जैसी कि उसे आशा थी कि मैं दूसरी घण्टी से पूर्व ही पहुँच जाऊँगी, नहीं पहुँची। जब वह पहुँची तो दूसरी घण्टी बज

चुकी थी। प्लेटफार्म पर जल्दी करते हुए कातूशा ने प्रथम श्रेणी के डिब्बे की खिड़की पर उसे देख लिया। डिब्बे में तीव्र प्रकाश था। दो अधिकारी एक-दूसरे के आमने-सामने मखमल से ढकी सीटों पर बैठे ताश खेल रहे थे और सीटों के बीच रखी मेज पर बूँद-बूँद कर गलती हुई दो मोटी मोमबत्तियाँ जल रही थीं। चुस्त बिरजिस पहिने एक सीट के हत्थे पर पीठ के सहारे झुका हुआ वह किसी बात पर हँस रहा था। उसे पहिचानते ही उसने अपने सुन्न पड़े हाथ से खिड़की का कांच बजाया। किन्तु उसी क्षण अन्तिम घण्टी बज उठी और पीछे धक्का खाकर डिब्बे धीरे-धीरे एक दूसरे के पीछे आगे बढ़ दिए। ताश खेलने वालों में से एक व्यक्ति हाथों में ताश लिए उठा और उसने बाहर देखा। कातूशा ने फिर शीशा बजाया और खिड़की से अपना मुँह सटाया किन्तु गाडी बढ़ती रही और वह अन्दर देखती हुई गाड़ी के साथ चलती रही। अधिकारी ने खिड़की खोलनी चाही किन्तु खोल न सका। नेखलूदोव ने उसे एक ओर हटा दिया और स्वय खोलने लगा। गाड़ी तेज हो गई अतः उसे भी तेज चलना पड़ा। गाड़ी और भी तेज हो गई और खिड़की भी खुल गई। किन्तु तभी गार्ड ने कातूशा को धक्का दिया और अन्दर कूद गया। कातूशा प्लेटफार्म के गीले किनारे पर दौड़ती रही और जब वह अन्त तक पहुँच गई और सीढ़ी से भाग कर उतरने लगी तो बड़ी मुश्किल से गिरते-गिरते बची। वह अब भी गाड़ी के साथ ही भाग रही थी। यद्यपि प्रथम श्रेणी के डिब्बे आगे निकल चुके थे और द्वितीय श्रेणी के भी वेग से निकले जा रहे थे और अन्त में तृतीय श्रेणी के और भी अधिक वेगवान गति से; किन्तु वह दौड़ती रही, और जब लैम्प वाला अन्तिम डिब्बा भी निकल गया तब वह इंजन को पानी पिलाने वाले तालाब पर पहुँच चुकी थी और वहाँ वायु से बचने का कोई साधन नहीं था। वायु से उसका शॉल उड़ रहा था और उसका घाघरा उसके पाँवों से चिपक गया। शॉल उसके सिर से उड़ गया किन्तु वह दौड़ती रही।

"कातरीना मिरवायलोव्ना आपका शॉल उड़ गया!!" छोटी लड़की चिल्लाई जो उसके साथ ही भागने की चेष्टा कर रही थी।

कातूशा रुकी, सिर को पीछे की ओर झटका तथा उसे दोनों हाथों से पकड़ कर जोर से रो पड़ी।

"गया!" वह चिल्लाई।

"वह मखमल की हत्थेदार कुर्सी पर बैठा है, मजाक कर रहा है और

प्रकाशित डिब्बे में मदिरा-पान कर रहा है और मैं यहाँ कीचड़, अँधेरे, आँधी और पानी में बाहर खड़ी रो रही हूँ ।" उसने मन में सोचा और भूमि पर बैठ कर इतने जोर से रोने लगी कि छोटी लड़की ने भयभीत होकर उसकी भीगी बाँहों को पकड़ लिया ।

"घर चलो !" वह बोली ।

"कोई गाड़ी निकले तो उसके डिब्बे के नीचे फिर सब समाप्त ।" लड़की की ओर ध्यान दिए बिना कातूशा ने सोचा ।

अत्यधिक उत्तेजना के पश्चात जो शांति का क्षण आता है उसमें मनुष्य कुछ निश्चय कर ही लिया करता है । ठीक ऐसे ही समय में उसने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया । उसके गर्भ का वह बालक—नेखलूदोव का बालक यकायक हिला, उसने धक्का दिया, धीरे से फैला, और फिर उसने किसी पतली, कोमल एवं तीक्ष्ण वस्तु से धक्का दिया । क्षण मात्र पूर्व ही जिन बातों से उसे ठेस पहुँच रही थी जिसके कारण उसे जीवन दूभर लग रहा था, नेखलूदोव के प्रति उसकी समस्त कड़ुआहट, मृत्यु का आलिंगन करके भी, और स्वयं नष्ट हो जाने की लालसा, सब एकाएक अदृश्य हो गई । अब वह पहिले से अधिक शांत हो उठी, शॉल को सिर पर ओढ़कर घर चल दी ।

भीगी, कीचड़ से सनी और थकावट से चकनाचूर हो वह लौटी । बस उसी दिन से उसकी आत्मा में उथल-पुथल होने लगी और उस परिवर्तन ने उसे आज की स्थिति में ला पटका । उस भयानक रात्रि से उसने भलाई में विश्वास करना त्याग दिया । वह स्वयं भलाई में विश्वास करती थी और उसको विश्वास था कि अन्य भी इसमें विश्वास करते हैं; किन्तु उस रात्रि के पश्चात् उसकी धारणा बन गई कि कोई विश्वास नहीं करता है, तथा जो भी भगवान और उसके नियमों के विषय में कहा जाता है छलना है, विडम्बना है । नेखलूदोव ने जिसे कि मैं प्रेम करती थी और जो कि मुझसे प्रेम करता था—हाँ,वह यह जानती थी—मेरा उपभोग करने के पश्चात् मुझे ठुकरा दिया है तथा मेरे प्रेम का उसने दुरुपयोग किया है । फिर भी वह मेरे सभी परिचित व्यक्तियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है । अन्य तो उससे कहीं अधिक पतित हैं । इसके पश्चात् जो कुछ भी हुआ उससे पग-पग पर उसकी आस्था की पुष्टि ही हुई । नेखलूदोव की बुआओं ने—पवित्र वृद्धा महिलाओं ने जब कातूशा पूर्ववत् कार्य न कर सकी तब उसे निकाल बाहर किया और जिससे भी उसका सम्पर्क पड़ा, स्त्रियों से—उन्होंने उसे धनोपार्जन का साधन बनाया

और पुरुषों ने,नगर के वृद्ध पुलिस अधिकारी से लगाकर वार्डर तक उसको समझा विषयानन्द का ऐन्द्रिक पदार्थ। संसार में किसी को आनन्द के अतिरिक्त किसी वस्तु की चिन्ता ही नहीं है। उसकी इस आस्था को दृढ़ करने वाला था उसके स्वतन्त्र जीवन के दूसरे वर्ष में मिलने वाला वृद्ध लेखक; जिसके साथ उसने वह काल व्यतीत किया था। उसने उसे स्पष्ट बतला दिया था कि बस यही जीवन के आनंद को निर्माण करती है और मैं उसको ही कला एवं कवित्व समझता हूँ।

प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने लिए और अपने आनन्द के लिए जीता है तथा ईश्वर एव उसके न्याय की बातें छलना मात्र है। और यदि कभी माशलोवा के हृदय में शंका उत्पन्न होती तथा आश्चर्य होने लगता कि संसार में प्रत्येक वस्तु इतने गलत ढंग से क्यों व्यवस्थित की गई है कि सब एक दूसरे को ठेस और दुख पहुँचाते हैं, तब वह विचार करती कि इस पर न विचार करना ही श्रेयस्कर है; और यदि चित्त खिन्न हो जाता तो वह सिगरेट या मदिरा पी लेती. या फिर सबसे उत्तम किसी-न-किसी पुरुष से प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर लेती फिर सब स्वतः ठीक हो जाता।

३८

रविवार की सुबह पाँच बजे कारागृह के स्त्री विभाग के बरामदे मे सीटी सुनाई देते ही कोराब्लियोवा ने, जो पहिले ही जाग चुकी थी, माशलोवा को जगाया।

"हे भगवान! एक बन्दिनी!" माशलोवा ने वायु में, जो कि सुबह के समय अपार दुर्गन्धपूर्ण हो गई थी, अनिच्छा से साँस लेते हुए भयभीत हो विचारा। उसकी इच्छा हुई कि मैं सो जाऊँ और विस्मृति मे पुनः डूब जाऊँ किंतु स्वभावगत भय ने उसकी निद्रा पर विजय प्राप्त कर ली और चारों ओर देखती हुई वह पैरों को समेट कर बैठी हो गई। सब स्त्रियाँ जाग चुकी थी, केवल बडे बच्चे ही अभी तक सोए पड़े थे। स्प्रिट बेचने के अभियोग में बन्दिनी स्त्री बच्चों के नीचे से शॉल को बड़ी सावधानी से निकाल रही थी कि कहीं वे जाग न जाएँ। रंगरूट को बचाने वाली स्त्री सूखे चीथड़ों को, जो बच्चे के कस कर बाँधने के काम आते थे, लटका रही थी। बच्चा नीली आँखों वाली फेदोशिया की बाँहो मे

क्रोध में रो रहा था और फेदोशिया उसे कोमल स्वर में चुप करने की कोशिश कर रही थी। क्षयग्रस्ता स्त्री वक्ष को हाथों से दबाए खाँस रही थी। खाँसते-खाँसते उसके मुख पर रक्त दौड़ आया और उसने बड़े जोर की लगभग रोते हुए आह भरी। लाल बालों वाली मोटी स्त्री अपनी पीठ के सहारे घुटने सिकोड़े लेटी हुई प्रसन्न स्वर में जोर-जोर से अपना एक स्वप्न सुना रही थी। लूट मार के अभियोग में दण्ड प्राप्त वृद्धा मूर्ति के सम्मुख खड़ी हुई क्रॉस बनाती हुई सिर नचा रही थी और उन्हीं शब्दों को बार-बार दोहरा रही थी। छोटे पादरी की लड़की चारपाई पर बैठी हुई सामने की ओर निद्रालु एवं अलस नेत्रों से देख रही थी। खोरोशावका अपने काले, तैलयुक्त, मोटे बालों पर अँगुलियाँ फेर रही थी।

मार्ग से असावधान कदमों की ध्वनि आ रही थी और जाकिट तथा भूरे मोजे जो कि टखनो से नीचे तक थे, पहिने दो बंदियों को बन्द करने के लिए द्वार खुला। अत्यन्त उदास होकर उन्होने दुर्गंधित टब उठाया और उसे कारा की कोठरी से बाहर ले गए। स्त्रियाँ बराम्दे में लगे नलों पर धोने-धाने चली गईं। वहाँ लाल बालों वाली स्त्री का पुनः दूसरी कोठरी की किसी स्त्री से झगडा हो गया। फिर वे ही गालियाँ, चीखे चिल्लाहटें और शिकायतें प्रारंभ हो गईं।

"क्या तुम्हे एकांत कोठरी चाहिए ?" एक वृद्ध जेलर ने उसकी नङ्गी मोटी पीठ पर चाँटा माते हुए चिल्लाकर कहा। चाँटे की गूँज बरामदे में फैल गई। "अब मुझे ऐसी बात नहीं सुनाई दें।"

"आह ! बुड्ढा बड़ा खिलाड़ी है।" स्त्री ने उसके चाँटे को दुलार समझते हुए कहा।

"अच्छा फिर शीघ्रता करो; प्रार्थना के लिए तैयार हो जाओ।"

सहायकों के साथ इन्सपैक्टर के आने से पूर्व माशलोवा को कपड़े पहिनने और बाल काटने का समय न मिल सका।

"निरीक्षण के लिए बाहर आओ।" एक जेलर चिल्लाया।

दूसरी कोठरी की बन्दनियाँ निकल आईं और बराम्दे में दो पंक्तियों में खड़ी हो गईं। प्रत्येक स्त्री को अपने सामने वाली स्त्री के कधे पर हाथ रखना पड़ा तब उनकी गणना हुई।

निरीक्षण के पश्चात् स्त्री वार्डर बंदनियों को गिरजाघर ले चली। अन्य

कोठरियों की सब मिला-मिलाकर लगभग एक सौ स्त्रियों के मध्य में माशलोवा और फेदोशिया थीं। कुछ थोड़ी-सी स्त्रियों को छोड़कर जिन्होंने अपने रङ्गीन वस्त्र पहिन रखे थे सब स्त्रियाँ सफेद घाघरे और सफेद जाकिटें पहिने थीं तथा उनके सिरों पर सफेद रूमाल बँधे थे। रङ्गीन वस्त्रों वाली स्त्रियाँ अपने बच्चों को लिए अपने अपराधी पतियों के साथ साइबेरिया प्रस्थान करने आई थीं। सीढ़ियों का समस्त डण्डा जुलूस से भर रहा था। बातचीतों और बीच-बीच में हँसने की ध्वनियों में जूते पहिने पाँवों की आवाज एकाकार हो रही थी। उतरते हुए माशलोवा ने अपने शत्रु बोचकोवा को सामने देखा और उसके क्रुद्ध मुख की ओर फेदोशिया को इङ्गित किया। सीढ़ियों से उतरते ही स्त्रियों ने बातचीतें बन्द करदीं तथा क्रॉस बनाते और सिर झुकाते हुए निर्जन गिरिजाघर में घुसीं। चर्च सोने की पालिस से चमक रही थी। दाहिनी ओर उन्हे खड़ा होना था और एक दूसरे को धक्का देती तथा ढकेलती हुईं वे वहाँ जाकर एकत्रित हो गईं।

स्त्रियों के आने के पश्चात् भूरे लबादे पहिने वे पुरुष आए—जिन्हें कि दास-वृत्ति का सश्रम कारावास मिलना था, जो कि कारागार में अपना दण्ड भोग रहे थे, और जो कि अपने विभाग से निकाल दिए गए थे। वे सब जोर से खाँसते गिरिजाघर के मध्य में बाईं ओर अपने स्थान पर एकत्रित होने लगे।

गैलरी में ऊपर एक ओर वे व्यक्ति खड़े थे जिन्हें साइबेरिया में दासवृत्ति का दण्ड प्राप्त हुआ था, तथा जो कि गिरिजाघर में दूसरों से पूर्व ही लाए गए थे। उनमें से हरएक का सिर आधा घुटा हुआ था, और उनकी उपस्थिति का ज्ञान उनके पाँवों में पड़ी शृङ्खलाओं की खड़खड़ाहट से होता था। गैलरी के दूसरी ओर हिरासत में लिए गए बन्दी खड़े थे। न तो उनके शृङ्खलाएँ ही पड़ी थीं और न उनके सिर ही घुटे हुए थे।

कारागार की चर्च का पुनर्निर्माण एवं उद्धार एक धनवान व्यापारी ने कराया था—उसने भवन के निर्माण पर दसियों सहस्र रूबल व्यय कर दिए थे। चर्च सुनहरे तथा भूरे रङ्ग में चमक रही थी।

थोड़ी देर के लिए गिरिजाघर में शांति छा गई। वहाँ केवल खाँसने, नाक सुड़काने, बच्चों के रोने और यदाकदा शृङ्खलाओं की खड़खड़ाहट की ध्वनियाँ ही सुनाई देती थीं। किंतु अंत में मध्य में खड़े हुए बंदी हटे और वे एक-दूसरे को तबतक धक्का देते रहे जबतक कि गिरिजाघर के मध्य में उन्होंने एक मार्ग न बना

दिया, जिसमें होकर गया कारागृह-निरीक्षक सबके सामने गिरिजा के मध्य भाग में अपना स्थान ग्रहण करने के लिए ।

३९

प्रार्थना प्रारम्भ हुई ।

इसमें निम्न था । विचित्र एवं अत्यंत असुविधाजनक सुनहली खीनखाप के वस्त्रों को पहिने विभिन्न प्रार्थनाओं एवं नामों को दोहराते हुए, पादरी ने एक तश्तरी पर रोटी के टुकड़े काटे और फिर उन्हें मदिरा के एक पात्र में रख दिया । उसी बीच छोटे पादरी ने पहिले तो स्लावोनिक में प्रार्थनाएं पढ़ीं । प्रार्थनाएं स्वयं ही समझ में न आती थी और तिसपर उसने उन्हें बहुत शीघ्रता से पढकर और भी दुर्बोध कर दिया । फिर उसने अपराधियों से उन्हें गाते हुए बारी-बारी से दुहरवाया । प्रार्थनाओं में सम्राट् और उसके परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की गई थी । घुटने टेक कर लोगों ने वे प्रार्थनाएं कितनी ही बार दोहराईं अन्य प्रार्थनाओं से अलग और उनके साथ भी । इसके अतिरिक्त छोटे पादरी ने एपोसिल के सुकर्मों से कितनी ही पक्तियाँ, एक विचित्र तनी हुई आवाज में, पढ़कर सुनाईं जिसके कारण यह समझ में ही नहीं आ सका कि उसने क्या पढ़ा और फिर बड़े पादरी ने स्वयं संत मार्क गोस्पल का एक भाग बिल्कुल स्पष्ट स्वर में पढ़ा । उसमें बतलाया गया था कि किस प्रकार अपने पिता प्रभु की दाईं ओर बैठने के लिए स्वर्ग में जाने से पूर्व मृतकों में से ईशू उठा और पहले मेरी मेग्दाल को, जिसमें से उसने सात शैतानों को निकाला था, और फिर अपने ग्यारह शिष्यों को अपने दर्शन दिए और फिर किस भाँति प्रभु ने उन सब को इस बात की आज्ञा दी कि वे गोस्पल की शिक्षा समस्त संसार को दें । और घोषणा की कि जो व्यक्ति इसमें विश्वास नहीं लाएगा उसका नाश होगा और जो इसमें विश्वास करेगा, बपतिस्मा लेगा, बच जाएगा । और कि उसे शैतानों को निकाल कर व्यक्तियों को अपने हाथों नीरोग करना चाहिए, विचित्र बोलियों में बातें करनी चाहिए, सर्पों पर आधिकार करना चाहिए और यदि वह विष भी पीलेगा तो भी बच जाएगा और मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा ।

प्रार्थना का सत्व इस विश्वास में था कि पादरी द्वारा काटे और मदिरा

में डाले गए रोटी के टुकड़ों पर हाथ से विशेष ढङ्ग की गति-विधियाँ तथा विशेष प्रार्थनाओं के करने से वे टुकड़े भगवान के माँस और रक्त के रूप में परिवर्तित हो जाएँगे ।

सुनहरी कपड़े के लबादे से प्रतिबद्ध, जिसे कि वह पहिने हुए था, पादरी की गतिविधियाँ थीं—नियमित रूप से बाँहों को उठाना, उन्हें पकड़ना, घुटनों पर झुकना और मेज का तथा जो कुछ भी मेज पर रखा था उसका चुम्बन लेना। किंतु मुख्यतया थी एक वस्त्र के दो छोरों को पकड़ने, चाँदी की तश्तरी और सोने के प्याले पर उसे तालमय ढंग से मृदुलता से घुमाने की। यह विश्वास था कि रोटी और मदिरा, मांस एवं रक्त में इसी समय परिवर्तित होती हैं। अतः प्रार्थना का यह अङ्ग अत्यन्त ही गम्भीरता से किया जा रहा था।

"अब प्रभु की पुण्य भागा, अत्यधिक निर्मला और अत्यन्त पवित्रा माँ के लिए।" पादरी ने सुनहरी अलगाने वाली दीवाल के पीछे से चिल्ला कर कहा जो गिरिजाघर के उस भाग को शेष समस्त से विभक्त करती थी। और फिर सहगान आरम्भ हो गया। सहगान का भाव था कि कुमारी मेरी को सम्मानित करने का यह उचित कर्तव्य है। कुमारी मेरी ने अपने कौमार्य को नष्ट किए बिना ही ईसू को जन्म दिया इसलिए वह किसी भी देवदूत से कहीं अधिक सम्मानपात्री एवं किसी भी प्रकार के उच्चकोटि के दैवी पुरुष से कहीं अधिक यशपात्री हैं। इसके पश्चात रूपान्तर पूर्ण समझा गया और पादरी ने तश्तरी से वस्त्र हटा कर रोटी को चार टुकड़ों में विभक्त किया और पहिले उसे मदिरा में रखा फिर अपने मुँह में। यह समझा गया कि उसने प्रभु का थोड़ा-सा माँस खा लिया है और रक्त पी लिया है। तब पादरी ने एक पर्दा डाल दिया, अलगाव करने वाली दीवाल का मध्य द्वार खोला और हाथों में सोने का प्याला लेकर द्वार से बाहर उन व्यक्तियों को निमंत्रित करता हुआ आया जो कि ऐसा करना चाहते हैं और प्याले में रखे हुए भगवान के माँस और रक्त का प्रसाद चाहते हैं।

कुछ बच्चों ने अपनी इच्छाएँ व्यक्त कीं।

बच्चों का नाम पूछ कर पादरी ने मदिरा में तर रोटी का छोटा-सा टुकड़ा लिया और एक चम्मच से उनके गले में ठूँस दिया। यह उसने बारी-बारी से प्रत्येक बच्चे के साथ किया; और बच्चों का मुँह धोते समय छोटे पादरी ने प्रसन्न-ध्वनि में गाना प्रारम्भ किया कि बच्चे प्रभु का माँस खा रहे हैं और रक्त पी रहे हैं। इसके पश्चात् पादरी दीवाल के पीछे प्याला लेकर चला गया और वहाँ प्रभु के

माँस के बचे टुकडे खाकर तथा रक्त पीकर उसने अपनी मूंछों को सावधानी से चाटा तथा मुँह और प्याले को धोया। फिर वह शान से, पूर्ण प्रसन्नता में, दीवाल के पीछे से, काफ चमड़े के अपने जूतों के पतले तले को चरमराता हुआ बाहर निकला।

क्रिश्चियन प्रार्थना का मुख्य भाग समाप्त हो गया किन्तु पादरी ने अभागे बन्दियों को लाभ पहुँचाने की इच्छा से एक प्रार्थना और जोड़ दी। इसमें था गिलट की हथौड़े से बनी मूर्ति (काले हाथों और काले मुँह वाली) के पास जाकर एक दर्जन मोमबत्तियों को जलाना। इसका आशय था उसी प्रभु का प्रतिनिधित्व करना जिसके माँस को वह खा कर चुका था और वह एक विचित्र-सी गाने की गुनगुनाहट में गाने लगा :

"सबसे प्रिय ईशू, अपोसिल्स के सम्मान प्राप्त ईशू, हुतात्माओं के स्तुत्य, सर्वशक्तिमान अधिपति : मेरी रक्षा कर, मेरे रक्षक ईशू। सर्वाधिक सुन्दर ईशू उस पर दया कर जो तेरे पास आकर रोता है, रक्षक ईशू। प्रार्थनाओं पर प्रकट होने वाले ईशू अपने सब सन्तों, अपने सब पैगम्बरों की रक्षा कर और उन्हे स्वर्गिक आनन्द का पात्र समझ। मानव के प्रेमी ईशू।"

तब वह रुका, साँस ली, क्रॉस बनाया और भूमि पर झुका और प्रत्येक—इन्पैक्टर, वार्डर, बन्दीगण—सब ने वैसा ही किया और श्रृङ्खलाओं की खड़खड़ाहट का पहिले से अधिक क्रम बँध गया।

तब उसने प्रारम्भ किया : "देवदूतों के पिता, और शक्तियों के स्वामी, सर्वाधिक आश्चर्यजनक ईशू, देवदूतों की आशा, सर्वाधिक शक्तिमान ईशू, हमारे प्रपितामहों के मुक्तिप्रदायक। सर्वाधिक मधुर ईशू, कुलपतियों की प्रशंसा। सर्वाधिक कीर्तिवान ईशू, राजाओं की शक्ति। सर्वश्रेष्ठ ईशू, पैगम्बरों की पूर्णेच्छा। सर्वाधिक कौतूहलपूर्ण ईशू, हुतात्माओं की शक्ति सबसे अधिक विनम्र ईशू, महात्माओं के आनन्द। सर्वाधिक सदय ईशू, पादरियों को मधुरिमा। सर्वाधिक दानदाता ईशू, अनाहारों के संयम। सर्वाधिक मधुर ईशू, समुचितों के आनन्द। सबसे अधिक पवित्र, कुमारियों के सतीत्व। सबके सामने ईशू, पापियों की मुक्ति। प्रभु के पुत्र, ईशू मुझ पर दया करो।"

जब भी वह शब्द "ईशू" दोहराता तब ही उसकी वाणी शब्द युक्त श्वास में बदल जाती। अन्त में वह रुक गया और सिल्क की गोट अपने लगे वस्त्र को जो लबादे के नीचे था, पकड़ कर एक घुटने पर झुकते हुए वह भूमि पर झुका।

तब सहगान आरम्भ हुआ उसमें ये शब्द दोहराए जा रहे थे "प्रभु के पुत्र ईशू मुझ पर दया कर।" और अपराधी झुके, फिर अपने बालों को, जो कि उनके सिर पर बचे थे, पीछे झटकते हुए तथा शृङ्खलाओं को, जो कि उनके पतले टखनों को घायल कर रही थीं, खड़खड़ाते हुए उठे।

यह काफी देर तक चलता रहा। पहिले प्रशंसा आरम्भ हुई जो इन शब्दों से समाप्त हुई। "मुझ पर दया कर," तब अन्य-प्रशंसा "प्रशंसात्मक गीत!" से समाप्त हुई। और बन्दियों ने क्रॉस के चिह्न बनाए तथा मस्तक झुकाए। पहिले तो वे ऐसा प्रत्येक वाक्य पर करते रहे। पुनः दो फिर तीन वाक्यों के पश्चात् करने लगे, और जब प्रशंसा समाप्त हो गई तब सब प्रसन्न हो उठे और पादरी ने चैन की साँस लेते हुए पुस्तक बन्द की तथा दीवाल के पीछे चला गया। अन्तिम दृश्य बचा। पादरी ने मेज पर से सुनहरी रङ्ग का एक बड़ा क्रॉस उठाया जिस पर पालिश किए हुए पुराने तमगे लटके हुए थे और उसे लेकर वह गिरजाघर के मध्य में आया। सबसे पहिले इन्सपैक्टर आया और उसने क्रॉस का चुम्बन लिया। तब उसके सहायक, फिर वार्डर लोग और तब बन्दीगण धक्का देते तथा एक-दूसरे को धकेलते कानाफूसी में शपथ लेने आए। इन्सपैक्टर से बातें करता हुआ पादरी क्रॉस को और अपने हाथ को कभी बन्दियों के मुखों पर तो कभी नाकों पर ले जाता। बन्दीगण क्रॉस तथा पादरी के हाथों का चुम्बन लेने की चेष्टा कर रहे थे। और इस भाँति इन मार्ग भ्रष्ट-बन्धुओं का ज्ञानो मति एवं सुख के लिए व्यवस्थित की गई क्रिश्चियन प्रार्थना समाप्त हुई।

४०

लगा कर पादरी और इन्सपैक्टर से माशलोवा तक, जो भी वहाँ उपस्थित थे, इस बात से सचेत नहीं थे कि इस ईशू ने, जिसका नाम पादरी ने इतनी अधिक बार दोहराया था, जिसकी कि उसने इतनी विचित्र अभिव्यक्तियों से प्रशंसा की थी, उन समस्त बातों का निषेध किया है जो वहाँ की जा रही थीं; कि उसने निरर्थक बकवास और रोटी और मदिरा पर पाखंडयुक्त जादू-मंत्रों को ही नहीं तो मनुष्यों को अन्य व्यक्तियों को स्वामी कहने तथा मंदिरों में प्रार्थना करने का भी स्पष्ट शब्दों में निषेध कर दिया है; कि उसने प्रत्येक को एकान्त में प्रार्थना करने की शिक्षा दी है; उसने मन्दिरों के निर्माण का यह कह कर निषेध किया है कि मैं

उन्हें नष्ट करने आया हूँ और कि व्यक्ति को मन्दिर में नहीं किन्तु भावना में और सत्य में आराधना करनी चाहिए; और इस सबके ऊपर कि न केवल उसने माप-तौल करने, बन्दी बनाने, कष्ट देने, मनुष्यों पर शासन करने का ही निषेध किया है जैसा कि यहाँ किया जाता है किंतु उसने तो सब प्रकार की हिंसा का भी यह कह कर निषेध किया है कि मैं बन्दियों को मुक्त करने आया हूँ।

कोई भी इस ओर से सचेत नहीं प्रतीत होता था कि यहाँ जो कुछ भी हो रहा है वही सबसे बड़ी ईश्वर निंदा है और परिहास है उसी ईशू का जिसके नाम से यह सब किया जा रहा था। किसी ने अनुभव नहीं किया प्रतीत होता था कि सोने का क्रॉस, जिसके छोरों पर पालिश किए पुराने तमंगे लटक रहे थे, फाँसी देने की उस टिकटी के प्रतीक के अतिरिक्त कुछ नहीं था, जिस पर ईशू को इसलिए लटकाया गया था कि उसने उन्हीं बातों को बुरा बतलाया था, जो अभी यहाँ दोहराई गई थीं। ये पादरी जो कल्पना कर रहे थे कि वे लोग रोटी और मदिरा के रूप में ईशू का माँस और रक्त का भक्षण और पान कर रहे थे, वास्तव में उसके माँस-भक्षण एवं उसके रक्त-पान के दोषी थे। इस रूप में नहीं कि वे खा-पी रहे थे किंतु इसलिए कि वे 'इन छोटों को' जाल में फँसा रहे थे और उनको सबसे बड़े वरदान से वंचित कर सर्वाधिक निर्दय कष्टों में डाल रहे थे जिससे उसने स्वयं को भिन्न नहीं माना था तथा इस कारण कि वे मनुष्यों से उस महान् आनन्द के सन्देश को छिपा रहे थे जो कि वह अपने साथ लाया था। यह विचार वहाँ उपस्थितों में से किसी के मस्तिष्क में नहीं टकराया।

पादरी ने अपना भाग पूर्ण चैतन्यता से निवाहा क्योंकि बचपन से अबतक उसे यही विचारने की शिक्षा मिली थी कि बस यही एकमात्र सत्य धर्म है, जिसको कि प्राचीनकाल के सब पवित्रात्माओं ने ग्रहण किया था और जो कि अभी तक गिरजाघरों एवं प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा ग्रहण किया जाता है। उसे यह विश्वास नहीं था कि रोटी परमात्मा के माँस के रूप में बदल गई कि इतने शब्दों की पुनरोक्ति से आत्मा को कोई लाभ पहुँचता है, अथवा कि वास्तव में उसने परमात्मा के माँस का टुकड़ा भक्षण कर लिया। कोई इस पर विश्वास नहीं कर सकता था; किंतु उसकी धारणा थी कि व्यक्ति को इस पर विश्वास करना चाहिए। जिस बात ने उसकी इस विश्वास में आस्था दृढ़ की थी वह यह थी कि इसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने से वह पिछले अट्ठारह वर्षों से एक निश्चित आय उपार्जित कर रहा है जिससे कि उसके परिवार का पालन हो रहा है, उसका एक

लड़का व्यायामशाला में जा सका है और उसकी लड़की पादरियों की लड़कियों के लिए निर्मित विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रही है। छोटा पादरी भी इसी रूप में विश्वास करता था किन्तु बड़े पादरी से भी अधिक क्योंकि वह इस धर्म के सिद्धांतों का सार भूल चुका था और उसे मृतकों, उत्सवों की प्रार्थनाएँ स्मरण थीं। उन सबका एक निश्चित मूल्य था जिसे कि सच्चा ईसाई तुरन्त चुका देता, और इसलिए वह बड़ा इच्छुक हो कहता—"दया कर ! दया कर !!" और उसी निश्चिन्तता से, जिसके साथ संलग्न थी दूसरे मनुष्यों की भाँति ईंधन, आटा और आलू बेचने की आवश्यकता, पढ़ता तथा बोलता। कारागृह-निरीक्षक और वार्डर यद्यपि इन सिद्धांतों के अर्थ को और गिरजाघर की कार्यवाहियों को कभी नहीं समझे और न उन्होंने उस पर विचार ही किया था किन्तु फिर भी इस कारण विश्वास करते थे कि उच्चाधिकारी एवं स्वयं ज़ार भी इन पर विश्वास करते थे। इसके अतिरिक्त अस्पष्ट रूप से (और यह समझाने में वे स्वयं असमर्थ थे कि क्यों) वे अनुभव करते कि यह धर्म उनके क्रूर व्यापार को न्याययुक्त ठहराता है। किन्तु इस धर्म के लिए यह बहुत कठिन होता, शायद असम्भव भी कि इसके प्रतिपूर्ण सचेत हो वे अपनी समस्त शक्तियों को मनुष्यों को कष्ट देने में लगाते, जैसाकि वे अब कर रहे थे। इन्सपैक्टर इतना दयालु-हृदय था कि यदि इस धर्म से उसे सहारा न मिलता तो कभी का मृत्यु को प्राप्त हो गया होता। इसलिए वह स्थिर खडा रहा, और बड़े उत्साह से झुका तथा उसने अपने ऊपर क्रास का चिह्न बनाया, और जब कि देवदूतों के विषय में गाना गाया जा रहा था उसने भावुक होने का प्रयत्न किया, और जब बच्चों ने ईसामसीह के स्मरणार्थ भोज ग्रहण किया तब उसने उनमें से एक को उठाया और पादरी के पास ले गया।

बन्दियों के बहुमत ने इसमें विश्वास किया कि इन सोने की मूर्तियों, कपड़ों मोमबत्तियों, प्यालों, क्रासों, इन अगम्य शब्दों—"ईशू सर्वाधिक प्रिय।" और "दया कर"—के पुनरोच्चारण में एक गुप्त शक्ति है जिसके द्वारा इस जीवन में और आने वाले जीवन में कहीं अधिक सुख-सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं। कुछ ही लोग ऐसे थे जिन्हें कि इस मत से चिपके हुए व्यक्तियों में कपट की स्पष्ट गन्ध आ रही थी और मन-ही-मन वे इस पर हँस रहे थे; किंतु कितने ही प्रयास कर—प्रार्थनाओं, ईसामसीह के स्मरणार्थ भोजों और मोमबत्तियों के माध्यम द्वारा—अपनी ऐच्छिक सुविधाओं को प्राप्त करने और उन्हें न प्राप्त करने पर (उनकी प्रार्थनाएँ निष्फल रहीं), बहुमत में सबही इस बात से प्रभावित थे कि उनकी

सफलता की कमी का कारण कोई संयोग ही है। और कि यह संस्था, जिसको शिक्षित एवं पादरीवर्ग का समर्थन प्राप्त है। अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है—इहलौकिक नहीं तो पारलौकिक के लिए तो अवश्य ही।

माशलोवा को भी यही विश्वास था। अन्यान्यों की भाँति उसे भी धर्म-निष्ठा एवं मूर्खता की मिश्रित भावना का अनुभव हुआ। पहिले तो वह भीड़ में एक कटहरे के पीछे खड़ी हुई, ताकि उसे अपनी साथिनों के अतिरिक्त और कोई न दिखलाई दे सके, किंतु जब भोज में भाग लेने वाले आगे बढ़े तब वह और फेदोशिया सामने की तरफ आ गईं और उन्हें इन्सपैक्टर को तथा उसके पीछे खड़े हुए वार्डरों के बीच हल्की दाढ़ी और सुन्दर बालों वाला एक तुच्छ किसान दिखलाई दिया। वह फेदोशिया का पति था और अपनी पत्नि की ओर दृष्टि जमाए देख रहा था। इस बीच में माशलोवा उसकी विवेचना एवं फेदोशिया से कानाफूसी करने में लग गई और वह तब ही सिर झुकाती अथवा क्रॉस का चिह्न बनाती जब कि दूसरे करते।

४१

नेखलूदोव घर से सुबह ही चल दिया। गाँव का एक किसान सड़क के सहारे चला जा रहा था और अपने व्यापार के अनुसार विचित्र-सी आवाज में कह रहा था—"दूध ले लो जी दूध !"

उष्ण बसन्त की पहिली बरसात कल हो चुकी थी और अब जहाँ भी भूमि पाटी नहीं गई थी घास हरी दिखलाई दे रही थी। बगीचों में भोज-पत्र के वृक्ष ऐसे दिखलाई देते थे मानो कि उन पर पंखों के समान हरे रोए छितरा दिए गए हों। बर्डचेरी और पोपलर के वृक्षों की लम्बी सुगन्धित पत्तियाँ फूट निकली थीं तथा दूकानों एवं मकानों से खिड़कियों के दुहेरा चौखटे हटाए जा रहे थे तथा खिड़कियाँ साफ की जा रही थीं।

जिस बाजार में होकर नेखलूदोव को जाना पड़ा वहाँ मेले की दूकानों की पंक्तियों के सामने भारी भीड़ उमड़ी पड़ रही थी। इक्के-दुक्के व्यक्ति अपनी बगलों में दबाए जूते बेच रहे थे तथा उन्होंने कंधों पर लटका रखे थे, नए मोजे और वेस्टकोट।

रविवार होने के नाते फैक्टरियों से छुट्टी मिल जाने के कारण पुरुष साफ और पालिशदार जूते पहिने तथा स्त्रियाँ सिर पर सिल्क के चमकीले रूमाल बाँधे और कपड़े की गोट लगी जाकिट पहिने मदिरालय के द्वार पर पहिले से ही एकत्रित थीं। पिस्तौलें लिए तथा अपनी वर्दियों में पीली डोरी डाले पुलिसमैन अपने कार्य में तत्पर थे। वे किसी भी अव्यवस्था के लिए सन्निहृत थे जो कि उन्हें वश में करने वाले निरुत्साह को विचलित कर सके, गिरजाघर के मार्ग पर, नई उगी घास पर बच्चे और कुत्ते खेलते हुए दौड़ रहे थे और बैंचों पर बैठी नर्सें प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप कर रही थीं।

सड़कों पर जो कि अभी तक छाया की ओर गीली और सीली थीं तथा बीच में सूखी हुई थीं, भारी गाड़ियां निरन्तर गड़गड़ाहट का शब्द करती, बग्घियाँ खड़खड़ करतीं, और ट्रामें टनटन करती निकल जातीं। वायुमंडल मधुर शब्दों एवं गिरजाघर की उन घण्टियों की टुनटुनाहट से परिपूर्ण था, जो कि बंदीगृह में हुई प्रार्थना के सदृश्य प्रार्थना करने के लिए व्यक्तियों को बुलावा दे रही थी। लोग रविवार के अपने सर्वश्रेष्ठ वस्त्रों को पहिने भिन्न-भिन्न गिरजों में जा रहे थे।

गाड़ीवान नेखलूदोव को कारागार तक नहीं ले गया किंतु उसने बंदीगृह के जाने के लिए अंतिम मोड़ पर उसे उतार दिया।

कुछ व्यक्ति—स्त्री एवं पुरुष—जिनमें से अधिकांशतः छोटे बंडल लेजा रहे थे कारागार से सौ कदम दूर इस मोड़ पर खड़े थे। दाहिनी ओर कुछ लकड़ी की नीची इमारतें थीं; बाईं ओर साइनबोर्ड लगा एक दुमंजिला मकान था। ईंटों का विशाल भवन—कारागृह सामने ही था किंतु दर्शकों को वहाँ जाने की आज्ञा नहीं थी। उसके सामने एक संतरी पहरा दे रहा था और जो भी वहाँ से निकलने की चेष्टा करता उस पर ही चिल्लाकर पड़ता।

लकड़ी की इमारतों के दाहिनी ओर, संतरी के पीछे, द्वार पर सुनहरी रस्सियाँ बाँधे वर्दी पहिने हाथ में एक नोटबुक लिए बैंच पर एक वार्डर बैठा था। दर्शक उसके पास आते, जिस बंदी से मिलना होता उसका नाम बतलाते और वह डायरी में नाम लिख लेता। नेखलूदोव भी उसके पास गया और उसने कातरीना माशलोवा का नाम लिखाया। वार्डर ने नाम लिख लिया।

"हमको क्यों नहीं प्रवेश करने देते ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"प्रार्थना हो रही है। ईशू के स्मरणार्थ भोज समाप्त होते ही आपको प्रवेश मिल जाएगा।"

नेखलूदोव प्रतीक्षकों की भीड़ में जा मिला। नंगे पाँव, फटे कपड़ों, कुचले हैट में एक व्यक्ति, जिसके सारे मुँह पर लाल धब्बे पड़े हुए थे, भीड़ से अलग हुआ और कारागृह की ओर बढ़ा।

"तो फिर आप कहाँ जा रहे हैं ?" राइफिल लिए संतरी चिल्लाया।

"तुम अपना काम करो।" उस भिखमंगे ने कहा। वह संतरी के शब्दों से तनिक भी लज्जित नहीं हुआ किंतु साथ ही लौटते हुए बोला "खैर। यदि तुम मुझे नहीं जाने देते तो मैं प्रतीक्षा कर सकता हूँ। तुम्हें भौंकना नहीं चाहिए—कोई तुम जनरल हो।"

भीड़ उसके अनुमोदन में हँसी। अधिकांश दर्शक गंदे वस्त्रों में थे, कुछ तो चीथड़ों में भी थे किंतु वहाँ कुछ स्त्री और पुरुष भी थे। नेखलूदोव के बाद एक सफाचट दाढ़ी मूछों वाला, तगड़ा, और लाल गालों वाला व्यक्ति हाथ में बंडल लिए खड़ा था। बंडल में नीचे पहिनने के कपड़े थे। नेखलूदोव ने उससे पूछा कि क्या आप यहाँ पहिली बार आए हैं। व्यक्ति ने उत्तर दिया कि मैं यहाँ प्रत्येक रविवार को आता हूँ और उनमें बातचीतें आरंभ हो गई। वह एक बैंक में चौकीदार था; वह अपने भाई से मिलने आया था जो जालसाजी के अपराध में बंदी कर लिया गया था। अच्छे स्वभाव वाले पुरुष ने नेखलूदोव को अपने जीवन की सारी गाथा सुना दी और अब पलटकर वह उससे पूछना ही चाहता था कि उनका ध्यान एक विद्यार्थी तथा घूँघट वाली महिला की ओर आकर्षित हुआ, जो कि रबड़ टायरों वाले पहियों की गाड़ी में आए थे जिसमें एक बड़ा-सा स्वस्थ घोड़ा जुता हुआ था। विद्यार्थी के हाथ में एक बड़ा बंडल था। वह नेखलूदोव के पास आकर बोला कि क्या मैं बंदियों को लाए हुए रौल दे सकता हूँ और यदि हाँ तो कैसे। उसकी मंगेतर (उसके साथ की महिला) की इच्छा है और उसके माता पिता ने राय दी है कि हम लोग स्वयं जाकर उन्हें बाँट दें।

"मैं स्वयं यहाँ पहिली बार आया हूँ।" नेखलूदोव ने कहा "और मुझे नही मालूम; किंतु मेरी राय से अधिक सुन्दर तो यह रहेगा कि आप उस व्यक्ति से पूछें।" और उसने सुनहरी रस्सियाँ बाँधे और दाहिनी ओर किताब लिए बैठे वार्डर की ओर इंगित किया।

जब वे बातें कर रहे थे लोहे का बड़ा द्वार, जिसमें एक खिड़की थी, खुला और वर्दी पहिने एक अधिकारी, जिसके पीछे एक अन्य वार्डर था, बाहर निकला। नोटबुक लिए जेलर ने घोषणा की कि दर्शकों का प्रवेश अब आरंभ होगा। संतरी अलग हट गया और सब दर्शक द्वार की ओर भागे मानों कि उन्हें भय हो कि हमें बहुत देर हो गई।

द्वार पर एक वार्डर खड़ा था जो अंदर जाने वाले दर्शकों की जोर से बोलता हुआ गणना कर रहा था—सोलह, सत्तरह—इतने उतने। दूसरा वार्डर भवन के अन्दर खड़ा था और उस दूसरे द्वार से प्रवेश करने वाले दर्शकों की हाथ से स्पर्श कर गणना करता ताकि जब वे यहाँ से लौटें तो कोई दर्शक कारागृह में न रह जाय और न कोई बंदी ही यहाँ से जा सके। यह बिना देखे ही कि मैं किसको छू रहा हूँ वार्डर ने नेखलूदोव की पीठ पर हाथ मारा। नेखलूदोव को हाथ का यह स्पर्श बुरा लगा; किंतु यह स्मरण कर कि मैं किसलिए यहाँ आया हूँ वह अपने क्रोध पर स्वयं लज्जित हो उठा।

प्रवेश द्वारों के बाद का सबसे पहिला कमरा बड़ा और मेहराबदार था। उसकी छोटी खिड़कियों में लोहे की छड़ें लग रही थीं। इसको मिलाई का कमरा कहा जाता था। इस कमरे में क्रॉस पर चढ़े हुए ईसामसीह का बड़ा चित्र देखकर नेखलूदोव हैरान रह गया।

"यह यहाँ किसलिए है ?" उसने सोचा। उसके मन ने चित्र के आशय को स्वतन्त्रता से अनिच्छापूर्वक जोड़ा, बन्धन से नहीं।

वह शीघ्रता करने वाले दर्शकों को जाने देकर धीरे-धीरे चलता रहा और इस भवन में बंद अपराध करने वालों पर भय की—कातूशा और कल जिसका न्याय विचार हुआ उस लड़के की भाँति यहाँ जो निरपराध थे उन पर दया की—तथा अपने सम्मुख मिलाई के विचार पर कोमल एवं लज्जा की—सम्मिलित भावनाओं का उसे अनुभव हुआ। मिलाई के कमरे के दूसरे सिरे पर खड़े जेलर ने उनके निकलते समय कुछ कहा किंतु नेखलूदोव अपने विचारों में इतना तल्लीन था कि उसने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और दर्शकों की प्रधान धारा के साथ प्रवाहित होता हुआ वह पुरुष-विभाग में पहुँच गया—स्त्री-विभाग में नहीं जहाँ कि उसे जाना था।

अधिक उत्सुक लोगों को निकलने का अवसर दे वह सबसे अन्त में दर्शक प्रकोष्ठ में पहुँचा। इस प्रकोष्ठ का द्वार खोलते ही नेखलूदोव सैकड़ों आवाजों की

कान बहरे करने वाली चीखों चिल्लाहटों से ग्राश्चर्यचकित हो गया। वह यह तुरन्त ही न समझ सका कि इसका कारण क्या है। किंतु जब वह लोगों के पास ग्राया तब उसने देखा कि वे सब उन जालों पर झुके पड़ रहे थे जो प्रकोष्ठ को दो भागों में विभक्त करते थे। लोग चीनी पर मक्खियों की भांति उन जालों पर टूटे पड़ रहे थे ग्रौर वह समझ गया कि इसका क्या ग्रर्थ था। कमरे के दो भाग जिसकी खिड़कियाँ उस द्वार के सामने थीं जिसमें से होकर वह ग्राया था, तारों के एक नहीं वरन् दो जालों से विभक्त किए गए थे। जाल नीचे फर्श से लेकर ऊपर छत तक सटे हुए थे तथा दोनों के बीच कुछ फीटों का मार्ग था ग्रौर उस ग्रन्तर के मध्य वार्डरगण घूम रहे थे। ग्रगले जाल के दूसरी ग्रोर पीछे की ग्रोर बंदीगण थे एवं इधर वाले जाल के इस ग्रोर दर्शकगण। बंदियों एवं दर्शकों के बीच दोनों जाल थे तथा सात फीट का ग्रन्तर जिससे कि उनमें से कोई एक दूसरे को कुछ नहीं ले-दे सकता था ग्रौर यदि किसी की ग्राँखें कमजोर हों तो दूसरी ग्रोर के मनुष्यों को पहिचान भी नहीं सकता था। बातें होना भी कठिन था—चिल्लाकर कहना पड़ता था।

दोनों ही ग्रोर जालों से चेहरे सटे हुए थे—पत्नियों, पतियों, पिताग्रों, माताग्रों, बच्चों के चेहरे एक-दूसरे को पहचानने की ग्रौर ग्रावश्यक बातें कहने की चेष्टा करते हुए जो कि इस परिस्थिति में समझी जा सकती थीं।

किन्तु हर किसी की यही चेष्टा थी कि जिससे मैं बातें कर रहा हूँ वह मेरी ग्रावाज सुन सके, ग्रौर उसके पास वाला भी उसी चेष्टा में था। ग्रतः वे एक दूसरे से ऊँचा बोलने का प्रयत्न करते ग्रौर इससे उनकी ग्रावाजें चीखों-चिल्लाहटों में बदल गईं जिससे कि नेखलूदोव प्रकोष्ठ में घुसते ही ग्राश्चर्यचकित रह गया। सुनना ग्रसंभव था ग्रौर लोग चेहरों से ही ग्रन्दाज लगा रहे थे कि कहा क्या जा रहा है ग्रौर बातें करने वालों का ग्रापस में सम्बन्ध क्या है। नेखलूदोव की बगल में सिर पर रूमाल बाँधे एक वृद्धा खड़ी थी। जाल से उसने ग्रपना मुँह सटा रखा था। उसकी ठोढ़ी काँप रही थी ग्रौर एक पीले पड़े नवयुवक से बातें कर रही थी। नवयुवक का ग्राधा सिर घुटा हुग्रा था तथा भौहों को चढ़ाए हुए वह उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुन रहा था। उस वृद्धा की बगल में किसानू कोट पहिने एक नवयुवक था। रूक्ष ग्राकृति एवं भूरी पड़ती दाढ़ी वाले व्यक्ति की ग्रोर वह ग्रसंतोष में ग्रपना सिर हिला रहा था। कदाचित् दाढ़ी वाला उस नवयुवक का पिता था। उसके बाद चीथड़े लपेटे एक पुरुष था जो हाथों को हिला रहा

था और हँस रहा था तथा चीख रहा था। उसके बाद कंधों पर ऊन का शॉल ओढ़े एक स्त्री बैठी थी। उसकी गोद में एक बालक था तथा वह फूट-फूट कर रो रही थी। दूसरी ओर खड़े भूरे सिर वाले व्यक्ति को उसने अपने जीवन में आज प्रथम बार बंदियों के कपड़ों में तथा उसके घोटमघोट सिर को देखा था। उसके बाद का चौकीदार जिससे नेखलूदोव की बाहर बातचीतें हुई थीं। वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से एक गंजे सिर. चमकती आँखों वाले अभियुक्त से चिल्लाकर बातें कर रहा था।

जब नेखलूदोव ने सोचा कि मुझे ऐसी परिस्थितियों में बातें करनी पड़ेंगी तो उसे उन लोगों के प्रति क्रोध उत्पन्न हो आया जिन्होंने कि ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न एवं प्रस्थापित किया था। उसे इस पर आश्चर्य हुआ कि इन वीभत्स परिस्थितिओं में पड़कर भी किसी को मानवीय भावनाओं के प्रति इस अत्याचार पर क्रोध उत्पन्न नहीं होता। सिपाहियों, इन्सपैक्टरों एवं बन्दियों ने स्वयं इसे इस रूप में स्वीकार कर लिया था कि यह सब आवश्यक है।

नेखलूदोव इस कमरे में लगभग पाँच मिनट तक रहा तथा उसने स्वयं को अत्यधिक संकुचित और सामर्थ्यहीन अनुभव किया। उसने सोचा कि मैं समस्त संसार से कितना भिन्न हूँ। वह एक विचित्र नैतिक घृणा से भर उठा—घृणा जिसकी तुलना जलयान के चलने पर मनुष्य को होने वाली शारीरिक अनुभूतियों से की जा सकती है।

४२

"खैर ! जिस कार्य के लिए मैं यहाँ आया हूँ, मुझे करना चाहिए।" उसने साहस बटोरते हुए सोचा—"अब क्या करना चाहिए ?"

उसने चारों ओर देखा कि कोई कार्याधिकारी दिखलाई दे जाय। एक पतला-दुबला अधिकारी अपनी वर्दी पहिने लोगों के पीछे चहलकदमी कर रहा था। वह उसके पास पहुँचा।

"श्रीमन् क्या आप मुझे बतला सकते हैं," उसने अत्यधिक विनम्र ढंग से कहा—"बन्दिनी स्त्रियाँ कहाँ रखी जाती हैं और उनसे मिलने के लिए कौन-सा स्थान नियुक्त है ?"

"क्या आप स्त्री विभाग में जाना चाहते हैं ?"

"जी ! मुझे एक बन्दिनी से मिलना है ?" नेखलूदोव ने उसी विनम्र स्वर में कहा।

"यह तो आप हॉल में ही बतला देते। अच्छा तो आप किससे मिलना चाहते हैं ?"

"मैं कातरीना माशलोवा नामक बन्दिनी से मिलना चाहता हूँ।"

"क्या वह राजनैतिक बन्दिनी है ?"

"जी नहीं वह तो केवल..."

"जी ! और उसको दण्ड सुना दिया गया है ?"

"जी-हाँ परसों ही।" नेखलूदोव ने नम्रता से उत्तर दिया। उसे भय था कि इन्सपैक्टर जो उसके अनुकूल प्रतीत होता था कहीं विपरीत न पड़ जाय।

"यदि आप स्त्री विभाग में जाना चाहते हैं तो कृपया इधर पधारिए।" इन्सपैक्टर ने नेखलूदोव के व्यक्तित्व से प्रभावित हो निर्णय कर लिया कि उसे उस पर ध्यान देना चाहिए—"सीदोरोव ! इन सज्जन को स्त्री विभाग की ओर ले जाओ।" उसने वक्ष पर तमगे लटकाए हुए मूँछों वाले नायक की ओर मुड़कर कहा।

"जी, श्रीमान्।"

इस समय जाले के पास से किसी का हृदय कँपाने वाला रुदन सुनाई दिया।

यहाँ की हर वस्तु नेखलूदोव को विचित्र लगी। किंतु सबसे अधिक विचित्र लगा कि उसे उन्हीं इन्सपैक्टर तथा चीफ वार्डरों को धन्यवाद देना चाहिए तथा उनके ही प्रति कृतज्ञ होना चाहिए जो कि इस भवन में होने वाले क्रूर कार्यकलापों के स्वयं संचालक हैं।

नायक नेखलूदोव को कमरे से बाहर बरामदे में, और उसे सीधा पार कर सामने के द्वार में से स्त्रियों से मिलाई होने वाले कमरे में ले गया।

वह कमरा भी पुरुषों वाले कमरे की भाँति तार के दो जालों से विभक्त किया गया था। वहाँ पुरुषों के कमरे से बन्दी भी कम ही थे और दर्शक भी। किंतु चीखें और शोरगुल वैसा ही था। जालों के बीच अधिकारी उसी भाँति घूम रहे थे।

किन्तु यहाँ अधिकारियों का प्रतिनिधित्व एक स्त्री वार्डर कर रही थी जिसने कि नीली गोट की वर्दी की जाकिट पहिन रखी थी जिस पर सुनहरी डोरी लगी हुई थी तथा एक नीली बेल्ट बाँध रखी थी। यहाँ भी पुरुष विभाग की भाँति लोग दोनों ही ओर जालों से सटे हुए थे : इस ओर विभिन्न रूपों में अलंकृत नगर निवासी और उधर दूर की ओर वाले जाल पर बंदिनी कुछ कारागार के सफेद वस्त्रों में तथा बाकी सब अपने रंगीन वस्त्रों में। जाल की पूरी लम्बाई तक लोग उससे सटे खड़े थे। कुछ तो पंजों के बल खड़े थे ताकि अपने सामने खड़े लोगों के सिरों से ऊपर उठकर बातें कर सकें; कुछ फर्श पर बैठे बातें कर रहे थे।

बन्दिनियों में चेहरे-मोहरे और रोने-धोने दोनों से ही सबसे विलक्षण लग रही थी एक पतली-दुबली फूहड़ जिप्सिन। उसके घुंघराले बालों के ऊपर से उसका रूमाल खिसक गया था, और वह बन्दिनियों के जाल के बीच के लट्ठे के सहारे खड़ी शीघ्रता में मुद्राएँ बनाती हुई एक जिप्सी से चीखकर कुछ कह रही थी। जिप्सी कमर पर तंग नीला कोट पहिने हुए था। जिप्सी के बगल में एक सिपाही बैठा हुआ एक बन्दिनी से बातें कर रहा था। सिपाही की बगल में जाल से चिपका हुआ सुन्दर दाढ़ी और रक्तिम मुख वाला एक नवयुवक खड़ा हुआ अपने आँसुओं को बड़ी कठिनाई से रोकने में समर्थ हो रहा था। सुन्दर बालों वाली एक सुन्दरी बन्दिनी जिसके नेत्र चमकीले और नीले थे उससे बातें कर रही थी। यह फेदोशिया और उसका पति था। उसकी बगल में एक भिखमंगा था जो कि एक चौड़े मुँह वाली स्त्री से बातें कर रहा था, उसके बाद थीं दो स्त्रियाँ, फिर एक पुरुष, पुनः स्त्री और इन सबके सम्मुख एक-एक बन्दिनी। वहाँ माशलोवा नहीं थी। किंतु खिड़की के पास बन्दिनियों के पीछे कोई खड़ी थी और नेखलूदोव ने पहिचान लिया कि वह माशलोवा ही थी। उसके हृदय की धड़कनें तीव्रतर हो गईं और श्वास रुक गया। निर्णयात्मक क्षण आ रहा था। जाल के पास जाकर उसने उसे पहिचान लिया। वह नीले नेत्र वाली फेदोशिया के पीछे खड़ी हुई थी और फेदोशिया की बातें सुनकर मुस्करा रही थी। इस समय बन्दीगृह की पोशाक में न होकर वह सफेद कपड़े पहिने हुए थी तथा उसकी कमर में एक पट्टी कसी हुई थी तथा उसका वक्ष उभरा हुआ था। रूमाल के नीचे से उसकी घुंघराली अलकें कोर्ट की ही भाँति यहाँ भी चमक रही थीं।

"अब क्षण भर में निर्णय हो जाएगा।" उसने सोचा—"मैं इसे कैसे आवाज़ दूँ ? या यह स्वयं ही आ जाएगी ?"

वह क्लारा की प्रतीक्षा कर रही थी; वह सोच भी न सकती थी कि यह व्यक्ति मुझसे मिलने आया है।

"आपको किससे मिलना है ?" जालों के मध्य घूमते हुए वार्डर ने नेखलूदोव के पास आकर पूछा।

"कातरीना माशलोवा से।" नेखलूदोव ने प्रयत्नपूर्वक कहा।

"माशलोवा ! तुमसे कोई मिलना चाहते हैं।" वार्डर चिल्लाया।

४३

माशलोवा ने चारों ओर दृष्टि फेंकी, सिर पीछे को झटका। वक्ष को उभार वह जाल के पास आई। उसके मुँह पर तत्परता का भाव था जिससे कि नेखलूदोव भलीभाँति परिचित था। वह दो बन्दिनियों के बीच धँसी और उसने नेखलूदोव की ओर आश्चर्य एवं प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

उसके वेश-विन्यास से उसने निर्णय किया कि कोई धनी व्यक्ति है अतः वह मुस्करा दी।

"क्या आप मुझसे मिलना चाहते हैं ?" तनिक तिरछी आँखों वाले अपने मुस्कुराते चेहरे को जाल से सटाते हुए उसने पूछा।

"मैं...मैं...मैं आपसे मिलना चाहता हूँ...मैं आपसे मिलना चाहता हूँ...मैं..." वह नित्यप्रति की आवाज से अधिक तेज स्वर में नहीं बोला।

"नहीं मूर्खा। मैं कहे देता हूँ !" उसकी बगल में खड़ा हुआ भिखारी चिल्लाया—"तुमने यह लिया या नहीं ?"

"बहुत दुर्बल; मर रही है।" किसी ने दूसरी ओर से चीखकर कहा।

माशलोवा की समझ में नेखलूदोव की बातें नहीं आ रही थीं किंतु बोलते समय उसके मुख के भावों ने उसे कुछ ऐसी बात का स्मरण कराया जिसे वह पुर्नस्मरण नहीं करना चाहती थी। उसके मुखमण्डल से मुस्कान अदृश्य हो गई तथा अङ्कित हो आई उसकी भौंहों पर व्यथा की गहरी रेखा।

"आपकी बातें मुझे सुनाई नहीं दे रहीं।" उसने अपनी भौहें चढ़ाते तथा अधिकाधिक क्रुद्ध होते हुए कहा।

"मैं आया हूँ..." नेखलूदोव बोला।

"हाँ ! मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ, मैं अपराध स्वीकार कर रहा हूँ।" नेखलूदोव ने सोचा और इस विचार से उसके नेत्रों में अश्रु छलक आए। उसे अपना गला अवरुद्ध होता-सा लगा और जाल को दोनों हाथों से पकड़ कर उसने अपने अश्रुओं को थामे रखने का प्रयत्न किया।

"आपसे जो काम सम्बन्धित नहीं था तो उसमें आपने क्यों टाँग घुसेड़ी ?" उसकी ओर से कोई चिल्लाया।

"भगवान ही जानता है कि मुझे कुछ नहीं मालूम था।" दूसरी ओर से एक बन्दिनी चिल्लाई।

माशलोवा ने उसकी उत्तेजना देखी और वह उसे पहिचान गई।

"आप तो...किंतु नहीं, मुझे स्मरण नहीं है।" वह उसकी ओर देखे बिना ही चिल्लाई और उसका लज्जा से लाल मुख और भी उदास हो गया।

"मैं तुम्हारे पास इसलिए आया हूँ कि तुम मुझे क्षमा कर दो।" उसने तेज किंतु उबा देने वाले स्वर में कहा मानो कि घोटा-घाटा पाठ पढ़ रहा हो।

यह शब्द कहने के बाद वह भ्रम में पड़ गया और उसने अपने चारों ओर देखा किंतु तुरन्त ही उसे विचार उत्पन्न हुआ कि यदि मैं लज्जा का अनुभव करता हूँ तो यह सुन्दर ही है, मुझे इस लज्जा को सहन करना ही चाहिए; और उसने तेज स्वर में कहना प्रारम्भ किया :

"मुझे क्षमा कर दो; मैंने तुम्हारे साथ बहुत अन्याय किया है।"

उस पर अपने तिरछे नेत्र जमाए माशलोवा अविचल खड़ी रही।

नेखलूदोव से बोला न गया और जाल से हटकर उसने अपने अश्रुओं को रोकना चाहा जो उसके गले को अवरुद्ध कर रहे थे।

जिस अधिकारी ने नेखलूदोव को स्त्री विभाग में भिजवाया था तथा जिसकी रुचि उसकी ओर जागृत हो गई थी वह इन्सपैक्टर कमरे में आया और उसे जाल पर न देख बोला कि जिस स्त्री से आप मिलना चाहते हैं उससे बातें क्यों नहीं कर रहे। नेखलूदोव ने नाक साफ की, फुरफुरी ली और शांत लगने की चेष्टा करते हुए बोला :

"इन जालों से इतनी असुविधा होती है कि सुनाई भी नहीं देता।"

फिर इन्सपैक्टर ने क्षण भर विचार किया। "आह तो अच्छा ! उसे

थोड़ी सी देर के लिए बाहर लाया जा सकता है...मेरिया कालोव्ना ! माशलोवा को बाहर निकाल लाग्रो। उसने स्त्री वार्डर की ग्रोर मुड़ते हुए कहा।

एक मिनट बाद ही बगल के दरवाजे से माशलोवा बाहर ग्राई। धीरे-धीरे चलते हुए वह नेखलूदोव के पास ग्राकर रुकी ग्रौर उसने नीची दृष्टि से उसकी ग्रोर देखा। उसके काले बाल ग्राज से दो दिन पहिले जिस रूप में कढ़े थे वैसे ही घुँघराली ग्रलकों सहित उसके माथे पर पड़े हुए थे; उसका चेहरा यद्यपि ग्रस्वस्थ एवं नीचे से भारी हो चला था फिर भी ग्राकर्षक एवं शांत था; किन्तु सूजे पलकों के नीचे से उसकी काली चमकदार ग्राँखें विचित्र ढंग से देख रही थीं।

"ग्राप यहाँ बात कर सकते हैं।" कहकर इन्सपैक्टर ग्रलग हट गया।

नेखलूदोव दीवाल के सहारे लगी बैंच की ग्रोर बढ़ा।

इन्सपैक्टर की ग्रोर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखकर फिर ग्राश्चर्य में ग्रपने कंधे हिलाते हुए माशलोवा नेखलूदोव के पीछे-पीछे बैंच के पास गई ग्रौर ग्रपना घाघरा व्यवस्थित कर उसके पास बैठ गई।

"मैं जानता हूँ कि तुम मुझे सहज ही क्षमा नहीं कर दोगी।" उसने प्रारम्भ किया किन्तु रुक गया। उसके ग्रश्रु उसके गले को ग्रवरुद्ध कर रहे थे "किन्तु क्योंकि बीती बातों को बदलने की मुझमें सामर्थ्य नहीं है इसलिए मैं ग्रब यथाशक्ति सब कुछ करने का प्रयत्न करूँगा। बतलाग्रो...।"

"मुझे खोजने का ग्रापको समय कैसे मिल गया ?" उसके प्रश्न का उत्तर दिए बिना वह बोली। वह ग्रपने तिरछे नेत्रों से न तो उससे दूर देख रही थी ग्रौर न पूरी तरह उसकी ग्रोर ही।

"भगवान् मेरी सहायता कर ! मुझे शिक्षा दे कि क्या करना चाहिए।" नेखलूदोव ने उसके परिवर्तित चेहरे की ग्रोर देखकर सोचा जिस पर से प्रसन्नता ग्रदृश्य हो गई थी।

"परसों मैं भी जूरी में था" वह बोला, "तुमने मुझे नहीं पहिचाना ?"

"नहीं, मैंने नहीं; वहाँ पहिचानने का समय नहीं था। मैंने तो देखा तक नहीं था।" वह बोली।

"एक बच्चा भी तो था, नहीं था ?" उसने लज्जित होते हुए पूछा।

"भगवान् को धन्यवाद दीजिए कि वह तुरन्त ही मर गया।" उसने

अस्पष्ट एवं क्रोधित स्वर में कहा और उसकी ओर से हट गई।

"तुम्हारा क्या मतलब ? क्यों ?"

"मैं स्वयं इतनी बीमार हो गई कि मर जाती।" उसने अपने नेत्र ऊपर उठाए बिना ही कहा।

"मेरी बुआ ने तुम्हें कैसे जाने दिया ?"

"बच्चे वाली को कौन नौकर रखता है ? मालूम पड़ते ही उन्होंने मेरा पत्ता काट दिया। किंतु उन बातों से क्या लाभ ? मुझे अब कुछ स्मरण नहीं रहा। वह सब समाप्त हो गया।"

"नहीं। समाप्त नहीं हुआ, मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हूँ।"

"अब प्रायश्चित किस बात का ? जो हो गया सो हो लिया।" वह बोली और उसकी ओर अप्रसन्नता भरी लुभावट में मुस्कुराई फिर भी उसमें दैन्य था किंतु नेखलूदोव को उससे ऐसी कभी आशा नहीं थी।

माशलोवा को भी आशा नहीं थी कि वह कभी उससे मिलेगा और इसका कभी विश्वास नहीं था कि यहाँ और इस समय मिलेगा। इसलिए पहिले जब उसने पहिचाना तब वह अपनी उन स्मृतियों को न भुला पाई जिन्हें कि वह कभी दुहराना नहीं चाहती थी। प्रथम क्षरण उसे धूमिल-सा स्मरण आया वह भावनाओं एवं विचारों का नया अलभ्य संसार जिसमें कि उसे प्रेम करने वाले नवयुवक ने जिसे कि वह प्रेम करती थी, प्रवेश कराया था, फिर उसे स्मरण आईं उसकी अचित्य क्रूरताएँ और यातनाओं एवं अपमानों की कड़ियाँ जो कि उस स्वर्गिक आनन्द के पश्चात से प्रारम्भ हुई। उसका हृदय दुखी हो गया। किंतु समझने में असमर्थ हो उसने अब भी वैसा ही किया जैसा करने का कि उसका स्वभाव था। उसने अपनी उन स्मृतियों को दुराचारी जीवन के धुंधलके में आवृत कर उनसे मुक्ति पा ली। इस क्षरण अपनी बगल में बैठे हुए व्यक्ति को उसने पहिले तो उस लड़के से सम्बन्धित किया जिसको उसने प्रेम किया था किंतु यह अनुभव कर कि इससे उसे दुख होता है उसने दोनों को अलग कर दिया। अब यह सुसज्जित, पाल पोस कर बड़ा किया सुगन्धित दाढ़ी वाला सज्जन वह नेखलूदोव नहीं था जिससे कि उसने प्रेम किया था, किन्तु था उन्हीं व्यक्तियों में से एक जो उसके जैसे प्राणी का आवश्यकता पर उपयोग करते और जिनका कि उसके जैसे प्राणी अपनी बारी पर अधिकाधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करते। और इसी कारण वह इस समय चित्त

को आकर्षित करने वाली मुस्कान से मुस्कुराई। वह शांत थी, विचार रही थी कि किस रूप में उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग कर सकती है।

"अब उसमें कोई दम नहीं।" वह बोली—"अब तो मैं कठोर परिश्रम का दंड प्राप्त बन्दिनी हूँ।" और इन भयानक शब्दों को कहते समय उसके होंठ काँप उठे।

"मैं जानता हूँ–मुझे विश्वास था कि तुम्हारा कोई दोष नहीं है।" नेखलूदोव बोला।

"अपराध ! सचमुच नहीं। मानो मैं कोई चोर डाकू होऊँ। यहाँ सब कहती हैं कि यह एडवोकेट के ऊपर निर्भर करता है।" वह कहती रही—"पिटीशन कर देना चाहिए, सब कहती हैं, व्यय अधिक अवश्य है।"

"हाँ, निश्चय ही।" नेखलूदोव बोला—"मैंने एडवोकेट से पहिले ही कह दिया है।"

"फीस से नहीं घबड़ाना चाहिए ; एडवोकेट अच्छा होना चाहिए।" वह बोली।

"मैं यथा सम्भव सबकुछ करूँगा।"

वे चुप हो गए और वह पुनः उसी ढंग से मुस्कुराई।

"मैं आपसे पूछना चाहूँगी...थोड़ा-सा पैसा यदि आप दे सकें...अधिक नहीं...दस रूबल।" वह एकाएक बोली।

"हाँ ! हाँ !" नेखलूदोव ने चकित हो कहा और अपना बटुआ टटोला।

उसने शीघ्रता से इन्सपैक्टर की ओर देखा जो कि कमरे में इधर-से-उधर घूम रहा था।

"उसके सामने मत दीजिएगा; नहीं तो वह ले लेगा।"

इन्सपैक्टर के पीठ फेरते ही नेखलूदोव ने अपना बटुआ निकाल लिया किंतु उसे नोट देने का अवकाश न मिल सका क्योंकि इन्सपैक्टर का मुँह उनकी ओर फिर हो गया इसलिए उसने उसे अपने हाथों में भींच लिया।

"यह स्त्री मर चुकी।" नेखलूदोव ने उसके सुन्दर चेहरे की ओर तुरन्त देखते हुए सोचा जो कि अब संकुचित और नीचे से भारी हो चुका था तथा जिसकी काली तिरछी आँखों में दुष्टता की झलक वर्तमान थी और जो कि कभी

नोट वाले हाथ की ओर और कभी इन्सपैक्टर की गतिविधियों की ओर दृष्टि डाल रही थी। क्षण मात्र के लिए वह हिचकिचाया।

कल रात जो शैतान उससे बातें कर रहा था उसने पुनः अपना स्वर ऊँचा किया। उसकी चेष्टा थी कि वह जिस कार्य को करना चाहता था वह उस प्रश्न से दूर हटा कर उसे उसके परिणामों एवं उस बात की ओर ले जाय जो कि व्यवहारिक थी।

"तुम इस स्त्री के साथ कुछ नहीं कर सकते," स्वर ने कहा—"यह स्त्री तो तुम्हारे गले में पत्थर की भाँति बँध कर तुम्हें डुबो देगी और तुम किसी अन्य की भी भलाई नहीं कर पाओगे। इससे तो सुन्दर यही होगा कि जितना भी तुम्हारे पास यहाँ धन है इसे दे डालो और सदा के लिए इसके हाथ जोड़ दो!" उस स्वर ने कहा। फिर भी उसे अनुभव हुआ कि अब, इसी क्षण, मेरी आत्मा में कोई अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना घट रही है—कि मेरा आंतरिक जीवन, जैसा कि था, सन्तुलन में डगमगा रहा है इसलिए एक तनिक-सा प्रयास मुझे इधर या उधर किसी भी ओर डुबो देगा। उसने उस प्रभु की सहायता माँगी जिसकी कि अनुभूति कल उसे अपनी आत्मा में हुई थी। प्रभु ने तुरन्त ही उत्तर दिया। उसने माशलोवा से सारी बातें अभी—इसी क्षण कह डालने का निश्चय कर लिया।

"कातूशा! मैं तुम्हारे पास क्षमा-याचना करने आया हूँ और तुमने मुझे कोई उत्तर नहीं दिया। क्या तुमने मुझे क्षमा कर दिया? क्या तुम मुझे कभी क्षमा करोगी भी?" उसने पूछा।

माशलोवा ने उसकी बात नहीं सुनी किंतु उसके हाथ और इन्सपैक्टर की ओर देखती रही। जब इन्सपैक्टर मुड़ गया तब उसने शीघ्रता से हाथ फैलाया, नोट लिया और अपनी पट्टी में छिपा लिया।

"यह आप कैसी बातें कर रहे हैं।" उसकी मुस्कुराहट में घृणा थी। कम-से-कम नेखलूदोव को तो यही अनुभव हुआ।

नेखलूदोव को लगा कि माशलोवा की आत्मा में मेरा कोई विरोधी है जो कि उसकी वर्तमान स्थिति का पक्ष ले रहा है और मुझे उसकी आत्मा में प्रवेश नहीं करने देता।

किंतु आश्चर्य है कि इस पर भी उसे घृणा नहीं हुई उल्टा वह किसी नवीन एवं विचित्र शक्ति से प्रेरित हो उसकी ओर खिसका। वह जानता था कि मुझे

इसकी आत्मा को सजग करना चाहिए और कि यह अत्यन्त कठिन है; किन्तु उसी कठिनाई ने उसे आकर्षित कर लिया। अब कातूशा के प्रति उसके हृदय में एक ऐसी भावना का स्फुरण हुआ जैसी कि उसने उसके अथवा किसी अन्य के प्रति कभी अनुभव नहीं की। उसकी भावनाओं में कोई स्वार्थ नहीं था—वह उससे अपने लिए कुछ नहीं चाहता था—उसकी एकमात्र इच्छा यही थी कि कातूशा इस भाँति जीवन न व्यतीत करे जैसे कि वह इस समय कर रही है; वह पुनः जाग उठे और वैसी ही बन जाय जैसी कि पहिले थी।

"कातूशा ! तुम इस तरह की बातें क्यों करती हो ? मैं तुम्हें पहिचानता हूँ, मुझे सबकुछ स्मरण है—पानोवो में बीते हुए दिन भी।"

"अब अतीत को स्मरण करने से लाभ ?" उसने रुक्षता से उत्तर दिया।

"मैं गल्ती सुधारने--अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए ही उनका स्मरण कर रहा हूँ कातूशा !" और वह उससे कहने ही जा रहा था कि मैं तुमसे विवाह कर लूँगा, किंतु उसके नेत्रों से नेत्र मिलते ही उसे उसके नेत्रों में किसी इतनी भयानक, भद्दी, घृणास्पद वस्तु की झलक दिखलाई दी कि उसे चुप होना पड़ा।

इस क्षण दर्शकगण जाने लगे थे। इन्सपैक्टर नेखलूदोव के पास आया और बोला कि समय समाप्त हो गया है। माशलोवा विदा लेने की प्रतीक्षा में चुपचाप उठी।

"नमस्कार ! मुझे अभी तुमसे बातें बहुत करनी हैं किंतु तुम देखती हो कि इस समय बहुत कठिन है।" नेखलूदोव ने कहकर अपना हाथ बढ़ाया—"मैं फिर आऊँगा।"

"मैं समझती हूँ आपने सबकुछ कह दिया।"

उसने नेखलूदोव से हाथ मिलाया किंतु दबाया नहीं।

"नहीं ! मैं तुमसे फिर किसी ऐसे स्थान पर मिलने की चेष्टा करूँगा जहाँ हम लोग बातचीत कर सकें और तब मैं तुमसे जो कहना चाहता हूँ बतलाऊँगा—वह बात अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है।"

"तब अवश्य आइए। क्यों नहीं ?" उसने उत्तर दिया और मुस्कुराई उसी मुस्क्यान से जिससे कि वह उन पुरुषों को देख मुस्कुराती जिन्हें वह प्रसन्न करना चाहती।

"मेरे लिए तुम्हारा महत्त्व अपनी बहिन से भी अधिक है।" नेखलूदोव बोला।

"यह ठीक नहीं।" उसने अपना सिर हिलाते हुए पुनः कहा और जालियों के अन्दर चली गई।

४४

इस भेंट से पूर्व नेखलूदोव ने सोचा था कि जब उसे देखा तब मैं कितना दुखी था और उसकी सहायता करने की अपनी धारणा से परिचित था, कातूशा प्रसन्न एवं आर्द्र हो उठेगी और पुनः कातूशा बन जायगी; किंतु उसे यह जानकर भय हुआ कि अब कातूशा का आस्तित्व समाप्त हो चुका है और उसका स्थान ग्रहण कर लिया है माशलोवा ने। इस परिवर्तन पर वह आश्चर्यचकित एवं भयभीत हो उठा।

सबसे अधिक आश्चर्य तो उसे इस बात पर हुआ कि कातूशा अपनी स्थिति से लज्जित नहीं थी– बन्दिनी की स्थिति से नहीं (इस पर तो वह लज्जित थी), किंतु वेश्या के रूप में अपनी स्थिति से लज्जित होना तो दूर, वह उससे सन्तुष्ट एवं गर्वित भी प्रतीत होती थी। और अब भी परिवर्तन न हो सका। कार्य करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए प्रत्येक को अपने व्यापार को अच्छा एवं महत्त्वपूर्ण समझना पड़ता है। इसलिए व्यक्ति चाहे जिस स्थिति में हो उसे साधारण मनुष्यों के जीवन का दृष्टिकोण निश्चित ही उसी के अनुरूप ढालना पड़ता है जिससे कि उसका धन्धा अच्छा एवं महत्त्वपूर्ण लगने लगे।

साधारणतया यह कल्पना की जाती है कि कोई भी चोर, खूनी, गुप्तचर या वेश्या अपने कार्य-व्यापार को बुरा समझता या समझती है और उसमें वह लज्जा का अनुभव करता या करती है। किंतु सत्य इसके विपरीत है। जिन पुरुषों के दुर्भाग्य एवं पाप की भूलों ने उन्हें किसी विशेष स्थिति में ला पटका है, कितनी ही गलत उनकी स्थिति क्यों न हो, वे जीवन का दृष्टिकोण ऐसा बनाते हैं जिससे कि उनकी स्थिति अच्छी एवं सह्य समझी जाय। जीवन के अपने दृष्टिकोणों के समर्थन के लिए ये लोग स्वभावतः ऐसे लोगों के वृत्त में रहते हैं जो उनके सदृश्य जीवन के दृष्टिकोणों में भाग लेते हैं और उसमें स्वयं हिस्सा बँटाते हैं। हमको

उन लोगों पर आश्चर्य होता है जो चोर होते हुए अपने हस्तकौशल पर दम भरते है, वेश्याएं जो अपनी दुराचारिता पर शेखी मारती हैं और हत्यारे जो अपनी क्रूरता पर गर्व अनुभव करते हैं। किंतु हमें आश्चर्य तो केवल इस कारण होता है कि उनका वृत्त, वातावरण जिसमें वे लोग रहते हैं संकुचित है और मुख्य-तया इसलिए कि हम उसके बाहर हैं। किंतु क्या हम उसी तत्व को तब नहीं देख पाते जब धनवान अपने ऐश्वर्य—अर्थात अपनी लूट का, सेनाध्यक्ष अपनी विजयों—हत्या, और उच्च पदस्थ व्यक्ति अपनी शक्ति—हिंसा का गर्व करते हैं? जीवन के दृष्टिकोणों के अर्थ का वह अनर्थ हम केवल इसलिए नहीं देखते कि उनके द्वारा बनाया हुआ वृत्त बड़ा है और हम स्वयं उस वृत्त से सम्बन्धित हैं।

इसी ढङ्ग से माशलोवा ने अपने जीवन और अपनी स्थिति के दृष्टिकोण बना लिए थे। वह वेश्या थी तथा उसे कठोर परिश्रम का दण्ड प्राप्त हुआ था और फिर भी जीवन के प्रति उसकी एक धारणा थी जिसके कारण यह सम्भव हो सका कि वह स्वयं अपने प्रति सन्तोष अनुभव कर सके, इतना ही नहीं तो अपनी स्थिति पर गर्व भी कर सके।

उसकी धारणा थी कि सबके लिए—वृद्ध, नवयुवक, लड़के, जनरल, शिक्षित एवं अशिक्षित—सबसे अच्छी बात है सुन्दर स्त्रियां के साथ लैंगिक संबंध; इसलिए सब ही पुरुष, तब भी जब कि वे अन्य वस्तुओं में संलग्न रहने का बहाना करते हैं, वास्तव में इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहते हैं। वह सुन्दर स्त्री है और यह उस पर निर्भर करता है कि वह इस इच्छा को संतुष्ट करे या न करे और इसलिए वह एक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण प्राणी है। उसका सम्पूर्ण जीवन—पहिला एवं वर्तमान—इसी धारणा के अनुरूप था।

अपने जीवन के विगत दस वर्षों में, जहाँ कहीं भी वह रही, सबही पुरुषों को—लगाकर नेखलूदोव और पुलिस अधिकारी से बंदीगृहों के जेलरों तक—उसकी आवश्यकता थी। क्योंकि वह ऐसे व्यक्तियों की ओर ध्यान ही नहीं देती थी जिन्हें कि उसकी आवश्यकता नहीं थी। इसलिए उसे समस्त संसार वासनातुरों का जमघट प्रतीत हुआ। जो कि उसे हर संभव प्रयत्न, धोका, हिंसा, क्रय, अथवा चालाकी से प्राप्त करने की चेष्टा में रत थे।

यह था तब माशलोवा का जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण; और इस दृष्टि-कोण के अनुसार वह किसी रूप में हीन नहीं थी, वरन् एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्राणी थी। और माशलोवा इस दृष्टिकोण का अन्येतर सब दृष्टिकोणों से अधिक

मूल्य आँकती; मूल्य आँकने के अतिरिक्त वह कर ही क्या सकती थी क्योंकि दृष्टिकोण के बदल जाने से उसके द्वारा प्रदत्त महत्त्व ही समाप्त हो जाता। और अपने जीवन का महत्त्व समाप्त न होने देने के लिए वह स्वभावतः ही उन लोगों में मिल जाती जिनका जीवन के प्रति उसके समान ही दृष्टिकोण था। यह अनुभव करते ही कि नेखलूदोव मुझे दूसरे संसार में ले जाना चाहता है उसने देखा कि वहाँ मैं अपने जीवन के महत्त्व को ही खो बैठूँगी साथ ही चित्त की सावधानी एवं स्वाभिमान भी चला जायगा अतः उसने नेखलूदोव को रोक दिया। इसी कारण अपने यौवन के समागम काल की स्मृतियों एवं नेखलूदोव के साथ अपने पहिले सम्बन्धों को उसने अपने मस्तिष्क से निकाल बाहर किया। वे स्मृतियाँ उसके संसार के प्रति आज के दृष्टिकोणों से मेल नहीं खाती थीं और इसलिए उसके मस्तिष्क से बिलकुल निकल चुकी थीं अथवा कहीं दबी और अछूती पड़ी थीं, बन्द और प्लास्टर चढ़ी थीं ताकि वह बच न सकें ठीक मक्खियों की भाँति जो कि अपने परिश्रम के फल की रक्षा के लिए कभी-कभी मोम के कीड़ों के घोंसले को प्लास्टर कर देती हैं। इसलिए वर्तमान नेखलूदोव वह पुरुष नहीं था जिसके साथ उसने कभी पवित्र प्रेम किया था, किंतु वह तो मात्र एक धनवान पुरुष था जिसका कि वह लाभ उठा सकती थी और जिससे कि लाभ उठाना ही चाहिए था और जिसके साथ वह वैसे ही सम्बन्ध रख सकती थी जैसे कि अन्य साधारण पुरुषों से।

"नहीं! मैं उसको मुख्य बात नहीं बतला पाया।" नेखलूदोव ने अन्य दर्शकों के साथ बाहर जाते हुए सोचा—"मैंने उसे नहीं बतलाया कि मैं तुमसे विवाह कर लूँगा; मैंने उससे नहीं कहा किंतु कहूँगा मैं अवश्य।"

द्वार पर खड़े दो वार्डरों ने दर्शकों की पुनः गणना कर एवं उनको हाथों से स्पर्श कर बाहर जाने दिया ताकि कोई अन्य बाहर न जा सके और न कोई कारागृह में ही रह जाए। इस बार कन्धे के स्पर्श से नेखलूदोव क्रुद्ध नहीं हुआ—उसने उस पर ध्यान तक न दिया।

४५

नेखलूदोव अपने समस्त बाह्यजीवन को परिवर्तित करना चाहता था; नौकरों को अलग करना, बड़े मकान को खाली करना और छोटे मकान में जाना;

किंतु अग्रफेना पेत्रोव्ना ने बतलाया कि सर्दियों से पूर्व कुछ भी बदलने से कोई लाभ नहीं। ग्रीष्म ऋतु के लिए नगर में कोई भी अपना मकान किराए पर नहीं देगा; और फिर भी उसे कहीं-न-कहीं तो वस्तुओं को रखना एवं रहना है ही। और इसलिए अपने जीवन के क्रम (उसका तात्पर्य था अधिक सादगी से रहना जैसे कि विद्यार्थी रहते हैं) को बदलने के उसके प्रयास व्यर्थ जाएँगे। सब वस्तुएँ ज्यों की त्यों ही नहीं रहीं तो मकान एकाएक नवीन गतिविधियों से व्यस्त हो उठा। ऊन अथवा फर की प्रत्येक वस्तु धूप लगाने एवं साफ करने के लिए निकाली गई। इस कार्यकलाप में द्वारपाल, लड़का, रसोइया और स्वयं कोरने भी लग गया। सब भाँति के विचित्र फर, जो कभी प्रयोग में नहीं आए थे, एवं विभिन्न वर्दियाँ निकाल कर एक पंक्ति में लटका दी गईं, तब चटाइयाँ और फर्नीचर लाया गया, और द्वारपाल तथा लड़के ने अपनी पुष्ट बाहों तक आस्तीनें चढ़ाईं और उन वस्तुओं को ताल में पीटने लग पड़े तथा कमरों में फिनायल की गंध भर गई।

जब भी नेखलूदोव आँगन से जाता आता, अथवा खिड़की में बाहर झाँकता तथा इन कार्यकलापों को देखता तब ही उसे इन सब बिल्कुल अनुपयोगी वस्तुओं के ढेर पर आश्चर्य होता। नेखलूदोव के विचार से उनका मात्र उपयोग था अग्रफेना पेत्रोव्ना, कोरने, द्वारपाल, लड़के और रसोइया के लिए व्यायाम देना।

"किंतु अपने जीवन के क्रम बदलने का अभी कोई लाभ नहीं", उसने सोचा "जबतक कि माशलोवा का केस का निर्णय या उसका निर्वासन न हो जाय। इसके अतिरिक्त, यह बहुत कठिन भी है। हाँ, जब वह स्वतन्त्र हो जायगी, तब यह क्रम अपने आप बदल जायगा।"

निश्चित दिन पर नेखलूदोव एडवोकेट फनारिन के भव्य-भवन पर पहुँचा जो कि बड़े ताड़वृक्षों और अन्य पौधों तथा अद्‌भुत पर्दों से सुसज्जित था : वास्तव में, सब व्ययवान सुख-सुविधा बेकार धन का स्वामित्व प्रदर्शित करती हैं (बिना परिश्रम के प्राप्त किया धन) और जिन्हें कि केवल वे ही प्रदर्शित करते हैं जो अकस्मात ही धनवान हो जाते हैं। प्रतीक्षागृह में डाक्टरों के यहाँ की भाँति उसे कितने ही उदास चेहरे वाले व्यक्ति मेज के पास बैठे हुए दिखलाई दिए। मेज पर चित्त बहलाने के लिए कितने ही सचित्र पत्र रखे हुए थे। प्रतीक्षक एडवोकेट से मिलने के लिए अपनी पारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। कमरे में ऊँची डेस्क पर

एडवोकेट का सहायक बैठा था। नेखलूदोव को पहिचानते ही वह उसके पास आया और बोला कि मैं अभी आपके आगमन की सूचना एडवोकेट साहब को दिए देता हूँ। किंतु सहायक के पहुँचने से पूर्व ही प्रकोष्ठ का द्वार खुला और उत्साहपूर्ण स्वर सुनाई दिए। वे स्वर थे प्रौढ़ एवं दृढ़ अङ्ग वाले व्यापारी, जिसका चेहरा लाल और मूँछे मोटी थीं तथा जिसने बिल्कुल नए कपड़े पहिन रखे थे एवं स्वयं फनारिन के। दोनों के ही चेहरों पर वही भाव था जो कि साधारणतया उन व्यक्तियों के मुख पर होता है जो कि किसी लाभप्रद सोदे का अभी निर्णय करके चुके हों किंतु वह कार्य पूर्ण सत्यता का न हो।

"देखिए श्रीमान्‌जी यह तो आपकी ही भूल है।" फनारिन ने हँसते हुए कहा।

"हम में से कोई देवदूत नहीं। यदि हम पाप नहीं करते तो सब स्वर्ग में न चले जाते।"

"ओह, जी हाँ। यह सब जानते हैं।" और दोनो ही बनावटी ढङ्ग से हँसे।

"ओह प्रिन्स नेखलूदोव ! अन्दर पधारिए।" उसे देखते ही फनारिन ने कहा और व्यापारी की ओर सिर हिलाकर नेखलूदोव को अपने मंत्रणाकक्ष में लिवा ले गया जो कि बहुत ही व्यवस्थित ढङ्ग से सजा हुआ था।

"क्या आप सिगरेट नहीं पीएँगे ?" एडवोकेट ने नेखलूदोव के सामने बैठकर, उठने वाली मुस्कान को दबाने की चेष्टा करते हुए कहा। फिर भी अभी हाल के सौदे की सफलता से वह उत्तेजित था।

"धन्यवाद ! मैं माशलोवा के केस के सम्बन्ध में आया हूँ।"

"जी, हाँ ! बिल्कुल ठीक ! किंतु ओह ये मोटे सेठ कितने शैतान होते हैं !" वह बोला। "आपने उस व्यक्ति को यहाँ देखा। अरे ! उसके पास एक करोड़ बीस लाख रूबल हैं और वह कहता है 'नहीं हैं' और यदि वह आपसे पच्चीस ले सकता है तो आपसे छीन ही लेगा चाहे उसको दाँतों से पकड़कर ही क्यों न निकालने पड़ें।"

"वह कहता है 'नहीं हैं' 'और घण्टा' और आप कहते हैं पच्चीस ले सकता है," नेखलूदोव ने इस व्यक्ति के प्रति घृणा की अविजेय भावना से सोचा जो अपने

स्वतन्त्र एवं सरल व्यवहार से यह दिखलाना चाहता था कि नेखलूदोव और वह एक ही मार्ग के यात्री है जबकि दूसरा मुवक्किल अन्य मार्ग का पथिक है।

"वह तो मुझे मारे डाल रहा था—भयानक समाजद्रोही। मुझे अपना मस्तिष्क ताजा कर लेना चाहिए।" एडवोकेट विषय से असम्बन्धित बातों के कहने की क्षमा याचना-सी करते हुए बोला, "अच्छा! तो आपके केस के विषय में कल मैंने उसको ध्यान से पढ़ा था, और तुर्गनेव के शब्दों में मैं उसके तथ्य से सहमत नहीं हूँ। मेरा तात्पर्य है कि उस एडवोकेट के बच्चे ने अपील के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ा है।"

"अच्छा फिर क्या हो?"

"एक मिनट।" वह अपने सहायक से जो अभी अन्दर आया था, बोला "उससे कह दो कि मैं अपने कथन पर दृढ़ रहता हूँ। यदि वह कर सकता है तो ठीक है अन्यथा कोई बात नहीं।"

"किन्तु वह सहमत नहीं होगा।"

"अच्छा तो कोई बात नहीं।" और उसका प्रसन्न एवं शांत मुखमंडल उदास एवं क्रुद्ध हो गया।

"देखा आपने! और कहा यह जाता है कि हम एडवोकेटों को तो पोल में रुपया मिलता है।" कुछ देर बाद अपने चेहरे पर पहली-सी ही प्रसन्नता एवं प्रियता का भाव लाकर वह बोला, "मैंने एक दिवालिए कर्जदार को झूठे आरोप से क्या बचा लिया, जान के लिए आफत ही मोल लेली। अब तो सब ही मेरे पास आकर एकत्रित होने लगे। फिर भी ऐसे प्रत्येक केस में परिश्रम बहुत पड़ता है। क्या हम लोग भी किसी लेखक के शब्दों में 'कलमदान में माँस के टुकड़े नहीं छोड़ते'?"

"और जहाँ तक आपके केस का प्रश्न है या कहना चाहिए कि जिसमे आप रुचि ले रहे हैं—वह बहुत ही गंदे ढङ्ग से किया गया है। अपील के लिए कोई आधार नहीं है। फिर भी" वह कहता रहा "बस हम प्रयत्न ही कर सकते हैं कि दण्ड समाप्त हो जाय। मैंने ये बातें नोट की हैं।"

उसने लिखे हुए कितने ही कागज निकाले और अरुचिकर कानूनी वाक्यों को अस्पष्ट बोलते हुए कुछ वाक्यों पर विशेष बल दे वह जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा।

"अपील कोर्ट, फौजदारी अदालत, आदि, आदि। निर्णय आदि के अनुसार, जूरी के निर्णय, आदि आदि फलाँ-फलाँ व्यापारी स्मेलकोव की विष द्वारा मृत्यु के कारण माशलोवा को अपराधिनी ठहराया और उसको दफा १४५४ पेनल कोड के अनुसार दासवृत्ति एवं सश्रम कारावास का दण्ड दिया गया है आदि आदि।"

यहाँ वह रुका। इसका आदी होने पर भी उसे अपनी रचना के सुनने में स्वयं आनन्द आ रहा था।

"यह वाक्य सर्वाधिक स्पष्ट न्यायिक खण्डन एवं त्रुटियों का फल है।" प्रभावपूर्ण ढङ्ग में वह कहता रहा "'और इसके खण्डन के भी आधार हैं। सर्वप्रथम स्मेलकोव की आँतों की डाक्टरी जाँच की रिपोर्ट की पढ़ंत में प्रेसीडेन्ट ने आरम्भ ही में बाधा डाली।' यह पहला पाइन्ट है।"

"किन्तु इस पढ़ंत के लिए अभियोक्ताओं की ओर से प्रश्न उठाया गया था।" नेखलूदोव ने आश्चर्य से कहा।

"इससे अन्तर नहीं पड़ता। बचाव के लिए भी इस पढ़ंत की माँग करने के कारण हो सकते थे।"

"ओह! किन्तु इसके लिए कोई भी कारण नहीं हो सकता था।"

"यह अपील का एक आधार है। हाँ तो 'दूसरा'" वह पढ़ता रहा "जब माशलोवा के एडवोकेट ने बचाव के लिए अपने भाषण में माशलोवा के व्यक्तित्व के गुण-दोष बतलाने की इच्छा से उसके पतन के कारणों को बताया तब प्रेसीडेन्ट ने उससे कहा कि वह विषय का अतिक्रमण कर रहा है ऐसा कहकर उसने उसके कार्य में बाधा प्रस्तुत की। फिर भी, सीनेट के बार-बार बतलाने के अनुसार, अपराधी के विशिष्ट गुणों की व्याख्या और उसके दैनन्दिन जीवन के नैतिक दृष्टिकोण का फौजदारी केसों में प्रथम महत्त्व होता है चाहे वह दायित्व के प्रश्न के निर्णय में केवल मार्ग दर्शक ही क्यों न हो।' यह पॉइन्ट नं० दो है।" उसने नेखलूदोव की ओर देखते हुए कहा।

"किंतु वह बोला तो इतने बुरे ढङ्ग से था कि किसी की समझ में ही कुछ न आ सका।" नेखलूदोव ने पहिले से भी अधिक आश्चर्य में कहा।

"वह तो मूर्ख है और वास्तव में समझदारी की बात की आशा तो उससे की ही नहीं जा सकती थी।" फनारिन ने हँसते हुए कहा—"खैर, फिर भी यह

अपील का कारण बन सकती है। 'तीसरे, प्रेसीडेन्ट ने अन्त में क्रिमिनल कोर्ट की धारा ८०१ सैक्सन १ में स्पष्ट होते हुए भी पंचों को यह नहीं बतलाया कि कौन से न्यायिक पाइन्ट अपराध को निर्माण करते हैं। और यह नहीं बतलाया कि स्मेल-कोव को विष प्रयोग करने का तथ्य माशलोवा द्वारा स्वीकार किए जाने पर, पञ्चों को अधिकार था कि वह हत्या का अपराध माशलोवा को लगावें या न लगावें क्योंकि स्मेलकोव को मारने के इरादों का प्रमाण का अभाव था। और पंचों को अधिकार था कि वह उसे केवल असावधानी के प्रति दोषी ठहरा सकते थे, जिसके कारण व्यापारी की मृत्यु हो गई, जिसकी कि उसकी इच्छा नहीं थी।' यह मुख्य पॉइंट है।"

"जी हाँ! किंतु यह हम लोगों को स्वयं मालूम होना चाहिए था। यह हम लोगों की कमी थी।"

"और अब चौथा पाइन्ट," एडवोकेट ने कहना प्रारम्भ किया—"पंचों द्वारा दी गई प्रश्नोत्तरी में स्पष्ट विरोध था। माशलोवा पर स्मेलकोव को वासना के वशीभूत ही विष देने का आरोप लगाया गया है, क्योंकि हत्या के लिए बस उसका यही निमित्त रह जाता है। पंचों ने अपने निर्णय में लूटने के प्रति और बहुमूल्य वस्तुओं को चुराने के अभियोग से बरी कर दिया है। पंच उसे हत्या के अभियोग से भी बरी करना चाहते थे किंतु मात्र गलतफहमी से जो कि प्रेसीडेन्ट के उपसंहार बतलाने की अपूर्णता के कारण हुई, उस प्रश्नोत्तरी के उत्तर में यह व्यक्त करना भूल गए। इसलिए जूरी का इस प्रकार का यह उत्तर क्रिमिनल कोर्ट प्रोसीजर की धारा ८१६– एवं ८०८ को लागू करने की माँग करता है, अर्थात प्रेसीडेन्ट की पंचों को उनकी भूल पर टीका, और दूसरी बैठक तथा बंदिनी के अपराध के प्रश्न पर निर्णय।'"

"तब फिर प्रेसीडेन्ट ने ही क्यों नहीं कर दिया?"

"मैं भी स्वयं जानना चाहता हूँ कि उसने क्यों नहीं किया।" फनारिन ने हँसते हुए कहा।

"तब तो इस भूल को सीनेट अवश्य ही सुधार देगी?"

"यह उस पर निर्भर करता है जो कि उस समय उसका सभापतित्व करेगा। खैर, अब यह है। मैंने आगे लिखा है" वह तेजी से पढ़ता रहा, "इस प्रकार के निर्णय से कोर्ट को कोई अधिकार नहीं रह जाता है कि वह माशलोवा

को एक अपराधिनी की भाँति दंड दे सके और क्रिमिनल कोर्ट प्रोसीजर की धारा ७७१ के उपनियम ३ को वह उसके केस में लागू नहीं कर सकती। यह हमारे फौजदारी कानून के मूल सिद्धान्तों का निश्चित और पूर्ण हनन है। अब तक कहे गए आधारों पर मैं आपसे अपील करता हूँ, आदि-आदि, के क्रिमिनल कोर्ट प्रोसीजर की धारा ९०९, ९१०, ९१२ एवं ९२८ के उपनियम दो के अनुसार इस निर्णय को रद्द किया जाय—और यह केस इसी कोर्ट के दूसरे भाग में और जाँच होने के लिए भेज दिया जाय।' वहाँ जो हो सकता है किया जायगा, किंतु स्पष्ट कह दूँ मुझे सफलता की बहुत कम आशा है यद्यपि यह इस बात पर निर्भर करता है कि सीनेट में कौन-२ से सदस्य उपस्थित होते है। यदि आपका वहाँ प्रभाव है तो आप चेष्टा कर सकते हैं।"

"थोड़े सों को तो मैं जानता हूं।"

"अच्छा; तब आपको शीघ्रता करनी चाहिए। अन्यथा वे सब अपने मस्सो का इलाज कराने चले जाएँगे। फिर आपको तीन माह तक उनके लौटने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। फिर, यदि असफलता मिलती है तो सम्राट् के सम्मुख अपील करने की सम्भावनाएँ भी बढ़ जाती हैं। वहाँ भी टट्टी की ओट में शिकार खेलना पड़ेगा। और उस विषय में भी मैं आपका साथ दूँगा—मेरा अर्थ है शब्द चयन, पिटीशन, ओट के पीछे नहीं।"

"धन्यवाद, अच्छा आपका पारिश्रमिक ?"

"मेरा सहायक आपको पिटीशन दे देगा और बतला देगा।"

"एक बात और। प्रोक्योरर ने मुझे इस स्त्री को कारागृह में देखने का पारपत्र दिया था किंतु वहाँ के अधिकारियों ने मुझे बतलाया है कि यदि मैं साधारण कमरे से अतिरिक्त तथा दुबारा भेंट करना चाहूँ तो मुझे गवर्नर से आज्ञा-पत्र लाना होगा। क्या यह आवश्यक है ?"

"हाँ. मेरा भी यही विचार है। किंतु इस समय गवर्नर यहाँ है नहीं; उसके स्थान पर वाइस-गवर्नर है और वह इतना वज्र मूर्ख है कि आपको मुश्किल मे ही सफलता मिलेगी।"

"क्या मेलिन्कोव है ?"

"जी।"

"मैं उसे जानता हूँ।" नेखलूदोव बोला और जाने के लिए उठा।

तभी एक अत्यन्त कुरूप, अस्थिल, चिपटी छोटी नाक वाली पीली पड़ी हुई स्त्री कमरे में घुसी। यह एडवोकेट की पत्नी थी, जिसे कि अपनी कुरूपता से तनिक भी शिकायत नहीं थी।

उसने अलंकार भी अपनी जैसी ही मौलिकता से पहिने हुए थे। लगता था कि वह किसी पीली और हरी चीज में, जो कि मखमल और सिल्क की बनी हुई थी, लिपटी हुई है। वह कमरे में विजय के साथ घुसी, उसके पीछे हरे से रंग का एक लम्बा व्यक्ति मुस्कुराता हुआ आया। उसने एक कोट पहिन रखा था तथा टाई बाँध रखी थी। यह एक लेखक था। नेखलूदोव ने उसे देखकर पहिचान लिया।

"अनातोले!" वह दूसरे कमरे का द्वार खोलते हुए बोली—"आपको मेरे साथ आना चाहिए। आप है सीमच इवानोविच जिन्होंने अपनी कविता सुनाने का वचन दिया है और आपको हमारे साथ चल कर गारशीन के विषय में तो अवश्य बातें करनी चाहिए।"

नेखलूदोव कमरे से निकलने ही वाला था कि उसने अपने पति से कुछ कानाफूसी की और उसकी ओर तुरन्त ही मुड़कर बोली —"क्षमा कीजिएगा प्रिन्स! मैं आपसे परिचित हूँ मेरी प्रार्थना है कि आप रुकें और हमारे साहित्यिक मैटनी मे भाग लें। अत्यन्त ही रुचिकर होगा। अनातोले बहुत अच्छा कहते हैं।"

"आप देखती हैं मुझे कितना काम करना है।" फनारिन ने हाथ फैला कर अपनी पत्नी को इङ्गित करते हुए मुस्कुराकर कहा। मानो वह दिखलाना चाहता हो कि इतने आकर्षक प्राणी के लिए बाधा देना कितना असम्भव था।

नेखलूदोव ने उदास एवं गम्भीर मुख से एडवोकेट की पत्नी द्वारा प्रदर्शित सम्मान का अत्यन्त विनम्रता से धन्यवाद दिया और निमंत्रण को अस्वीकार कर वह प्रकोष्ठ से बाहर चला गया।

"कितना अस्वस्थ पुरुष है!" उसके चले जाने पर एडवोकेट की पत्नी बोली।

प्रतीक्षागृह में सहायक ने उसे लिखित पिटीशन सौंप दिया और कहा कि पारश्रमिक एक हजार रूबल होगा और बतलाया कि श्री फनारिन इस प्रकार के केस नहीं लिया करते किंतु यह तो केवल आपके प्रति आभार प्रगट किया है।

"और इस पिटीशन के विषय में। हस्ताक्षर किसको करने हैं?"

"बंदिनी स्वयं करे और यदि इसमें असुविधा हो तो उसकी ओर से हस्ताक्षर का अधिकार मिल जाने पर श्रीमन् फनारिन ही कर देंगे।"

"ओह नहीं! मैं उसके पास पिटीशन ले जाऊँगा और उसके हस्ताक्षर करा लूंगा।" नेखलूदोव ने कहा।

उसे नियत दिन से पूर्व ही मिलने का बहाना मिल गया इससे व हप्रसन्न हो गया।

४६

नियमित समय पर कारागृह के बरामदे में वार्डर की सीटी सुनाई दी कोठरियों के लौह द्वार खड़खड़ाए, नंगे पाँवों की पटर-पटर और एड़ियों की कटकट हुई। मेहतरों का काम करने वाले बंदी बरामदे की वायु को दुर्गन्धों से दूषित करते हुए निकले। बन्दीगण हाथ मुँह, धो कपड़े पहिनकर निरीक्षण के लिए बाहर निकले फिर अपनी २ चाय के लिए खौलता हुआ जल लेने गए।

नाश्ते के समय सर्वत्र कोठरियों में अत्यन्त रुचिकर वार्तालाप चला। यह उन दो बन्दियों के विषय में था जिन्हें कि आज वेत्र-दंड (बेंत मारने की सजा) दिया जाना था। उनमें से एक था वेसिलियेव, अल्प शिक्षा प्राप्त नवयुवक लिपिक जिसने ईर्ष्या के वशीभूत हो अपनी स्वामिनी की हत्या कर दी थी। उसके सहबंदी उससे स्नेह करते थे क्योंकि वह प्रसन्नचित्त एवं दयालु था और था कारागृह के अधिकारियों के प्रति अपने व्यवहार में दृढ़। वह नियमों से परिचित था और उनकी पूर्ति के लिए अड़ जाता। अतः अधिकारीगण उसे नहीं चाहते थे।

तीन सप्ताह पूर्व एक वार्डर ने एक मेहतर को पीट दिया क्योंकि नई वर्दी पर उससे शोरवा फैल गया था। वेसिलियेव ने यह कह कर मेहतर का पक्ष लिया कि बन्दी को पीटना नियम विरुद्ध है।

"मैं तुम्हें नियम सिखलाऊँगा।" वार्डर क्रोधित हो वेसिलियेव को गाली देता हुआ बोला। वेसिलियेव ने उसे भी उसी भाँति उत्तर दिया—वार्डर उसे मारने ही जा रहा था कि वेसिलियेव ने उसके हाथ पकड़ लिए और उन्हें दो-तीन क्षण तक कस कर पकड़े रहा और फिर उसे धक्का देकर द्वार से बाहर कर दिया।

वार्डर ने इन्सपैक्टर से शिकायत कर दी जिसने कि वेसिलियेव को तनहाई में रखने का आदेश दे दिया।

तनहाई की कोठरियाँ बाहर से बन्द अँधेरे कमरों की पंक्तियां थीं एवं उनमें न तो चारपाई थी, न मेज और न कुर्सियाँ ही अतः अपराधी को गदे फर्श पर ही बैठना अथवा लेटना पड़ता। वहाँ चूहे बहुत थे और वे बंदियों के ऊपर दौड़ते। चूहे इतने निडर थे कि बंदियों की रोटियाँ चुरा लेते और यदि कोई उन्हें रोकता तो वे रोकने वाले पर आक्रमण कर बैठते। वेसिलियेव ने कहा कि वह तनहाई की कोठरी में नही जायगा क्योंकि उसने कोई अनुचित कार्य नहीं किया है; किंतु उन्होंने बल प्रयोग किया। तब वह झगड़ने लगा और दो बंदियो ने उसे वार्डरों से छुड़ाने में सहायता की। सारे वार्डर एकत्रित हो गए और उनमें से एक था पेत्रोव, जो अपनी शक्ति के लिए प्रसिद्ध था।बंदियों को गिरा दिया गया और उसे तनहाई की कोठरियों में बंद कर दिया गया। तुरंत ही गवर्नर को सूचना दे दी गई कि विद्रोह की भाँति ही कुछ हो गया है और उसने दो मुख्य अपराधों को वेत्र-दंड घोषित कर दिया। वेसिलियेव एवं भिखमंगा नेपोमनी—आश्ची—प्रत्येक को वर्च की छड़ी से तीस-तीस वेत्र।

स्त्रियों के दर्शक भवन में वेत्र-दंड दिया जाने वाला था।

कारागृह में सायं से ही यह समाचार सर्वत्र व्याप्त था और बड़े उत्साह से इस पर सभी कोठरियों में वार्ता हो रही थी।

कोराबिलियोवा, खोरोशावका, फेदोशिया और माशलोवा अपने कोने में पास बैठी चाय पी रही थीं। वे सब ही वोदका पीने के कारण उत्तेजित एवं क्रोधित थीं क्योंकि माशलोवा के पास धन की छूट थी इसलिए वह अपनी साथिनों से उदारता से व्यवहार करती।

"उसने विद्रोह अथवा ऐसा कुछ नहीं किया।" कोराबिलियोवा ने वेसि-लियेव के विषय में अपने मजबूत दाँतों से चीनी का छोटा टुकड़ा चबाते हुए कहा—"उसने अपने लँगोटिया यार का पक्ष ही तो लिया था क्योंकि आजकल बंदियों को पीटना नियम विरुद्ध है।"

"मैंने सुना है कि वह बहुत अच्छा पुरुष है।" फेदोशिया ने तख्ते की चारपाई के, जिस पर केतली रखी थी, सामने लकड़ी के लट्ठे पर बैठे हुए कहा।

"अच्छा अब, यदि तुम उससे पूछो," चौकीदार की पत्नी ने माशलोवा से

कहा ('उससे' से उसका तात्पर्य था नेखलूदोव से)।

"मैं उससे कह दूँगी। वह मेरे लिए सबकुछ कर सकता है।" माशलोवा ने अपना सिर हिलाते और मुस्कुराते हुए कहा।

"हाँ ! लेकिन वह अब आएगा कब ? और वे तो उन्हें पकड़ कर लाने के लिए जा भी चुके।" फेदोशिया ने कहा—"यह बहुत भयानक है।" और आह भरी

"मैंने गाँव में देखा है इन लोगों ने एक किसान को बुरी तरह बेंत मारे। मेरे श्वसुर ने मुझे अपने गाँव भेजा था। मैं गई और वहाँ..." चौकीदार की पत्नी ने अपनी लम्बी गाथा प्रारम्भ की। उनके ऊपर के बरामदे से आने वाली जूतों और बातों की आवाजें उसकी गाथा में व्यतिक्रम उपस्थित कर रही थीं।

स्त्रियाँ शांत थीं और बैठी सुन रही थीं।

"वे शैतान झटका देकर उसे खींच रहे हैं !" खोरोशावका बोली—"वह उसे मार डालेंगे, मार डालेंगे। वह झुकने का नहीं और वार्डर उससे क्रूरता का व्यवहार करेंगे।"

फिर सीढ़ियों के ऊपर शांति छा गई, और चौकीदार की पत्नी ने अपनी गाथा समाप्त कर दी कि जब मैं खलिहान में गई और वहाँ मैंने उसमें बेंत पड़ते हुए देखे तो मैं इतनी भयभीत हो गई कि मेरा कलेजा मुँह को आ गया और-और, खोरोशावका ने बतलाया कि शिचेगलोव में किस तरह बेंत पड़े और उसने उफ़ तक न की। तब फेदोशिया ने चाय का सामान हटा दिया और कोराबिलियोवा और चौकीदार की पत्नी ने अपना सीना-पिरोना सम्हाल लिया। माशलोवा उदास एवं व्यथित हो घुटनों पर हाथ रखे अपने बिस्तरे पर बैठ गई। वह लेटना ही चाहती थी कि स्त्री वार्डर ने उसे कार्यालय में आकर एक दर्शक से मिलने के लिए पुकारा।

"अच्छा ध्यान रखना और उससे हम लोगों के विषय में कहना अवश्य, भूल मत जाना।" वृद्धा (मेन्शोवा) ने माशलोवा से कहा जब कि वह धुँधले दर्पण के सम्मुख अपने सिर पर रूमाल बाँध रही थी।

"हमने मकान में आग नहीं लगाई किंतु उस पिशाच ने स्वयं ही लगाई थी; उसके कारीगर ने उसे आग लगाते देखा था और इस बात को अस्वीकार करते हुए उसकी आत्मा को दुख नहीं हुआ। तनिक उससे कह देना कि वह मेरे मीत्री से मिल ले। मीत्री इसके बारे में सब सीधा और साफ बतला देगा। तनिक

सोचो तो हम तो कारागृह में बन्द पड़े हैं जब हमने स्वप्न में भी बुरा नहीं किया। और वह पिशाच आराम से बैठा दूसरे की पत्नी के साथ आनन्द कर रहा है।"

"यह कोई कानून नहीं है।" कोराबिलियोवा बोली।

"मैं कह दूँगी—कह दूँगी।" माशलोवा ने उत्तर दिया—"मान लो मैं एक प्याली और ले लूँ, बस साहस बनाए रखने के लिए।" उसने आँख मार कर आगे कहा। तब कोराबिलियोवा ने वोदका का आधा कप भर कर माशलोवा को दिया। वोदका पी तथा मुँह पोंछ कर अपने शब्द दोहराती हुई—"बस साहस बनाए रखने के लिए।" वह वार्डर के पीछे बरामदे से सिर हिलाती और प्रसन्नता से मुस्कुराती चली गई।

४७

नेखलूदोव को हॉल में प्रतीक्षा करते काफी समय हो गया था।

कारागृह में पहुँचते ही उसने प्रवेश द्वार की घण्टी बजाई और वहाँ ड्यूटी पर खड़े वार्डरों को उसने प्रोक्योरर से लिया हुआ प्रवेश-पत्र दिया।

"आप किससे मिलना चाहते है ?"

"बंदिनी माशलोवा से।"

"इस समय तो नहीं मिल सकते। इन्स्पैक्टर साहब व्यस्त हैं।"

"क्या वे कार्यालय में हैं ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"नहीं, यहां दर्शक-भवन में।" वार्डर बोला। वह कुछ भ्रम से में पड़ गया प्रतीत होता था।

"क्यों, क्या आज मिलाई का दिन है ?"

"नहीं। दूसरा ही कार्य है।"

"मुझे उनसे मिलना है। क्या करना चाहिए ?" नेखलूदोव बोला।

"जब वह बाहर आएँ आप उनसे कह दीजिएगा—थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिए।" वार्डर बोला।

तब ही चिकने, चमकदार मुँह वाला एक सार्जेन्ट-मेजर बगल के द्वार से

निकला। उसकी मूँछें तम्बाकू के धुएँ से पूरित थीं और उसकी वर्दी पर सुनहरी रस्सियाँ लगी हुई थीं। उसने वार्डर से क्रोधित स्वर में कहा :

"किसी को यहाँ अन्दर आने देने से तुम्हारा तात्पर्य ? कार्यालय में"

"मुझे बतलाया गया है कि इन्सपैक्टर साहब यहाँ हैं।" नेखलूदोव ने सार्जेन्ट-मेजर के व्यवहार में घबड़ाहट देखकर कहा।

तभी अन्दर का द्वार खुला और गर्मी से व्याकुल पसीनों में तर पेत्रोव बाहर आया।

"वह याद रखेगा।" सार्जेन्ट-मेजर की तरफ मुड़ते हुए वह बड़बड़ाया।

सार्जेन्ट ने दृष्टि से नेखलूदोव की ओर इंगित किया और भौहें चढ़ाए पेत्रोव पीछे के दरवाजे से चला गया।

"कौन याद रखेगा ? ये सब इतने परेशान क्यों हैं ? सार्जेन्ट-मेजर ने उसकी ओर इंगित क्यों किया ?" नेखलूदोव ने सोचा।

सार्जेन्ट मेजर ने नेखलूदोव को सम्बोधित करते हुए फिर कहा "आप यहाँ नहीं मिल सकते। कृपाकर कार्यालय में चले जाइए।"

नेखलूदोव सार्जेन्ट मेजर के अनुसार जाने ही वाला था कि पीछे के द्वार से इन्सपैक्टर निकला। वह अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से अधिक व्यग्र दिखलाई देता था तथा निरन्तर निश्वासें छोड़ रहा था। नेखलूदोव को देखते ही वह वार्डर की ओर मुड़ा।

"फेदोतोव स्त्री वार्ड से पाँच नं० की कोठरी की माशलोवा को कार्यालय में लिवा लाओ।"

"क्या आप कृपाकर इस ओर पधारेंगे ?" उसने नेखलूदोव की ओर मुड़ते हुए कहा। वे एक अत्यन्त ढलुआ सीढ़ी पर चढ़े और एक खिड़की वाले कमरे में घुसे। इन्सपैक्टर बैठ गया।

"मुझ पर बहुत कार्यभार है, बहुत कार्यभार।" उसने सिगरेट निकालते समय पुनः नेखलूदोव को सम्बोधित करते हुए कहा।

"आप बहुत थक गए प्रतीत हो रहे हैं।" नेखलूदोव बोला।

"सारी नौकरी से ही थक गया—कर्तव्य अत्यन्त पीड़ादायक हैं। हर कोई चाहता है कि मेरा दुर्भाग्य कम हो; किंतु उल्टा बढ़ जाता है; मैं केवल यही सोचता

रहता हूँ कि कैसे पिंड छूटे। भारी, भारी कर्तव्य !"

नेखलूदोव नहीं जानता था कि इन्सपैक्टर की विशेष कठिनाइयाँ क्या थीं, किंतु उसने देखा कि आज वह अत्यन्त ही निराश एवं विषादयुक्त अवस्था में था और करुणा की अपेक्षा करता था।

"हाँ, मुझे समझना चाहिए कि आप पर बहुत कार्यभार है।" वह बोला, "आप इस स्थान पर क्यों कार्य करते हैं ?"

"मेरे पास परिवार तो है किंतु अन्य कोई साधन नहीं।"

"किंतु जब यह इतना कठिन है...।"

"खैर, फिर भी, आप जानते हैं, इससे कोई लाभ तो हो सकता है। मैं यथाशक्ति सुविधा देता हूँ। मेरे स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति होता तो बिल्कुल भिन्न ही व्यवहार करता। यहाँ हमारे पास दो हजार से भी अधिक व्यक्ति हैं। और कैसे व्यक्ति ! उन्हें निमंत्रित करने की योग्यता होनी चाहिए। आखिर वे भी तो मनुष्य हैं; उन पर दया आए बिना नहीं रह सकती। किंतु उन पर भी अधिकार करके रखा जाता है।"

और इन्सपैक्टर ने नेखलूदोव से अपराधियों में हुए एक संघर्ष के विषय में बतलाना आरम्भ किया जिसका अंत एक व्यक्ति की मृत्यु में हुआ।

वार्डर के साथ माशलोवा आ गई। कहानी में विघ्न पड़ गया।

नेखलूदोव ने उसे द्वार में से ही देख लिया तबतक वह इन्सपैक्टर को देख भी न पाई थी। उसका मुख आरक्त हो उठा और वार्डर के पीछे शान से चलती, मुस्कराती एवं अपना सिर हिलाती आ रही थी। इन्सपैक्टर को देखते ही उसमें एकाएक परिवर्तन आ गया और उसकी ओर उसने भयभीत दृष्टि से देखा। किंतु तुरन्त ही सम्हल कर उसने नेखलूदोव को निडरता एवं प्रसन्नता से सम्बोधित किया।

"कहिए प्रसन्न तो हैं ?" उसने अपने शब्दों को भुनभुनाते हुए कहा तथा मुस्कराते हुए नेखलूदोव का हाथ पकड़कर शक्तिपूर्वक हिलाया। यह पहिली बार से बिल्कुल भिन्न व्यवहार था।

"तुम्हारे हस्ताक्षर कराने को यह पिटीशन लाया हूँ।" नेखलूदोव ने उसकी निडरता से आश्चर्यचकित हो कहा। "एडवोकेट ने पिटीशन लिख दिया है इस पर तुम्हारे हस्ताक्षर होंगे फिर हम इसे पीतर्सबर्ग भेज देंगे।"

"जैसी आपकी इच्छा, मुझे किसी बात पर आपत्ति नहीं है।" उसने कटाक्ष कर मुस्कुराते हुए कहा।

अपनी जेब से एक तह किया कागज निकाल कर नेखलूदोव मेज के पास गया।

"क्या इसके हस्ताक्षर यहाँ करालूँ ?" नेखलूदोव ने इन्सपैक्टर की ओर मुड़कर पूछा।

"जी हाँ ! विराजिए। यह लीजिए कलम ; तुमको लिखना आता है ?" इन्सपैक्टर बोला।

"पहिले तो आता था।" अपना घाघरा तथा जाकिट की बाहों को व्यवस्थित कर वह बोली। मेज पर मुस्कराती हुई बैठ कर उसने अपने छोटे चंचल हाथ में भद्दी तरह से कलम पकड़ी और हँसकर नेखलूदोव की ओर देखा।

नेखलूदोव ने उसे बतला दिया कि क्या लिखना है और हस्ताक्षर कहाँ करने हैं।

उसने कलम को स्याही में डुबोया, सावधानी से उसकी बूँदें गिराईं और अपना नाम लिखा।

"बस इतना ही ?" उसने नेखलूदोव को देखते हुए इन्सपैक्टर की ओर देखा और पहिले तो कलम कलमदान पर रखी फिर कागजों पर।

"मुझे तुमसे कुछ बातें कहनी हैं।" नेखलूदोव ने उससे कलम लेकर कहा।

"ठीक है। कहिए।" वह बोली। और अकस्मात वह गम्भीर हो उठी मानों कि वह कुछ स्मरण कर रही हो अथवा निद्रालु हो उठी हो।

इन्सपैक्टर उठा और उसको नेखलूदोव के पास छोड़कर कमरे से बाहर चला गया।

४८

जो वार्डर माशलोवा को लेकर आया था वह उनसे कुछ दूर हटकर खिड़की की दहलीज पर जा बैठा।

नेखलूदोव के लिए निर्णयात्मक क्षण आ गया था। अब तक स्वयं को लगातार वह इस बात के लिए धिक्कारता चला आ रहा था कि मैंने अपनी

पहिली भेंट में उसको प्रधान बात तो बतलानी ही नहीं थी और अब उसने निश्चय कर लिया था कि वह उसे बतला देगा कि मैं तुमसे विवाह कर लूँगा। वह मेज के दूसरे छोर पर बैठी थी। नेखलूदोव उसके सामने बैठ गया। कमरे में प्रकाश था और नेखलूदोव ने इतने समीप से उसे पहिली बार देखा था। उसे उसकी आंखों के चारों ओर गड्ढे, उसके चेहरे पर झुरियाँ और फूले हुए पलक दिखलाई दिए। उसे उसके प्रति पहिले से भी अधिक करुणा उत्पन्न हो आई।

वार्डर यहूदी कुलोत्पन्न था और उसके गलमुच्छे भूरे थे। नेखलूदोव मेज पर झुकते हुए बोला ताकि वार्डर को सुनाई भी न दे।

"यदि इस पिटीशन का परिणाम शुभ नहीं निकला तो हम सम्राट् से प्रार्थना करेंगे। जो भी सम्भव है किया जाएगा।"

"और यदि हम आरम्भ से ही एक अच्छा एडवोकेट करें" उसने बात काटी, "मेरा सलाहकार बिल्कुल मूर्ख था। उसने मुझे सदभावनाएँ देने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया।" वह बोली और हँस दी। "यदि यह मालूम होता कि मैं आपकी परिचिता हूँ तो मामला ही कुछ और हो जाता। लोग तो प्रत्येक को चोर ही समझते हैं।"

"कितनी विचित्र लग रही है यह आज!" नेखलूदोव ने सोचा और अपने मन की बात कहना ही चाहता था कि वह फिर बोली:

"एक बात तो मैं भी कहना चाहती हूँ। यहाँ एक वृद्धा है; इतनी अच्छी है कि हर किसी को वह आश्चर्यचकित कर देती है। वह और उसका लड़का दोनों ही बन्दी हैं और बिल्कुल अकारण और हर कोई जानता है कि वे निर्दोष हैं फिर भी उन पर एक मकान को आग लगाने का दोष लगाया गया है। क्या आप जानते हैं, यह सुनकर कि मैं आपकी परिचिता हूँ वह बोली—'उनसे कह देना कि वह मेरे लड़के से मिल लें, वह उन्हें इस विषय में सबकुछ बतला देगा।'" बातें करते में माशलोवा अपने सिर को इधर-से-उधर हिलाती जाती और नेखलूदोव की ओर देखती जाती। "उनका नाम है मेन्शोव। तो आप करेंगे? इतनी अच्छी है वृद्धा, आप जानते हैं; आप देखते ही कह देंगे कि वह निर्दोष है। आप अवश्य करेंगे। यहाँ वह मेरी प्रिय है।" और वह मुस्कुराई, उसकी ओर देखा फिर अपनी दृष्टि नीची कर ली।

"अच्छा ठीक है मैं उनके विषय में पता कर लूँगा।" नेखलूदोव ने उसकी

बेतकल्लुफी से अधिकाधिक आश्चर्यचकित होते हुए कहा—"किंतु मैं तुमसे अपने बारे में कहने जा रहा था। क्या तुम्हें स्मरण है मैंने पिछली बार तुमसे क्या कहा था ?"

"आपने तो बहुत कुछ कहा था। क्या कहा था ?" वह बोली। उसका मुस्कुराना और सिर को इधर-से-उधर करना जारी रहा।

"मैंने कहा था कि मैं तुमसे क्षमा-याचना करने आया हूँ।" उसने प्रारंभ किया।

"इससे लाभ ? क्षमा, क्षमा क्या लाभ है ? यह अच्छा हो कि..."

"मैं अपने पाप का प्रायश्चित करना चाहता हूँ शब्दों में नहीं कार्य रूप में मैंने तुमसे विवाह करने का निश्चय कर लिया है।"

अकस्मात् माशलोवा के मुख पर भीतिभाव झलक आया। उसके तिरछे नेत्र नेखलूदोव पर जमे रहे फिर भी लग रहा था कि वे उसकी ओर देख नहीं रहे थे।

"किसलिए ?" क्रोध से भौंहें चढ़ा कर वह बोली।

"ऐसा करना भगवान के सामने मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

"अब कौन-सा भगवान आपको मिल गया। आप चैतन्यता की बातें नहीं कर रहे। सच, भगवान ! कैसा भगवान ! तब याद किया होता भगवान को।" वह बोली और उसका मुँह खुला रह गया।

नेखलूदोव को अब मालूम हो सका कि उसके श्वासों में स्प्रिट की गंध थी; और उसकी समझ में आ गया कि माशलोवा की उत्तेजना का कारण क्या है।

"कोशिश करो और शांत होओ।" वह बोला।

"मैं चुप क्यों होऊँ ? आप समझते हैं मैं मदिरा में मत्त हूँ ? मैं मत्त हूँ फिर भी मुझे होश है कि मैं क्या कह रही हूँ।" उसने शीघ्रता में कहना प्रारम्भ किया और लाल पड़ गई "मैं अपराधिनी हूँ, वेश्या हूँ और आप सज्जन हैं, प्रिंस हैं। कोई आवश्यकता नहीं कि मुझे स्पर्श कर आप मलिन हों। आप अपनी प्रिन्सेज के पास जाइए, मेरा मूल्य तो दस रूबल का एक नोट है।"

"चाहे जितनी निर्दयता से बोलो, किंतु फिर भी तुम वह बात नहीं कह पाओगी जो मैं स्वयं अनुभव कर रहा हूँ।" उसका सारा शरीर काँप गया—"तुम

कल्पना भी नहीं कर सकती कि मैं स्वयं को तुम्हारे प्रति कितना महान अपकारी अनुभव कर रहा हूँ।"

"स्वयं को अपकारी समझ रहे हैं !" माशलोवा ने उसे चिढ़ाते हुए क्रोध में कहा—"तब यह आपने अनुभव नहीं किया, जब कि मेरी तरफ एक सौ रूबल का नोट फेंका था। यह...है मूल्य तुम्हारा !"

"मैं जानता हूँ, जानता हूँ, किंतु अब क्या करना है ?" नेखलूदोव बोला—"मैंने तुम्हें न छोड़ने का निश्चय कर लिया है, और जो मैंने कहा है वह मैं करूँगा।"

"और मैं कहती हूँ कि आप नहीं कर सकते।" वह बोली और जोर से हँस पड़ी।

"कातूशा !" उसने उसके हाथ का स्पर्श कर कहना प्रारम्भ किया।

"आप चले जाइए। मैं बंदिनी हूँ आप प्रिन्स, और आपको यहाँ कोई काम नहीं।" वह चिल्लाई। उसका सारा मुख क्रोध से विवर्ण हो गया और उसने अपना हाथ खींच लिया।

"आप मेरे द्वारा बचना चाहते हैं।" उसने अपनी आत्मा में आई हुई बात को कह डालने की शीघ्रता की, "आपने इस जन्म में मुझसे आनन्द प्राप्त किया, और अब आने वाले जन्म में मुझसे स्वयं को बचाना चाहते हैं। आपसे—आपके चश्मे से और आपके सम्पूर्ण मोटे शरीर से मुझे घृणा है। जाइए। चले जाइए !" वह चिल्लाई, और खड़ी हो गई।

वार्डर उनके पास आया।

"यह कोलाहल क्यों कर रही हो ? यह नहीं..."

"कृपया इसको अकेली ही रहने दीजिए...।" नेखलूदोव बोला।

"उन्हें अपना आपा नहीं विस्मरण करना चाहिए।" वार्डर ने कहा।

"कृपया थोड़ा ठहर जाइए।" नेखलूदोव बोला और वार्डर खिड़की पर चला गया।

माशलोवा फिर बैठ गई। उसने आँखें नीची करलीं और अपने छोटे हाथों को कस कर बाँध लिया। यह जाने बिना कि उसे करना क्या है नेखलूदोव उसकी ओर झुका।

"आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं? यह कभी नहीं हो सकता। मै उससे अधिक तो यह पसंद करूँगी कि फाँसी लगाकर मर जाऊँ।"

'खैर, फिर भी मैं तुम्हारी सेवा करता रहूँगा।"

"यह आपका अपना काम है। किंतु मैं आपसे कुछ नहीं चाहती। यह बात साफ है।" वह बोली।

उसके आँसुओं से वह आर्द्र हो उठा तथा कुछ कह नहीं पाया।

माशलोवा ने अपने नेत्र उठाए, उसकी ओर आश्चर्य से देखा और अपने रूमाल से आँसू पोंछने लगी।

वार्डर पुनः आया और उन्हें स्मरण कराते हुए बोला कि समय समाप्त हो गया है। माशलोवा उठी।

"तुम उत्तेजित हो। यदि सम्भव हुआ तो मैं कल फिर आऊँगा—तुम इस पर विचार कर लेना।" नेखलूदोव बोला।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और उससे दृष्टि मिलाए बिना ही वार्डर के पीछे कमरे से बाहर चली गई।

"अच्छा लड़की, अब तुम्हारा ऐसा समय आ गया है जैसा कभी नहीं आया।" माशलोवा के कोठरी में लौटते समय कोराबिलियोवा बोली—"लगता है वह तुम पर तन-मन से आसक्त है; जबतक वह तुझ पर आसक्त है तुम उससे अधिक-से-अधिक काम निकाल लो। वह तुम्हें कारागृह से बाहर निकालने में सहायता करेगा। धनवानों के लिए कुछ भी असंभव नहीं।"

"हाँ, यह ऐसा ही है।" चौकीदार की पत्नी ने अपनी संगीतात्मक ध्वनि में कहा।

"जब कोई गरीब आदमी विवाह करने की सोचता है तब उसके सम्मुख बहुत सारी परेशानियाँ आ जाती हैं किंतु धनवान के मस्तिष्क में तो विचार उत्पन्न हुआ कि उधर काम भी हुआ। हमारी दृष्टि में एक छैला है प्रिये! जानती हो क्या किया उसने?"

"अच्छा तुमने मेरे कार्य के विषय में बतला दिया?" वृद्धा ने पूछा।

किंतु माशलोवा ने अपनी सह-बंदनियों को कोई उत्तर नहीं दिया; आँखों

को कमरे के एक कोने में स्थिर किए वह तख्तों की अपनी चारपाई पर लेट गई और शाम तक लेटी रही।

उसकी आत्मा में विषादयुक्त संघर्ष चलता रहा। नेखलूदोव की बातों ने उसकी स्मृति में वह संसार ला खड़ा किया जिसमें उसने कष्ट उठाए थे और बिना यह समझे कि वह उससे घृणा करती है विलग हो चुकी थी। अब वह उस मूर्च्छा से चैतन्य हो चुकी थी जिसमें कि अभी तक पड़ी थी। किंतु अतीत की स्पष्ट स्मृति को साथ लेकर रहना भी असम्भव था—यह अत्यन्त ही कष्टकर हो जाता। अतः सायंकाल उसने और वोदका ली तथा अपनी सहेलियों के साथ पी।

४९

"अतः इसका अर्थ यह हुआ, यह।" नेखलूदोव ने बंदीगृह से निकलते हुए सोचा। उसे अपने पाप का पूर्ण ज्ञान अभी हुआ था। यदि उसने प्रायश्चित से अपने पापों को विवृत करने का प्रयत्न न किया होता तो उसे कभी मालूम ही न होता कि मेरा अपराध कितना गंभीर है। इतना ही नहीं; माशलोवा को भी अपने साथ किए गए अन्याय की सीमा का अनुभव न हुआ होता। यह तो अपनी वीभत्सता के साथ अभी ही प्रकट हुआ था। नेखलूदोव को बस अभी प्रतीत हुआ था कि उसने इस स्त्री की आत्मा को कितनी ठेस पहुँचाई है; माशलोवा भी बस अभी समझ सकी थी कि उसके साथ कितना अनुचित व्यवहार किया गया था। इस समय तक नेखलूदोव आत्म प्रशंसा में मग्न था। उसने अपने ही पश्चाताप की प्रशंसा की थी। अब उसमें केवल भय ही भय समाया हुआ था। वह जानता था कि माशलोवा को नहीं छोड़ा जा सकता और फिर भी वह इस बात की कल्पना नहीं कर सका कि उन दोनों के आपसी संबंधों से क्या भविष्य बनेगा।

वह बाहर निकलने ही वाला था कि असुखद एवं उकसाने वाली सूरत शक्ल का एक वार्डर आया, जिसके वक्ष पर एक क्रॉस तथा तमगे लटके हुए थे। आते ही उसने कुछ भयभीत से ढङ्ग से, मानो कि कोई गुप्त बात हो, नेखलूदोव को एक लिफाफा थमा दिया।

"सरकार! किसी ने आपको पत्र भेजा है।" लिफाफा देते समय वह बोला।

"किसने?"

"पड़ेंगे तब आपको स्वयं मालुम हो जायगा। एक राजनैतिक बन्दिनी ने। मैं उसी वार्ड में हूँ इसलिए उसने मुझसे कहा था और नियम विरुद्ध होते हुए भी यह सोच कर कि आखिर मानवता भी तो कुछ है..." वार्डर ने अप्राकृतिक ढंग से कहा।

नेखलूदोव को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक ऐसे वार्ड का वार्डर जहाँ राजनैतिक बन्दी रखे जाते हैं आए और उसी बंदीगृह की सीमा तथा लगभग हर किसी की दृष्टि की पहुँच के अन्दर एक पत्र लाकर दे, तब उसे मालुम न था कि वह व्यक्ति वार्डर एवं गुप्तचर दोनों था। फिर भी, उसने पत्र ले लिया और बंदीगृह से बाहर आकर उसे पढ़ा।

वह जमा कर लिखा गया था। उसमें लिखा था :

"यह सुनकर कि आप बंदीगृह में आते हैं तथा फौजदारी की एक बंदिनी में रुचि लेते हैं मुझे आपसे मिलने की इच्छा जागृत हो आई। मुझसे मिलने के लिए एक प्रवेश-पत्र प्राप्त कर लीजिए। यह आपको मिल जाएगा और मैं आपको ऐसी बहुत-सी बातें बतला सकती हूँ जिनका संबंध दूसरों की रक्षा करने के आपके स्वभाव से है साथ ही हमारे दल से भी—आपकी कृतज्ञ, वेरा दुखोवा।"

वेरा दुखोवा नोवोगोरद सरकार के एक भीतरी गाँव की पाठशाला में शिक्षिका रह चुकी थी, जहाँ एक बार नेखलूदोव अपने कुछ इष्ट-मित्रों सहित रीछ का शिकार खेलने के लिए ठहर चुका था। उसने नेखलूदोव के सम्मुख किसी परीक्षा में प्रवेश प्राप्त करने के लिए धन की प्रार्थना करते हुए एक प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया था। नेखलूदोव ने उसको धन दे दिया और इस महिला को भूल भी गया। अब इस पत्र से यह प्रकट हुआ कि बन्दीगृह में (जहाँ उसने नेखलूदोव की गाथा सुनी होगी) यह महिला राजनैतिक बन्दिनी है और अपनी सेवाएँ समर्पित कर रही है।

तब ये सब बातें कितनी सरल एवं सीधी थीं, और अब कितनी कठिन एवं गहन हैं!

प्रसन्न हो नेखलूदोव ने स्पष्टता से उस समय का एवं दुखोवा के साथ अपने परिचय का स्मरण किया। वह गाँव रेलवे स्टेशन से चालीस मील दूर लेन्त से थोड़ा पहिले पड़ता था। कार्यक्रम सफल रहा था—दो रीछ मारे जा चुके थे, और यात्रा की वापिसी से पूर्व मित्रमंडली भोजन कर रही थी कि झोपड़ी का स्वामी

आया और बोला कि छोटे पादरी की लड़की प्रिन्स नेखलूदोव से बातें करना चाहती है।

"क्या वह सुन्दर है?" किसी ने पूछा।

"कृपया ऐसी बातें मत कीजिए।" चेहरे पर गम्भीरता लाते हुए नेखलूदोव उठा। मुँह धोते हुए उसने आश्चर्य से विचार किया कि पादरी की लड़की मुझसे क्या चाहती है। वह कुटिया के आतिथेय विभाग में चला गया।

वहाँ उसे एक बलवान कुरूप लड़की मिली। लड़की फेल्ट हेट और गरम लबादा पहिने हुए थी। बस, उसकी धनुषाकार भौंहें एवं आँखें थीं सुन्दर।

"कुमारी इनसे बातें कर लीजिए।" वृद्धा गृहस्वामिनी बोली—"आप ही प्रिन्स हैं। मैं तबतक बाहर जाती हूँ।"

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"मैं...मैं.. मैं देखती हूँ आप धनवान हैं, और आप इन व्यर्थ के खेलकूदों में अपने धन का अपव्यय करते हैं।" लड़की ने व्यग्रता में कहना प्रारम्भ किया—'मैं जानती हूँ......मैं केवल एक वस्तु चाहती हूँ...मनुष्यों के किसी काम आऊँ, और मैं कर कुछ नहीं सकती क्योंकि मैं जानती कुछ नहीं।" उसके नेत्रों में इतनी सत्यता, इतनी करुणा और उसका शांत किन्तु आर्द्र मुखमंडल इतना हृदयद्रावक था कि नेखलूदोव को बहुधा की ही भाँति, अकस्मात ऐसा लगा कि वह स्वयं उस लड़की की परिस्थिति में है—वह उसकी भावनाओं को समझ गया तथा उससे अपनी सहानुभूति प्रकट की।

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?"

"मैं एक अध्यापिका हूँ, किंतु मैं विश्वविद्यालय की परीक्षा देना चाहती हूँ, और मैं नहीं दे पाती। यह बात नहीं कि मुझे इसकी आज्ञा नहीं है; आज्ञा मिल चुकी है किंतु मेरे पास साधन नही हैं। वह आप मुझे दें तो मैं अपना पठन समाप्त करने के पश्चात् आपको लौटा दूँगी। मैं सोचती हूँ कि धनवान बीयर (रीछों को) मारते हैं और किसानों को बीयर (मदिरा) पिलाते हैं; और यह बुरा है। वे अच्छे काम क्यों नहीं करते? मुझे केवल अस्सी रूबलों की आवश्यकता है...किंतु यदि आप नहीं देना चाहते तो कोई बात नहीं।" उसने दुखी होकर कहा।

"इसके विपरीत, मैं ऐसे शुभ अवसर की प्राप्ति से आपके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। रुपए मैं अभी लाया।" नेखलूदोव बोला।

वह गलियारे में गया, वहाँ उसका एक साथी मिला जो उसके वार्तालाप को सुन रहा था। उसकी व्यर्थ की बातों की रंचक भी चिन्ता न कर नेखलूदोव ने अपने बटुए से रुपए निकाले और लड़की को दे दिए।

"ओह ! कृपया आप मुझे धन्यवाद मत दीजिए; यह तो मुझे आपको देना ही चाहिए।" वह बोला।

इस समय इस स्मृति में उसे सुख मिल रहा था। यह स्मृति आनन्ददायक थी कि किस भाँति एक अधिकारी से मेरा झगड़ा हो गया होता जिसने कि मेरा अवांछनीय परिहास किया; किस भाँति एक अन्य मित्र ने मेरा पक्ष लिया और उस पक्ष ने किस भाँति हम दोनों में घनिष्ट मित्रता उत्पन्न कर दी। वह समस्त आखेट-अभियान कितना सफल रहा और रेलवेस्टेशन पर लौटते समय मैं कितना प्रसन्न था उस रात...

दो घोड़ों से जुती स्लेजों की पंक्तियाँ वन की सँकरी पगडण्डियों में होकर तीव्र गति से सरक रही हैं; कभी ऊँचे वृक्षों के बीच में से, तो कभी नीचे देवदारों में से जिनकी शाखाओं पर बर्फ के टुकड़े लदे पड़े हैं। अँधेरे में लाल प्रकाश कौंध जाता है; कोई अपनी सुवासित सिगरेट जलाता है। ओसिप, रीछ खदेड़ने वाला, कभी इस स्लेज से उस स्लेज पर जाता है तो कभी घुटनों तक बर्फ में, और कभी वस्तुओं को ठीक करता है तो कभी गहरी बर्फ में जाते हुए आस्पेन* वृक्ष की छाल खाते हुए बारहसिंगे की बातें करता है तो कभी बर्फ से ढकी हुई गुफाओं में सोते हुए रीछों की, जहाँ से उनकी श्वासों के उष्ण झकोरे आ रहे हैं।

नेखलूदोव को यह सब ध्यान आया किन्तु सबके ऊपर थी स्वस्थता, शक्ति एवं चिंता मुक्ति की प्रसन्न भावना; कुहरे से भरी वायु में वह इतनी गहरी श्वांस ले रहा है कि फर का लबादा उसके वक्ष से चिपट जाता है; हल्की-हल्की बर्फ शाखाओं से झड़कर उसके मुख पर गिर रही है; उसका तन उष्ण, मुख स्वस्थ एवं आत्मा चिंता मुक्त, आत्मघृणा, भय एवं इच्छा आदि से मुक्त है...कितना सुन्दर था वह। और अब, हे भगवान ! कितनी पीड़ा, कितनी व्यथा !

स्पष्ट था कि वेरा दुखोवा क्रांतिकारिणी थी और इसीलिए बन्दी की गई थी। मुझे उससे मिलना चाहिए विशेषतया इसलिए कि माशलोवा के विषय में राय देने का उसने मुझे वचन दिया है।

---

*एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ सदा हिलती रहती हैं।

५०

दूसरे दिन प्रभात में तड़के ही उठकर नेखलूदोव ने अपने कल के किए हुए कार्यों का ध्यान किया और वह भय ग्रस्त हो उठा।

किंतु भय के होते हुए भी, वह आरम्भ किए हुए कार्य को आगे बढ़ाने को पहिले से भी अधिक दृढ़ प्रतिज्ञ था।

कर्तव्य की चेतना से अभिज्ञ हो घर से निकल कर वह मेलिन्कोव से मिलने चला ताकि कारागृह में माशलोवा से और मेन्शोवो—माँ और बेटे दोनों—से भी जिनके विषय में माशलोवा ने कहा था, मिलने के लिए प्रवेश-पत्र प्राप्त कर सके। इसके अतिरिक्त दुखोवा से मिलने के लिए प्रवेश-पत्र माँगने की उसकी इच्छा थी। शायद वह माशलोवा के काम आ जाय।

नेखलूदोव इस मेलिन्कोव से बहुत समय पूर्व से परिचित था। वे दोनों रेजीमेन्ट में साथ-साथ रह चुके थे। उस समय मेलिन्कोव रेजीमेन्ट का वेतनाधिकारी था। वह दयालु एवं ईर्ष्यालु प्रकृति का था, उसे रेजीमेन्ट और शाही परिवार के विषय में बहुत-कुछ जानकारी थी तथा इसके अतिरिक्त वह कुछ भी जानकारी करना भी नहीं चाहता था। अब नेखलूदोव उससे उस अधिकारी के रूप में मिला जिसने रेजीमेन्ट से एक शासनाधिकारी के स्थान पर बदली कराली थी। उसका विवाह एक धनवती एवं उद्योगवती स्त्री से हुआ जिसने कि उसे इस विनिमय के लिए वाध्य किया था।

वह उसका परिहास करती और उससे लाड़लड़ाती मानों कि वह उसका कोई पालतू पशु हो। एक बार जाड़ों में वह उसे मिलने गया, किंतु उसे वे दोनों इतने अरुचिकर लगे कि उसके बाद वह फिर गया नहीं।

नेखलूदोव को देखते ही मेलिन्कोव का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। वह उतना ही मोटा और सुर्ख था जितना कि तब था जब कि सेना में वह अधिकारी था और कपड़े भी वैसे पहिने था जैसे कि सैनिक जीवन में पहिनता था। उन दिनों वह कंधों और सीने पर बिल्कुल तङ्ग कसी हुई तथा नए-से-नए फैशन की अच्छी तरह से ब्रुश की हुई वर्दी पहिनता था; अब जो नागरिकों की वर्दी वह पहिने हुए था वह भी उसके खाए-पीए शरीर को कस कर उसके विशालवक्ष को

प्रशस्त कर रही थी और नवीनतम सज्जा के अनुसार सिली हुई थी। आयु में अन्तर होते हुए भी (मेलिन्कोव की अवस्था चालीस वर्ष थी) दोनों व्यक्ति एक दूसरे से अत्यधिक. घनिष्ठ थे।

"हलो, पुराने मित्र ! कितनी कृपा की है आपने आकर ! चलो मेरी पत्नी से मिलो। मुझे बैठक में पूर्व के दस मिनट व्यतीत भी करने हैं। मेरा प्रधान यहाँ नहीं है, मालूम हो, इसलिए प्रशासन का इस समय मैं प्रधान हूँ।" अपनी संतुष्टि को वह छिपा नहीं पाया।

"मैं एक कार्य से आया हूँ।"

"क्या है ?" मेलिन्कोव ने उत्सुक एवं कठोर स्वर में एकाएक सावधान होकर पूछा।

"बंदीगृह में एक व्यक्ति है, जिसमें मुझे अत्यन्त रुचि है।" (शब्द 'बंदीगृह' को सुनते ही मेलिन्कोव का मुख कठोर हो उठा) "और मैं उससे मिलना चाहता हूँ, और केवल निश्चित समय पर ही नहीं। मुझे सूचना मिली है कि यह आप पर निर्भर है।"

"निश्चय ही श्रीमान् ! मैं आपके लिए सब कुछ कर सकता हूँ।" नेखलूदोव के दोनों घुटनो पर हाथ रखते हुए मेलिन्कोव ने कहा "किंतु स्मरण रहे मैं एक ही घण्टे का सम्राट् हूँ।"

"तब आप मुझे प्रवेश-पत्र देंगे जिससे कि मै उससे मिल सकूँ ?"

"क्या वह स्त्री है ?"

"जी।"

"वह क्यों बंद है वहाँ ?"

"विष देने के अपराध में। किंतु उसके निर्णय में अन्याय हुआ है।"

"हाँ, यह आपके पंचों की प्रणाली के कारण है, वे अन्यथा कर ही नहीं सकते।' वह न-जाने क्यों फ्रांसीसी भाषा में बोला"मैं जानता हूँ आप मुझसे सहमत नहीं होंगे, किंतु किया क्या जाय यह मेरी निश्चित धारणा है।" उसने प्रति-क्रियावादी, सनातनी संस्था के एक समाचार-पत्र का उद्धरण देते हुए कहा, जिसे कि वह पिछले बारह महीने से पढ़ता चला आ रहा था। "मैं जानता हूँ आप उदारदलीय हैं।"

"मुझे नहीं ज्ञात कि मैं उदारदलीय हूं अथवा नहीं।" नेखलूदोव ने मुस्कुराते हुए कहा। उसे सदैव ही इस बात पर आश्चर्य होता कि जब कभी वह यह कहता कि किसी व्यक्ति का न्याय करने से पूर्व उसकी पूरी बातें सुननी चाहिए तब ही उसे राजनैतिक संस्था से सम्बद्ध कर दिया जाता और उदारदलीय बतलाया जाता; अथवा कि दण्ड प्राप्ति से पूर्व न्याय की दृष्टि में सब व्यक्ति समान हैं; कि किसी भी व्यक्ति से न तो दुर्व्यवहार करना चाहिए और न उसे पीटना ही चाहिए किंतु विशेषतया जिनका अभी निर्णय नहीं हुआ है उन्हें तो बिल्कुल भी नहीं। "मैं नहीं जानता कि मैं उदार दलीय हूँ अथवा नहीं, किंतु इतना अवश्य जानता हूँ कि वर्तमान प्रणाली कितनी भी बुरी क्यों न हो प्राचीन प्रणाली से अच्छी है।"

"और आपने एडवोकेट कौन-सा रखा ?"

"फनारिन से कहा है।"

"मेरे प्यारे ! फनारिन !" मेलिन्कोव ने मुख को विरूप कर कहा। उसे पहिले वर्ष के एक अभियोग का स्मरण हो आया जब फनारिन ने साक्षी के रूप में उसकी परीक्षा ली थी और आधे घंटे तक वह विनम्रतर रूप में उसका परिहास करता रहा था।

"मैं आपको राय दूंगा कि आप उससे कुछ न कराएं। फनारिन अच्छा आदमी नहीं है।"

"मेरी एक और प्रार्थना है।" नेखलूदोव ने उत्तर न देते हुए कहा—एक नवयुवा स्त्री है जिससे मैं बहुत परिचित था, एक अध्यापिका—बहुत दीन तुच्छ—अब वह भी बन्दिनी कर ली गई है और मुझसे मिलना चाहती है। क्या आप मुझे उससे मिलने के लिए आज्ञा-पत्र दे सकते हैं ?"

मेलिन्कोव ने एक ओर सिर झुका लिया और विचार करने लगा।

"वह राजनैतिक है ?"

"हाँ, मुझे यही सूचना मिली है।"

"अच्छा, देखिए ! राजनैतिक वन्दियों से केवल सम्बन्धीगण ही मिल सकते हैं। मैं आपको खुली आज्ञा दे दूंगा। मैं जानता हूं आप इसका दुरुपयोग नहीं करेंगे। आपकी आरक्षिका का क्या नाम है ? दुखोवा ? क्या वह सुन्दर है ?"

" भयावनी "

मेलिन्कोव ने असम्मति से सिर हिलाया, मेज पर गया, और एक छपे हुए कागज पर लिखा :

"पत्रवाहक, प्रिन्स दिमीत्री इवानोविच नेखलूदोव को बंदीगृह में बंदिनी माशलोवा से एवं सहायक चिकित्सिका, दुखोवा से भी मिलने की अनुज्ञा है।" और विस्तारपूर्ण महत्त्व बतला कर समाप्त किया।

"अब आप देख सकेंगे कि हमारी वहाँ व्यवस्था कैसी है। और वहाँ व्यवस्था बनाए रखना बड़ा कठिन है, इतनी भीड़ विशेषतया उन लोगों के कारण है जिन्हें निर्वासन का दंड प्राप्त हुआ है; किंतु मैं निगरानी कठोर रखता हूँ और कार्य करना पसंद करता हूँ। आप देखेंगे वे बहुत सुविधा में हैं, संतुष्ट हैं। किंतु व्यक्ति को उनसे व्यवहार करना आना चाहिए। अभी थोड़े से ही दिन पूर्व एक परेशानी खड़ी हो गई थी–आज्ञा भंग; दूसरा होता तो उसे विद्रोह का नाम दे देता, और न जाने कितनों की मुसीबत आ जाती, किंतु हम लोगों के सामने शांति से सब ठीक हो गया। एक ओर तो हमें सावधानी बर्तनी चाहिए और दूसरी ओर दृढ़ता एवं शक्ति।" और उसने अपनी मोटी, श्वेत. वैदूर्यमणि की अँगूठी वाली मुट्ठी भींची जो कि उसकी कलफ लगी कमीज के सोने के बटन लगे कफ में से बाहर निकली। "सावधानी एवं दृढ़ शक्ति।"

"खैर ! मुझे इस विषय में कुछ नही ज्ञात।" नेखलूदोव बोला—"मैं वहाँ दो बार गया और मुझे अत्यंत खिन्नता हुई।"

"जानते हैं आपको काउन्टेस पासेक से परिचित होना चाहिए।" मेलिन्कोव ने वार्तालाप में प्राण डालते हुए कहा—"उसने ऐसे ही कार्यों में अपना जीवन अर्पण कर दिया। वह बहुत भलाइयाँ करती है। उसके लिए धन्यवाद है–और मेरे लिए किंचित मैं झूठी प्रशंसा किए बिना कह सकता हूँ—सबकुछ परिवर्तित हो गया है, परिवर्तित एक ऐसे ढंग में कि पहिले की घृणाएँ नष्ट हो गईं, और अब वे लोग वहाँ पूर्ण सुविधा से हैं। आप स्वयंमेव देख लेंगे। जहाँ तक फनारिन का प्रश्न है, मैं उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता–इसके अतिरिक्त मेरा सामाजिक स्तर हम दोनों के मार्ग भिन्न कर देता है—किंतु इतना तो निश्चित है कि वह अच्छा व्यक्ति नहीं है; और फिर कोर्ट में ऐसी बातें कहता है—ऐसी बातें !"

"अच्छा धन्यवाद !" नेखलूदोव ने आगे न सुन, कागज को ले अपने पूर्व साथी अधिकारी को नमस्कार कर विदा माँगी।

"किंतु, क्या आप अन्दर नहीं जाएँगे और मेरी पत्नी से नहीं मिलेंगे ?"

"कृपया क्षमा कीजिएगा, मेरे पास समय नहीं है।"

"प्यारे ! वह मुझे कभी क्षमा नहीं करेगी।" मेलिन्कोव ने अपने पूर्व परिचित को सीढ़ी की प्रथम पौर तक पहुँचाते हुए कहा, जैसा कि वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के साथ नहीं, द्वितीय महत्त्व के व्यक्तियों के साथ करने का अभ्यस्त था। नेखलूदोव की भी वह इसी श्रेणी में गणना करता था। नेखलूदोव से उसने पुनः कहा—"आइए, अवश्य चलिए, चाहे क्षण भर के लिए ही सही।"

किंतु नेखलूदोव दृढ रहा ; और जब नौकर तथा द्वारपाल उसकी छड़ी और कोट देने तथा द्वार खोलने के लिए शीघ्रता से आए, जिसके बाहर एक पुलिसमैन खड़ा था, नेखलूदोव ने पुनः दोहराया कि वास्तव में मैं ठहर नहीं सकता।

"अच्छा, फिर कृपया बृहस्पतिवार को आएँ। उसने उस दिन 'एट-होम' रखा है। मैं उससे कह दूँगा कि आप आएँगे।" मेलिन्कोव ने सीढ़ियों से पुकार कर कहा।

५१

मेलिन्कोव के घर से नेखलूदोव गाड़ी में बैठकर सीधा बन्दीगृह गया और इन्सपैक्टर के घर पहुँचा, जिसे अब वह जान चुका था। उसने फिर उसी घटिया श्रेणी के पियानो की आवाज सुनी; किंतु इस समय उस पर महाकाव्य नहीं बजाया जा रहा था वरन् थे क्लेमेन्टी के अभ्यास, उसी उत्साह, स्पष्टता एवं गति से। आँखों पर पट्टी बाँधे नौकरानी ने बतलाया कि इन्सपैक्टर साहब अन्दर है और वह नेखलूदोव को एक छोटे ड्राइङ्गरूम में ले गई। ड्राइङ्गरूम में एक सोफे के सम्मुख मेज पर बिने हुए जाली के काम का एक मेजपोश बिछा था। उस पर एक बड़ा लैम्प रखा हुआ था। लैम्प पर गुलाबी रंग का एक शेड लगा हुआ था जो कि एक ओर से जल गया था। इन्सपैक्टर जब अन्दर आया तो उसका चेहरा स्वाभाविकतया थका और उदास था।

"विराजिए ! मेरे योग्य सेवा ?" उसने अपनी वर्दी का बीच का बटन लगाते हुए कहा।

"मैं अभी वाइस-गवर्नर के यहाँ गया था, और उनसे यह आज्ञा-पत्र लाया

हूँ। मैं बन्दिनी माशलोवा से मिलना चाहता हूँ।"

"मारकोवा ?" गायन के कारण स्पष्ट न सुन पाने के कारण इन्सपैक्टर ने पूछा।

"माशलोवा !"

"ओह अच्छा !" इन्सपैक्टर उठा और उस द्वार पर गया जहाँ से क्लेमेन्टी के रौलेड* के स्वर आ रहे थे।

"मेरिया ! क्या तुम एक मिनट के लिए यह बन्द नहीं कर सकतीं ?" उसने ऐसे स्वर में कहा जिससे प्रकट होता था कि संगीत उसके जीवन के नाश की मूल है, "एक शब्द भी नहीं सुनाई देता।"

पियानो बन्द हो गया; किंतु असन्तुष्ट पग-ध्वनि सुनाई दी और कोई द्वार में से झाँका।

शांति के मध्यान्तर में इन्सपैक्टर ने आराम की सांस ली और हल्की तम्बाकू की एक मोटी सिगरेट जलाई, तथा नेखलूदोव को भी एक सिगरेट प्रस्तुत की।

नेखलूदोव ने अस्वीकार कर दी।

"वह माशलोवा है जिससे मैं मिलना चाहता हूँ।"

"माशलोवा ! आज उससे मिलना इतना सुगम नहीं है।" इन्सपैक्टर बोला।

"ऐसा क्यों ?"

"आप जानते हैं, यह आपकी ही गलती है।" इन्सपैक्टर ने मंद मुस्क्यान से कहा—"प्रिन्स ! उसके हाथों में पैसा मत दिया कीजिए। यदि आप चाहें, मुझे दे दें। मैं उसके लिए अपने पास रख लूंगा। देखिए, कल आपने उसको कुछ रुपया दिया होगा; वह स्प्रिट ले आई (यह एक ऐसी बुराई है जिसे हम दूर नहीं कर सकते) और आज वह बिल्कुल मत्त है यहाँ तक कि पागल।"

"क्या यह सम्भव है ?"

"जी हाँ ! यही बात है। मुझे कठोर उपायों का आलम्बन लेना पड़ा और उसे तनहाई में बन्द करना पड़ा। साधारणतया वह स्त्री शांत स्वभाव की है। किंतु कृपा कर उसको पैसे मत दीजिए। ये लोग ऐसे होते हैं..."

---

* अनेक रागों का बहुत जल्दी बजना जो एक ही जान पड़े।

कल की घटना नेखलूदोव के मस्तिष्क में स्पष्टतः नाच गई और वह फिर भय से सिहर उठा।

"और दुखोवा, एक राजनैतिक बन्दिनी; क्या मैं उससे मिल सकता हूँ।"

"जी हाँ ! यदि आप चाहें तो," इन्सपैक्टर बोला—"अच्छा तो आप क्या चाहते हैं ?" पाँच या छः वर्ष की लड़की से वह बोला जो कमरे में नेखलूदोव की ओर मुड़कर उस पर दृष्टि जमाए अपने पिता के पास आई थी। "देखो अब गिर पड़ोगी।" इन्सपैक्टर ने मुस्कुराते हुए तब कहा जबकि छोटी लड़की यह देखे बिना कि कहाँ जा रही है उसके पास भागती आ रही थी और उसका पैर कम्बल में फँस गया था।

"अच्छा तो यदि मैं मिल सकता हूँ तो मैं जाऊँगा।"

"आप जा सकते हैं।"

इन्सपैक्टर ने छोटी लड़की को बाँहों में कस लिया। लड़की अभी तक नेखलूदोव की ही ओर देख रही थी। इन्सपैक्टर उठा, और बच्ची को धीमे से एक ओर करके गलियारे में चला गया।

मुश्किल से ओवर कोट पहिन कर, जिसे पहिनाने में नौकरानी ने सहायता की थी, वह द्वार तक पहुँचा ही होगा कि क्लेमेन्टी रौलेड के स्पष्ट स्वर आने पुनः आरम्भ हो गए।

"वह संगीतालय में थी, किंतु वहाँ इतनी अव्यवस्था है। उसमें यह प्रतिभा है।" सीढ़ियों से उतरते हुए इन्सपैक्टर ने कहा—"वह एक सङ्गीत में भाग लेना चाहती है।"

इन्सपैक्टर और नेखलूदोव बन्दीगृह में पहुँचे। उनको देखते ही बन्दीगृह के द्वार खुल गए। वार्डरों ने अपनी उङ्गलियाँ टोपियों के पास लगाकर अभिवादन किया और इन्सपैक्टर की ओर देखते रहे। आधे सिर घुटे चार व्यक्ति किसी वस्तु से भरे पात्र ला रहे थे। उनको देखते ही उन्होंने साष्टांग प्रणाम किया। उनमें से एक ने क्रोध में भौंहें मरोड़ीं, उसकी काली आँखें लाल हो रही थीं।

"वास्तव में, उस प्रकार की प्रतिभा का विकास होना ही चाहिए, उसको समाप्त करने से काम नहीं चलेगा, किंतु, आप जानते हैं, छोटे-छोटे टुकड़ों से ऊब उत्पन्न हो जाती है।" इन्सपैक्टर इन बन्दियों की ओर ध्यान न दे अपना वार्तालाप करता हुआ और थकी चाल से नेखलूदोव के पीछे पाँव खचेरता हुआ हॉल में घुसा।

"अच्छा आप किससे मिलना चाहते हैं ?"

"दुखोवा से।"

"ओह वह तो अटारी पर है। आपको कुछ देर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।" वह बोला।

"तब तक क्या मैं मेन्शोवो बंदियों से नहीं मिल सकता—माँ और पुत्र से जो कि आग लगाने के अभियोग में बन्द है ?"

"ओह, हाँ। कोठरी सं० इक्कीस ! हाँ, उन्हे बुलाया जा सकता है।"

"किंतु क्या मैं मैन्शोव से उसकी कोठरी में नहीं मिल सकता ?"

"ओह, आपको मिलाई के कमरे में अधिक आनन्द आएगा।"

"नहीं, मैं कोठरी को पसन्द करूँगा। वह अधिक रुचिप्रद है।"

"अच्छा तो आपको रुचि लेने के लिए कुछ मिल ही गया।" इस समय सहायक, भड़कीले वस्त्र पहिने बगल के द्वार से प्रविष्ट हुआ।

"देखिए। प्रिन्स को मैन्शोव की कोठरी नं० २१ में पहुँचा दीजिए।" इन्सपैक्टर ने सहायक से कहा "और तब आपको कार्यालय में लिवा लाइएगा। और मैं जाऊँगा और बुला लाऊँगा—क्या नाम है उसका ?"

"वेरा दुखोवा।"

इन्सपैक्टर का सहायक एक सुन्दर नवयुवक था। उसकी मूँछों पर मोम लगा हुआ था और उसके पास से यू० डी० कोलन की सुगन्ध आ रहा थी।

"कृपया इधर होकर।" उसने नेखलूदोव से प्रसन्नता-भरी मुस्कान से कहा "हमारी संस्था में आपको रुचि है ?"

"जी हाँ ! मुझे रुचि है; इसके अतिरिक्त मैं एक व्यक्ति की सहायता करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिसे कि जैमा मुझे बतलाया गया है निरपराध बन्दी बनाया गया है।"

सहायक ने अपने कंधे हिलाए।

"हाँ। ऐसा हो ही जाता है।" उसने कहा और विनम्रता से अलग हटकर दर्शक को दुर्गन्धित बरामदे में पहिले प्रवेश करने का अवसर दिया। वह पुनः शांति से बोला : "किंतु ऐसा भी होता है कि वे झूँठ भी बोलते हैं। कृपया, इधर।"

कोठरी के द्वार खुले हुए थे और कुछ बन्दी बरामदे में थे। सहायक ने वार्डरों की ओर धीमे से सिर हिलाया, और बन्दियों की ओर कनखियों से देखा जो कि दीवाल से सटते हुए अपनी कोठरियों में वापिस लौट गए या सिपाहियों की तरह बाँहों को बगलों से चिपकाकर खड़े हो गए तथा अधिकारी को कनखियों से देखने लगे। एक बरामदे से निकलकर सहायक नेखलूदोव को बाईं ओर दूसरे बरामदे में ले गया जो कि पहिले से लौह-द्वार से विभक्त था।

बरामदा पहिले से तङ्ग एवं अंधकारपूर्ण था और पहिले से भी अधिक दुर्गन्धित था। उस में दोनों ओर द्वार थे जिनमें लगभग एक इञ्च व्यास के छिद्र थे। वहाँ केवल एक वार्डर था जिसके झुर्रीदार मुख पर उदासी छाई हुई थी।

"मैन्शोव कहाँ है ?" इन्सपैक्टर के सहायक ने पूछा।

"बाईं ओर से आठवीं कोठरी में।"

५२

"मैं अन्दर झाँक सकता हूँ ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"अहा, क्यों नहीं।" सहायक ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। तथा वार्डर की ओर मुड़ कर उससे कुछ पूछने लगा। नेखलूदोव ने एक छोटे छिद्र में से अन्दर झाँककर देखा। छोटी काली दाढ़ीयुक्त एक लम्बा नवयुवक बनियान पहिने कोठरी में इधर-से-उधर चहलकदमी कर रहा था। द्वार पर आवाज सुनते ही उसकी भौंहें तन गईं किंतु चहलकदमी बन्द न हुई।

नेखलूदोव दूसरी कोठरी में झाँका। उसके नेत्र एक भयभीत एवं बड़े नेत्र से जा टकराए, जो कि छिद्र से बाहर उसकी ओर ही जमा हुआ था। शीघ्र ही वह आगे बढ़ गया। तीसरी कोठरी में उसने एक बहुत ही ठिगना पुरुष देखा जो कि बन्दीगृह के अपने लबादे से अपना सिर आदि सब ही ढके बिस्तरे पर सोया पड़ा था। चौथी में, पीले चपटे मुख वाला व्यक्ति कुहनियों को घुटनों पर टिकाए और सिर नीचे झुकाए बैठा था। पग-ध्वनि को सुनकर इस व्यक्ति ने अपना सिर उठाया और उधर दृष्टि फेंकी। उसके मुख से, विशेषतया विशाल नेत्रों से निराशाजनक खिन्नता प्रगट हो रही थी। उसे देखने से स्पष्ट हो जाता था कि उसे

इस बात से कोई रुचि भी नहीं थी कि कौन कोठरी का निरीक्षण करने आया है। कोई भी क्यों न हो, बन्दी को उससे किसी भलाई की आशा नहीं थी। नेखलूदोव में भय समा गया और आगे किसी छिद्र में झाँके बिना ही वह मैन्शोव की कोठरी नं० २१ पर सीधा चला गया। वार्डर ने ताला खोल कर द्वार खोल दिया। लम्बी नाक दृढ़ अवयव वाला एक नवयुवक जिसकी दाढ़ी छोटी और गोल आँखें दयामय थीं चारपाई के पास खड़ा लबादा पहिनने में शीघ्रता करता हुआ नवागन्तुकों की ओर मुड़ा। वह भयभीत हो गया था और नेखलूदोव उसके गोल दयापूर्ण नेत्रो को देखकर व्यथित हो उठा। वह कभी उसकी ओर, कभी वार्डर तो कभी सहायक की ओर भयात्मक एवं प्रश्नात्मक दृष्टि से देख रहा था।

"देखो ! यह सज्जन तुम्हारे मामले में कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं।"

"आपकी कृपा के लिए धन्यवाद।"

"जी हाँ ! मुझे तुम्हारे विषय में बतलाया गया था।" नेखलूदोव ने कोठरी की दूसरी ओर गंदो जालीदार खिड़की के पास जाते हुए कहा "और मैं तुम्हारे केस की सारी बातें तुम्हारे ही मुँह से सुनना चाहता हूँ।"

मैन्शोव भी खिड़की पर आ गया और आते ही उसने अपनी कथा प्रारंभ कर दी। पहिले तो वह इन्सपैक्टर के सहायक की ओर संकोच से देखता रहा किंतु क्रमशः वह निडर होता गया और सहायक के कोठरी से निकलकर कुछ आज्ञाएँ देने के लिए बरामदे में जाते ही वह बिल्कुल निडर हो गया। कथा बिल्कुल ऐसे ढङ्ग से कही गई जैसे कि साधारण श्रेणी के भले लड़के के लिए स्वाभाविक है। इन हीन वस्त्रों में बन्दीगृह के अन्दर एक बन्दी के मुख से बातें सुनना नेखलूदोव को अत्यन्त विचित्र लगा। नेखलूदोव सुनता रहा, साथ ही वह अपने चारों ओर देखता भी रहा। नीची चारपाई और उस पर पड़ी हुई तिनकों की चटाई को, खिड़की और उसकी लोहे की मोटी जाली को, गंदी और सीली दीवाल को, तथा बन्दीगृह के जूते, लबादे में इस कुरूप अभागे किसान के दयनीय मुखमण्डल को। और उदास एवं उदासतर होता गया तथा इस भले व्यक्ति द्वारा कही गई बात पर विश्वास करना उसे पसन्द न आया होता। यह विचार मात्र ही भयानक था कि किसी व्यक्ति को बिना किसी कारण के, सिवाय इसके कि वह स्वयं घायल हो गया हो, बन्दियों के वस्त्र पहिना कर इतने भयानक स्थान में रखा भी जा सकता है। और उसके उपरान्त यह विचार और भी अधिक भयावह था कि

यह सत्य लगने वाली गाथा, जो कि इतनी सुशीलता से कही गई हो, दिमाग की एक उपज अथवा असत्य हो सकती है। गाथा यह थी। इस नवयुवक के विवाह के तुरन्त बाद ही गाँव की सराय के स्वामी ने इसकी पत्नी को अपनी ओर लुभा लिया। उसने प्रत्येक स्थान पर न्याय प्राप्त करने की चेष्टा की। किंतु हर स्थान पर सराय के स्वामी ने अधिकारियों को घूस दे दी और छूट गया। एक बार उसने बल प्रयोग कर अपनी पत्नी वापिस ले ली, किंतु वह अगले ही दिन भाग गई। तब वह उसे वापिस लौटाकर लाने के लिए गया किंतु सराय के स्वामी ने उससे कह दिया कि वह वहाँ नहीं है, यद्यपि आते समय उसने अपनी आँखों उसे वहाँ देख लिया था और उसे वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी। वह नहीं गया इस पर सराय के स्वामी और उसके नौकर ने उसे पीटना आरम्भ किया और खून निकाल कर ही दम लिया। अगले दिन सराय में आग लग गई और नवयुवक तथा उसकी माँ पर आग लगाने का अभियोग लगाकर दोनों को ही बन्द कर दिया गया। आग उसने नहीं लगाई थी वरन् जिस समय आग लगी थी उस समय तो वह अपने एक मित्र से बातें करने गया हुआ था।

"और यह सत्य है कि तुमने सराय में आग नहीं लगाई ?"

"श्रीमान्‌जी, यह बात तो मेरे दिमाग में भी कभी नहीं आई। यह मेरे किसी दुश्मन की करतूत है। मैंने सुना था कि उसने कुछ दिनों पहिले ही उसका बीमा करा लिया था। लोगों ने कहा कि मैंने और मेरी माँ ने ऐसा किया और कि हमने उसको धमकी दी थी। यह तो सच है कि एक बार मैं गया था—किंतु मेरे दिल को गवारा न हुआ—किंतु जहाँ तक आग लगाने की बात है मैंने नहीं लगाई। उसने स्वयं लगाई है और सिर हमारे मढ़ दी। जब आग लगी थी मैं वहाँ नहीं था किंतु उसने जानबूझ कर ऐसी व्यवस्था करी कि जब माँ और मैं वहाँ पहुँच जावें आग तब लगे।"

"क्या यह सत्य हो सकता है ?"

"भगवान् मेरा साक्षी है, यह सच है। ओह, श्रीमान् इतना शील प्रदर्शित कीजिए..." और वह नेखलूदोव के चरणों में गिरने लगा। नेखलूदोव बड़ी कठिनाई से उसे रोक सका, "दया कीजिए...मैं अकारण ही मर रहा हूँ।"

और यकायक उसका चेहरा काँपा तथा उसने अपने लबादे की बाँहों को लौटा और रोने लगा तथा गंदे लबादे की बाहों से अपने आँसू पोंछने लगा।

"क्या आप तैयार हैं ?" सहायक ने पूछा ।

"जी...अच्छा ! प्रसन्न रहो। हम जो कुछ कर सकेंगे करेंगे।" कहकर नेखलूदोव बाहर चला आया। मैन्शोव द्वार से सटकर खड़ा हो गया। इसलिए जब वार्डर ने किवाड़ बन्द किए तो उसके चोट आ गई किंतु वह छोटे छिद्र में से बाहर देखता रहा।

५३

जब वह चौड़े बराम्दे में से लौटा तब हल्के पीले लबादे पहिने, घुटन्ने बाँधे जेली जूते चढ़ाए लोग उसकी ओर उत्सुकता से देखते हुए एक ओर जाने लगे। (यह शाम के भोजन का समय था और कोठरियों के द्वार उन्मुक्त थे।) नेखलूदोव को उनके प्रति सहानुभूति की विचित्र मिश्रित भावना की अनुभूति हुई, और भय एवं व्यग्रता की अनुभूति उनके व्यवहार के प्रति उत्पन्न हुई जिन्होंने उन्हें यहाँ लाकर रखा था; और इसके अतिरिक्त यद्यपि वह समझ नहीं सका कि क्यों, किंतु उसे उन लोगों का चुपचाप निरीक्षण करने पर अपने प्रति स्वयं लज्जा का अनुभव हुआ।

किसी बरामदे में जूतों की चरमर करते हुए कोई कोठरी के द्वार पर दौड़कर गया। और कोठरी में से कितने ही व्यक्ति बाहर निकलकर नेखलूदोव के मार्ग में आ खड़े हुए। उसको झुककर प्रणाम करते हुए बोले—

"कृपया—श्रीमन्—हमें नहीं ज्ञात कि आपको कैसे सम्बोधित करें—हमारे मामलों को भी किसी भाँति निपटा दीजिए।"

"मैं कोई अधिकारी नहीं हूँ। मुझे इस विषय में कुछ नहीं ज्ञात है।"

"अच्छा फिर भी आप बाहरी व्यक्ति हैं, किसी से कहिए—यदि आवश्यकता हो तो किसी अधिकारी से भी।" क्रोधपूर्ण स्वर में किसी ने कहा "हम लोगों को अकारण ही कष्ट पाते हुए यहाँ दूसरा माह है।"

"तुम्हारा क्या तात्पर्य है ? क्यों ?" नेखलूदोव बोला।

"क्यों ? हमें भी नहीं ज्ञान कि क्यों ? किंतु हमको यहाँ बन्द कर दिया गया है—लगभग दो माह होते आए।"

"जी हाँ ! यह बिल्कुल सत्य है और यह एक दुर्घटना के कारण है ।" सहायक ने कहा—"इन लोगों को इसलिए बन्द कर दिया गया था कि इनके पास पार-पत्र नहीं थे और इन लोगों को अपने मूल स्थानों पर वापिस भेज देना चाहिए था; किंतु वहाँ के बन्दीगृह में आग लग गई है और वहाँ के अधिकारियों ने हमसे इन्हें न भेजने की प्रार्थना की है । इसलिए हमने पार-पत्र विहीन व्यक्तियों को उनके मूलस्थानों पर भेज दिया है किंतु इन्हें रोक रखा है ।"

"क्या ! बस इसी कारण से ?" नेखलूदोव ने द्वार पर रुकते हुए आश्चर्य से कहा ।

लगभग चालीस व्यक्तियों की भीड़ ने, जिसमें सब ने ही जेली लबादे पहिन रखे थे, उसे और सहायक को घेर लिया तथा उनमें से कुछ तुरन्त बातें करने लगे। सहायक ने उन्हें रोका ।

"कोई एक बोलो ।"

लगभग पचास वर्ष की वय का एक लम्बा प्रतिष्ठित किसान उन सबमें से निकल कर आगे आया । उसने नेखलूदोव को बतलाया कि हममें से प्रत्येक को घर वापिस जाने की आज्ञा मिल चुकी है और अब हम कारागार में इसलिए बन्द कर रखे गए हैं कि हमारे पास पार-पत्र नहीं थे । पार-पत्र हम पर थे किंतु उनकी अवधि समाप्त हुए दो सप्ताह व्यतीत हो गए थे । प्रति वर्ष ऐसा ही होता था—कितनी ही बार पार-पत्रों की अवधि बीत गईं किंतु नए नहीं बनाए गए और किसी ने भी कुछ नहीं कहा—किंतु इस वर्ष हमें पकड़ लिया और दो महीने होने आए बन्दीगृह में बन्द कर दिया मानो कि हम कोई चोर उचक्के हों ।"

"हम सबही राजमजदूर हैं और एक ही संस्था के सदस्य हैं । हम से कहा गया है कि हमारे प्रान्त के कारागार में आग लग गई है किंतु यह हमारी गलती तो नहीं । कृपाकर हमें अवश्य सहायता दें ।"

नेखलूदोव सुन तो रहा था किंतु उस वृद्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति की बात समझ न सका क्योंकि उसका ध्यान कितनी ही टाँगों वाले, गहरे भूरे, बड़े जुएँ की ओर खिंच गया था जो उस वृद्ध के गाल पर रेंग रहा था ।

"यह क्यों ? क्या इस बात पर ऐसा हो सकता है ?" नेखलूदोव ने सहायक की ओर मुड़ते हुए कहा ।

"जी हाँ ! इन लोगों को वापिस इनके घर भेज देना चाहिए था ।" सहायक

ने शांति से कहा—"किंतु लगता है कि या तो वे भूल गए हैं या फिर कोई और कारण है।"

सहायक की बात समाप्त होने से पूर्व ही एक ठिगना, नसोंयुक्त पुरुष भीड़ में से निकला और मुँह को विचित्र ढंग से ऐंठते हुए बोला कि ये लोग हमारे साथ अकारण ही दुर्व्यवहार करते हैं।

"कुत्तों से भी गया बीता......" वह कह रहा था।

"अच्छा अब खामोश हो जाओ। बन्द करो बकवास अन्यथा जानते हो..."

"क्या जानता हूँ ?" ठिगना व्यक्ति निराशा में चिल्लाया—"हमारा अपराध क्या है ?"

"खामोश !" सहायक चिल्लाया और ठिगना चुप हो गया।

"किंतु इस सबका अर्थ क्या है ?" बरामदे से उतरते हुए नेखलूदोव ने सोचा, जब कि सौ नेत्र कोठरियों के द्वारों के छिद्रों में से उस पर जमे हुए थे। मानो कि वे उसे जतला रहे हों कि आपके हाथ में लोहे के दस्ताने हैं।

"क्या वास्तव में यह सम्भव हो सकता है कि यहाँ निर्दोष व्यक्ति भी बन्दी हैं।" बरामदे से निकलते ही नेखलूदोव ने आश्चर्य से कहा।

"हमसे आप क्या कराना चाहते हैं ? ये झूँठ बोलते हैं। इनकी बातें सुनने का अर्थ ही यही है कि सब-के-सब निर्दोष हैं।" इन्सपैक्टर के सहायक ने कहा—"किन्तु ऐसा तो होता है कि कुछ लोग तो अकारण ही बन्दी कर लिए गए हैं।"

"खैर ! इन लोगों ने कुछ नहीं किया।"

"जी। हमको यह स्वीकार करना पड़ेगा। फिर भी लोग बुरी तरह बिगड़ चुके हैं। उनकी कुछ श्रेणियाँ हैं—उद्दण्ड व्यक्ति, इनकी कठोरता से निगरानी करनी पड़ती है। कल उसी श्रेणी के दो व्यक्तियों को दण्ड देना पड़ा।"

"दण्ड ? कैसे ?"

"बर्च की छड़ी से वेत्र-दण्ड। आज्ञा लेकर।"

"किंतु शारीरिक दण्ड तो समाप्त हो चुका है।"

"उनके लिए नहीं जिन्हें अधिकारों से वंचित कर दिया गया है। उन्हें अभी भी मिल सकता है।"

नेखलूदोव ने हॉल में प्रतीक्षा करते समय जो देखा उसका उसे स्मरण हो

आया और वह अब समझा कि उस समय दण्ड दिया जा रहा था। तथा कौतूहल, व्यग्रता, निर्बलता एवं नैतिक घृणा की मिश्रित भावना, जो कि उसकी शारीरिक घृणा में उत्पन्न हुई थी, उसके ऊपर छा गई—और इतनी जितनी कि इससे पूर्व कभी नहीं छाई।

इन्सपैक्टर के सहायक की बातें सुने अथवा चारों ओर देखे बिना ही वह शीघ्रता से बरामदे से बाहर निकला और कार्यालय में चला गया। इन्सपैक्टर कार्यालय में बैठा था। वह किसी अन्य कार्य में व्यस्त था तथा दुखोवा को बुलवाना भूल गया था। उसे अपना वचन तब ही स्मरण आया जब नेखलूदोव कार्यालय में प्रविष्ट हुआ।

"कृपया विराजिए। मैं उसे अभी बुलवाता हूँ।" वह बोला।

५४

कार्यालय दो कमरों में था। पहिले कमरे में एक बिगड़ा हुआ स्टोव, दो गन्दी खिड़कियाँ थीं तथा एक कोने में बन्दियों को मापने का काला स्टेंड खड़ा था जब कि दूसरे में ईसामसीह की बड़ी-सी मूर्ति लटकी हुई थी मानो कि उसके उपदेशों का परिहास बनाने के लिए, जैसे कि साधारणतया जहाँ व्यक्तियों को तंग किया जाता है–हुआ करता है। इस कमरे में कुछ वार्डर खड़े हुए थे। दूसरे कमरे में लगभग बीस व्यक्ति, स्त्री और पुरुष जोड़े से और समुदायों में बैठे धीमे स्वरों में बातें कर रहे थे। खिड़की से लगी हुई एक राइटिंग टेब्लि थी।

इन्सपैक्टर मेज के पास बैठ गया और अपनी बगल की कुर्सी पर नेखलूदोव से बैठने को कहा। नेखलूदोव बैठ गया और कमरे के लोगों को देखने लगा।

उसका ध्यान सर्वप्रथम एक प्रसन्न वदन नवयुवक की ओर आकर्षित हुआ जो कि एक छोटी जाकिट पहिने था। वह काली भौंहों वाली एक प्रौढ़ा के सम्मुख खड़ा हुआ हाथों को नाटकीय ढंग से हिलाते हुए उसे उत्सुकता से कुछ बतला रहा था। उनकी बगल में नीला चश्मा लगाए एक वृद्ध किसी युवा स्त्री का हाथ पकड़े बैठा था। स्त्री जेली लबादा पहिने थी तथा उससे कुछ बातें कर रही थी। एक लड़का उस वृद्ध की ओर भय से दृष्टि गड़ाए देख रहा था। एक कोने में प्रेमियों का एक युग्म बैठा था। लड़की पूर्ण युवा एवं सुन्दर थी, उसके बाल सुन्दर, छोटे

तथा मुख पर उत्साह का भाव था और उसके वस्त्र भड़कीले थे। युवक का लोन-ठोन सुन्दर और बाल घुंघराले थे तथा वह रबड़ की जाकिट पहिने हुए था। वे कोने मे बैठे आपस में कानाफूसी कर रहे थे और प्रेम से चकाचोंध प्रतीत होते थे। टेबिल के अत्यधिक निकट काली पोशाक में भूरे बालों वाली एक स्त्री बैठी थी, स्पष्ट दिखलाई देता था कि वह क्षय रोग से ग्रस्त दीख पड़ने वाले नवयुवक की माँ थी। वह युवक भी जाकिट पहिने हुए था। वह कुछ कहने की चेष्टा कर रही थी, किन्तु अपनी हिल्कियो के कारण रुक गई। उसने कई बार कहना प्रारम्भ किया, किन्तु उसे रुकना पड़ा। नवयुवक के हाथ में एक कागज था और यह समझे बिना कि उसे करना क्या चाहिए, उसे मोड़ता तथा दबाता चला जा रहा था। उसके मुख पर क्रोध तमतमा रहा था। उनकी बगल में मोटी, सुन्दर, नवविकसित कली के समान विशाल नेत्रो वाली एक लडकी थी जो कि भूरे कपड़े और बिना आस्तीनों का लबादा पहिने थी। वह रोती हुई माँ के पास बैठी उसे सांत्वना दे रही थी। इस लड़की की हर वस्तु सुन्दर थी; उसके लम्बे श्वेत हाथ, उसके छोटे घुंघराले बाल, उसकी दृढ़ नासिका एवं ओष्ठ; किंतु उसके मुख का प्रमुख आकर्षण था उसके तामड़े रङ्ग के दयालु, विश्वस्त नेत्र। नेखलूदोव के प्रवेश करने पर ये सुन्दर नेत्र क्षण भर के लिए माँ पर से हटे और उसके नेत्रों से जा टकराए। किंतु तुरन्त वह मुड़ी और माँ से कुछ बोली। प्रेमियों के पास ही उदास चेहरा लिए बाल बिखरे हुए एक व्यक्ति बैठा हुआ एक निमुच्छे से जो कि हिजडा-सा लगता था क्रोध में बातें कर रहा था।

इन्सपैक्टर की बगल में बैठे हुए नेखलूदोव ने घोर कौतूहल से चारों ओर देखा। कटे बालों वाला एक छोटा बालक उसके पास आया और महीन स्वर में बोला :

"आप किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ?"

नेखलूदोव इस प्रश्न पर चकित रह गया, किंतु बालक की ओर एवं उसके छोटे गंभीर चेहरे को देखते हुए, जिसकी चमकीली सावधान आँखें उस पर केन्द्रित थी, उसने गम्भीरता से उत्तर दिया कि मैं अपनी एक परिचिता स्त्री से मिलने को बैठा हूँ।

"तो क्या वह आपकी बहिन है ?" लड़के ने पूछा।

"नहीं ! मेरी बहिन नहीं है।" नेखलूदोव ने आश्चर्य से उत्तर दिया—"और तुम, तुम यहाँ किसके साथ हो ?" उसने बालक से पूछा।

"मैं ? मामा के साथ; वह राजनैतिक बन्दिनी है।" उसने उत्तर दिया।

"मेरिया पावलोव्ना ! कोल्या को अपने साथ रखो !" नेखलूदोव और बालक की बातचीतों को नियम विरुद्ध मानकर इन्सपैक्टर ने कहा।

मेरिया पावलोव्ना, नेखलूदोव का चित्त अपनी ओर आकर्षित करने वाली सुन्दर लड़की, सीधी और तनती हुई उठी और दृढ़ चाल—लगभग पुरुषों की चाल से—नेखलूदोव और बालक के पास पहुँची।

"यह आपसे क्या पूछ रहा है—आपका परिचय ?" उसने मन्द मुस्क्यान में अपने दयालु विशाल नेत्रों में विश्वासी दृष्टि से उसकी ओर सीधा देखते हुए कहा और इतनी सादगी से कहा कि किसी प्रकार का भी कोई सन्देह इस बात में नहीं हो कि वह प्रत्येक से बहिन की भाँति व्यवहार करती थी और उसे करना चाहिए था।

"यह प्रत्येक बात जान लेना चाहता है।" उसने बालक की ओर इतनी प्रिय मुस्क्यान से देखकर कहा कि लड़का और नेखलूदोव पुनः मुस्कुरा उठे।

"यह मुझसे पूछ रहा था कि मैं यहाँ किससे मिलने आया हूँ।"

"ठीक है ! ठीक है !" वह बोली और क्षय-रोग से ग्रस्त युवक की माँ के पास वापिस लौट दी। साथ में कोल्या के छोटे हाथ को अपने बड़े श्वेत हाथ में लेती गई तथा बालक उसके मुख की ओर देखते हुए चलता गया।

"यह बालक कौन है ?" नेखलूदोव ने इन्सपैक्टर से पूछा।

"इसकी माँ राजनैतिक बंदिनी है और कारागृह में इसका जन्म हुआ।" इन्सपैक्टर ने प्रसन्न स्वर में कहा मानों कि वह यह प्रदर्शित करना चाहता हो कि उसकी संस्था कितनी महत्वपूर्ण है।

"क्या यह सम्भव है ?"

"जी ! और अब वह उसके साथ साइबेरिया जा रहा है।"

"और वह युवा लड़की ?"

"मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता।" इन्सपैक्टर ने कंधे हिलाते हुए कहा "इसके अतिरिक्त दुखोवा आ गई है :"

कमरे के पिछले द्वार से पतली-दुबली, पीली वेरा दुखोवा छटपटाती हुई चाल से प्रविष्ट हुई। उसके नेत्र विशाल एवं करुणाजनक थे।

"आने के लिए धन्यवाद।" उसने नेखलूदोव का हाथ दबाते हुए कहा, "आपको मेरा स्मरण तो है? हम बैठ जाएँ।"

"मुझे आपसे इस रूप में मिलने की आशा नहीं थी।"

"ओह! मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। यह सब इतना आनन्दमय है इतना आनन्द-मय कि अपेक्षाकृत सुन्दर की मुझे इच्छा नहीं।" वेरा दुखोवा ने अपनी विशाल, दयालु गोल आखों में भय के चिर-परिचित भाव को धारण किए नेखलूदोव की ओर स्थिर दृष्टि से देखते हुए कहा और अत्यन्त पतली गर्दन को मरोड़ा जिसको उसकी चोली के फटे, मैले सिकुड़े कालर ने ढक रखा था।

नेखलूदोव ने उससे पूछा कि आप बन्दीगृह में कैसे आईं।

उत्तर में उसने अपने सब कार्य-कलापों का बड़े उत्साह से वर्णन करना प्रारम्भ कर दिया। उसके भाषण में कितने ही शब्द ऐसे थे जिन्हें कि नेखलूदोव ने कभी नहीं सुना था किंतु वह समझती थी कि प्रत्येक व्यक्ति उनसे परिचित है। शब्द थे जैसे: प्रचार, असंगठन, दल, भाग और विभाग।

उसने उसे नारोदोवोल्सत्वो* की समस्त गुप्त बातें बतलाईं। उसे विश्वास था कि उन्हें सुनकर वह प्रसन्न हो रहा है। नेखलूदोव ने उसकी पतली छोटी, गर्दन, उसके छितरे बे-कढ़े बाल देखे और आश्चर्य से सोचा कि यह ऐसी सब बातों में क्यों पड़ी, और उन सबको मुझे क्यों बतला रही है। उसे उस पर दया आई, किंतु वैसी नहीं जैसी कि किसान मैन्शोव पर जिसे कि अकारण ही दुर्गन्धित बन्दीगृह में रखा गया था। वह दया की पात्री थी क्योंकि भ्रम ने उसके मस्तिष्क को जकड़ रखा था। उसकी बातों से स्पष्ट था कि वह अपने आपको नायिका समझती थी और अपने सिद्धान्तों के लिए सब कुछ अर्पण करने को सनिद्ध थी;

---

* शाब्दिक अर्थ, 'जनता का संकल्प'। सन् १८८० के लगभग का एक प्रतिक्रियावादी आंदोलन।

फिर भी यह समझाने में उसे बड़ी कठिनाई होती कि उसके क्या तो सिद्धान्त थे और किसमें उसकी सफलता निहित थी।

वेरा दुखोवा जिसलिए नेखलूदोव से मिलना चाहती थी वह यों था : उसकी एक सहेली शुतोवा, जो उसके अनुसार उसके विभाग से भी सम्बन्धित नहीं थी, उसके ही साथ पाँच माह पूर्व गिरफ्तार कर ली गई और पीतर और पॉलफोर्तरेस में बंदिनी थी, क्योंकि उसके पास से कुछ निषिद्ध साहित्य (जिसे कि उसने किसी अन्य के लिए अपने पास रखा था) बरामद किया गया था। अपनी सहेली की गिरफ्तारी में कुछ अंशों में वह स्वयं को दोषिणी अनुभव करती थी। उसने नेखलूदोव से प्रार्थना की कि आपके प्रभावशाली व्यक्तियों से अच्छे सम्बन्ध हैं और आप मेरी सहेली को मुक्त करने की यथासंभव चेष्टा करें।

इसके अतिरिक्त दुखोवा ने उससे अपने दूसरे मित्र से मिलने की आज्ञा प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने को कहा। उसका मित्र था गुरकेविच (वह भी पीतर और पॉलफोर्तरेस में बन्द था)। उसकी माँ से मिलने को कहा और कहा अपने मित्र के लिए कुछ वैज्ञानिक पुस्तकें प्राप्त करने के लिए, जिनकी कि उसे अपने अध्ययन के लिए आवश्यकता थी।

नेखलूदोव ने वचन दिया कि जब मैं पीतर्सबर्ग जाऊँगा तो जो भी संभव होगा करूँगा।

जहाँ तक उसकी अपनी कहानी थी, वह बोली—"नर्स की परीक्षा पास करने के बाद मैं नारोदोवोल्सत्वो संस्था के अनुगामियों के एक दल के सम्पर्क में आ गई। पहिले तो सब ठीक चलता रहा। उन्होंने घोषणाएँ लिखीं और फैक्टरियों में प्रचार-कार्य में लग गए; फिर उनका एक प्रमुख पकड़ा गया, उनके कागजात पकड़े गए और सब सम्बन्धित व्यक्ति गिरफ्तार हो गए।

"मैं भी गिरफ्तार हो गई और अब निर्वासित कर दी जाऊँगी किंतु इससे क्या ? मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" उसने अपनी कहानी का एक सदय मुस्कान से अन्त किया।

नेखलूदोव ने विशाल नेत्रों वाली लड़की के विषय में कुछ पूछताछ की। वेरा दुखोवा ने बतलाया कि यह लड़की एक जनरल की पुत्री है और बहुत काल से प्रतिक्रियावादी संस्था की सदस्या है और इसको बन्दी इसलिए किया गया है कि इस पर एक सिपाही को गोली मारने का अभियोग है। वह कुछ षड़यंत्र-

कारियों के साथ एक मकान में रहती थी, जहाँ एक गुप्त छापाखाना भी था। एक रात जब पुलिस तलाशी लेने आई तब किराएदारों ने अपनी रक्षा करने का निश्चय किया, बत्ती बुझा दी और उन वस्तुओं को नष्ट करने लगे जो उन्हें दोषी ठहराने में सहायक सिद्ध होतीं। पुलिस बल-प्रयोग कर घुस आई और एक षड़यंत्र-कारी ने बन्दूक दाग दी जिससे एक सिपाही की मृत्यु हो गई। जब उसकी जाँच आई तब इस लड़की ने कहा कि मैंने गोली चलाई थी, यद्यपि उसने कभी रिवाल्वर छुआ तक नहीं था और एक मक्खी भी नहीं मारी थी। किंतु यह अपने वक्तव्य पर दृढ़ रही और अब इसको साइबेरिया में दासीवृत्ति का दण्ड मिला है।

"एक परोपकारी, महान् चरित्र !" वेरा दुखोवा ने अनुमोदन में कहा।

तीसरा कार्य जिसके बारे में वेरा दुखोवा बातें करना चाहती थी माश-लोवा से सम्बन्धित था। वह जानती थी—जैसी कि बातें बन्दीगृह में सब जानते थे—माशलोवा की जीवन-गाथा एवं नेखलूदोव के उसके सम्बन्ध और उसे वहाँ से हटवाकर या तो राजनैतिक वार्ड में या फिर चिकित्सालय में रोगियों की सेवा में सहायता करने के लिए रखवाने के लिए उसे राय दी। इस समय चिकित्सालय में रोगियों की संख्या इतनी थी कि अतिरिक्त नर्सों की आवश्यकता थी।

नेखलूदोव ने उसकी राय के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि मैं आपकी राय के अनुसार कार्य करने की चेष्टा करूँगा।

५६

उनके वार्तालाप में इन्सपैक्टर ने बाधा डाली। इन्सपैक्टर उठा और बोला कि समय समाप्त हो चुका है और बंदियों एवं उनके मित्रों को विदा लेनी चाहिए। नेखलूदोव ने वेरा दुखोवा से विदा ली और द्वार पर गया जहाँ वह देखता हुआ रुक गया कि वहाँ क्या हो रहा था।

"सज्जनो ! समय समाप्त हो गया, समाप्त हो गया !" :इन्सपैक्टर ने कभी उठते और कभी बैठते हुए कहा।

इन्सपैक्टर की आज्ञा ने कमरे के बन्दियों में अत्यधिक उत्साह जागृत कर दिया और कोई वहाँ से नहीं गया। कुछ उठे और खड़े-खड़े बातें करने लगे और कुछ बिना उठे ही बातें करते रहे। दो-चार रोने और विदा माँगने लगे। माँ

और उसका क्षयरोग से ग्रस्त पुत्र दोनों विशेष दुखी थे। नवयुवक अपने कागज के टुकड़े को मोड़ता रहा, और उसका चेहरा क्रोधित लगता था। इतने अधिक थे उसके प्रयास माँ के भावातिरेकों से अछूते रहने के लिए। यह सुनते ही कि अब विदाई का समय है माँ ने उसके कंधे पर अपना सिर रखा तथा जोर से रोने एवं हिल्कियाँ भरने लगी। विशाल, दयालु नेत्रों वाली लड़की—नेखलूदोव उसे देखे बिना न रह सका—रोती हुई माँ के सामने खड़ी सांत्वना भरे स्वर में उससे कुछ कह रही थी। नीले चश्मे वाला वृद्ध पुरुष अपनी पुत्री का हाथ पकड़े खड़ा था तथा उसके उत्तर में सिर हिला रहा था। युवा प्रेमी उठे और हाथ पकड़ते हुए एक-दूसरे के नेत्रों में चुपचाप देखते रहे।

"बस, ये ही यहाँ प्रसन्नचित्त हैं।" हाफ-कोट पहिने एक नवयुवक ने उस जोड़े को इंगित कर कहा जो नेखलूदोव के पास खड़ा था। वह उन लोगों को भी देख रहा था जो विदा होने वाले थे।

नेखलूदोव और उस नवयुवक की दृष्टि अपनी ओर स्थिर अनुभव कर प्रेमी जोड़े ने—रबड़ की जाकिट पहिने नवयुवक और उस सुन्दर लड़की ने—अपनी बाँहें फैलाईं और बार-बार नृत्य करने लगे।

"आज रात्रि को इन दोनों का यहां कारागृह में विवाह होने जा रहा है, और वह उसके साथ साइबेरिया जाएगी।" उस नवयुवक ने कहा।

"यह है कौन ?"

"दासवृत्ति का दण्ड प्राप्त एक अपराधी। इन दोनों को तो थोड़ा-सा आनन्द लेने दीजिए; अन्यथा यह अत्यन्त दुखद है।" नवयुवक ने क्षय रोग से ग्रस्त लड़के की माँ का रुदन सुनकर पुनः कहा।

"अब भले मानुसो ! कृपा कर, कृपा कर मुझे कठोरता का आश्रय लेने को बाध्य मत कीजिए।" इन्सपैक्टर ने उन्हीं शब्दों को कितनी ही बार दोहराते हुए कहा। "कृपया !" वह हिचकिचाते हुए क्षीण स्वर में कहता रहा "बहुत विलम्ब हो गया। आप चाहते क्या हैं ? इस भाँति की चीज नितांत...मैं अब आपसे अंतिम बार कह रहा हूँ।" उसने अपनी सिगरेट बुझाकर दूसरी जलाते हुए थके स्वर में कहा।

कुछ ऐसे प्राचीन, सार्वलौकिक, धूर्त्तता से भरे तरीके होते हैं जिनसे कि मनुष्य दूसरों को हानि पहुँचाता है किंतु यह अनुभव नहीं करता कि उसका दायित्व मुझ

पर है। किंतु यह स्पष्ट था कि इन्सपैक्टर यह अनुभव किए बिना नहीं रह सका कि इस कमरे में प्रकट होने वाले दुख को उत्पन्न करने वालों में से एक मैं भी हूँ। और यह स्पष्ट था कि इससे उसे गहन दुख था।

अन्त में बन्दी एवं दर्शक विदा होने लगे—एक अन्दर के द्वार से और दूसरे बाहर के द्वार से। रबड़ की जाकिट वाला पुरुष और क्षयरोग से ग्रस्त युवक एवं फूहड़ व्यक्ति चले गए। मेरिया पावलोना बन्दीगृह में उत्पन्न पुत्र के साथ चली गई।

दर्शकगण भी चले गए। नीले चश्मे वाला वृद्ध व्यक्ति भी भारी कदमों से नेग्वलूदोव के आगे-आगे चल दिया।

"हाँ, वस्तुओं की विचित्र अवस्था !" बातून नवयुवक ने नेखलूदोव के साथ सीढ़ियों से उतरते हुए कहा मानो कि वह अधूरी बात को फिर से प्रारम्भ कर रहा हो। "फिर भी हमें इन्सपैक्टर का कृतज्ञ होना चाहिए। वह दयालु हृदय है, वह नियमों के प्रति इतना कठोर नहीं हैं।"

युवक से बातें करता हुआ, जिसने अपना नाम मेदिन्तसेव बतलाया था, नेखलूदोव हॉल में पहुँचा। वहाँ इन्सपैक्टर उनके पास घवड़ाया-सा आया।

"यदि आप माशलोवा से मिलना चाहते हैं।" उसने नेखलूदोव से विनम्र होने की चेष्टा करते हुए कहा—"तो कृपया कल आइए।"

"बहुत अच्छा !" नेखलूदोव ने उत्तर दिया और शीघ्रता की।

स्पष्टत. निर्दोष मैन्शोव के कष्ट भयंकर प्रतीत हुए; किंतु उसका शारीरिक कष्ट इतना नहीं था जितनी कि थी खिन्नता, भगवान में और भलाई में अविश्वास, जिसे कि उन लोगों की क्रूरता देखकर वह अनुभव किए बिना न रह सका जिन्होंने उसे अकारण ही कष्ट दिया था।

भयंकर था उन दर्जनों निरपराध व्यक्तियों को अपमानित करना एवं कष्ट देना। केवल इस बात के लिए कि कोई बात कागज पर जिस भाँति लिखी जानी चाहिए थी वैसे नहीं लिखी गई थी। भयंकर थे क्रूर वार्डरगण, जिनका व्यापार ही अपने बन्धुओं को कष्ट देना था, और जो विश्वस्त थे कि हम एक महत्त्वपूर्ण एवं लाभप्रद कर्तव्य निभा रहे हैं; किन्तु इन सबमें सर्वाधिक भयंकर लगा यह रोगिल, वृद्ध, दयालु-हृदय इन्सपैक्टर जिसे उन माँ-पुत्रों को, पिता-पुत्रियों को विलग करना पड़ता था जो कि स्वयं उसकी ही भाँति एवं उसके बच्चों की भाँति थे।

"यह सब है किसलिए ?" नेखलूदोव ने सोचा किंतु सदा से अधिक उसे नैतिक घृणा की अनुभूति शारीरिक घृणा में परिवर्तन होती-सी लगी। जो कि उसे सदा ही जब भी वह बंदीगृह में आता था, उस पर अधिकार कर लेती, और उसे अपने प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिला।

५७

अगले दिन नेखलूदोव एडवोकेट से मिलने गया और उसे मैन्शोवों के केस के बारे में बतलाकर उससे प्रार्थना की कि उनकी वकालत का भार अपने हाथों में ले लें। एडवोकेट ने केस को देखने तथा उसकी वकालत निर्मूल्य करने का वचन दिया। शर्त यह थी कि केस वैसा ही निकले जैसा कि नेखलूदोव ने बतलाया था और संभावना ऐसी थी भी। तब नेखलूदोव ने उसे उन एक सौ तीस व्यक्तियों के बारे में बतलाया जो कि एक गलती के कारण बंदीगृह में थे। "यह किस पर निर्भर करता था ? गलती किसकी थी ?"

एडवोकेट क्षण भर को चुप हो गया। वह सही उत्तर देना चाहता था।

"किसकी गलती है यह ? किसी की नहीं।" उसने निर्णयात्मक रूप से कहा—"प्रोक्योरर से पूछो, वह कहेगा कि गवर्नर की है; गवर्नर से पूछो तो वह प्रोक्योरर को दोष देगा। गलती किसी की भी नहीं है।"

"मैं अभी वाइस-गवर्नर से मिलने जा रहा हूँ। मैं उससे कहूँगा।"

"ओह बिलकुल व्यर्थ है।" एडवोकेट ने मुस्कुराकर कहा—"वह इतना—कहीं वह आपका सम्बन्धी अथवा मित्र तो नहीं है ? वह ऐसा निपट मूर्ख है, यदि मैं कहूँ तो, किंतु साथ ही चालाक पशु भी।"

नेखलूदोव को मेलिन्कोव की एडवोकेट के प्रति कही हुई बातें स्मरण हो आईं और उसने उत्तर नहीं दिया, किंतु विदा माँगी और मेलिन्कोव के यहाँ चल दिया।

उसे दो बातें पूछनी थीं: माशलोवा के बन्दीगृह के चिकित्सालय में स्थानांतरण के विषय में, और एक सौ तीस पार-पत्र विहीन निरपराध बन्दियों के विषय में। एक ऐसे व्यक्ति की कृतज्ञता प्राप्त करना बड़ा कठिन था जिसका वह

आदर नहीं करता था; किंतु वह तो उसके साध्य को प्राप्त करने माध्यम मात्र था और उसे वहाँ से होकर जाना पड़ता था ।

जब वह मेलिन्कोव के घर गाड़ी से पहुँचा तो नेखलूदोव ने सामने के द्वार पर कितनी ही गाड़ियों की पंक्तियाँ लगी देखीं । उसे स्मरण हो आया कि आज वाइस गवर्नर की पत्नी का 'एट-होम' था, जिसके लिए वह निमन्त्रित था । जब नेखलूदोव वहाँ पहुँचा एक गाड़ी सिंहद्वार के सम्मुख खड़ी थी और एक वर्दीधारी नौकर जिसके हेट में एक झब्बा लगा हुआ था एक महिला की द्वार की सीढ़ियों से नीचे उतरने में सहायता कर रहा था । वह अपनी गाड़ी पकड़े हुए थी तथा उसके पतले टखने, काले मोजे और चप्पल पड़े पाँव दिखलाई दे रहे थे । गाड़ियों के मध्य एक बंद लैन्डो गाड़ी थी । वह जानता था कि यह कोरचागिन परिवार की है । उनके भूरे बालों, लाल गालों वाले कोचवान ने हैट उतार कर सिर झुका कर नेखलूदोव का मित्रतापूर्ण ढङ्ग से सम्मान किया । ऐसा वह उन भद्रपुरुषों के साथ करता था जिनसे सुपरिचित होता । जब मेलिन्कोव चटाई बिछी सीढ़ियों पर आया तो नेखलूदोव को उसके विषय में पूछने की आवश्यकता भी न पड़ी । वह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अतिथि को सीढ़ी की पहिली पौर तक ही नहीं, नीचे तक पहुँचाने आया था । अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अतिथि एक सैनिक था और फ्रांसीसी भाषा में एक लॉटरी के विषय में कह रहा था जिसके पीछे कि नगर में बच्चों की एक संस्था के निर्माण की योजना थी और वह अपनी राय व्यक्त कर रहा था कि यह स्त्रियों के लिए एक अच्छा धन्धा है ।

"इससे उन्हें आनन्द मिलता है और पैसा भी । उन्हें आनन्दोपयोग करने दो, भगवान उन्हें प्रसन्न रखे ।"

"आह ! नेखलूदोव ! प्रसन्न तो हैं ? यह क्या बात है तुम्हारे दर्शन ही नहीं होते ?" उसने नेखलूदोव से हाथ मिलाया "जाइए और श्रीमती जी को अपनी शुभ कामनाएँ दीजिए । कोरचागिन यहीं हैं और नादिने बुक्शेवदेन भी । नगर की समस्त सुन्दरियाँ," महत्त्वपूर्ण अतिथि ने अपनी वर्दी से ढके कन्धे उचकाए । "अच्छा मित्र नमस्कार ।" और उसने मेलिन्कोव का हाथ दबाया ।

"अब ऊपर चलिए । मुझे बहुत प्रसन्नता है ।" मेलिन्कोव ने उत्तेजना में नेखलूदोव का हाथ पकड़ते हुए कहा । मेलिन्कोव ने अपने मुटापे के बावजूद सीढ़ियाँ चढ़ने में शीघ्रता की ।

वह विशेष प्रसन्न था क्योंकि महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने उसका समुचित ग्रादर किया था। किसी ने भी मान लिया होता कि क्योंकि वह ज़ार की अपनी रेजीमेंट में रह चुका था ग्रतः शाही लोगों से मिलने का ग्रभ्यस्त हो गया होगा। किन्तु लगता है कि स्वाभाविक ग्रनुग्रहों से पतित ग्राकांक्षाएँ उत्तेजित हो जाती हैं। ऐसे प्रत्येक ग्रादर ने उसमें एक ऐसा ग्रानन्दातिरेक उत्पन्न किया जैसा कि एक पालतू कुत्ता उस समय ग्रनुभव करता है जबकि उसका स्वामी उसकी पीठ थपथपाता है, मारता है या उसके कान खींचता है। वह ग्रपनी पूँछ हिलाता है, सिर झुकाता है, इधर-उधर उछलता है, कान नीचे करता है ग्रौर पागल-सा हो चक्कर लगाता है। मेलिन्कोव वह सब करने को सन्निद्ध था। उसने नेखलूदोव के मुख की गम्भीरता पर उसके शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दिया किंतु उसे बलपूर्वक ड्राइङ्ग-रूम की ग्रोर घसीटता ले चला। ग्रौर तब नेखलूदोव के पास उसके पीछे चलने के ग्रतिरिक्त कोई चारा ही न था।

"कार्य बाद में। जो चाहेंगे वही करूँगा।" मेलिन्कोव ने नेखलूदोव से कहा। उस समय वह उसे नृत्यघर में से ले जा रहा था। "कह दो प्रिन्स नेखलूदोव पधारे हैं।" उसने बिना रुके एक वर्दीधारी नौकर से कहा। घोड़े की भाँति दुल्की-सी चाल से नौकर उनसे ग्रागे निकल गया।

"ग्रापको तो बस ग्राज्ञा देनी है। किंतु ग्रापको पहिले मेरी पत्नी से मिलना होगा। पहिली बार मैंने ग्रापको उससे मिले बिना ही जाने दिया।"

ड्राइङ्गरूम में जब वे पहुँचे तबतक नौकर ने नेखलूदोव के ग्राने की सूचना दे दी थी ग्रौर वाइस गवर्नर की पत्नी ग्रन्ना इग्नातयेव्ना नेखलूदोव की ग्रोर देखकर मुस्कुराई। उसके बौनट ग्रौर सिर ने उसके मुस्क्यानपूर्ण चेहरे को ढक रखा था। ड्राइङ्ग-रूम के दूसरे सिरे पर चाय की मेज के चारों ग्रोर कुछ महिलाएँ बैठी थीं ग्रौर उनके पास कुछ सैनिक एवं नागरिक पुरुष खडे थे। मर्दानी ग्रौर जनानी ग्रावाजों की बक-बक धड़ाधड़ चल रही थी।

"हमने तो सोचा कि ग्राप हमलोगों को बिल्कुल भूल गए हैं। हमारा क्या ग्रपराध है?"

इन शब्दों से ग्रन्ना इग्नातयेव्ना ने नवागंतुक को नमस्कार किया। वह इन शब्दों से घनिष्टता का एक भाव प्रगट करना चाहती थी—घनिष्टता जो उसमें ग्रौर नेखलूदोव में कभी नहीं रही।

"आप परिचित हैं ?—श्रीमती वेलीआव्सकाया। तनिक पास बैठिए। मिस्सी ! हमारी मेज पर आ जाओ; तुम्हारी चाय यहीं आ जाएगी...और आप भी" उसने एक अधिकारी से कहा, जो कि मिस्सी से बातें कर रहा था। वह उसका नाम भूल गई थी "यहीं आ-जाइए...एक प्याला चाय, प्रिन्स ?"

"मैं आपकी बात से भी सहमत नहीं हो सकती। यह बिल्कुल साफ है। उसने प्रेम नहीं किया—"एक स्त्रियोचित स्वर सुनाई दिया।

"किंतु उसे तो खट्टा पसन्द था।"

"ओह तुम्हारे मूर्खतापूर्ण परिहास !" सिल्क, स्वर्ण एवं रत्नाभरणों से लदी हुई दूसरी महिला ने हँसकर कहा।

"ये छोटे बिस्कुट तो बहुत अच्छे हैं; हल्के हैं। सोचती हूँ एक और खा लूं।"

"अच्छा क्या आप शीघ्र ही कहीं जाने वाली हैं ?"

"जी ! बस आज ही यहाँ हैं, इसीलिए तो यहाँ आ गए हैं।"

"हाँ ! गाँव तो सुहावने लगते होंगे, यहाँ भी बसन्त सुहाना है।"

गहरी धारीदार पोशाक पहिने, जो कि उसके बदन में इतनी चिपकी हुई थी कि अन्तर ही नहीं प्रतीत होता था, और सिर पर हैट लगाए मिस्सी बहुत सुन्दर लग रही थी। नेखलूदोव को देखते ही वह लज्जा से आरक्त हो उठी।

"ओह ! मैंने सोचा कि आप गए होंगे।" वह उससे बोली।

"मैं बस जाने ही वाला हूँ। मुझे यहाँ काम से रुकना पड़ा है और यहाँ भी मैं काम से ही आया हूँ।"

"आप मामा से नहीं मिलेंगे ? आपसे मिलना पसन्द करेंगी।" उसने यह जानते हुए भी कहा कि वह सच नहीं बोल रही और यह कि नेखलूदोव भी यह जानता था। इससे वह और भी अधिक लज्जित हो उठी।

"मुझे भय है कि समय नहीं मिल सकेगा।" नेखलूदोव ने गम्भीरता से यह प्रकट करने की चेष्टा करते हुए कहा मानो कि उसने उसकी आरक्तता को देखा ही न हो।

मिस्सी ने क्रोध में भौंहें चढ़ाईं, अपने कन्धे हिलाए और एक सुन्दर अधिकारी की ओर मुड़ी जिसने कि उसके हाथ से खाली प्याला लिया और कुर्सियों से

अपनी तलवार टकराता हुआ वह प्याले को दृढ़ता से मेज की दूसरी ओर ले गया।

"आपको अनाथालय के लिए दान अवश्य देना चाहिए।"

"मैं मना नहीं करती, किंतु मेरी केवल इच्छा है अपने पारितोषिक को लॉटरी के लिए रखने की उसमें मैं मुक्त हाथ से दूँगी।"

"अच्छा! भूल मत जाना।" झूँठी हँसी के साथ एक स्वर सुनाई दिया।

अन्ना इग्नातयेव्ना आनन्दमग्न थी। उसका 'एट-होम' अत्यन्त सफल रहा।

"मिकी कहते हैं कि आप बन्दीगृह के अपने कार्य में व्यस्त हैं। मैं आपकी बात भली प्रकार समझ सकती हूँ।" वह नेखलूदोव से बोली—"मिकीमें" (उसका तात्पर्य अपने मोटे पति मेलिन्कोव से था) त्रुटियाँ हो सकती हैं, किंतु आप तो जानते ही हैं कि वह कितने दयालु हृदय हैं। ये सब विपत्तिग्रस्त बंदी उनके बच्चों के समान हैं। वह उन्हें अन्य भाव से नही देखते। It est diune bonte..." वह रुक गई क्योंकि उसे अपने पति के bonte से न्याय करने को कोई शब्द नहीं मिले जिसकी कि आज्ञा से बंदियों को कोड़े लगाए जाते थे और मुस्कुराते हुए वह शीघ्र ही एक वृद्धा की ओर मुड़ गई जो लाल पट्टियों से ढकी पड़ी थी और तबही प्रविष्ट हुई थी।

अत्यन्त ही सीमित बातें कर जितनी कि लोक-लाज के लिए आवश्यक थीं नेखलूदोव उठा और मेलिन्कोव के पास गया।

"क्या आप कृपाकर कुछ समय देंगे?"

"ओह हाँ! क्या बात है? आइए वहाँ अन्दर चलें।"

वे एक छोटी जापानी बैठक में गए और खिड़की के पास जा बैंठे।

५८

"अच्छा, Je suis a vouo. क्या आप सिगरेट पीएँगे? किंतु ठहरिए; हमें सावधानी बर्तनी चाहिए और इसे गन्दा नहीं करना चाहिए।" मेलिन्कोव बोला और एक आश-ट्रे निकाल लाया। "हाँ?"

"मुझे आप से दो बातों के विषय में पूछना है।"

"मेरे प्रिय!"

गम्भीरता और खिन्नता का भाव मेलिन्कोव के मुख पर व्याप्त हो गया, और एक कुत्ते के समान उत्तेजना के वे सारे भाव वर्तमान हो आए जिसका स्वामी उसके कानों को पीछे से खींच अदृश्य हो गया हो। उनके कानों में ड्राइङ्ग-रूम के स्वर पड़ रहे थे। एक स्त्री का स्वर सुनाई दिया। और दूसरे कोने से एक पुरुष स्वर आया। वह कोई ऐसी बात कह रहा था जिसमें कोमतेस वोरोन्तशोव और विक्तर आप्राक्सीन का नाम बार-बार आ रहा था। तीसरी ओर से स्वरों की भनभनाहट और हँसी सुनाई पड़ रही थी। मेलिन्कोव ने एक ही समय में नेखलूदोव की बातें और ड्राइङ्ग-रूम के कार्य-कलाप दोनों सुनने चाहे।

"मैं उसी स्त्री के लिए पुनः आया हूँ।" नेखलूदोव बोला।

"ओह हाँ ! मैं जानता हूँ। वही जो निर्दोष बंद है।"

"मैं चाहता हूँ कि उसे बंदीगृह के चिकित्सालय में नियुक्त कर दिया जाय। मुझसे कहा गया है कि ऐसा किया जा सकता है।"

मेलिन्कोव ने अपने ओंठ सिकोड़े और विचार करने लगा।

"यह तो कठिन है," वह बोला—"खैर, मैं विचार करूँगा कि क्या किया जा सकता है और आपको कल तार से सूचित कर दूँगा।"

"मुझे सूचना मिली है कि वहाँ रोगियों की संख्या अधिक है और उन्हें सहायता की आवश्यकता है।"

"ठीक है ! ठीक है ! मैं आपको जैसा भी होगा बतला दूँगा।"

"कृपया अवश्य !" नेखलूदोव बोला।

ड्राइङ्गरूम से साधारण और स्वाभाविक हास्य की ध्वनि भी आई।

"यह वही विक्तर महोदय हैं ! वह जब होश-हवाश में होता है तब अत्यंत ही प्रफुल्ल रहता है।" मेलिन्कोव ने कहा।

"दूसरी बात मुझे आपसे यह कहनी थी," नेखलूदोव बोला—"कि, बंदीगृह में एक सौ तीस बंदी केवल इसलिए बंद है कि उनके पार-पत्रों की तिथि समाप्त हो चुकी थी। उन्हें यहाँ एक माह से ऊपर हो गया है।"

और उसने उस केस की सब परिस्थितियाँ बतलाईं।

"आपको यह कैसे ज्ञात हुआ ?" मेलिन्कोव ने असंतुष्ट एवं असुविधा से उसकी ओर देखते हुए कहा।

"मैं एक बंदी से मिलने गया था और ये व्यक्ति मेरे पास बरामदे में आए तथा इन्होंने मुझे घेर लिया और बोले..."

"किस बंदी से आप मिलने गए थे ?"

"एक निर्दोष किसान से जिसे कि बंदीगृह में बन्द कर दिया गया है, मैंने उसके केस को एक एडवोकेट को सौंप दिया है। किंतु पॉइन्ट यह नहीं है। क्या यह सम्भव है कि जिन व्यक्तियों ने कोई अपराध नहीं किया उनको बंदीगृह में डाला जा सकता है केवल इसलिए कि उनके पार-पत्रों की तिथि समाप्त हो गई थी ? और..."

"वह प्रोक्योरर के विभाग से सम्बन्धित है।" मेलिन्कोव ने क्रुद्ध हो उसकी बात काटी—"देखिए, यह सब उसी निर्णय की कृपा है जिसे कि आप तुरंत एवं न्यायिक कहते हैं। यह प्रोक्योरर का कर्तव्य है कि वह कारागार में जाए और देखे कि अनुचित लोगों को तो बंदी नहीं किया गया है। किंतु वह तो ताश उड़ाते हैं, बस यही करते हैं।"

"क्या मुझे यह सोचना चाहिए कि आप कुछ नहीं कर सकते ?" नेखलूदोव ने निराशा से एडवोकेट की बात सोचते हुए कहा कि वाइस गवर्नर इसका दोष प्रोक्योरर के मत्थे मढ़ देगा।

"क्यों नहीं। मैं इसको तुरंत ही देखूंगा।"

"उसके लिए बहुत बुरा हुआ। वह तो हँसी का पिटारा है।" एक स्त्री का स्वर ड्राइङ्गरूम से सुनाई दिया। स्वर उसके कथन से स्पष्टतः विपरीत था।

"यह तो सुन्दर है। मैं भी लूंगा।" दूसरे कोने से एक पुरुष का स्वर सुनाई दिया साथ ही एक स्त्री की हँसी की खिलखिलाहट भी। स्त्री किसी वस्तु को उसे ले-लेने से रोक रही थी जिसे कि वह उससे ले रहा था।

"नहीं ! नहीं ! किसी भी मूल्य पर नहीं।" स्त्री ने कहा।

"अच्छा तो फिर ठीक है, मैं यह सब कर दूँगा।" मेलिन्कोव ने दोहराया और उसने अपने वैदूर्यमणि-मुद्रिका वाले हाथ से सिगरेट बुझाई—"और अब महिलाओं में चलिए।"

"एक मिनट" नेखलूदोव ने ड्राइङ्गरूम के द्वार पर रुकते हुए कहा—"मैंने सुना है कि कुछ लोगों को कल बंदीगृह में शारीरिक दण्ड दिया गया था। क्या यह सच है ?"

मेलिन्कोव लज्जित हो उठा ।

"ओह वह ! नहीं मिस्टर आपको निश्चय ही वहाँ नहीं जाने देना चाहिए ! आप प्रत्येक बात जानना चाहते हैं । आइए, आइए—अन्ना हमें बुला रही है ।" उसने नेखलूदोव की बाँह पकड़ते हुए कहा और वह पुनः उतना ही उत्तेजित हो गया जितना कि प्रभावशाली व्यक्तियों से सम्मान प्राप्त करने के बाद होता था । अंतर केवल इतना था कि तब वह होता प्रसन्न और अब उत्सुक ।

नेखलूदोव ने उससे अपनी बाँह छुड़ाई और बिना किसी से विदा माँगे अथवा एक शब्द कहे चेहरे पर खिन्नता लिए ड्राइङ्गरूम को पार कर हॉल में पहुँचा तथा वर्दीधारी नौकर से आगे निकल सड़क के द्वार की ओर बढ़ दिया । उसे देखते उसकी ओर वढ़ा ।

"उससे क्या बात हो गई ? आपने कह क्या दिया ?" अन्ना ने अपने पति से पूछा ।

"वह एक la francaise है ।" किसी ने कहा ।

"A la francaise, सचमुच वह एक la zoulou है ।"

"और हाँ. वह आरम्भ से ही ऐसा है ।"

एक उठा, कोई दूसरा आया और बातचीतों का कोलाहल चलता रहा । नेखलूदोव की इस कथा को उस मंडली ने बाकी सारे 'एट-होम' में बातचीतों का सुलभ विषय बना लिया ।

मेलिन्कोव से मिलने के अगले दिन नेखलूदोव के पास उसका पत्र पहुँचा । पत्र मोटे चमकदार कागज पर दृढ़ सुलेख में लिखा था उस पर दूतावास की मोहर थी और पत्र चपड़ी से मुहर बंद था । मेलिन्कोव ने लिखा था कि मैंने माशलोवा का स्थानांतरण चिकित्सालय में करने के लिए डॉक्टर को लिख दिया है और मुझे आशा है कि आपकी इच्छा पर ध्यान दिया जाएगा । पत्र पर हस्ताक्षर थे 'आपका स्नेही वयोवृद्ध साथी' और हस्ताक्षर एक दृढ़, विशाल एवं कलापूर्ण शोभा से किए गए थे ।

"मूर्ख !" कहे बिना नेखलूदोव से नहीं रहा गया । क्योंकि विशेषतः उसे शब्द 'साथी' में मेलिन्कोव का अपनी ओर जमाव प्रतीत हुआ । अर्थात् उसे लगा कि जब मेलिन्कोव इस पद को नैतिक दृष्टि से बहुत गन्दे एवं लज्जापूर्ण ढंग से घेरे

बैठा है तब भी वह अपने आपको एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझता है। और यदि वह उसकी चाटुकारी नहीं करना चाहता तो कम-से-कम यह तो दिखलाना ही चाहता है कि मैं इतना अहंकारी नहीं हूँ कि तुम्हें साथी न कहूँ।

५९

अत्यधिक प्रचलित अन्धविश्वासों में से एक यह है कि प्रत्येक व्यक्ति में दूसरे से भिन्न गुण होते हैं। कोई दयालु है तो कोई क्रूर, तीसरा बुद्धिमान् है अथवा मूर्ख, अथवा उत्साही या उदासीन। वास्तव में मनुष्य ऐसे नहीं होते। हम किसी व्यक्ति के विषय में यह तो कह सकते हैं कि उसमें क्रूरता की अपेक्षा दया अधिक है, और मूर्खता की अपेक्षा बुद्धिमत्ता अधिक है एवं उदासीनता की अपेक्षा उत्साह अधिक है अथवा इसके विपरीत; किंतु किसी के विषय में यह सत्य नहीं है कि अमुक व्यक्ति दयालु एवं बुद्धिमान् है और अमुक दुष्ट एवं मूर्ख। और फिर भी हम मनुष्यों को इन्हीं श्रेणियों में विभाजित करते हैं। और यह असत्य है, गलत है। मनुष्य तो सरिताओं की भाँति हैं: जल सबमें वही है; किंतु प्रत्येक सरिता कहीं संकरी, कहीं अधिक वेगवान, कहीं मंद, कहीं विस्तृत, कहीं स्वच्छ, कहीं गँदली, कहीं शीतल और कहीं उष्ण है। मनुष्य के विषय में भी यही बात है। प्रत्येक पूर्व से भिन्न हो जाता है जब कि है वही का वही व्यक्ति।

कुछ व्यक्तियों में तो ये अन्तर अत्यधिक होते हैं और उस श्रेणी में नेख-लूदोव भी आता था। उसमें इन अन्तरों के कारण शारीरिक एवं आत्मिक दोनों ही थे। अब उसमें ऐसा ही परिवर्तन आया।

जीवन के पुनर्जागरण पर जो विजय एवं आनन्द की अनुभूति उसने अभियोग-कथन एवं कातूशा से प्रथम मिलन के पश्चात् अनुभव की थी पूर्णतया अदृश्य हो चुकी थी और कातूशा के अन्तिम मिलन के पश्चात् से भय एवं विराग ने आनन्द को स्थानांतरित कर दिया। उसका दृढ़ निश्चय था कि मैं अब उसका साथ नहीं छोड़ूँगा और उससे विवाह कर लूंगा यदि उसकी ऐसी इच्छा हुई तो। किंतु यह उसे अत्यन्त कठिन प्रतीत हुआ—इससे उसके हृदय को ठेस पहुँची।

मेलिन्कोव से मिलने के अगले दिन वह पुनः माशलोवा से मिलने बंदीगृह गया।

इन्सपैक्टर ने माशलोवा से उसे बातें करने की आज्ञा दे दी। केवल मिलाया उसे एडवोकेट के कमरे में नहीं वरन् स्त्रियों के लिए निर्मित मिलाई के कमरे में ही।

अपनी दयालुता के अतिरिक्त इन्सपैक्टर नेखलूदोव से पहिले से अधिक संकोच अनुभव करने लगा। मेलिन्कोव से नेखलूदोव के वार्तालाप के परिणाम स्वरूप अधिक सावधानी बरतने का उसके पास आज्ञा-पत्र भेजा जा चुका था।

"आप उससे मिल सकते हैं।" इन्सपैक्टर ने कहा—"किंतु पैसे के विषय में मेरी पहिली बात को अवश्य स्मरण रखिएगा। जहाँ तक उसको चिकित्सालय भेजने का प्रश्न है जैसा कि गवर्नर साहब ने लिखा था वह हो जाएगा; डॉक्टर सह-मत हो जाएगा। बस, वह स्वयं नहीं चाहती है। वह कहती है अधिक आवश्यकता तो मुझे कुत्सित भिखमंगों के लिए तरल भोजन ले जाने की है।' आप इन लोगों से परिचित नहीं हैं प्रिन्स।" उसने पुनः कहा।

नेखलूदोव ने उत्तर नहीं दिया किंतु मिलाई कराने के लिए कहा। इन्स-पैक्टर ने एक वार्डर को बुलाया और तब नेखलूदोव स्त्रियों के मिलाई-गृह में गया जहाँ माशलोवा के अतिरिक्त कोई नहीं था। वह जाल के पीछे से शांत और भय-भीत-सी आई और उसकी ओर देखे बिना बोली:

"दिमीत्री इवानोविच परसों की मेरी ऊल-जलूल बातों के लिए मुझे क्षमा कर दें।"

"क्षमा करने वाला मैं नहीं हूँ।" नेखलूदोव ने कहना प्रारम्भ किया।

"किंतु फिर भी आप मेरा विचार त्याग दीजिए।" बात काट कर वह बोली। और नेखलूदोव ने उसकी तिरछी आँखों में पहिला-सा क्रोध का भाव देखा।

"मैं तुम्हें क्यों त्याग दूँ ?"

"त्याग देना चाहिए।"

"किंतु क्यों ?"

उसने पुनः ऊपर देखा। नेखलूदोव को लगा कि उन नेत्रों में अब भी वही क्रोध का भाव है।

"अच्छा तो यही है।" वह बोली—"आपको मुझे त्याग देना चाहिए। जो कुछ कह रही हूँ, सत्य है—मैं नहीं सहन कर सकती। आपको तुरंत ही त्याग देना

चाहिए।" उसके ओंठ कांप गए और वह क्षण भर को चुप हो गई—"यह सच है, मैं फाँसी लगा लूंगी।"

नेखलूदोव को अनुभव हुआ कि इस अस्वीकृति में घृणा एवं अक्षम्य क्रोध था किंतु इसके अतिरिक्त कुछ और भी था, थी कुछ अच्छाई। उसकी पहिली अस्वीकृति की इस पुष्टि ने—जिसे वह पूर्ण शांति से कर रही थी—नेखलूदोव के हृदय के समस्त संदेहों को तुरंत निवृत कर दिया और पुनः वही गम्भीर विजय की अनुभूति उत्पन्न कर दी जिसका अनुभव उसे कातूशा के सम्बन्धों से हुआ था।

"कातूशा ! अब मैं फिर वही कर रहा हूँ जो पहिले कह चुका हूँ।" उसने अत्यधिक गम्भीर हो कहा—"मैं तुमसे अपने साथ विवाह करने को कहता हूँ। यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है, और जबतक तुममें यह इच्छा जाग्रत नहीं होती है तब तक मैं तुम्हारा साथ देता रहूँगा और जहाँ तुम रहोगी वहीं मैं भी रहूँगा।"

"यह आपकी राजी। मैं और कुछ नहीं कहूँगी।" उसने उत्तर दिया और उसके ओंठ पुनः काँपने लगे।

वह भी बोल सकने में असमर्थता अनुभव कर, चुप हो गया।

"अब मैं पहिले गांव जाऊँगा फिर पीतर्सबर्ग।" पहिले से अधिक शांत होने पर वह बोला—"मैं तुम्हारे...मेरा तात्पर्य अपने केस से हैं; पर पुनर्विचार की हर सम्भव चेष्टा करूँगा और भगवान् की कृपा हुई तो दंड वापिस ले लिया जाएगा।"

"और यदि वापिस नहीं भी हो तो भी चिंता मत कीजिए। मैं इसके ही योग्य थी, यदि इस केस में नहीं तो दूसरे कारणों से।" वह बोली। नेखलूदोव ने देखा कि माशलोवा को अपने अश्रुओं को रोकने में बड़ी कठिनाई हो रही है।

"अच्छा आप मेन्शोव से मिले ?" उसने अपना भाव छिपाने के लिए अकस्मात् पूछा—"यह सच है कि वे निर्दोष हैं, क्यों, नहीं ?"

"हाँ ! मेरा भी यही विचार है।"

"बुढ़िया कितनी अच्छी है।" वह बोली।

और नेखलूदोव जो कुछ भी मेन्शोवों के विषय में जानता था उसने उसे बतला दिया। और फिर माशलोवा से पूछा कि तुम्हें किसी वस्तु की आवश्यकता तो नहीं।

उसने उत्तर दिया कि मुझे कुछ नहीं चाहिए।

फिर वे चुप हो गए।

"और हाँ, चिकित्सालय के विषय में," वह अपने तिरछे नेत्रों से उसकी ओर देखती हुई बोली, "यदि आप कहें तो मैं चली जाऊँगी और अब मदिरा-पान भी नहीं करूँगी।"

नेखलूदोव ने उसके नेत्रों को देखा। वे मुस्करा रहे थे।

"बहुत सुन्दर!" बस वह इतना ही कह सका और फिर उसने विदा माँग ली।

"हाँ! हाँ! वह एक बिल्कुल ही भिन्न प्राणी है।" नेखलूदोव ने सोचा। अपनी पूर्व की समस्त शंकाओं के बाद उसे बिल्कुल नवीन अनुभूति हुई—निश्चित किया कि प्रेम अजेय है।

इस भेंट के पश्चात् माशलोवा जब अपनी कोलाहलपूर्ण कारा में पहुँची तो उसने अपना लबादा उतार दिया और अपनी गोद में हाथों को बाँधकर तख्तों की अपनी चारपाई पर जा बैठी। कोठरी में थीं केवल व्लादीमीर की क्षयरोग ग्रस्त स्त्री और उसका बालक, मैन्शोव की वृद्धा माँ और चौकीदार की पत्नी। छोटे पादरी की पुत्री का मस्तिष्क विकृत बतला कर उसे एकदिन पूर्व ही चिकित्सालय भेज दिया गया था। बाकी सब स्त्रियाँ अपने कपड़े धोने गई थीं। वृद्धा सो रही थी, कोठरी का द्वार खुला पड़ा था और चौकीदार के बच्चे बाहर बरामदे में खेल रहे थे! व्लादीमीर की स्त्री अपनी गोद में अपने बच्चे को लिए और चौकीदार की पत्नी अपने मोजे को लिए जिसे कि वह अपनी टेढ़ी उङ्गलियों से बुन रही थी—दोनों ही माशलोवा के पास चली आईं।

"अच्छा तो तुम्हारी बातें हो गईं?" उन्होंने पूछा।

माशलोवा ऊँची चारपाई पर अपनी टाँगें हिलाती हुई चुप बैठी थी। उसकी टाँगें भूमि को छू नहीं रही थीं।

"बच्चों की भांति रोने से क्या लाभ?" चौकीदार की पत्नी ने कहा "मुख्य बात तो यह हैं कि उदासीनता त्याग देनी चाहिए। अरी कातूशा प्रसन्न रहो!" उसने अपनी उङ्गलियाँ शीघ्रता से चलाते हुए कहा।

माशलोवा चुप रही।

"और यहाँ की सब स्त्रियाँ कपड़े धोने गई हैं।" ब्लादीमीर की स्त्री ने कहा "मैंने सुना है कि आज बहुत दान हुआ है। बहुत कुछ प्राप्त हुआ है।"

"फिनाश्का।" चौकीदार की पत्नी ने पुकारा "वह दुष्ट गया कहाँ ?"

उसने एक सलाई निकाली, मोजे तथा ऊन में घुसेड़ी और बरामदे में बाहर चली गई।

इस समय बरामदे से स्त्रियों के स्वर सुनाई दे रहे थे। कोठरी की और सहेलियाँ भी कोठरी में प्रविष्ट हुईं। वे जेली जूते तो पहिने थीं पर मोजे नहीं। हरएक के हाथ में एक-एक रौल था किसी-किसी के हाथ में दो भी। फेदोशिया तुरन्त ही माशलोवा के पास आई।

"क्या बात है ? क्या कुछ गड़बड़ हो गई ?" उसने अपने स्पष्ट नीले नेत्रों से प्रेम सहित माशलोवा की ओर देखा।

"यह अपनी चाय के लिए है।" उसने आलमारी में रौलें रखते हुए कहा।

"क्यों, उसने अपने विवाह के निश्चय को तो नहीं बदल दिया ?" कोरोविलियोवा ने पूछा।

"नहीं, उसने नहीं बदला; किंतु मैं ही नहीं चाहती।" माशलोवा बोली "और मैंने उससे यह कह दिया है।"

"तुम भी निरी मूर्खा हो !" कोराबिलियोवा ने गहरी निःश्वास भरते हुए कहा।

"यदि साथ-साथ नहीं रहा जा सकता तो विवाह करने से लाभ क्या ?" फेदोशिया बोली।

"तुम्हारा भी तो पति है—वह तुम्हारे साथ जा रहा है।" चौकीदार की पत्नी ने कहा।

"यह तो ठीक है किंतु हम तो विवाहित हैं।" फैदोशिया बोली "किंतु वह क्यों विवाह करे जब उसे उसके साथ रहना ही नहीं है ?"

"क्यों; सचमुच ! मूर्ख मत बनो ! जानती हो यदि वह इससे विवाह कर लेता है तो सम्पत्ति इसके चारों ओर मँडराएगी।" कोराबिलियोवा ने कहा।

"वह कहता है 'जहाँ तुम जाओगे मैं भी साथ चलूँगा'" माशलोवा बोली,

"यदि वह करता है तो ठीक है नहीं करता है तो भी ठीक है। मैं उससे नहीं कहने की। अब वह केस को सुलझाने और प्रयत्न करने पीतर्सबर्ग जा रहा है। वह वहाँ के सब मंत्रियों का सम्बन्धी है। किंतु मुझे इससे क्या—मुझे उसकी कोई आवश्यकता नहीं।" वह कहती रही।

"सचमुच नहीं।" एकाएक कोराबिलियोवा सहमत हो गई। स्पष्टतः वह अपने थैले की वस्तुओं को बैठी देख रही थी और उसके मस्तिष्क में कोई अन्य ही विचार था। "अच्छा तो फिर दो-एक घूँट ही भर लें ?"

"तुम पीलो" माशलोवा ने उत्तर दिया, "मैं नहीं पीऊँगी।"

: दो :

१

माशलोवा का केस सीनेट के सम्मुख एक पक्ष पश्चात् प्रस्तुत होना था और तब ही नेखलूदोव पीतर्सबर्ग पहुँचना चाहता था (जैसी कि पिटीशन लिखने वाले एडवोकेट ने राय दी थी) और यदि सीनेट उपेक्षा कर दे तो वह सम्राट् से अपील कर दे। उस परिस्थिति में –और एडवोकेट की राय के अनुसार उसके लिए सन्निद्ध रहना सर्वश्रेष्ठ था क्योंकि अपील के आधार बहुत ही न्यून थे—अपराधियों के दल को, जिसमें माशलोवा को ले लिया गया था, जून के प्रारम्भ में चल देना था और इसलिए अपने दृढ़ निश्चय के अनुसार उसके साथ साइबेरिया चल सकने के लिए नेखलूदोव के लिए यह आवश्यक था कि वह अपनी जमींदारी में जाए और उन मामलों को भी तय कर दे।

सबसे पहिले वह सर्वाधिक समीप की बड़ी जमींदारी कुज़मिन्शकोए में गया। यह ब्लैक-अर्थ जिले में थी जिससे उसे बहुत मोटी आय थी।

नेखलूदोव अपने बचपन एवं यौवनारम्भ में इस जमींदारी में कई बार आ जा चुका था और उसके बाद वहाँ दो बार हो आया था और एक बार अपनी माँ के कहने पर जर्मन कारिंदे को ले गया तथा उसके साथ लेखा-जोखा जाँच चुका था। इसलिए वहाँ की अवस्था एवं किसानों के तथा प्रबन्ध (अर्थात् स्वामी) के सम्बन्धों से वह बहुत समय पूर्व से ही परिचित था।

स्वामी के साथ किसानों के सम्बन्ध थे ऐसे कि यदि विनम्र शब्दों में कहा जाय तो किसान उन प्रबन्धकों के ही ऊपर निर्भर थे अन्यथा कठोर शब्दों में तो वे दास थे। यह दास वृत्ति वैसी नहीं थीं जैसी कि सन् १८६१ में समाप्त कर दी गई थी अर्थात् कुछ व्यक्तियों की अपने स्वामियों के प्रति। वरन् यह थी किसानों का पूरा समुदाय, जिनके पास भूमि बिल्कुल नहीं थी और यदि किसी के पास थी भी तो नहीं के बराबर—ऐसे किसानों के पूरे समुदाय की बड़े भूमिधरों के पूरे समुदाय के प्रति अथवा उन व्यक्तिगत बड़े भूस्वामियों के प्रति जिनमें कि वे रहते थे। नेखलूदोव भी जानता था; वास्तव में उसे ज्ञात हुए बिना रह भी कैसे सकता था जब कि दासवृत्ति के इस प्रकार पर उसकी जमींदारियों का प्रबन्ध निर्भर था और वह स्वयं जमींदारी के प्रबन्ध के इस प्रकार के पक्ष में था। वह केवल इतना ही नहीं जानता था; वह यह भी जानता था कि यह अन्याय था, क्रूरता थी: और यह उसे तब मालूम पड़ा था जब कि वह विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था और उसने हेनरीजार्ज का मत स्वीकार किया था तथा उसका उपदेश दिया और उस शिक्षा के आधार पर अपने पिता से उत्तराधिकार में प्राप्त भूमि किसानों में बाँट दी। यह सच है कि सेना में नौकरी करते समय जबकि वह बीस हजार रूबल प्रतिवर्ष व्यय करने लगा था वे पुराने दृष्टिकोण प्रतिबन्ध बनकर न रह गए। और उसने न केवल विचार करना ही छोड़ दिया कि उसकी माँ द्वारा दिया हुआ यह धन कहाँ से आता है किंतु यहाँ तक कि यदि कभी ऐसा विचार उत्पन्न भी होता तो उसे टाल जाता। किंतु उसकी माँ की मृत्यु ने, सम्पत्ति के प्राप्त अधिकारों ने, एवं उनके प्रबन्धों की आवश्यकता ने पुनः उसी प्रश्न को छेड़ दिया कि निजी जमींदारी के प्रति उसका क्या सम्बन्ध होना चाहिए। एक माह पूर्व नेखलूदोव ने कह दिया होता कि जैसा भी है उसको बदलने की मुझमें सामर्थ्य नहीं है; कि मैं जमींदारी का प्रबन्ध नहीं करता हूँ: और वह किसी न किसी भाँति अपनी आत्मा की आवाज को दबा देता तथा जमींदारी से कहीं दूर रहा आता और रुपए वहीं माँगता रहता। यद्यपि बन्दी-संसार के कठिन एवं कठोर सम्बन्ध वर्तमान थे—जिनमें कि धन की उसे आवश्यकता थी—और साथ ही साइबेरिया यात्रा की संभावना भी थी फिर भी उसने निश्चय कर लिया कि अब वह पहिले का सा हिसाब चलने नहीं देगा—परिवर्तन भी इस ढङ्ग से कि जो उसके लिए अलाभकर था। इसलिए उसने भूमि स्वयं न जोतकर किसानों को कम किराए पर उठा देने का निश्चय कर लिया जिससे कि वे लोग जमींदार पर निर्भर हुए बिना ही भूमि को जोत सकें। जमींदारों एवं खेत जोतने वाले दासों के स्वामियों की आपस

में तुलना करते समय दो-तीन बार नेखलूदोव ने भूमि को मजदूरी पर जुतवाने की अपेक्षा भूमि को किराए पर किसानों को देने की तुलना की। मजदूरी पर जुतवाने की व्यवस्था प्राचीन थी। इसके द्वारा दासों के स्वामीगण उनसे परिश्रम कराकर धन ऐंठते थे। भूमि को किसानों को किराए पर देना समस्या का समाधान नहीं था, किंतु समाधान की ओर एक कदम था; यह दासवृत्ति के कठोर रूप में कमी करने की ओर एक आन्दोलन था और यह वह मार्ग था जिस पर कि वह चलना चाहता था।

नेखलूदोव कुज़मिन्शकोए में दोपहर के लगभग पहुँचा। अपने जीवन को हर प्रकार से सादा करने के प्रयास स्वरूप उसने तार नहीं दिया किंतु स्टेशन पर दो घोड़े जुती एक किसान् गाड़ी किराए पर ली। गाड़ीवान नवयुवक ही था और नानकीन (सूती कपड़ा) का कोट पहिने हुए था तथा उसकी लम्बी कमर के नीचे पेटी बँधी थी। उसे उस सज्जन से बात करने में विशेषतया तब आनन्द आया जब कि उनमें उस ऐंठे मुड़े सफेद घोड़े और दूसरे हड्डा के रोगी दुर्बल घोड़े के ऊपर बातें हुईं जो कि मनुष्य की चाल पर ही चल पाता था और जिस चाल से चलना उन्हें सदा से ही पसन्द था।

गाड़ीवान ने कुज़मिन्शकोए के कारिंदे की बातें प्रारम्भ की। उसे मालूम नहीं था कि स्वयं मालिक बैठा था। नेखलूदोव ने उसे जानबूझ कर अपना परिचय नहीं बतलाया था।

"वह आडम्बरी जर्मन!" गाड़ीवान ने (वह शहर में हो आया था और उसने उपन्यास पढ़े थे) ऊपर डिब्बे पर उसकी बगल में बैठते हुए कहा। उसने अपनी लम्बी चाबुक के नीचे से ऊपर तक अपना हाथ फिराकर अपनी योग्यता का परिचय देने का प्रयत्न करते हुए कहा. "उस आश्वरी जर्मन ने तीन कुम्मैत घोड़े लिए हैं और जब वह अपनी घरवाली को साथ लेकर हाँकता हुआ निकलता है—हे मेरे भगवान्! बड़े दिनों में उसने अपने घर में क्रिसमस वृक्ष लगाया था। मैंने कुछ दर्शकों को वहाँ पहुँचाया था। वहाँ बिजली का प्रकाश था; उसका सा मकान तो सारी जमींदारी में नहीं मिल सकता। उसने ढेरों रुपया चुराया है। और चुराए क्यों नहीं? उसे कोई रोकने वाला हो तब तो! मैंने सुना है कि उसने अच्छी जमींदारी खरीद ली है।"

नेखलूदोव की कल्पना थी कि मैं इन बातों से बिल्कुल तटस्थ हूँ कि कारिंदा

ने कैसा प्रबन्ध किया है और इससे उसने क्या लाभ उठाए हैं। लम्बी कमर वाले गाड़ीवान की बातें उसे अच्छी नहीं लगीं।

उसने उस मनोहर दिवस की, मोटे और काले बादलों की, जो सूर्य को बारम्बार ढक देते; खेतों की जिनमें से किसान हरी ओट को कुदाली से खोद-कर निकाल रहे थे; जंगलों की जो पुराने ओक वृक्षों के अतिरिक्त सभी नए हरे वृक्षों से भरे पड़े थे, चरागाहों की जो कि चरते हुए पशुओं एवं घोड़ों से चितकबरे दिखलाई दे रहे थे; खेतों की जो कहीं दूर पर जोते जा रहे थे– सबकी प्रशंसा की, किंतु जबतब उसे स्मरण हो आता कि कोई ऐसी वस्तु भी थी जो असुखद थी और जब वह सोचता कि कौन-सी ऐसी बात है तब उसे गाड़ीवान द्वारा जर्मन कारिंदा के विषय में बतलाई हुई कहानी स्मरण हो आती जो कि कुजमिन्शकोए का प्रबन्धक था।

कार्य पुस्तिकाओं एवं कारिंदा की बातों से नेखलूदोव को ज्ञात हुआ कि दो तिहाई सर्वाधिक उपजाऊ भूमि तो नए यन्त्रों से जोती-बोई जाती है और उस काम को निश्चित वेतन पर काम करने वाले मजदूर करते हैं तथा एक तिहाई भूमि किसान जोतते हैं और उन्हें पाँच रूबल प्रति डेसीआटिन* मिलता है। अर्थात् किसानों को एक डेसीआटिन भूमि तीन बार जोतनी पड़ती थी, तीन बार उनके ढेले तोड़ने पड़ते थे, नाज बोना और काटना पड़ता था, उनके पुलिंदे बनाने पड़ते थे और उसको खलिहान में ले जाना पड़ता था—कुल पाँच रूबल में जबकि उतना ही काम यदि वैतनिक मजदूरी से कराया जाय तो दस रूबल में होता था। जो भी वस्तुएँ किसानों को जमींदारी से प्राप्त होती थीं बहुत ऊँचे मूल्यों पर दी जाती थीं और उस मूल्य को वे अपनी मजदूरी से चुकाते थे। चरागाहों, जंगलों और आलू की डंठलों के प्रयोग के लिए वह मजदूरी में मूल्य चुकाते थे और लग-भग सब ही कार्यालय के ऋणी थे। इस भाँति जुते खेतों, किसानों द्वारा किराए पर ली गई भूमि को यदि बेच दिया जाता और उससे प्राप्त धन को पाँच प्रतिशत की ब्याज पर ऋण दे दिया जाता तो जितनी आय होती उससे चार गुनी आय इस समय थी।

नेखलूदोव को यह सब पहिले से ही ज्ञात था किंतु अब उसका दृष्टिकोण ही भिन्न था और उसे आश्चर्य हुआ कि मैं स्वयं अथवा अन्य व्यक्ति जो मेरी-सी

---

* २¾ एकड़ के लगभग।

स्थिति में हैं परिस्थितियों की इस अव्यवस्था की ओर क्यों नहीं देखते हैं । कारिंदा ने तर्क दिए कि यदि भूमि किसानों को दे दी जाएगी तो कृषि-यंत्र व्यर्थ हो जाएँगे और उनका एक चौथाई मूल्य भी प्राप्त नहीं होगा, किसान भूमि का सत्यानाश करके धर देंगे और कि नेखलूदोव को इससे बहुत हानि होगी । इन सब बातों से नेखलूदोव की धारणा की ही पुष्टि हुई कि अपनी आय के एक बड़े भाग से स्वयं वंचित हो किसानों को किराए पर भूमि उठाकर मैं एक सत्कार्य कर रहा हूँ । उसने इस कार्य को अपनी उपस्थिति में तुरन्त तय कर डालने का निश्चय कर लिया । नाज का काटना अथवा एवं अनुपयोगी भवन और कृषियन्त्रों को अगली फसल पर बेचने के कार्य का प्रबन्ध कारिंदा के ऊपर छोड़ा जा सकता था । किंतु अब उसने कारिंदा को कहा कि वह कुज़मिन्शकोए के मध्यवर्ती तीन ग्रामों के किसानों को बुलाकर एक सभा की व्यवस्था कर दे । इस सभा में वह अपनी धारणाओं से उन्हें अवगत कराना चाहता था और किराए आदि के नियम तय कर लेना चाहता था जिन पर भूमि दी जा सके ।

कारिंदा के तर्कों के उत्तर देने में जो दृढ़ता उसने प्रदर्शित की थी –उसकी तथा त्याग करने की सन्निद्धता की प्रसन्न भावना में नेखलूदोव कार्यालय से बाहर निकला और अपने कार्य के ऊपर विचार करता -हुआ उपेक्षित फूल-बाग में होकर गया । इस वर्ष फूल-बाग के स्थान पर कारिंदा के मकान के सामने फूलों के वृक्ष लगाए गए थे । फूल-बाग से होकर नेखलूदोव टेनिसग्राउन्ड में आया जहाँ कि अब काफी के वृक्षों की ठूँठे उगी पड़ी थीं । फिर वह जमीरी नीबू के वृक्षों की पंक्तियों में पहुँचा जहाँ कि वह सिगार पिया करता था तथा एक बार अपनी माँ की सुन्दर अतिथा कीरीमोवा के साथ झटका खाकर गिर गया था । और इस भाँति उसने मकान का चक्कर लगाया । किसानों को देने के लिए भाषण की रूपरेखा अपने मस्तिष्क में तैयार करने के बाद उसकी फिर कारिंदा से बातचीतें हुई और चाय पीने के पश्चात् उसने अपने विचारों का क्रम पुनः व्यवस्थित किया तथा उस बड़े मकान में अपने लिए व्यवस्थित प्रकोष्ठ में गया । यह प्रकोष्ठ पहिले सोने के लिए अतिरिक्त कमरे की भाँति रहा करता था ।

इस छोटे स्वच्छ कमरे में दो खिड़कियों के बीच दीवाल पर वीनस का चित्र तथा एक दर्पण था । वहीं स्प्रिंगदार चटाई पड़ा एक पलंग बिछा हुआ था । उसके बगल में एक छोटी मेज थी जिस पर शीशे की ढकनेदार सुन्दर बोतल पानी से भरी रखी थी तथा दियासलाई और आग बुझाने का एक यंत्र था । दर्पण के

पास की मेज पर उसकी चमड़े की अटेची खुली पड़ी थी जिसमें शृङ्गार पेटिका एवं कुछ पुस्तकें रखी थीं। एक रूसी पुस्तक 'अपराधिता के नियमों का अनुसंधान' और उसी विषय पर एक जर्मनी तथा एक आंग्ल भाषा में भी थी, जिन्हें कि वह गाँव की यात्राओं में पढ़ना चाहता था। किंतु अब देर हो चुकी थी और वह सोने के लिए तैयार हो गया था ताकि वह प्रभात में उठकर किसानों से भेंट कर सके।

पुराने फैशन की पच्चीकारी की हुई महोगनी की एक हत्थेदार कुर्सी कमरे के कोने में रखी थी और नेखलूदोव ने कुर्सी को अपनी माँ के सोने के कमरे में रखी हुई स्मरण किया तो इस कुर्सी ने उसकी आत्मा में एक नितांत असम्भावित भावुकता उत्पन्न कर दी। यकायक वह यह विचारते ही दुखी हो गया कि यह मकान यकायक गिर कर नष्ट हो जाएगा, बाग उजड़ जाएगा, जंगल काट दिया जाएगा और ये सब खेत, घुड़सालें, शेड, मशीनें, घोड़े, गाय जिनके विषय में उसे पता था कि यद्यपि उसे स्वयं को प्राप्त नहीं करना पड़ा था किंतु फिर भी उनको रखने और प्राप्त करने में कितना प्रयत्न किया गया। यह सब त्याग देना कितना आसान लगा था किंतु अब उस सबको दे डालने की बात तो जहाँ की तहाँ रही भूमि को किराए पर उठाकर अपनी आधी आय को खो देना उसे बड़ा कठिन प्रतीत होने लगा। और तुरन्त ही उसकी सेवा में एक तर्क यह दिखलाने के लिए प्रस्तुत हो गया कि सबकुछ ठीक है फिर भी किसानों को भूमि किराए पर देकर अपनी सम्पत्ति का नाश कर डालना अनुचित है।

"भूमि के रूप में मैं सम्पत्ति नहीं रखूंगा। किंतु यदि मेरी सम्पत्ति भूमि के रूप में नहीं रहती है तो फिर मैं नहीं रख सकता ये मकान-ये खेत...। किंतु मुझे तो साइबेरिया जाना है फिर मकान और जमींदारी की क्या आवश्यकता है।" उसके हृदय से आवाज आई। "यह सब ऐसा ही है।" दूसरी आवाज आई। "किंतु सारा जीवन तो साइबेरिया में बिताना नहीं है। तुम्हारा विवाह हो सकता है, बच्चे हो सकते हैं और तब तुम्हें उनको जमींदारी को उसी अवस्था में लौटाना चाहिए जिसमें कि तुमने प्राप्त की थी। फिर भूमि के प्रति भी तो कोई कर्तव्य है। इसको त्याग देना, हर वस्तु को नष्ट कर देना तो अत्यन्त सुगम है किंतु प्राप्त करना अत्यधिक दुर्गम। सबसे ऊपर तो तुम्हें अपने भविष्य के ऊपर विचार करना चाहिए और तदनुसार अपनी सम्पत्ति का हिसाब करना चाहिए। और फिर तुम अपनी आत्मा के अनुसार कार्य कर रहे हो अथवा दिखावा करने के लिए कर रहे हो?" नेखलूदोव ने स्वयं ही विचार किया और उसे अस्वीकार करना पड़ा कि मैं इस

विचार से प्रभावित हूँ कि अन्य लोग उसके विषय में क्या कहेंगे। जितना वह इस पर विचार करता उतने ही प्रश्न उत्पन्न हो जाते और उतने ही अधिक गहन होते जाते।

उसे आशा थी कि निद्रा आते ही मैं इन विचारों से मुक्ति पा जाउँगा तथा सुबह उठूँगा तो स्वस्थ मस्तिष्क से इन पहेलियों का हल निकाल लूँगा। इसी आशा से वह अपने स्वच्छ बिस्तरे पर जाकर लेट गया। किंतु निद्रा बहुत देर बाद आई। स्वच्छ वायु एवं चंद्रिका कमरे मे प्रविष्ट हो रही थी साथ ही पार्क से बुल-बुलों के एक जोड़े का तथा एक और का जो खिड़की के पास खिले बकाइन की झाड़ी में था काँपता हुआ शब्द मेढ़कों की टर्र-टर्र से मिला-जुला आ रहा था। बुलबुलों और मेढ़कों के स्वर को सुनकर नेखलूदोव को इन्सपैक्टर की पुत्री के गायन का तथा स्वयं इन्सपैक्टर का स्मरण हो आया। इससे उसे माशलोवा का पुनः स्मरण हुआ और यह याद आया कि जब उसने ये शब्द कहे थे "आपको यह सब बिल्कुल त्याग देना चाहिए।" तब उसके ओंठ मेंढ़क की टर्राहट के समान कैसे काँपे थे। तब जर्मन कारिंदा मेंढ़कों के पास जाने लगा और उसे वापिस आना पड़ा, किंतु वह वहाँ गया ही नहीं माशलोवा के रूप में बदल गया और नेखलूदोव से घृणा में कहने लगा—"आप एक प्रिंस हैं और मैं बन्दिनी।" "नहीं मुझे साहस नहीं हारना चाहिए।" नेखलूदोव ने सोचा और उसने अपनी आत्मा को जगाकर प्रश्न किया "मैं सही मार्ग पर हूँ अथवा गलत पर? मैं नहीं जानता और चिंता भी नहीं करता। कोई अन्तर नहीं पड़ताः मुझे सो जाना चाहिए।" और फिर वह अपने आपको वहीं लाने की चेष्टा करने लगा जहाँ उसने कारिंदा और माशलोवा को देखा और नीचे उतरने लगा तब सब समाप्त हो गया।

२

नेखलूदोव सुबह ९ बजे उठा। जैसे ही नए लिपिक ने नेखलूदोव के जागने की आवाज सुनी वह उसके जूते और झरने का कुछ ठंडा, अत्यन्त स्वच्छ जल ले आया। उसकी ड्यूटी 'मालिक' की सेवा पर लगी थी और वह जूते भी इतने चमका कर लाया जितने पहिले कभी नहीं चमके तथा उसको सूचना दी कि किसान एकत्रित होने लगे हैं। नेखलूदोव बिस्तर पर से कूद पड़ा और अपने

विचारों को एकत्रित किया। इस समय उसकी स्मृति में अपनी सम्पत्ति दे डालने तथा इस भाँति नष्ट करने से उत्पन्न होने वाले कल के पश्चाताप का कोई चिह्न न बचा। उसने अपनी इस पश्चाताप की भावना को आश्चर्य से स्मरण किया; जो कार्य सामने था उसकी ओर आनन्द से सोचा और उसे स्वतः उस पर गर्व भी अनुभव हुआ।

खिड़की में से पुरानी टेनिसग्राउन्ड दिखलाई दे रही थी जिस पर काफी के वृक्षों की ठूँठें उगी हुई थीं तथा जहाँ पर किसान एकत्रित होने लगे थे। रात्रि में मेढ़क व्यर्थ ही नहीं टर्राए थे, दिन धूमिल-सा था। हवा चल नहीं रही थी, हल्की सी वर्षा प्रभात से ही प्रारम्भ हो गई थी और पत्तियों, टहनियों एवं घास पर बूँदें टपक रही थीं। नई हरियाली की गंध के अतिरिक्त गीली भूमि की सुगन्ध अधिक वर्षा की माँग करती खिड़की से प्रवेश कर रही थी।

कपड़े पहिनते समय नेखलूदोव ने टेनिसग्रांउड पर एकत्रित होते हुए किसानों की ओर कितनी ही बार देखा। एक-एक कर वे आते, अपनी टोपियाँ उतारते, एक दूसरे को सिर झुकाते और वृत्त में अपनी छड़ियों के ऊपर झुक कर बातें करते खड़े हो जाते। दृढ़ मांस-पेशियों वाला, कसा हुआ शक्तिपूर्ण नवयुवक कारिंदा, जो कि खड़े कॉलर और बड़े बालों वाला मल्लाहों का छोटा कोट पहिने हुए था, नेखलूदोव के पास यह कहने आया कि सब एकत्रित हो चुके हैं और वे तबतक प्रतीक्षा करने को तैयार हैं जबतक कि आप नाश्ता-चाय अथवा काफी न पी लें। इच्छा जिसकी भी हो—तैयार दोनों ही हैं।

"नहीं, मेरा विचार है कि तुरंत ही जाकर उनसे मिलना अपेक्षाकृत सुन्दर होगा।" अप्रत्याशित संकोच एवं लज्जा से नेखलूदोव ने कहा। यह संकोच की भावना किसानों से करने वाले वार्तालाप के विचार पर उत्पन्न हुई थी।

वह किसानों की एक ऐसी लालसा की पूर्ति करने वाला था जिसकी पूर्ति की वे आशा भी नहीं कर सकते थे; भूमि को कम किराए पर उठाना—अर्थात् एक महान् वरदान देना, और फिर भी किसी बात पर वह लज्जित था। नेखलूदोव जब किसानों के पास आया और उसके सम्मुख जब गोरे, घुँघराले, गंजे, भूरे सिर टोपी विहीन हो गए तब वह इतना गड़बड़ा गया कि कुछ बोल ही न पाया। मेंह की फुआरें पड़ती रहीं और सिर पर बालों, दाढ़ियों तथा लोगों के घटिया कोटों की फुंजियों पर हल्की बूँदें पड़ी हुई थीं। किसान अपने 'स्वामी' की ओर देख रहे थे कि वह कुछ बोले, किंतु वह इतना सकुचा गया था कि उससे बोला ही नहीं

गया। इस अवाञ्छनीय चुप्पी को गम्भीर आत्मविश्वस्त कारिंदा ने भंग किया। वह अपने आपको रूसी किसानों का अच्छा जानकार समझता था और रूसी भाषा भी बहुत अच्छी प्रकार बोल लेता था। इस हृष्ट-पुष्ट खाए-पिए व्यक्ति तथा स्वयं नेखलूदोव एवं पतले-दुबले, झुर्रीदार चेहरे वाले किसानों में विशाल अन्तर था, जिनके कंधों की उभड़ी हुई हड्डियाँ घटिया कोटों में छिपी हुई थीं।

"देखिए प्रिन्स, आपको किराए पर भूमि देकर आपके ऊपर अनुग्रह करना चाहते हैं; बस केवल आप इसके योग्य नहीं हैं।" कारिंदा ने कहा।

"वेसिली कारलोविच! हम इसके योग्य क्यों नहीं हैं? क्या हम आपके लिए काम नहीं करते हैं? हम मृतक महिला से पूर्ण सन्तुष्ट थे—भगवान् उनकी आत्मा को शांति दे!—और प्रिन्स महोदय हमको परित्याग नहीं करेंगे। उनके लिए धन्यवाद।" लाल बालों वाले एक वाचाल किसान ने कहा।

"हाँ! इसीलिए मैंने आप सब लोगों को सम्मलित रूप से बुलाया है। यदि आपकी इच्छा हुई तो मैं समस्त भूमि आप लोगों को किराए पर उठा दूँगा।"

किसान कुछ नहीं बोले या तो वे समझ नहीं सके या फिर उन्हें विश्वास नहीं हुआ था।

"देखेंगे! भूमि मिलने दीजिए? आप किस भाँति देना चाहते हैं?" एक प्रौढ़ ने कहा।

"जिससे कि आप कम किराए पर उसका पूरा लाभ उठा सकें।"

"बहुत सुन्दर बात है।" एक वृद्ध ने कहा।

"यदि किराया इतना हो कि हम उसे वहन कर सकें।" दूसरा बोला।

"कोई कारण नहीं कि हम भूमि किराए पर न लें।"

"हम तो भूमि को जोतने के अभ्यस्त हैं।"

"और आपके झंझट भी कम हो जाएँगे। आपको केवल किराया ही उघाहना रह जायगा। बस अब अपने पापों और चिंताओं पर विचार करना शेष रह जाएगा।" कहती हुई बहुत-सी आवाजें सुनाई दीं।

"पाप सब तुम लोगों का है।" जर्मन बोला—"तुम लोग न अपना काम करते हो और न अनुशासन में ही रहते हो।"

"हम जैसों के लिए यह असम्भव है।" नुकीली नाक वाला एक वृद्ध बोला, "आप कहते हैं घोड़े को खलिहान में कैसे जाने दिया ?' जैसे कि मैने उसे अन्दर कर दिया हो। अरे, मैं अपनी खुर्पी चला रहा था अथवा कुछ और कर रहा था—तथा सारे दिन तक करता रहा जबतक कि दिन पूरे एक वर्ष के समान नहीं लगने लगा और इसलिए जानवरों के झुण्ड की रखवाली करते-करते रात को मुझे निद्रा आ गई और एक आपके खलिहान में घुस गया तथा अब आप मेरी खाल खींच रहे हैं।"

"अच्छा ! तुम्हें नियमों का पालन करना चाहिए।"

"आपके लिए नियमों की बातें करना सरल है, किंतु हमारी शक्ति से बाहर है।" एक लम्बे, काले, बालों वाले प्रौढ़ पुरुष ने उत्तर दिया।

"क्या मैंने कहा नहीं था कि चहारदीवारी बना लो ?"

"तो फिर बनाने के लिए लकड़ी दीजिए।" सादा दिखलाई पड़ने वाले एक ठिगने किसान ने कहा। "पिछले वर्ष चहारदिवारी बनाने के लिए मैंने एक छोटा-सा वृक्ष काट डाला तो आपने मुझे तीन महीने के लिए बन्दीगृह में बन्द कर दिया। बस वही सीमा समाप्त हो गई।"

"वह क्या कह रहा है ?" नेखलूदोव ने कारिंदा से कहा।

"गाँव का सबसे बड़ा चोर है।" कारिंदा ने जर्मन भाषा में उत्तर दिया। "जङ्गलों से लकड़ी चुराता प्रतिवर्ष पकड़ा जाता है।" फिर किसान की ओर मुड़कर वह बोला, "तुम्हें दूसरों की सम्पत्ति का आदर करना सीखना चाहिए।"

"अच्छा क्या हम आपका आदर नहीं करते हैं ?" वृद्ध ने कहा, "हमें तो करना ही चाहिए। अरे, आप तो हमको रस्से से बाँध सकते हैं; हम आपके हाथों में जो हैं।"

,'उहँ, मेरे मित्र, तुम्हारे साथ कुछ भी करना असंभव नहीं है। यह तो तुम हो जो हम लोगों के लिए सदा सन्निद्ध रहते हो।" जर्मन बोला।

"आपके लिए सचमुच ! क्या आपने मेरा जबड़ा नहीं तोड़ डाला, और मुझे यह दण्ड व्यर्थ ही मिला ? इससे प्रतीत होता है कि धनवानों के साथ नियमपूर्वक कार्य करने से कोई लाभ नहीं।"

"तुमको नियमों का स्वयं पालन करना चाहिए।"

शब्दों की प्रतियोगिता हो रही थी और उसमें भाग लेने वालों को यह पता भी नहीं था कि क्यों; किंतु यह स्पष्ट था कि एक ओर भय से संयमित कटुता थी और दूसरी ओर शक्ति एवं अधिकारी की महत्ता ! यह सब सुनना नेखलूदोव की सहनशक्ति के बाहर था इसीलिए वह किराए के नियमों एवं धन की व्यवस्था वाले प्रश्न की ओर मुड़ा।

"अच्छा अब भूमि के विषय में क्या रहा ? आप लोग लेना चाहते हैं कि नहीं और यदि मैं सम्पूर्ण भूमि आप लोगों को किराए पर देने को तैयार हो जाऊँ तो कितना पैसा दे सकते हैं ?"

"संपत्ति आपकी हैं; मूल्य निश्चित आपको ही करना है।"

नेखलूदोव ने एक निश्चित धन का नाम लिया और यद्यपि वह पड़ौस के दामों से काफी कम था किंतु किसानों ने उसे बहुत अधिक बतलाया तथा मोलभाव करने लगे जैसा कि उनके लिए स्वाभाविक था। नेखलूदोव ने सोचा था कि उसका ऑफर राजी खुशी स्वीकृत हो जाएगा किंतु प्रसन्नता का कोई चिह्न दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

केवल एक बात से नेखलूदोव को ज्ञात हुआ कि उसका ऑफर लाभदायक था। प्रश्न उठा कि भूमि किराए पर ले कौन; पूरा विभाग अथवा संस्था विशेष; और उन लोगों में जो कि दुर्बल एवं ऐसे किसानों को निकालने के पक्ष में थे, जो कि किराया व्यवस्थित रूप से दे सकने में असमर्थ थे तथा उन लोगों झगड़ा उठ खड़ा हुआ जो कि इस कारण से सम्मिलित नहीं हो पाते। कारिंदा को इस बात के लिए धन्यवाद कि अंत में किराए का धन तथा नियम दोनों तय हो गए और जोर-जोर से बातें करते हुए किसान पहाड़ी के नीचे अपने-अपने गाँवों को चल दिए तथा नेखलूदोव एवं कारिंदा समझौता तैयार करने के लिए अपने कार्यालय में।

जिस ढङ्ग से और जैसे नेखलूदोव चाहता था सब बातें तय हो गईं। किसानों को भूमि तीस प्रतिशत कम दामों में मिल गई इतनी सस्ती सारे जिले में नहीं मिल सकती थी। भूमि की आय आधी हो गई फिर भी नेखलूदोव के लिए पर्याप्त था विशेषतया इसलिए कि एक जंगल उसने बेचा था उससे धन प्राप्त होना था और कुछ कृषि-यंत्रों के बेचने से भी आ जाता। सब वस्तुएँ बहुत अच्छी तरह व्यवस्थित थीं किंतु फिर भी किसी कारण उसे लज्जा अनुभव हो रही थी।

कुछ उसे स्पष्ट लग रहा था कि यद्यपि किसानों ने उसे धन्यवाद तो अवश्य दिया था किंतु वे संतुष्ट नहीं थे और उन्होंने आशाएँ अधिक की थीं। इसका अर्थ यह निकला कि उसकी तो काफी हानि हो गई किंतु फिर भी किसानों की आशाएँ पूर्ण न हो सकीं।

अगले दिन समझौते पर हस्ताक्षर हो गए और कितने ही वृद्ध किसानों के साथ, जो कि डिपुटी चुने गए थे, नेखलूदोव कार्यालय से निकला। उसके हृदय में एक असुखद भावना थी जो कि किसी कार्य के अपूर्ण रह जाने पर उत्पन्न हुआ करती है। किसान असंतुष्टि एवं खिन्नता से खड़े सिर हिला रहे थे। नेखलूदोव ने उनसे विदा ली और कारिंदा की सुन्दर गाड़ी में बैठा तथा स्टेशन की ओर चल दिया। नेखलूदोव स्वयं अपने आपसे असंतुष्ट था, और यह जाने बिना ही कि क्यों, वह पूरे समय किसी बात से दुखी एवं लज्जित बना रहा।

३

कुज़मिन्शकोए से नेखलूदोव अपनी उस जमींदारी में गया जो उसे उत्तराधिकार में अपनी बुआओं से मिली थी। वहीं वह कातूशा से पहिले मिला था। वह वहाँ भी कुज़मिन्शकोए की भाँति ही भूमि की व्यवस्था करना चाहता था। किंतु इसके अतिरिक्त वह कातूशा तथा उसके और अपने बच्चे के विषय में हर संभव जानकारी प्राप्त करना चाहता था कि वह बच्चा सचमुच जीवित है अथवा नहीं और यदि मर गया था तो कैसे मरा।

वह प्रभात में ही पानोवो पहुँच गया और जब वह वहाँ पहुँचा तो पहिली वस्तु जो उसे चुभी वह थी समस्त भवनों की विशेषतया मकान की नष्टप्राय अवस्था। लोहे की हरी छतें इतने दिनों से पेन्ट नहीं की गईं थीं कि वे जङ्ग से लाल हो गईं और किंचित आँधी से उसकी लोहे की कुछ चादरें मुड़ भी गई थीं। जिन तख्तों से मकान ढका हुआ था वे कितने ही स्थानों से टूट गए थे जिन्हें कि जङ्ग लगी कीलों को तोड़कर बड़ी सरलता से हटाया जा सकता था। दोनों ही ड्योढ़ियाँ, किंतु एक तो विशेषतया जिसकी उसे आज की सी याद थी, सड़ और टूट गई थीं। उनकी बस धरनें बची थीं। कुछ खिड़कियाँ बंद थीं और जिस भवन में अमीन रहता था, रसोईगृह और घुड़सालें—सब भूरी पड़ चुकी थीं

ग्रौर नष्ट होती जा रही थीं। केवल बगीचा ही नष्ट नहीं हुग्रा था ग्रौर पहिले से ग्रधिक फलाफूला था; चेरी, सेब ग्रौर बेर के पेड़ फलों से लदे सफेद बादलों की भाँति चहार दीवारी के पीछे से ही दिखलाई दे रहे थे। बकाइन की झाड़ियों से बनी मेंड़ें फूल-फल रही थीं। वे ग्राज भी बारह वर्ष पूर्व की भाँति ही थीं जब कि नेखलूदोव सौलह वर्षीया कातूशा के साथ 'विडो' खेल खेला था ग्रौर इन्ही बकाइनों में से किसी के पीछे गिर पड़ा था जिससे कि उसके हाथ में लग गई थी। उसकी चाची सोफिया द्वारा मकान के पास लगाया हुग्रा बबूल का पौधा जो कि जब एक डंडी-सा लगता था, ग्रब पूरा वृक्ष हो गया था। इसके तने से सोट बन सकती थी तथा हल्के पीले हरे-रङ्ग के मुलायम काँटों से इसकी शाखाएँ लदी पडी थीं। नदी में बाढ़ नहीं थी ग्रौर बाँध के ऊपर कलकल करती हुई सत्वर गति से चल रही थी। परली पार के चरागाहों में किसानों के पशु वहाँ से धब्बों की भाँति दिखलाई दे रहे थे।

ग्रमीन ग्रभी विद्यार्थी ही था। उसने थोड़े ही दिनों पूर्व ग्रपना ग्रध्ययन ग्रपूर्ण छोड़ पाठशाला जाना बन्द कर दिया। ग्राँगन में नेखलूदोव के पहुँचते ही उसने मुस्कुराकर उसका स्वागत किया। मुस्कुराते ही हुए उसने नेखलूदोव को कार्यालय में ग्राने का निमन्त्रण दिया तथा मुस्कुराते ही हुए वह पार्टीशन के पीछे चला गया। ग्रपनी मुस्कान से मानो कि उसने किसी ग्रत्यन्त सुन्दर वस्तु का प्रमाण दिया। थोड़ी देर तक तो कुछ कानाफूसी सुनाई दी तब जिस गाड़ी में नेखलूदोव स्टेशन से बैठकर यहाँ तक ग्राया था ग्रपनी घंटियों को बजाती वापिस लौट दी। उसे किराया मिल गया था। तब बिल्कुल शांति छा गई। नंगे पॉव कसीदाकारी किए हुए ब्लाउज पहिने कानों में सिल्क के फुँदने लटकाए एक लड़की खिड़की के पास से भागती हुई निकल गई तथा एक पुरुष कील ठुकी एड़ियों वाले जूतों से खटखट करता निकला।

खिड़की के छोटे कब्जेदार पल्ले के पास बैठे नेखलूदोव ने ग्रावाजें सुनीं तथा वह बगीचे की ग्रोर देखता रहा। सुगन्धि लिए हाल की खोदी भूमि की सौंधी भीनी ठण्डी वायु का एक हल्का स्वच्छ झोंका खिड़की में से ग्राया, उसके भीगे मस्तक पर झूलते हुए बालों को स्पर्श कर देहलीज पर रखे चाकू से कटे कागजों को उड़ा गया।

"टप-टपा-टप, टप-टपा-टप" की ध्वनि सरिता दुकूल से ग्रा रही थी। यह ध्वनि स्त्रियों के कपड़े धोने के मोंगरे की तालमय गति से उत्पन्न हो रही थी।

मिल के तालाब में मिल से गिरते हुए जल की ध्वनि उत्पन्न हो रही थी—तथा उस ध्वनि से भयभीत हो कोई मक्खी नेखलूदोव के कान के पास से जोर से भिन-भिनाती हुई उड़ गई।

तुरन्त ही नेखलूदोव को वे क्षण स्मरण हो आए जब वह नवयुवक था, मासूम था। कितना समय व्यतीत हो गया उस मिल से गिरते हुए जल की कल-कल ध्वनि और स्त्रियों के मोंगरों की तालमय आवाज को सुने हुए। किस प्रकार उन्हीं दिनों की भाँति बासंतिक पवन का झोंका उसके केशों से एवं देहलीज पर रखे चाकू से कटे कागजों से अठखेलियाँ करता निकल गया और कैसे ठीक वैसे ही जब वह पहिले-पहल यहाँ आया था मक्खी भिन-भिना कर उसके कान के पास से उड़ गई। उसे ऐसा तो प्रतीत नहीं हुआ कि वह अट्ठारह वर्ष का है, लड़का है किंतु उसे अपनी मन की अवस्था वैसे ही लगी जैसी कि उस समय थी। उसमें उतनी ही स्वस्थता एवं पवित्रता तथा भविष्य के प्रति वे ही भव्य एवं असीमित आशाएँ उत्पन्न हो गईं। किंतु साथ ही उसे यह भी अनुभव हुआ कि स्वप्नवत् यह सब विलोम हो जाएगा और इससे उसे अत्यन्त निराशा हुई।

"आप नाश्ता कितनी देर में करेंगे?" अमीन ने मुस्कुराकर पूछा।

"जब भी आप उचित समझें; मुझे भूख नहीं है। पहिले मैं गाँव में घूमने जाऊँगा।"

"क्या आप मकान के अन्दर नहीं पधारेंगे? अन्दर सब वस्तुएँ क्रम से व्यवस्थित हैं। अन्दर एक दृष्टि डालने की कृपा करें यदि बाहर—"

"धन्यवाद! उस समय नहीं फिर कभी। कृपया बतलाएँगे कि यहाँ मेत्रीओमा खारीना नाम की कोई स्त्री है?" (यह कातूशा की चाची थी।)

"जी अवश्य; वह चोरी से गाँव में मदिरा की भट्टी चलाती है। मुझे ज्ञात है और मैंने उसे पकड़ा भी तथा बुरा-भला भी कहा था किंतु उसे बन्दी करा देना उचित नहीं है। वह वृद्धा है—उसके नाती-नातिनी हैं।" अमीन अब भी पहिले की भाँति ही मुस्कुरा रहा था। उसकी मुस्कान से दोनों ही इच्छाएँ व्यक्त हो रही थीं कि वह 'स्वामी' को प्रसन्न करना चाहता था तथा 'नेखलूदोव का दृष्टिकोण भी मेरी भाँति है,' अपने इस विचार की पुष्टि करना चाहता था।

"वह कहाँ रहती है? मैं उसके पास जाकर उससे मिलना चाहता हूँ।"

"गाँव के अन्त में, अंतिम से तीसरी कुटिया उसकी ही है। बाईं ओर

ईटों की एक कुटिया है और उससे अगली ही उसकी है। किंतु कहिए मैं साथ चलूँ?" अमीन ने मधुर मुस्कान से कहा।

"नहीं, धन्यवाद, मैं स्वयं खोज लूँगा। और क्या आप किसानों की एक सभा बुलाने तथा उन्हें यह सूचना देने का कष्ट करेंगे कि मैं उनसे भूमि के विषय में कुछ बातें करना चाहता हूँ।" नेखलूदोव ने कुजमिन्शकोए का सा एग्रीमेंट यहाँ भी करने की धारणा से कहा। वह चाहता था कि संभव हो तो आज सायं तक ही कार्य संपन्न कर दिया जाय।

४

द्वार से बाहर निकलते ही ऐरन वाली लड़की मिली। वह चरागाह के मध्य डाँक और कदली को पाँवों तले रौंद कर बनाई हुई पगडंडी से आ रही थी। उसने लम्बा भड़कदार एप्रन पहिन रखा था तथा अपने मोटे नंगे पाँवों से फुदकती तथा बाँए हाथ को शीघ्रता से चलाती हुई वह चली आ रही थी। दाँए हाथ से उसने अपने पेट पर एक मुर्गे को दबा रखा था। मुर्गे की लाल टोपी हिल रही थी किंतु वह शांत था। उसने केवल अपने नेत्र घुमाए और एक काली टाँग बाहर निकाली और लड़की के एप्रन को पंजों से खरोंच दिया। 'स्वामी' के पास आते ही लड़की ने अपनी गति धीमी कर दी और उसका फुदककर चलना बन्द हो गया तथा उसके पास आते ही वह रुकी, सिर को पीछे की ओर झटका और नमस्कार किया। नेखलूदोव के आगे बढ़ते ही वह लड़की मुर्गे को लिए पुनः घर की ओर शीघ्रता से चलने लगी। कुएँ के पास उसे गंदा ब्लाउज पहिने एक वृद्धा स्त्री मिली जो कि खेंगी पर पानी से भरी दो बालटियाँ ले जा रही थी। वृद्धा ने अपनी बाल्टियाँ सावधानी से नीचे रखीं और उस लड़की की ही भाँति सिर पीछे कर मस्तक नवाया।

कुएँ को पार कर नेखलूदोव गाँव में घुसा। यद्यपि अभी दस ही बजे थे किंतु धूप में अत्यन्त तेजी थी। बार-बार सूर्य बादलों की ओट में आ जाता। गलियों में गोबर की तीक्ष्ण किंतु असुखद गंध आ रही थी। पहाड़ी पर चढ़ती हुई बैलगाड़ियों से यही भी गंध आरही थी किंतु विशेषतया झोंपड़ियों के आँगन में खाद के अव्यवस्थित ढेरों की थी जो कि उनके खुले द्वारों से आ रही थी जिनके पास

होकर कि नेखलूदोव निकला था। खाद से सने पाजामे और कमीज पहिने, नंगे पाँव किसान उस लम्बे, हृष्ट-पुष्ट नवयुवक की ओर देखने को मुड़े जिसके भूरे हैट पर चमकीला सिल्क का रिबन लगा था तथा जो गाँव की गली में प्रत्येक पग पर चमकीली गाँठदार छड़ी भूमि को स्पर्श कर चल रहा था। खेतों से खटर-पटर करती खाली गाड़ियों में हल्की चाल से लौटते हुए किसानों ने अपने हैट उतारे और आँखों से ही अपनी गलियों में चलते हुए असाधारण व्यक्ति का पीछा किया। स्त्रियाँ द्वारों में निकल आईं अथवा ड्योढ़ियों पर खड़ी हो गईं तथा उसके जाने पर उसकी ओर देखती हुई इंगित करतीं।

नेखलूदोव को चौथे द्वार पर रुकना पड़ा। सामने से चूँ-चर्र...करती हुई खाद से लदी एक गाड़ी आ रही थी। खाद के ऊपर बैठने के लिए एक चटाई बिछी पड़ी थी। छह वर्ष की अवस्था का एक बालक नंगे पाँव गाड़ी के पीछे इस आशा में चला जा रहा था कि उसे कहीं चड्डी खाने को मिल जाय। पाँवों में थेगड़ी लगे जूते पहिने एक नवयुवक लम्बे डग भरता हुआ घोड़े को आँगन से बाहर निकाल रहा था। लम्बी टाँगों से युक्त एक बछेड़ा कूदकर द्वार के बाहर निकला। किंतु नेखलूदोव को देखते ही वह गाड़ी की ओर दब गया तथा उसके पहिए से चोट खाकर धीमे-से हिनहिनाती हुई अपनी उत्तेजित माँ के पास आगे कूद गया। उसकी माँ द्वार में से उस भारी बोझे को ढो रही थी। दूसरे घोड़े को पतला तथा त्वरित गति से चलने वाला एक वृद्ध निकाल रहा था। पाँव उसके भी नंगे थे तथा वह धारीदार पजामा एवं गंदी कमीज पहिने हुए था जिसमें से उसके कंधों की हड्डियों का उभार साफ दिखलाई देता था।

जब घोड़े पक्की सड़क पर पहुँच गए वृद्ध द्वार की ओर लौटा और नेखलूदोव के सामने उसने सम्मान में अपना सिर झुकाया। सड़क पर भूरी खाद के सूखे ढेर फैले हुए थे।

"आप हमारी स्वामिनियों के भतीजे हैं, हैं न ?"

"हाँ ! मैं उनका भतीजा ही हूँ।"

"आह। तो आपने हम लोगों की खोज खबर लेने की कृपा की है ?" वाचाल वृद्ध बोला।

"हाँ ! कहो प्रसन्न तो हो ?" नेखलूदोव ने कहा। उसे ज्ञान ही न था कि इससे कहूँ तो क्या कहूँ।

"हम लोगों का क्या है ? दिनों को धक्का दे रहे हैं।" वृद्ध ने धीमे स्वर में कहा मानों कि इससे उसे आनन्द उत्पन्न हुआ।

"क्यों ऐसी क्या बात है ?" नेखलूदोव ने द्वार में प्रवेश करते समय पूछा।

"हमारा जीवन भी कोई जीवन है ?" नेखलूदोव के पीछे-पीछे चलता हुआ वृद्ध बोला।

वह दोनों आँगन में छाए छप्पर में आ गए और नेखलूदोव वहीं रुक गया।

"देखिए वह रहे—हम कुल बारह प्राणी हैं।" उसने खाद की बची ढेरी पर पसीनों में तर खड़ी दो स्त्रियों को इङ्गित कर कहा। उन स्त्रियों के हाथों में काँटे थे तथा अपने गंदे घाघरे उन्होंने अपनी-अपनी कमर में खोंस रखे थे जिससे उनकी गंदी पिंडलियाँ दिखलाई दे रही थीं। वृद्ध बोला "एक महीना भी नहीं हो पाता कि मुझे ६६ पुड[१] राई[२] क्रय करनी पड़ती है बतलाइए कहाँ से इतना धन प्राप्त हो ?"

"क्या तुम्हारे खेत में इतनी नहीं होती ?"

"मेरे में ?" वृद्ध ने निरन्तर पूर्ण मुस्कान से दोहराया "क्यों, मेरे पास तो तीन व्यक्तियों के योग्य भूमि है और पारसाल तो क्रिसमस तक भी नहीं चला।"

"तब क्या किया तुमने ?"

"करते क्या हम ? अरे, एक लड़का मजदूरी करने भेज दिया और फिर श्रीमान् जी के यहाँ से रुपया ऋण लिया। वह सब 'लेन्त' से पूर्व ही समाप्त हो गया तथा कर चुकाना अभी शेष है।"

"और कर कितना है ?"

"अरे, मेरा परिवार वर्ष में तीन बार सत्तरह-सत्तरह रूबल देता है। हे भगवान् ऐसा जीवन ! किसी को क्या ज्ञात कि दूसरा किस भाँति गुजर करता है।"

"क्या मैं तुम्हारी झोंपड़ी में जा सकता हूँ ?" नेखलूदोव ने उसके आँगन में

---

[१] ३६ पौंड का एक पुड होता है।

[२] एक प्रकार का अन्न जो योरोप में खाने के काम आता है।

खाद की पीली भूरी सतह पर बढ़ते हुए कहा। खाद कठरे में भरी जा चुकी थी तथा उसकी तीक्ष्ण गंध कुटिया में चारों ओर व्याप्त थी।

"क्यों नहीं ? अन्दर आइए !" वृद्ध ने खाद के ऊपर नंगे पाँवों से शीघ्रता से चलते हुए कहा। नेखलूदोव से आगे बढ़कर उसने कुटिया का द्वार खोला। खाद का गीला द्रव उसके अँगूठे की गाइयों में भरा हुआ था।

स्त्रियों ने अपने सिर के रूमाल व्यवस्थित किए, और लिनन के घाघरों को नीचा कर लिया तथा अपने मकान में प्रविष्ट होने वाले उस महानुभाव की ओर आश्चर्य एवं आदर से देखने लगीं जिसकी आस्तीनों में सोने के कफ-बटन लगे हुए थे।

दो नंग-धड़ंग लड़कियाँ कुरती पहिने झोंपड़ी से भाग खड़ी हुईं। अपना हैट उतार कर नीचे द्वार से झुक कर नेखलूदोव उस गंदी सँकरी, खटास गंध से परिपूर्ण झोंपड़ी में प्रविष्ट हुआ जहाँ कि अधिकांश स्थान बुनाई के दो करघों ने घेर रखा था। झोंपड़ी में आस्तीनों को अपनी पतली पुष्ट भूरी भुजाओं के ऊपर चढ़ाए एक वृद्धा स्टोव के पास खड़ी थी।

"देखो हमारे स्वामी हम लोगों के यहाँ पधारे हैं।" वृद्ध ने कहा।

"उनका पूर्ण स्वागत है।" वृद्धा ने अपनी आस्तीनें नीची करते हुए कहा।

"मैं देखना चाहता था कि तुम लोग किस भाँति निर्वाह करते हो।"

"देखा न आपने, हम लोग किस भाँति रहते हैं। झोंपड़ी गिरासू है और किसी दिन भी कोई दबकर मर सकता है; किंतु मेरा वृद्ध पति कहता है कि ठीक है अतः हम नरेशों की भाँति रह रहे हैं।" चतुर वृद्धा स्त्री ने अपने सिर को धैर्य से झटक कर कहा—"मैं शाम का भोजन बना रही हूँ; काम करने वालों को खिलाने जा रही हूँ।"

"शाम के भोजन क्या बनाओगी ?"

"हमारा शाम का भोजन ? हमारा भोजन अत्युत्तम है। पहिली परोसगारी में रोटी और क्वास दूसरी में क्वास और रोटी।" वृद्धा कहकर हँस पड़ी। उसकी हँसी में उसके आधे गले दाँत दिखलाई दे गए।

"नहीं, परिहास नहीं, मुझे देखने दो कि तुम लोग वास्तव में खाओगे क्या।"

"खाएँगे क्या ?" वृद्ध ने हँसते हुए कहा—"हमारे भोजन में कोई विशेषता नहीं। दिखलाना तों प्रिये।"

वृद्धा ने अपना सिर हिलाया।

"हमारा किसानू भोजन देखना चाहते हैं ? अरे, मुझे तो अब ज्ञात हुआ है कि आप कौतूहल-प्रद सज्जन हैं। आप सब बातें जानना चाहते हैं। क्या आपको बतलाया नहीं मैंने रोटी और क्वास ? उसके पश्चात् हम शोरवा पीएँगे। एक स्त्री कुछ मछलियाँ ले आई थी उनका हमने शोरबा बना लिया तत्पश्चात् हम लोग आलू खाएँगे।"

"और कुछ नहीं ?"

"इससे अधिक क्या ? हमको थोड़ा-सा दूध भी मिल जाता है।" वृद्धा स्त्री ने द्वार की ओर देखकर हँसते हुए कहा।

द्वार खुला पड़ा था और बाहर का मार्ग लड़के, लड़कियों, बच्चों को गोद में लिए स्त्रियों से भरा पड़ा था। वे सब द्वार पर एकत्रित होकर उस विचित्र महानुभाव को देखने की चेष्टा कर रहे थे जो कि किसानों का भोजन देखना चाहता था। वृद्धा को एक सज्जन के प्रति अपने व्यवहार के ढंग पर गर्व अनुभव हो रहा था।

"जी ! हम लोगों का जीवन-स्तर करुणापूर्ण है; कहने से क्या होता है वह तो चलता ही है।" वृद्ध बोला तथा मार्ग में खड़ों को देखकर उन पर चिल्लाया, "तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"अच्छा नमस्कार !" यद्यपि वह अपनी भावना को समझ न सका फिर भी नेखलूदोव ने लज्जा एवं असुविधा का अनुभव करते हुए कहा।

"आपने जो हम पर कृपा की उसके लिए धन्यवाद।" वृद्ध बोला।

राह में खड़े लोगों ने नेखलूदोव को निकल कर जाने के लिए मार्ग दे दिया और वह सड़क पर चलता रहा। उनमें से निकल कर दो लड़के उसके पीछे हो लिए, बड़ा वाला कमीज पहिने था जो कभी श्वेत रही होगी, दूसरे की कमीज फटी गुलाबी थी। नेखलूदोव ने मुड़कर उनकी ओर देखा।

"और अब आप कहाँ जा रहे हैं ?" सफेद कमीज वाले लड़के ने पूछा।

"मात्रीओना खारीना के पास। क्या तुम उसे जानते हो ?"

गुलाबी कमीज पहिने हुए लड़का किसी बात पर हँसने लगा किंतु बड़े वाले ने गम्भीरता से पूछा :

"कौन-सी मात्रीश्रोना ? बुढ़िया ?"

"हाँ, वह वृद्धा है ।"

"श्रो, श्रोह," वह धीरे से बोला—"वह वाली; वह तो गांव के दूसरे छोर पर—हम आपको बतला देंगे । अरे फेदका ! चलो आपके साथ चलें ।"

"हाँ, लेकिन घोड़े ?"

"मैं कह सकता हूँ—उनको कुछ नहीं होगा ।"

फेदका सहमत हो गया । वे तीनों चल पड़े ।

५

नेखलूदोव को बड़े-बूढ़ों की अपेक्षा लड़कों के साथ अधिक सुविधा प्रतीत हुई और वह उनके साथ चलता हुआ बातें करने लगा । गुलाबी कमीज वाला छोटा लड़का भी हँसना बन्द कर उसी गम्भीरता से बातें करने लगा जैसे कि बड़ा कर रहा था ।

"क्या तुम बतला सकते हो कि यहाँ सर्वाधिक निर्धन कौन-से व्यक्ति हैं ?" नेखलूदोव ने पूछा ।

"सर्वाधिक निर्धन ? मिखायल निर्धन है, शेमीश्रोन माकारोव एवं मार्फा—मार्फा अत्यन्त निर्धन हैं ।"

"और अनीशिया, वह उससे भी निर्धन है; उसके पास तो गाय भी नहीं है । वह भिक्षा माँगते हैं ।" छोटे फेदका ने कहा ।

"उसके पास गाय तो नहीं हैं किंतु हैं तो तीन ही प्राणी और मार्फा के परिवार में तो पांच व्यक्ति हैं ।" बड़े लड़के ने आपत्ति की ।

"किंतु दूसरी तो विधवा भी है ।" अनीशिया का पक्ष लेते हुए गुलाबी कमीज वाले लड़के ने कहा ।

"तुम कहते हो अनीशिया विधवा है, किंतु मार्फा भी विधवा के ही

समान है।" बड़े वाले लड़के ने कहा" बिल्कुल वैसी ही—उसका भी कोई पति नहीं है।"

"तो उसका पति गया कहाँ ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"बन्दीगृह में सड रहा है।" बड़े लड़के ने किसानों में प्रचलित वाक्य का प्रयोग किया।

"एक वर्ष पूर्व उसने जमीदार के जङ्गल से दो वृक्ष काट डाले थे" छोटे लड़के ने समझाने की शीघ्रता की "इसलिए उसे बन्द कर दिया गया; अब उसे छः माह हो गए और पत्नी भीख माँगती है। उसके तीन बच्चे तथा एक रोगिनी वृद्धा है।" वह सविस्तार कहता रहा।

"और वह रहती कहाँ है ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"इसी मकान में।" लड़के ने एक झोंपडी को इङ्गित कर उत्तर दिया। झोपड़ी के सामने जिस पगडंडी पर नेखलूदोव चल रहा था एक छोटा लड़का मुलायम जोड़ों की टाँगों पर कठिनाई से संतुलन करते हुए खड़ा था। उसके बाल सन के समान लग रहे थे।

"वास्का ! वह छुटकन लापरवाह कहाँ भाग गया ?" गंदे भूरे रंग का ब्लाउज पहिने एक स्त्री घर से बाहर निकल कर चिल्लाई। उसके मुख पर भय के चिह्न थे; उसने भागकर बच्चे को नेखलूदोव के सामने जाने से पूर्व ही पकड़ लिया और उसे अन्दर ले गयी मोनों कि उसे भय हो कि कहीं नेखलूदोव उसे चोट न पहुँचा दे।

यह वही स्त्री थी जिसका पति नेखलूदोव के वृक्ष काटने के अपराध में कारा में पड़ा था।

"अच्छा ! और यह मात्रीओना, क्या यह भी निर्धन है ?" नेखलूदोव ने मात्रीओना के मकान के पास पूछा।

"यह निर्धन ? नहीं। क्यों, यह तो मदिरा बेचती है !" पतले-दुबले गुलाबी कमीज वाले लड़के ने निश्चयात्मकता से उत्तर दिया।

मकान पहुँचने पर नेखलूदोव ने लड़कों को बाहर छोड़ा और मार्ग से होकर वह झोंपड़ी में जा पहुँचा। झोंपड़ी चौदह फीट लम्बी थी। बड़े स्टोव के पीछे बिछा हुआ पलंग इतना लम्बा नहीं था कि कोई लम्बा व्यक्ति पूरी तरह से टाँगें फैला सके। "और इसी पलंग पर" नेखलूदोव ने सोचा "कातूशा ने शिशु

को जन्म दिया और उसके पश्चात् रुग्ण पड़ी रही।" झोंपड़ी का अधिकांश भाग एक करघे ने घेर रखा था। इसी करघे पर नेखलूदोव के प्रवेश के समय वृद्धा और उसकी बड़ी नातिनी ताना-बाना ठीक कर रही थीं। प्रवेश करते समय नेखलूदोव का सिर उस नीचे द्वार से जा टकराया। नेखलूदोव के पीछे-पीछे अन्य दो नाती भाग कर अन्दर आए तथा द्वार की चौखटें पकड़कर खड़े रह गए।

"आपको किससे मिलना है?" वृद्धा ने क्रोधित स्वर में पूछा। ताना-बाना ठीक नहीं हो रहा था इसलिए वह खीज उठी थी। इसके अतिरिक्त किसी भी अपरिचित के आने पर वह सदा सशंकित हो उठती क्योंकि वह मदिरा का नियम विरुद्ध व्यापार करती थी।

"मैं पड़ोस की जमींदारी का स्वामी हूँ और आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

जानबूझ कर उसका आदर करने के दृष्टिकोण से वह चुप हो गई तथा अकस्मात ही उसके मुख का भाव बदल गया।

"ओह मेरे प्रिय! आप हैं मेरे मधु! और मैं कितनी मूर्ख हूँ जो यह सोच बैठी कि कोई राहगीर है। भगवान् के लिए क्षमा करना मुझे!" वृद्धा ने अपने स्वर में कृत्रिम कोमलता लाते हुए कहा।

"मैं आपसे एकांत में बातें करना चाहता हूँ।" नेखलूदोव ने द्वार की ओर दृष्टि फेंकते हुए कहा। द्वार पर बच्चों के पीछे पीले पड़े, थेगड़ीदार टोपी पहिने एक रोगी बालक को लिए एक स्त्री खड़ी थी। लगता था अपने चेहरे पर रोगिल मुस्कान लिए वह बालक मृत्यु के कगार पर खड़ा था।

"तुम खड़े क्या देख रहे हो? मैं तुम्हें दे दूँगी। मेरी वैसाखी तो देना।" द्वार पर खड़े बालकों से वृद्धा ने चिल्लाकर कहा "द्वार बन्द कर दो, करोगे!"

बच्चे चले गए और बालक लिए जो स्त्री वहाँ खड़ी थी उसने द्वार बन्द कर दिया।

"और मैं सोच रही थी 'कौन हो सकते हैं?' और तनिक विचार करिए मेरे धन! मेरे हीरक! यह तो स्वयं जमींदार साहब निकले।" वृद्धा बोली "कहाँ आने की कृपा की। यहाँ विराजिए श्रीमन्।" उसने अपने ऐप्रन से कुर्सी पोंछते हुए कहा, "और मैं सोच रही थी 'कौन दुष्ट अन्दर आ रहा है?' और वह

सज्जन, हमारे हितकारी हमारे जमींदार साहब स्वयं निकले। क्षमा कीजिए मैं तो मूर्ख वृद्धा हूँ; मेरी दृष्टि क्षीण होती जा रही है।"

नेखलूदोव बैठ गया और वृद्धा बाएँ हाथ से दाहिने हाथ की नुकीली कोहनी को थामे तथा दाएँ हाथ पर अपने गाल को टेक कर उसके सम्मुख खड़ी हो गई।

उसने संगीत-ध्वनि में कहना प्रारम्भ किया :

"मेरे प्रिय, अब आप बड़े हो गए श्रीमान् जी ! आप तो गुलबहार पुष्प के समान सुमुख रहते थे तथा अब किंचित चिंताएँ भी हैं ?"

"आपके पास मेरे आने का कारण है। क्या आपको कातूशा माशलोवा का स्मरण है ?"

"कातरीना; होना चाहिए। क्यों वह मेरी भतीजी है। यह कैसे संभव है कि मैं उसे विस्मरण कर दूँ ? और उसके लिए मैं कितनी रोई हूँ ! मुझे सब ज्ञात है। आह श्रीमन्, भगवान् के आगे कौन निर्दोष है ? ज़ार को किसने असंतुष्ट नहीं किया ? हम जानते हैं कि यौवन क्या है। आप दोनों साथ बैठकर चाय और काफी पिया करते थे इसलिए दुरात्मन् ने आपको दबा लिया। वह सदा ही शक्तिशाली रहता है। किया क्या जाए ? अब अगर आपने उसे त्याग दिया; किंतु नहीं, देखिए न आपने तो उसे पुरस्कार में दिया—सौ रुबल का एक नोट। और वह ? उसने क्या किया ? वह न्यायसिद्ध नहीं होगी। काश ! उसने मेरी मान ली होती तो वह आनन्द में ही रही आती। यद्यपि है वह मेरी भतीजी किंतु मुझे कहना सच ही चाहिए कि लड़की भली नहीं है। कितना सुन्दर स्थान खोजा था मैंने उसके लिए ! किंतु वह विनम्र नहीं रह सकी, उसने अपने मालिक के लिए अपशब्द प्रयोग किए। क्या हम जैसे सज्जनों को गाली देना शोभा देता है ? खैर, उसे निकाल दिया गया। उसके पश्चात् रहना चाहती तो वन-विभाग अधिकारी के पास रह सकती थी। किंतु वह चाहती जो नहीं थी।"

"मैं उसके बच्चे के विषय में जानना चाहता हूँ। बच्चा तो आपके ही यहाँ हुआ था ? बच्चा कहाँ है ?"

"रही बच्चे की बात सो मैंने उस समय वही उचित समझा। वह इतनी रुग्ण थी कि मुझे उसके स्वस्थ होने की आशा भी न रह गई। मैंने बच्चे का उचित ढङ्ग से संस्कार कर उसे अनाथों के चिकित्सालय में भेज दिया। किसी

निरीह आत्मा को क्यों क्षीण होने दिया जाए, जबकि उसकी माँ मृत्यु शय्या पर पड़ी हो ? इतर लोग इसी प्रकार करते हैं; वह बच्चे को छोड़ देते हैं, खिलाते-पिलाते भी नहीं और बच्चा मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। किंतु मैं ऐसा नहीं सोचती; थोड़ा कष्ट उठाना पसन्द करूँगी किंतु भेज दूँगी अनाथालय में। पैसा भी था इसलिए मैंने उसे भेज दिया।''

"क्या आपने अनाथ-चिकित्सालय से पंजीकरण की संख्या ली थी ?'

"जी, ली थी, किंतु बच्चा मर गया।" वह बोली, "वह वहाँ पहुँचते ही मर गया।"

"पहुँचाने कौन गया था ?'

"वही जो स्कोरोदनो में रहा करती थी। उसका धंधा ही यह था। उसका नाम था मालानीश्रा। अब वह मर चुकी है। वह स्त्री बुद्धिमती थी। आपका क्या विचार है, वह कैसी थी ? कोई उसके पास बच्चा लाता तो वह उसे रख लेती तथा तबतक खिलाती जबतक कि अनाथालय तक पहुँचाने के लिए धन न प्राप्त कर लेती। जब उसके पास तीन या चार हो जाते तो वह उन्हे इकट्ठे ले जाकर अनाथालय में कर आती। उसने बड़ी चतुराई से प्रबंध कर रखा था—उसके पास एक बड़ा पालना था, उसमें वह उन बच्चों को किसी-न-किसी प्रकार लिटा देती। पालने का एक हेंडिल था। वह एक साथ चारों को उसमें टाँगों से टाँगें सटाकर सिर अलग रखकर लिटा देती ताकि सिर एक-दूसरे से न टकराएँ। इसलिए वह चार को तुरन्त ले लेती। वह बच्चों के लिए कुछ मुलायम भोजन देती और कम्बल में उन्हें लपेट कर चुप कर देती।"

"कहती रहो।"

"हाँ, तो जहाँ तक मुझे विश्वास है, उसने कातरीना के बालक को भी इसी भाँति लेकर दो सप्ताह तक रखा। उसके ही मकान में वह बीमार पड़ने लगा।"

"और, क्या वह सुन्दर था ?"

"ऐसा बालक कि यदि आप चाहें तो उससे सुन्दर मिल नहीं सकता। बिल्कुल आपका ही प्रतिरूप।" वृद्धा ने कटाक्ष करते हुए कहा।

"बीमार क्यों पड़ गया ? क्या भोजन ठीक नहीं मिला ?"

"अरे भोजन क्या ? भोजन का तो मात्र बहाना होता है। स्वाभाविक ही

है, जब किसी का अपना बच्चा नहीं हो। बस जीवित रखने मात्र के लिए। उसने कहा कि वह मास्को लेकर पहुँची ही थी कि वह मर गया। वह एक प्रमाण-पत्र लाई—सब नियमानुसार। वह इतनी बुद्धिमती थी।"

और बस, इतना ही नेखलूदोव को अपने बच्चे के विषय में ज्ञात हो सका।

६

दोनों द्वारों के सिरों पर पुनः सिर को टकराते हुए नेखलूदोव बाहर सड़क पर आया जहाँ सफेद और गुलाबी कमीज पहिने दोनों लड़के उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ नवागंतुक भी उनके साथ खड़े थे। स्त्रियों में से कुछेकों की गोद में बालक थे। उनमें एक पतली स्त्री भी थी, जिसको गोद में थेगड़ी लगी टोपी पहिने एक बालक था। गोद में लगा रक्तहीन बालक अपने समस्त मुख पर विचित्र मुस्क्यान से मुस्कुरा रहा था और अपना टेढ़ा अँगूठा लगातार हिलाता रहा।

नेखलूदोव को ज्ञात हो गया कि यह दुख की मुस्क्यान है। उसने पूछा कि यह स्त्री है कौन।

"यही तो है अनीशिया, जिसके विषय में मैंने आपको बतलाया था।" बड़े लड़के ने कहा।

नेखलूदोव अनीशिया की ओर मुड़ा।

"तुम कैसे निर्वाह करती हो ?" उसने पूछा, "निर्वाह के लिए क्या करती हो ?"

"मैं कैसे निर्वाह करती हूँ—मैं भिक्षाटन करती हूँ।" अनीशिया बोली और रोने लगी।

वह छोटा बच्चा अपने समस्त मुख पर मुस्क्यान लिए मुस्कुराया और अपने अत्यन्त पतले पैरों को पटकने लगा।

नेखलूदोव ने अपना बटुआ निकाला और उस स्त्री को दस रूबल का एक नोट दिया। वह दो कदम आगे बढ़ भी नहीं पाया था कि एक बच्चा गोद में लिए दूसरी वृद्धा ने उसे पकड़ लिया। सभी स्त्रियाँ अपनी दरिद्रता की बातें कर उससे सहायता की प्रार्थना करने लगीं। नेखलूदोव ने अपने पास का सारा धन

साठ रूबल उनको दिए—सब छोटे-छोटे नोटों में—और अमीन के घर पर अत्यंत दुखी हो लौटा।

अमीन ने मुस्कुरा कर नेखलूदोव का स्वागत किया तथा उसे सूचना दी कि किसान सायं में सभा के लिए एकत्रित होंगे। नेखलूदोव ने उसे धन्यवाद दिया और सीधा बाग में सेब की पत्तियाँ बिछे एवं घास उगे मार्ग पर घूमने को चल दिया। वह उस पर विचार करना चाहता था जो उसने आज देखा था।

पहिले तो शांति रही आई किंतु तुरन्त ही नेखलूदोव ने अमीन के मकान के पिछवाड़े से एक-दूसरे की बात काटते हुए दो स्त्रियों का क्रुद्ध स्वर और तब बीच-बीच में सदा मुस्कुराने वाले अमीन का स्वर सुना। नेखलूदोव सुनता रहा।

"मैं मर रही हूँ। आप क्या कर रहे हैं, उसी क्रॉस को मेरी गर्दन से उतारते है ?" एक स्त्रियोचित क्रोधित स्वर सुनाई दिया।

"इसे तो क्षणभर में मिल गया," दूसरा स्वर आया "उसे लौटा दो मैं कहे देती हूँ, तुम पशु को क्यों कष्ट देते हो और बच्चों को भी जिनके लिए उसके दूध की आवश्यकता है।"

"तब नकद चुका दो या मजदूरी करके चुका दो," अमीन का स्वर आया।

नेखलूदोव बाग से निकलकर ड्योढ़ा पर आया जिसके पास दो फूहड़ स्त्रियाँ खड़ी थीं। उनमें से एक गर्भवती थी—उसका प्रसव-काल समीप ही था। ड्योढ़ी की एक सीढ़ी पर हाथों को अपने हॉलेन्ड-कोट की जेबों में दिए अमीन खड़ा था। 'स्वामी' को देखते ही स्त्रियाँ शान्त हो गईं और अपने सिरों के रूमालों को व्यवस्थित करने लगीं तथा अमीन ने कोट की जेबों में से हाथ निकाल लिए और मुस्कुराने लगा।

घटना इस प्रकार थी। अमीन के कथनानुसार स्त्रियाँ सदा ही अपने बछड़ों को तथा गायों तक को भी जमींदार के चरागाह में खुला छोड़ देती थीं। इन दोनों स्त्रियों से सम्बन्धित परिवारों की दो गाएँ चरागाह में पकड़ी गईं तथा आँगन में हाँक दी गई थीं। अमीन ने उन दोनों स्त्रियों से प्रत्येक गाय के लिए तीस कोपेक देने अथवा दो दिन की मजदूरी माँगी थी। स्त्रियाँ कहती थीं कि गाएँ चरागाह में अपने आप चली गई थीं; वे कहती थीं कि हमारे पास धन नहीं है और सुबह से कड़कती धूप में खड़ी भूखी अपनी गाएँ लौटाने की प्रार्थना कर रही थीं। वह

इस शर्त के लिए भी तैयार हो गई कि धन पीछे मजदूरी कर चुका दिया जाएगा।

"कितनी बार पहिले मैं तुम लोगों से प्रार्थना नही कर चुका हूँ", अमीन ने नेखलूदोव की ओर उसे साक्षी बनाने की दृष्टि से देखते हुए कहा, "कि जब तुम दो पहर को अपने पशुओं को हाँककर ले जाया करती हो तब उन पर दृष्टि रखा करो ?"

"मैं थोड़ी ही दूर अपने बच्चे को पकड़ने के लिए दौड़ी होऊँगी कि वह निकल भागी।"

"जब तुम गायों की रखवाली करती हो तब वे नहीं भागती हैं।"

"और बच्चों को कौन पिलाएगा ? जहाँ तक मैं समझती हूँ, आप तो उसे स्तन पिलाएँगे नहीं ?'

"अब यदि वास्तव में उन्होंने चरागाह में कुछ हानि कर दी होती तो इतना दुख नहीं होता; किंतु वे तो क्षणमात्र के लिए भटकी ही तो थीं।" दूसरी स्त्री ने कहा।

"लोगों ने सब चरागाह नष्ट कर डाले है।" अमीन ने नेखलूदोव की ओर मुड़कर कहा, "यदि मैं दंड नहीं दूँ तो घास होवे भी नहीं।"

"देखिए इतना अन्याय मत कीजिए, इससे पूर्व मेरी गाएँ कभी नहीं पकड़ी गईं।" गर्भवती स्त्री चिल्लाई।

"अब पकड़ी गईं, चुका दो अथवा मजदूरी कर उसका भर्त्ता भर दो।"

"ठीक है, मैं मजदूरी करके आपका भर्ता पूरा कर दूँगी बस मेरी गाएँ वापिस कर दीजिए। उन्हें भूखा रखकर कष्ट मत दीजिए।" उसने क्रोध में चीख-कर कहा, "मुझे तो रात-दिन मरने को भी अवकाश नहीं। सास रुग्ण है, पति मदिरा में मत्त है, बस मुझे ही समस्त कार्य करने पड़ते हैं और मेरी सामर्थ समाप्त हो चुकी है। मैं चाहती हूँ कि आप मेरा गला घोंट दें, आप और आपकी मजदूरी।"

नेखलूदोव ने अमीन से उस स्त्री की गाएँ वापिस करने को कहा तथा बगीचे में अपनी समस्या पर विचार करने के लिए लौट दिया। किंतु विचार करने को अब रह क्या गया था।

उसके सम्मुख हर बात इतनी स्पष्ट लगने लगी कि उसे आश्चर्य हुए बिना

न रह सका कि अन्य व्यक्ति इसे क्यों नहीं देख पाते। उसे अपने ऊपर भी आश्चर्य हुआ कि इतनी सब स्पष्ट बातों को समझने में उसे इतना विलम्ब क्यों लगा।

लोग मरे जा रहे थे; उस स्तर के अभ्यस्त हो गए थे और उन्होंने उस जीवन के अनुरूप अपने स्वभाव ढाल लिए थे। अल्पावस्था में ही बच्चों की मृत्यु हो जाती, स्त्रियों पर कार्य भार अधिक था तथा भोजन की कमी थी विशेषतया प्रौढ़ एवं वृद्धों के लिए। और इसलिए लोग धीरे-धीरे इस अवस्था को प्राप्त हो गए थे कि उससे उत्पन्न होने वाले भय को वे अनुभव नहीं करते तथा उसकी शिकायत भी नहीं करते। इसलिए हमलोग उनकी उस अवस्था को प्राकृतिक एवं उचित समझ लेते है। अब यह सूर्य के प्रकाश की भाँति स्पष्ट हो गया कि लोगों की दरिद्रता का प्रधान कारण एक है जिसे कि वे स्वयं जानते हैं तथा कहते भी रहते हैं कि भूमि ही एक ऐसी अकेली चीज है जो उनका निर्वाह कर सकती है और उसको ही जमींदारों ने उनसे छीन लिया हैं।

तथा यह कितना स्पष्ट था कि बच्चे और वृद्ध इसलिए मर जाते हैं कि दूध नहीं मिलता, और दूध इसलिए नहीं मिलता कि उनके पास कोई चरागाह नहीं है और न ही कोई भूमि है जिस पर वह अन्न अथवा घास उत्पन्न कर सकें। यह अत्यन्त स्पष्ट है कि लोगों के सब दुखों का कारण अथवा यों कहिए कि सर्वाधिक बड़ा एवं प्रधान कारण यह था कि उनका भरण-पोषण करने वाली भूमि उनके स्वयं अधिकार में न होकर उन लोगों के अधिकार में थी जो कि भूमि के स्वामित्व से लाभ उठाते अथवा इन व्यक्तियों के परिश्रम पर अपना जीवन निर्वाह करते है। जो भूमि मानव को इतनी आवश्यक है कि जब उनसे छिन जाती है तो वे मरने लगते हैं, वही भूमि विभुक्षा के कगार पर खड़े व्यक्तियों द्वारा जोते जाने से लेकर सुदूर आंतरों तक अन्न बेचने तक श्रम-सिक्त होती तथा उस श्रम से अर्जित लाभ द्वारा भू-स्वामी अपने हैट, बेंत, गाड़ियाँ एवं काँसा आदि क्रय करते। नेखलूदोव इस बात को उतनी ही स्पष्टता से समझ गया जितनी कि इस बात को कि किसी स्थान पर बँधे घोड़े वहाँ रखी हुई सब घास को खा लें तो वे तबतक क्षीण एवं दुर्बल होते ही रहेंगे जबतक कि उन्हें किसी ऐसे अन्य स्थान पर न पहुँचाया जाय जहाँ कि उनके भोजन के लिए कोई अन्य व्यवस्था न हो।

यह भयानक है तथा ऐसा चलना नहीं चाहिए। इस अवस्था में परिवर्तन उत्पन्न करने के साधन खोजने ही चाहिए अथवा कम-से-कम इसमें भाग तो लेना ही नहीं चाहिए। "और मैं उन्हें खोज निकालूँगा।" बर्च-वृक्षों के नीचे इधर-से-

उधर चहलकदमी करते हुए उसने विचार किया—"वैज्ञानिक क्षेत्रों, प्रशासनिक कार्यालयों एवं समाचार-पत्रों में हमलोग लोगों के बीच फैली हुई दरिद्रता के कारणों एवं उनकी अवस्था की उन्नति के साधनों के विषय में बातें करते रहते हैं, किंतु उस प्रमुख साधन की बात तो करते ही नहीं जो कि निश्चय ही लोगों की अवस्था में लाभ पहुँचा सकती है। वह है उनको भूमि लौटा देना जिसकी कि उन्हें अत्यन्त आवश्यकता है।"

नेखलूदोव के मस्तिष्क में हेनरी जार्ज की सैद्धान्तिक स्थिति सविवरण उभर आई। उसे स्मरण हो आया कि एक बार वह उससे कितना दूर हट चुका था। उसे आश्चर्य हुआ कि हेनरी जार्ज को तो मुझे अब तक भूल जाना चाहिए था। "पृथ्वी किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं हो सकती। जल, वायु, प्रकाश की भाँति यह भी खरीदी, बेची नहीं जा सकती। इसकी प्रदत्त सुविधाओं पर सबका समान अधिकार है।" तथा अब उसे ज्ञात हुआ कि—कुजमिन्शकोए के सौदे को स्मरण कर मैं क्यों लज्जित हो उठा था। वह आत्मप्रवचना करता रहा था। यह जानते हुए कि भूमि पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं हो सकता उसने अब भी अपना अधिकार स्वीकार किया था तथा किसानों को उस वस्तु का एक भाग दिया था जिसके विषय में उसकी अंतरात्मा जानती थी कि उस वस्तु पर मेरा कोई भी कैसा भी अधिकार नहीं था। "अब मैं ऐसा कार्य नहीं करूँगा और कुज़मिन्शकोए की व्यवस्था भी बदल दूँगा।" और उसने अपने मस्तिष्क में किसानों को भूमि किराए पर देने की एक योजना बनाई तथा जो वे किराया देंगे वह उनके करों अथवा सामूहिक कार्यों के लिए सुरक्षित रहा आएगा।" यद्यपि वास्तव में यह एकसूत्री कर-प्रणाली नहीं थी किंतु उन वर्तमान परिस्थितियों में उस प्रणाली की ओर यथासम्भव पग था। उसकी प्रधान समस्या यह थी कि कुछ भी हो इस मार्ग से अपनी अधिकृत भूमि से भविष्य में उसे कोई लाभ नहीं रह जाएगा। घर लौटने पर अमीन ने विशेष प्रसन्नतासूचक मुस्कान से पूछा "क्या आप भोजन अभी नहीं करेंगे ?" उसने अपना भय प्रदर्शित किया "ऐरनों वाली लड़की की सहायता से जो भोजन मेरी पत्नी बना रही है कहीं वह समाप्त न हो जाय।"

मेज पर एक मोटा बिना धुला कपड़ा बिछा था और कढ़ाई की हुई तौलिया नेपकिन के स्थान पर रखी हुई थी। टूटे हेंडिल की शोरबे की गहरी तस्तरी में भरा आलू का शोरबा मेज पर रखा था। शोरबा उस मुर्गे का बना

था जो अपनी काली टाँग बाहर-भीतर कर रहा था। वह अब काटा जा चुका था या यों कहिए कि उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे जो कि यहाँ-वहाँ बालों से ढके हुए थे। शोरबे के पश्चात् उसी बालों वाले मुर्गे का भुना हुआ गोश्त परोसा गया, फिर अत्यन्त चिकनी एवं अधिक चीनी पड़ी खोए की गुझिया आई। क्योंकि यह सब कम भूख लगाने वाली चीजें थीं इसलिए नेखलूदोव ने अधिक ध्यान भी नहीं दिया कि मैं खा क्या रहा हूँ। उसके मस्तिष्क में तो वही विचार घूम रहा था। जिसने क्षण मात्र में उस दुख को नष्ट कर दिया जिससे गाँव से लौटने के बाद वह द्रवित हो उठा था।

अमीन की पत्नी द्वार से अन्दर की ओर देखती रही, ऐरनों वाली भयभीत लड़की तश्तरियों को अन्दर लाती रही तथा अमीन अपनी पत्नी के भोजन बनाने की दक्षता पर गर्वित हो अधिकाधिक प्रसन्नता में मुस्कुराता रहा।

भोजन के पश्चात यद्यपि कुछ कठिनाई तो हुई किंतु नेखलूदोव अमीन को बैठाने में सफल हो गया। अपने विचारों को दोहराने तथा किसी से व्यक्त करने की उत्कंठा से उसने अमीन के सम्मुख किसानों को किराए पर भूमि देने की अपनी योजना समझाई तथा उसकी राय माँगी। अमीन मुस्कुराया तो इस भाँति था मानों कि यह सब उसके ही मस्तिष्क की बहुत पहिले की उपज हो और यह सुनकर वह प्रसन्न भी अधिक हुआ हो; किंतु वास्तव में वह रत्ती भर भी नहीं समझा था। इस कारण नहीं कि नेखलूदोव ने उसे पूर्णतया समझाया नहीं था; किंतु कारण यह था कि इस योजना से नेखलूदोव दूसरों के लाभ के लिए अपने लाभ को त्याग रहा था। और अमीन के हृदय में यह विचार इतनी गहराई से बैठ गया था कि प्रत्येक को अपने लाभ से अर्थात् अन्यों की हानि से, मतलब रखना चाहिए, कि जब नेखलूदोव ने कहा कि भूमि से होने वाली समस्त आय कृषकों की सामूहिक पूँजी के रूप में एकत्रित होनी चाहिए तब अमीन को लगा कि कोई बात मेरे समझने से रह गई है।

"ओह तब तो निश्चय ही उस पूँजी से आपको कुछ प्रतिशत धन प्राप्त होगा।" अमीन ने प्रसन्न हो कहा।

"अरे नहीं यार! क्या तुम यह नहीं समझ पाते कि भूमि किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं हो सकती ?"

"जी हाँ।"

"और इसलिए जो भूमि देती है उस पर सबका समान अधिकार है ?"

"किंतु तब आपको कोई आय नहीं होगी।" अमीन ने कहा। उसके मुख पर अब मुस्कान नहीं थी।

"नहीं, मैं उसे त्याग रहा हूँ।"

अमीन ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ा; किंतु पुनः मुस्कुराने लगा। अब वह समझ गया था। स्पष्टतः नेखलूदोव प्रकृतिस्थ नहीं था; और अमीन तुरन्त ही सोचने लगा कि नेखलूदोव की भूमि देने की योजना से वह स्वयं किस प्रकार लाभान्वित हो सकता है। वह उस योजना का इस दृष्टिकोण से मनन करने लगा कि यह योजना उसको लाभ पहुँचाने के लिए है।

किंतु यह ज्ञात होते ही कि यह भी असंभव है वह उदास हो गया। योजना में उसे रुचि न रही; और वह अपने 'स्वामी' को अब केवल प्रसन्न करने के लिए मुस्कुरा रहा था।

जब नेखलूदोव ने देखा कि अमीन उसकी भावनाओं को नहीं समझ पाया है तो उसने उसे जाने दिया और वह भी कहीं टूटी मेज पर बैठ गया जिसके ऊपर जगह-जगह पर स्याही फैली हुई थी। वहाँ बैठकर वह अपनी योजना को कागजों पर उतारने लगा।

हरे चकोतरों से लदे वृक्षों के पीछे सूर्य जा छिपा एवं मक्खियाँ वृक्षों से उतर कर नेखलूदोव को काटती हुई अन्दर आ गईं। लेखन समाप्त करते ही उसने पशुओं की रँभाहट सुनी और गाँव के द्वारों की चूँ-चरमर तथा उसे सभा के लिए एकत्रित होते हुए कृषकों के स्वर सुनाई दिए। उसने अमीन से कह दिया था कि लोग कार्यालय पर एकत्रित न हों क्योंकि मैं गाँव में जाकर उनकी चौपाल पर मिलना चाहता हूँ। अमीन द्वारा दिया हुआ चाय का प्याला शीघ्रता से पी नेखलूदोव गाँव की ओर चल दिया।

७

गाँव के मुखिया के घर के सामने एकत्रित भीड़ के स्वर सुनाई दे रहे थे; किंतु नेखलूदोव के पहुँचते ही बात-चीतें बन्द हो गईं और समस्त कृषकों ने कुज-मिन्शकोए के किसानों की ही भाँति अपनी टोपियाँ उतार लीं। यहाँ के किसान

वहाँ के लोगों से अधिक निर्धन थे। पुरुषों ने फटे जूते और घर की बुनी कमीज तथा कोट पहिन रखे थे। कुछेक नंगे पाँव थे तथा कमीजें पहिने उसी अवस्था में चले आए जिसमें कि वे खेतों में थे।

नेखलूदोव ने प्रयत्न किया तथा अपना भाषण प्रारम्भ किया। उसने किसानों को अपना निश्चय बतलाया कि मैं अपनी भूमि आप को दे देना चाहता हूँ। किसान चुप थे और उनके मुखों पर कोई परिवर्तन नहीं आया।

"किंतु भूमि मेरे पास है और मुझे विश्वास है," नेखलूदोव ने लज्जित होते हुए कहा "कि जो भूमि पर कार्य नहीं करता उसे उसके स्वामित्व का कोई अधिकार नहीं, और प्रत्येक को भूमि के लाभों पर समान अधिकार है।"

"यह तो निश्चित् है। है तो बिल्कुल ऐसा ही।" कुछेकों ने कहा।

नेखलूदोव कहता रहा कि भूमि से होने वाली आय सबके मध्य वितरित होनी चाहिए, और इसलिए उसने भूमि देते हुए सुझाव दिया कि उन्हें भूमि का स्वयं विचार कर एक किराया निश्चित् करना चाहिए तथा उस किराए से उन लोगों के अपने ही लाभ के लिए सार्वजनिक कोष स्थापित कर दिया जाना चाहिए। अनुमोदन एवम् समझौते के शब्द अब भी सुनाई दे रहे थे किंतु कृषकों के गम्भीर मुखमण्डल और भी गम्भीर हो उठे और नेखलूदोव पर स्थिर नेत्र झुक गए। मानो कि वे सब उसकी चालाकी समझ गए हैं तथा अब उसके धोखे में नहीं आने वाले हैं एवम् इस बात को प्रदर्शित कर नेखलूदोव को लज्जित नहीं करना चाहते हैं।

नेखलूदोव साफ-साफ बतला रहा था और कृषक तीक्ष्ण बुद्धि थे किंतु वे बात को नहीं समझ सके—न समझे। इसका भी कारण वही था अमीन वाला जो कि अबतक समझने में असमर्थ रहा था!

उनका दृढ़ विश्वास था कि हरएक का अपना स्वार्थ सोचना स्वाभाविक है। पीढ़ी दर पीढ़ी के अनुभवों ने सिद्ध कर दिया था कि जमींदार सदा कृषकों की हानि कर अपने लाभ की सोचता है। इसलिए यदि जमींदार ने किसी सभा में बुलाकर उनके सम्मुख कोई नया प्रस्ताव रखा है तो निश्चित ही वही ठग-विद्या का क्रम होगा—अबकी बार पहिले से अधिक किसी चतुर युक्ति से।

"अच्छा तब आप लोग भूमि के लिए कितना किराया निश्चित करते हैं?" नेखलूदोव ने पूछा।

"हम कैसे निश्चित कर सकते हैं? हम लोग नहीं कर सकते। भूमि आपकी

है एवं शक्ति भी आपके ही हाथों में है ।"

"ओह नहीं, बिल्कुल नहीं ! आप लोगों के सामुदायिक कार्यों के लिए ही उस धन का प्रयोग होगा ।"

"हम नहीं कर सकते; संस्था एक बात है और यह दूसरी ।"

"समझे नही," अमीन ने मुस्कुरा कर कहा (वह नेखलूदोव के पीछे-पीछे ही सभा स्थल पर आ गया था) "प्रिन्स महोदय आप लोगों को किराए पर भूमि दे रहे है और वह किराया आपके सामुदायिक कोष की सम्पत्ति के रूप में लौटा रहे हैं ।"

"हम खूब समझते हैं ।" एक झुर्रीदार, दंत विहीन वृद्ध बोला—"एक अधिकोष की भाँति कुछ; हमको एक निश्चित अवधि पर देना पड़ेगा । हमें यह नही चाहिए; इस समय क्या कम कष्ट हैं और यह योजना तो हमें बिल्कुल नष्ट करके रख देगी ।"

"यह कोई योजना नहीं हुई । हमें तो प्राचीन परिपाटी ही पसन्द है ।" कुछेक असन्तुष्ट एवं क्रुद्ध स्वर भी सुनाई देने लगे ।

नेखलूदोव ने जब यह कहा कि मैं एक समझौता तैयार कर लूँगा जिस पर मैं तथा आप लोग हस्ताक्षर कर देंगे तब विरोध अत्यन्त तीव्र हो उठा ।

"हस्ताक्षर क्यों ? हम तो जिस भाँति करते आए हैं करते रहेंगे । यह सब है किसलिए ? हम तो अज्ञानी हैं ।"

"हम सहमत नहीं हो सकते क्योंकि हमें यह अत्यन्त विचित्र दिखलाई देता है । हम केवल बीज की छूट चाहते हैं ।"

इसका तात्पर्य था कि वर्तमान व्यवस्था के अंतर्गत कृषकों को बीज देना पड़ता था और वे चाहते थे कि जमींदार उसकी छूट दे-दे ।

"इसका अर्थ मैं यह समझूँ कि आप लोग भूमि लेना अस्वीकार करते हैं ?" नेखलूदोव ने एक नंगे पाँव मध्यम आयु के किसान से पूछा । उसके चेहरे पर आभा थी । वह थेगड़ी लगा कोट पहिने हुए था तथा उसने अपनी फटी टोपी अपने बाँए हाथ में ठीक उस भाँति पकड़ रखी थी जैसे कि सैनिक तब पकड़ते हैं जब उन्हें टोपी उतारने की आज्ञा दी जाती है ।

"बिल्कुल यही !" किसान ने कहा । स्पष्टतः वह उस सैनिक वातावरण से

अपना पीछा नहीं छुड़ा पाया था जिसमें कि एक बार रह चुका था।

"आपके कहने का यह आशय तो नहीं है कि आपके पास भूमि पर्य्याप्त है ?" नेखलूदोव बोला।

"नहीं श्रीमान्‌जी. हम पर कहाँ से आई ?" भूतपूर्व सैनिक ने अपनी फटी टोपी को सामने रख कृत्रिम प्रसन्नता से कहा। वह टोपी इस भाँति पकड़े हुए था मानो कि किसी ऐसे को दे रहा हो जो कि उसका प्रयोग करना चाहता हो।

"खैर ! फिर भी मेरी बातों पर आप लोग विचार कर लीजिए।"

नेखलूदोव ने आश्चर्य में कहा तथा अपने ऑफर की पुनरुक्ति की।

"हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता नहीं; हमने जो कहा है वही होगा।" उस चिड़चिड़े, दंत विहीन वृद्ध ने कहा।

"मैं यहाँ कल तक रुका हुआ हूँ यदि आप लोगों का विचार बदल जाए, तो मुझे सूचित कर भेजिएगा।"

कृषकों ने कोई उत्तर नहीं दिया।

अत: नेखलूदोव इस भेंट से किसी भी निर्णय पर पहुँचने में सफल न हो सका।

"यदि मुझे कुछ कहने की आज्ञा हो श्रीमान्‌जी !" अमीन ने घर पहुँच-कर कहा—"ये लोग इतने हठी है कि आप इन लोगों के साथ कोई समझौता नहीं कर पाएँगे। सभा में ये लोग एक बात पर ही अड़ जाते हैं और उससे हटते नहीं। अरे ! ये किसान—वह सफेद बालों वाला और काला वाला—जो मना कर रहे थे, सब तीक्ष्ण बुद्धि हैं। इनमें से कोई यदि कार्यालय में आए, उसे बैठाया जाय, चाय पिलाई जाय तो वह बुद्धि के विशाल भवन में पहुँच जाता है—उसका मस्तिष्क तो संवाददाता का हो जाता है।" अमीन ने मुस्कुराते हुए कहा "प्रत्येक बात को सही रूप में समझता है। सभा में वही बिल्कुल मित्र हो जाता है—वह बस एक ही बात को दोहराता रहता है..."

"अच्छा, क्या कुछ अधिक बुद्धिमान व्यक्ति यहाँ नहीं बुलाए जा सकते," नेखलूदोव बोला "मैं उन्हें सावधानी से समझा दूँगा।"

"यह हो सकता है !" मुस्क्यानपूर्ण अमीन बोला।

"हाँ तो कृपया आप उन्हें कल बुलाइए।"

"ओह, अवश्य बुलाऊँगा।" अमीन ने कहा तथा और भी आनन्द में मुस्कुराया, "मैं उन्हें कल आने को कह दूँगा।"

"सुनते हो उसकी बात, वह चतुर नहीं है।" काले बालों तथा बिखरी दाढ़ी वाले एक किसान ने हृष्ट-पुष्ट घोड़े पर इधर-से-उधर झटका खाते एक वृद्ध से कहा जो कि उसकी बगल में फटा कोट पहिने एक घोड़े पर सवार होकर चल रहा था। ये दोनों पुरुष किसानों के घोड़ों के एक झुण्ड को पक्की सड़क के किनारे तथा चोरी से जमींदार के जंगल में चराने के लिए ले जा रहे थे।

"वैसे ही भूमि दे देगा, बस तुम्हें हस्ताक्षर ही करने हैं—क्या उन्होंने हम लोगों के साथ कितनी ही बार ऐसा ही नहीं किया? नहीं, मेरे मित्र! तुम्हारी सब बातें व्यर्थ हैं। आजकल हम लोगों में कुछ बुद्धि आ गई है।" उसने एक बछेड़े को आवाज देते हुए कहा जो कि कहीं भटक गया था।

उसने अपना अश्व रोका और पीछे मुड़कर देखा किंतु बछेड़ा पीछे नहीं था। वह सड़क के सहारे वाले चरागाह में चला गया था।

"उस तुर्क के बच्चे को तो देखो, वह जमींदार के चरागाह में पहुँच गया है।" बिखरी दाढ़ी वाले उस काले किसान ने अम्बलेट की डंठलों की कड़कड़ सुनकर कहा जिसके ऊपर पहुँचकर सुगन्धित चरागाह में हिनहिनाता हुआ बछेड़ा दौड़ लगा रहा था।

"तुम्हें कड़कड़ाहट सुनाई देती है? हमको किसी छुट्टी के दिन स्त्रियों को वहाँ से घासपात हटाने के लिए भेजना पड़ेगा।" फटे कोट वाले पतले किसान ने कहा "अन्यथा हमारी खुर्पियाँ भोंथरी हो जाएँगी।"

" 'हस्ताक्षर' वह कहता है" बिखरी दाढ़ी वाला जमींदार के भाषण पर टिप्पणी करता, 'हस्ताक्षर' सचमुच। और वह तुम्हें जीवित निगल जाय।"

"यह तो निश्चित् है!" वृद्ध ने उत्तर दिया। तब वे चुप होगए केवल सुनाई देती रही सड़क पर चलते हुए अश्वों के खुरों से उत्पन्न होती हुई ध्वनि।

८

लौटने पर नेखलूदोव ने देखा कार्यालय को ही शयनकक्ष की भाँति व्यव-

स्थित कर दिया गया है। एक ऊँचे पलंग पर पंखों का गद्दा तथा दो तकिए कमरे में रख दिए गए थे। गद्दे पर सिल्क की गहरे लाल रंग की अत्यन्त सुन्दर सुनहरी काम की एक रजाई रखी हुई थी। स्पष्टतः वह अमीन की पत्नी के विवाह के समय का सेला था। अमीन ने नेखलूदोव को भोजन का अवशिष्ट लाकर प्रस्तुत किया किंतु नेखलूदोव ने मना कर दिया। अमीन निर्धनता एवं स्थान की कमी के लिए क्षमा-याचना कर नेखलूदोव को अकेला छोड़कर चला गया।

कृषिकों की अस्वीकारोक्ति से नेखलूदोव को तनिक भी चिंता नहीं हुई। इसके विपरीत, यद्यपि कुजमिन्शकोए में उसका ऑफर स्वीकार कर लिया गया था और उसे धन्यवाद भी दिए गए थे और यहाँ उसके पल्ले पड़ी शंका एवं शत्रुता, फिर भी वह इस समय संतुष्ट एवं आनन्दमग्न था।

कार्यालय विशेष स्वच्छ नहीं था—नेखलूदोव आँगन में बाहर गया और बाग में जा रहा था कि उसे स्मरण हो आई वह रात्रि, नौकरानियों के कमरे की खिड़की, ड्योढी—और वह बेचैन हो उठा तथा अपने दुष्कर्म की स्मृति से पूर्ण स्थान पर होकर जाना उसे पसंद नहीं आया। वह द्वार की सीढ़ी पर बैठ गया तथा बर्च की नई पत्तियों की सुगन्ध से परिपूर्ण सुखद वायु का सेवन करता हुआ बहुत काल तक अन्धकारमय बाग को देखता बैठा रहा तथा पास ही झाड़ी में बैठी बुलबुल की तेज सीटी एवं मिल के स्वर को सुनता रहा। अमीन की खिड़की का प्रकाश अदृश्य हो गया। धान्यागार के पीछे पूर्व में चन्द्र उगने लगा तथा उसके विस्तीर्ण प्रकाश ने उस ध्वंस मकान, फूले-फले बाग को अधिकाधिक समुज्ज्वल कर प्रकाशित कर दिया। दूर कहीं बिजली कड़कने लगी एवं एक काले बादल ने एक तिहाई आकाश को आच्छादित कर लिया। बुलबुलें एवं अन्य पक्षी शांत हो गए। मिल से जल की कलकल ध्वनि से तीव हंसों की बकवास सुनाई दी। तत्पश्चात् जैसा कि उष्ण एव बरसात की रातों में हुआ ही करता है, गाँव में तथा अमीन के मकान में मुर्गों की बाँग सदा से पूर्व ही प्रारम्भ हो गई। कहावत है कि मुर्गे जल्दी बोलें तो रात भी सुन्दर होती है। नेखलूदोव को रात्रि सुन्दर से कहीं अधिक लगी उसके लिए यह प्रसन्नतापूर्ण एवं आनन्दप्रद रात्रि थी। कल्पना ने उस सुखद ग्रीष्म को, जब उसने एक मासूम लडके की भाँति दिन यहाँ व्यतीत किए थे, नवीन कर दिया। उसे प्रतीत हुआ कि उसके वे ही दिन हैं—वे दिन ही नहीं तो उसके जीवन के सर्वाधिक श्रेष्ठ दिवस। उसे न केवल स्मरण ही हुआ वरन् अनुभूतियाँ भी वे ही हुईं जो कि उसने अपनी चौदह वर्ष की आयु में भगवान से सत्य मार्ग

दिखलाने की प्रार्थना करते हुए अनुभव की थीं; अथवा बचपन में माँ की गोद से उतरते समय रोने तथा उसको आश्वासन देने पर की थी कि मैं अच्छा लड़का बनूँगा और मैं तुम्हें कभी कष्ट नहीं दूँगा। उसे वैसा ही अनुभव हुआ जैसा कि उसे तब अनुभव होता जब कि वह और निकोलेंका इर्तेन्येव एक-दूसरे को अच्छा जीवन बिताने के लिए एक-दूसरे की सहायता करते एवं एक-दूसरे को प्रसन्न करते थे।

उसे स्मरण आया कि कुजमिन्शकोए में मैं किस भाँति लुब्ध हो उठा तथा मकान, वन, खेत एव भूमि के लिए पश्चाताप करने लगा था। उसने सोचा कि क्या मुझे उनके लिए इस समय भी पश्चाताप है एवं यह विचार और भी अधिक विचित्र था कि मुझे उनके लिए पश्चाताप हो सकता है। उसने वह सब स्मरण किया जो कि आज कहा था; बच्चों को लिए खड़ी स्त्री, जिसका पति मेरे वन में से वृक्ष काटने के अपराध में बन्दीगृह मे है; भयानक मात्रीओना, जिसका विचार है, अथवा कम-से-कम उसने बातें तो ऐसे ही की थीं कि उसका विचार है कि उसके समान स्त्रियों को श्रीमानों के आधीन होना ही चाहिए। उसने बच्चों के प्रति उसके दृष्टिकोण को, जैसे वे अनाथ चिकित्सालय ले जाए जाते उस ढङ्ग को, अभागे मुस्क्यानपूर्ण थेगडी लगी टोपी पहिने बालक को जो भूख से मर रहा था, अपनी स्मृति में सजग किया। उसे उस परिश्रम व्याप्त दुर्बल गर्भवती स्त्री का भी स्मरण हुआ जो कि अपनी भूखी गाय के प्रति तनिक असावधान होने के कारण अब नेखलूदोव के लिए काम करने को बाध्य थी। और तब यकायक उसे स्मरण हो आया बंदीगृह, घुटे सिर, कारा की कोठरियाँ, दुर्गंधें, शृङ्खलाएँ और इन सबके साथ ही अपने सहित धनियों का व्ययवान नागरिक जीवन। प्रत्येक वस्तु उसके समक्ष प्रश्न से भी कहीं अधिक स्पष्ट हो गई।

लगभग पूर्ण चन्द्र धान्यागार से ऊपर उठा। आँगन में गहन छायाएँ आ गईं तथा विनष्ट गृह की लोहे की छतें चमकने लगीं।

बुलबुलों ने पुनः सीटियाँ देनी प्रारम्भ कर दीं मानों कि उनकी यह इच्छा नहीं है कि प्रकाश व्यर्थ ही जाय।

नेखलूदोव ने स्मरण किया कि कुजमिन्शकोए में रहते समय जबकि मैं अपने कार्य की निश्चित् रूप-रेखा बनाने जा रहा था मैंने अपने जीवन के प्रति क्या सोचा था और उसे ध्यान आया कि मैं कितना गड़बड़ा गया था तथा कोई भी निर्णय न कर पाया था एवं कितने प्रश्न एवं कठनाइयाँ मेरे सम्मुख आ खड़ी हुईं

थीं। उसने पुनः उन्हीं प्रश्नों का उत्तर चाहा और उसे आश्चर्य हुआ कि यह सब कितने सरल थे। यह सरल इसलिए था कि इस समय वह केवल यह सोच रहा था कि मुझे करना क्या चाहिए और यह नही कि मेरा भविष्य क्या बनेगा। और कितनी विचित्र बात है कि वह यह निश्चित न कर सका कि मुझे अपने लिए क्या करना चाहिए किंतु यह उसे स्पष्ट हो गया कि मुझे दूसरो के लिए क्या करना है। उसे निश्चय हो गया कि भूमि किसानों को देनी चाहिए क्योंकि ऐसा न करना निर्दयता होगी। उसने निश्चित रूप से जान लिया कि कातूशा को छोड़ना नहीं चाहिए किंतु उसकी सहायता करते हुए अपने पापों का प्रायश्चित करना ही चाहिए। उसको निश्चित ज्ञान हो गया कि मुझे न्याय के दण्ड से सम्बन्धित समस्त कार्य-व्यापार का अध्ययन, खोज, स्पष्टीकरण करना चाहिए एवं उसे भलीभाँति समझ लेना चाहिए, जिसके विषय मे उसे अनुभव हुआ कि मैं उसे अन्य लोगों की अपेक्षा भिन्न दृष्टि से देखता हूँ। इस सब का क्या परिणाम होगा वह यह नहीं जानता था; किंतु इतना तो निश्चित रूप से जानता था कि मुझे यह करना ही चाहिए। और इस दृढ़ आश्वासन से वह आनन्दित हो गया।

काले बादल ने समस्त आकाश को आच्छादित कर दिया : बिजली सिर के ऊपर कौंधी, तेज प्रकाश ने आँगन एवं ड्योढ़ियों सहित पुराने मकान को जगमगा दिया। सब पक्षी शांत हो गए, किंतु पत्तियों की खड़खड़ाहट होती रही और पवन का झोंका नेखलूदोव के पास सीढ़ियो तक पहुँचा जहाँ बैठा हुआ वह अपने बालों से खिलवाड़ कर रहा था। एक बूँद गिरी फिर दूसरी फिर तो छत के लोहे पर, डॉक की पत्तियों पर तड़तड़ातड़ गिरने लगीं और वायुमंडल विद्युत-चमक परिपूर्ण हो उठा। तथा तीन तक गणना करने से पूर्व ही नेखलूदोव के सिर पर एक भयानक तड़काहट हुई तथा आकाश में मेघों का गम्भीर गर्जन प्रारम्भ हो उठा।

नेखलूदोव अन्दर चला गया।

"हाँ! हाँ!" उसने विचारा "हमारा जीवन जिस कार्य को पूर्ण करता है उस कार्य का पूर्णत्व, उसका अभिप्राय मेरी बुद्धि में न तो आता है और न आ सकता है। मेरी दोनों बुआ के जीवन का क्या उद्देश्य था? निकोलेन्का इर्तेन्येव मृत्यु को क्यों प्राप्त हुआ?—जब कि मैं अभी तक जीवित हूँ? कातूशा का उद्देश्य क्या था? और मेरा उन्माद? वह युद्ध किसलिए हुआ? मेरा नियमहीन

आगामी जीवन किसलिए है ? यह समझना,प्रभु की इच्छा को समझना मेरी सामर्थ्य से बाहर है। किंतु उस सर्वशक्तिमान की इच्छा को समझना जिसकी कि लकीर मेरी आत्मा में खिंच गई है मेरी सामर्थ्य के अन्दर है—और वह जो कुछ भी है मुझे निश्चित रूपेण ज्ञात है। तथा जब मैं उसे पूर्ण करता हूँ तब मेरे हृदय में स्थिरता एवं शांति आ जाती है।"

वर्षा मूसला धार होने लगी तथा छत से गड़गड़ाता हुआ जल नीचे रखे टब में गिरता रहा, कभी-कभी विद्युत अपनी कौंध से मकान एवं आँगन को चमका देती : नेखलूदोव अपने प्रकोष्ठ में घुस गया, कपड़े उतारे और लेट गया। गंदे फटे वॉल पेपर को देख कर उसे संदेह हो गया कि यहाँ खटमल अवश्य होंगे। लेटते समय खटमलों का उसे भय हो आया।

"हाँ। मनुष्य को सेवक बनकर रहना चाहिए स्वामी बनकर नहीं," उसने सोचा तथा इस विचार ने उसे आनन्दित कर दिया।

उसका भय निरर्थक नहीं था। उसने मोमबत्ती बुझाई ही थी कि खटमल ने उसे काट खाया।

"भूमि को देकर साइबेरिया जाना—पिस्सू, खटमल, धूल ! खैर इसकी क्या चिंता ? जो होगा सहन करूँगा।" किंतु वह सहन न कर सका और उठकर खिड़की के पास बैठ गया तथा हटते हुए मेघों एवं पुनः उदय होते हुए चन्द्रमा को प्रशंसात्मक दृष्टि से देखने लगा।

९

नेखलूदोव को प्रातःकाल ही नींद आ सकी अतः वह सोकर भी विलम्ब से उठा।

दोपहर को अमीन द्वारा निमंत्रित चुने हुए सात कृषक फूल-वाटिका में आए। अमीन ने सेब के वृक्षों के नीचे भूमि पर एक मेज तथा कुछ बैञ्चें बिछा दी थीं तथा बैञ्चों की पीठ पर तख्तियाँ लगादी थीं। किसानों को टोपियाँ पहिनाने तथा तिपाइयों पर बिठलाने में कुछ समय लग गया। भूतपूर्व सैनिक विशेष दृढ़ था तथा आज गँठे हुए जूते पहिने था। वह अपनी टोपी को इस भाँति पकड़े सीधा खड़ा था जैसे कि अंत्येष्टि संस्कार में सैनिक पकड़ते हैं। वृषभ-स्कन्ध तथा सम्मानित

सा लगने वाला एक किसान आगे आया। जिसकी माइवेल एंजिल के मोसस की भाँति कुछ भूरे रङ्ग की छल्लेदार दाढी थी तथा सिर के भूरे बाल उसके ब्राउन माथे पर छल्लों की भाँति लटक रहे थे। उसने अपनी टोपी पहिनी, कोट पहिना मेज के पीछे गया और बैठ गया। अन्य सबों ने भी उसका अनुकरण किया।

जब सब अपने-अपने स्थानों पर बैठ गए तब नखलूदोव उनके सम्मुख जाकर बैठ गया तथा मेज पर रखे हुए अपनी योजना वाले कागज के ऊपर झुककर उनको योजना समझाने लगा।

चाहे तो इसलिए कि उपस्थिति कम थी अथवा इसलिए कि वह अपनी उलझनों में व्यस्त न होकर अपने कार्य में ही व्यस्त था—कोई भी कारण हो उस समय नेखलूदोव को किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न नहीं हुआ। उसने हल्की भूरी सफेद छल्लेदार दाढ़ी वाले वृद्ध की ओर मुख कर कहा ताकि वह स्वीकृति अथवा विरोध प्रगट करे। किंतु नेखलूदोव का अनुमान गलत रहा। सम्मानित-सा लगने वाला वृद्ध पादरी, यद्यपि अनुमोदन में अपने सुन्दर चेहरे को हिला रहा था तथा यदि कोई अन्य कुछ विरोध करता तो वह भौहे चढा लेता, फिर भी समझा कुछ भी नहीं था। जब नेखलूदोव की बात को किसान अपने शब्दों में दोहराते तभी वह कुछ समझ पाता था। उससे कही अधिक तो एक ठिगना वृद्ध समझ रहा था। उसकी दाढ़ी न के बराबर थी तथा एक आँख से वह अंधा था। वह नानकीन का थेगड़ी लगा कोट पहिने पादरी की बगल में बैठा हुआ था। नेखलूदोव को यह बात पीछे ज्ञात हुई कि वह भट्टी बनाने वाला था। यह व्यक्ति आँखें तेजी से घुमाता, नेखलूदोव की बातों को ध्यान से सुनता और तुरन्त ही उन्हें अपने शब्दों में दोहरा देता। बुद्धिमान नेत्रों वाला एक मोटा वृद्ध भी, जिसकी दाढ़ी सफेद थी, उतनी ही जल्दी समझ जाता तथा अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने के लिए व्यंग का कोई अवसर नहीं चूकता। भूतपूर्व सैनिक की भी समझ में आ रहा था किंतु सैनिकों की व्यर्थ की बातों का अभ्यस्त होने के कारण वह गड़बड़ा गया। उन सबमें सर्वाधिक गहन रुचि थी एक लम्बे व्यक्ति को जिसने कि घर के बने स्वच्छ वस्त्र तथा नए जूते पहिन रखे थे। उस व्यक्ति की नाक लम्बी, दाढ़ी छोटी तथा आवाज मोटी थी। यह व्यक्ति सब समझ रहा था तथा आवश्यकता पड़ने पर ही बोलता। बाकी के दो वृद्ध पुरुष बड़े ध्यान से सुन रहे थे किंतु बोलते बहुत कम थे। इनमें से एक तो वही दंत विहीन वृद्ध था जो कि कल की सभा में नेखलूदोव को मिला था तथा प्रत्येक बात का चीख-चीख कर विरोध कर रहा था। दूसरा था लम्बा, सफेद,

लँगड़ा वृद्ध जिसके मुख पर दया वर्तमान थी तथा जिसकी पतली टाँगों पर धारीदार पट्टी लिपटी हुई थी।

नेखलूदोव ने सबसे पहिले भूमि के रूप में व्यक्तिगत सम्पत्ति पर अपना दृष्टिकोण समझाया।

"मेरे दृष्टिकोण से भूमि न तो खरीदी ही जा सकती है और न बेची ही जा सकती है क्योंकि यदि ऐसा हो सकता है तो एक पुरुष जिसके पास इतना धन हो जिससे कि वह खरीद सके तो सारी भूमि खरीद कर धनहीनों से इच्छानुसार चाहे जो कुछ एंठ सकता है। वह तो भूमि पर खड़े होने मात्र के लिए धन ले सकता है।" उसने स्पेन्शर का तर्क देते हुए कहा।

"उड़ने वालों के लिए एक रास्ता है; उनके पंख काट दीजिए।" सफेद दाढ़ी एवं हासयुक्त वृद्ध ने कहा।

"यह सच है।" लम्बी नाक वाले वृद्ध ने अपने भारी स्वर में कहा।

"बिल्कुल ठीक!" भूतपूर्व सैनिक बोला।

"यदि कोई स्त्री अपनी गाय के लिए तनिक-सी घास लेती है तो वह पकड़ कर बंदीगृह में डाल दी जाती है।" सफेद दाढ़ी वाले वृद्ध ने कहा।

"हमारी अपनी भूमि पाँच वर्स्ट दूर है और किसी को किराए पर देने की बात असम्भव है; मूल्य इतने ऊँचे चढ़ गए हैं कि उतना उससे पैदा नहीं होगा।" चिड़चिड़े, दंत विहीन वृद्ध ने कहा—"लोग हमको रस्सियों में बँटते हैं; यह तो दासवृत्ति से भी अधिक बुरा है।"

"जैसा मेरा और आपका विचार है कि भूमि रखना अन्याय है इसलिए मैं इसे त्यागना चाहता हूँ।" नेखलूदोव ने कहा।

"खैर, यह तो अच्छी बात है।" माइकेल एंजिलों के मोसस के समान घुँघराले बालों वाले वृद्ध ने कहा। वह विचार कर रहा था कि नेखलदोव भूमि को किराए पर देना चाहता है।

"मैं यहाँ इसीलिए आया हूँ कि मैं अब आगे भूमि पर अपना अधिकार नहीं रखना चाहता। और अब इसके बाँटने के सर्वोत्तम मार्ग पर हम सबको विचार करना चाहिए।"

"इसे कृषकों को दे डालिए।" चिड़चिड़े दंत विहीन वृद्ध ने कहा।

क्षण भर के लिए नेखलूदोव यह अनुभव कर संकोच में पड़ गया किये शब्द उसकी सत्यवादिता पर सन्देह प्रकट करते हैं। किंतु तुरन्त ही वह सम्हल गया तथा उसने उस टिप्पणी का उपयोग अपने हृदय की बात कहने में लिया।

"मैं उसको देने में प्रसन्नता ही अनुभव करूँगा।" वह बोला–किंतु किसको और कैसे ? किन किसानों को ? आप लोगों की संस्था को ही क्यों ? दाइओ-मिन्शकोए (बहुत थोड़ी-सी भूमि वाले पड़ौसी गाँव का नाम) की संस्था को क्यों नहीं ?"

सब शांत रहे। तब भूतपूर्व सैनिक बोला—"बिल्कुल ठीक।"

"अच्छा यदि सम्राट् जार कहें कि जमींदारों से सब भूमि लेकर किसानों को बाँट दो..."

"क्या ऐसी किंबदंतियाँ फैली हुई हैं ?" वृद्ध ने पूछा।

"नहीं ! जार की कोई ऐसी आज्ञा नहीं है। मै तो वैसे ही कह रहा हूँ, कि यदि ज़ार आज्ञा दें कि जमींदारों से सारी भूमि लेकर किसानों में बाँट देनी चाहिए तब आप उसे कैसे बाँटेंगे ?"

"कैसे ? हम उसका समान वितरण कर देंगे, प्रति व्यक्ति इतनी भूमि-किसान जमीदार सब बराबर।" भट्टी बनाने वाले ने भौंहों को शीघ्रता से ऊपर नीचे करते हुए कहा।

"और कैसे ? सचमुच, इतनी प्रति व्यक्ति।" मृदुल स्वभाव वाले लँगड़े ने कहा, जिसने कि अपनी टाँगों पर सफेद धारीदार पट्टियाँ बाँध रखी थीं।

सबने इसे सन्तोषजनक समझ कर इस वक्तव्य की पुष्टि की।

"प्रति व्यक्ति इतनी ? तो फिर घरों के नौकरों का भी उसमें भाग होगा ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"नहीं श्रीमान्।" भूतपूर्व सैनिक बोला। वह प्रसन्न तथा साहसी बनने की चेष्टा कर रहा था।

किंतु पक्षपात विहीन लम्बा पुरुष उसकी राय से सहमत नहीं हुआ।

"यदि बाँटना ही है तो सबका भाग समान ही होना चाहिए।" कुछ विचार करने के पश्चात् वह अपने मोटे स्वर में बोला।

"यह नहीं हो सकता।" नेखलूदोव ने उत्तर सोच लिया था। वह बोला,

"यदि सबको समान भाग देना है तो जो लोग भूमि पर स्वयं काम नहीं करते हैं, जोतते नहीं हैं—स्वामी एवं सेवक, रसोइए, अधिकारीवर्ग, लिपिकगण तथा समस्त नगर निवासी—ये सब अपने-अपने भागों को धनवानों के हाथ बेच देंगे। फिर भूमि पुनः धनिकों के हाथ में चली जाएगी। जो भूमि पर कार्य करते हैं वे बढ़ेंगे, उनकी संतति होगी तथा भूमि फिर कम पड़ जाएगी। तब पुनः धनिकों का अधिकार उन पर हो जाएगा जिन्हें भूमि की आवश्यकता है।"

"बिलकुल ठीक।" भूतपूर्व सैनिक एकाएक बोल उठा।

"भूमि को बेचने मत दो; बस उसी के पास रहने दो जो इस पर खेती करे।" भट्टी बनाने वाले ने क्रोध में कहा।

इसके उत्तर में नेखलूदोव ने बतलाया कि यह जानना बड़ा कठिन हो जाएगा कि कौन अपने लिए खेती करता है तथा कौन दूसरों के लिए।

पक्षपात विहीन लम्बे पुरुष ने प्रस्ताव रखा कि एक ऐसी व्यवस्था की जाए जिससे सब लोग सम्मिलित रूप में खेती करें तथा जो करें उनको उसमें भाग मिले जो न करें उन्हें कुछ नहीं मिले।

इस साम्यवादी योजना के लिए भी नेखलूदोव के पास उत्तर तैयार था। वह बोला कि इस व्यवस्था के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक के पास हल होने चाहिए तथा घोड़े सबके समान होने चाहिए जिससे कि कोई रह न जाय। तथा यह कि हल, घोड़े, थ्रेसिंग मशीन तथा अन्य कृषि-यंत्र सार्वजनिक सम्पत्ति माने जाएँ और ऐसा करने के लिए सब की स्वीकृति आवश्यक है।

"हमारे लोग तो इस जीवन में सहमत होंगे नहीं।" चिड़चिड़ा वृद्ध बोला।

"हममें दैनंदिन झगड़े प्रारम्भ हो जाएँगे" हासपूर्ण नेत्रों वाले वृद्ध ने कहा, "स्त्रियाँ एक-दूसरे की आँखें निकाल बाहर करेंगी।"

"और भूमि की गुणज्ञता के विषय में?" नेखलूदोव बोला, "क्यों तो किसी को उपजाऊ भूमि मिले और क्यों दूसरे को रेता माटी?"

"तब इसको छोटे टुकड़ों में बाँट देना चाहिए तथा प्रत्येक को समान भाग मिल जाना चाहिए।" भट्टी बनाने वाले ने कहा।

इसके उत्तर में नेखलूदोव ने बतलाया कि हम लोग किसी एक जिले के

वितरण की ही बात नहीं विचार रहे, हम तो विभिन्न सरकारों में सर्वसाधारण बँटवारे के विषय में सोच रहे हैं। यदि कृषकों को भूमि निर्मूल्य ही देनी है तो क्यों किसी को अच्छी मिले और क्यों किसी को बुरी ? वे तो सब अच्छी ही चाहेंगे।"

"बिल्कुल ठीक।" भूतपूर्व सैनिक ने कहा।

दूसरे चुप रहे।

"इसलिए यह इतना सरल नहीं जितना कि दिखलाई देता है।" नेखलूदोव बोला "और केवल हमलोग ही नहीं अन्य बहुत से लोग भी इस पर विचार करते रहे हैं। हेनरी जार्ज अमरीका का निवासी है; उसने इस पर यह सोचा है और मैं उससे सहमत हूँ..."

"क्यों, आप जमींदार हैं और आप जैसे चाहें दे सकते हैं। आपको क्या रोक-टोक है ? शक्ति आपके हाथ में है।" चिड़चिड़े वृद्ध ने कहा।

इससे नेखलूदोव को क्रोध आ गया किंतु उसे यह देखकर संतोष हुआ कि वही अकेला ऐसा नहीं था जिसे कि इस बाधा पर क्रोध आया हो।

"तनिक ठहरिए चाचा सेमीओन; उन्हें इस विषय पर बोलने दीजिए।" पक्षपातविहीन पुरुष ने अपने प्रभावपूर्ण भारी स्वर में कहा।

नेखलूदोव इससे प्रोत्साहित हुआ तथा हेनरी जॉर्ज की एकसूत्री कर-योजना समझाने लगा।

"पृथ्वी मनुष्यों की नहीं है, यह ईश्वर की है !" उसने प्रारम्भ किया।

"बिल्कुल ठीक। यही बात है।" कितने ही स्वर सुनाई दिए।

"भूमि सभी की है। सब का इस पर समान अधिकार है। किंतु कहीं भूमि उपजाऊ है कहीं बंजर और सब लोग उपजाऊ भूमि लेना पसन्द करेंगे; अब इसकी उचित रूप से कैसे व्यवस्था की जाय? इस प्रकार कि जो उपजाऊ भूमि प्रयोग करता है उसे इसका मूल्य उन लोगों को चुकाना चाहिए जिनके पास भूमि नहीं है।" नेखलूदोव अपने ही प्रश्न का उत्तर देते हुए कहता रहा, "और क्योंकि यह कहना कठिन है कि कौन किसको मूल्य चुकावे तथा सार्वजनिक हित के लिए धन की आवश्यकता होती है। अतः व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि जो उपजाऊ भूमि को प्रयोग करता है उसे सार्वजनिक संस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु

भूमि का मूल्य संस्था को चुकाना चाहिए। तब हरएक का समान अधिकार रहेगा। यदि तुम भूमि का उपयोग करना चाहते हो तो उसका मूल्य भरो—अधिक उपजाऊ भूमि के लिए अधिक, कम उपजाऊ के लिए कम। यदि तुम भूमि का उपयोग नहीं करना चाहते तो कुछ मत दो और जो उस भूमि का उपयोग करते हैं वे ही कर चुकाएँगे तथा तुम्हारे सार्वजनिक व्ययों को चलाएँगे।"

"यह उचित है।" अपनी भौंहों को हिलाते हुए भट्टी बनाने वाले ने कहा, "जिसके पास अधिक उपजाऊ भूमि है उसे अधिक मूल्य भरना चाहिए।"

"अच्छा ! उसकी भी क्या बुद्धि थी, उस जार्ज की !" छल्ले वाले प्रभावशाली पादरी ने कहा।

"केवल यदि मूल्य हमारी सामार्थ्य के अनुसार हो।" लम्बे पुरुष ने अपने मोटे स्वर में कहा। वह स्पष्ट समझ गया था कि योजना का क्या अर्थ है।

"मूल्य न अत्यधिक ऊँचा हो और न कम। यदि अधिक होगा तो चुकेगा नहीं और इससे हानि होगी और यदि कम होगा तो भूमि को बेचा-खरीदा जाएगा। भूमि में व्यवसाय होने लगेगा।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया "बस ! यही सबकुछ मैं आप लोगों के मध्य व्यवस्थित करना चाहता था।" वह कहता रहा।

"यह न्यायिक है, यह उचित है जी ! इससे काम बन जाएगा।" कृषकों ने उत्साहित हो कहा।

"उसको बुद्धि थी, उस जार्ज को !" वृषभ स्कन्ध, घुँघराले बालों वाले वृद्ध ने कहा "देखा, उसने क्या खोज निकाला है ?"

"अच्छा मान लीजिए कि मुझे कुछ भूमि लेनी है ?" मुस्कानपूर्ण अमीन ने कहा।

यदि कोई भाग बचता है तो लो और कृषि करो।" नेखलूदोव ने कहा।

"किसलिए ? आपके पास जितनी है काफी है।" हासपूर्ण नेत्रों वाले वृद्ध ने कहा।

यहीं बैठक समाप्त हो गई।

नेखलूदोव ने अपना ऑफर दोहराया। उसने कहा कि आप लोग बाकी सब लोगों के साथ इस पर विचार विमर्श कर लें फिर बतला दें, कोई शीघ्रता की आवश्यकता नहीं।

किसानों ने बतलाया कि वे इस पर बातचीत कर उत्तर देंगे। वे लोग अत्यधिक उत्तेजना की अवस्था मे वहाँ से गए। उनकी उच्च स्वर की बातें सड़क पर से आती रहीं तथा नदी के साथ गाँव में से भी देर तक रात्रि में उनका स्वर सुनाई देता रहा।

अगले दिन किसान अपने कामों पर नहीं गए किंतु सारा दिन उन्होंने जमींदार के ऑफर के ऊपर विचार-विमर्श में व्यतीत कर दिया। वे लोग दो संस्थाओं में विभाजित हो गए—पहिला तो ऑफर को लाभप्रद समझता था तथा उसके स्वीकार करने में कोई भय नहीं मानता था और दूसरा जो कि ऑफर को समझ नहीं सका था तथा उसे शंका एवं भय की दृष्टि से देखता था। तीसरे दिन येन केन प्रकारेण, सब सहमत हो गए और उन लोगों ने नेखलूदोव के पास कुछ लोगों को उसका ऑफर स्वीकार करने के लिए भेजा। एक वृद्धा ने उन्हें जमींदार के व्यवहार के विषय में समझाया। इससे उन लोगों का प्रवञ्चना आदि का संदेह दूर हो गया तथा इस बात ने उनके निर्णय को प्रभावित किया। उसने समझाया यह था कि जमींदार अपनी आत्मा के विषय में सोचने लगा है तथा 'मुक्ति' की आशा से इस प्रकार का व्यवहार कर रहा है। पानोवो में नेखलूदोव द्वारा की गई बड़ी धनराशियों के दान ने इस बात की पुष्टि की। नेखलूदोव का इससे पूर्व इतनी अधिक निर्धनता तथा इतने दयनीय जीवन से कभी साक्षात्कार नहीं हुआ था जो कि इस गाँव के किसान व्यतीत करते थे। वह भयभीत हो उठा तथा इस तथ्य ने उसको धन-दान करने पर बाध्य कर दिया था। यद्यपि वह जानता था कि यह उचित नहीं है, वह धन दिए बिना न रह सका। उसके पास इस समय काफी पैसा था जो कि उसे एक जंगल बेचने से तथा कुज़मिन्शकोए के कुछ यंत्र एवं माल बेचने से अग्रिम धन के रूप में प्राप्त हुए थे।

यह ज्ञात होते ही कि जमींदार दान कर रहा है लोगों की भीड़ें उसके पास सहायता प्राप्त करने आने लगीं—इनमें विशेषतया स्त्रियाँ होतीं। वह यह जानता भी न था कि किस भाँति देना चाहिए, कितना देने का निर्णय कैसे करना चाहिए तथा देना किसको चाहिए। उसे लगा कि जो धन मेरे पास इतना अधिक पड़ा हुआ उसको उन लोगों को देने से इन्कार करना असम्भव है जो कि बिल्कुल निर्धन हैं। फिर भी जिसने जो माँगा बिना सोचे-विचारे देना भी बुद्धिमत्ता नहीं है। इससे बचने का उसे एकमात्र उपाय दिखलाई दिया कि मैं यहाँ से चला जाऊँ और उसने शीघ्र ही इसी उपाय का अवलम्बन भी लिया।

पानोवो से अंतिम दिन नेखलूदोव ने अपनी बुआओं के मकान की बची-खुची वस्तुओं को देखने में व्यतीत किया। महोगनी की बनी वस्त्र रखने की अलमारी की, जिस पर कि छल्ले पड़े काँस्य-सिंह-शीस लगे हुए थे, दराज में उसे बहुत से पत्र मिले तथा उनके बीच उसे एक फोटो-ग्रुप भी मिला। फोटो-ग्रुप में उसकी दोनों बुआ सोफिया इवानोव्ना और मेरिया इवानोव्ना, वह स्वयं विद्यार्थी के रूप में, और पवित्र, सुन्दर एवं जीवन के आनन्द से परिपूर्ण कातूशा भी थी। मकान की समस्त वस्तुओं में से उसने केवल पत्र और फोटो लिए। बाकी सब उसने चक्की वाले को दे दिया जिसने कि सदा मुस्कानपूर्ण अमीन की सिफारिश पर सब वस्तुओं सहित मकान को उसके वास्तविक मूल्य के दसवें भाग पर खरीद लिया था तथा खरीदा था माल को ढोकर गाड़ी में ले जाने के लिए।

कुज़मिन्शकोए में अपनी सम्पत्ति की हानि की अनुभूत पश्चाताप की भावना का स्मरण होने पर नेखलूदोव को आश्चर्य हुआ कि ऐसी अनुभूति मुझे हुई तो हुई कैसे। उसे अब कुछ नहीं अनुभव हो रहा था। केवल थी मुक्ति की अति आनन्द, एवं नवीनीकरण की भावुकता, कुछ ऐसी जैसी कि एक यात्री को किसी नई भूमि की खोज पर अनुभव होती है।

१०

वापिस लौटने पर नेखलूदोव को नगर कुछ नया-नया तथा विचित्र-सा लगा। वह सायं में लौटा तब दीपक जल चुके थे। वह स्टेशन से सीधा फिनायल की गंध से परिपूर्ण अपने मकान पर आया। अग्रफेना तथा कोरने दोनों ही असंतुष्ट एवं श्रमित हो चुके थे तथा उनमें वस्तुओं को लेकर कहा-सुनी भी हो गई थी जो कि केवल धूप लगाने तथा बंडल में बाँध कर रख देने के लिए ही बनी प्रतीत होती थीं। नेखलूदोव का कमरा खाली था किंतु था अव्यवस्थित। उसका मार्ग बीच में रखे संदूकों से घिरा हुआ था; इसलिए उसके आगमन ने इस मकान में चलने वाली एक विचित्र प्रकार की निश्चलता के कार्य-व्यापार में स्पष्टतः अवरोध उत्पन्न कर दिया। कृषकों के जीवन के दुखों की छाप तथा इन कार्यवाहियों के स्पष्ट अनौचित्य जिसमें कि नेखलूदोव एक बार भाग ले चुका था—यह सब नेखलूदोव के लिए इतना अरुचिकर था कि उसने अगले ही दिन किसी अन्य स्थान पर जाने का निश्चय कर लिया। उसने यह काम अग्रफेना पेत्रोव्ना के ऊपर छोड़ दिया कि

जबतक उसकी बहिन आकर वस्तुओं को बेच-बाच न दे अग्रफेना पेत्रोव्ना उन वस्तुओं को चाहे जैसे रखे।

नेखलूदोव घर से बहुत जल्दी चला गया तथा उसने बंदीगृह के पास ही एक होटल में दो कमरे ले लिए। होटल विशेष स्वच्छ नहीं था किंतु फिर भी ठीक था। उसने वहाँ कुछ वस्तुएँ मँगाने की आज्ञा दी तथा एडवोकेट के यहाँ चल दिया।

बाहर सर्दी थी। कुछ आँधी-पानी आने से सर्दी हो गई थी जैसे कि बहुधा बसंत में हो ही जाया करती है। ठंड इतनी अधिक एवं वायु इतनी तेज थी कि हल्के ओवरकोट में भी नेखलूदोव को फुरफुरी आने लगी और उसने अपनी गति तेज कर दी कि कुछ गर्मी आ जाए।

उसके मस्तिष्क में विचार भरे हुए थे उन किसानों के—स्त्रियों, बच्चों, वृद्धों के—तथा उस निर्धनता एवं थकान के जो कि उसने पहिली ही बार देखी थी। विशेषतया उसे विचित्र ढङ्ग से मुस्कराते हुए झुर्रीदार चेहरे वाले उस बालक का विचार हो आया जो कि अपनी पिंडली विहीन छोटी पतली टाँगों को पीड़ा से ऐंठ रहा था और वह नगर के जीवन से उस जीवन की तुलना किए बिना न रह सका। कसाइयों, मछली के व्यापारियों, और बजाजों की दूकानों के सामने से निकलते ही खूब खाए-पिए, साफ एवं मोटे दूकानदारों की बड़ी संख्या को देखकर उसका माथा पुनः ठनका मानों कि उसने उन्हें पहिली ही बार देखा हो। देहातों से उनके समान एक भी तो किसान आप खोजकर नहीं ला सकते। इन लोगों को विश्वास था कि उन बेचारों को जो कि उनके सामान के विषय में अधिक नहीं जानते, ठगने में जो कष्ट हम लोग उठाते हैं वह कोई व्यर्थ का धन्धा नहीं किंतु एक महत्त्वपूर्ण व्यापार है। गाड़ीवान अपनी वर्दी पहिने जिसकी कि विशाल पीठ पर रीढ़ की हड्डी तक बटनों की पंक्तियाँ लगी हुई थीं, सुनहरी डोरी युक्त टोपियाँ पहिने द्वारपाल, ऐप्रन तथा घुँघराली झालरें पहिने दासियाँ, और विशेषतया गर्दन के पिछले भाग की हजामत बनवाए हुए अकड़ू इज़्वोचिक[1] लोग जो कि अपनी बग्घियों में सुस्ती में पड़े हुए राहगीरों को उदासीनता एवं ईर्ष्या की दृष्टि से देख रहे थे—सभी खूब खाए-पिए शरीर के दिखलाई दे रहे थे। इन सब व्यक्तियों में नेखलूदोव उन किसानों को देखे बिना न रह सका जो कि भूमि की कमी के कारण नगर में आने को बाध्य हो गए थे। उनमें से कुछेकों ने नागरिक जीवन से लाभान्वित होने का मार्ग खोज लिया था तथा वे अपने स्वामियों की भाँति हो गए थे

१ एक प्रकार की गाड़ी हाँकने वाले।

वे अपनी स्थिति से संतुष्ट थे; अन्य लोग देहात से भी गिरी अवस्था में थे तथा ग्रामीणों से भी अधिक दया के पात्र थे।

ऐसे थे जूते बनाने वाले जिन्हें कि नेखलूदोव ने होटल के सबसे नीचे वाले भाग में देखा था; पीली फूहड़ धोबिनें जो कि पतली-नंगी बाँहों से खुली खिड़कियों में लोहा कर रही थीं और जिनमें से साबुन की भाप निकल रही थी। ऐसे ही थे दो मकान पोतने वाले जिनके कि एँप्रन और मोजे विहीन पाँव रङ्ग से पुते तथा छितरे हुए थे जो कि नेखलूदोव को रंग से भरी हुई बाल्टी ले जाते मिले थे— उनकी क्षीण, ब्राउन रंग की बाएँ कुहनियों तक उघड़ी हुई थीं—वे दोनों एक-दूसरे से लड़ रहे थे। उनका मुख चिड़चिड़ा तथा आकृति रूक्ष थी। घोड़ेगाड़ियों में झटके खाते हुए साँवले गाड़ीवानों के मुख पर भी वही भाव था जो कि सड़कों के कोने में खड़े फटे वस्त्र पहिने भिखारियों एवं भिखारिन के मुख पर होता है। उसी प्रकार के चेहरे भोजनालयों की खुली खिड़कियों में दिखलाई देते थे जहाँ होकर कि नेखलूदोव जा रहा था। चाय के सामान तथा बोतलों से सज़ी मेजों पर, जिनके बीच सफेद कमीज पहिने वेटर इधर-से-उधर भाग रहे थे, पसीनों से लथपथ मदहोशी भरे लाल चेहरे बैठे गा और चिल्ला रहे थे। एक व्यक्ति खिड़की के पास भौंहें ताने, क्रोध में ओंठ फुलाए तथा आँखें स्थिर किए बैठा था मानों कि कुछ स्मरण करने की चेष्टा कर रहा हो।

"और ये सब लोग यहाँ क्यों एकत्रित हुए हैं ?" नेखलूदोव ने दुर्गन्धित तेल, ताजा रोगन की गंध से परिपूर्ण ठण्डी वायु तथा धूल दोनों में ही साँस लेते हुए सोचा।

एक सड़क पर उसे किसी प्रकार के लोहे से लदी गाड़ियाँ मिलीं जो कि ऊँची-नीची सड़क पर चलते हुए ऐसी खड़खड़ा रही थीं कि उसके कान सुन्न हो गए तथा सिर में दर्द होने लगा। वह गाड़ियों की पंक्ति को पार कर आगे निकल जाने के विचार से और भी त्वरित गति से चलने लगा कि किसी ने उसे गाड़ियों की खड़खड़ाहट से भी उच्च स्वर में नाम लेकर पुकारा। वह रुका और नुकीली मोम लगी मूँछों तथा दमकते मुख वाला एक अधिकारी एक मोटे गाड़ीवान की बग्घी में बैठा तथा मित्र भाव से हाथ हिलाते हुए उसे दिखलाई दिया। उसकी मुस्कान से उसके असाधारण श्वेत दाँत दिखलाई दिए।

"अहा, नेखलूदोव हैं क्या ?"

नेखलूदोव की प्रथम भावना प्रसन्नता की थी।

"अहा शेनबोक !" वह प्रसन्नता में चिल्लाया किंतु तत्क्षण ही उसे ज्ञात हो गया कि प्रसन्नता की कोई बात नहीं है।

यह वही शेनबोक था जो कि उस दिन नेखलूदोव की बूआ के यहाँ पहुँचा था। नेखलूदोव उसे भूल चुका था किंतु उसने सुना था कि ऋण-ग्रस्त होते हुए भी वह येनकेन प्रकारेण सेना में अब भी टिका हुआ है तथा किसी-न-किसी ढङ्ग से उसने धनवानों के मध्य अपना स्थान बना ही रखा है। उसके प्रयत्न एवं संतुष्ट मुख-मण्डल ने इस समाचार की पुष्टि ही की।

"कितनी अच्छी बात है कि मैंने तुम्हें खोज लिया। नगर में कोई है भी नहीं। अहा! मेरे पुराने मित्र तुम तो बड़े हो गए हो।" उसने गाड़ी से उतर कर अपने कंधे फैलाते हुए कहा—"मैंने तुम्हारी चाल से ही तुम्हें पहिचान लिया। देखो, हम तुम दोनों साथ-साथ भोजन करेंगे। कोई ऐसा स्थान है जहाँ ढङ्ग का भोजन मिलता हो ?"

"मुझे भय है कि मैं समय नहीं दे सकूँगा।" नेखलूदोव ने यह सोचते हुए उत्तर दिया कि मेरे साथी की भावनाओं को ठेस न पहुँचने पाए, "और तुम्हें किस काम से आना पड़ा ?"

"काम यार ! संरक्षक-कार्य। अब मैं संरक्षक हूँ। तुम सामानोव को तो जानते ही होगे—और वह करोड़पति है—मैं उसके कार्य-व्यापार का प्रबन्ध कर रहा हूँ। उसका मस्तिष्क ढीला हो गया और उसके पास चौवन हजार डेसीआटिन भूमि है।" उसने ऐसे विचित्र गर्व से कहा मानों कि उसने ही यह सब डेसीआटिन निर्माण किए हों, उसका काम बिल्कुल ही परित्यक्त था। सब भूमि किसानों को किराए पर देदी गई थी। उन्होंने धेला भी न दिया। अस्सी हजार रुबल से अधिक का ऋण था। मैंने वर्ष भर में ही सब बदल कर रख दिया और उससे सत्तर प्रतिशत अधिक अर्जन कर लिया। तुम्हारा क्या विचार है ?" उसने गर्व से कहा।

नेखलूदोव को सुनी हुई बातें स्मरण हो आईं कि शेनबोक ने अपनी समस्त सम्पत्ति को व्यय कर दिया था तथा ऋण-ग्रस्त हो गया था। अब शेनबोक किसी विशेष प्रभावशाली व्यक्ति की शिफारश पर एक ऐसे धनिक का संरक्षक नियुक्त हो गया था जो कि अपनी सम्पत्ति का अपव्यय कर रहा था और अब वह स्पष्टतया उस संरक्षिता के आधार पर अपना जीवन-निर्वाह कर रहा था।

"इसको ठेस पहुँचाए बिना मेरा पिण्ड कैसे छूटे ?" नेखलूदोव ने उसके

भरे, दमकते हुए और मोमी मूछोंयुक्त चेहरे को देखते तथा उसकी मैत्रीपूर्ण बातों को सुनते हुए सोचा। शेनबोक की बातों का विषय था अच्छा भोजन कहाँ मिलता है, और संरक्षक के रूप में अपने कार्यों का दम्भ।

"अच्छा तो फिर भोजन कहाँ करना है ?"

"वास्तव में मेरे पास बिल्कुल समय नहीं है।" नेखलूदोव ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए कहा।

"अच्छा सुनो। आज रात्रि में रेस में तो आओगे ?"

"नहीं, मैं नहीं आऊँगा।"

"अवश्य आओ। अब वैसे तो मेरा कोई नहीं है किंतु मैं ग्रीशा के घोड़ों का समर्थन करता हूँ। तुम्हें तो मालूम ही है कि उसके पास घोड़ों का जुगाड़ अच्छा है। आना, आओगे तो वहीं कहीं हम दोनों साथ-साथ रात्रि में भोजन करेंगे।"

"नहीं, मैं नहीं आ सकता। सचमुच मेरी इच्छा ही नहीं है। कृपया मुझसे रुष्ट मत हो जाना।"

"रुष्ट, प्यारे नहीं ! तुम रह कहाँ रहे हो ?" और एकाएक उसका चेहरा गम्भीर हो उठा, नेत्र स्थिर हो गए और उसने अपनी भौंहें चढ़ालीं। लगता था वह कुछ स्मरण कर रहा था और नेखलूदोव को उसके अन्दर वही भाव दिखलाई दिया जो कि भोजनालय की खिड़की पर बैठे हुए चढ़ी भौहों एवं मिचे ओठों वाले व्यक्ति के मुख पर उसने देखा था।

"उफ़ ! कितनी ठण्ड है ?"

"हाँ, अधिक !"

"तुम्हारे पास पारसलें हैं ?" शेनबोक ने गाड़ीवान की ओर देखकर पूछा।

"अच्छा तो नमस्ते। तुम्हारे मिल जाने से मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है।" और नेखलूदोव का प्रेम से हाथ दबाकर वह गाड़ी में जा चढ़ा। गाड़ी में बैठकर उसने अपने दमकते मुख के सामने अपना सफेद दस्ताने वाला हाथ हिलाया। वह मुस्कुरा रहा था तथा उसके असाधारण श्वेत दाँत दिखलाई दे रहे थे।

"मैं भी ऐसा ही हो सकता था?" नेखलूदोव ने एडवोकेट के यहाँ जाते हुए मार्ग में सोचा, "हाँ। मैं ऐसा बनने की चेष्टा तो करता था, यद्यपि मैं पूर्णतया ऐसा

था नहीं। और मैंने अपना जीवन भी इसी प्रकार से व्यतीत करने का विचार किया हुआ था।"

११

नेखलूदोव को एडवोकेट ने अपनी पारी से पूर्व ही बुला लिया तथा मेक्शोव के अभियोग की बातें तुरन्त प्रारम्भ कर दीं। वह उसको पढ़ चुका था तथा पढ़ते समय उसे अभियोग की परस्पर विरोधी बातों पर बहुत क्रोध आया था।

"यह केस पूर्णतया क्रान्तकारी है।" वह बोला "बहुत सम्भव है कि बीमे का धन प्राप्त करने के लिए स्वामी ने भवन में स्वयं आग लगा दी हो किंतु प्रमुख वात तो यह है कि मेन्शोव का अपराध सिद्ध नहीं हुआ। कोई भी कैसा भी प्रमाण नहीं है। निरीक्षक-न्यायाधीश की असावधानी एवं प्रोसीक्यूटर के विशेष उद्योग से यह सब हुआ। यदि इनका केस प्रान्तीय कोर्ट में न चलाया जाकर यहीं चलाया जाय तो मैं विश्वासपूर्वक कहता हूँ कि ये लोग वरी हो जाएँगे और मैं कोई शुल्क नहीं लूँगा। अब दूसरा केस—फेदोशिया बिरयूकोवा वाला है। सम्राट् के लिए प्रार्थना-पत्र लिख दिया है। यदि आप पीतर्सबर्ग जाते समय अपने साथ ले जाँय तो सुन्दर रहे—वहाँ आप अपनी सिफारश कर स्वयं अपने हाथों उसे दें अन्यथा वे इधर-उधर थोड़ी जाँच पड़ताल करेंगे और परिणाम कुछ नहीं निकलेगा। आप चेष्टा कर अपील कमेटी के कुछ प्रभावशाली सदस्यों से मिललें। मेरी दृष्टि में तो बस इतना ही है?"

"नहीं मेरे पास कुछ सेक्टेरियनों का एक पत्र आया था मैं उसे साथ लाया हूँ।" पत्र को जेब से निकालते हुए नेखलूदोव, बोला "यदि उनकी लिखी बातें सच हों तो "केस अत्यन्त रुचिपूर्ण है। मैं उनसे आज ही मिलकर पता लगाने की चेष्टा करूँगा।"

"देखता हूँ आप तो कुप्पा, पानी का फुहारा बन गए हैं जिसमें कि बन्दीगृह की सब शिकायतें डाली जाती हैं।" एडवोकेट ने मुस्कुराकर कहा "यह बहुत है—इतना सम्हाल नहीं पाएँगे आप।"

"नहीं ! किंतु यह केस तो अत्यन्त विचित्र है।" नेखलूदोव बोला और निम्नभाँति उसकी सूक्ष्म टिप्पणी दी: गाँव में बाइबिल पढ़ने कुछेक किसान एकत्रित

हो गए तथा अधिकारी गणों ने आकर उन्हें तितिर-बितिर कर दिया। उसके बाद रविवार को वे लोग पुनः एकत्रित हुए और इस बार एक पुलिसमैन को बुलवा लिया गया। पुलिसमैन ने उन्हें बन्दीकर न्यायालय में उपस्थिति कर दिया। न्यायाधीश ने उनसे प्रश्नोत्तर किए, प्रोसीक्यूटर ने अभियोग पत्र लिखा और जजों ने अभियोग चला दिया। पबलिक प्रोसीक्यूटर ने उन पर एक दोष लगाया जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण थीं—कुछ बाइबिलें—और उन्हें निर्वासन दण्ड दे दिया।

"यह तो वास्तव में बड़ी भयंकर बात है।" नेखलूदोव बोला—"क्या यह सच हो सकता है ?"

"आपको आश्चर्य किस बात पर है ?"

"क्यों, प्रत्येक बात पर ! मेरी समझ में पुलिस अधिकारी की बात तो आती है क्योंकि वह तो आज्ञा का पालन मात्र करता है किंतु प्रोसीक्यूटर की बात नहीं समझ में आती कि वह इस प्रकार का अभियोग-पत्र लिख सकता है ? एक शिक्षित..."

"बस यही तो गलती है। हम लोग न्यायाधीशों एवं पब्लिक प्रोसीक्यूटरों को साधारणतया उदार व्यक्ति समझने के अभ्यस्त हैं। कभी था ऐसा युग; किंतु अब तो बिल्कुल भिन्न है। ये तो केवल वेतन-दिवस के लिए चिंतित रहने वाले अधिकारी होते हैं। वेतन मिलने के बाद उसे बढ़वाने की इच्छा करते हैं और बस यहीं इनके सिद्धांत समाप्त हो जाते हैं। जिस पर भी ये चाहें उस पर अभियोग लगा देंगे, दण्ड दे देंगे।"

"ठीक है किंतु ऐसा कोई नियम तो है नहीं कि दूसरों के साथ बैठकर बाइबिल पढ़ने पर साइबेरिया के लिए निर्वासित किया जा सके ?"

"जी हाँ, यदि आप सिद्ध कर दें कि बाइबिल पढ़ने में उसने अर्थ इस प्रकार से समझाया जैसा कि समझाने की आज्ञा नहीं है और इस भाँति गिरजाघर द्वारा किए गए अर्थ का अपमान किया है तो उसे निर्वासित किया जा सकता है। इसकी धारा १६६ साइबेरिया के लिए निर्वासन—जनसाधारण में यूनानी सनातन धर्म का अपमान।"

"असंभव !"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह ऐसा ही है। मैं तो इन सज्जनों अर्थात् जजों से सदा यही कहता हूँ।" एडवोकेट कहता रहा—"मैं इन लोगों के

प्रति कृतज्ञ हुए बिना रह नहीं सकता, क्योंकि यदि अभी तक मैं, आप एवं हममें से सब बंदी नहीं हुए तो केवल इन लोगों की अनुकम्पा से। अधिकारों को छीनकर साइबेरिया के किसी भी सुदूर भाग में हम लोगों को भेज देना इनके बाँए हाथ का काम है।"

"यदि ऐसी ही बात है तथा प्रत्येक बात प्रोक्योरर एवं अन्य लोगों पर ही निर्भर है जो कि स्वेच्छया नियमों का प्रयोग करें या न करें तो फिर यह अभियोग क्यों चलाए जाते हैं ?"

यह बात सुनते ही एडवोकेट हृदय खोलकर हँसा। "आप तो विचित्र प्रश्न करते हैं। श्रीमान्‌जी, यह तो दर्शनशास्त्र की बातें हैं। अच्छा ! हमारी आप-की बातें इस पर भी होंगी। क्या आप शनिवार को आ सकते हैं ? उस दिन आपको मेरे यहाँ वैज्ञानिक, साहित्यिक एवं कलाकार मिलेंगे तब हम और आप इन सूक्ष्म प्रश्नों पर वाद-विवाद करेंगे।" एडवोकेट ने व्यंग मिश्रित ढंग से 'सूक्ष्म-प्रश्नों' शब्दों का उच्चारण करते हुए कहा "आप मेरी पत्नी से मिलें ? अवश्य पधारिए।"

"धन्यवाद; चेष्टा करूँगा।" नेखलूदोव ने कहा। उसे लगा कि मैं झूँठ बोल रहा हूँ। वह जान रहा था कि यदि मुझे कुछ करना है तो बस इतना ही कि एडवोकेट के साहित्योत्सव से, उसके वैज्ञानिक, कलाकार एवं साहित्यिक मित्रों से दूर रहना है।

उस हँसी से—जो नेखलूदोव की इस बात पर हुई थी कि यदि नियमों को जज स्वेच्छया प्रयोग करें या न करें तो अभियोगों के चलाए जाने का अर्थ ही क्या रह जाता है तथा एडवोकेट के 'दर्शनशास्त्र' एवं 'सूक्ष्म प्रश्नों' शब्दों के कहने के ढंग से—नेखलूदोव को यह सिद्ध हो गया कि मुझमें और एडवोकेट के दृष्टिकोणों में कितना महान् अन्तर है। सम्भवतया उसके मित्रों के दृष्टिकोण में भी। और उसे अनुभव हुआ कि मेरे और मेरे पुराने मित्र शेनबोक के विचारों में जो अन्तर है उससे कहीं अधिक अन्तर मुझमें और एडवोकेट तथा उसके मित्र समुदाय में है।

१२

बन्दीगृह दूर था और देर हो रही थी इसलिए नेखलूदोव ने बग्घी किराए पर ले ली। कोचवान अधेड़ था तथा देखने में बुद्धिमान् एवं दयालु लगता था।

जब गाड़ी सड़क के किनारे निर्माण होते हुए एक विशाल भवन के सम्मुख आई तब कोचवान ने नेखलूदोव की ओर मुड़ते हुए भवन की ओर इङ्गित कर कहा।

"देखिए, कितना विशाल भवन बना रहे हैं।" उसने इस भाँति कहा मानो कि इस भवन के निर्माण में उसका कोई हाथ हो तथा उस पर उसे गर्व हो।

मकान वास्तव में विशाल था तथा उसकी रचनाशैली पेचीदा एवं मौलिक थी। लोहे के बन्धनों से बाँध कर मजबूत देवदार की बल्लियों की पाढ़ इस मकान के चारों ओर खड़ी की गई थी तथा सड़क और मकान के बीच एक बड़ा तख्ता-सा था। पाढ़ की बल्लियों के ऊपर चूने-गारे से लथपथ मजदूर चींटियों की भाँति इधर-उधर चल रहे थे। कुछ ईंटें लगा रहे थे, कुछ उन्हें काट रहे थे, कुछ मसाला ढोने के तसलों तथा भारी बाल्टियों को ऊपर ले जा रहे थे तथा कुछ उन्हें खाली कर नीचे ला रहे थे।

अच्छे कपड़े पहिने एक मोटे सज्जन, जो कि संभवतया मिस्त्री साहब थे, पाढ़ के ऊपर खड़े एक ठेकेदार को ऊपर की ओर इङ्गित कर कुछ समझा रहे थे। ठेकेदार व्लादीमीर जिले का एक किसान था तथा बड़े आदर से उनकी बातें सुन रहा था। मिस्त्री साहब और ठेकेदार के पास होकर द्वार में से लदी गाड़ियाँ अन्दर जा रही थीं तथा खाली बाहर आ रही थीं।

"जब घरों में इनकी स्त्रियाँ जिनके पेट में बच्चा है अपनी शक्ति के बाहर परिश्रम कर रही हैं और थेगड़ीदार टोपियाँ पहिने इनके बच्चे जो भूख से पीड़ित होकर मरने को बाध्य है वृद्धों की भाँति मुस्कुराते हैं, अपनी छोटी टाँगों को सिकोड़ते हैं तब ऐसी अवस्था में ये लोग किसी मूर्ख एवं अलाभकारी मनुष्य के लिए—उन्हीं में से एक जो उन्हें लूटते हैं तथा नष्ट करते हैं—इस मूर्खतापूर्ण एवं अलाभकारी भवन का निर्माण कर रहे हैं, और कितने स्थिर हैं ये लोग—जो काम कर रहे हैं तथा करा रहे हैं—होना भी यही चाहिए।" मकान को देख-कर नेखलूदोव ने सोचा।

"हाँ, यह वाहियात मकान है।" उसने अपना विचार प्रगट किया।

"वाहियात क्यों?" गाड़ीवान ने कुछ क्रुद्ध स्वर में कहा—"धन्य है, इसके कारण लोगों को काम मिल जाता है। यह वाहियात नहीं।"

"किंतु इस काम से कोई लाभ नहीं।"

"लाभ क्यों नहीं। यदि लाभ न होता तो लोग कराते ही क्यों?" गाड़ी-

वान बोला—"लोगों को इससे दो मुट्ठी अन्न मिलता है।"

नेखलूदोव चुप हो गया विशेषतया इसलिए कि पहियों की खड़खड़ाहट में बातें करना कठिन था।

गाड़ी जब बन्दीगृह के समीप आई और गाड़ीवान ने गाड़ी को पथरीली सड़क से मोड़कर काली सड़क पर लगाई तब बातें करना सरल हो गया और वह फिर नेखलूदोव की ओर मुड़ा।

"और आजकल गांवों से कितने झुण्ड-के-झुण्ड लोग नगरों में आ रहे हैं—यह बड़ी भयानक बात है।" उसने अपने कोचबक्स पर घूम कर कहा और फिर भेड़ की खाल का कोट पहिने, कन्धों पर झोले डाले तथा आरे और वसूले लेकर जाते हुए किसानों की ओर इङ्गित किया।

"अन्य वर्षों की अपेक्षा अधिक हैं क्या ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"कहीं अधिक। इस वर्ष तो हर जगह भीड़ लगी हुई है और बड़ा कष्ट है। जिनके यहाँ काम हो सकता है वे लोग मजदूरों को घास-फूस की तरह फेंकते हैं। नौकरी कहीं नहीं मिलती।"

"ऐसा क्यों ?"

"बहुत सारे जो आ गए हैं ! उनके लिए जगह ही खाली नहीं है।"

"किंतु इतने सारे आ क्यों गए ? गाँवों में ही क्यों नहीं रहते ?"

"वहाँ उनके लिए गांवों में क्या रखा है ? भूमि तो है ही नहीं।"

नेखलूदोव को लगा कि किसी ने उसके घाव को कुरेद दिया हो। लोग समझते हैं कि घाव की जगह में चोट लगती ही रहती है किंतु वहाँ आघात का अनुभव इसलिए होता है कि वह जगह घायल होती है।

"क्या यह संभव है कि हर स्थान पर यही हो रहा है ?" उसने सोचा, तथा गाड़ीवान से प्रश्न करने लगा कि तुम्हारे गाँव की भूमि कैसी है, तुम्हारे पास कितनी है और तुमने अपना गाँव क्यों छोड़ा।

"हमारे पास प्रति व्यक्ति एक देसीआतिन भूमि है और हमारे परिवार के पास तीन आदमियों का भाग है।" गाड़ीवान ने प्रसन्नता से कहना प्रारम्भ किया—"मेरा पिता तथा एक भाई घर पर हैं और भूमि की व्यवस्था वे ही करते हैं और दूसरा भाई सेना में नौकरी करता है। किंतु वहाँ व्यवस्था को है क्या ? मेरा भाई

भी मास्को आने का विचार कर रहा है।"

"और क्या भूमि किराए पर नहीं मिल सकती ?"

"कोई आजकल किराए पर कैसे देगा ? जो ऐसे महानुभाव थे उन्होंने तो अपना सब अपव्यय कर दिया और अब वह सब व्यापारियों के हाथों में चली गई है। उनसे किराए पर मिल नहीं सकती—उन्होंने स्वयं खेती कराना प्रारम्भ कर दिया है। हमारे यहाँ एक फ्रांसीसी का शासन है; उसने हमारे पहिले जमींदार से भूमि खरीद ली थी और किराए पर देता नहीं है। बस सब समाप्त समझिए।"

"यह फ्रांसीसी कौन है ?"

"उस फ्रांसीसी का नाम दूफोर है। किंचित आपने उसके विषय में सुना हो। वह बड़े-बड़े थियेटरों में काम करने वाले अभिनेताओं के लिए नकली बालों का टोप बनाता है। यह धन्धा अच्छा है इसलिए उसने बहुत माल पैदा किया। उसने हमारी जमींदारनी से सारी जमींदारी खरीद ली और अब हम लोग उसकी मुट्ठी में हैं:। वह अपनी इच्छानुसार हम लोगों को तानता है। ईश्वर की कृपा है कि वह स्वयं तो बड़ा नेक है किंतु उसकी रूसी पत्नी इतनी खूंख्वार है कि भगवान् ही बचाए। वह लोगों को लूटती है। यह बड़ा कष्टप्रद है। लीजिए बन्दीगृह भी आ गया। क्या गाड़ी को सिंहद्वार तक ले चलूँ ? मुझे भय है कि वे जाने न देंगे।"

१३

सामने के द्वार पर घण्टी बजाते ही नेखलूदोव का हृदय इस विचार से धड़कने लगा कि आज न-जाने किस अवस्था में माशलोवा से मेरी भेंट हो तथा माशलोवा एवं बन्दीगृहमें बन्द अन्य दूसरों के रहस्य पर भी,जिसका कि उसे अनुभव हुआ था उसका हृदय धड़का। द्वार खोलने वाले वार्डर से उसने माशलोवा के विषय में पूछा। कुछ पूछताछ करने के पश्चात वार्डर ने सूचित किया कि माशलोवा चिकित्सालय में है। वहाँ के दयालु वृद्ध द्वारपाल ने नेखलूदोव को तुरन्त ही अन्दर ले लिया और यह पूछकर कि आपको किनसे मिलना है, उसने बच्चों के वार्ड की ओर जाने को कहा।

कारबोलिक तेजाब की गन्ध से भरे हुए एक नवयुवक डॉक्टर ने मार्ग में नेखलूदोव के पास आकर कठोरता से पूछा कि क्या चाहते हो। यह डॉक्टर बंदियों

को सदा सुविधाएँ देने की चेष्टा करता रहता तथा इसीलिए अधिकारियों एवं बड़े डॉक्टर से उसका संघर्ष चलता ही रहता था। इस आशंका से कि नेखलूदोव कहीं कोई नियम विरुद्ध माँग न कर बैठे तथा यह प्रदर्शित करने की इच्छा से कि मैं किसी के साथ कोई रियायत नहीं करता उसने रुष्ट होने का बहाना किया।

"यहाँ स्त्रियाँ नहीं हैं, यह तो बच्चों का वार्ड है।" वह बोला।

"जी मैं जानता हूँ किंतु एक बंदिनी यहाँ सहायक नर्स के रूप में काम कर रही है।"

"जी! यहाँ इस प्रकार की दो नर्सें हैं। इनमें से आपको किससे मिलना है?"

"मेरी उनमें से माशलोवा से घनिष्टता है।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया "और मुझे उससे बातें करनी हैं। मैं उसके केस की अपील सीनेट में करने के लिए पीतर्सबर्ग जा रहा हूँ और यह उसे देना चाहता हूँ। यह केवल एक फोटो है।" नेखलूदोव ने अपनी जेब से लिफाफा निकालते हुए कहा।

"ठीक है! आप दे सकते हैं।" डाक्टर ने विनम्र पड़कर सफेद एँप्रन पहिने हुए एक वृद्धा से झुककर कहा कि जाओ बंदिनी माशलोवा को बुला लाओ। "आप यहाँ विराजेंगे अथवा प्रतीक्षागृह में जाएँगे?" उसने पूछा।

"धन्यवाद!" नेखलूदोव ने कहा तथा डाक्टर के व्यवहार में अपने प्रति संतोषजनक परिवर्तन देखकर उसने डाक्टर से पूछा कि चिकित्सालय में माशलोवा के कार्य से आप लोग संतुष्ट हैं अथवा नहीं।

"ओह ठीक है! यदि आप उसके पूर्व जीवन को दृष्टि में रखकर देखें तो वह बहुत अच्छा काम कर रही है। किंतु लीजिए वह आ गई।"

माशलोवा के पीछे-पीछे वृद्धा नर्स एक द्वार से आई। माशलोवा ने धारीदार नीले रंग की ड्रेस और एक श्वेत ऍप्रन पहिन रखा था तथा सिर पर एक रूमाल बाँध रखा था जिससे उसके समस्त बाल ढक गए थे। नेखलूदोव को देखते ही उसका मुख लज्जा से आरक्त हो उठा तथा वह ठिठक गई मानो कि हिचकिचा रही हो; इसके पश्चात् उसने त्यौरियाँ चढ़ालीं तथा नेत्र नीचे किए त्वरित गति से बीच में पड़ी हुई चटाई पर होती हुई नेखलूदोव के पास आई। नेखलूदोव के पास आकर वह हाथ नहीं मिलाना चाहती थी किंतु फिर भी आरक्त होते हुए उसने उससे हाथ मिलाया।

नेखलूदोव ने माशलोवा को उस दिन से नहीं देखा था, जिस दिन कि उसने आवेश में आने के लिए नेखलूदोव से क्षमा-याचना की थी और उसे आशा थी कि माशलोवा उसी भाँति आज भी मिलेगी। किंतु आज वह उस दिन से नितांत भिन्न थी। आज उसके मुख की भावभिव्यक्ति में कुछ नवीनता, कुछ झेंप एवं लज्जा थी तथा उसे लगा कि मेरी ओर प्रतिकूलता भी है। जो उसने डाक्टर से कहा वही उससे भी कह दिया—कि मैं पीतर्सबर्ग जा रहा हूँ—तथा उसे पानोवो से लाया हुआ फोटो का लिफाफा दे दिया।

"मुझे यह पानोवो में मिला था—यह पुराना फोटो है; शायद तुम्हें पसंद आए। इसे ले लो।"

काली भौंहें उठाकर माशलोवा ने अपनी तिरछी आँखों में आश्चर्य भरकर उसकी ओर देखा मानों कि वह पूछ रही थी, "यह है किसलिए ?" और एक शब्द कहे बिना उसने फोटो ले लिया तथा उसे अपनी ऐप्रन की जेब में रख लिया।

"मैं तुम्हारी चाची से मिला था।" नेखलूदोव बोला।

"मिले थे !" माशलोवा ने उदासीनता से पूछा।

"तुम यहाँ प्रसन्न तो हो ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"जी हाँ ! सब ठीक है।" वह बोली।

"कोई कष्ट तो नहीं है ?"

"ओह, नहीं ! किंतु मैं अभी अभ्यस्त नहीं हुई।"

"मुझे बड़ी प्रसन्नता है। फिर भी वहाँ से तो यहाँ अच्छा है।"

"वहाँ से—कहाँ से ? उसने पूछा। उसका मुख पुनः आरक्त हो उठा।

"वहाँ—बन्दीगृह से।" नेखलूदोव ने शीघ्र उत्तर दिया।

"अच्छा क्यों ?" उसने पूछा।

"यहाँ के लोग अपेक्षाकृत अच्छे हैं। वहाँ के समान यहाँ कोई नहीं होगा।"

"वहाँ भी बहुत से अच्छे लोग हैं।" वह बोली।

"मैं मेन्शोवों के विषय में लोगों से मिला था और मुझे आशा है कि वे मुक्त हो जाएँगे।" नेखलूदोव ने कहा।

"भगवान् करे हो ही जाएँ। कितनी अच्छी है वह वृद्धा।" उसने अपनी राय पुनः दोहराते हुए मंद मुस्कान से कहा।

"मैं आज पीतर्सबर्ग जा रहा हूँ। तुम्हारा अभियोग जल्दी ही प्रस्तुत होगा और मुझे आशा है कि दण्ड समाप्त घोषित हो जाएगा।"

"समाप्त हो या न हो अब सब एक ही बराबर है।" वह बोली।

"अब क्यों?"

"खैर।" प्रश्नात्मक त्वरित दृष्टि से नेखलूदोव के नेत्रों में देखती हुई वह बोली।

नेखलूदोव उसके शब्द एवं उसकी दृष्टि का अर्थ समझ गया कि माशलोवा की यह जानने की इच्छा है कि मैं अभी तक अपने निश्चय पर दृढ़ हूँ अथवा मैंने उसके इन्कार को स्वीकार कर लिया है।

"मैं नहीं जानता कि तुम्हारे लिए यह सब बात एक बराबर क्यों है।" वह बोला, "किंतु जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मेरे लिए यह एक बराबर ही है कि चाहे तुम छूटो या न छूटो, मैं तो दोनों ही अवस्थाओं में वही करने को सन्निद्ध हूँ जो कि मैंने तुम से कहा था।" उसने निर्णयात्मक रूप में कहा।

माशलोवा ने अपना सिर उठाया, उसकी काली तिरछी आँखें नेखलूदोव पर और परे स्थिर रहीं तथा उसके मुख पर प्रसन्नता की चमक व्याप्त हो गई। किंतु उसके शब्द कुछ और कहते थे तथा नेत्र कुछ और।

"अच्छा हो कि आप उस बात को न कहें।" वह बोली।

"मैं इसलिए कह रहा हूँ कि जिससे तुम्हें ज्ञात हो जाय।"

"उसके विषय में सब कुछ कहा जा चुका है और अब कहने योग्य कुछ शेष नहीं बचा।" उसने अपनी मुस्कान को बलात् दबाते हुए कहा।

चिकित्सालय के वार्ड से एकाएक शोर उठा तथा किसी बच्चे के रोने की ध्वनि सुनाई दी।

"प्रतीत होता है कि मुझे बुला रहे हैं।" उसने कहा तथा अपने चारों ओर बेचैनी से देखा।

"अच्छा तो नमस्ते।" वह बोला।

माशलोवा ने ऐसा अभिनय किया कि मानों नेखलूदोव के बढ़े हुए हाथ को नहीं देखा हो और वह हाथ मिलाए बिना ही पलट कर उसी चटाई पर त्वरित गति से अपने हार्दिक उल्लास को छिपाने की चेष्टा करती हुई बढ़ गई।

"इसके हृदय में हो क्या रहा है ? यह सोच क्या रही है ? इसे अनुभूति क्या होती है ? क्या यह मेरी परीक्षा लेना चाहती है और क्या यह सचमुच मुझे क्षमा कर सकती है ? क्या यह अपनी अनुभूतियों एवं भावनाओं को कह नहीं सकती अथवा यह कहेगी ही नहीं ? यह पहिले से विनम्र हो गई है अथवा कठोर ?" उसने मन-ही-मन अनेक प्रश्न किए किंतु उत्तर न मिला। उसे केवल इतना ही ज्ञात हुआ कि वह बदल चुकी है तथा उसकी आत्मा में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है और उस परिवर्तन ने मुझे केवल माशलोवा से ही संयुक्त नहीं किया वरन् उस परमपिता परमेश्वर से भी मिला दिया है जिसके कारण कि यह परिवर्तन हो रहा है। तब इस एकत्व ने उसके हृदय में उत्साह एवं आनन्द भर दिया।

माशलोवा वार्ड में लौट आई। उसमें छोटे-छोटे आठ पलंग पड़े थे। आते ही नर्स की आज्ञा पालम करते हुए वह बिस्तर व्यवस्थित करने लगी तथा चद्दर के ऊपर इतनी अधिक झुक गई कि उसका पाँव फिसल गया और वह गिरते-गिरते बच गई।

एक छोटा स्वस्थ लड़का जिसकी गर्दन पर पट्टी बँधी हुई थी उसको फिसलते देख हँस पड़ा। माशलोवा से अपनी हँसी अब न रुक सकी तथा वह जोर से हँस पड़ी। उसकी हँसी में इतना प्रभाव था कि बहुत से अन्य बच्चे भी हँस पड़े और नर्स ने क्रोधित हो उसे बुरा-भला कहा।

"किस बात पर इतनो जोर से हँस रही हो ? क्या तुम इसे भी वही स्थान समझती हो जहाँ कि पहिले रहा करती थीं ? जाओ खाना लेकर आओ !"

माशलोवा चुप हो गई और चीनी के बर्तनों को हाथ में लेकर गंतव्य स्थान पर गई; किंतु उस पट्टी बँधे लड़के को देखकर, जिसके लिए हँसने की मनाही ही थी, वह पुनः हँस पड़ी।

जब भी माशलोवा अकेली होती वह लिफाफे में से फोटो को थोड़ा-थोड़ा निकालकर बार-बार प्रशंसात्मक दृष्टि से देखती; किंतु देखती थी केवल शाम को ही जब

उसकी ड्यूटी समाप्त हो जाती तथा अपने शयन-कक्ष में ही, जिसमें कि नर्स भी रहा करती थी। बज वह अकेली होती भी वह फोटो को लिफाफे से पूरा बाहर निकालती, स्थिर नेत्रों से मुखों एवं वस्त्रों, बरामदे की सीढ़ियों तथा पृष्टस्थ झाड़ियों को ध्यान से देखती। चित्र में ये झाड़ियाँ नेखलूदोव तथा उसकी बुआओं के चेहरों के पीछे पृष्टभूमिका की भाँति काम दे रही थीं। वह इस धुँधले पीले फोटो को विशेष रूप से अपनी सुन्दर यौवनमयी आकृति को, माथे के ऊपर पड़ी घुँघराली लट को एकटक देख रही थी एवं मन-ही-मन प्रशंसा किए बिना न रह पाई। उसे देखने में वह इतनी मग्न थी कि उसे अपनी संगिनी नर्स के कमरे में प्रवेश करने का पता ही नहीं लगा।

"उसने तुम्हें यह क्या दिया है ?" फोटो के ऊपर झुककर अच्छे स्वभाव की मोटी नर्स ने कहा। "यह कौन है ? तुम ?"

"और कौन हो सकता है ?" माशलोवा ने अपनी संगिनी के मुख की ओर मुस्कुराते हुए देखकर कहा।

"और यह वह स्वयं है ?—और यह है उसकी माँ ?"

'नहीं, उसकी बुआ। इस समय तुम मुझे नहीं पहिचान सकतीं न ?"

"बिलकुल नहीं। सारा चेहरा ही बदल गया है। क्यों, दस वर्ष पूर्व का तो होगा यह।"

"वर्षों पुराना नहीं—एक जीवन पुराना।" माशलोवा बोली। और यकायक उसका उत्साह अदृश्य हो गया, मुख उदास हो उठा तथा उसकी भौंहों के मध्य एक गहरी रेखा उभर आई।

"ऐसा क्यों ? तुम्हें जीवन में तो प्रत्येक सुविधा मिली होगी ?"

"सुविधा, सचमुच।" माशलोवा ने नेत्र बन्दकर सिर हिलाते हुए दोहराया, "नरक से भी बुरा !"

"क्यों, यह क्यों होता है ?"

"यह क्यों होता है ! रात्रि के आठ बजे से लेकर सुबह चार बजे तक और प्रति रात्रि वही क्रम !"

"तो स्त्रियाँ इसे त्याग क्यों नहीं देतीं ?"

"यदि वे चाहें तो भी नहीं त्याग सकतीं। किंतु इन बातों से लाभ क्या ?"

माशलोवा ने जोर से कहा, कूदकर उठ खड़ी हुई तथा फोटो को मेज की दरार में पटक अपने क्रोधाश्रुओं कों कठिनता से आँखों में रोकती हुई वह कमरे के बाहर निकल गई तथा द्वार को धड़ाम से बन्द कर दिया।

माशलोवा जब इस फोटो को देखती थी तो इसकी कल्पना में उसे न केवल अपना पुराना स्वरूप ही दिखलाई पड़ता प्रत्युत उसकी कल्पना में उस समय का सुख-स्वप्न भी दिखलाई दे जाता तथा यह भी दिखलाई देता कि नेखलूदोव के साथ अब आनन्द की क्या संभावना है। किंतु उसकी संगिनी के शब्दों ने उसे स्मरण करा दिया कि आज वह क्या है और पहिले क्या थी और उसको अपने उस जीवन के सब भय स्मरण हो आए जिनकी कि वह धूमिल अनुभूति कर चुकी थी तथा उन्हें स्वयं अनुभव करने के लिए साहस उसे कभी नहीं हुआ।

बस, अभी उन समस्त भयावह रात्रियों की स्मृति साफ-साफ उसके सम्मुख आई, विशेषतया वह रात्रि जब सरकस हो रहा था। उस रात वह एक विद्यार्थी की प्रतीक्षा करती रही जिसने उसे खरीद कर ले जाने का वचन दिया था। उसे स्मरण हुआ कि कैसे खुली गर्दन का रेशमी सलूका पहिने हुए, जिस पर मदिरा के धब्बे पड़े थे अपने उलझे हुए बालों में लाल फीता बाँधे, थकान से चूर दुर्बल एवं अर्धमत्त हो मैं सुबह लगभग दो बजे अपने ग्राहकों को बिदा कर जब नाच बन्द हो चुका था पियानो बजाने वाली चकत्तेदार मुँह की पतली-दुबली स्त्री के पियानो के पास आ बैठी। वह स्त्री वायलिन के साथ पियानों बजाती थी। यहाँ बैठकर मैंने अपने दुर्भाग्य को कोसना कैसे आरम्भ किया और किस प्रकार पियानो बजाने वाली ने कहा कि मैं भी अपनी स्थिति कों बड़ी दुखद अनुभव करती हूँ तथा इसे बदलना चाहती हूँ; और किस भाँति एकाएक क्लारा मेरे पास आई तथा उन लोगों ने अपने जीवन-क्रम को बदलने का कैसे निर्णय किया। यह सोचा कि रात्रि समाप्त हो गई है हम सब जाने ही वाली थीं कि गलियारे में मदिरा में मस्त लोगों के स्वर सुनाई दिए। वायलिन बजाने वाली ने वायलिन का सुर छेड़ा और पियानो वाली ने रूस की अत्यानन्दजनक गत की पहली कड़ी बजाई। पसीने से तर, शराब की दुर्गन्ध से परिपूर्ण, सफेद टाई बाँधे तथा फटा कोट पहिने, जिसको कि उसने पहिली कड़ी समाप्त होते ही उतार लिया था, एक ठिगना आदमी खाँसते हुए मेरे पास आया और मुझे पकड़ लिया जबकि दूसरे दाढ़ी वाले मोटे पुरुष ने, जिसने कि ड्रेस कोट पहिन रखा था क्लारा को पकड़

लिया और बहुत देर तक वे नाचते, घूमते, पीते, चीखते रहे...। (ये लोग सीधे नृत्यघर से आरहे थे।) और इसी भाँति अगले वर्ष, फिर दूसरे और तीसरे...। मैं कैसे परिवर्तन ला सकती थी ? और नेखलूदोव था इन सब की जड़।

तथा एकाएक नेखलूदोव के प्रति पूर्व की कटुता उसमें पुनः जाग्रत हो उठी; उसके हृदय में उसे बुरा-भला कहने की, उसकी निंदा करने की इच्छा उत्पन्न हो आई। उसे आज के अवसर को चूक जाने पर पश्चाताप हुआ। आज वह पुनः एक बार दोहरा सकती थी कि मैं तुम्हें जानती हूँ, और मैं अर्पण नहीं करूँगी — अपने शारीरिक लाभ की भाँति आत्मिक लाभ तुम्हें नहीं उठाने दूँगी। और उसकी इच्छा मदिरा पीने की हुई जिससे कि स्वयं के प्रति उत्पन्न करुणा एवं नेखलूदोव को बुरा-भला कहने की अलाभकारी भावना को दबा सके। यदि वह बन्दीगृह में होती तो अपने बचनों पर दृढ़ न रही होती; यहाँ तो उसे छोटे डॉक्टर से बिना माँगे मिल नहीं सकती थी; किंतु छोटे डाक्टर से उसे भय लगता था, क्योंकि वह उसे छेड़ता था और माशलोवा के लिए पुरुषों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध अब अरुचिकर हो गया था। दरवाजे के पास थोड़ी देर बैठे रहकर वह अपने छोटे कमरे में लौट आई तथा अपनी संगिनी के शब्दों की ओर ध्यान न दे वह अपने भ्रष्ट जीवन पर बहुत देर तक रोती रही।

४

पीतर्सबर्ग में नेखलूदोव को चार काम करने थे : माशलोवा का प्रार्थना पत्र सीनेट में देना; फेदोशिया बिरयूकोवा का अभियोग पिटीशन कमेटी को देना था; और वेरा दुखोवा की प्राथनाएँ कि उसके मित्र शुस्तोवा को बन्दीगृह से मुक्त कराना तथा पुलिस कार्यालय जाकर बन्दीगृह में अपने बेटे से मिलने की एक माँ को आज्ञा दिलाना। इन दो प्रार्थनाओं को, जिनके विषय में वेरा दुखोवा ने लिखा था, नेखलूदोव एक काम में गिनता था।

चौथा काम जिसे कि नेखलूदोव करना चाहता था सेक्टेरियनों का, जो कि अपने परिवारों से विलग कर काकेशस को निर्वासित कर दिए गए थे क्योंकि उन्होंने बाईबिल पढ़ी थी तथा उस पर तर्क-वितर्क किया था, अभियोग था। यह उन लोगों का इतना काम नहीं था जितना कि उसका स्वयं का क्योंकि उसने वचन दिया था कि इस केस को यथासंभव सुलझाने का प्रयत्न करूँगा।

मेलिन्कोव से अंतिम बार मिलने के बाद से, विशेषतया गाँव जाने के बाद से नेखलूदोव को अपने समाज से जिसमें कि वह अबतक रहा था तन-मन से घृणा हो गई थी, यद्यपि इस विषय पर उसने कोई प्रस्ताव ठीक से बनाया नहीं था, कि वह समाज जो कि करोड़ों, लाखों पुरुषों के कष्टों को इतनी सावधानी से छिपाता है केवल इसलिए कि थोड़े से मुट्ठीभर लोगों को सुख एवं सुविधा दे सके, कि वे लोग जिनसे कि यह समाज बना है अपने स्वयं के जीवन के न तो कष्ट और न क्रूरताएँ ही देखते हैं और न देख ही सकते हैं। नेखलूदोव सुविधाओं को बुरा माने बिना तथा स्वयं को धिक्कारे बिना अब इस समाज में नहीं टिक पाता। और फिर भी सम्बन्धियों एवं मित्रों तथा उसके स्वयं आदतों के बन्धन उसे वहीं वापिस खींच रहे थे। इसके अतिरिक्त उसकी माशालोवा तथा अन्य दुखियों को सहायता करने की अभिलाषा, जो कि उसकी एकमात्र रुचि थी, उसको इस समाज के व्यक्तियों की सहायता माँगने पर विवश करती। उसे उन व्यक्तियों की सहायता की आवश्यकता थी जिनका कि वह न केवल आदर ही नहीं कर सकता वरन् जो व्यक्ति उसके अन्दर बहुधा क्रोध एवं घृणा भी उत्पन्न कर देते।

जब वह पीतर्सबर्ग आया और भूतपूर्व मन्त्री की पत्नी अपनी मौसी काउन्टेस चर्सकाया के पास ठहरा तो वहाँ वह ऐसे शाही लोगों के मध्य आ गया जो कि अब उसके लिए अपरिचित हो गए थे। इससे उसे सुख नहीं हुआ किंतु उनसे बचने की कोई सम्भावना भी नहीं थी। मौसी के यहाँ न ठहर कर किसी होटल में ठहरने का अर्थ होता—मौसी को क्रुद्ध कर देना, और इसके अतिरिक्त उसकी मौसी की बड़े महत्वपूर्ण व्यक्तियों से जान-पहिचान थी तथा जिन कार्यों को उसे करना था उनमें वह बहुत लाभप्रद हो सकती थी।

"यह तुम्हारे विषय में क्या बातें सुनती हूँ ? सब भाँति की विचित्र बातें।" काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना चार्सकाया ने उसको आते ही काफी देते हुए कहा। "तुम तो आजकल हावर्ड बन रहे हो, अपराधियों की सहायता कर रहे हो, बन्दी-गृहों का चक्कर लगाते रहते हो, और सुधार करते फिरते हो।"

"ओह नहीं ! ऐसा तो नहीं है।"

"है क्यों नहीं ? यह तो अच्छी बात है, किंतु इससे कोई प्रेम-कथा संबन्धित प्रतीत होती है। मुझे बतलाओ कि वह क्या है।"

नेखलूदोव ने अपनी मौसी को माशालोवा के साथ अपने सम्बन्धों का कच्चा चट्ठा सुना दिया।

"हाँ! हाँ! मुझे याद आ गया तुम्हारी बेचारी माँ मुझे बता चुकी है। यह तो उस समय की बात है जब तुम उन वृद्धाओं के यहाँ ठहरे हुए थे। मेरा विश्वास था कि वे तुम्हारा विवाह अपनी रक्षिता के साथ करना चाहती थीं। (काउन्टेस कातरीनी इवानोव्ना सदा से नेखलूदोव की बुआओं से घृणा करती थी।) "तो वह है! क्या वह अब भी सुन्दर लगती है?"

कातरीना इवानोव्ना साठ वर्ष की हट्टी-कट्टी चुस्त, शक्तिवान एवं बातूनी स्त्री थी। वह लम्बी तथा बहुत तगड़ी थी तथा उसके काली मूँछे दिखलाई देती थीं। नेखलूदोव को वह बहुत प्रिय लगती थी तथा जब वह बच्चा ही था तब भी वह उसकी शक्ति एवं प्रमोद से प्रभावित था।

"नहीं! वह तो सब समाप्त हो गया। मैं केवल उसकी सहायता करना चाहता हूँ क्योंकि उसको निर्दोष फँसाया गया है। मैं उसके तथा उसके वर्तमान दुर्भाग्य का कारण हूँ। उसके लिए यथाशक्ति सहायता करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

"किंतु, यह क्या सुना है मैंने कि तुम उससे विवाह करना चाहते हो?"

कातरीना इवनोव्ना ने अपने भतीजे की तरफ भौंहें उठाकर आश्चर्य में नेत्र नीचे करके देखा। एकाएक उसके भाव में परिवर्तन आ गया तथा वह प्रसन्न वदन हो बोली:

"खैर वह तुमसे अधिक बुद्धिमान है। मेरे प्यारे बच्चे, तुम तो बुद्धू हो। और तुमने उससे विवाह कर भी लिया होता?"

"निश्चित ही।"

"यह जानते हुए भी कि वह पहले क्या रह चुकी है?"

"हाँ निश्चित ही, क्योंकि उसका मूल कारण मैं ही हूँ।"

"तुम तो निरे मूर्ख हो।" उसकी मौसी ने अपनी मुस्कान को दबाते हुए कहा" परले सिरे के मूर्ख; किन्तु तुम्हारी परले सिरे की इस निरी मूर्खता के ही कारण मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।" उसने शब्द को बहुत पसंद करते हुए दोहराया—उसे लगता था कि इस शब्द से मेरे भतीजे की नैतिक अवस्था का ठीक

व्यक्तिकरण हो रहा है। "जानते हो— कितना स्वर्ण अवसर है ! एलाइन का घर बहुत सुन्दर है—मेगदालेन होम ! मैं वहाँ एक बार गई थी। वे तो बेहद तंग करते हैं। उसके बाद मैं धोते-धोते पागल हो गई। किंतु एलाइन तो तन-मन से उस पर अनुरक्त है इसलिए हम उसे वहाँ रख देंगे—मेरा तात्पर्य तुम्हारे पास से है। यदि कोई उसे सुधार सकती है तो एक ही एलाइन है।"

"किंतु उसे तो दासवृत्ति एवं निर्वासन का दण्ड मिल चुका है। मैं तो यहाँ अपील करने के लिए आया हूँ। यही एक प्रार्थना मेरी आपसे भी है।"

"मेरे प्यारे ! इस केस की तुम अपील कहाँ करते हो ?"

"सीनेट में ?"

"यह सीनेट में ! हाँ मेरा प्रिय भाई (चचा का लड़का) लियो सीनेट में है किंतु वह तो राजदूतावास में है और मैं नहीं जानती कि सचमुच कौन-कौन इस काम को करता है। वह सब जर्मनी के किसी-न-किसी भाग के निवासी हैं : डे, फे, गे—सबके ऐसे ही नाम हैं या फिर इवानेन्कोस, सीमोनेन्कोस, निकीतेन्कोस अथवा इवानोव्स, सेमियोनोव्स, निकितिन्स—यही सब मिलता है उनमें। वे दूसरे ही संसार के निवासी हैं। खैर, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता मैं तुम्हारे मौसाजी से कह दूँगी; वह उनसे परिचित हैं। वह सब ही लोगों को जानते हैं। मैं उनसे कह तो दूँगी, किंतु समझाना तुम्हें पड़ेगा—मेरी बात तो उनकी समझ में कभी आती ही नहीं। मैं कुछ भी कहूँ वह सदा ऐसे ही बन जाते हैं कि मानों उनकी समझ में खाक नहीं आया हो। यह तो निश्चित है कि हरएक समझ जाता है किंतु यदि कोई नहीं समझता है तो बस वे ही।"

इसी समय नेकर पहिने एक वर्दीधारी नौकर चाँदी की तश्तरी में एक पत्र लेकर उपस्थित हुआ।

"लो। स्वयं एलाइन का पत्र है। तुम्हें कायसेवेतेर की बातें सुनने का अवसर प्राप्त होगा।"

"यह कायसेवेतेर कौन है ?"

"कायसेवेतेर ? शाम को आना, तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि वह कौन है। इस-इस भाँति बातें करता है कि कठोर-से-कठोर हृदय अपराधी भी घुटनों पर झुक जाता है तथा अपने पापों का प्रायश्चित कर रोने लगता है।"

काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना उस मत की विश्वास पात्र अनुचरी थी कि जिसमें बतलाया गया है कि ईसाइयों की किए हुए पापों से मुक्ति हो सकती है। यह बात दूसरी है कि यह मत कहाँ तक ठीक है अथवा काउन्टेस का चरित्र उससे कहाँ तक मेल खाता था। वह उन सभाओं में जाती जहाँ उस समय की पद्धति के अनुसार इस धर्म के प्रवचन होते और "विश्वासनीयों" को अपने घर पर एकत्रित करती। यद्यपि इस धर्म में सब प्रकार के उत्सव, मूर्तियाँ तथा धर्म-संस्कार वर्जित थे किंतु कातरीना इवानोव्ना के प्रत्येक प्रकोष्ठ में एवं दीवालों पर उसके अपने पलङ्गों के ऊपर मूर्तियाँ थीं और वह वे सब कार्य करती थीं जो कि गिरिजाघर में विधानानुसार होना चाहिए। उसे इन दोनों में से किसी में कोई विरोध नहीं प्रतीत होता था।

"यदि तुम्हारी मेग्दासन एक बार उसकी बातें सुनले तो वह निश्चित ही बदल जाय।" काउन्टेस बोली "आज रात्रि घर पर ही ठहरो; तुम उसका प्रवचन सुन लोगे। वह अत्यन्त विचित्र व्यक्ति है।"

"मौसीजी! इसमें मुझे रुचि नहीं आती।"

"किन्तु मैं बतलाती हूँ कि यह रुचिकर रहेगा और तुम्हें घर आना ही चाहिए। अन्य क्या कार्य है मुझसे? हाँ, सब कह डालो।"

"दूसरा किले में है।"

"किले में? उसके लिए तो मैं एक पत्र बैरन क्रायग्समूथ के नाम दे सकती हूँ। वह बहुत सिद्ध व्यक्ति है। लेकिन ओह! तुम तो उससे परिचित हो वह तुम्हारे पिताजी का मित्र था। आजकल उसे *ब्रह्मबाद की ओर बहुत रुचि उत्पन्न हो गई है। किंतु इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, वह आदमी भला है। वहाँ तुम्हें क्या काम है?"

"मैं चाहता हूँ कि वहाँ बन्दीगृह में पड़े हुए पुत्र से उसकी माता मिल सके। किंतु मुझे सूचना मिली थी कि यह काम क्रायग्समूथ से नहीं वरन् चेरवीआन्स्की से हो सकता है।"

"मुझे चेरवीआन्स्की पसन्द नहीं, वह मेरीयेते का पति है, हम उससे कह

---

* इस बात में विश्वास करना कि मृतकों की आत्मा मनुष्यों को दिखलाई देती हैं तथा उनसे बातें करती हैं।

सकते हैं। मेरी बात वह नहीं टालेगी। वह बहुत अच्छी स्त्री है।"

"मुझे एक स्त्री का पिटीशन भी प्रस्तुत करना है। वह बन्दीगृह में है लेकिन उसका अपराध उसे नहीं बतलाया गया है।"

"कोई भय नहीं; वह खूब जानती है। वह अच्छी भाँति जानती है और यह अच्छा है कि इन स्त्रियों के बाल काटकर बन्दी कर लिया जाता है।"

"अच्छा है या बुरा यह मैं नहीं जानता। मैं तो इतना जानता हूँ कि उन्हें कष्ट होता है। आप तो ईसाई हैं और बाइबिल के सिद्धान्तों में विश्वास करती हैं, फिर भी इतनी निमम हैं!"

"उससे और इनसे क्या सम्बन्ध? बाइबिल बाइबिल है और बुरी वस्तु बुरी। यदि मैं निहिलिस्त लोगों के प्रति विशेषतया इन बालकटी स्त्रियों के प्रति, जिनसे मुझे घृणा है, प्रेम का ढोंग रचूँ तो यह और भी भद्दी बात हो जाएगी।"

"आपको उनसे घृणा क्यों है?"

"पहिली मार्च* की घटना के पश्चात् भी पूछते हो क्यों?"

"पहिली मार्च की घटना में उनका कोई हाथ नहीं था।"

"कोई चिंता नहीं। इन लोगों को दालभात में मूसलचन्द नहीं बनना चाहिए। यह स्त्रियों का काम नहीं है।"

"फिर भी आपका विचार है कि मेरियेते काम कर सकती है।"

"मेरियेते? मेरियेते तो मेरियेते है और यह लोग भगवान ही जाने क्या हैं। ये तो सभी को उपदेश देना चाहती हैं।"

"उपदेश देना नहीं चाहतीं प्राणियों की सहायता मात्र करना चाहती हैं।"

"इनके बिना भी लोग जानते हैं कि किसकी सहायता करनी चाहिए, किसकी नहीं।"

"किंतु किसान बहुत कष्टों में हैं। मैं अभी गाँव से लौटा हूँ। क्या यह आवश्यक है कि किसान लोग शक्तिभर परिश्रम करें और उन्हें खाने को भी पर्याप्त कभी न मिले तथा हम लोग अत्यन्त विलासी जीवन व्यतीत करते रहें?" अपनी मौसी के सरल स्वभाव से प्रभावित हो नेखलूदोव अपने हृदय की समस्त बातें कहने लगा।

---

* १ मार्च १८८१ को सम्राट् अलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या की गई थी।

"तो तुम्हारा क्या अभिप्राय है ? मैं काम करूँ और खाऊँ कुछ नहीं ?"

"नहीं, मैं यह नहीं चाहता कि आप खाएँ कुछ नहीं।" नेखलूदोव मुस्कुरा उठा, "मैं तो बस यही चाहता हूँ कि सब काम करें और सब खाएँ।"

उसकी मौसी ने पुनः अपनी भौंहें चढ़ाईं, नेत्र नीचे किए तथा उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"मेरे प्यारे ! तुम्हारा भविष्य बिगड़ जाएगा।" वह बोली।

"किंतु क्यों ?"

इतने में सेनापति, काउन्टेसचार्सकाया का लम्बा, वृषभ-स्कन्धपति भूतपूर्व मन्त्री प्रकोष्ठ में प्रविष्ट हुआ।

"अहा, दिमीत्री प्रसन्न तो हो ?" उसने हाल ही में शेव किया हुआ गाल नेखलूदोव की ओर चुम्बन देने के लिए किया, "तुम कब आए ?" और उसने अपनी पत्नी के माथे का चुम्बन लिया।

"ओह, यह तो अद्वितीय है" काउन्टेस ने अपने पति की ओर मुड़कर कहा "यह चाहता है कि मैं जाकर कपड़े धोऊँ और आलुओं को खाकर जीवन-निर्वाह करूँ। यह परले सिरे का मूर्ख है, खैर कोई बात नहीं जैसा यह कहे कर दीजिए। निरा बुद्धू है ;" वह बोली "आपने सुना ? कामेन्स्की की माँ की दशा इतनी बिगड़ गई है कि उसके बचने की आशा नहीं है।" वह अपने पति से बोली, "आप वहाँ जाकर देख आइए।"

"हाँ ! यह तो दुःखद बात है।" उसके पति ने कहा।

"जाओ ! उनके साथ जाकर बातें करो। जबतक मैं कुछ पत्र लिख लूँ।"

नेखलूदोव ड्राइङ्गरूम से आगे बढ़ा ही होगा कि मौसी ने उसे फिर बुलाया।

"तो क्या मैं मेरियेते को पत्र लिख दूँ ?"

"हाँ, मौसी अवश्य।"

"मैं जगह छोड़ दूँगी। उसमें बालकटी स्त्री के प्रति जो तुम चाहो लिख देना। वह अपने पति को उसके आज्ञा-पत्र दे देगी और वह काम कर देगा। मुझे खोटी

मत समझना, यह तुम्हारी उपजीवी स्त्रियाँ बड़ी खराब होती हैं लेकिन मैं उनका बुरा नहीं चाहती। अच्छा जाओ किंतु सांयकाल कायसेवेते का भाषण सुनने अवश्य लौट आना और यहाँ कुछ प्रार्थनाएँ भी होंगी। यदि तुम बचने की चेष्टा न करोगे तो इससे तुम्हारी आत्मा का बहुत कल्याण होगा। मैं जानती हूँ कि बेचारी तुम्हारी माँ और तुम सब इन विषयों में बहुत पिछड़े रहे हो। अच्छा, इस समय के लिए नमस्ते।"

१५

काउन्ट इवान निखालोविच मंत्री रह चुका था तथा अत्यन्त दृढ़ विश्वासी व्यक्ति था।

वह इस धारणा में दृढ़ विश्वास रखता था कि जैसे कि पक्षियों का स्वाभाविक भोजन कीड़े-मकोड़े है, उनके वस्त्र पङ्ख तथा बाल हैं, एवं जिस भाँति उड़ना उनके लिए स्वाभाविक है उसी भाँति मेरे लिए अत्यधिक वेतन भोगी पाक विशेषज्ञों द्वारा निर्मित सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ भोजन आवश्यक है तथा आवश्यक है अत्यन्त सुविधाजनक एवं मूल्यवान वस्त्रों का पहिनना और सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वाधिक क्षिप्रवेग से चलने वाले अश्वों से जुती हुई गाड़ियों में सैर करना; और इसलिए ये सब वस्तुएँ समय पर मुझे तैयार मिलनी चाहिए। इसके अतिरिक्त काउन्ट इवान मिखायलोविच का विचार था कि राज्यकोष से जिस प्रकार भी जितना भी अधिक से अधिक धन, जिसमें कि हीरक जटित तमगे या अन्य वस्तुएँ भी सम्मिलित हैं। प्राप्त किया जा सके उतना प्राप्त करना और राज्य-परिवार के स्त्री अथवा पुरुष सदस्यों से जितनी अधिक बार मिलने की आज्ञाएँ प्राप्त हों तथा जितनी अधिक बार वह उनसे मिल सके उतना ही सुन्दर रहता है।

इन सिद्धान्तों की तुलना में काउन्ट इवान मिखायलोविच अन्य समस्त बातों को महत्त्वहीन एवं अरुचिकर समझता था। बाकी सब बातें जैसी थी वैसी रही आतीं अथवा बिल्कुल विपरीत हो जातीं ! इससे उसके लिए कोई अन्तर नहीं पड़ता था। काउन्ट इवान मिखायलोविच अपने इस दृष्टिकोण के अनुसार गत चालीस वर्षों से रह रहा था तथा उनके अनुरूप ही कार्य करता था तथा इस कालावधि के अन्त में वह केन्द्रीय शासन के मंत्रिपद पर प्रतिष्ठित हो गया।

इस पद तक उन्नति करने में सहायक उसके विशेष गुण थे : प्रथमतः,

लेखपत्रों एवं कानूनों के अर्थ समझने की तथा राज्य पत्रको को सुबोध ढंग से, यद्यपि सुस्ती से, लिखने की एवं हिज्जे करने की उसकी क्षमता; द्वितीयतः, उसकी भव्य मुखाकृति जिसके कारण आवश्यकतानुसार कभी वह न केवल अत्यधिक गर्वित ही लगता वरन् अप्राप्य एवं ऐश्वर्यशाली भी लगने लगता तो कभी वह अनीचता एवं लगभग अत्यधिक उत्साह से अति अनुरोधपूर्ण चाटुकारिता करने लग जाता; तथा तृतीयतः व्यक्तिगत अथवा शासन व्यवस्था सम्वन्धी नैतिकता के नियमों अथवा सामान्य सिद्धान्तों की अनुपस्थिति—इस कारण समय की आवश्यकतानुसार उसे किसी से सम्मत अथवा अम्समत होने की संभावना हो जाती। इस भाँति कार्य करते समय केवल यह प्रयत्न करता कि मेरी मुखाकृति सुसंस्कृत बनी रहे तथा मैं किसी को असंगत अथवा विरोधी न प्रतात होऊँ। उसको इससे कोई सम्बन्ध नहीं था कि मेरे कार्यों में नैतिकता है अथवा नहीं, तथा मेरे कार्यों से रूसी साम्राज्य का अथवा समस्त संसार का सर्वाधिक कल्याण अथवा हानि होने वाली है।

जब वह मंत्री हो गया तब न केवल उसके आश्रित जनों (ऐसों की संख्या बहुत बड़ा थी) एवं उससे सम्बन्धित व्यक्तियों को ही वरन् अपरिचितों एवं स्वयं उसे भी यह विश्वास हो गया कि वह एक अत्यन्त कुशल राजनीतिज्ञ है। किंतु कुछ समय पश्चात् जव वह कुछ न कर सका तथा [कोई व्याख्या भी न कर पाया और जबकि जीवन के लिए संघर्ष के सिद्धान्तानुसार उसके सदृश्य भव्य एवं असैद्धांतिक अधिकारियों ने लेख-पत्रों को लिखना तथा समझना सीख, उसको हटाकर स्वयं अपना स्थान बना लिया तब प्रत्येक व्यक्ति वह जान गया कि वह न केवल कुशलता से कोसों दूर ही है वरन् वास्तव में वह तो ऐसा तुच्छ, गँवार एवं आत्मविश्वस्त व्यक्ति है जिसके विचार छोटे-से-छोटे सनातनी समाचार पत्रों के सुन्दर लेखों के स्तर के भी नहीं हैं। यह स्पष्ट हो गया कि उसमें कोई ऐसी वस्तु नहीं थी जो उसे उन अन्य गँवार तथा आत्मविश्वस्त अधिकारियों से ऊँचा सिद्ध करती जिन्होंने कि उसे कुहनिया कर बाहर निकाल फेंका था, और उसे स्वयं यह ज्ञात हो गया। किंतु इससे उसकी यह आस्था तनिक भी नहीं हिली कि उसे प्रतिवर्ष राज्य-कोष से ढेरों धन प्राप्त करना है तथा पहिनने के वस्त्रों की सज्जा करनी है। उसकी यह आस्था इतनी दृढ़ थी कि किसी को साहस नहीं होता कि वह इन वस्तुओं के लिए उसे इन्कार कर दे और उसे प्रति वर्ष दसियों हजार रूबल मिलते अंशतः पेंशन के रूपमें, अंशतः राजकीय संस्था

के सदस्य तथा सब प्रकार की कमेटियों एवं काउन्सिलों के सभापति होने के नाते। इसके अतिरिक्त अपने कंधों तथा पाजामों पर सब प्रकार की नई डोरियाँ सीने का एवं रिबन तथा पालिसंयुक्त स्टारों को अपनी वेश-भूषा में सज्जित करने का उसे अधिकार था—जिसका कि वह बहुत सम्मान करता था। इसके परिणाम स्वरूप काउन्ट इवान मिखायलोविच का बहुत उच्च लोगों से परिचय था।

काउन्ट इवान मिखायलोविच नेखलूदोव की बातें इस भाँति सुन रहा था जिस भाँति कि वह अपने विभाग के मंत्री से रिपोर्ट सुनने का अभ्यस्त था तथा सुनकर बोला कि मैं दो पत्र लिख दूँगा, उनमे एक अपील विभागीय सीनेटर वूल्फ को।

"उसके विषय में दुनिया भर की बातें कही जाती हैं किंतु कुछ भी हो वह पूर्ण सज्जन है।" वह बोला, "उस पर मेरे बहुत अहसानात है और वह जो कुछ भी कर सकता है, करेगा।"

काउन्ट इवान मिखायलोविच ने जो दूसरा पत्र नेखलूदोव को दिया वह पिटीशन कमेटी के एक प्रभावशाली सदस्य को लिखा था। जिस ढंग से नेखलूदोव ने फेदोशिया बिरयूकोवा की कथा कही उसमें उसे बड़ा आनन्द आया। नेखलूदोव के यह कहने पर कि इस विषय में मैं साम्राज्ञी को पत्र लिखना चाहता हूँ काउन्ट ने उत्तर दिया कि यह कथा अत्यन्त हृदय-द्रावक है और यदि कोई अवसर प्राप्त हो गया तो यह उनको सुनाई जा सकती है किंतु ऐसा कोई वचन नहीं दे सकता हूँ। पिटीशन को दाखिल कर दो। उसने सोचा कि यदि पिटीशन कमेटी वृहस्पतिवार को होती है तथा कोई अवसर प्राप्त हुआ तो मैं इसे साम्रज्ञी को सुना दूँगा।

इन दोनों पत्रों को प्राप्त कर तथा अपनी मौसी से मेरियेते के लिए पत्र ले नेखलूदोव तुरन्त ही विभिन्न स्थानों पर मिलने चल दिया।

पहिले वह मेरियेते के पास गया। वह उसे तब से जानता था जब कि वह पन्द्रह सोलह वर्ष की ही थी। वह थी तो शाही परिवार की किंतु धनिक नहीं तथा उसने एक ऐसे व्यक्ति से विवाह किया था जिसके विषय में उसने बहुत बुराइयाँ सुन रखी थीं तथा वह अपना भविष्य बना रहा था। जो कुछ भी उसने सुना था उसमें सबसे प्रमुख बात यह थी कि वह उन सहस्रों हजारों राजनैतिक

बंदियों पर तनिक भी दया न दिखलाता था जिनको तंग करने का उसका अधिकारिक कर्तव्य था। नेखलूदोव को सदैव की भाँति आज भी वह असह्य लगा कि संत्रस्त व्यक्तियों की सहायता करने के लिए मुझे त्रासकों के पक्ष में इस रूप में खड़ा होना पड़ता है कि उनके सामने प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करूँ मानों कि इस भाँति मैं उनकी क्रूरताओं का अनुमोदन करता हूँ—ऐसी क्रूरताओं का जो कि उनके अभ्यास में आ चुकी हैं और किंचित जिनके विषय में वे त्रासक स्वयं अनभिज्ञ हैं—तथा उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वे अपनी क्रूरताओं में तनिक सी कमी कर दें, कम-से-कम कुछ व्यक्तियों पर तो तरस खाएँ ही खाएँ। ऐसी परिस्थितियों में उसके हृदय में अन्तर्द्वन्द एवं असंतोष जाग्रत हो उठता और वह भ्रम में पड़ जाता कि मुझे अनुग्रह के लिए प्रार्थना करनी चाहिए अथवा नहीं तथा सदैव ही यही निश्चय करता कि करनी चाहिए। जिन व्यक्तियों के प्रति वह सोचता कि अब इनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है किंतु जो अभी तक उसे अपनों में से ही एक समझते थे उन लोगों के मध्य अपनी स्थिति गलत समझने के अतिरिक्त भी उसे अनुभव हुआ कि मैं उसी पूर्व अभ्यस्त चक्रमार्ग में पड़ गया हूँ तथा अपनी आत्मा की आवाज के उपरान्त भी मैंने उन व्यक्तियों के मध्य प्रचलित विवेकहीन एवं अनैतिक ढङ्ग के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया है। जब वह अपनी मौसी के यहाँ पहुँचा और उसकी अति गम्भीर बातें उपोहासास्पद स्वर में उड़ा दी गईं तब ही उसे यह अनुभव हो गया।

बहुत काल के पश्चात् वह पीतर्सबर्ग पहुँचा था तथा उस पर वहाँ के वायुमंडल का प्रभाव पड़ा—शरीर में बल-वृद्धि एवं नैतिकता में ह्रास।

प्रत्येक वस्तु इतनी स्वच्छ, सुविधाजनक एवं सुव्यवस्थित थी तथा व्यक्ति नैतिक विषयों में इतने सहनशील थे कि जीवन अत्यन्त सुगम हो गया था।

एक सुन्दर, स्वच्छ एवं विनम्र गाड़ीवान उसको अपनी बग्घी में बैठाल कर एक सुन्दर, स्वच्छ एवं विनम्र पुलिसमैन के आगे से निकला तथा पानी से स्वच्छ, सुन्दर, धुली सड़कों पर होता हुआ, सुन्दर, स्वच्छ मकानों को पार कर उस मकान पर पहुँचा जिसमें मेरियेते रहती थी।

सिंहद्वार पर विलायती साजों से सुसज्जित विलायती घोड़ों का एक जोड़ा खड़ा था तथा पोशाक में विलायती आकृति का एक कोचवान, जिसके मुख

पर आधे गालों तक गलमुच्छे थे, गर्व से कोड़ा पकड़े कोचबक्स पर बैठा था।

आश्चर्यजनक स्वच्छ लिवास पहिने द्वारपाल ने हॉल का द्वार खोला, जहाँ पर कि उससे भी अधिक स्वच्छ लिवास में वर्दीधारी नौकर फीते लगाए खड़ा था, वर्दीधारी नौकर के सुशोभित गलमुच्छे कंघे से संवारे हुए थे उसके साथ ही बिल्कुल नई लिवास में एक चपरासी खड़ा हुआ था।

"जनरल साहब नहीं मिल सकते और न श्रीमतीजी ही। वह अभी बग्घी पर सैर करने जाने वाली हैं।"

नेखलूदोव ने कातरीना इवानोव्ना का पत्र निकाला तथा दर्शक-पुस्तिका वाली मेज पर जाकर अपने कार्ड पर लिखने लगा कि मुझे दुख है कि मैं आप दोनों में से किसी के दर्शन नहीं कर सका। तब वर्दीधारी नौकर सीढ़ियों की ओर गया, द्वारपाल बाहर जाकर कोचवान से जोर से बोला तथा चपरासी अपनी दोनों बाँहों को बगल से सटाकर खड़ा हो गया। वह सीढ़ियों पर से तेजी से उतरती पतली-दुबली-ठिगनी महिला को देख रहा था जिसकी चाल उसके ऐश्वर्य के रत्ती भर भी अनुरूप नहीं थी।

मेरियेते काली लिवास तथा बिना बाँहों का लबादा एवं परदार विशाल हैट पहिने हुए थी, उसके हाथों में काले दस्ताने थे। उसके मुख पर बुरका था।

नेखलूदोव को देखते ही उसने अपने अत्यन्त सुन्दर मुख पर से बुरका हटाया तथा अपने प्रभावपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि में देखा।

"आह ! प्रिन्स दिमीत्री इवानोविच !" वह प्रसन्न कोमल स्वर में बोली, "मुझे बतलाया तो होता..."

"क्या ! आपको मेरा नाम भी स्मरण है ?"

"बात तो यही है। अरे ! मेरी बहिन और मैं दोनों ही आपसे प्रेम करते थे।" उसने फ्रांसीसा भाषा में कहा "किंतु, प्रिय ! आपमें तो बहुत परिवर्तन आ गया है...ओह ! कितने दुख की बात है कि मुझे बाहर जाना है। आइए ऊपर चलें।" वह बोली और हिचकिचाती हुई रुक गई। तब घड़ी की ओर देख कर वह बोली "नहीं मैं रुक नहीं सकती। मैं कामेन्स्की के यहाँ जा रही हूँ वहाँ मुझे अंत्येष्ठि सम्बन्धी प्रार्थना में सम्मिलित होना है। बेचारी माँ अत्यन्त दुखी है।"

"यह कौन से कामेन्स्की ?"

"क्या आपने नहीं सुना ? उसके पुत्र की द्वन्द में मृत्यु हो गई। वह पोजन लड़ा था। इकलौता पुत्र था। बहुत बुरा हुआ ! बेचारी माँ अत्यन्त दुखित है।"

"जी हाँ, कुछ-कुछ मैंने भी सुना था।"

"नहीं ! मुझे जाना ही पड़ेगा। सुन्दर हो कि आप आज रात्रि को अथवा कल पुनः कष्ट करें।" कह कर वह त्वरित वेग से अधर से चलती हुई द्वार पर गई।

"मैं आज रात्रि को तो नहीं आ सकता।" वह उसके पीछे चलता हुआ बोला " किंतु मुझे आपसे एक प्रार्थना करनी है।" और उसने द्वार के समीप आती हुई कुम्मैत घोड़ों की जोड़ी की ओर देखा।

"यह क्या है ?"

"यह आपके लिए मौसीजी का पत्र है।" कहते हुए नेखलूदोव ने विशाल मुकुट-युक्त पतला लिफाला उसे दिया "इससे आप सब कुछ जान जाएँगी।"

"मैं जानती हूँ काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना सोचती हैं कि मैं अपने पति पर, उनके कार्य व्यापार में, प्रभाव डाल सकती हूँ। लेकिन यह उनकी भूल है। मैं न तो हस्तक्षेप करती ही हूँ और न करना ही चाहती हूँ। किंतु फिर भी काउन्टेस तथा आपके लिए मैं अपना नियम तोड़ सकती हूँ। किसके विषय में है ?" व्यर्थ ही अपते दस्ताने वाले हाथों से अपनी जेबें टटोलते हुए वह बोली।

"किले में एक लड़की बन्दी है तथा वह बेचारी अस्वस्थ एवं निरपराध है।

"क्या नाम है उसका ?"

"शुस्तोवा—लीदिया शुस्तोवा ! पत्र में लिखा हुआ है।"

"बहुत ठीक; मुझसे जो हो सकेगा करूँगी।" वह बोली और अपनी कोमल बिछावनयुक्त खुली बग्घी में धीरे से उछल कर बैठ गई। बग्घी के पालिश युक्त छींटे बचाने के मडगार्ड धूप में चमकने लगे। युवती ने अपना छोटा छाता खोल लिया। वर्दीधारी नौकर ने कोचबक्स पर चढ़कर कोचवान की पुस्तिका में

उसे जाने के किए आज्ञा स्वरूप हस्ताक्षर किए। बग्घी चली किंतु तत्क्षण ही युवती ने कोचवान को अपने छाते से स्पर्श किया और वे पतली टाँगों वाले सुन्दर कुम्मैत घोड़े लगामों से कसी अपनी सुन्दर ग्रीवाओं से मेहराब बनाते हुए तथा पग-पग बढ़ते हुए रुक गए।

'किंतु आप आएँ अवश्य, कृपया निःस्वार्थ भाव से।" तथा उसने मुस्कान सहित नेखलूदोव की ओर देखा जिसके बल से वह भलीभाँति परिचित थी; तथा मानो कि नाटक समाप्त हो गया और वह पर्दा खींच रही हो, उसने अपने मुख पर पुनः बुरका डाल लिया। "अच्छा तो।" वह बोली तथा पुनः उसने कोचवान को छाते से स्पर्श किया।

नेखलूदोव ने अपना टोप उठाकर उसे अभिवादन किया तथा अतिकुलीन अश्व नाक से सीधा स्वर करते, अपनी टाँगों से पत्थर पर टप-टपाटप करते हुए आगे बढ़ दिए एवं अपने रबड़ के नए टायरों पर बग्घी यदाकदा ऊँची-नीची सड़क पर झटके खाती त्वरितगति से फिसलती हुई चल पड़ी।

१६

मेरियेते तथा अपने मध्य मुस्कान का स्मरण कर नेखलूदोव ने अपना सिर हिलाया।

"यदि मैं इस जीवन में पुनः प्रवेश कर गया तो फिर इसमें से निकलने का अवसर कठिनाई से ही प्राप्त होगा।" उसने उस असम्बद्धता एवं शंका को अनुभव करते हुए विचार किया जो कि उसे ऐसे अवसरों पर सदैव अनुभव होने लगती जब कि उसे उन व्यक्तियों का अनुग्रह लेने को बाध्य होना पड़ता जिनका कि वह आदर नहीं करता था।

यह विचार कर, कि अब कहाँ जाना उपयुक्त रहेगा ताकि असफल न होना पड़े, नेखलूदोव सीनेट चल दिया। वहाँ उसे कार्यालय के एक विशाल कक्ष में पहुँचा दिया गया जहाँ कि अत्यन्त स्वच्छ वस्त्रों में सुसज्जित अनेकों अत्यन्त विनम्र कार्यकर्त्ता बैठे हुए थे।

कार्यकर्त्ताओं ने नेखलूदोव को बतलाया कि माशलोवा का पिटीशन प्राप्त हो चुका है तथा विचार एवं टिप्पणी हेतु उन्हीं सीनेटर वूल्फ महोदय के पास भेजा जा चुका है जिनके लिए कि आप अपने मौसाजी का पत्र लेकर आए है।

"इस सप्ताह सीनेट की एक बैठक होने वाली है।" नेखलूदोव से एक कार्यकर्त्ता बोला, "किंतु यदि विशेष प्रार्थना न की गई तो माशलोवा का अभियोग इस बैठक के सम्मुख किंचित प्रस्तुत नहीं हो पाएगा तब फिर यह संभवतया बुधवार को ही जाएगा।"

जबतक अभियोग की जाँच-पड़ताल होती रही, नेखलूदोव वहीं कार्यालय में ही प्रतीक्षा करता रहा। सीनेट कार्यालय में जहाँ-तहाँ सब स्थानों पर उसी द्वन्दयुद्ध की बातें हो रही थीं। उसको इस बात की विशद जानकारी हो गई कि नवयुवक कामेन्स्की की किस भाँति मृत्यु हुई। उसे यहाँ आकर ही इस गाथा के सम्पूर्ण तथ्यों की जानकारी हुई जो घटना कि पीतर्सबर्ग में सर्वत्र चर्चा की केन्द्र थी। कथा इस प्रकार है। कुछ अधिकारी एक पान्थागार में घोंघे खा रहे थे तथा सदैव की भाँति मदिरा का अत्यधिक सेवन कर रहे थे कि उनमें से किसी एक ने कामेन्स्की के रेजीमेन्ट के लिए कुछ अपशब्द कह दिए। कामेन्स्की ने कहा कि तू झूँठा है। उसने कामेन्स्की को ठोकर मार दी। अगले दिन उनमें युद्ध हुआ, कामेन्स्की के पेट में चोट आई तथा दो घण्टे पश्चात् वह मर गया। हत्यारा तथा उसका समर्थक बन्दी कर लिए गए किंतु कहा यह जा रहा था कि यद्यपि सेना विभाग में वे बन्दी अवश्य है किंतु फिर भी दो तीन सप्ताह में ही छूट जाएँगे।

सीनेट से नेखलूदोव ने बग्घी की तथा पिटीशन कमेटी के प्रभावशाली सदस्य बैरन वोरीबीओब से मिलने चल दिया। बैरन राज्य के एक भव्य प्रासाद में रहता था। द्वारपाल ने नेखलूदोव को कड़े स्वर में बतलाया कि बैरन महोदय से भेंट-दिवस को ही भेंट हो सकती है; आज के दिन वह सम्राट् के पास गए हुए हैं तथा कल उन्हें पुनः उनके सम्मुख एक रिपोर्ट प्रस्तुत करनी है। नेखलूदोव ने अपने मौसा का पत्र द्वारपाल को दे दिया तथा सीनेटर वूल्फ से मिलने चल दिया।

जब नेखलूदोव प्रविष्ट हुआ तब ही वूल्फ दोपहर का अपना भोजन समाप्त कर चुका था तथा अपने भोजन पचाने के अपने अभ्यस्त ढङ्ग से सिगार पीता हुआ इधर-से-उधर प्रकोष्ठ में चहलकदमी कर रहा था। व्लादीमीर वेसिलीएविच वूल्फ निश्चित ही पूर्ण सज्जन था, तथा सज्जनता का वह आदर भी बहुत करता। प्रत्येक व्यक्ति का ही वह इसी महत्त्व से अङ्कित करता। वह अपने इस गुण का अत्यधिक आदर किए बिना कैसे रह सकता था क्योंकि इसी गुण के कारण उसने अपना

भविष्य निर्माण किया। भविष्य जैसा कि वह स्वयं चाहता था वैसा ही बना अर्थात् विवाह कर उसका भाग्य ऐसा चमका कि अट्ठारह हजार रूबल प्रतिवर्ष की उसकी आय हो गई तथा अपने स्वयं के प्रयत्नों से वह उन्नति करता हुआ सीनेटर के पद तक पहुँच गया। वह अपने को न केवल सज्जन ही समझता वरन् 'नाइट' के पद के योग्य सम्मानित भी समझता। सम्मान का अर्थ वह यह लगाता कि मैं किसी व्यक्ति से चोरी-छिपे घूँस नहीं लूँ। किंतु वह हर प्रकार के भत्तों, किरायों एवं यात्रा-व्ययों को आग्रह के साथ प्रार्थनापूर्वक शासन-व्यवस्था से ले लेने में कोई धूर्तता नहीं समझता तथा उसके उपलक्ष में शासन के लिए वह सबकुछ करने को तैयार रहता। सैकड़ों निरपराध व्यक्तियों को नष्ट कर देने, उनको केवल इसलिए कि वे अपने साथियों से तथा अपने पिता-पितामहों के धर्म से प्रेम करते हैं, उनको कारा की अन्धकोठरियों में डलवाने तथा उनका निर्वासन करने में उसे कोई धूर्तता नहीं प्रतीत होती वरन् उल्टा उसे सभ्य, माननीय एवं देशभक्ति मानता—तथा जब वह पोलेण्ड के एक प्रांत का प्रशासक था तब उसने यह सब किया भी था। अपनी पत्नी (जो उस पर मोहित थी) तथा साली की किसी वस्तु को भी अपनाने में उसे बेईमानी नहीं प्रतीत होती थी। उसके विपरीत वह पारवारिक कार्य व्यापार की व्यवस्था का यही सबसे अच्छा ढङ्ग समझता था।

उसके परिवार में थी उसकी विनम्र पत्नी, उसकी साली, जिसकी कि सम्पत्ति को बेचकर उसने धन अपने खाते में जमा कर लिया था तथा उसकी विनम्र, भयग्रस्ता सीधी-सादी लड़की जो कि एकांतिक एवं व्यग्र जीवन व्यतीत करती थी। लड़की काफी समय से शान्ति के लिए इसाई धर्म की एक शाखा की ओर प्रवृत्त होने लगी थी तथा वह एलाइन एवं काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना के यहाँ होने वाली सभाओं में जाती रहती थी।

वूल्फ का लड़का मस्त जीव था जिसने की पन्द्रह वर्ष की ही अवस्था में दाढ़ी बढ़ाली तथा मदिरा पीने लग गया एवं आवारागिर्दी में फिरने लगा (जो कि बीस वर्ष की अवस्था तक इसी प्रकार रहता रहा। उसके पिता ने उसे अपना अध्ययन समाप्त न कर पाने के कारण घर से निकाल दिया था), तथा वह नीचों की सङ्गति में पड़कर ऋण करने लगा। ऋणों के कारण उसने अपने पिता से समझौता कर लिया। उसके पिता ने पहलीवार दो सौ तीस रूबलों का ऋण चुकाया था, पुनः दुबारा छह सौ रूबल चुकाए किंतु साथ ही यह चेतावनी दे दी कि मैं तुम्हारा ऋण अब कभी नहीं चुकाऊँगा और यदि तुम नहीं सुधरे तो तुम्हें घर

से निकाल बाहर कर दूँगा तथा मेरे, मेरे परिवार और तुम्हारे बीच के सब संबंध समाप्त हो जांयगे। लड़का नहीं सुधरा और उसने एक हजार रूबल ऋण कर लिए तथा अपने पिता से बोला कि घर पर मेरा जीना बड़ा कठिन है। तब वूल्फ ने घोषणा करदी कि तेरी जहाँ इच्छा आए चला जा—तथा "तू अब मेरा पुत्र नहीं रहा। उसके पश्चात् से वूल्फ कहा करता कि मेरा कोई पुत्र नहीं है तथा उसके घर पर कोई उसके पुत्र के विषय में बातें करने का साहस नहीं कर पाता एवं व्लादीमीर वेसिलीएविच वूल्फ को दृढ़ विश्वास था कि उसने अपने पारिवारिक जीवन की व्यवस्था बड़े सुन्दर ढङ्ग से की है।

जब नेखलूदोव कमरे में गया तब वूल्फ ने अपने अध्ययन कक्ष में चहल-कदमी बन्द करदी तथा नेखलूदोव से उसने मित्रतापूर्ण किंतु हल्की व्यङ्गमिश्रित मुस्कान से हाथ मिलाया। उसका यह प्रदर्शित करने का स्वाभाविक ढङ्ग था कि मैं अन्यान्य व्यक्तियों से कितना अधिक सज्जन एवं उन्नत हूँ। उसने नेखलूदोव द्वारा प्रदत्त-पत्र को पढ़ा।

"कृपया विराजिए और क्षमा कीजिए कि आपकी आज्ञा हो तो मैं चहल-कदमी करता रहूँ।" उसने अपने हाथों को कोट की जेबों में डालकर तथा हल्के निःशब्द चापों से अपने सुव्यवस्थित, विशाल अध्ययन कक्ष में चहलकदमी प्रारम्भ करते हुए कहा।

"मुझे आपका परिचय प्राप्त कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैं काउन्ट इवान-मिखालोविच की इच्छानुसार सब कुछ सहर्ष करने को सन्निद्ध हूँ।" उसने अपने मुँह से नीला सुगन्धित धुआँ छोड़ते तथा सिगार को सावधानी से हटाते हुए, कि कहीं राख न झड़ जाय, कहा।

"मैं आपसे केवल यही प्रार्थना करना चाहता हूँ कि अभियोग तुरंत प्रस्तुत हो जाय ताकि बन्दिनी को यदि साइबेरिया जाना ही पड़े तो वह शीघ्र ही रवाना हो सके।" नेखलूदोव बोला।

"जी हाँ! जी हाँ!! मैं जानता हूँ। निजनी नोवगोरोद के पहिले रवाना होने वाले स्टीमरों द्वारा।" वूल्फ ने अपनी प्रिय मुस्कान से कहा जिससे सदा यह अर्थ निकलता था कि मैं आपके कहने से पूर्व ही जानता था कि आप क्या कहेंगे। "बंदनी का नाम क्या है ?"

"माशलोवा।"

वूल्फ मेज पर गया तथा उसने वहाँ रखे कागजतों में एक कागज निकाला।

"जी हाँ! जी हाँ! माशालोवा! ठीक, मै मम्बन्धित व्यक्तियों से कह दूंगा। हम बुधवार को ही सुन लेगे।"

"तो मैं एडवोकेट को तार कर दूं?"

"एडवोकेट! एडवोकेट को किसलिए? किन्तु यदि आप चाहते है तो फिर बुला लें?"

"अपील के आधार अपर्याप्त हों," नेखलूदोव "बोला किंतु मेरा विचार है कि अभियोग के सुनने मे ही ज्ञात हो जायगा कि गलतफहमी के कारण दण्ड दिया गया है।"

"जी हाँ! जी हाँ! यह हो मकता है. किन्तु सीनेट अभियोग की योग्यता के आधार पर उसका निर्णय नही कर सकती।" वूल्फ ने अपनी सिगार की राख की ओर देखते हुए कठोर स्वर मे कहा, "मीनेट तो केवल कानून के अधिनियमन की यथार्थता एवं उसके उचित अर्थ के औचित्य पर ही विचार कर सकती है।"

"किंतु मैं समझता हूं कि यह अभियोग असाधारण है।"

"मैं जानता हूँ! मै जानता हूँ! ममस्त अभियोग ही असाधारण होते हैं। हम लोग अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। बस, इतना ही हो सकता है।" राख अभी तक सिगरेट पर ही थी किंतु उसमें तडकन आ चुकी थी और गिरने ही वाली थी।

"क्या आप बहुधा पीत्सबर्ग में ही रहा करते हैं?" वूल्फ ने सिगरेट को इस ढङ्ग से पकड़ते हुए कहा कि राख गिर न जाय। किंतु राख हिलने लगी और वूल्फ आश-ट्रे तक बड़ी सावधानी मे पहुँचा जहाँ जाकर वह झड़ गई।

"यह कामेन्स्की का मामला कितना भयानक है!" वह बोला "एक श्रेष्ठ नवयुवक। इकलौता पुत्र.. विशेषतया माँ की स्थिति," वह शब्द-व शब्द वही बात दोहराता गया जो कि पीत्मबर्ग में प्रत्येक व्यक्ति कामेन्स्की के विषय में कहता था।

वूल्फ ने काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना तथा उसके नए धर्म की शिक्षाओं वे उत्साह के विषय में थोड़ी-सी बातचीतें कीं। धर्म के विषय में न तो उसने

अनुमोदन ही किया और न विरोध ही। उसके सदृश्य व्यक्ति के लिए जो कि पूर्णतया सज्जन था इसकी स्पष्टतः कोई आवश्यकता ही नहीं थी। फिर उसने घण्टी बजाई।

नेखलूदोव ने झुककर अभिवादन किया।

"यदि आपको सुविधा हो सके तो बुधवार को आकर भोजन कीजिए, मैं आपको एक निश्चित उत्तर दे दूँगा।" वूल्फ ने उससे हाथ मिलाने को आगे बढ़ाते हुए कहा।

देर हो चुकी थी अतः नेखलूदोव अपनी मौसी के यहाँ लौट दिया।

१७

काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना का डिनर का समय साढ़े सात बजे था तथा भोजन परोसे जाने का ढङ्ग नेखलूदोव के लिए सर्वथा नवीन था। वर्दीधारी नौकरों ने तश्तरियाँ मेज पर रख दीं फिर वे प्रकोष्ठ से बाहर चले गए तथा उपस्थित व्यक्तियों ने भोजन स्वयं परोसना आरम्भ किया। पुरुषों ने स्त्रियों को कष्ट नहीं करने दिया, किंतु, क्योंकि वे अपेक्षाकृत अधिकशक्तिशाली होते हैं, उन्होंने वीरता से महिलाओं की सहायता करने का भार अपने ऊपर ले लिया तथा उन्हें खाने-पीने की छूट देदी। जब भोजन का पहिला दौर समाप्त हो गया तब काउन्टेस ने अपनी मेज पर लगी बिजली की घण्टी दबाई। घण्टी सुनते ही बर्दीधारी नौकरों ने शीघ्रता से चुपचाप अन्दर प्रवेश किया, शीघ्र ही सब तश्तरियाँ समेट कर ले गए एवं प्लेटें बदलदीं तथा दूसरी बार के लिए भोजन अन्दर ले आए। भोजन अत्यन्त रुचिकर था और थी मदिरा अत्यन्त कीमती। विशाल प्रकाशयुक्त पाकशाला में एक फ्राँसीसी पाक-विशेपज्ञ श्वेत वस्त्रों से सज्जित दो सहकारियों के साथ कार्य कर रहा था। डिनर में छह व्यक्ति थे : काउन्ट एवं काउन्टेस, उनका पुत्र (सेना में एक असभ्य अधिकारी जो कि मेज पर कुहनियाँ टेके बैठा था।), नेखलूदोव, एक फ्राँसीसी साथी तथा काउन्ट का प्रधान-कारिंदा, जो कि गाँव से आया हुआ था।

यहाँ भी वार्तालाप का विषय द्वन्द था तथा इस केस के विषय में सम्राट् का क्या दृष्टिकोण हो सकता है इस पर अपनी धारणाएँ व्यक्त की जा रही थीं। यह ज्ञात हो चुका था कि सम्राट् उसकी माँ की अवस्था पर अन्यन्त दुःखी थे—और

सबको ही माँ के प्रति सहानुभूति थी; और क्योंकि यह भी ज्ञात था कि सम्राट् हत्यारे के प्रति जिसने कि अपनी वर्दी के सम्मान की रक्षा की थी, अत्यधिक कठोर होना नहीं चाहते थे, अतः प्रत्येक ही उस अधिकारी के प्रति दयालु था जिसने कि अपनी वर्दी के सम्मान की रक्षा की थी। केवल काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना ने ही अपने मुक्त अविवेक के कारण अपना विरोध प्रगट किया।'

"लोग पीलें और फिर शंका न करने योग्य युवकों को मार डालें। ऐसे व्यक्तियों को मैं कदापि क्षमा नहीं कर सकती।" वह बोली।

" बस यही बात मेरी समझ में नहीं आती।" काउंट बोला।

" मैं जानती हूँ कि आप मेरी बात कभी नहीं समझ सकते।" काउंटेस ने नेखलूदोव की ओर मुड़कर कहना आरम्भ किया,"मेरे पति महोदय के अतिरिक्त मेरी बातें सबकी समझ में आती हैं। मुझे उसकी माँ पर दया आती है और मैं नहीं चाहती कि कोई किसी के प्राण ले ले और फिर संतुष्ट हो जाय।"

तब उसके पुत्र ने जो अब तक चुप बैटा हुआ:था, हत्यारे का पक्ष लेकर अपनी माँ से अभद्रतापूर्वक कहा कि एक अधिकारी के पास इस प्रकार करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं क्योंकि उसके सह-अधिकारी उसका अपमान करेंगे तथा उसे रेजीमेन्ट से निकाल बाहर कर देंगे। बिना कोई योग दिए नेखलूदोव वार्तलाप को सुनता रहा। स्वयं अधिकारी रह चुकने के कारण वह युवक चार्सकी के तर्कों को समझ सकता था, यद्यपि उनसे सहमत नहीं था, तथा उसी समय वह उस नवयुवक सुन्दर अधिकारी के दुर्भाग्य की उससे तुलना किए बिना न रह सका, जिसे कि उसने अभियुक्त के रूप में बंदीगृह में देखा था तथा जिसे कि एक मनुष्य को लड़ाई में मार डालने के अपराध में सश्रम कठोर कारावास हुआ था। दोनों ने ही मदिरा के मद में हत्याएँ की थीं। एक, जो कि किसान है, उन्माद के क्षण में किसी व्यक्ति के प्राण हर लेने पर अपनी स्त्री, परिवार से विलग हो कर, पावों में बेड़ियाँ डाल तथा सिर घुटा कर साइबेरिया में कठोर परिश्रम करने के लिए निर्वासित हो रहा है तथा दूसरा जो कि एक अधिकारी है, सैनिक भवन के सुन्दर कक्ष में बैठता है, पुष्ट भोवन करता है, कीमती मदिरा पीता है तथा पुस्तकें पढ़ता है एवं एक या दो दिवस में पहले की भाँति जीवन व्यतीत करने के लिए निर्बन्ध हो जायगा केवल इसलिए कि इसकी घटना ने लोगों में अपने प्रति रुचि उत्पन्न करदी है।

नेखलूदोव ने अपनी अनुभूति को शब्दों में व्यक्त कर दिया तथा सर्वप्रथम उसकी मौसी कातरीना इवानव्नो उसके विचारों से सहमत प्रतीत हुई किन्तु अंत में वह भी अन्य लोगों की भांति ही शांत हो गई तथा नेखलूदोव को लगा कि मैंने कोई असभ्यता करदी है।

भोजन के तुरन्त पश्चात ही सायंकाल विशाल नृत्यगृह में—जिसकी उच्च-पीठिका युक्त कुर्सियाँ पंक्तियों में सभा के लिए सी व्यवस्थित की गई थीं तथा एक हत्थेदार कुर्सी वक्ता के लिए एक छोटी-सी मेज के पास रखी थी,—विदेशी धर्मोपदेशक कायसेवेतेर का प्रवचन सुनने के लिए लोग एकत्रित होने लगे। मेज पर पानी से भरा एक जग रखा था।

सिंहद्वार पर भव्य वग्घियाँ रुकने लगीं। बहुमूल्य वस्तुओं से सुसज्जित कक्ष में सिल्क, मखमल तथा फीते पहिने एवं फीते बँधे नकली बाल लगाए, गदराए तन की महिलाएँ बैठी थीं तथा उनके साथ बैठे थे अपनी वर्दियों एवं सायंकालीन वस्त्रों में सज्जित पुरुष और लगभग आधी दर्जन साधारण पुरुष : दो नौकर, एक दूकानदार, एक वर्दीधारी नौकर तथा एक कोचवान।

कायसेवेतेर भूरे से रङ्ग का हट्टा-कट्टा पुरुष था तथा अंग्रेजी में बोल रहा था एवं नकचश्मा लगाए एक पतली नवयुवती उसका रूसी अनुवाद ठीक एवं तुरन्त कर रही थी।

उसने कहा कि हमारे पाप इतने अधिक हैं तथा उनका दण्ड इतना अधिक एवं अटल है कि उस दंड की अवहेलना करते हुए जीवित रहना अत्यन्त दुष्कर है।

"प्रिय बंधुओ एवं बहिनो! हम क्षण भर विचार करें कि हम लोग कर क्या रहे हैं : हम लोग किस भाँति रहते हैं, सर्वपालक प्रभु का कैसे विरोध करते हैं, तथा हमने ईसामसीह को किस भाँति कष्ट दिया; और हम यह सोचने पर विवश है कि हमारे लिए किसी भाँति भी क्षमा, रक्षा, मुक्ति सम्भव नहीं : कि हम सबका विनाश होना ही है। हमको अवश्य ही—निरन्तर कष्ट–भयानक दुर्भाग्य प्राप्त होगा।" अपने कंपित अवरुद्ध गले से नेत्रों में अश्रु भरे वह बोला "ओह बन्धुओ हमारा त्राण कैसे हो?" इस भयानक निरन्तर प्रज्ज्वलित अग्नि से हमारी रक्षा कैसे हो? मकान मे आग लग चुकी है; बचत कोई है नहीं।"

वह क्षण भर चुप रहा, तथा उसके गालों पर सच्चे अश्रु लुढ़कने लगे।

लगभग आठ वर्षों से जब भी वह अपने प्रवचन के इस अंश को कहता, जिसे कि वह स्वयं अत्यन्त पसन्द करता, उसका कंठ अवरुद्ध हो आता तथा नाक में कुछ अव्यवस्था हो जाती एवं नेत्रों में अश्रु भर आते; तथा ये अश्रु उसे और भी अधिक द्रवित कर देते।

कक्ष में हिल्कियाँ सुनाई दे रही थीं। काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना एक पच्चीकृत मेज पर कुहनियाँ टेके हाथों में सिर रखे बैठी थी तथा उसके मोटे भारी कंधे हिल रहे थे। कोचवान ने जर्मन की ओर भय एवं आश्चर्य से देखा। उसे लग रहा था कि यह जर्मन अपनी बग्घी के डण्डे से उसे गिराकर पटक देगा तथा यह विदेशी अपने मार्ग से हटेगा नहीं। सब ही कातरीना इवानोव्ना की सी स्थिति में बैठे थे। वूल्फ की पतली-दुबली पुत्री जो कि अपने पिता से बहुत मिलती थी तथा फैशन युक्त वस्त्रों में सुसज्जित थी, अपने हाथों में मुँह रखकर झुकी।

वक्ता ने एकाएक अपना मुख अनावरित किया तथा एक अत्यन्त सच्ची मुस्कान से मुस्कुराया—ठीक जिस भाँति कि अभिनेता प्रसन्नता व्यक्त करते हैं—तथा पुनः मृदुल कोमल स्वर में कहना प्रारम्भ किया।

"हाँ बचने का एक मार्ग है। वह है—आनन्दपूर्ण, सरल मार्ग। भगवान के एकमात्र पुत्र द्वारा जिसने कि हम लोगों के लिए कष्ट सहे, हम लोगों के लिए बहाए हुए रक्त में मुक्ति है। उसके कष्ट, उसका रक्त हमारी रक्षा कर लेंगे। बन्धुओ एवं बहिनो।" पुनः उसने अवरुद्ध कंठ से कहा "हमें उस प्रभु की प्रार्थना करनी चाहिए जिसने अपना एकमात्र उत्पन्न पुत्र संसार की पाप मुक्ति के लिए दिया। उसका पवित्र रक्त..."

नेखलूदोव को इतनी गहन अरुचि उत्पन्न हो गई कि वह चुपचाप उठा एवं भौंहें चढ़ाता तथा लज्जा को छिपाते हुए दबे पाँवों वहाँ से अपने प्रकोष्ठ में चल दिया।

१२

अगले दिन कपड़े पहिनकर नेखलूदोव नीचे जाने के लिए तैयार ही हुआ था कि वर्दीधारी नौकर मास्को के एडवोकेट अपने काम से पीतर्सबर्ग आया था और उसने यह भी विचार किया कि यदि माशलोवा के अभियोग की सीनेट में सुनवाई होने वाली हो तो उस अवसर पर भी उपस्थित रहा आवेगा। इधर

नेखलूदोव ने तार भेजा और उधर वह वहाँ से चल दिया। अतः तार उसे प्राप्त हो न सका। जब नेखलूदोव ने उसे बतलाया कि अमुक दिन अभियोग सीनेट में प्रस्तुत होगा तथा अमुक-अमुक व्यक्ति उपस्थित होंगे तो वह मुस्कुरा उठा।

"सीनेटर तीनों के तीनों एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं:" वह बोला "वूल्फ पीतर्सबर्ग का एक अधिकारी है, स्कोवोरोदिनीकोव शास्त्रीय—दण्ड-विज्ञानी है तथा व्यवहारिक दण्ड-विज्ञानी—इसलिए वह उन सबसे अधिक स्फूर्तिप्रद है।" एडवोकेट बोला "उससे ही सर्वाधिक आशा की जा सकती है। अच्छा तथा पिटीशन कमेटी ?"

"ओह ! मैं बैरन वोरोबीओव से मिलने आज जाऊँगा। कल मेरी उनसे बातें हो नहीं सकीं।"

"क्या आपको ज्ञात है कि वोरोबीओव को 'बैरन' की उपाधि क्यों मिली ?" एडवोकेट ने इतने साधारण रूसी नाम के साथ विदेशी उपाधि पर नेखलूदोव के हल्के से व्यंगात्मक पुट को देखकर कहा "इसलिए मिली कि सम्राट् पॉल ने इनके पितामह को यह उपाधि प्रदान कर उसे सम्मानित किया था जहाँ तक मुझे स्मरण है वह न्यायालय में एक चपरासी था। उसने किसी भाँति सम्राट को प्रसन्न कर लिया था अतः उन्होंने उसे बैरन बना दिया। 'यह मेरी अभिलाषा है अतः अस्वीकार न कीजिएगा।" अतः वोरोबीओव 'बैरन' बन गया है तथा अपनी उपाधि पर अत्यन्त गर्वित है। वह धूर्त लोमड़ी है।"

"खैर ! मैं उससे मिलूँगा।" नेखलूदोव बोला।

"बहुत अच्छा चलिए दोनों साथ ही चलेंगे। मैं आपको अपनी गाड़ी में बैठा लूँगा।"

वह जाने लगे कि वर्दीधारी नौकर गलियारे में मिला और उसने नेखलूदोव को मेरियेते का फासीसी भाषा में लिखा पत्र दिया।

"आपकी प्रसन्नता के लिए मैंने अपने सिद्धान्तों का उल्लंघन कर अपने पति से अपनी रक्षिता के लिए प्रार्थना कर दी है। आशा है कि यह स्त्री शीघ्र ही मुक्त हो सकती है। पतिदेव ने सेनाध्यक्ष को एवं पत्र लिख दिया है। अतः निस्वार्थ होकर आइए। मैं प्रतीक्षा करूँगी।"

"कल्पना कीजिए !" नेखलूदोव ने एडवोकेट से कहा "कितनी भयंकर बात है ? एक स्त्री सात माह से कारा की एकांतिक कोठरी में बन्द है, बिल्कुल

निर्दोष सिद्ध होती है और उसकी मुक्ति के लिए आवश्यक था केवल एक शब्द ।"

"यह कोई नई बात नहीं । खैर, कैसे भी, आपकी इच्छा की तो पूर्ति हो ही गई ।"

"जी हाँ, किंतु ऐसी इच्छा पूर्ति से मुझे दुख होता है ! विचार तो कीजिए वहाँ क्या हो रहा होगा । उसे बन्दी रखा ही क्यों गया ?"

"आह सर्वश्रेष्ठ तो यह हो कि इन बातों की गहराइयों में उतरा ही न जाए । अच्छा ! तो क्या आप चल रहे हैं ?" एडवोकेट ने मकान से उतरते हुए पूछा जबकि उसके द्वारा किराए पर ली गई सुन्दर गाड़ी द्वार के पास आने लगी । आप बेरन वोरोबीओव से मिलने चल रहे हैं न ?"

एडवोकेट ने गाड़ीवान को अपना गंतव्य स्थान बतला दिया तथा दोनों सुन्दर अश्वों ने तुरन्त ही नेखलूदोव को उस स्थान पर पहुँचा दिया जहाँ कि बेरन बोरोओीओव रहता था । बेरन घर पर उपस्थित था । द्वार के पास वाले कक्ष में वर्दी में एक युवक अधिकारी दो महिलाओं के साथ अत्यन्त सुघर ढङ्ग से चहलकदमी कर रहा था । युवक की पतली गर्दन लम्बी थी तथा उसका टेटुँआ उभर रहा था ।

"आपका शुभ नाम ?" उस युवक अधिकारी ने स्त्रियों को छोड़कर नेखलूदोव के पास आ बड़े शिष्टाचार से पूछा ।

नेखलूदोव ने अपना नाम बतलाया ।

"बैरन साहब ने आपके विषय में मुझसे कहा भी था । अभी आया ।" युवक बोला तथा द्वार से अन्दर । चला गया । जब वह लौटा तब वह काले वस्त्र पहिने हुए महिला के साथ लौटा । महिला रो रही थी । अपनी पतली उंगलियों से वह महिला अपने उलझे हुए नकाब को डालने की चेष्टा कर रही थी ताकि उसके अश्रु दिखलाई न दें ।

"आइए अन्दर पधारिए !" हल्के पदचापों से अध्ययन कक्ष के द्वार की ओर जाकर उसे खोलते हुए युवक ने नेखलूदोव से कहा ।

अन्दर जाकर नेखलूदोव ने देखा कि सामने ही फ्राक कोट पहिने मध्यम कद का छोटे बालों वाला एक मोटा व्यक्ति आराम कुर्सी पर बैठा मुस्कुरा रहा है । उसकी कुर्सी एक बड़ी मेज के पास लगी हुई थी ।

गुलाब की भाँति लाल चेहरे वाला दयालु व्यक्ति नेखलूदोव की ओर मैत्रीपूर्ण ढङ्ग से मुस्कुराते हुए मुड़ा। उसके लाल चेहरे तथा श्वेत बाल, दाढ़ी एवं मूछों में विचित्र वैषम्य से नेखलूदोव प्रभावित हुए बिना न रह सका।

"आपसे मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आपकी माँ से मै बहुत कालपूर्व से परिचित था तथा हम दोनों मित्र थे। मैने आपको बाल्यावस्था में देखा था तथा तब भी जब कि आप सैनिक अधिकारी थे। बैठिए! बैठिए! मेरे योग्य कोई सेवा बतलाइए...जी, जी।" उसने श्वेत कटे बालों युक्त सिर हिलाया तथा, जबकि नेखलूदोव फेदोशिया की गाथा सुना रहा था, बोला "कहे जाइए। कहे जाइए। समझ रहा हूँ। वास्तव में बहुत मर्मस्पर्शी है यह कथा। और...क्या आपने पिटीशन कर दिया?"

"पिटीशन मेरे पास तैयार है।" नेखलूदोव ने जेब से पिटीशन निकालते हुए कहा "किंतु देने से पूर्व मैंने आपसे बातें करना उपयुक्त सोचा जिससे कि इसकी ओर विशेष ध्यान दिया जा सके।"

"आपने बिल्कुल ठीक किया। मैं इस पर अपनी राय अवश्य लिखूँगा।" वेरन ने अहने मुखमण्डल पर करुणा दिखलाने की असफफ चेष्टा करते हुए कहा। "अत्यन्त मर्मस्पर्शी! यह तो स्पष्ट है कि वह तो बच्ची ही थी; पति ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया और उससे उसे घृणा उत्पन्न हो गई, किंतु समय के साथ साथ वह दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लग गए। ठीक है मैं ही लिख दूँगा।"

"काउन्ट इवान मिखायलोविच भी आपसे इस विषय में कहना चाहते थे।"

नेखलूदोव के मुँह से ये शब्द पूरे निकल भी न पाए कि बेरन के मुख पर परिवर्तन आ गया।

"अच्छा हो कि आप पिटीशन कार्यालय में दे जाएँ। तथा जो कुछ भी होगा मैं अवश्य करूँगा।" वह बोला।

तत्क्षण ही युवक अधिकारी कक्ष में पुनः अपनी शिष्ट चाल से प्रविष्ट हुआ।

"महिला पूछती है कि क्या मुझे दो शब्द और कहने की आज्ञा मिल सकती है।" वह बोला।

"अच्छा अन्दर भेज दो...आह ! श्रीमान् न जाने कितने अश्रु हम लोगों को देखने पड़ते हैं ! काश, हम लोग उन्हें सुखा सकते। जिससे जो होता है वह करता ही:है।"

महिला ने प्रवेश किया।

"मैं आपसे यह कहना भूल गई कि अपनी लड़की को त्यागने की उसे आज्ञा नहीं मिले क्योंकि वह तैयार है..."

"मैं आपसे पहिले ही कह चुका हूँ कि जो कुछ भी सम्भव होगा मैं करूँगा।"

"बेरन, भगवान् के लिए, आप एक माँ के प्राण बचा लेंगे।"

उसने बेरन का हाथ पकड़ लिया तथा उसके चुम्बन लेने लगी।

"सब किया जाएगा।"

जब महिला चली गई तब नेखलूदोव भी विदा लेने लगा।

"यथा सम्भव हम लोग सब कुछ करेंगे। मैं इसके विषय में न्याय-मंत्रालय को लिख दूँगा और उनका उत्तर आने पर यथासम्भव जो भी हो सकता है, हम लोग करने की चेष्टा करेंगे।"

अध्ययन-कक्ष से निकलकर नेखलूदोव पुनः कार्यालय में गया। सीनेट की ही भाँति यहाँ भी उसने देखा एक भव्य प्रकोष्ठ, कितने ही भव्य कार्यकर्ता—स्वच्छ, विनम्र, अत्यन्त यथार्थ तथा वस्त्रों एवं वाणी में विशेषता लिए।

"उनमें से कितने यहाँ उपस्थित हैं; कितने आत्म-संतुष्ट एवं प्रसन्न लगते हैं ये सब। इनकी कमीजें तथा हाथ कितने साफ हैं तथा जूते कितने चमकदार हैं ! यह सब इन्हें देता कौन है ? न केवल बन्दियों की ही तुलना में वरन् कृषकों की तुलना में भी यह कितने आराम में हैं !" नेखलूदोव के विचार स्वतः उठने लगे।

१९

पीतर्सबर्ग के बन्दियों के दुर्भाग्य को कम करना जिस व्यक्ति के हाथ में था वह था जर्मन कुलोद्भव ख्याति प्राप्त वृद्ध जनरल—एक बेरन—जिसके विषय

में प्रसिद्ध था कि उसने अपनी बुद्धि अत्यन्त स्थिर बना रखी है। उसे ढेरों पदक प्राप्त हुए थे, किंतु धारण उनमें से एक ही करता था—श्वेत क्रॉस-पदक। वह इसका अत्यन्त सम्मान करता—यह पदक उसे काकेशस में प्राप्त हुआ था जबकि उसके नेतृत्व में कटे बालों वाले सहस्रों बर्दीधारी रूसी कृषकों ने हाथों में संगीनें लेकर एक सहस्र से अधिक ऐसे व्यक्तियों को मृत्यु के घाट उतार दिया जो कि अपनी स्वतन्त्रता, घरों एवं परिवारों की रक्षा कर रहे थे। उसके पश्चात् वह पोलेन्ड भेज दिया गया। वहाँ भी उसने रूसी कृषकों से ऐसे अन्यान्य अपराध कराए तथा अपनी वर्दी पर लगाने को अन्यान्य पदक आदि प्राप्त किए। उसके पश्चात उसे फिर कहीं भेजा गया किंतु अब क्योंकि वह वृद्ध एवं दुर्बल हो गया था उसे यह स्थान मिल गया। यहाँ उसके लिए सुन्दर गृह, अच्छी आय तथा सम्मान प्राप्त था। "ऊपर से" बनकर आए हुए समस्त नियमों का वह दृढ़ता से पालन करता तथा उन नियमों की, जिनको कि वह विशेष महत्त्व देता, पूर्ति अत्यन्त उत्साह से करता। उसका विचार था कि संसार की प्रत्येक वस्तु बदल सकती है किंतु 'ऊपर से' बनकर आए हुए नियम नहीं। राजनैतिक बन्दियों को—स्त्री पुरुषों को—कारा की एकांतिक कोठरियों में इस भाँति बन्द रखना कि उनमें से आधे दस वर्षों के अन्दर स्वयमेव मृत्यु को प्राप्त हो जाएँ: कुछेकों का मस्तिष्क विकृत हो जाए, कुछेक क्षय रोग से ग्रस्त हो परलोक चले जाएँ, कुछेक भूखों मरकर, काँच के टुकड़ों से नसें काट कर, फाँसी लगा लगाकर अथवा जलकर आत्महत्या कर लें—यह था जनरल का कर्तव्य।

यह बात नहीं कि जनरल इस बात से अपरिचित था क्योंकि यह सब उसके नेत्रों के सम्मुख ही होता; किंतु उसके अन्तःकरण पर इसका बिजली गिरने अथवा बाढ़ आ जाने आदि से उत्पन्न होने वाली दुर्घटनाओं से अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। ये घटनाएँ सम्राट द्वारा 'ऊपर से' भेजे हुए नियमों की पूर्ति के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होतीं इन नियमों की पूर्ति अनिवार्य थी अतः उससे उत्पन्न होने वाली घटनाओं का परिणाम सोचना नितांत व्यर्थ था। वृद्ध जनरल ऐसी बातों पर विचार ही नहीं उठने देता—वह एक सैनिक की भाँति इन पर विचार न करना ही अपनी राज्यभक्ति समझता क्योंकि विचार विमर्श में यह भय रहता कि कहीं मैं अपने कर्तव्यों के, जिन्हें कि अत्यधिक महत्त्व देता हूँ, पालन में ढील न कर जाऊँ।

उस वृद्ध जनरल का एक यह भी कर्तव्य था कि सप्ताह में एक बार

कारावास का चक्कर लगाए—वह जाता और बन्दियों से पूछता कि आपको कुछ कहना तो नहीं है। बन्दी सब प्रकार की याचनाएँ करते। वह उन सबको नितांत शांति से सुनता किंतु पूर्ति किसी एक की भी नहीं करता क्योंकि वे सभी उन नियमों से बेमेल बैठती थीं।

नेखलूदोव के जनरल के घर पहुँचते ही घंटाघर की घड़ी ने पहिले तो बजाया "प्रभु कितने महान हैं" फिर उसकी घंटी ने दो बजाए। इन घंटियों की ध्वनि से नेखलूदोव को दिसेम्बेरितों के इतिहास का स्मरण हो आया जिसमें कि उसने पढ़ा था कि प्रति घंटे के पश्चात् दोहराए जाने वाले इस मधुर संगीत का उन व्यक्तियों के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है जो कि आजीवन काल के लिए बन्दी है।

इस समय वृद्ध जनरल अपने अँधेरे ड्राइङ्ग-रूम में एक पच्चीकृत मेज के पास अपने अधीनस्थ कर्मचारी के चित्रकार भाई के साथ में बैठा हुआ था तथा उसकी सहायता से कागज पर एक चाय की प्लेट घुमा रहा था। चित्रकार की पतली, कोमल दुर्बल उङ्गलियाँ वृद्ध जनरल की कड़ी, झुर्रीदार, कठोर उङ्गलियों से बँधी हुई थीं तथा हाथ इस ढंग से रखे हुए थे कि दोनों के हाथ उस कागज पर तश्तरी के साथ ही घूम रहे थे जिस कागज पर कि अँग्रेजी वर्णमाला के सब अक्षर लिखे हुए थे। तश्तरी जनरल के इस प्रश्न का उत्तर दे रही थी कि मृत्यु के पश्चात् आत्माएँ एक-दूसरे को कैसे पहिचानेंगी।

जिस समय नेखलूदोव ने अपना परिचय-पत्र चपरासी के हाथ अन्दर भेजा उस समय आर्क वाली जॉन की आत्मा तश्तरी की सहायता से बोल रही थी। आर्क वाली जॉन की आत्मा ने इन शब्दों को शब्द-बशब्द बतला दिया था "They will know each other by"* तथा ये शब्द लिखे जा चुके थे। जब चपरासी, जो कि वर्दीधारी नौकर की भाँति कार्य कर रहा था, अन्दर पहुँचा तब तश्तरी "b" और "y" अक्षर पर रुकी थी तथा फिर इधर-उधर हिलने लगी थी। यह हरकत इसलिए हुई थी कि जनरल का मत था कि अगला अक्षर "b" होगा—अर्थात् जॉन यही कहेंगी कि आत्माएँ एक-दूसरे को तब पहिचानेंगी जब कि वे "being cleansed"[1] किंतु चित्रकार का विचार था कि अगला

---

*वे एक-दूसरे को इस भाँति पहिचानेंगी।

१ पवित्र हो जाएँगी।

अक्षर "l" आएगा—अर्थात् कि आत्माएँ एक-दूसरे को "light"[२] से पहिचानेंगी, उस प्रकाश से जो कि उनके सूक्ष्म शरीर से उत्पन्न होगा। जनरल ने अपनी घनी भूरी भौंहों को सिकोड़ा तथा तश्तरी के हाथों को देखता हुआ बैठा रहा। यह सोचते हुए कि तश्तरी स्वयं घूम रही है वह उसको "b" की ओर खींचता रहता। पीला पड़ा हुआ युवक चित्रकार अपने निस्तेज नेत्रों से ड्राइंगरूम के एक अँधेरे कोने में देख रहा था तथा तश्तरी को "l" की ओर खींच रहा था।

जनरल ने इस बाधा पर भ्रू भङ्ग किए किंतु क्षण मात्र पश्चात ही परिचय-पत्र लिया, नकचश्मा लगाया और बड़बड़ाता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसकी पीठ में दर्द हो रहा था किंतु फिर भी वह अपनी चेतनाशून्य उँगलियों को मलता हुआ सीधा खड़ा हो गया।

"उसे अध्ययन कक्ष में लिवा ले जाओ।"

"श्रीमान जी आज्ञा दें तो मैं स्वयं ही इसे पूर्ण कर लूँगा।" चित्रकार ने उठते हुए कहा "मुझे उपस्थिति का अनुभव हो रहा है।"

"अच्छा तो कर लेना।" जनरल ने क्रुद्ध स्वर में निर्णय दिया तथा अपने लम्बे, दृढ़ तथा नपे-तुले कदमों से वह शीघ्र अध्ययन-कक्ष में चला गया।

"आपसे मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।" जनरल ने नेखलूदोव से मित्रतापूर्ण तथा भर्राए स्वर में कहा एवं उसे बड़ी मेज के पास रखी आरामकुर्सी पर बैठने को इङ्गित किया "क्या आपको पीतर्सबर्ग आए बहुत दिन हो गए ?"

नेखलूदोव ने उत्तर दिया कि मैं अभी कल परसों ही आया हूँ।

"आपकी माताजी प्रिंसेज प्रसन्न तो हैं ?"

"मेरी माँ की तो मृत्यु हो गई।"

"क्षमा कीजिए, मुझे दुख है। मेरे पुत्र ने बतलाया था कि वह आपसे मिला था।"

जनरल का पुत्र भी अपने पिता के ही समान अपना भविष्य बना रहा था तथा सैनिक शिक्षा समाप्त कर अब वह गुप्तचर विभाग में काम कर रहा था। उसे अपने पद पर अत्यन्त गर्व था। वह राजकीय गुप्तचरों का व्यवस्थापक था।

"अरे मैंने, आपके पिताजी के साथ कार्य किया था। हम लोग आपस में

---

२ प्रकाश।

मित्र थे—साथी थे। और आप, आप भी कहीं काम कर रहे हैं ?"

"जी नहीं। मैं नहीं करता।"

जनरल ने अपना मस्तक झुका लिया। उसे यह बात पसंद नहीं आई।

"जनरल साहब ! मेरी आपसे एक प्रार्थना है।"

"बहुत प्रसन्नता है। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

"यदि मेरी प्रार्थना अनुचित हो तो कृपया मुझे क्षमा कर दीजिएगा। किंतु मुझे तो आपसे प्रार्थना करनी ही है।"

"क्या बात है ?"

"गुरकेबिच नामन एक बंदी है फोर्तरेज में, उसकी माँ उससे एक बार भेंट करना चाहती है। यह सम्भव न हो तो कम-से-कम कुछ पुस्तकें भेजने की अनुमति ही मिल जाय।"

जनरल ने नेखलूदोव की प्रार्थना पर न तो संतोष ही व्यक्त किया तथा न असंतोष ही किंतु एक ओर सिर झुकाकर आँखें बन्द कर लीं मानो कि वह कुछ विचार कर रहा हो। वास्तव में न तो वह कुछ विचार ही कर रहा था और न नेखलूदोव की प्रार्थना में उसे कोई रुचि ही थी तथा वह यह भी भली भाँति जानता था कि उसका उत्तर नियमों के अनुसार ही होगा। वह तो केवल मानसिक आराम कर रहा था—सोच विचार रत्ती भर भी नहीं कर रहा था।

"देखिए।" अंत में वह बोला "यह मेरे ऊपर निर्भर नहीं। भेंट के विषय में सम्राट द्वारा स्वीकृत नियम है; और पुस्तकों के विषय में उपयुक्त पुस्तकों का हमारा अपना पुस्तकालय है तथा बन्दी उन पुस्तकों को ले सकते हैं जिनको कि पढ़ने की स्वीकृति है।"

"जी ! किंतु वह तो विज्ञान के विषय की पुस्तकें चाहता है; वह अध्ययन करना चाहता है।"

"आपको इस बात पर विश्वास नहीं होता ?" जनरल बड़बड़ाया तथा क्षणभर चुप रहा "वह अध्ययन करना नहीं चाहता, यह तो केवल बेचैनी है।"

"किन्तु किया क्या जाय ? इन लोगों :को अपने दुर्भाग्य का यह समय तो कुछ-न-कुछ करके काटना ही है।" नेखलूदोव ने कहा।

"हम लोग इनको भली-भाँति जानते हैं। ये लोग कुछ-न-कुछ शिकायत

करते ही रहते हैं।" जनरल ने कहा।

"उसने इन लोगों के विषय में इस भाँति कहा मानोकि किसी विशेष बुरी जाति के विषय में कह रहा हो।

"इन लोगों को जो सुविधाएँ यहाँ प्राप्त होती हैं वैसी अन्य बंदीगृहों में कम ही मिलती हैं।" जनरल ने कहा।

तथा अपना औचित्य सिद्ध करते हुए वह बन्दियों के लिए प्रदत्त सुविधाओं का वर्णन करने लगा मानों इस संस्था का उद्देश्य ही बन्दियों के लिए सुखद गृह प्रदान करना हो।

"यह सत्य है कि पहिले बन्दियों का जीवन कठोर था किन्तु अब तो ये बड़े अच्छे ढङ्ग से रखे जाते हैं।" उसने कहना प्रारम्भ किया "इनको भोजन तीन बार मिलता है—एक बार में दिया जाता है माँस : कटलेट, रिसोल (रोटी के टुकड़े में मिलाए हुए पके माँस के टुकड़े)। रविवार को चौथी बार भी मिलता है—मिठाई की एक प्लेट। भगवान करे प्रत्येक रूसी इतने सुन्दर ढङ्ग से रह सके जैसे कि ये लोग बंदीगृह में रहते हैं।"

सभी वृद्ध व्यक्तियों की भाँति अपने प्रिय विषय पर बात करने का अवसर पा जनरल ने भी अनेक प्रमाण देने आरम्भ कर दिए कि बंदी किस प्रकार अनुचित माँगें प्रस्तुत करते हैं तथा कृतघ्नता दिखलाते हैं।

"इन लोगों को धार्मिक विषयों पर पुस्तकें तथा पुराने अखबार दिए जाते हैं। हमारा पुस्तकालय है। किंतु वे लोग पढ़ते ही नहीं। पहिले तो उन्होंने रुचि प्रदर्शित की किंतु फिर नई पुस्तकों के आधे पन्ने ही गायब हो गए तथा पुरानी पुस्तकों के पन्ने तक नहीं पलटे गए! हम लोगों ने परीक्षा ली।" वृद्ध जनरल ने तनिक मुस्कान का आभास देते हुए कहा "हमने इसलिए जानबूझकर पुस्तकों के बीच कागज के टुकड़े रखे, वे जैसे के तैसे ही रखे रहे। लिखने की भी मनाही नहीं है।" उसने कहा। "उन्हें एक सिलेट दी जाती है तथा सिलेट की, एक पैन्सिल ताकि वे अपने मनोरञ्जन के लिए कुछ लिख सकें। सिलेट को धो सकते हैं पुनः लिख सकते हैं। किंतु न वह लिखते हैं और न धोते ही हैं। आह! कितनी शीघ्र स्वस्थ हो जाते हैं। पहिले तो बेचैन से रहते हैं फिर शीघ्र ही अत्यन्त शांत एवं मोटे भी हो जाते हैं।" जनरल ने अपने शब्दों की भयङ्करता पर विचार न करते हुए कह।

नेखलूदोव उस जनरल के मोटे भद्दे स्वर को सुनता, उसके कठोर रूखे

अङ्गों, भूरी भौहों युक्त निस्तेज नेत्रों, चिकने गालों तथा उसके कोट के कालर को देखता रहा जिस पर कि श्वेत क्रॉस लगा हुआ था। वह क्रॉस जिस पर कि वह अत्यन्त गर्व अनुभव करता—विशेषतया इसलिए कि उसने इसे अनेक क्रूर हत्यायेंकर प्राप्त किया था। वह जानता था कि इस वृद्ध व्यक्ति की बात का उत्तर देना अथवा उसके शब्दों का अर्थ समझना भी व्यर्थ है। उसने दूसरा एक और प्रयत्न किया तथा बंदिनी शुश्तोवा के विषय में पूछा, जिसकी मुक्ति के लिए प्रातःकाल की सूचना के अनुसार आदेश दिए जा चुके थे।

"शुश्तोवा—शुश्तोवा? ये लोग इतने अधिक हैं कि इनके नाम कहाँ तक स्मरण रहें।" उसने मानो इस बात पर असन्तोष प्रकट करते हुए कि यहाँ इतने बंदी हैं क्यों। घण्टी बजाई तथा अपने सैक्रेट्री को बुलवाया। तबतक वह नेखलूदोव को सरकारी नौकरी करने के लिए समझाने लगा। उसने कहा कुलीन एवं ईमानदार व्यक्तियों (अपनी स्वयं की उन्हीं में गणना करते हुए) की जार को तथा देश को—नितान्त आवश्यकता है।" अपने कथन को समाप्त करने के लिए उसने कहा:

"मैं वृद्ध हो चुका हूँ, फिर भी सामर्थ्य के अनुसार सेवा कर रहा हूँ।"

सैक्रेट्री पतला दुबला व्यक्ति था। उसके नेत्र चंचल एवं बुद्धिमत्तापूर्ण थे। उसने आकर बतलाया कि शुश्तोवा किसी अज्ञात किले में बन्दी है तथा उसके विषय में मुझे कोई आज्ञा प्राप्त नहीं हुई है।

"आज्ञा प्राप्त होते ही हम उसे उसी दिन मुक्त कर देंगे। हम लोग इन्हें रखना नहीं चाहते; न हम इनकी मिलाई को ही महत्व देते हैं।" जनरल ने कहा और मुस्कुराने की चेष्टा की जिससे कि उसकी वृद्ध आकृति और बिगड़ गई।

इस भयंकर वृद्ध पुरुष के प्रति अपने हृदय में उत्पन्न होने वाली घृणा तथा दया की मिश्रित भावना को प्रगट न होने देने की चेष्टा करते हुए नेखलूदोव उठा। वृद्ध ने अनुभव किया कि अपने पुराने साथी के इस बहके हुए अविवेकी पुत्र के प्रति इतनी कठोरता दिखलाना कुछ तथा उपदेशात्मक बातें कहेबिना जाने देना उचित नहीं रहेगा।

"अच्छी बात है, जाओ प्रिय बन्धु! देखो जो कुछ मैंने कहा है उसका बुरा न मानना। यह तो मेरे प्रेम ने कहलवाया है। जिन्हें हमने बन्दी कर रखा है ऐसे व्यक्तियों का साथ मत रखना। इनमें से कोई भी निर्दोष नहीं है। ये सबके

सब अत्यन्त पतित हैं।" उसने इस ढङ्ग से कहा जिसमें कोई सन्देह का स्थान नहीं रहता।

और उसने सन्देह भी नहीं किया; इसीलिए नहीं कि बात ही ऐसी थी किंतु इसलिए कि यदि ऐसी नहीं है तो भी उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि मैं अच्छे जीवन के अंतिम दिनों का उत्तम नायक नहीं हूँ किंतु हूँ एक आवारा जिसने कि अपनी आत्मा बेच दी है तथा अपनी वृद्धावस्था में भी बेचे जा रहा है।

"सर्वोत्तम तो यही रहेगा कि कहीं जा कर नौकरी कर लो" वह कहता रहा "ज़ार को—देश को ईमानदार व्यक्तियों की आवश्यकता है।" उसने फिर कहा। "क्यों, मान लो कि मैं तथा अन्य व्यक्ति आपकी ही भाँति नौकरा करना अस्वीकार कर दें ? फिर कौन रह जाएगा ? लोग शासन प्रणाली पर आक्षेप तो करते हैं किंतु अपना योग देना नहीं चाहते।"

दीर्घ निःश्वास छोड़कर नेखलूदोव ने झुककर अभिवादन किया, उसके लम्बे अस्थिल हाथ से अपना हाथ मिलाया तथा कमरे से चल दिया।

जनरल ने अपना सिर असंतोष से हिलाया तथा अपनी पीठ सहलाते हुए वह ड्राइङ्ग-रूम में चला गया, जहाँ कि चित्रकार उसकी प्रतीक्षा में बैठा था। आर्क के जोन द्वारा दिया गया उत्तर लिख ही लिया गया था। जनरल ने अपना नक-चश्मा लगाया तथा पढ़ा: "वे अपने-अपने दिव्य शरीर से उत्पन्न होने वाले प्रकाश से एक-दूसरे को पहिचानेंगी।"

"आह !" जनरल ने अनुमोदन किया तथा नेत्र बन्द कर लिए "किंतु यदि प्रकाश एक से हों तो कोई कैसे पहिचान सकता है ?" उसने पूछा तथा चित्रकार की उङ्गलियों में पुनः उङ्गलियाँ डालकर तश्तरी पर रखीं।

गाड़ीवान नेखलूदोव को द्वार से बाहर ले गया।

यहाँ तो हृदय ऊब गया श्रीमान् जी !" उसने नेखलूदोव की ओर मुड़कर कहा "मेरी इच्छा हुई कि आपको छोड़कर चला जाऊँ।"

नेखलूदोव ने सहमति प्रकट की "हाँ ! हृदय ऊब जाता है।" तथा उसने एक गहरी निःश्वास तथा हल्के भूरे बादलों की ओर देखकर जोकि आकाश में तैर रहे थे, तथा नेवा नदी पर नौकाएँ तथा स्टीमरों से उत्पन्न छोटी लहरों को देख चैन की साँस ली।

२०

अगले दिन माशलोवा का अभियोग सीनेट में प्रस्तुत होने वाला था तथा नेखलूदोव और उसके एडवोकेट की भेंट भवन के उस भव्य सिंहद्वार पर हुई, जहाँ कि कितनी ही बग्घियाँ खड़ी हुई थीं। पहिली मंजिल पर चढ़ने के लिए बनी हुई शोभायमान एवं प्रभावोत्पादक सीढ़ियों पर चढ़कर फनारीन बाईं ओर मुड़कर एक द्वार से अंदर गया, जिसपर कोड के नियमों के लागू होने की तिथियाँ लिखी हुई थीं। उसे इस भवन की पूर्ण जानकारी थी।

एक छोटे कक्ष में उसने अपना ओवर कोट उतारा। वहाँ एक वर्दी धारी नौकर ने उसे बतलाया कि सब सीनेटर आ चुके हैं और जिसकी प्रतीक्षा थी वह सीनेटर भी अभी आ गया है। अबाबील की पूँछ के रंग का कोट पहिने सफेद कमीज़ पर सफेद टाई बाँधे फनारीन अपने ओठों पर आत्मविश्वस्त मुस्कयान के साथ दूसरे कक्ष में प्रविष्ट हुआ; जिसकी दाहिनी ओर एक बड़ा कप-बोर्ड तथा एक मेज रखी हुई थी तथा बाईं ओर चक्रदार गोल झीना था। इस झीने पर अपनी बाँह के नीचे एक फाइल दबाए वर्दी पहिने एक युवक अधिकारी चढ़ रहा था। इस कक्ष में लम्बे श्वेत केशों से युक्त पादरी की सी आकृति वाला वृद्ध था। सबका ध्यान उसकी ही ओर आकर्षित था। उसने एक छोटा कोट तथा भूरा पाजामा पहिन रखा था। उसके दो चपरासी आदर से खड़े थे।

श्वेत कपड़े पहने वृद्ध उस कपबोर्ड में घुस गया तथा उसको उसने अन्दर से बंद कर लिया।

फनारीन ने एक अपनी हीं भाँति सफेद टाई और कोट पहिने अपने सहयोगी एडवोकेट को देखा तथा उन दोनों में तुरंत ही घुट कर बातें होने लगीं। इस मध्य नेखलूदोव कक्ष में उपस्थित व्यक्तियों को देखता रहा। दर्शकों में पन्द्रह व्यक्ति थे जिनमें से महिलाएँ केवल दो थीं—एक नकचश्मा लगाए युवती थी तथा दूसरी भूरे बालों वाली वृद्धा।

उस दिन एक अपमानजनक लेख के अभियोग की सुनवाई थी अतः उपस्थिति साधारणतया से अधिक विशेषतया समाचार-संसार के व्यक्ति थे।

प्रवेशक सुन्दर था, उसके कपोल लाल तथा कपड़े भव्य थे। बस फनारीन

के पास एक कागज हाथ में लेकर आया तथा उससे बोला कि आप किस हेतु पधारे हैं। यह जानकर कि वह माशलोवा के अभियोग के लिए आया है उसने कागज पर कुछ लिखा तथा चला गया। जब कपबोर्ड का द्वार खुला तब पादरी की सी आकृति वाला वृद्ध बाहर निकला। वह अब छोटा कोट नहीं पहने था किंतु उसने सुनहरी गोट लगा वस्त्र ओढ़ रखा था तथा उसके वक्षस्थल पर चमकदार प्लेटें लगी हुई थीं। उन सबसे वह एक पक्षी के सदृश लग रहा था।

इस विचित्र पहिनावे में वह वृद्ध स्वयं ही असुविधा अनुभव कर रहा था तथा अपनी चाल से अधिक-से-अधिक तेज चल कर प्रवेशद्वार के सम्मुख वाले द्वार से शीघ्र चला गया।

"यह है सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति मि० बे।" फनारीन ने नेखलूदोव से कहा और तब अपने सहपाठी से उसका परिचय कराकर उसने अभियोग के विषय में बतलाया जिसकी कि सुनवाई होने वाली थी तथा जिसे कि वह अत्यधिक रुचिपूर्ण समझता था।

अभियोग की सुनवाई शीघ्र ही आरम्भ हो गई तथा अन्य श्रोताओं के साथ नेखलूदोव भी बाईं ओर गया एवं सीनेट कक्ष में प्रविष्ट हुआ। वे सब तथा फनारीन भी कटघरे के पीछे जाकर बैठ गए। केवल पीतर्सबर्ग के ही एडवोकेट कटघरे के सामने बिछी हुई डेस्क के पास गए।

सीनेट कक्ष क्रिमनल कोर्ट की भाँति बड़ा नहीं था तथा उससे भी कम सज्जित था। सीनेट के सामने की मेज पर अवश्य हरे कपड़े के स्थान पर लाल मखमल पर सुनहली गोट लगी हुई थी। किंतु प्रत्येक न्याय-निकेतों की उपाधियाँ वहाँ उपस्थित थीं : शीसा, मूर्ति, सम्राट् का चित्र।

प्रवेशक ने सदैव की भाँति गम्भीर स्वर में पुकारा "कोर्ट आ रही है।" प्रत्येक व्यक्ति सदैव की भाँति खड़ा हो गया तथा अपनी वर्दियाँ पहने सब सीनेटर प्रविष्ट हुए एवं उच्च पीठिकायुक्त कुर्सियों पर बैठते ही अपनी मेजों पर झुक गए ये लोग फौजदारी अदालत के न्यायाधीशों की ही भाँति स्वाभाविक दीख पड़ने का प्रयत्न करने लगे।

वहाँ उपस्थित थे चार सीनेटर—निकितिन, कुर्सी पर बैठा हुआ क्लीन-शेव्ड, पतले मुंह तथा कठोर नेत्रों युक्त व्यक्ति वूल्फ, भावसूचक भिंचे ओंठ, श्वेत छोटे हाथयुक्त व्यक्ति, जिससे कि वह अभियोग संबंधी कागज-पत्रों को उलट-पलट

रहा था; स्कोवोरोदिनीकोव, भारी,मोटा तथा मुहासों से युक्त व्यक्ति—कानूनों का विद्वान-विशेषज्ञ, तथा पादरी सदृश आकृति वाला व्यक्ति बे जो कि सबके अंत में आया था।

सीनेटरों के साथ चीफ सेक्रेटरी तथा पब्लिक प्रोसीक्यूटर आए। पबलिक प्रोसीक्यूटर मध्यम कद का पतला-दुबला काले रंग का व्यक्ति था,उसके काले नेत्रों में उदासी छाई हुई थी। यद्यपि उसकी वेशभूषा काफी विचित्र थी एवं उसे देखे छः वर्ष हो गए थे फिर भी नेखलूदोव ने उसे देखते ही पहिचान लिया। विद्यार्थी जीवन में वह नेखलूदोव के अत्यन्त निकटस्थ मित्रों में रह चुका था।

"पबलिक प्रोसीक्यूटर शेलेनिन ?" नेखलूदोव ने एडवोकेट की ओर मुड़ते हुए पूछा।

"जी हाँ। क्यों ?"

" मैं इससे परिचित हूँ। बड़ा अच्छा व्यक्ति है।"

"और अच्छा पबलिक प्रेसीक्यूटर भी—काम-काजी व्यक्ति ! यह वही व्यक्ति है जिस में कि आपको अपने अभियोग में रुचि उत्पन्न करनी थी।"

"यह तो अपने अंतःकरण के ही अनुसार कार्य करेगा।" नेखलूदोव ने शेलेनिन के साथ अपने घनिष्ट एवं मैत्रीपूर्ण संबंध तथा उसके आकर्षक गुण, पवित्रता, सत्यता एवं कुलीनता को स्मरण करते हुए कहा।

" जी हाँ, अब तो विलम्ब भी बहुत हो गया।" फनारीन ने धीमे स्वर में कहा। अभियोग प्रारंभ हो चुका था तथा फनारीन उसकी रिपोर्ट सुन रहा था।

अभियोग क्या था अपील कोर्ट के उस निर्णय के विरुद्ध अपील थी जिसमें कि अपील कोर्ट ने डिस्ट्रिक्ट कोर्ट के निर्णय की पुष्टि करदी थी।

नेखलूदोव उसे सुनकर यह अभिप्राय निकालने की चेष्टा कर रहा था कि हो क्या रहा है किंतु अदालत फौजदारी की भाँति उसके सम्मुख कठिनाई यही थी कि मुख्य विषय पर तर्क न होकर इधर-उधर की बातों पर हो रहे थे। यह अभियोग एक समाचार-पत्र का था जिसने एक लिमिटेड कम्पनी के निर्देशक द्वारा किए गए ग़बन को छाप दिया था। मुख्य बात यह थी कि कम्पनी का निर्देशक अपने दायित्वों का दुरुपयोग तो नहीं कर रहा है और यदि कर रहा है तो उसको ऐसा करने से रोक दिया जाए। किंतु विचार जिन प्रश्नों पर किया जा रहा था

वे ये थे कि सम्पादक को ऐसे लेख प्रकाशित करने का अधिकार है अथवा नहीं तथा इसको प्रकाशित करने में वह दोषी किस बात का है—कलंक लगाने का अथवा अपमानजनक लेख लिखने का—तथा कलंक लगाने में अपमानित किस भाँति किया गया अथवा अपमानित करने में कलंक किस भाँति लगाया गया। वहाँ पर सर्वसाधारण विभाग द्वारा पारित किए हुए प्रस्तावों एवं नियमों पर तर्क हो रहे थे जिन्हें कि साधारण जनता समझ ही नहीं सकती थी।

नेखलूदोव की समझ में जो बातें आई थीं वह ये थीं कि वूल्फ ने कल जो कुछ भी इतनी दृढ़ता से कहा उसके उपरांत भी (कि सीनेट अभियोग की योग्यता पर निर्णय नहीं कर सकती) वह इस अभियोग में जस्टिस कोर्ट के निर्णय का खंडन करने के स्पष्ट पक्ष में था तथा शेलेनिन अपने आत्म-संयम के गुण के विपरीत अत्यधिक उत्साह से उसका विरोध कर रहा था। आत्म-नियंत्रित शेलेनिन द्वारा प्रकट की गई उत्तेजना का जिससे कि नेखलूदोव विस्मित हो गया था, कारण था उसके धन सम्बन्धी मामलों में घोटालेबाजी का ज्ञान। उसे अकस्मात् ही यह भी ज्ञात हो गया कि वूल्फ महोदय उस धोकेबाज के मकान पर हुई डिनर पार्टी में कुछ दिन पूर्व सम्मिलित हो चुके हैं।

अब वूल्फ इस अभियोग के विषय में पर्याप्त संतुलित बातें कर रहा था फिर भी उसका पक्षपात स्पष्ट प्रगट हो रहा था। इस पर शेलेनिन उत्तेजित हो उठा तथा इस साधारण से केस पर अत्यधिक उत्तेजना में अपना मत प्रगट करने लगा। यह स्पष्ट था कि शेलेनिन के भाषण से वूल्फ को क्रोध आ रहा था। वह लाल हो उठा, कुर्सी पर घूमा, आश्चर्य की मूक मुद्राएँ बनाईं तथा अत्यन्त असंतुष्ट एवं क्रोधित हो अन्य सीनेटरों के साथ उठकर वाद-विवाद-कक्ष में चला गया।

"आप किस अभियोग के लिए पधारे हैं।" प्रवेशक ने फनारीन से पुनः पूछा।

"पहिले ही बतला चुका हूँ कि माशलोवा के अभियोग में।"

"हाँ ठीक है। आज ही होगा, किंतु..."

"किंतु क्या ?" एडवोकेट ने पूछा।

"बात यह है कि वे इस पर कोई तर्क सुनना नहीं चाहते, अतः वर्तमान अभियोग पर निर्णय करने के पश्चात् सीनेटर शायद ही पुनः बाहर आएँ। किंतु मैं उन्हें सूचित कर दूँगा।"

"आपका तात्पर्य ?"

"मैं उन्हें सूचित कर दूँगा। मैं उन्हें जरूर...।" प्रवेशक ने पुनः अपने कागज पर कुछ लिखा।

वास्तव में सीनेटरों की इच्छा यही थी कि अपमानजनक लेख के अभियोग का निर्णय देकर वाद-विवाद-कक्ष में ही दूसरे कार्यो को जिनमें माशलोवा का अभियोग भी सम्मिलित था, चाय सिगरेट पीते हुए समाप्त कर दें।

२१

जैसे ही वाद-विवाद-कक्ष में मेज के चारों ओर सीनेटर बैठे, वूल्फ ने खंडन के पक्ष में पक्षपातपूर्वक तर्क प्रस्तुत करने प्रारम्भ कर दिए।

प्रेसीडेन्ट कटु स्वभाव का था, वह आज विशेष रूप से चिढ़ा हुआ था। उसके विचार अपने आत्मचरित्र में लिखे हुए उस अवसर के शब्दों पर केन्द्रित थे जबकि एक महत्त्वपूर्ण स्थान पर, जिसकी कि उसे अत्यधिक आकांक्षा थी, उसकी नियुक्ति न कर विलीआनोव की नियुक्ति कर दी गई थी। प्रेसीडेन्ट निकितिन की सत्य धारणा थी कि सर्वोच्च पदाधिकारियों के विषय में मेरी राय भविष्य के इतिहासकारों को बहुमूल्य पदार्थ देगी। उसने एक दिन पूर्व ही एक अध्याय में लिखा था कि उन दो सर्वोच्च पदाधिकारियों ने ही, जैसा कि उसने लिखा था, रूस के वर्तमान शासकों को देश को विनाश की ओर ले जाने से मुझे नहीं रोकने दिया; जिसका अर्थ केवल इतना ही था कि उन अधिकारियों ने उसको ऊँचा वेतन प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न कर दी थी। तथा अब वह विचार कर रहा था कि नई संतति के लिए यह अध्याय घटनाओं पर कितना प्रकाश डालेगा।

"जी, अवश्य !" उसने वूल्फ द्वारा कहे हुए शब्दों को सुने बिना ही कहा

बे वूल्फ की बातें उदासी से सुन रहा था तथा अपने सामने पड़े हुए कागज पर माला बना रहा था। बे पुराना उदार दलीय था। वह १८६० की की उदार दलीय रीतियों को पवित्र मानता था तथा यदि कभी वह निष्पक्षता को त्यागता तो अनुदार दल की विचारधारा का ही पक्ष लेता। अतः इस अभि-

योग में : इस बात के अतिरिक्त कि अपीलकर्ता निर्देशक धोकेबाज एवं दुश्चरित्र था, अपमानजनक लेख लिखने के कारण एक सम्पादक की गिरफ्तारी प्रेस की स्वतन्त्रता का अपहरण करने वाली है। इस एक ही बात ने बे का झुकाव अपील रद्द करने के पक्ष में कर दिया था।

जब वूल्फ ने अपने तर्कों का उपसंहार सुना दिया तब बे ने ड्राइङ्ग बनाना बन्द कर दिया तथा उदास एवं कोमल स्वर में (उसे ऐसी सत्यता प्रदर्शित करने पर स्वयं दुख होता था) संक्षिप्त में सरलता से प्रभावपूर्ण ढंग में कहा कि अपील-कर्ता का कोई औचित्य नहीं। तथा फिर अपने श्वेत बालों युक्त सिर को झुकाकर वह माला की रूपरेखा बनाने जुट पड़ा।

स्कोवोरोदिनीकोव ने जो कि वूल्फ के सम्मुख बैठा हुआ अपनी मोटी उँगलियों से अपनी दाढ़ी मूछों को मुँह में घुसेड़ रहा था, बे के चुप होते ही दाढ़ी मूँछें चबानी बन्द कर दीं तथा जोर से कर्कश स्वर मे बोला कि यह मानते हुए भी कि निर्देशक अत्यन्त धूर्त है यदि दंड का खंडन करने का कोई कानूनी आधार होता तो मैं खंडन करने के पक्ष में हो जाता किंतु क्योंकि ऐसा कोई आधार नहीं है मेरा मत बे महोदय की राय से मिलता है। उसे इस बात की प्रसन्नता थी कि यह कहकर मैंने वूल्फ के काम में रोड़ा अटका दिया है।

प्रेसीडेन्ट स्कोवोरोदिनीकोव से सहमत हो गया तथा अपील अस्वीकार हो गई।

वूल्फ असंतुष्ट हो गया, क्योंकि उसे लगा कि वह अनुचित पक्षपात करता हुआ पकड़ा गया है अतः क्रोध का अभिनय कर माशलोवा के अभियोग सम्बन्धी कागजों को खोलकर वह उनमें तल्लीन हो गया। इसी मध्य सीनेटरों ने घंटी बजाई तथा चाय लाने की आज्ञा दी एवं वे पीतर्सबर्ग में चर्चा के विषय तथा द्वन्द्व के विषय को लेकर बातचीतें करने लगे। यह एक प्रशासनिक उच्चाधिकारी का मामला था, जो कि धारा ६६५ के अन्तर्गत आने वाले अपराध में बन्दी कर लिया गया था।

"क्या असभ्यता है।" बे ने घृणा से कहा।

"क्यों, इसमें हानि क्या है ? मैं आपको एक रूसी किताब दिखला सकता हूँ, जिसमें कि एक जर्मन लेखक की योजना लिखी हुई है। पुस्तक में खुले रूप से प्रस्ताव किया गया है कि इसे अपराध क संज्ञा नहीं देनी चाहिए तथा

पुरुषों को पुरुषों से विवाह करने की अनुमति प्राप्त होनी चाहिए।" स्कोवोरोदिनी-कोव ने जली हुई सिगरेट का स्वाद से कश लगाते हुए कहा तथा वह अट्टहास कर उठा। सिगरेट उसने दो अँगुलियों से हथेली के पास लगा रखी थी।

"असम्भव !" बे ने कहा।

"मैं आपको दिखला दूँगा।" स्कोवोरोदिनीकोव ने पुस्तक का पूरा नाम तथा उसके प्रकाशन का स्थान एवं तिथि बतलाते हुए कहा।

"मैंने सुना है कि उसे साइबेरिया में किसी नगर का गर्वनर बना दिया गया है।"

"यह विचित्र बात है। पादरी अपनी सजधज में उससे मिलेगा। उन्हें उसी प्रकार के ही पादरी की भी नियुक्ति करनी चाहिए।" स्कोवोरोदिनीकोव ने कहा "मैं ऐसा एक पादरी बतला सकता हूँ।" तथा उसने अपनी जली सिगरेट का टुकड़ा 'ट्रे' में पटक दिया और अपनी दाढ़ी, मूछें जितनी भी वह अधिक-से-अधिक मुँह में डाल सकता था डालकर पुनः चबाने लगा।

प्रवेशक ने अन्दर आकर बतलाया कि माशलोवा के अभियोग की जाँच के समय नेखलूदोव एवं एडवोकेट की वहाँ उपस्थित रहने की इच्छा है।

"यह अभियोग" वूल्फ बोला "अत्यन्त विचित्र है।" तथा माशलोवा के साथ नेखलूदोव के सम्बन्धों के विषय में उसे जो कुछ भी ज्ञात था उसने सबको सुना दिया।

इस पर थोड़ी-सी बातचीतें कर तथा अपनी चाय, सिगरेटे समाप्त कर सीनेटर सीनेट-कक्ष में लौटे तथा अपमानजनक लेख के सम्बन्ध में अपना निर्णय सुनाकर माशलोवा की अपील सुनने लगे।

वूल्फ ने अपनी पतली आवाज में माशलोवा की अपील पूरी तरह से सुना दी किंतु पुनः उसके स्वर में पक्षपात तथा दण्ड की समाप्ति की स्पष्ट इच्छा प्रगट हो रही थी

"आपको कुछ कहना है ?" प्रेसीडेन्ट ने फनारीन से पूछा।

. फनारीन उठकर खड़ा हो गया तथा अपना प्रशस्त श्वेत वक्ष उभार कर प्रत्येक बात को भलीभाँति समझाते हुए उसने सिद्ध कर दिया कि छः बातों में अदालत फौजदारी ने कानून का सही अर्थ न समझकर किस भाँति गल्ती का

है। इसके अतिरिक्त उसने संक्षेप में अभियोग की समस्त घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए यह सिद्ध किया कि दण्ड देकर कितना घोर अन्याय किया गया है। उसका यह संक्षिप्त तथा प्रभावपूर्ण भाषण सीनेटरों की दयालुता को उत्तेजित करने के लिए किया गया था, जिसे कि सीनेटर अपनी कानूनी योग्यता एवं कुशाग्र बुद्धि से पहिले ही समझ चुके थे। उसका भाषण तो मात्र कर्तव्य-पालन के लिए था।

फनारीन के तर्कों के पश्चात् सबको ही यह विश्वास हो गया कि सीनेट को न्यायालय के निर्णय का अवश्य खंडन कर देना चाहिए। जब फनारीन ने अपना भाषण समाप्त कर दिया, और विजयसूचक मुस्कान से, जो कि उसके होठों पर थी, चारों ओर घूमकर देखा तो नेखलूदोव को पूर्ण विश्वास हो गया कि मैं मुकदमा जीत गया। किंतु जब उसने सीनेटरों की ओर देखा तो उसे ज्ञात हुआ कि यह मुस्क्यान तथा विजयोन्माद तो केवल फनारीन के ही मुखमंडल पर है। न तो सीनेटर ही मुस्कराए और न पब्लिक प्रोसीक्यूटर ही तथा न उनमें से किसी ने विजय-हर्ष ही प्रगट किया। वे तो उन थके हुए पुरुषों की भाँति दिखलाई दिए जो कि यह सोच रहे हों "हमने तुम्हारे जैसे बहुतों की बातें सुनी है—सब व्यर्थ बातें हैं।" तथा वे इस बात से प्रसन्न ही हुए कि इसने अपना भाषण समाप्त कर हमें यहाँ व्यर्थ रोकने से मुक्त कर दिया है। एडवोकेट के भाषण समाप्त होते ही प्रेसीडेन्ट पब्लिक प्रोसीक्यूटर की ओर मुड़ा। शेलेनिन ने स्पष्ट शब्दों में संक्षेप में अपना मत व्यक्त किया कि न्यायालय का निर्णय ज्यों-का-त्यों रहने दिया जाए। उसने कहा कि अपील के पूर्ण आधार नही हैं। इसके पश्चात् सीनेटर वाद-विवाद कक्ष में चले गए। उनकी राय भिन्न थी: वूल्फ अपील स्वीकार कर लेने के पक्ष में था। अभियोग को समझते ही बे ने भी वूल्फ के पक्ष का बड़े उत्साह से समर्थन करते हुए अपने साथियों के समक्ष कोर्ट के दृश्य का इस भाँति वर्णन किया मानों कि वह सब स्वयं देख रहा हो। निकितिन ने जो नियम पालन तथा कठोरता का सदैव से पक्षपाती था, विरोध किया। अब स्कोवोरोदिनीकोव के मत पर सब निर्भर था और उसने अपील रद्द करने के पक्ष मे अपना मत व्यक्त किया विशेषतया इसलिए क्योंकि नेखलूदोव का उस स्त्री के साथ विवाह करने का दृढ़ निश्चय उसे नैतिक आधारों के अत्यन्त विरुद्ध लगा।

स्कोवोरोदिनीकोव अनात्मवादी तथा डारविन के सिद्धान्तों में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था तथा अदृश्य नैतिकता को स्पष्ट करने वाली नीति अथवा

धर्म को न केवल घृणित मूर्खता अथवा उससे बुरा ही समझता वरन व्यक्तिगत अपमान भी मानता है। एक वेश्या के लिए इतने सब झंझट तथा नेखलूदोव एवं एक ख्याति प्राप्त एडवोकेट की सीनेट में उपस्थिति उसको अत्यन्त प्रतिकूल दिखलाई दी। इसलिए उसने अपनी दाढ़ी को पुनः मुँह में दबा लिया तथा मुँह बना कर एवं अत्यन्त चतुराई से यह प्रकट करने लगा कि मैं इस अभियोग के विषय में कुछ नहीं जानता हूँ। मैं तो केवल यह जानता हूं कि अपील के आधार पर्याप्त नहीं अतः प्रेसीडेन्ट से मेरा मत मिलता है कि अदालत का निर्णय ज्यों-का-त्यों रहना चाहिए।

अतः दण्ड पूर्ववत रहा।

२२

"घोर अन्याय !" एडवोकेट के साथ, जो कि अपने कागजों को व्यवस्थित कर रहा था, प्रतीक्षालय में जाते हुए नेखलूदोव ने कहा. "जो विषय बिल्कुल स्पष्ट है उसमें भी ये लोग केवल उसकी रूपरेखा को महत्त्व देते हैं तथा उसमें हस्तक्षेप करने से इन्कार करते हैं। घोर अन्याय !"

"अभियोग तो अदालत फौजदारी में ही बिगड़ गया था।" एडवोकेट ने कहा।

"और तो और, शेलेनिन भी अपील को अस्वीकार करने के पक्ष में था। अन्याय ! घोर अन्याय !" नेखलूदोव ने दोहराते हुए कहा "अब क्या किया जाए ?"

"सम्राट् के समक्ष अपील करेंगे और आप यहां उसे अपने प्रवास-काल में ही स्वयं प्रस्तुत कर दीजिए। मैं लिखकर आपको दे दूंगा।"

उसी समय वर्दी पहिने पदक लगाए ठिगना वूल्फ प्रतीक्षालय में नेखलूदोव के पास आया। "प्रिय प्रिन्स ! दुख है कि मैं आपकी सहायता नहीं कर सका क्योंकि अपील के आधार अपर्याप्त थे।" कहते हुए उसने अपने कंधे हिलाए, आँखें बन्द कीं और फिर चला भी गया।

वूल्फ के पश्चात् शेलेनिन भी सीनेटरों से यह सुनकर बाहर आया कि तुम्हारा पुराना साथी नेखलूदोव आया है।

"अरे ! मुझे तो कभी आशा भी नहीं थी कि तुम्हारे दर्शन यहाँ हो सकते हैं।" उसने नेखलूदोव के पास आकर केवल ओठों से मुस्कुराते हुए कहा। उसके नेत्र तो फिर भी उदास ही रहे। वह बोला, "मुझे ज्ञात ही नहीं था कि तुम पीतर्सबर्ग में हो।"

"और मुझे यह ज्ञात नहीं था कि तुम ओबर-प्रोक्योरर हो।"

"सहायक कहो।" शेलेनिन ने गलती सुधारी, "किंतु तुम सीनेट में कैसे आए ? मैंने तो वैसे ही सुना था कि तुम पीतर्सबर्ग में आए हुए हो। किंतु यहाँ क्या करने आए थे ?"

"यहाँ ? मैं यहाँ न्याय प्राप्त करने की आशा तथा एक निर्दोष बन्दिनी की रक्षा करने आया था।"

"कौन-सी स्त्री ?"

"वही, जिसके अभियोग का अभी निर्णय हुआ है।"

"ओह ! माशलोवा वाला ?" शेलेनिन ने एकाएक स्मरण कर उससे कहा, "अपील में कैसा भी कोई आधार तो था नहीं।"

"महत्त्व अपील का नहीं, उस स्त्री का है जो कि निर्दोष है फिर भी दण्ड भोग रही है।"

शेलेनिन ने दीर्घ निःश्वास छोड़ा।

"हो सकता है, किंतु फिर भी..."

"हो नही सकता. किंतु है..."

"तुम्हें कैसे ज्ञात ?"

"क्योंकि मैं भी उस दिन पंच था। मैं जानता हूँ कि हम लोगों ने गलती किस भाँति की।"

शेलेनिन विचारमग्न हो गया।

"तुमने उसी समय वक्तव्य दे दिया होता।" वह बोला।

"मैंने दिया तो था।"

"उसे कार्यालय की रिपोर्ट में लिख देना चाहिए था। यदि उसे अपील के लिए पिटीशन में भी जोड़ दिया जाता तो..."

शेलेनिन सदैव व्यस्त रहा करता तथा समाज में कम मिलता-जुलता। अतः उसने नेखलूदोव और मासलोवा के प्रेम-सम्बन्ध के विषय में कुछ नहीं सुना था। नेखलूदोव यह समझ गया तथा उसने निश्चय कर लिया कि मासलोवा के प्रति अपने सम्बन्धों को इससे व्यक्त न करना ही सर्वश्रेष्ठ रहेगा।

"हाँ ! किंतु फिर भी जूरी का निर्णय बहुत ही अस्पष्ट लगता है।"

"सीनेट को ऐसा कहने का कोई अधिकार नहीं है। यदि सीनेट लॉ कोर्टों के निर्णयों का अपने दृष्टिकोणों के अनुसार पुनर्निरीक्षण करने लगे कि वे निर्णय सही हैं अथवा गलत तो जूरी के निर्णय का अभिप्राय ही समाप्त हो जाएगा। यह कहने की तो कोई आवश्यकता ही नहीं कि सीनेट के टिकने का आधार ही समाप्त हो जाएगा तथा न्याय के समर्थन के स्थान पर उल्लंघन होने का भय उत्पन्न हो जाएगा।" शेलेनिन ने हाल के सुने हुए अभियोग का स्मरण करते हुए कहा।

"मैं इससे अधिक कुछ नहीं जानता कि स्त्री बिल्कुल निर्दोष है तथा उसको अनुचित दण्ड से बचाने की अन्तिम आशा भी नष्ट हो गई है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी एक घोरतम अन्याय का समर्थन कर दिया है।"

"इसका समर्थन नहीं हुआ। सीनेट ने न तो अभियोग की योग्यता को देखा और न देख ही सकती है।" शेलेनिन ने कटाक्ष करते हुए कहा।

"मैं समझता हूँ कि तुम अपनी मौसीजी के यहाँ ठहरे हुए हो।" शेलेनिन ने विषय-परिवर्तन करने की इच्छा से कहा, "उन्होंने मुझे कल ही बतलाया था कि तुम यहाँ आए हुए हो तथा उन्होंने सायंकाल घर पर आकर तुमसे मिलने के लिए कहा था। कोई विदेशी उपदेशक प्रवचन करने वाले थे।" और शेलेनिन पुनः अपने ओठों में ही मुस्कुराया।

"हाँ, मैं वहाँ उपस्थित था किन्तु निराश हो चला गया।" नेखलूदोव ने शेलेनिन के विषय बदल लेने का बुरा मानते हुए कहा।

"क्यों, निराश क्यों ? अंततोगत्वा यह धार्मिक भावनाओं का स्पष्टीकरण ही तो है ! भले ही एक-पक्षीय तथा साम्प्रदायिक ही क्यों न सही।" शेलेनिन ने कहा।

"क्यों, यह तो केवल भ्रमपूर्ण परिहास है।"

"आह, प्रियवर नहीं। विचित्रता तो यह है कि हम लोग चर्च की शिक्षाएँ इतनी कम जानते हैं कि हमें उनमें कोई न कोई नवीन ईश्वरोक्ति दिखलाई देती है, जिसमें कि होते हैं हमारे ही मौलिक सिद्धान्त।" शेलेनिन ने इस भाँति कहा मानों कि अपने नए विचारों को प्रकट करने की उसे शीघ्रता हो।

नेखलूदोव ने शेलेनिन की ओर खोजपूर्ण एवं आश्चर्यपूर्ण दृष्टि से देखा तथा शेलेनिन ने अपने नेत्र झुका लिए जिनमे कि न केवल उदासी ही थी वरन् दुर्भावना भी थी।

"तो क्या तुम चर्च के सिद्धान्तों में विश्वास करते हो ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"हाँ, वास्तव में।" शेलेनिन ने निष्प्राण नेत्रों से सीधा देखते हुए उत्तर दिया।

नेखलूदोव ने एक निःश्वास लिया।

"यह तो बड़ा विचित्र है।" वह बोला।

"खैर, फिर कभी बातें होंगी।" शेलेनिन बोला, "मैं आ रहा हूँ।" उसने प्रवेशक को उत्तर दिया, जो कि उसके पास सम्मान प्रदर्शित करता हुआ आ चुका था। "हाँ ! फिर मिलेंगे।" उसने निःश्वास पूर्वक कहा "किन्तु क्या मैं तुम्हें खोजने में समर्थ हो सकूँगा ? मैं तुम्हें सात बजे सायं डिनर के समय सदैव घर ही मिलूँगा। मेरा पता है नादेज्दीन्स्काया।" और उसने अपना मकान नम्बर बतलाया। "आह ! समय स्थिर नही रहता।" कहकर केवल होठों मे ही मुस्कुराता हुआ वह मुड़ा।

"यदि हो सका तो आऊँगा" नेखलूदोव ने कहते हुए अनुभव किया कि एक व्यक्ति जो कभी मेरा इतना निकटस्थ मित्र था आज तनिक से वार्तालाप मे यदि शत्रु नहीं तो कितना अपरिचित, दूरस्थ तथा अबोधगम्य हो गया है।

२२

जब नेखलूदोव का शेलेनिन से एक विद्यार्थी के रूप मे परिचय हुआ था तब वह एक सुयोग्य पुत्र, सच्चा मित्र तथा अपनी अवस्था को देखते हुए विश्व का शिक्षित, सदा भव्य दिखलाई देने वाला, सौंदर्यवान, विशेष युक्तियों से युक्त

व्यक्ति था फिर भी था ईमानदार तथा सत्यवादी भी। बिना किसी विशेष श्रम तथा पाडित्य प्रदर्शन के उसने अच्छी पढ़ाई की और अपने निबन्धों पर पुरस्कार प्राप्त किए।

वह अपने नवयुवक जीवन का ध्येय न केवल शब्दों मे ही वरन् कार्यो से मानव-जाति की सेवा करना मानता था। उसे राज्य की सेवा करने के अतिरिक्त मानव-जाति को लाभ पहुँचाने का दूसरा मार्ग नही दिखलाई देता था। अतः अपना अध्ययन समाप्त करते ही उसने उन समस्त गतिविधियों का विधिपूर्वक निरीक्षण किया जिसमें कि वह अपना जीवन खपा सकता था तथा यह निश्चय कर कि मै चांसलर के द्वितीय विभाग में सर्वाधिक उपयोगी रहूँगा जनता की सेवा वाले विभाग में वह प्रविष्ट हो गया, जहाँ कि नियम बनाए जाते थे। किंतु, अपने ऊपर सौंपे गए दायित्वो का, पूर्ण सचेत हो, निर्वाह करते हुए भी इस नौकरी से उसकी लाभदायक सिद्ध होने की आकांक्षा की संतुष्टि नहीं हुई और न उसमें यह भावना ही जाग्रत हो सकी कि मैं 'उचित कार्य' कर रहा हूँ।

उसके संकुचित एवं व्यर्थ के अहं ने उसके इस असंतोष को इतना अधिक बढ़ा दिया कि उसने चांसलर के कार्यालय मे त्यागपत्र दे दिया तथा सीनेट मे नौकरी कर ली। यहाँ अपेक्षाकृत अच्छा था किंतु उस असतोष ने यहाँ भी उसका पीछा न छोडा; उसे अनुभव हुआ कि जो कुछ मेरी आशाएँ थीं तथा जो होना चाहिए था उसमें बडा अन्तर है।

जब वह सीनेट में था तो उसके सम्बन्धियों ने उसके लिए बेडचैम्बर के जैन्टिलमैन का पद दिला दिया था तथा उसे कसीदा की हुई वर्दी एवं श्वेत लिनन का एप्रन पहिन कर गाड़ी में सवार हो सब प्रकार के व्यक्तियो के पास धन्यवाद देने इसलिए जाना पड़ा कि उन लोगों ने उसे अनुचर की स्थिति में रख दिया। उसने बहुत विचार किया किंतु वह इस पद की वर्तमानता का औचित्य ही न समझ सका तथा उसे सीनेट में यह और भी अधिक खलता कि यह 'उचित कार्य' नहीं है। फिर भी वह उसको अस्वीकार नहीं कर सकता था क्योंकि इससे उन लोगों के क्रुद्ध हो जाने का भय रहता था जिन्होने उसे यह स्थान दिलाया था तथा जिनका विचार था कि इस पद से उसे बहुत संतोष मिला है और इसलिए भी कि उसकी नीच प्रकृति की चाटुकारिता होती थी। जब वह सुनहली कसीदा-कारी की हुई वर्दी पहिनकर शीशे मे अपना चेहरा देखता तो उसे प्रसन्नता होती।

तथा उसकी स्थिति के कारण कुछेक लोगों का आदर-सम्मान करना भी उसे प्रसन्नता ही प्रदान करता।

इसी भाँति की घटना तब भी हुई थी जबकि उसका विवाह हुआ था। उसके लिए सांसारिक दृष्टिकोण से एक अत्यन्त सुन्दर पत्नी खोज निकाली गई; और उसने विवाह भी कर लिया, विशेषतया इसलिए कि इन्कार करने से दोनों को ठेस पहुँचती—उस नवयुवती को जिसकी कि इच्छा उसके साथ विवाह करने की थी तथा उन लोगों को भी जिन्होंने कि उसके इस विवाह को आयोजित किया था। विवाह का एक कारण यह भी था कि एक कुलीन परिवार की सुन्दरी कन्या के साथ विवाह करने से उसके अहं को बढ़ावा मिलता था तथा इससे उसे आनन्द होता था। किंतु शीघ्र ही निर्णय हो गया कि यह विवाह उसकी सरकारी नौकरी एवं कोर्ट में उसकी स्थिति से कहीं कम 'उचित कार्य' सिद्ध हुआ।

पहिले बालक के जन्म के पश्चात ही उसकी पत्नी ने निश्चय कर लिया कि अब मैं अधिक बालकों को जन्म न दूँगी तथा वह सांसारिक विलासी जीवन व्यतीत करने लगी जिसमें कि शेलेनिन को भी भाग लेना पड़ा—चाहे इच्छा से अथवा अनिच्छा से।

वह कोई खास सुन्दर तो थी नहीं किंतु शेलेनिन के प्रति सच्ची थी तथा लगता था कि इतने सब प्रयत्न करने के पश्चात् भी वह जीवन से कुछ ग्रहण न कर सकी थी। जो कुछ भी उसने ग्रहण किया वह थी थकावट; किंतु फिर भी वह अत्यन्त उत्साह से उसी भाँति जीवनयापन करती रही, यद्यपि इससे उसके पति के जीवन में घुन लगता जा रहा था। तथा जीवन के इस क्रम को परिवर्तित करने के पति के समस्त प्रयत्न पत्नी की दृढ विश्वास रूपी पाषाणी दीवाल से टकरा कर चूर-चूर हो जाते। पत्नी की समस्त सहेलियाँ तथा सम्बन्धीगण उसके विचारों का समर्थन करते कि तुमने उचित मार्ग का अवलंबन किया है।

पतली टाँगों तथा सुनहले केशों युक्त छोटी लड़की में उसका मोह नहीं था। विशेषतया इसलिए कि उसकी इच्छा के विपरीत ढङ्ग से लड़की का पालन-पोषण हो रहा था। पति-पत्नी के मध्य गलतफहमियाँ हो जातीं, एक-दूसरे की बात न समझने से उनमें असंतोष उत्पन्न हो जाता, तथा अपनी मर्यादा पर आँच न आने देने के लिए बाहर के व्यक्तियों से छिपाते हुए गुपचुप कहा-सुनी भी होती रहती। इस सबके कारण घर पर उसका जीवन भार बनकर रह जाता तथा

उसका जीवन अपनी नौकरी एवं कोर्ट से कहीं कम 'उचित कार्य' हो गया।

किंतु. इन सबसे ऊपर, उसका धार्मिक ढङ्ग 'उचित कार्य' नहीं था। समय तथा अपने परिवार के लोगों के ही अनुसार विचार शक्ति के जाग्रत होने पर उसने भी धार्मिक अंधविश्वासों की बेड़ियाँ, जिनमें पलकर वह बड़ा हुआ था बिना किसी श्रम के काट कर फेंक दी। उसे उस समय का ठीक स्मरण भी नही था कि कब मैंने इन अंधविश्वासों मे मुक्ति प्राप्त की थी। वह ईमानदार तथा निर्भीक था। इसी कारण अपने यौवन के विकास काल मे, जबकि वह विद्यार्थी था, उसने अपने अन्तरङ्ग मित्र नेखलूदोव से यह नहीं छिपाया कि मैं राज्य द्वारा अपनाए गए धर्म में विश्वास नहीं करता। कठिनाई मे धार्मिक कार्यों के अभाव में एक दिन व्यतीत हुआ होगा कि उस पर पारिवारिक दबाव आ पड़ा जब कि उसके पिता का देहान्त हो गया तथा उसकी स्मृति में प्रार्थनाएँ की गईं—और उसकी माता की इच्छा थी, जिसके पीछे कि आम धारणा का भी हाथ था, कि तुम्हें व्रत करके ईसामसीह के स्मरणार्थ भोज के लिए तैयार हो जाना चाहिए। किंतु इन सबके अतिरिक्त सरकारी नौकरी में भी आवश्यक था कि उसे सब प्रकार की प्रार्थनाओं, संस्कारो, धन्यवाद-अवसरों पर उपस्थित रहना चाहिए। इन प्रार्थनाओं मे सम्मिलित होने के लिए उसे दो में से एक मार्ग चुनना था : या तो जिस बात में विश्वास नहीं करता था उसमें अपना विश्वास प्रगट करने का अभिनय करना—सच्चा व्यक्ति होने के नाते ऐसा वह कर नहीं सका—अथवा यह निश्चय कर कि धर्म के ये समस्त वाह्य आलंबन झूँठे है अपना जीवन-क्रम ही बदल डालना जिससे कि उसे ऐसे उत्सवों पर उपस्थित रहने को बाध्य न होना पडे। छोटी-सी दिखलाई देने वाली इस बात के लिए उसे बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ता—अपने निकटस्थ मित्रों से शत्रुता मोल ले लेता तथा उनसे निरन्तर झड़पें तो होती ही रहती। इसके अतिरिक्त उसे अपना समस्त ऐश्वर्य भी त्यागना पडता : नौकरी से त्यागपत्र देना पड़ता तथा अपने विचारानुसार उसे उस सब मानव-सेवा से विमुख होना पड़ता जिसे कि वह अपनी इस नौकरी द्वारा कर रहा था तथा जिसके विषय में उसे विश्वास था कि भविष्य में और भी अधिक कर सकूँगा। इतना बड़ा त्याग करने के लिए व्यक्ति को पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि मेरा विचार बिल्कुल सही है। तथा उसे पूर्ण विश्वास था कि मेरा विचार सही है, ठीक उसी भाँति जैसे कि आजकल का कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति, जिसे कि इतिहास का थोड़ा-सा भी ज्ञान हो तथा जो जानता हो कि

धर्मों की उत्पत्ति कैसे हुई विशेषतया चर्च-ईसाइयत की, इस विचार से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। वह यह जाने बिना न रह सका कि चर्च की शिक्षाओं की सत्यता को स्वीकार न करने का मेरा दृष्टिकोण उचित है।

किन्तु दैनदिन जीवन में उसे सत्यवादी व्यक्ति होते हुए भी थोड़े से आडम्बरों में पड़ना ही पड़ता। वह कहता कि अनुचित वस्तु के साथ न्याय करने के लिए उस अनुचित वस्तु का अध्ययन करना आवश्यक है। यह थी तो छोटी सी असत्यता किन्तु इसने उसे उस विशाल असत्यता में ला डुबोया जिसमें कि वह अब पड़ा हुआ गोते लगा रहा था।

अपनी आत्मा से यह प्रश्न करने से पूर्व ही कि जिस धर्म परायणता में मैं पला और बड़ा हुआ हूँ उसमें कोई सत्यता है अथवा नहीं उसने अपना उत्तर निश्चित कर लिया—वही धर्म परायणता, जिसको स्वीकार कर लेने की प्रत्येक व्यक्ति उससे आशा करता तथा जिसके बिना वह मानव-जाति केलिए अपनी अत्यन्त लाभदायक गतविधियों को यथास्थिर न रख सका। अतः इस प्रश्न के हल करने के लिए उसने वोल्टायर, शोपेनहावर, हरबर्ट स्पेन्शर अथवा कोमटे आदि किसी की पुस्तकें न पढ़कर हेगेल की मनोविज्ञानशास्त्र पर, तथा विनेट एवं खोमियाकोव की धर्म सम्बन्धी पुस्तकें पढीं। उन पुस्तकों में उसे वे बातें स्वतः प्राप्त हो गईं जिनकी कि वह खोज में था—कुछ कुछ चित्त की शान्ति की तथा उस धार्मिक शिक्षा का एक प्रमाण मिल गया, जिसके कि वातावरण में उसकी शिक्षा दीक्षा हुई थी। उस धार्मिक शिक्षा को उसकी विचार शक्ति ने बहुत काल से स्वीकार करना बन्द कर दिया था, किन्तु उसके बिना उसका समस्त जीवन दुख से भर गया। इस दुख को दूर करने में उस शिक्षा की स्वीकृति ही समर्थ थी।

अतः उसने भी उसी सर्वसाधारण मिथ्यावाद को स्वीकार कर लिया जिससे सिद्ध होता है कि अकेले एक व्यक्ति की बुद्धि सत्य का साक्षात्कार करने में समर्थ नहीं; वरन मानवों का समूह ही सत्य से साक्षात्कार कर सकता है तथा चर्च आदि द्वारा बतलाई गई ईश्वरोक्ति ही साक्षात्कार में सहायक होती है। उसके पश्चात् से ही, मिथ्यात्व से अनभिज्ञ रह, उसने शान्त चित्त हो मृतकों की प्रार्थनाओं में जाना, विश्वास करना, मूर्तियों के सम्मुख क्रॉस बनाना आरम्भ कर दिया तथा पूर्ववत जारी रखा अपनी नौकरी करना भी जिसके द्वारा कि उसे विश्वास था कि मैं मानव-जाति की सेवा कर रहा हूँ। तथा जिस नौकरी के कारण उसके नीरस पारिवारिक जीवन मे उसे विश्रान्ति प्राप्त होती रहती थी। यद्यपि उसकी

विचारधारा यही थी किन्तु फिर भी उसका विश्वास था कि धर्म अपने समस्त उपकरणों सहित, और अन्य वस्तु की ही भाँति, उनसे अधिक 'उचित कार्य' नहीं था। यही कारण था कि उसके नेत्रों में सदैव उदासी छाई रहती।

नेखलूदोव से उसका परिचय बहुत पुराना था। वह नेखलूदोव को तभी से जानता था जब वह इन असत्य धारणाओं एवं मिथ्यातत्व के प्रपंच में नहीं था। नेखलूदोव को देखते ही उसे अपना अतीत स्मरण हो आया कि मैं पहिले किन विचारों का था। नेखलूदोव को जब उसने अपने नए धार्मिक दृष्टिकोणों की ओर इंगित करने की शीघ्रता की तब उसे सदैव से अधिक अनुभूति हुई कि यह 'उचित कार्य' नहीं है तथा इसीलिए वह बहुत अधिक दुखी हो गया। अपने पुराने मित्र से बहुत दिनों में मिलने की प्रसन्नता के पहिले आवेश की समाप्ति के पश्चात् ही नेखलूदोव ने भी इसका अनुभव कर लिया था।

अत: यद्यपि एक-दूसरे ने आपस में पुन: मिलने का वचन दिया था फिर भी दोनों में से न तो किसी ने मिलने का प्रयत्न ही किया और न वे आपस में मिले ही।

२४

सीनेट से निकलकर नेखलूदोव तथा एडवोकेट दोनों ही साथ-साथ पैदल चल दिए। एडवोकेट ने अपने गाड़ीवान को गाड़ी पीछे-पीछे ले चलने की आज्ञा दी। एडवोकेट ने नेखलूदोव को एक प्रशासनिक उच्चाधिकारी की कथा सुनाई, इस कथा के विषय में सीनेटर बातचीत कर रहे थे। उसने बतलाया कि यह रहस्य कैसे खुला और उस व्यक्ति को, जिसे कि कानून के अनुसार किसी खान में डाल देना चाहिए था, किस प्रकार साइबेरिया के एक नगर का प्रशासक बनाकर भेज दिया गया है। इस कथा को इसकी समस्त अपवित्र बातों सहित समाप्त कर वह नेखलूदोव को बडे आनन्द में आकर बतलाने लगा कि कितने ही प्रभावशाली व्यक्तियों ने किस भाँति कभी न बन चुकने वाले किसी भवन के निर्माण के लिए एकत्रित किए हुए धन में से ढेर सारे रुपए चुरा लिये हैं। यह वही भवन था जिसको कि आज प्रभात में ही उन दोनों ने निर्मित होते देखा था। उसने यह भी बतलाया कि किस भाँति अमुक सज्जन की पत्नी को स्टाक एक्सचेंज से दसियों लाख डालर का लाभ हुआ तथा अमुक व्यक्ति किसी दूसरे अमुक व्यक्ति को अपनी पत्नी बेचने को सहमत हो गया है। एडवोकेट ने उच्चाधिकारियों की धोखेधड़ी

तथा सब प्रकार के अपराधों की कथाएँ भी सुनाईं तथा यह भी बतलाया कि वे लोग कारागार में न होकर भिन्न-भिन्न प्रशासनिक संस्थाओं के सभापति बने बैठे हैं। एडवोकेट की इन कहानियों में, जिनका उसके पास अक्षय भंडार प्रतीत होता था, उसे अत्यन्त आनन्द आ रहा था। वह इन कहानियों से सिद्ध करना चाहता था कि पीतर्सबर्ग के इन पदाधिकारियों के धन प्राप्ति के उपायों से मेरा ढंग कहीं श्रेष्ठ है। कहानियाँ भी स्वयं यही स्पष्ट करती थीं। इसलिए उसे आश्चर्य तो तब हुआ जबकि कहानी का अन्त सुने बिना ही नेखलूदोव उससे अभिवादन कर एक गाड़ी किराये की लेकर उस पर चढ़कर चल दिया।

नेखलूदोव बहुत उदास हो गया। उसकी उदासी का मुख्य कारण था कि सीनेट ने अपील रद्द कर निर्दोष माशलोवा की यातनाओं का समर्थन कर दिया है तथा एक कारण यह भी था कि अपील रद्द हो जाने से अब उन दोनों का जीवन एक ग्रन्थि में बँधना और भी कठिन हो गया है। वर्तमान बुराइयों की भयङ्कर कहानियों ने, जो कि एक एडवोकेट ने इतने उत्साह में कही थीं, उसकी उदासी को और बढ़ा दिया तथा शेलेनिन की कठोर, उदास दृष्टि ने भी उसे उदास कर दिया। यही शेलेनिन कभी बड़े मधुर स्वभाव वाला, स्पष्टवक्ता एवं कुलीन व्यक्ति था। शेलेनिन की दृष्टि उसके मस्तिष्क में चक्कर काटती रही।

घर आने पर द्वारपाल ने उसे एक पत्र दिया तथा घृणा के भाव में बोला कि एक औरत ने यह पत्र हॉल में बैठकर लिखा था। यह शुस्तोवा की माँ का पत्र था। उसने लिखा था:—

"मैं अपनी पुत्री के हितैषी तथा रक्षक को धन्यवाद देने आई थी। मेरी प्रार्थना है कि आप हमसे मिलने के लिए वासीलीएविस्की, ५वीं पंक्ति, मकान न०...पर पधारें। वेरा दुखोवा के कारण आपका आना अत्यन्त आवश्यक है। आपको इस बात का भय नहीं होना चाहिए कि हम लोग कृतज्ञताओं का प्रदर्शन कर आपको उबा डालेंगे। हम कृतज्ञता नहीं प्रगट करेंगे।"

बोगातीरीओव का भी एक पत्र था। बोगातीरीओव नेखलूदोव का पुराना साथी तथा सम्राट का एडीकांग था, जिसे कि उसने साम्प्रदायिकों के आधार पर सम्राट को स्वयं पिटीशन देने को कहा था। बोगातीरीओव ने अपने बड़े, दृढ़ लेख में लिखा था कि अपने वचनों के अनुसार मैं पिटीशन स्वयं सम्राट् के कर कमलों में दूँगा; किन्तु विचार करने पर मुझे यह अधिक उचित जान पड़ा कि आप उस व्यक्ति के पास स्वयं जाकर पहिले उससे मिल लें।

पिछले कुछ दिनों से नेखलूदोव के ऊपर जो प्रभाव पड़ा था उससे उसकी यह आशा कि मैं कुछ करने में सफल हो जाऊँगा बिल्कुल ध्वंस हो गई। मास्को से उसकी बनाई हुई योजनाएं उसे यौवन के उन स्वप्नों की भाँति प्रतीत हुईं जो जीवन के संघर्षों के सामने आने पर अनिवार्य रूप से भ्रमपूर्ण सिद्ध हो जाती हैं। फिर भी पीतर्सबर्ग के निवासकाल में जो कुछ भी करने का उसने निश्चय किया कि कल बोगीतीरीग्रोव से मिलकर बातें करूँगा तथा जो कुछ भी वह कहेगा करूँगा एवं उस व्यक्ति से मिलने जाऊँगा जिसके ऊपर कि साम्प्रदायिकों का अभियोग निर्भर है।

उसने अपने बस्ते से साम्प्रदायिकों का पिटीशन निकाला तथा उसे पढने लगा। तभी द्वार पर खटखटाहट हुई एवं एक वर्दीधारी नौकर काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना का यह संदेश लेकर आया कि चलिए आपको काउन्टेस ने ऊपर बुलाया है।

नेखलूदोव ने उत्तर दिया "अभी आया।" तथा कागजों को बस्ते में पुनः रख वह काउन्टेस के कक्ष में गया। मार्ग में खिड़की में से मेरियेते के कुम्भैत घोड़ों की जोड़ी को मकान के मामने खड़ा देख वह एकाएक प्रसन्न हो उठा तथा मुस्कराने की इच्छा हो आई।

मेरियेते काउन्टेस की आराम कुर्सी के पास हाथ में प्याला लिए काला हैट लगाए बैठी हुई थी। आज उसने काले वस्त्र नहीं, किंतु पहिन रखे थे विभिन्न हल्के रंगों के वस्त्र। उसके सुन्दर हास्यपूर्ण नेत्र चमक रहे थे तथा किसी विषय पर वह काउन्टेस से विचार कर रही थी। नेखलूदोव के प्रकोष्ठ में प्रवेश करने से एक क्षण पूर्व ही मेरियेते ने कोई अत्यधिक हास्य की बात कही थी। हास्य इतना अश्लील था—जैसा कि उसकी हँसी के ढंग से ही प्रगट हो रहा था—कि मृदुल-स्वभावी, मूँछों से युक्त काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना का मोटा शरीर हँसी के मारे हिल रहा था जबकि वह अपने मुस्कुराते मुख को तनिक तिरछा किए, अपने सिर को थोड़ा सा झुकाये, अपने हँसमुख सजीव मुखमण्डल से एक विशेष शरारत का भाव प्रकट करती हुई अपनी संगिनी की ओर देख रही थी।

जो थोड़े से शब्द नेखलूदोव के कानों में पड़ गए थे उनसे उसने समझ लिया था कि उन दोनों में पीतर्सबर्ग के दूसरे समाचार साइबेरिया में नियुक्त नए प्रशासक के विषय में बातें हो रही थीं तथा इसी विषय में मेरियेते ने काउन्टेस से कोई इतनी हास्यपूर्ण बात कही थी जिसे सुनकर वह नियंत्रण में न रह सकी।

"तुम तो मुझे मार डालोगी ।" उसने खाँसते हुए कहा ।

"कहिए प्रसन्न तो हैं ।" कहकर देखलूदोव बैठ गया । वह मन ही मन मेरियेते की चपलता की निन्दा करना ही चाहता था कि मेरियेते ने उसके नेत्रों मे क्रोध एवं कुछ असतोष भी देखकर न केवल अपने मुख का भाव ही यकायक बदल लिया किन्तु अपने चित्त की दिशा भी मोड़ ली । (वह उसे तब से ही प्रसन्न करना चाहती थी जब से कि उसका परिचय हुआ था) । वह अपने जीवन से एकाएक क्रुद्ध एवं असन्तुष्ट हो उठी, मानो कि वह किसी वस्तु को खोज रही हो तथा उसके पीछे झगड़ रही हो । यह बात नही कि वह अभिनय कर रही हो किंतु वास्तव में उसके चित्त की वही दशा हो गई जो कि नेखलूदोव के चित्त की थी । यद्यपि उसके लिए यह बतलाना असम्भव था कि उस समय नेखलूदोव के चित्त की क्या दशा थी ।

उसने नेखलूदोव से पूछा कि आपके उन सब कार्यों का क्या हुआ । नेखलूदोव ने सीनेट मे अपनी असफलता तथा शेलेनिन की भेंट के विषय में बतलाया ।

"आह ! वह कितना पवित्रात्मा पुरुष है ! वास्तव में वह तो निभय, निष्कलंक वीर है । एक पवित्रात्मा ! " दोनों महिलाओं ने पीतर्सबर्ग के समाज में शेलेनिन के लिए प्रचलित विशेषण का एक साथ प्रयोग करते हुए कहा ।

"उसकी पत्नी कैसी है ?" नेखलूदोव ने पूछा ।

'उसकी पत्नी ! अस्तु, मैं किसी की आलोचना नहीं करना चाहती, किन्तु वह शेलेनिन को पहचानती नहीं है ।"

"क्या यह संभव है कि वह भी अपील रद्द कराने के पक्ष में था ?" मेरियेते ने सच्ची सहानुभूति से पूछा "यह तो भयंकर बात है । मुझे उस स्त्री के लिए अत्यन्त दुख है ।" गहरी निःश्वास ले वह बोली ।

नेखलूदोव ने भौंहें चढ़ाईं तथा विषय परिवर्तन के लिए शुस्तोवा की बातचीतें आरम्भ कर दीं । शुस्तोवा जो कि किले में बंदिनी थी तथा मेरियेते की मध्यस्थता से अब मुक्त हो गई थी । उसने मेरियेते को इस कष्ट के लिए धन्यवाद दिया वह कहने ही जा रहा था कि कितने अन्याय की बात है कि इस स्त्री तथा इसके समस्त परिवार को केवल इस कारण यातनाएं झेलनी पड़ीं । किसी ने अधिकारियों को उनके विषय में कुछ कहा-सुना नहीं । किन्तु मेरियेते ने अपना क्रोध प्रकट कर उसकी बात काट दी ।

"यह मुझसे मत कहिए।" वह बोली, "जब मेरे पति ने मुझे बतलाया कि वह मुक्त हो सकती है तब मेरे हृदय में इस बात से ठेस पहुँची "यदि वह बिल्कुल निर्दोष है तो उसे बंदी किया ही क्यों गया ?" वह उसी बात को कहती रही जो कि नेखलूदोव कहने वाला था, "यह तो राजद्रोह है···राजद्रोह !"

काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना ने देखा कि मेरियेते मेरे बेटे के साथ चोचलेबाजी कर रही है, इससे उसे प्रसन्नता ही हुई। उनके चुप होते ही वह बोली "मान जाग्रो एलाइन के घर कल रात्रि आग्रो। कायसेवेतेर भी वहाँ उपस्थित रहेगा। और तुम भी।" वह मेरियेते की ओर मुड़कर बोली

"उसने तुम्हें देखा था।" फ्राँसीसी भाषा में कहकर वह पुन: अपनी भाषा में कहने लगी, "तुमने जो बातें मुझसे कहीं थीं···।" उसने कहा, "यह तो बहुत हीं अच्छा चिन्ह है और तुम निश्चय ही ईसामसीह तक पहुँच जाग्रोगे। तुम्हें निश्चय ही आना चाहिए। मेरियेते इससे आने को कहो और तुम भी आग्रो।"

"पहिली बात तो यह है काउन्टेस कि मुझे प्रिन्स को कुछ भी राय देने का अधिकार नहीं है।" मेरियेते बोली तथा उसने नेखलूदोव की ओर इस भाँति देखा कि उन दोनों में काउन्टेस के शब्दों तथा धर्मप्रचार दोनों के प्रति समझौता-सा हो गया हो। "दूसरी बात यह है कि आप जानती ही है कि इन विषयों में रुचि नहीं..."

"हाँ, मैं जानती हूँ कि तुम सदैव गलत मार्ग का अवलंबन करती हो तथा अपने ही विचारों के अनुसार चलती हो।

"मेरे अपने ही विचार ? मेरा दृष्टिकोण तो सर्वसाधारण किसान स्त्रियों का सा है।" मेरियेते ने मुस्क्यान से कहा "और तीसरी बात यह कि मैं कल रात्रि फ्राँसीसी थियेटर में जा रही हूँ।"

"अहा ! और तुमने वह देखी है—क्या नाम है उसका ?" काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना ने नेखलूदोव से पूछा। मेरियेते ने एक ख्यातिप्राप्त फ्रांसीसी अभिनेत्री का नाम लिया।

"तुम्हें निश्चय ही जाना चाहिए; उसकी तो कुछ पूछो मत।"

"मौसीजी ! किसकी बात पहिले सुनूं; अभिनेत्री की अथवा उपदेशक की ?" नेखलूदोव ने मुस्कुराकर कहा।

"कृपा कर वक्रोक्ति प्रयोग मत करो।"

"मेरा विचार है कि पहिले उपदेश सुनूं, फिर अभिनेत्री की कला देखूं

अन्यथा उपदेश सुनने की इच्छा ही समाप्त हो जाएगी।" नेखलूदोव बोला।

"नहीं! बहतर तो यह होगा कि पहिले थियेटर, बाद में तपस्या।"

"अब . अब आप मेरा परिहास मत कीजिए। उपदेशक उपदेशक ही है और थिएटर थिएटर ही। अपनी रक्षा के लिए व्यक्ति को मुँह लटकाकर रोना नहीं चाहिए। विश्वास करना चाहिए तब वह व्यक्ति निश्चय ही प्रसन्न होकर होगा।"

"मौसी जी। आपके उपदेशों को कोई उपदेशक नहीं पा सकता।"

"मैं आपको बतला दूँगी।" मेरियेते बोली, "कल आप थिएटर की मेरी सीट पर पधारिए।"

"मुझे भय है कि मैं नहीं आ सकूँगा ..।"

वर्दीधारी नौकर ने आकर यह सूचना दे बात काट दी कि कोई सज्जन पधारे हैं। वह लोक-हितैषी संघ का मंत्री था, जिसकी कि काउन्टेस प्रेसीडेन्ट थी।

"ओह! उससे अधिक सुस्त कोई नहीं। मैं उससे बाहर जाकर मिल आऊँगी और बातें कर लौट आऊँगी। मेरियेते इसे चाय पिलाना।" काउन्टेस बोली तथा प्रकोष्ठ को अपने अभ्यस्त तेज कदमों से पार कर गई।

मेरियेते ने अपने कठोर व प्रायः चपटे हाथों पर से दस्ताने उतारे। उसकी कनिष्ठका में अँगूठियाँ लदी पड़ी थीं।

"चाँदी की केतली, जिसके नीचे स्प्रिट लैम्प जल रहा था, पकड़ कर उसने अपनी कनिष्ठका को विचित्र ही ढङ्ग से बाहर निकाल कर कहा "थोड़ी सी लो?"

वह उदास तथा गंभीर लग रही थी।

"यह देखकर मुझे बहुत दुख होता है कि जिनकी राय का मैं आदर करती हूँ वे मेरी वर्तमान परिस्थिति में मुझे व्याकुल कर देते हैं।"

अंतिम शब्दों के कहते ही ऐसा प्रतीत हुआ मानो कि वह रो उठेगी। और यदि कोई इन शब्दों की व्याख्या करता तो उसे ज्ञात हो जाता कि इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं है तथा यदि कुछ है भी तो अनिश्चित। लगता था कि उनका अर्थ अत्यन्त गूढ़ है तथा नेखलूदोव को धन्यवाद कि वह उस सुन्दरी—भली-

भाँति वस्त्र-सज्जिता युवती के, शब्द संयुक्त प्रभावपूर्ण नेत्रों की दृष्टि से अत्यन्त आकर्षित हो गया।

मूक हो नेखलूदोव ने उसकी ओर देखा तथा वह उसके मुख पर से अपने नेत्र नहीं हटा सका।

"आप सोचते हैं कि मैं आपको नहीं पहिचानती तथा आपके आंतरिक संघर्ष से परिचित नहीं हूँ। क्यों, हर कोई जानता है कि आप किस कार्य में व्यस्त हैं। यह रहस्य तो सबको ज्ञात हो चुका है। मै आपके कार्य से प्रसन्न हूँ तथा उसका अनुमोदन करती हूँ।"

"वास्तव में प्रसन्न होने की कोई वात नहीं है; मैंने अभी तक किया ही क्या है ?"

"कोई बात नहीं। मैं आपकी भावनाओं को समझती हूँ और उस स्त्री की भी बात समझती हूँ। ठीक ! ठीक ! मैं इस विषय में कुछ और नहीं कहूँगी।" उसने नेखलूदोव के चेहरे पर खिन्नता देखकर कहा। मेरियेते उसको आकर्षित करने की इच्छा से तथा स्त्रियोचित प्रवृत्ति से, यह जानने की इच्छा से कि नेखलूदोव को सर्वाधिक प्रिय क्या है, कहती रही "मैं यह भी समझती हूँ कि बंदीगृह में ये सब यातनाएँ तथा भय देखने के पश्चात आप उन दुखियों की सहायता करना चाहते हैं, उनकी—जिन्हें कि अन्य व्यक्तियों की क्रूरता एवं क्रोध के कारण इतनी यातनाएँ झेलनी पड़ती हैं। मैं समझ रही हूँ कि कोई भी इस कार्य के लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर सकता है और ऐसे ध्येय के लिए मैं भी अपना जीवन उत्सर्ग कर सकती हूँ किंतु हम सब की पस्थितियाँ भिन्न हैं।"

"तो क्या आप अपनी परिस्थितियों से असंतुष्ट हैं ?"

"मैं ?" वह बोली, मानो उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा हो कि मुझसे ऐसा प्रश्न भी किया जा सकता है, "मुझे संतुष्ट होना पड़ता है तथा मैं संतुष्ट हूँ। किंतु एक कीड़ा है जो जाग उठता है..."

'और अब उसे सोने नहीं देना चाहिए। यह वह आवाज है जिसकी कि आज्ञा का पालन होना चाहिए।" नेखलूदोव जाल में फँसते हुए बोला।

इसके पश्चात कितनी ही बार नेखलूदोव ने उसके साथ हुए वार्तालाप को लज्जा से स्मरण किया। वह मेरियेते के शब्दों को स्मरण करता, जो कि इतने झूठे नहीं थे जितनी कि उसकी स्वयं की नकलें, तथा मेरियेते के चेहरे का ध्यान

करता, जो कि उसकी ओर सहानुभूतिपूर्ण एकाग्रता से उस समय देख रहा था जब कि नेखलूदोव ने बंदीगृह के भयों तथा देश के विषय में अपनी धारणाओं को उससे व्यक्त किया।

जब काउन्टेस लौटकर आई तब वे दोनों न केवल पुराने मित्रों की भाँति ही बातें कर रहे थे किंतु उन मित्रों की भाँति भी बातें कर रहे थे जो कि लोगों की भीड़ में भी इस प्रकार बातें करते हैं कि बस दोनों ही समझ सकें कि उनमें क्या बातें हो रही हैं।

उनमें शक्तिवानों के अन्याय, अभागों के कष्ट,लोगों की गरीबी के ऊपर बातें हो रही थीं; फिर भी वास्तव में उनके वार्तालाप की ध्वनि के बीच उनके नेत्र एक दूसरे को घूरते हुए पूछ रहे थे "क्या तुम मुझसे प्यार कर सकते हो ?" तथा उत्तर दे रहे थे "हाँ" तथा कामवासना आशातीत और मनोहर रूप धारण कर एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित कर रही थी।

जाते हुए मेरियेते ने कहा कि मैं सदा आपकी हर संभव सहायता करने को तत्पर हूँ तथा आप कल थियेटर में आकर अवश्य मिलिए चाहे एक क्षण के लिए ही क्यों न सही क्योंकि मुझे आपको एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात बतलानी है।

'जी ! किंतु कौन जानता है कि मैं आपसे पुनः कब मिलूँ ?" वह निःश्वास छोड़ते हुए बोली। उसने अपने अँगूठियों से लदे हाथ पर सावधानी से दस्ताना चढ़ाते हुए कहा "तो कहिए कि मैं आऊँगा।"

नेखलूदोव ने वचन दे दिया।

रात्रि को नेखलूदोव अपने कक्ष में अकेला था और जब वह बत्ती बुझाकर लेटा तो उसे नींद न आ सकी। जब वह माशलोवा, सीनेट के निर्णय, माशलोवा के साथ जाने के अपने निर्णय तथा अपनी भूमि के परित्याग के विषय में विचार रहा था—तभी यकायक मेरियेते का मुखमंडल, उसका निःश्वास तथा उसकी दृष्टि जबकि उसने कहा था "न जाने आपसे पुनः कब मिलूँ ?" एवं उसकी मुस्कान इतनी स्पष्टता से दिखलाई दी कि वह मुस्कुरा उठा मानो वह उसके सम्मुख ही खड़ी हो। "क्या मेरा साइबेरिया जाना उचित होगा ? तथा क्या मैंने अपनी सम्पत्ति त्याग कर उचित किया है ?" उसने मन-ही-मन सोचा।

न या पीतर्सबर्ग की इस रात्रि में, जिसमें कि खिड़की के अँधे शीशों में से

प्रकाश बहकर आ रहा था, इन प्रश्नों के उत्तर नितांत अनिश्चित रहे। सब के सब भ्रमपूर्ण प्रतीत हुए। उसने अपने चित की पूर्व अवस्था का तथा अपने विचारों की पूर्व परम्परा का स्मरण किया किंतु अब उनमें पहिले सदृश शक्ति अथवा ठोसत्व नहीं रह गया था।

"और मान लिया जाय कि मैंने यह सत्र आविष्कृत किया है, या मैं इसमें रहने में असमथ होऊँ...मान लिया जाय कि मैं ठीक कार्य करने के अपने कर्म का प्रायश्चित करूँ।" उसने सोचा; तथा उत्तर देने में असमर्थ हो वह दुख तथा तीव्र मानसिक वेदना से ग्रस्त हो उठा। ऐसी अवस्था का उसने बहुत समय से अनुभव नहीं किया था। वह गहरी निद्रा में निमग्न हो गया—इतनी गहरी निद्रा में जितनी में कि वह एक बार तब निमग्न हुआ था जब कि ताशों में बहुत रुपए हार गया था।

२५

अगले दिन नेखलूदोव जब सोकर उठा तब उसे ऐसा अनुभव हुआ कि कल रात्रि मैंने कुछ अधर्म किया था।

वह इस पर सोचने लगा। उसे ध्यान ही नहीं आया कि मैंने क्या गलती की है, उसने कोई अनुचित कार्य किया भी नहीं था। किंतु अनुचित विचार अवश्य उत्पन्न हो गए थे। मैंने सोचा था कि कातूशा से विवाह करना तथा अपनी जमींदारी को त्याग देना दोनों ही कार्य ऐसे हैं जिनके पूर्ण होने की स्वप्न में भी आशा नहीं, कि उनके परिणामों को सहन करना मेरी सहन-शक्ति के बाहर है, कि वे मेरे पूर्व विचार बनावटी तथा अस्वाभाविक थे एवं मुझे उसी भाँति जीवन-यापन करना चाहिए जैसा कि करना आया हूँ।

उसने कोई कुकर्म ही नहीं किया किंतु कुकर्म से भी अधिक हीन कार्य किया था। उसने कुविचारों को अपने हृदय में स्थान दिया था, जिनसे कि समस्त कुकर्मों का आरम्भ होता है।

हो सकता है कि कुकर्म की पुनरावृत्ति नहीं हो तथा कुकर्म का प्रायश्चित कर लिया जाय किंतु कुविचार ही समस्त कुकर्मों के प्रथम सोपान होते हैं।

एक कुकर्म अन्य कुकर्मों के लिये मार्ग निष्कंटक कर देता है किंतु कुविचार व्यक्ति को विवश कर उस मार्ग पर बलपूर्वक घसीट ले जाते हैं।

नेखलूदोव ने जब अपने मन मे कल के विचारों को पुनः दोहराया तो उसे आश्चर्य हुआ कि मैने उन पर विश्वास क्यों कर लिया चाहे क्षणमात्र के ही लिये क्यों न सही। वह समझ गया कि मेरा निश्चित किया हुआ मार्ग कितना भी नवीन एवं दुष्कर क्यों न हो किंतु मेरा जीवन उसी एक मात्र मार्ग पर अवलंबित है तथा अपने पूर्व जीवन में मेरा प्रवेश करना कितना ही सरल एवं स्वाभाविक क्यों न हो, मैं जानता हूँ कि उसमें मेरा मरण ही है। कोई व्यक्ति गहरी निद्रा से जाग कर पुनः निद्रा न आने पर आलस्यवश थोड़ा और आराम करने के दृष्टिकोण से अपने बिस्तर मे लेटा रहे तथा यह जानते हुए भी कि अब उठकर महत्त्वपूर्ण एवं आनन्ददायक कार्य करने का समय आ गया है फिर भी न उठे— ठीक ऐसे ही आराम का आकर्षण था नेखलूदोव को कल रात्रि में।

उस दिन, जो नेखलूदोव का पीतर्सबर्ग में अन्तिम दिन था, प्रातः काला शुस्तोवा से मिलने वह वेसीलीएवस्की आइलैंड गया।

शुस्तोवा दूसरी मञ्जिल में रहती थी। उसे पिछवाड़े का मार्ग बतलाया गया, इसलिए वह पीछे के झीने से ऊपर चढकर मकान में से भोजनगृह में पहुँचा, जहाँ भोजन की सुगंधि आ रही थी। ऐनक लगाए, ऐप्रन पहिने एक प्रौढ़ा आस्तीन चढ़े हाथों से कड़ाही में कुछ चला रही थी।

"आप किससे मिलना चाहते हैं?" स्त्री ने चश्मे के ऊपर से देखते हुए कठोर स्वर में पूछा। नेखलूदोव अपना नाम बतला भी नहीं सका कि स्त्री के मुख पर भीति एवं प्रसन्नता के चिह्न उभर आए।

"ओह! आप तो प्रिन्स हैं!" ऐप्रन से हाथ पोंछते हुए वह आश्चर्य मे बोली "किंतु आप पीछे के मार्ग से क्यों आए, हमारे हितकारी। मै उसकी माँ हूँ। उन लोगो ने तो मेरी लड़की को मार डाला होता किंतु आपने हम लोगों को बचा लिया।" उसने नेखलूदोव का हाथ पकड़कर उसका आलिंगन करने की चेष्टा करते हुए कहा "मैं आपके दर्शन करने कल गई थी। मेरी बहिन ने कहा था वह भी यहीं है। इधर...कृपया इधर से।" शुस्तोवा की माँ ने कहा तथा अपने बालों और सिलवट पड़े घाघरे को संभालते हुए वह नेखलूदोव को तंग-द्वार तथा अंधेरे मार्ग से ले गई। "मेरी बहिन का नाम कोरनीलोवा है। आपने तो उसके विषय में सुना होगा।" एक बन्द द्वार के पास रुककर वह धीमे स्वर में

बोली "वह भी एक राजनैतिक मामले में फंसा दी गई थी। है अत्यन्त बुद्धिमती !

शुस्तोवा की माँ ने द्वार खोला तथा नेखलूदोव को एक छोटे से कक्ष में ले गई, जिसमें कि मेज के पास बिछे सोफा पर एक ठिगनी मोटी लड़की बैठी हुई थी। लड़की के सुन्दर बालो की घुघराली लटें अपनी माँ से मिलते-जुलते उसके चेहरे पर बिखरी हुई थीं। उसने एक धारीदार सूती ब्लाउज पहिन रखा था।

लड़की के सामने आरामकुर्सी पर काली हल्की दाढ़ी मूछों से युक्त एक युवक रूसी ढंग की कसीदा की हुई कमीज पहिने इस तरह से आगे की ओर झुका बैठा था कि वह लगभग दुहरा सा हो गया था। वह दोनों अपने वार्तालाप में इतने निमग्न थे कि नेखलूदोव के कक्ष-प्रवेश के पश्चात् ही वे उसे देख पाए।

"लीदिया, देखो आप ही हैं प्रिन्स नेखलूदोव ! वही..." माँ ने कहा।

वह पीली लड़की अपनी लटों को घबड़ाहट के साथ कान के पीछे झटकते हुए उछलकर खड़ी हो गई तथा भयपूर्वक अपने विशाल भूरे नेत्रों से नवागन्तुक की ओर देखने लगी।

"अच्छा तो आप ही हैं वह भयंकर महिला जिनके विषय में वेरादुखोवा ने मुझसे कहा था" नेखलूदोव ने समुस्क्यान कहा।

"जी हाँ, वह मैं ही हूँ" लीदिया शुस्तोवा बोली, तथा वह बच्चों की भाँति मुंह खोलकर मुस्कराई जिससे कि उसके सुन्दर दाँतों की पंक्ति चमक उठी। "वह मेरी मौसी हैं। उन्हें आपके दर्शनों की तीव्र अभिलाषा है। मौसी !" उसने द्वार की ओर मधुर कोमल स्वर में पुकारा।

"आपकी गिरफ्तारी से वेरादुखोवा को बहुत दुख हुआ।" नेखलूदोव बोला।

"विराजिए—इधर ठीक रहेगा" लीदिया ने उस टूटी हुई आराम कुर्सी की ओर इङ्गित करते हुए कहा जिस पर से कि युवक उठकर खड़ा हुआ था।

"आप हैं मेरे चचेरे भाई जाखारोव।" नेखलूदोव को युवक की ओर देखते हुए पाकर वह बोली।

युवक ने नेखलूदोव से लीदिया के समान ही सहानुभूतिपूर्ण मुस्कराहट से अभिवादन किया तथा नेखलूदोव के बैठने के पश्चात् दूसरी कुर्सी लाकर युवक उसकी बगल में बैठ गया। सुन्दर बालों से युक्त सोलह वर्ष के लगभग वयवाला एक विद्यार्थी कक्ष मे प्रविष्ट हुआ तथा चुपचाप जा कर खिड़की की दहलीज पर बैठ गया।

"वेरादुखोवा मौसीजी की अत्यन्त प्रिय सहेली है, किंतु मैं स्वयं तो उनसे परिचित भी नहीं हूँ।" शुस्तोवा ने कहा।

इतने में एक तेजोमयी एवं प्रसन्नमुखी स्त्री सफेद ब्लाउज तथा चमड़े की पेटी बाँधे दूसरे कमरे से इस कक्ष में आई।

"कहिए, प्रसन्न तो हैं ? आपके शुभागमन के लिए धन्यवाद" लीदिया के पास सोफे पर बैठते ही उसने कहना प्रारम्भ किया "अच्छा ! वेरा के क्या हाल चाल हैं ? आप उससे मिले थे ? वह अपने दिन कैसे काट रही है ?"

"वह कोई शिकायत नहीं करती।" नेखलूदोव बोला। "वह कहती है कि मेरी भावना तो खिलाड़ियों के समान है।"

"आह ! वेरा को यही शोभा देता है। मैं उसे पहिचानती हूँ।" मौसी ने समुस्क्यान सिर हिलाते हुए कहा, "उसे पहिचानने की आवश्यकता है। उसके विचार उच्च हैं। प्रत्येक वस्तु दूसरों के लिए, अपने लिए कुछ नहीं।"

"नहीं, उसने अपने लिए कुछ नहीं कहा किंतु केवल आपकी बेटी के विषय में ही चिंतित थी। उसके कथनानुसार उसे सर्वाधिक चिंता यही थी कि आपकी निर्दोष बेटी बंदिनी कर ली गई है।"

"जी, यह सच है।" मौसी बोली "यह बड़ा भयानक काम है। इस बेचारी को तो मेरे कारण यातना झेलनी पड़ी।"

"नहीं मौसी, बिल्कुल नहीं। आप न भी होतीं तो भी कागज तो मैं ले ही लेती।"

"मानो भी, मैं तुमसे अधिक जानती हूँ।" मौसी बोली। "देखिए न" उसने नेखलूदोव से कहा, "बात यह थी कि एक व्यक्ति ने कागजों को कुछ दिनों के लिए रखने को कहा; तथा मेरा यहाँ उन दिनों कोई मकान था नहीं इसलिये वे कागज मैं यहाँ ले आई। उसी रात को पुलिस तलाशी लेने के लिए इसके कमरे में आ घुसी तथा वे कागज ले गई। इसे यह पूछने को अब तक बन्द रखा कि बता ये कागज तुझे किसने दिए।"

"किंतु मैंने उनको कुछ नहीं बतलाया।" बीच से ही लीदिया बोल पड़ी तथा अपने बालों को घबड़ाहट से संभालने लगी यद्यपि वे अव्यवस्थित नहीं थे।
"मैंने यह तो कहा नहीं कि तुमने बतला दिया।" उसकी मौसी बोली।

"उन्होंने भी तीन को बंदी किया। किंतु मैं सही कहती हूँ कि मैने कुछ नहीं कहा था।" लीदिया ने अपने चारों ओर बेचैनी से देखते तथा लज्जा से लाल होते हुए कहा।

"वेटी लीदिया ! यह बातें मत करो।" उसकी माँ बोली।

"क्यों न करूँ ? मैं सब बतला देना चाहती हूँ।" लीदिया ने कहा। न तो अब वह मुस्कुरा रही थी और न अपने केशों की लटों को ही खींच रही थी। हाँ केशों को उस समय वह अपनी उँगलियों में लपेट रही थी तथा पहिले से अधिक आरक्त हो उठी थी।

"यह मत भूलो कि इसी बात पर कल क्या हो गया था।"

'नहीं, बिल्कुल नहीं। मुझे अकेली छोड़ दो, मामा। मैंने कहा क्या था, मै तो चुप वैठी थी। जब उसने मीतीन और मौसी के विषय में पूछा था तब मैं चुप रही आई। फिर इस...पेत्रोव"

"पेत्रोव जासूस है, पुलिसमैन है, दुष्ट है।" मौसी अपनी बेटी की वात नेखलूदोव को समझाने के लिए बोली।

"तव उसने फुसलाना प्रारम्भ किया" लीदिया ने उत्तेजना एवं अधीरता से कहा 'तुम मुझे बतलाओ' वह कहता 'हानि किसी को नहीं होने की; इसके विपरीत, यदि तुम मुझे बतला दोगी तो हम लोग निर्दोषों को मुक्त कर सकते हैं जिन्हें कि हम व्यर्थ ही कष्ट दे रहे हैं' खैर, मैंने फिर भी कहा कि मैं नहीं वतलाऊँगी। तब वह बोला 'ठीक है, मत बतलाओ किंतु जो मैं बतलाऊँ उससे इन्कार मत करना।' और उसने मीतीन का नाम लिया।"

"इस विषय पर बात मत करो।" मौसी ने कहा।

"ओह मौसी, मेरी बात को मत काटो..." और वह अपने वालों की लटों को खींचती तथा चारों ओर देखती रही" और फिर, कल्पना कीजिए कि दूसरे दिन मैंने सुना, उन्होंने दीवाल को थपथपाकर बतलाया, कि मीतीन बंदी बना लिया गया है। खैर मैंने विचार किया कि मैंने उसके साथ विश्वासघात किया है और इससे मुझे हार्दिक दुख हुआ—इतना दुख कि मैं लगभग पागल हो गई।"

"तथा बाद में ज्ञात हुआ कि उसकी गिरफ्तारी में तुम्हारा बिल्कुल भी हाथ नहीं था ?" मौसी बोली।

"हाँ ! किन्तु मुझे मालुम नहीं हुआ। मैने सोचा कि मैंने उसके साथ विश्वासघात किया है।" मैं इस दीवाल से उस दीवाल तक चक्कर लगाती रही और सोचे बिना न रह सकी कि मैंने उसके साथ विश्वासघात किया है। मैं सिर ढककर लेट जाती और मेरे कान में यही स्वर सुनाई देता "विश्वासघात ! मीतीन के प्रति विश्वासघात !" मैं जानती थी कि यह मानसिक भ्रम है किन्तु स्वर तो

सुनाई देता ही था । मैं सोना चाहती किंतु सो नहीं पाती । मैं चाहती हूँ कि इस पर विचार न करूँ किंतु मजबूर थी । बडी भयंकर अवस्था हो गई थी ।" लीदिया कहते-कहते अधिकाधिक उत्तेजित होती गई, बालों को उँगलियों के चारों ओर लपेटती, खोलती और चारों ओर इधर-उधर दृष्टि फेंकती रही ।

"मेरी प्यारी लीदिया ! शान्त हो जा ।" माँ ने उसके कंधों को पकड़कर कहा ।

किंतु शुस्तोवा से चुप न रहा गया ।

'सबसे भयकर तो......" वह पुनः कहने लगी किंतु अपनी बात को समाप्त किए बिना ही कूदकर खड़ी हो गई तथा रोती हुई कक्ष से बाहर भाग गई ।

उसकी माँ उसके पीछे-पीछे चलने को मुड़ दी ।

"इनको तो फाँसी दे देनी चाहिए, दुष्ट कहीं के !' खिड़की की दहलीज पर बैठे विद्यार्थी ने कहा ।

"ओह, मैंने क्या कहा......कुछ भी तो नहीं ।" विद्यार्थी बोला और मेज पर से एक सिगरेट उठा कर पीने लगा ।

२६

"हाँ, नई वय वालों के लिए तनहाई का दण्ड बहुत भयानक है ।" मौसी ने अपना सिर हिलाते हुए कहा । उसने भी एक सिगरेट जला ली ।

"नई वय से ही क्या है सभी के लिए ।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया ।

"नहीं, सबके लिए नहीं ।" मौसी ने उत्तर दिया "मैंने सुना है कि सच्चे क्रान्तिकारियों के लिए तनहाई शान्तिप्रद एवं आरामप्रद है । जिस व्यक्ति की खोज में पुलिस हो वह तो निरन्तर धनाभाव तथा कष्टों में पड़ा रहता है, उसे अपने लिए, अपने साथियों तथा अपने सिद्धान्तों के लिए भय बना ही । रहता है; और अन्त में जब वह पकड़ लिया जाता है तब ये सब बातें समाप्त हो जाती हैं तथा उसके कंधों से समस्त दायित्वों का भार उतर जाता है । वह बैठकर वहाँ आराम प्राप्त कर सकता है । मैं पहिले ही कह चुकी हूँ कि वे तो गिरफ्तार होने पर वास्तव में प्रसन्न होते हैं । किंतु नई वय एवं निर्दोषों के लिए—पुलिस सदैव ही पहिले निर्दोषों को बन्दी करती है, जैसे लीदिया—पहिला धक्का बड़ा प्रबल

होता है। स्वतंत्रता का अपहरण,तथा हीन भोजन एवं दूषित वायु यह सब नहीं—ये कुछ नहीं, ये कुछ नहीं। यदि पहिली बार गिरफ्तार होने में नैतिकता से सम्बन्धित दुख नहीं हों तो यह कितना-सा अभाव है! इससे तिगुना सहन किया जा सकता है।"

"तो क्या आपको भी अनुभव है?"

"मुझे! मैं तो दो बार हो आई हूँ।" उसने उदास, कोमल मुस्क्यान से कहा "पहिली बार जब मैं गिरफ्तार हुई थी, मैंने कुछ भी नही किया था। मेरी अवस्था बाईस वर्ष की थी, एक बच्चा साथ था दूसरा गर्भ मे। यद्यपि स्वतन्त्रता की समाप्ति, अपने पति तथा बच्चे का वियोग असह्य था फिर भी जो मैने अनुभव किया उसकी तुलना मे वह कुछ नहीं था। मैने देखा कि मैं अब चेतन न रहकर कोई जड़ पदार्थ रह गई हूँ। मैने अपनी छोटी पुत्री से विदा लेनी चाही। मुझसे कहा गया कि जाओ, बग्घी की सीट पर बैठ जाओ। मैंने पूछा कि ले कहाँ जा रहे हो। उत्तर मिला कि वहीं जाकर पूछ लेना। मैंने पूछा कि मेरा अपराध क्या है तो कोई उत्तर नहीं मिला। जब मेरी डाक्टरी जाँच हो चुकी तब उन्होंने मेरे वस्त्र उतार कर मुझे बन्दी-गृह के संख्या युक्त वस्त्र पहिना दिए। वे एक तहखाने में ले गए। द्वार खोलकर उसमें धकेल दिया, द्वार का पुनः ताला बन्द कर मुझे अकेला छोड़ दिया—मेरे द्वार के सामने भरी राइफिल लिए एक प्रहरी इधर-उधर टहलता रहा। वह बार-बार एक दरार मे से मुझे देखता रहता। मुझे अत्यन्त भीषण दुख हुआ। उस समय सबसे विचित्र बात तो मुझे यह लगी कि जिस अधिकारी ने मेरी जाँच की थी उसने मेरे समक्ष एक सिगरेट प्रस्तुत की। वह जानता था कि लोग सिगरेट पीना पसन्द करते हैं अर्थात् वह यह भी जानता था कि लोग अपनी स्वतन्त्रता तथा प्रकाश पसन्द करते है, माताऐं अपने बच्चों को प्रेम करती हैं तथा बच्चे अपनी माताओं को। फिर वे मुझे उस सबसे इतनी निर्दयता से विलग करने में कैसे समर्थ हो सके जिसको कि मैं अत्यधिक प्रेम करती थी तथा कैसे समर्थ हो सके वे एक जंगली पशु की भाँति मुझे कारागार में बन्द करने में?

"इस प्रकार की बातें किसी कुपरिणाम के बिना सहन नहीं की जा सकतीं। जो भी परमात्मा या मानव में विश्वास करता है इस बात में कि मानव मानव से प्रेम करता है,वह व्यक्ति यह सब देखने के पश्चात् उसमें विश्वास करना बन्द कर

देगा। तब ही से मेरा विश्वास मानवता से उठ गया और मैं कटु हो गई।" मुस्कुराकर उसने अपनी बात समाप्त की।

लीदिया की माँ उसी द्वार से आई जिससे कि लीदिया गई थी। उसने बतलाया कि लीदिया बहुत दुखी हो गई है और लौट कर यहाँ आने में असमर्थ है।

"ओर इस बेचारी नवयुवती का जीवन किसलिए नष्ट किया गया ?" मौसी वोली "सबसे अधिक दुख तो मुझे इस बात का है कि मैं ही हूँ इसका प्रधान कारण।"

"भगवान चाहेगा तो गाँव में जाकर इसकी अवस्था सुधर जाएगी।" हम लोग इसे इसके पिता के पास भेज देंगे।"

"किन्तु यदि आपने हस्तक्षेप न किया होता तो इसका जीवन ही समाप्त था" मौसी बोली"आपको धन्यवाद है! किंतु जिसलिए मैं आपसे मिलना चाहती थी वह बात यह थी कि मैं आपको वेरा दुखोवा के लिए एक पत्र देना चाहती हूँ।" और उसने अपनी जेब से एक पत्र निकाल लिया "पत्र बंद नहीं किया है, आप इसे पढ़ सकते हैं—अब यह आपके सिद्धान्तों के ऊपर है कि आप इसे फाड़कर फेंक दें या उसे दे दें।" वह बोली "इसमें समझौते की कोई बात नहीं है।"

नेखलूदोव ने पत्र ले लिया तथा उसे वेरा दुखोवा को देने का वचन दे विदा ली और चल दिया।

उसने पत्र को बिना पढ़े ही चिपका दिया ताकि वह वैसे का वैसा उसे पहुँचा दे।

२७

नेखलूदोव को पीतर्सबर्ग में रोके रखने का अंतिम कारण था साम्प्रदायिकों का अभियोग, जिसके पिटीशन को उसने अपने पूर्व परिचित मित्र ए. डी. बोगात्रीओव द्वारा सम्राट् के हाथों में सौंपने का निश्चय किया था। वह बोगात्रीओव के मकान पर सुबह गया। यद्यपि वह कहीं जाने को तैयार था और अभी नाश्ता ही

कर रहा था। बोगात्रीग्रोव लम्बा नहीं था किन्तु था अत्यन्त गठे हुए बदन का तथा शक्तिशाली (वह घोड़े की नाल को मोड़ सकता था); व दयालु, ईमानदार, स्पष्ट-वक्ता तथा कुछ उदार भी। इन सब गुणों के अतिरिक्त वह कोर्ट का अंतरंग तथा सम्राट् ज़ार व उसके परिवार का परम भक्त था। और न जाने किस भाँति,सर्वोच्च परिवार में रहते हुए भी, उसने अपने स्वयं को इस भाँति कर लिया कि वह केवल अच्छाइयों को ही देखता तथा बुराइयो एवं भ्रष्टाचार में कोई भाग नहीं लेता। न तो वह किसी को दोष ही देता न दंड ही देता। वह सदा ही या तो चुप रहता अथवा यदि बोलता तो दृढ़ता से उच्च स्वर में, लगभग चिल्लाते हुए अपनी बात कहता तथा हँसता भी तो इसी प्रकार अट्टहासी स्वर में और ऐसा वह किसी राजनैतिक उद्देश्य से नहीं करता किंतु उसका तो स्वभाव ही ऐसा था।

"ओह ! चलो अच्छा ही हुआ कि तुम आ गए। कुछ नाश्ता करोगे ? बैठ जाओ। माँस बड़ा सुंदर पका है।मैं सदैव किसी-न-किसी सार्थक वस्तु से ही प्रारम्भ करत हूँ—प्रारंभ और अंत दोनों। हा ! हा ! हा ! अच्छा तो फिर एक पात्र मदिरा।" मदिरा की काँच की ढँकनेदार सुदर बोतल की ओर इंगित कर वह चिल्लाया, "मैं तुम्हारे ही विषय में सोच रहा था। मैं पिटीशन दे दूँगा। मैं स्वयं उनके हाथ में दूँगा। तुम उसे गिन सकते हो, मेरी समझ में तो यही आया कि तुम तोपोरोव से पहिले मिल लो तो बड़ा सुंदर रहे।"

नेखलूदोव ने तोपोरोव का नाम सुनकर मुह सिकोड़ा।

"यह सब उसी पर निर्भर है। उससे सहमति अवश्य ली जायगी। और हो सकता है कि वही तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर दे।"

"यदि तुम कहते हो तो मैं चला जाऊँगा।

"यह ठीक रहा। अच्छा पीतर्सबर्ग में लोग तुमसे कितने सहमत हैं ?" बोगात्रीग्रोव चिल्लाया, 'ऐं ! बतलाओगे।"

"मुझे लगता है कि मैं हिप्नोटाइज़ हो गया हूँ।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया :

"हिप्नोटाइज़ ?" बोगात्रीग्रोव दोहराते हुए हँस पड़ा, "तुम्हें कुछ नहीं मिल सकता। जैसी इच्छा !"और उसने तौलिए से अपनी मूंछें पोंछी"तो तुम जाओगे ? ऐं ? यदि वह नहीं करता तो पिटीशन मुझे दे देना। मैं इसे कल सम्राट्

को दे दूंगा।" इन शब्दों को चिल्लाता हुआ वह उठा, अपने ऊपर क्रास का चिन्ह उसी स्वाभाविकता से बनाया जैसे कि तौलिए से मूंछें पोंछी थीं और अपनी तलवार पर झुकने लगा।

"अच्छा नमस्कार, मै जाता हूँ।"

"हम दोनों ही जा रहे हैं।" नेखलूदोव बोला और उसने बोगातीरीओव का गठीला, चौड़ा हाथ अपने हाथ मे लेकर हिलाया। उस समय भी उसके मस्तिष्क में वही आनंद की लहर हिलोर लेने लगी जो कि उसे प्रत्येकस्वस्थ एवं नवीन वस्तु प्रदान करती थी। द्वार की सीढ़ियों से वह उससे विदा ले कर चल दिया।

यद्यपि नेखलूदोव को इस भेंट से कुछ अच्छा परिणाम निकलने की आशा नहीं थी किंतु फिर भी वह बोगात्रीओव की राय के अनुसार तोपोरोव से मिलने चल दिया, जिश पर कि साम्प्रदायिकों के भाग्य का निर्णय निर्भर था।

तोपोरोव जिस पद पर था उसकी पूर्ति किसी ऐसे ही व्यक्ति द्वारा हो सकती थी जो कि मंद बुद्धि एवं आचरणहीन हो। उस पद में ध्येय की अनुपपत्ति थी। तोपोरोव में दोनों ही अवगुण वर्तमान थे। उसके पद की अनुपपत्ति यही थी। वाह्य उपकरणों से, जिसमें कि हिंसा भी सम्मिलित थी, उसका कर्तव्य इस बात की रक्षा करने तथा उसे वनाए रखने का था कि चर्च, अपनी स्वयं घोषणाओं के अनुसार, स्वयं भगवान द्वारा स्थापित की गई थी तथा नर्क के द्वार अथवा मानवीय प्रयत्न दोनों में से कोई भी उसको बाधा नहीं पहुँचा सकता। इस अचल एवं स्वर्गिक प्रभु-प्रदत्त संस्था को एक मानवीय संस्था—पवित्र सीनोद—सहारा देती है तथा इसकी रक्षा करती है। यह मानवीय संस्था तोपोरोव तथा उसके अधिकारियों द्वारा संचालित होती थी। तोपोरोव ने इस अनुपपत्ति को नहीं देखा, न उसे यह देखने की इच्छा ही थी इसलिए उसका संबंध तो इस बात से कि कहीं कोई रोम का पादरी, दूसरा पादरी अथवा कुछ साम्प्रदायिक उस चर्च को नष्ट न कर दें जिसके रहते नर्क के द्वार चालू नहीं हो सकते थे। अन्य ऐसे लोगों की भाँति, जो कि धर्म की उन मौलिक भावनाओं से अपरिचित होते है जो कि मानव-मानव में बंधुत्व एवं समानता स्वीकार करती हैं, तोपोरोव की भी यही दृढ़ आस्था थी कि सर्वसाधारण से मेरी क्या समानता है तथा जनता जो वस्तु चाहती है मैं उसके बिना ही अपना काम चला सकता हूँ; क्योंकि हृदय से वह किसी बात पर

विश्वास नहीं करता था तथा यह अवस्था उसे बड़ी सुविधाजनक एवं आनन्दप्रद लगती थी। फिर भी उसे भय था कि कहीं सर्वसाधारण जनता उसकी सी अवस्था को प्राप्त न हो जाय और जनता को उस अवस्था से बचाना, जैसा कि वह कहा करता था, वह अपना परम-पवित्र कर्तव्य मानता था।

एक पुस्तक में लिखा है कि केकड़े जीवित ही उबाले जाना पसन्द करते हैं। इसी भाँति उसका विचार था तथा वह कहा करता कि प्रायः लोग अन्धविश्वासों में पड़े रहना पसन्द करते हैं; अन्तर केवल इतना था कि उसका अर्थ केवल शाब्दिक था जबकि पुस्तक का नहीं।

धर्म के प्रति उसकी स्थिति ऐसी थी जैसी कि किसी मुर्गी पालक की उस सड़े हुए गंदे माँस की ओर रहती है जिसको कि मुर्गियाँ खाती हैं; सड़ा हुआ गंदा माँस अत्यन्त खिन्नता प्रदान करता है, किंतु मुर्गियां उसे पसन्द करती हैं इसलिए मुर्गियों को सड़ा हुआ गंदा माँस खिलाना उचित है।

वास्तव में इवेरियन, काज़ान, तथा "भगवान की माँ" स्मोलेन्स्क की मूर्तियों की पूजा बिल्कुल मूर्ति पूजा है, किंतु जनसाधारण इसे पसन्द करते हैं तथा इसमें विश्वास करते हैं इसलिए इस अन्धविश्वास को बनाये रखना चाहिए। इसी भाँति तोपोरोव सोचता था। वह यह नही विचार करता था कि जनसाधारण अन्फविश्वासों को केवल इसलिए पसन्द करते है कि अतीत के एवं वर्तमान में भी मेरे ही समान निर्दयी व्यक्ति, जिन्हें कि ज्ञान प्राप्त हो चुका है, अपने ज्ञान के प्रकाश से दूसरों को गहन अन्धकार से निकाल बाहर करने में सहायता नहीं करते वरन् उस ज्ञान से वे उन अज्ञानियों को उल्टा और भी गहरा डुबो देते हैं।

जब नेखलूदोव अतिथि भवन में पहुँचा तब तोपोरोव अपने कार्यालय में एक सुन्दर एवं धनी महंत महिला से बातें कर रहा था, जोकि प्राचीन यूनानी धर्म को पश्चिमी रूस के यूनियनों में फैला रही थी जो कि रोम के पोप को मानते थे तथा जिन पर प्राचीन धर्म थोपा जा रहा था।

अतिथि भवन में बैठे हुए अधिकारी ने नेखलूदोव से पूछा कि आपको क्या काम है। जब उसे ज्ञात हुआ कि नेखलूदोव पिटीशन सम्राट् के हाथ में देना चाहता है तो उसने उसे पढ़ने के लिए माँगा। नेखलूदोव ने पिटीशन उसको दे दिया तथा अधिकारी उसे लेकर अन्दर चला गया। महंतनी अपने हुड, उड़ते हुए नकाब, तथा घिसटती हुई लम्बी ट्रेन के साथ कार्यालय से बाहर आई।

उसके श्वेत हाथों में एक गुलाबी पुखराज था। नेखलूदोव को अन्दर जाने के लिए रुकना पड़ा। तोपोरोव पिटीशन को पढकर अपना सिर हिला रहा था। वह उसकी स्पष्ट एवं प्रभाव पूर्ण शब्दावली पर खिन्न हो आश्चर्य कर रहा था।

"यदि यह सम्राट के हाथों में पहुँच जाय तो इससे भ्रम उत्पन्न हो सकता है तथा असुखद प्रश्न उठ सकते है।" पढ़ते हुए उसने सोचा। तब उसने पिटीशन को मेज पर रखकर घण्टी बजाई तथा चपरासी को आज्ञा दी कि वह नेखलूदोव को अन्दर बुला लाए।

उसे इन साम्प्रदायिकों का केस याद था: इससे पूर्व उसके पास एक और पिटीशन आ चुका था। केस निम्न भाँति था कि ये ईसाई यूनानी धर्म की चर्च म डिग चुके थे। पहिले इन्हें सदुपदेश दिया गया फिर अभियोग चला तथा न्यायालय ने निर्दोष घोषित कर उन्हें मुक्त कर दिया। तब पादरी तथा प्रशासक ने मिलकर पति, पत्नियों एवं संतान से विलग कर इन लोगों को निर्वासित करने की इस आधार पर योजना बनाई कि इन लोगों के विवाह सम्बन्ध गैरकानूनी हैं। ये माँ, बाप तथा पत्नियाँ प्रार्थना कर रही थीं कि हम लोगों को एक दूसरे से अलग न किया जाय। तोपोरोव को ध्यान आया कि जब मेरे सामने यह केस आया था तब मुझे हिचकिचाहट हुई थी तथा मैंने सोचा भी था कि इस मामले को यही रोक देना अपेक्षाकृत सुन्दर रहेगा। किन्तु तब मैंने सोचा था कि साम्प्रदायिकों के विभिन्न परिवारों के सदस्यों को विलगकर निर्वासित करने के इस निर्णय की पुष्टि कर देने से कोई हानि नहीं होगी। किन्तु यदि इन लोगों को वहीं रहने दिया जाता है जहाँ कि ये रहते थे तो उस स्थान के शेष निवासियों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है तथा वे भी धर्म से डिग सकते हैं। तथा फिर इस मामले से पादरी के उत्साह का प्रमाण मिलता था अतः मैंने इस केस को ज्यों का त्यों आगे बढ़ने दिया।

किंतु अब क्योंकि नेखलूदोव जैसा व्यक्ति उसका वकील है, जिसका पीतर्सबर्ग मे कुछ प्रभाव भी है, यह पिटीशन निर्दयतापूर्ण अन्याय कह कर व्यक्तिशः सम्राट् तक पहुँचाया जा सकता है अथवा विदेशी समाचार पत्रों में इसका सम्वाद दिया जा सकता है। अतः उसने तुरंत ही असभावित निर्णय कर लिया।

"कहिये प्रसन्न तो हैं ?" उसने एक अति व्यस्त व्यक्ति की भाँति नेखलूदोव का खड़े हो कर सम्मान करते हुए कहा तथा शीघ्र ही मतलब की बात पर आ गया।

"मैं इस केस से परिचित हूँ। इन नामों को देखते ही मुझे इस दुर्भाग्यपूर्ण कार्य व्यापार का स्मरण हो आया।" उसने पिटीशन को उठाकर दिखलाते हुए कहा, "मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ कि आपने मुझे इसका पुनः ध्यान दिलादिया। यह प्रांतीय अधिकारियों की ईर्ष्या का परिणाम है।"

नेखलूदोव अपने सम्मुख के पीले बनावटी चेहरे की ओर, जो कि हटाया नहीं जा सकता था, दयापूर्ण भावना की किसी अनुभूति के बिना देखता रहा।

"तथा मैं इन दंडों को समाप्त करने तथा इन व्यक्तियों को अपने मकानों में पुर्नस्थापित करने की आज्ञा दे दूँगा।"

"तो मुझे इस पिटीशन को नहीं पहुँचाना चाहिए ?'

"मैं आपसे पक्का वायदा करता हूँ" तोपोरोव ने शब्द 'मैं' पर बल देते हुए कहा। स्पष्टतया वह इस बात से प्रभावित था कि मेरी ईमानदारी 'मेरे' शब्द से ही सबसे बड़ी गारंटी है। "यही सर्वोत्तम है कि मै अभी लिख दूँ। कृपया विराजिए!"

वह मेज पर गया और लिखने लगा। नेखलूदोव बैठा नहीं वरन् देखता रहा उसकी लम्बी घुटी खोपड़ी को, मोटे तथा नीली नसो युक्त हाथ को, जो कि कलम को तेजी से चला रहा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि यह अभावुक व्यक्ति यह कर क्यों रहा है तथा कर भी रहा है तो इतनी सावधानी से क्यो कर रहा है।

"हाँ, तो यह लीजिए।" लिफाफे पर सील लगाते हुए तोपोरोव ने कहा "आप अपने मुवक्किलों को बतला दीजिएगा।" तथा मुस्कुराहट का अभिनय करने को उसने अपने ओठ फैलाये।

"तब इन लोगों को इतना दुख क्यों झेलना पड़ा ?' नेखलूदोव ने लिफाफा लेते हुए पूछा।

तोपोरोव ने अपना सिर उठाया तथा वह मुस्कुराया मानो नेखलूदोव के प्रश्न से उसे आनंद प्राप्त हुआ हो।

"यह मैं आपको नहीं बतला सकता। बस इतना ही कह सकता हूँ कि हम लोगों द्वारा सुरक्षित जनसाधारण का हित अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धर्म के विषयो

में ईर्ष्या की अधिकता इतनी अधिक हानिप्रद अथवा भयकारी नहीं है जितना कि आजकल का फैलता हुआ भेदभाव...।

. किंतु यह क्या बात है कि धर्म के नाम पर साधुवृत्ति की सर्वप्रथम माँग ही समाप्त कर दी गई—परिवार विलग कर दिए गए ?"

तोपोरोव इस भाँति मुस्कुराता रहा मानोकि वह उसको आश्रय दे रहा हो। स्पष्टतः वह विचार कर रहा था कि नेखलूदोव ने जो कुछ भी कहा अत्यंत सुदंर है। नेखलूदोव जो कुछ भी कह सकता था उस सबको अपनी राजनैतिक दूरदर्शिता के उच्चशिखर से देखकर उसने अत्यंत सुदंर तथा अत्यंत एकांगी माना होता ।

"यह व्यक्तिशः दृष्टिकोण से ऐसा होता प्रतीत हो सकता है।" वह बोला "किंतु प्रशासनिक दृष्टिकोण में दृष्टि बदल जाती है । फिर भी अब मुझे आपसे नमस्कार करने की अनुमति ले लेनी चाहिए।" तोपोरोव ने उससे हाथ मिलाते हुए सिर झुका कर कहा ।

नेखलूदोव ने चुपचाप उसका हाथ दबाया तथा तुरंत बाहर आ गया । उसे इस बात का दुख था कि मैंने उससे हाथ ही क्यों मिलाया ।

"जनसाधारण के हित ! तुम्हारे हित, यह है तुम्हारा तात्पर्य !" नेखलूदोव ने बाहर निकल कर सोचा ।

तथा वह मन-ही-मन उन व्यक्तियों पर विचार करने लगा जिनके कि अधिकार में जनसाधारण की शिक्षा एवं धर्म की बागडोर है। उस स्त्री से सोचना प्रारम्भ किया जो कि अवैधानिक ढंग से स्प्रिट बेचने के कारण दंडित हुई, लड़का जो चोरी के कारण, भिखमंगा भीख मांगने के कारण, झगड़ालू आग लगाने के कारण, निर्देशक जालसाजी के कारण, और वह अभागिनी लीदिया शुस्तोवा केवल इसलिए वन्दिनी की गई कि उससे वे कुछ बातें उगलवा सकें । तब उसने साम्प्रदायिकों के ऊपर विचार किया जो कि धर्म को नष्ट करने के कारण दण्डित हुए, तथा गुरकेविच इसलिए कि वह वैधानिक प्रशासन चाहता है; और नेखलूदोव के नेत्रों के सम्मुख उन सब व्यक्तियों के गिरफ्तार होने, बन्दी किए जाने का स्पष्ट चित्र आगया जो कि वास्तव में इसलिए बन्दी नहीं किए गए थे कि इन्होंने कानून भंग किए अथवा न्याय का उल्लंघन किया किंतु केवल इसलिए कि ये लोग उन

धनवानों एवं अधिकारियों के मार्ग के रोड़े थे जो कि लोगों की सम्पत्ति लेकर उस पर भोग-विलास कर रहे थे।

स्त्री जो कि बिना अनुमति-पत्र के मदिरा बेचती थी, तथा चोर जो कि नगर में घूमता रहता था, तथा लीदिया शुस्तोवा जो कि घोषणा पत्रों को छिपाती थी, तथा साम्प्रदायिक जो कि अन्धविश्वासों को समाप्त करते थे, तथा गुरकेविच जो कि वैधानिक प्रशासन चाहता था वास्तव में मार्ग के रोड़े थे। नेखलूदोव को यह स्पष्ट दिखलाई दिया कि समस्त अधिकारीगण-उसकी मौसी का पति, सीनेटर, और तोपोरोव से लगाकर नीचे तक स्वच्छ, प्रामाणिक एवं महत्त्वपूर्ण सज्जनों तक। जो कि मन्त्रालयों की कुर्सियो पर बैठते थे—कोई भी इस बात से रत्ती भर चिंतित नहीं था कि ऐसी परिस्थितियों में निर्दोष व्यक्तियों को यातनाएं भोगनी पड़ती हैं। किंतु उन्हें यदि किसी बात की चिंता थी तो यह थी कि वास्तव में खतरनाक लोगों से कैसे पिंड छुड़ाया जाय।

अतः न केवल विधान की उपेक्षा होती, कि एक निर्दोष को दण्ड देने के बजाय दस अपराधी मुक्त हो सकते हैं, किंतु विपरीत इसके एक वास्तविक भयानक अपराधी से बचने के लिए दस निरपराधों को दण्ड दिया जाता जैसा कि किसी सड़े टुकड़े को काटते समय कोई भी व्यक्ति अच्छे ही टुकड़े को काटता है।

नेखलूदोव को यह अर्थ बिल्कुल सरल तथा स्पष्ट लगा; किंतु इसकी सरलता एवं स्पष्टता ने ही उसको स्वीकृति प्रदान करने में हिचकिचाहट उत्पन्न कर दी। क्या यह संभव है कि इतने उलझे हुए तत्व का इतना सरल एवं भयानक अर्थ हो सकता है ? क्या यह संभव है कि न्याय, विधान, धर्म तथा भगवान आदि के विषय में ये शब्द अति लोभ एवं निर्दयता के भद्दे स्वरूप को छिपाने वाले शब्द मात्र ही है ?

२८

नेखलूदोव पीतर्सवर्ग से उसी दिन सायं को चला जाता किंतु उसने मेरियेते को थियेटर में मिलने का वचन दिया था; और यद्यपि वह जानता था कि मुझे उस वचन को भंग कर देना चाहिए, फिर भी उसने यह विश्वास कर अपनी आत्मा को धोखा दिया कि वचन भंग करना अनुचित होगा।

"क्या मैं इन प्रलोभनों से बचे रहने में समर्थ हूँ ?" उसने मन-ही-मन सोचा किंतु गंभीरता से नहीं "मैं अन्तिम बार प्रयत्न करूँगा।"

सायंकालीन वस्त्र पहिने हुए वह थियेटर में दूसरे दृश्य में पहुँचा, जिसमें कि एक विदेशी अभिनेत्री ने सुन्दर ढंग से एक बार पुनः यह प्रदर्शित किया कि क्षय रोग से ग्रस्त स्त्रियाँ किस भाँति मर जाती हैं।

हॉल पूरा भरा था। नेखलूदोव ने जब मेरियेते की सीट के बारे में पूछा तो तुरन्त ही बड़े आदर पूर्ण ढंग से सीट दिखला दी गई।

वर्दी पहिने एक नौकर गैलरी में बाहर खड़ा था; उसने नेखलूदोव को झुककर इस भाँति अभिवादन किया जैसे कि वह उसे पहिचानता हो तथा मेरियेते के कक्ष का द्वार खोल दिया।

सब उपस्थित व्यक्ति जो सामने अपनी सीटों पर बैठे थे या खड़े थे, वे जो कि नाटक गृह की भूमि के पास बैठे थे या जो कि उसके अंदर बैठे थे—अपने भूरे, हल्के भूरे, घुटे, अथवा घुँघराले बालों वाले सिर युक्त—सब ही पतली-दुबली सिल्क तथा फीतों से सज्जित अभिनेत्री को देखने में निमग्न थे जो कि उनके सम्मुख छटपटा रही थी तथा अस्वाभाविक स्वर में बोल रही थी।

"हुश !" द्वार खुलते ही किसी ने कहा तथा ठंडी एवं उष्ण वायु की दो लहरें नेखलूदोव के मुख से आकर टकराईं।

उस कक्ष मे थी मेरियेते, बिना बाहों का लाल लबादा पहिने तथा सिर पर भारी ड्रेस आढ़े कोई महिला जिसे वह जानता न था तथा दो पुरुष थे : एक तो मेरियेते का लम्बा, सुन्दर पति जनरल जिसकी नाक रोमवासियों की सी थी, मुखाकृति गंभीर एवं दुर्बोध तथा उसके वक्ष पर कोई वर्दी सी थी। तथा दूसरा था एक सुन्दर व्यक्ति जिसके गलमुच्छों के बीच थोड़ी-सी ठोड़ी सफाचट थी।

पतली, चुस्त, लावण्यमयी मेरियेते ने खुली गर्दन के वस्त्र पहिन रखे थे जिससे कि उसके पुष्ट सुडौल कंधे चमक रहे थे। कंधे पर एक छोटा काला मस्सा था। वह तुरन्त ही घूमी तथा स्वागत, कृतज्ञता तथा, जैसा कि नेखलूदोव को प्रतीत हुआ, अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराते हुए उसने नेखलूदोव को पंखे से अपने पीछे कुर्सी पर बैठने को इंगित किया।

पति ने नेखलूदोव की ओर उसी ढंग से देखा, जिससे वह प्रत्येक कार्य

करता, तथा झुक कर उसे अभिवादन किया। जिस दृष्टि से उसने अपनी पत्नी की की ओर देखा उस दृष्टि में उसकी स्वामित्व की भावना—एक सुन्दरी के स्वामी की भावना—स्पष्ट दिखलाई देती थी।

स्वागत-कथन समाप्त होते ही हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। मेरियेते उठी तथा अपनी खड़खड़ाती हुई सिल्क की ड्रेस को हाथों में पकड़े कक्ष के पिछवाड़े में गई तथा अपने पति से नेखलूदोव का परिचय कराया।

जनरल अपने नेत्रों में लगातार मुस्कुराते हुए बोला कि मुझे बहुत प्रसन्नता हुई तथा फिर बिल्कुल चुप हो गया।

"यदि मैंने आपको वचन न दिया होता तो मैं आज चला जाता।" नेखलूदोव ने मेरियेते से कहा।

"यदि आपको मेरी चिन्ता नहीं है" मेरियेते ने उसके शब्दों के अर्थ के उत्तर में कहा "आप एक अद्भुत कलानेत्री को देखेंगे। क्या पिछले दृश्य में उसने अत्यन्त सुन्दर अभिनय नहीं किया ?" उसने अपने पति की ओर मुड़ते हुए पूछा।

पति ने अपना सिर हिलाया।

"इस प्रकार की बातों से मुझ पर कोई प्रभाव नहीं होता" नेखलूदोव बोला "मैंने आज इतनी सच्ची व्यथा देखी है कि…"

"जी ! विराजिए फिर मुझे सुनाइए।"

पति सुनता रहा—उसके नेत्र अधिकाधिक व्यंग में मुस्कराते रहे।

"मैं उस स्त्री से मिलने गया था जिसे कि मुक्त कर दिया गया है तथा जो इतने दीर्घ काल तक बंदीगृह में रखी गई थी; उसका हृदय बिल्कुल टूट चुका है।"

"यह वही स्त्री है जिसके विषय में मैंने आपसे कहा था।" मेरियेते ने अपने पति से कहा।

"ओह ! हाँ मुझे उसकी मुक्ति से अत्यन्त प्रसन्नता हुई है।" उसके पति ने धीमे से सिर हिलाते हुए तथा मूँछों के नीचे से प्रगट व्यंग में मुस्कुराते हुए कहा। कम-से-कम नेखलूदोव को तो ऐसा ही प्रतीत हुआ। "मैं बाहर जाऊँगा, सिगरेट पीने।"

नेखलूदोव उस बात के सुनने की प्रतीक्षा में बैठा रहा जिसके विषय में मेरियेतो ने कहा था कि मुझे आपसे कुछ कहना है। न तो वह कुछ बोली ही और न कुछ कहने की चेष्टा ही की, किंतु जो भी बातें कीं या परिहास किया वह सब अभिनय के ही विषय में—जिसके विषय में कि उसका विचार था कि वे बातें नेखलूदोव को पसंद आएँगी।

नेखलूदोव ने देखा कि उसे कुछ कहना-सुनना नहीं था केवल वह उसके सम्मुख अपनी सर्वश्रेष्ठ सायंकालीन सज्जा में उपस्थित रहकर अपने छोटे काले मस्से युक्त कंधे को प्रदर्शित करना चाहती थी। और नेखलूदोव को यह सब सुन्दर लगते हुए भी घृणास्पद था।

नेखलूदोव के नेत्रों के सम्मुख से मोह का आवरण अभी हटा नहीं था किंतु उसकी अवस्था ऐसी थी कि वह उस आवरण के अन्दर छिपी हुई वस्तु को देख सकता था। मेरियेतो को देखकर उसने मन-ही-मन उसकी प्रशंसा की। इसके उपरांत भी वह जानता था कि वह झूठी है, अपने ऐसे पति के साथ रहती है जो कि सैकड़ों हजारों व्यक्तियों के अश्रुओं के माध्यम से अपने भविष्य का निर्माण कर रहा है, कि उसे इस बात से कोई सरोकार नहीं, कि कल उसने जो कुछ भी कहा था असत्य था, तथा कि मेरियेतो बस यही चाहती थी—किंतु क्यों यह उन दोनों में से कोई नहीं जानता था—कि नेखलूदोव मुझसे प्रेम करने लगे। इस बात से वह आकर्षित भी हुआ तथा विकर्षित भी। कितनी ही बार जाने के लिए उसने अपना हैट उठाया किंतु रुक गया।

किंतु अन्त में जबकि मेरियेतो का पति अपनी मोटी मूँछों पर तम्बाकू की गंध लगाए वापिस आया तथा नेखलूदोव की ओर उसने तिरस्कारपूर्ण आश्रय-दाता के ढंग से देखा, मानों कि वह उसे पहिचानता ही न हो, नेखलूदोव उठा तथा द्वार बंद होने से पूर्व ही कक्ष से बाहर निकल अपना ओवर कोट लेकर थिएटर से चला गया।

जब कि वह नेवस्की के साथ घर लौट रहा था तब उसने एक लम्बी, सुगठित, अत्यन्त भड़कीले वस्त्रो से सज्जित स्त्री को देखा, जो कि उसके सामने चौड़ी सड़क पर चल रही थी। अपनी तिरस्कार योग्य शक्ति के प्रति उसकी सजगता के चिह्न उसकी आकृति तथा समस्त मुखमंडल पर स्पष्ट दृष्टिगत हो रहे थे। जो भी उसके सामने पड़ जाता अथवा उससे आगे निकल जाता वही उसकी

श्रोर देखे बिना न रहता। नेखलूदोव उससे तेज चल रहा था तथा उसने भी बरबस उसकी मुखाकृति की ओर देखा। मुख, जो कि संभवत: पाउडर युक्त था, सुन्दर था तथा उस स्त्री ने उसकी ओर मुस्कुराकर देखा एवं उसके नेत्र चमक उठे। और कितनी विचित्र बात है कि नेखलूदोव को एकाएक मेरियेते का स्मरण हो आया क्योंकि थियेटर की ही भाँति यहाँ भी उसे आकर्षण एवं विकर्षण दोनों ही अनुभूतियाँ हुईं।

शीघ्र ही उससे आगे निकल, परेशान हो नेखलूदोव मोस्कॉया की ओर मुड़कर बाँध से आगे निकल गया तथा वहाँ फर्श पर चहल-कदमी करने लगा, जिसे देखकर पुलिसमैन आश्चर्य में पड़ गया।

"पहिली तो कक्ष में मुझे प्रवेश करते देख इसी भाँति मुस्कराई" उसने सोचा और दोनों की दोनों मुस्कानों का अर्थ एक ही था। अन्तर यदि था तो केवल इतना ही कि इस स्त्री ने स्पष्ट रूप से सादे ढंग में कह दिया कि यदि आप चाहें तो मुझे ले सकते हैं, यदि नहीं तो अपने मार्ग पर बढ़िए। तथा पहिली वाली ने यह अभिनय किया कि मैं ऐसा नहीं विचार करती किंतु मैं तो अत्यन्त उन्नत एवं परिष्कृत अवस्था में रहती हूँ—जब कि मूल मे दोनों बातें एक ही थीं। यह स्त्री कम से कम ईमानदार तो है किंतु वह तो झूँठी थी। इसके अतिरिक्त यह स्त्री आवश्यकता के कारण इस ओर प्रवृत्त हुई है जब कि वह उस आकर्षक, तिरस्कार योग्य एवं भयपूर्ण वासना से खेलकर आनन्द लूटना चाहती है। यह भटकने वाली स्त्री उन प्यासों की भाँति है जिनको कि उस अवस्था में गंदा पानी पीने को मिले जबकि उनकी प्यास की तीव्रता उस पानी की गंदगी से उत्पन्न घृणा को दबाकर पार कर जाय; तथा वह थिएटर वाली स्त्री एक अदृश्य विष की भाँति थी जोकि जिसे भी स्पर्श कर देती है उसी को विषाक्त कर देती है।

नेखलूदोव ने मार्शल की पत्नी तथा अपने सम्बन्धों को पुनः स्मरण किया तथा उसके सम्मुख लज्जास्पद स्मृतियाँ उठने लगीं।

"मनुष्य की पाशविक प्रकृति की पाशविकता घृणास्पद है।" उसने सोचा "किंतु जबतक पाशविकता अपने नग्न स्वरूप में रहती है तथा हम इसे अपने आध्यात्मिक जीवन के उच्च शिखर से देखते हैं तभी तक इससे घृणा करते हैं; तथा—चाहे कोई पतित हो जाय अथवा संभला रहा आए—व्यक्ति जैसा पहिले था वैसा ही रहा आता है। किंतु जब वही पाशविकता, कवित्व अथवा कलात्मक

भावनाओं के आवरण को ओढ़कर आती है तथा हमसे अर्चना माँगती है— तब यह हमें पूर्णतया निगल लेती है तथा हम अच्छे-बुरे का भेदभाव किए बिना ही पाशविकता की अर्चना-पूजा करने लगते है। तब यह बड़ी भयानक हो उठती है !"

तथा जिस भाँति इस उत्तरी भाग के ग्रीष्म की रात्रि में कोई आवरण नहीं था, पृथ्वी पर घोर कालिमा छाई हुई थी, किंतु किसी अदृश्य सूत्र से एक उदासीन हल्का प्रकाश निकल रहा था उसी प्रकार नेखलूदोव की आत्मा में अब अज्ञान की घोर कालिमा नहीं रही।

प्रत्येक वस्तु स्पष्ट थी। यह स्पष्ट था कि जो भी वस्तुएँ महत्त्वपूर्ण एवं सुन्दर समझी जाती हैं वे सब महत्त्वहीन एवं तिरस्कार योग्य हैं तथा ये समस्त जादू-टोने तथा भोग-विलास उन पुराने परिचित अपराधों पर पर्दा डालते हैं जो कि न केवल अदण्डित ही रह जाते हैं वरन् मानव उन्हें अत्यधिक श्रेष्ठ उपकरणों से सज्जित भी करता है।

वह इस सब को विस्मरण कर देना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि मैं इधर देखूँ किंतु देखे बिना उससे रहा भी न जाता था। यद्यपि वह उस प्रकाश के मार्ग को जिसने कि उसे यह ज्ञान प्रदान किया था, पीतर्सबर्ग के प्रकाश मार्ग की ही भाँति नहीं देख पाया था तथा यद्यपि वह प्रकाश उदासीन, हल्का एवं अस्वाभाविक प्रतीत हो रहा था फिर भी उसके द्वारा प्रकाशित ज्ञान को देखे बिना रह न सका तथा उसे आनन्द एवं उत्सुकता दोनों का ही अनुभव हुआ।

२९

मास्को पहुँचते ही नेखलूदोव तुरन्त ही बंदीगृह-चिकित्सालय में माशलोवा को यह दुखद समाचार पहुँचाने गया कि सीनेट ने कोर्ट के निर्णय की ही पुष्टि की है तथा माशलोवा को अब साइबेरिया जाने के लिए सन्निद्ध रहना चाहिए।

उसे एडवोकेट द्वारा सम्राट् को लिखे पिटीशन की सफलता की आशा कम थी। पिटीशन पर माशलोवा के हस्ताक्षर कराने के लिए नेखलूदोव उसे अपने साथ लेकर अब आया था। कितनी विचित्र बात है कि वह अब

चाहता भी नहीं था कि इसमें उसे सफलता मिले। अब वह यह सोचने का अभ्यस्त हो चुका था कि मैं साइबेरिया जाऊँगा और निर्वासित अधिकारियों के मध्य रहा करूँगा। अब वह अपने नेत्रों के सम्मुख उस जीवन का चित्र सरलता से ला भी नहीं पाता था कि यदि माशलोवा मुक्त हो गई तो मैं किस भाँति उसके साथ जीवन-यापन करूँगा। उसे अमरीकी लेखक थौरियो के विचारों का ध्यान आया जो कि उस समय का था जब कि अमरीका में दास-प्रथा प्रचलित थी। उसके विचार थे "यदि कोई प्रशासन किसी को अन्याय से बंदी करता है तो न्यायपूर्ण व्यक्तियों के लिए भी उस प्रशासन में बंदीगृह ही सच्चा निवास-स्थान है।" पीतर्सबर्ग में सब कुछ देखने तथा वहाँ रहकर ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् नेखलूदोव भी इसी भाँति विचार करने लग गया था।

"हाँ! आजकल रूस में किसी भी न्यायपूर्ण व्यक्ति के लिए बंदीगृह ही एकमात्र स्थान है।" उसने सोचा तथा जिस समय वह बंदीगृह के द्वार पर पहुँचा, उसकी सीमा के अन्दर पहुँचा तो उसकी धारणा हुई कि यह सिद्धान्त उस पर भी व्यक्तिगत रूप से लागू होता है।

चिकित्सालय के द्वारपाल ने नेखलूदोव को पहिचान लिया तथा उसे देखते ही उसने कहा कि माशलोवा अब यहाँ नही है।

"तब फिर कहाँ है ?"

"पुनः बंदीगृह में।"

"उसे यहाँ से क्यों भेजा गया ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"ओह ! श्रीमान्, जी ये लोग भी क्या..." द्वारपाल ने तिरस्कार युक्त मुस्क्यान से कहा "वह छोटे डाक्टर से फँस गई थी अतः बड़े डाक्टर साहब ने उसे वहीं वापिस भेज दिया।"

नेखलूदोव को कल्पना भी न थी कि माशलोवा तथा उसके मानसिक स्तर का मुझ पर कितना प्रभाव है। वह इस समाचार से स्तंभित रह गया।

उसे उस समय ऐसी अनुभूति हुई जैसी कि किसी व्यक्ति को अपने भविष्य में होने वाले अत्यन्त बड़े दुर्भाग्य का समाचार सुनने पर हुआ करती है तथा नेखलूदोव को अत्यन्त तीव्र वेदना हुई। उसके हृदय में पहिले पहल लज्जा की अनुभूति हुई। उसका विचार था कि माशलोवा की आत्मा में परिवर्तन हो रहा है तथा

वह इस विचार से हर्षित थ किंतु अब वह अपनी मूर्खता पर स्वयं हँसने लगा। उसने सोचा कि म शलोवा की समस्त बातें—मेरे त्याग को स्वीकार न करना, उसकी जली-कटी बातें, उसके अश्रु सब ही—एक पतिता स्त्री की युक्तियाँ थीं जिनसे कि वह मुझसे पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिती थी। माशलोवा के साथ हुई अन्तिम भेंट के समय उसमें कठोर हृदयता के चिह्नों का भी उसे कुछ-कुछ स्मरण-सा हो आया। यह सारी बातें उसके मन में उस समय स्वयं कौंध गईं जिस समय कि उसने अपना टोप पहिना तथा चिकित्सालय से बाहर निकल आया।

"मुझे अब क्या करना है? क्या मैं अभी तक उससे बँधा हुआ हूँ? क्या उसके इस कार्य ने मुझे निर्बंध नहीं कर दिया?" किंतु जब इन प्रश्नों पर उसने विचार किया तब तुरन्त ही उसे ज्ञान हो आया कि यदि मैं स्वयं को मुक्त समझ कर उसे त्याग देता हूँ तो इससे दण्ड माशलोवा को नहीं मिलेगा, जिसे कि मैं देना भी नहीं चाहता हूँ, किंतु मिलेगा मुझे। और वह भय से सिहर उठा।

"नहीं! जो कुछ हो चुका उसे बदला नहीं जा सकता, यह तो मेरे निश्चय को प्रबलतर ही करेगा। उसकी मानसिक अवस्था उससे जो कुछ भी कराती है करने दो। यदि वह छोटे डाक्टर से सम्बन्ध रखना चाहती है तो छोटे डाक्टर के साथ सम्बन्ध स्थापित करने दो; यह उसका अपना मामला है। मुझे तो अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर चलना चाहिए। तथा मेरी आत्मा की माँग है कि मैं अपनी स्वतंत्रता को बलि कर दूँ। उससे विवाह करने का निश्चय, चाहे वह खाना पूरी के रूप में ही क्यों न हो, तथा जहाँ भी वह जाय उसका अनुगमन करने का निश्चय अब बदल नहीं सकता है।" नेखलूदोव ने यह सब बातें अपने हृदय में कटुतापूर्ण हठ से उस समय बिचारी जब कि वह चिकित्सालय से बंदीगृह के सिंहद्वार की ओर दृढ़ पगों से चलता हुआ पहुँचा।

उसने सिंहद्वार पर नियुक्त वार्डर से कहा कि जाकर इंसपैक्टर साहब को सूचित कर दीजिए कि मैं माशलोवा से मिलना चाहता हूँ। वार्डर ने नेखलूदोव को पहिचान लिया तथा परिचितों की भाँति बातें करते हुए उसने उसे बंदीगृह का महत्त्वपूर्ण समाचार सुनाया। पुराना इन्सपैक्टर निकाल दिया गया था तथा एक अत्यन्त कठोर नया इन्सपैक्टर उसके स्थान पर नियुक्त हो गया था।

"ग्राजकल इतनी कड़ाई होती है कि बस पूछिए मत।" वार्डर बोला, "वह यहाँ ग्रन्दर है तथा ग्रापको उससे शीघ्र ही मिला दिया जाएगा।"

नया इन्सपैक्टर बंदीगृह के ग्रन्दर था तथा शीघ्र ही नेखलूदोव के पास ग्रा गया। वह लम्बा, टेढ़े तथा चिड़चिडे स्वभाव का व्यक्ति था तथा उसके गालों की हड्डियाँ बाहर को उभड़ी हुई ग्रलग दिखलाई देती थीं। उसकी चाल ग्रत्यन्त धीमी थी।

"मिलाई के कक्ष में भेंट निश्चित दिनों में ही हो सकती है।" उसने नेखलूदोव की ग्रोर बिना देखे हुए ही कहा।

"किंतु मेरे पास सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए पिटीशन है, उस पर मुझे हस्ताक्षर कराने हैं।"

"वह ग्राप मुझे दे दीजिए :"

"बंदिनी से मुझे स्वयं मिलना होगा। मुझे इससे पूर्व सदैव ऐसा करने की ग्रनुमति थी।"

"जी, पहिले ऐसा ही होता था।" इन्सपैक्टर ने नेखलूदोव की ग्रोर कनखियों से देखते हुए कहा।

"मेरे पास गवर्नर महोदय का ग्रनुमति पत्र है।" नेखलूदोव ने जोर दिया तथा ग्रपना बटुग्रा निकाला।

"क्षमा कीजिए" इन्सपैक्टर ने उससे ग्राँखें चुराते हुए ग्रपनी लम्बी, सूखी, श्वेत उँगलियों से, जिनमें से एक में सोने की ग्रँगूठी थी, नेखलूदोव से कागज लेकर पढ़ा तथा बोला, "कृपया कार्यालय में पधारिए।"

इस समय कार्यालय में कोई नहीं था। इन्सपैक्टर मेज के पास बैठ गया तथा मेज पर पड़े कुछ कागजों को छाँटने लगा। उसकी इच्छा स्पष्ट व्यक्त हो रही थी कि वह भेंट के समय में उपस्थित रहना चाहता था।

नेखलूदोव ने उससे पूछा कि क्या मैं राजनैतिक बंदिनी दुखोवा से भी मिल सकता हूँ तो इन्सपैक्टर ने सूक्ष्म-सा उत्तर दिया कि नहीं।

"राजनैतिक बंदियों से भेंट करने की ग्रनुज्ञा नहीं है।" वह बोला तथा पुनः कागज पर ग्रपना ध्यान लगा लिया।

दुखोवा का पत्र नेखलूदोव की जेब में था। इस पत्र के कारण उसे लग रहा था कि मानो मैं कोई अपराध करने की चेष्टा में हूँ और मेरी योजनाएँ पकड़ ली गई है तथा मुझे हरा दिया गया है।

माशलोवा के प्रविष्ट होते ही इन्सपैक्टर ने अपना सिर उठाया तथा दोनों में से किसी की ओर बिना देखे कहा, "आप बातें कर सकते हैं।" तथा अपने कागजों को बैठा छाँटता रहा।

माशलोवा आज भी सफेद जाकेट, घाघरा तथा रूमाल में थी। नेखलूदोव के पास आकर माशलोवा ने उसके उदास, कठोर मुख को देखा तो वह लज्जा से आरक्त हो उठी तथा अपनी जाकिट की मगजी को हाथ से तोड़ते-मोड़ते हुए उसने अपने नेत्र नीचे कर लिए।

उसकी हकबकाहट को देखकर नेखलूदोव के हृदय में चिकित्सालय के द्वारपाल की बात और अधिक जम गई।

नेखलूदोव उससे पूर्वतः ही व्यवहार करना चाहता था, किंतु फिर भी वह इस समय इतनी घृणित लगी कि उससे वह हाथ न मिला सका।

"मैं बुरा समाचार लेकर आया हूँ।" उसने उसकी ओर देखे और उससे हाथ मिलाए बिना ही भर्राए स्वर में कहा, "सीनेट ने अपील रद्द कर दी है।

"मैं जानती थी कि ऐसा ही होगा।" उसने विचित्र स्वर में कहा मानो कि उसकी साँस रुक रही हो।

पहिले तो नेखलूदोव उससे यह अवश्य पूछता कि तुम्हें कैसे ज्ञात; किंतु अब वह केवल उसकी ओर देखता ही रहा। माशलोवा के नेत्र अश्रु पूरित थे।

कितु अश्रुओं का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, इससे उसका क्रोध और भी बढ़ गया।"

इन्सपैक्टर उठा और कक्ष में इधर-से-उधर चहलकदमी करने लगा।

माशलोवा के प्रति घृणा की अनुभूति के उपरांत भी उसने सीनेट के निर्णय पर दुख प्रगट करना उचित समझा।

"तुमको हताश नहीं होना चाहिए।" वह बोला, "सम्राट् को दिए जाने वाले पिटीशन का परिणाम सुखद हो सकता है, तथा मुझे आशा..."

'मैं यह नहीं सोच रही।" वह बोली तथा अपनी डबडबाई हुई तिरछी आँखों की करुणापूर्ण दृष्टि से उसने नेखलूदोव की ओर देखा।

"तब फिर ?"

'आप चिकित्सालय गए होंगे और वहाँ आपसे मेरे विषय मे कहा गया होगा कि..."

"उसमे मुझे क्या ? वह तुम्हारा अपना मामला है।" नेखलूदोव ने शान्ति से उत्तर दिया तथा भौंहें चढ़ाईं। माशलोवा के दलित अपमान की निर्दयतापूर्ण दबी हुई भावना नए बल के साथ चिकित्सालय का नाम सुनते ही उभर उठी।

"मैं, एक साँसारिक व्यक्ति जिसके साथ कि अच्छे-से अच्छे परिवार की कोई लड़की विवाह करने में प्रसन्न ही होगी, इस स्त्री का पति होने को तैयार था। तथा वह प्रतीक्षा भी नहीं कर सकी और छोटे डाक्टर के साथ घनिष्टता बढ़ाने में लग गई"—नेखलूदोव ने घृणा से देखते हुए उत्तर दिया।

"खैर ! इस पिटीशन पर हस्ताक्षर कर दो।" उसने अपनी जेब से लिफाफा निकाल कागज को मेज पर बिछाते हुए कहा। माशलोवा अपने रूमाल के छोर से आँसू पोंछे तथा पूछा कि कहाँ लिखूं और क्या लिखू।

नेखलूदोव ने उसे बतला दिया। वह अपने बाँए हाथ से दाँये हाथ की आस्तीन को ऊँची चढ़ाती हुई बैठ गई। वह उसके पीछे खड़ा हुआ चुपचाप उसकी पीठ को देखता रहा, जो कि आवेग को दबाने के कारण हिल रही थी। नेखलूदोव के हृदय में भली बुरी दोनों ही प्रकार की भावनाओं का संघर्ष हो रहा था—आहतगर्व की भावना का तथा उस दुखिया के प्रति करुणा की भावना का भी; और विजय हुई अन्तिम भावना की।

उसे यह स्मरण नहीं आया कि कौन-सी भावना पहिले उत्पन्न हुई थी। माशलोवा के लिए उसके हृदय में प्रथमतः करुणा उत्पन्न हुई तथा उत्पन्न हुए प्रथम अपने पाप— उसके स्वयं के तिरस्कार युक्त कर्म, जिस प्रकार के कर्मों के लिए वह आज भी माशलोवा का तिरस्कार कर रहा था। कुछ भी हुआ हो उसके हृदय में दोनों अनुभूतियाँ हुईं कि मैं स्वयं पापी हूँ तथा मुझे माशलोवा पर करुणा आनी चाहिए।

पिटीशन पर हस्ताक्षर कर तथा स्याही लगी अपनी उँगलियों को अपने पेटीकोट से पोंछकर माशलोवा खड़ी हो गई तथा उसकी ओर देखने लगी।

'कुछ भी हो, पिटीशन का कुछ भी बने, मेरा निश्चय अटल है'' नेखलूदोव बोला।

इस विचार से कि मैंने इसे क्षमा कर दिया है, नेखलूदोव की माशलोवा के प्रति करुणा एवं कोमलता की भावनाओं में निखार आ गया तथा वह उसे सुविधा पहुँचाने को लालायित हो उठा।

"मैंने जो कहा है उसे क्रियान्वित करूँगा: जहाँ भी तुम्हें ले जाया जायगा वहीं मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

"लाभ क्या ?" उसने शीघ्र बात काट दी, यद्यपि उसका सम्पूर्ण मुखमण्डल खिल उठा।

"सुन्दर तो यह रहे कि तुम विचार कर लो कि मार्ग में किन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ सकती है।"

"मैं इस विषय में नितान्त अनभिज्ञ हूँ। धन्यवाद।"

इन्सपैक्टर आ गया, तथा नेखलूदोव ने इससे पूर्व कि वह कुछ कहे सुने माशलोवा से विदा ले ली तथा वह अपने हृदय में प्रसन्नता, शान्ति एवं प्रत्येक के प्रति प्रेम की भावना लेकर बाहर गया—जितनी कि उसने आज से पूर्व कभी अनुभव नहीं की। इस विश्वास ने, कि माशलोवा का कोई भी कार्य उसके प्रति मेरे प्रेम में परिवर्तन उत्पन्न नहीं कर सकता, नेखलूदोव के हृदय को आनन्द से परिपूर्ण कर उसे इतना ऊँचा उठा दिया जितना कि वह पहिले कभी नहीं पहुँचा था। वह छोटे डाक्टर के साथ घनिष्ठता बढ़ाती है तो बढ़ाए; यह उसका अपना मामला है। मैं अपने स्वयं के लिए उसे प्रेम नहीं करता—करता हूँ तो उसके कारण और परमात्मा के कारण।

जिसके कारण माशलोवा को चिकित्सालय से निकाला गया तथा जिस पर नेखलूदोव ने उसे सचमुच अपराधिनी मान लिया वह कार्य व्यापार यह था:

बड़ी नर्स ने माशलोवा को डिस्पेन्सरी से, जो कि दालान के अन्त में थी, चाय लाने के लिए भेजा। वहाँ बैठा था छोटा डाक्टर—अकेला लम्बे कद तथा मुंहासों से युक्त चेहरे का—जो माशलोवा को पहिले से ही छेड़ता था। उससे बच निकलने की चेष्टा में माशलोवा ने उसे इतनी जोर से धक्का दिया कि उसका सिर अलमारी से जा टकराया तथा अलमारी की दो बोतलें गिरते ही टूट गईं।

बड़ा डाक्टर, जो वहाँ से निकल रहा था उसने काँच के टूटने की ध्वनि सुनी तथा उत्तेजित माशलोवा को भाग कर जाते हुए देखकर वह उस पर क्रोध में बरस पड़ा।

"ए भनी आदमिन ! यदि तुमने यहाँ भी वही प्रारम्भ किया तो मैं तुमको तुम्हारे स्थान पर वापिस भेज दूंगा···" "इसका क्या अभिप्राय ?" उसने छोटे डाक्टर को संबोधित कर कहा तथा उसकी ओर अपने चश्मे में से कठोरता से देखने लगा।

छोटा डाक्टर मुस्कुराया तथा अपनी सफाई देने लगा। बड़े डाक्टर ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया किन्तु अपना सिर उठाकर, ताकि अपने चश्मे में से देख, सके वह वार्ड में चला गया। उसी दिन इंसपैक्टर से उसने माशलोवा के स्थान पर कोई अन्य सहायिका भेजने को कह दिया।

और यह था उस छोटे डाक्टर के साथ माशलोवा का "कार्य-व्यापार"। प्रेम-सम्बन्ध का लाँछन लगाकर निकाला जाना माशलोवा को विशेषतया चुभ गया, क्योंकि पुरुषों के साथ संबंधों से तो उसे बहुत पहिले से घृणा हो चुकी थी तथा उस समय से तो और भी अधिक हो गई थी जबसे कि नेखलूदोव से उसकी भेंट हुई। प्रत्येक व्यक्ति को, जिनमें कि मुहासों युक्त छोटा डाक्टर भी सम्मिलित था मेरे अतीत से मेरी वर्तमान परिस्थितियों की तुलना करते हुए मेरा अपमान करने का अधिकार है तथा मेरी अस्वीकृति से इन्हें आश्चर्य हो सकता है। इस विचार से उसे अत्यधिक ठेस पहुँची और उसे अपने ऊपर करुणा उत्पन्न हो आई तथा इस कारण उसके नेत्रों में अश्रु आ गए। इस समय नेखलूदोव के पास पहुँचकर वह इस झूँठे लाँछन की सफाई देना चाहती थी। किंतु जब वह सफाई देने लगी तब उसे लगा कि नेखलूदोव मेरी बातों पर विश्वास नहीं कर रहा, तथा मेरी सफाई उसकी शंकाओं का समर्थन ही करेगी तो वह चुप हो गई। उसके चुप होने का दूसरा कारण अश्रु भी थे जिन्होंने कि उसका कंठ अवरुद्ध कर दिया था।

माशलोवा का अभी तक यही विचार था तथा वह स्वयं को भी इसी का विश्वास दिलाना चाहती थी कि मैंने उसे क्षमा नहीं किया—जैसा कि उसने अपनी दूसरी भेंट में उससे कहा था कि मैं तुमसे घृणा करती हूँ, किंतु वास्तव में वह उससे पुनः प्रेम करने लगी थी—और प्रेम भी ऐसा कि नेखलूदोव ने जो भी चाहा उसने किया: मदिरा, सिगरेट पीना, हाव-भाव प्रदर्शित करना स्वयंमेव त्याग दिया तथा चिकित्सालय में भी इसीलिए गई कि वह जानती थी कि नेखलूदोव की इच्छा है। नेखलूदोव जब उससे विवाह का प्रस्ताव करता

तथा वह इस प्रस्ताव को स्वीकार करने तथा विवाह करने को दृढ़ता से अस्वीकार करती तो उसका कारण यह था कि उसे अपने एक बार के कहे हुए गर्व पूर्ण शब्दों को दोहराने में आनन्द आता; साथ ही वह यह भी जानती कि मेरे साथ नेखलूदोव के विवाह का अर्थ है नेखलूदोव को विपत्ति में डालना। इसीलिये उसने नेखलूदोव को यह त्याग करने की स्वीकृति नहीं दी। फिर भी जब कभी उसे विचार आता कि वह मुझसे घृणा करता है तथा मुझे पूर्ववत ही समझकर मेरे अन्दर होने वाले परिवर्तनों को लक्ष्य नहीं करता तो उसे अत्यन्त क्लेश होता। अपील रद्द हो जाने के समाचार से माशलोवा इतनी व्यथित नहीं हुई जितनी कि इस विचार से कि शायद वह मेरे विषय में सोचता है कि चिकित्सालय के काय व्यापार में अपराधिनी मैं थी।

३०

माशलोवा को बन्दियों के पहले जत्थे के साथ भी भेजा जा सकता था अतः नेखलूदोव प्रस्थान की तैयारियाँ करने लगा। किन्तु कार्य इतना बाकी था कि उसे अनुभव हुआ कि समय कितना भी अधिक क्यों न हो मैं सब कार्य समाप्त नहीं कर सकता। पहिले और अब में महान अन्तर था। पहिले वह उन कार्यों को ही खोज निकालने का अभ्यस्त था जिसमें कि केवल एक व्यक्ति का हित केन्द्रित रहता था अर्थात् दिमित्री इवानोविच नेखलूदोव का; तथा उसके जीवन का प्रत्येक हित इस भाँति केन्द्रित होने पर भी वे सब कार्य अत्यन्त थकाने वाले होते। अब उसके समस्त कार्य-व्यापार दिमित्री इवानोविच के हित में नहीं, अन्यान्य के हित में होते तथा वे सबके सब,यद्यपि उनका कोई अन्त नहीं, पुनरपि रुचिप्रद एवं आकर्षक होते।

यहीं पर समाप्ति नहीं थी। पहिले दिमित्री ईवानोविच नेखलूदोव के समस्त कार्य दुखदाई एवम् पीड़ादायक होते, अब उनसे मानस प्रसन्नता से भर उठता।

वर्तमान कार्य व्यापार, जिसमें कि नेखलूदोव व्यस्त था, तीन भागों में विभाजित किया जा सकता था। उसने स्वयं अपने अभ्यस्त पाँडित्य से इस भाँति विभाजित किया था तथा उसी अनुसार उसने कागजातों को तीन भिन्न फाइलों में रखा।

पहिला था, माशलोवा से संबंधित तथा विशेषतया सम्राट के लिए उसके पिटीशन की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए पग उठाना तथा उसे साइबेरिया की संभावित यात्रा के लिए तैयार करना।

दूसरा था, अपनी जमींदारियों के मामलों की व्यवस्था करना। पानोवो में उसने कृषकों को भूमि इस शर्त पर दी थी कि उनसे प्राप्त किराया उनके सामूहिक कार्यों में व्यय किया जायगा। किंतु इसके लिए उसे वैधानिक लिखा-पढ़ी करनी शेष थी तथा उसी के अनुसार अपना इच्छा-पत्र भी लिखना था। कुजमीन्सकोये में जमीदारी के कार्य-व्यापार अब भी वैसे ही पड़े थे जैसे कि उसने पहिले व्यवस्थित किये थे; उसे किराया मिलना था; किंतु शर्तें निश्चित होनी थी तथा कितना धन उसे अपने निर्वाह के लिए आवश्यक रहेगा तथा कितना कृषकों के उपयोग के लिए छोड़ना होगा। क्योंकि उसे यह ज्ञात नहीं था कि साईबेरिया की यात्रा में कितना व्यय होगा। उसने अभी तक इस समस्त आय को समाप्त कर देने का निश्चय नहीं किया था यद्यपि आधी तो घटा दी थी।

तीसरा काम था उन बंदियों की सहायता करना जिन्होंने उससे कभी कभी तथा अधिक प्रार्थना की थी।

पहिले जब वह बंदियों के सम्पर्क में आया ही था और उन्होंने उससे सहायता की प्रार्थना की तब उनके दुर्भाग्य को हल्का करने के लिए वह उनकी मध्यस्थता में तुरन्त ही व्यस्त हो गया किंतु कुछ ही दिनों में उसके पास इतने प्रार्थना-पत्र आ गए कि सब की ओर ध्यान देना असंभव प्रतीत हुआ। तथा इस कारण उसे एक अन्य और कार्य लेना पड़ा, जिसमें कि अन्त में आकर उसकी रुचि पहिले तीनों से कहीं अधिक बढ़ गई।

यह नया कार्य व्यापार उन प्रश्नों के हल में निहित था: यह फौजदारी अदालत कौन सी विचित्र संस्था है जिसके कारण कि उस बंदीगृह की स्थापना हुई तथा जिसके निवासियों से कुछ-कुछ मेरा परिचय हो चुका है? तथा अन्य कितने ही स्थानों के पीतर्सबर्ग के पीटर, से लगाकर पॉल फोर्टरेस के साखालीन द्वीप तक के बन्दीगृहों की स्थापना हुई जिनमें कि फौजदारी कानून के शिकार हुए लाखों व्यक्ति कष्ट भोग रहे हैं!

बन्दियों के साथ अपने व्यक्तिगत संबन्धों से, बन्दी-गृह में बन्द व्यक्तियों की सूची से, तथा एडवोकेट, बन्दीगृह के पादरी एवं इन्सपैक्टर से पूछने पर

नेखलूदोव इस परिणाम पर पहुँचा कि ये अपराधी कहे जाने वाले बन्दी पाँच श्रेणियों में विभक्त किए जा सकते हैं।

पहिली श्रेणी में आते थे वे नितांत निर्दोष यक्ति जिनको कि न्याय की महान त्रुटियों के कारण दण्ड प्राप्त हुए हैं। ऐसे थे—मेन्शोव जिसको कि अग्नि लगाने वाला मान लिया गया था, माशलोवा तथा अन्य बन्दी। ऐसे लोग अधिक नहीं थे, पादरी के अनुसार केवल सात प्रतिशत ही थे, किंतु उनकी अवस्था ने विशेष रुचि उत्पन्न कर दी थी।

दूसरी श्रेणी में आने वाले व्यक्ति ऐसे थे जिन्हें कि विचित्र परिस्थितियों में किए गए कार्यों के कारण दण्ड प्राप्त हुआ था। उनकी परिस्थितियाँ थीं: उन्माद, ईर्ष्या अथवा मदिरा—परिस्थितियाँ, जिनमें कि यदि न्याय करने वाले भी पड़ गए होते तो वे स्वयं भी वैसा ही कर बैठते। नेखलूदोव की धारणा के अनुसार आधे से अधिक अपराधी इसी श्रेणी के थे।

तीसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते थे जिन्होंने कि अपने विचानुसार तो नितान्त स्वाभाविक एवं अच्छे कार्य ही किए थे किंतु उन व्यक्तियों की दृष्टि में, जिन्होंने कि विधान का निर्माण किया था, वे कार्य अपराध थे। ऐसे थे वे जो अनुमति-पत्र के बिना मदिरा बेचते, चोर-बजारुए, जो कि सम्राट् की बड़ी जमीदारियों एवं जंगलों से घास और लकड़ी बटोरते, पर्वतीय दस्यु, तथा वे नास्तिक जो चर्चों को लूटते।

चौथी श्रेणी उन व्यक्तियों की थी जो केवल इस कारण ही बन्दी बनाए गए थे कि वे लोग जन साधारण के नैतिक स्तर से कहीं अधिक उन्नत थे। ऐसे थे साम्प्रदायिक; ऐसे थे पोल तथा सरकासियन जो कि अपनी स्वतन्त्रता की पुन: प्राप्ति के लिए विद्रोह कर रहे थे, राजनैतिक बन्दी, समाजवादी तथा हड़ताली। नेखलूदोव के ज्ञान के अनुसार बन्दीगृह में इस श्रेणी का बहुत बड़ा प्रतिशत था और उनमें थे कुछ सर्वश्रेष्ठ पुरुष जो कि अधिकारियों को बाधा पहुँचाने के कारण दण्डित थे।

पाँचवीं श्रेणी उन व्यक्तियों की थी जिनके पाप उन पापों से कहीं कम थे जो कि समाज ने उनके साथ किए थे। ये वे निरर्थक पुरुष थे जो कि निरन्तर निर्दयता एवं लोभ के प्रहारों से मूर्छित किए जा चुके थे जैसे कि वह लड़का जिसने कि चटाई चुराई थी तथा ऐसे ही अन्यान्य सैकड़ों जिन्हें कि नेखलूदोव ने

बंदीगृह के अन्दर तथा बाहर देखा था। जिन परिस्थितियों में ये रहते थे उनसे ही ऐसा प्रतीत होता था कि ये लोग अपराध कहे जाने वाले कार्यों के ही अंतर्गत व्यवस्थित रूप से जीवन यापन करते हैं। नेखलूदोव के मतानुसार इस श्रेणी में चोरों एवं हत्यारों की बहुत बड़ी संख्या थी। इनमें से कुछेकों का तो पिछले कुछ दिनों में उससे वास्ता भी पड़ चुका था। उसके मतानुसार इस श्रेणी में वे नीच एवं पतित प्राणी आते थे जिनके लिए अपराध विज्ञान की नई विचार-धारा ने अपराधियों की श्रेणी में रखा था तथा इसी श्रेणी की वर्तमानता के कारण दंड एवं दंड विधान की व्यवस्था की आवश्यकता अनुभव की गई थी। नेखलूदोव का विचार था कि यह नीच, पतित एवं असाधारण श्रेणी में गिने जाने वाले लोग वे ही थे जिनके प्रति समाज ने द्रोह किया था। समाज ने सीधा इनसे द्रोह नहीं किया था वरन् किया था इनके माता पिताओं से तथा पूर्वजों से।

इस अन्तिम श्रेणी में गिने जाने वाले ओखोटीन नामक एक पुराने चोर से नेखलूदोव अत्यधिक प्रभावित हुआ। यह व्यक्ति एक वेश्या का जारज पुत्र था। उसका पालन-पोषण एक सराय में हुआ था तथा वह अपनी नौजवानी में ही चोरों के गिरोह में सम्मिलित हो गया था एवं अपनी तीस वर्ष की आयु तक किसी भी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क मे न आ पाया था जिसका चरित्र पुलिसमैन से अधिक उन्नत हो। परिहास करने की विशेष योग्यता उसके लिए भगवान की देन थी तथा इस योग्यता के कारण उसमें आकर्षण की शक्ति बढ़ गई थी। ओखोटीन ने नेखलूदोव से अपनी मध्यस्थता करने की प्रार्थना की। साथ ही अपना, वकीलों, बंदीगृह, तथा ईश्वरीय एवं मानवीय विधान का परिहास बना डाला। दूसरा था सुन्दर आकृति युक्त फ्योदोरोव, जिसने डाकुओं के एक दल के साथ, जिसका कि वह प्रधान था, एक वृद्ध सरकारी कर्मचारी की हत्या कर दी थी। फ्योदोरोव एक किसान था जिसके पिता का मकान अवैधानिक ढङ्ग से छीन लिया गया था। फ्योदोरोव सेना में सैनिक हो गया तथा बाद में आकर किसी अधिकारी की पत्नी के प्रेम में पड़ जाने का परिणाम उसे भोगना पड़ा। वह कामुक तथा उतावली प्रकृति का व्यक्ति था तथा किसी भी मूल्य पर सुखोप-भोग के लिए सन्निद्ध रहता। उसे जीवन में कोई भी व्यक्ति ऐसा न मिला जिसने कि उसे किसी भी कार्य से रोका हो तथा भोग के अतिरिक्त एक शब्द भी किसी ने जीवन के उद्देश्य के विषय में उससे कहा हो। नेखलूदोव के सम्मुख यह स्पष्ट था कि इन दोनों को ही प्रकृति की कुछ-न-कुछ देन अवश्य थी किंतु इनके

ऊपर कोई सुसंस्कार नहीं पड़े थे। उसे एक स्त्री तथा एक भिखारी भी मिला था। नेखलूदोव उनकी सुस्ती तथा निर्दयता से खीझ उठा था किंतु उनमें भी उसे अपराधी वृत्ति का कोई भी चिन्ह न मिला। उसे तो वे बंदीगृह के बाहर कोट और फीते तथा तमगे युक्त पुरुषों की ही भाँति प्रतीत हुए। नेखलूदोव को इन पुरुषों से भी खीझ उत्पन्न होती थी।

अतः नेखलूदोव के लिए उन कारणों की खोज करना चौथा कार्य हो गया कि जब बिल्कुल इसी भाँति के लोग बंदीगृह से बाहर उन्मुक्त घूमते फिरते हैं तो इन बेचारों को बंदीगृह में क्यों बन्द किया गया है।

उसे आशा थी कि इस प्रश्न का उत्तर मुझे पुस्तकों से प्राप्त हो जाएगा अतः उसने इस विषय की समस्त पुस्तकें खरीद डालीं। उसने लोम्बरोसो, गारोफालो, फेरी, लीज, माउद्स्ले, टार्डे की कृतियाँ प्राप्त कर उन्हें ध्यान से पढ़ा। किंतु ज्यों २ वह उन्हें पढ़ता जाता त्यों-त्यों वह निराश होता जाता। उसे ठीक उसी प्रकार अनुभव हुआ जैसे कि कोई व्यक्ति किसी दैनन्दिन जीवन के प्रश्न का उत्तर पाने के लिए विज्ञान की ओर प्रवृत्त होता है तथा वह न तो विज्ञान में कोई भाग लेना चाहता है, न लिखना चाहता है, न बिवाद करना चाहता है, न शिक्षा ही लेना चाहता है। विज्ञान में फौजदारी कानून के अन्यान्य हजारों प्रश्नों का उत्तर मिला किंतु उस प्रश्न का उत्तर नहीं मिला जिसका कि वह चाहता था।

उसका प्रश्न अत्यन्त साधारण था: "इन कुछेक व्यक्तियों को क्या अधिकार है और क्यों 'ये लोग किसी को बंदी करते है, कष्ट देते हैं, निर्वासित करते है, कोड़े मारते है तथा मृत्यु दण्ड देते हैं जबकि वे स्वयं भी वैसे ही हैं जैसे कि वे लोग जिन्हें ये कोड़े मारते हैं, दण्ड देते है तथा निर्वासित करते हैं?" और उत्तर में उसे बितर्क प्राप्त होते—मानव की इच्छा स्वतन्त्र है अथवा नहीं; खोपड़ी की माप के अनुसार अपराध के चिह्न ज्ञात हो सकते है अथवा नहीं; वंश परम्परा से अपराध का कितना सम्बन्ध है; अनैतिकता परम्परागत प्राप्त होती है अथवा नहीं; नैतिकता क्या है, पागलपन क्या है, पतन क्या है, तथा स्वभाव क्या वस्तु है; जलवायु, भोजन, अज्ञान, नकल, हिपनोटिज्म अथवा क्रोध का अपराध पर क्या प्रभाव पड़ता है; समाज क्या है; उसके कर्त्तव्य क्या हैं .. आदि।

इन वादविवादों ने नेखलूदोव को उस लड़के का उत्तर स्मरण करा दिया,

जो कि विद्यालय से घर लौटते हुए उसे मिला था। नेखलूदोव ने उससे प्रश्न किया था, "क्या तुमको हिज्जे करना आ गया है ?"

"जी हाँ, मैं कर सकता हूँ।" लड़के ने उत्तर दिया।

"अच्छा तो बतलाओ कि 'टाँग' के हिज्जे क्या हैं ?"

"कुत्ते की टाँग या किस प्रकार की टाँग ?" लड़के ने मूर्खता से देखते हुए उत्तर दिया। अपने सैद्धान्तिक प्रश्न के उत्तर में ठीक इसी प्रकार के उत्तर उन वैज्ञानिक पुस्तकों से नेखलूदोव को प्राप्त हुए।

उनमें बुद्धिमत्ता, ज्ञान तथा अन्यान्य रुचिप्रद बातें पर्याप्त थीं; किंतु इस मुख्य बात का कोई उत्तर नहीं था।

"किसी व्यक्ति को अन्यान्य व्यक्तियों को दंड देने का क्या अधिकार है ?"

केवल इतना ही नहीं कि इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया गया था वरन् दंड प्रमाणित करने तथा उन्हें समझाने के समस्त तर्क-वितर्कों को एक निश्चित सत्य मान लिया गया था।

नेखलूदोव ने अध्ययन तो काफी किया किंतु सब पढ़ा टुकड़ों-टुकडों में; अतः उसने अपने अध्ययन के इस ढंग को ही अपनी असफलता का कारण समझा। उसने सोचा कि इसका उत्तर फिर कभी मिल जाएगा। वह उस उत्तर में विश्वास नहीं करना चाहता था जो कि उसकी आत्मा में यदा कदा स्वयं ही उठने लग गया था।

३१

जिन बंदियों के दल में माशलोवा थी उस दल को ५ जुलाई को प्रस्थान करना था। नेखलूदोव ने भी उसी दिन चलने की व्यवस्था कर ली।

इससे एक दिन पूर्व नेखलूदोव की बहिन तथा बहनोई उससे मिलने नगर में आए।

नेखलूदोव की बहिन नतालिया इवानोव्ना रागोझिन्स्काया उससे दस वर्ष बड़ी थी। नेखलूदोव अंशात्मक रूप से अपनी इस बहिन के प्रभाव में पला था।

जब वह लड़का ही था तब उसकी बहिन उसे बहुत प्यार करती थी। बाद में बहिन के विवाह से पूर्व वे दोनों एक दूसरे से इतना स्नेह करने लगे मानो कि वे दोनों समवयस्क हों यद्यपि बहिन पच्चीस वर्ष की युवती थी तथा वह पन्द्रह वर्ष का किशोर था। उन दिनों वह उसके मित्र निकोलेन्का इर्तेन्येव से, जो अब मर चुका था, प्रेम करती थी। वे दोनों ही निकोलेन्का से प्रेम करते वे अपने अन्दर तथा निकोलेन्का के अन्दर जो कुछ भी अच्छाई देखते तथा जो अच्छाई कि सबको प्रेम-सूत्र में आबद्ध करती है उसी से प्रेम करते थे।

उस समय के पश्चात से अब वे दोनों पतित हो चुके थे—नेखलूदोव सैनिक सेवा तथा दुराचारी जीवन से तथा बहिन एक पुरुष से विवाह करने के पश्चात, जिसे कि इंद्रियजन्य सुखोपभोग करने की भावना से प्रेम करती थी। बहिन अब उन वस्तुओं के प्रति, जिन्हें कि कभी वह अत्यन्त चाहती तथा अपने भाई के लिए पवित्र मानती थी, न केवल लापरवाह हो गई थी वरन् उन भावनाओं का अब उसके लिए कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया था जिनसे कि नैतिक पूर्णत्व तथा मानव-सेवा की उसे कभी प्रेरणाएं प्राप्त होती थी तथा उसके जीवन में महत्व-शाली वस्तु रह चुकी थीं।

नतालिया के पति के पास न तो ख्याति थी और न धन किंतु वह अपने धन्धे में अत्यन्त प्रवीण था। यह प्रवीणता उसने उदार एवं अनुदार दलीय दोनों के मध्य चतुराई से ऐसा प्रबन्ध करने से प्राप्त की थी कि समयानुसार वह चाहे जिसका भी लाभ उठा सकता था। उसके एक विशेष गुण ने, जिसके कारण कि वह स्त्रियों को प्रसन्न कर लेता था, उसका न्याय-विभाग का भविष्य सुन्दर बना दिया था। जब वह सुदूर यात्रा के लिए निकला था तब उसने नेखलूदोव से परिचय कर लिया था तथा नतालिया को उसकी माँ की इच्छाओं के विपरीत अपने प्रेम-पाश में बाँध लिया। नतालिया की माँ इस विवाह को अपनी लड़की के योग्य नहीं समझती थी। उस ससय नतालिया अपनी युवावस्था को पार कर चुकी थी तथा रागोभिन्सकी भी।

नेखलूदोव अपने बहनोई से घृणा करता था। वहअपनी घृणा को छिपाने तथा उस पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा भी करता था।

रोगोभिन्स्की.की नीच भावनाओं तथा उसकी आत्म विश्वस्त संकीर्ण मनोवृत्ति के कारण नेखलूदोव उससे घृणा करने लगा था। घृणा का प्रधान

कारण थी नतालिया, जो कि अपने पति की संकीर्ण मनोवृत्ति के उपरान्त भी उससे इतनी उग्रता, स्वार्थता एवं वासनातुरता से प्रेम करने लग गई थी कि उसने अपने पति के कारण अपने अन्दर की सब अच्छाइयों का गला घोंट कर रख दिया।

उस बालों युक्त, आत्मविश्वस्त एवं गंजे सिर वाले व्यक्ति की पत्नी के रूप में नतालिया को देखकर नेखलूदोव को सदा ही ठेस पहुँचती थी। वह उनके बच्चों के प्रति अपनी घृणा का भी दमन नहीं कर पाता और जब उसने सुना कि नतालिया को गर्भ है तब उसे दुख ही हुआ मानो इस अपरिचित व्यक्ति ने पुनः कोई बुरी वस्तु नतालिया में भर दी।

रोगोभिन्स्की परिवार वाले अपने दो बच्चों-एक लड़के, एक लडकी, को घर पर ही छोडकर अकेले ही मास्को आये थे तथा वह सर्वश्रेष्ठ होटल के सर्वश्रेष्ठ कक्ष में ठहरे थे। आते ही नतालिया अपनी माँ के पुराने मकान पर गई किंतु जब अग्रफेना पेत्रोव्ना ने उसे बतलाया कि आपके भाई ने मकान छोड़ दिया है तथा एक होटल में रहने लगा है तो वह गाडी को वहीं ले चली। वहाँ दम घोंटने वाली वायु से पूर्ण अन्धेरे मार्ग में, जहाँ एक लैम्प चौबीसों घण्टे जला करता था, उसे गंदा नौकर मिला। नौकर ने बतलाया कि प्रिन्स महोदय बाहर गए हुए हैं।

नतालिया ने कहा कि मुझे कमरा बतला दो, मैं उनके लिए पत्र लिखकर रख जाऊँगी। नौकर ने कमरा दिखला दिया।

नतालिया ने अपने भाई के दोनों छोटे कमरों को ध्यान से देखा। उसने अपने भाई के चिर-परिचित स्वभाव की झलक देखी, व्यवस्था तथा स्वच्छता से प्रेम, तथा वह वातावरण की सादगी से चकित रह गई। उसकी लिखने वाली मेज पर उसने कमकुट के रंग का कुत्ता बना पेपर-वेट देखा, जिसे कि वह पहिले से ही पहिचानती थी। जिस ढंग से उसकी विभिन्न फाइलें रखी हुई थीं उस सुव्यवस्था से भी वह पूर्ण-परिचित थी, तथा इसी भाँति का लम्बा टेढ़ा कागज-चाकू था जो कि टार्डे द्वारा लिखित फ्रांसीसी पुस्तक में रखा हुआ था। यह पुस्तक दंड विज्ञान पर लिखी हुई अन्य पुस्तकों तथा हेनरी जार्ज की अङ्गरेजी में लिखी पुस्तक के बीच रखी हुई थी।

वह मेज के पास बैठ गई तथा उसने एक पत्र लिखा कि आज ही मुझसे

अवश्य मिलना। वह यह सब देख आश्चर्य में सिर हिलाती हुई उठी और अपने होटल को लौट गई।

अब नतालिया को अपने भाई के सम्बन्ध में दो प्रश्नों ने आकर्षित कर दिया; कातूशा के साथ उसके विवाह का प्रश्न जिसके विषय में उसने अपने नगर में किंवदंतियाँ सुनी थीं, क्योंकि यह प्रत्येक की जिह्वा पर था, तथा किसानों को भूमि दे डालने का प्रश्न जिसके विषय में सबको ही ज्ञात हो चुका था तथा जिसे कि राजनीतिक एवं भयङ्कर कार्य समझ कर कितने ही व्यक्ति चकित रह गए थे। कातूशा के साथ विवाह की बात से तो वह एक प्रकार से प्रसन्न ही हुई थी। वह नेखलूदोव के उस दृढ़ निश्चय की प्रशंसा कर उठी जो उसके अपने उस स्वभाव के बिल्कुल अनुरूप था, जो स्वभाव कि उन दोनों के विवाह से पूर्व के आनन्दप्रद समय मे था। और फिर भी, जब उसने विचार किया कि मेरा भाई इतनी भयंकर स्त्री के साथ विवाह करेगा तो वह भय से सिहर उठी। अन्तिम भावना पहिली दोनों भावनाओं से अधिक बली थी और उसने निश्चय किया कि मैं नेखलूदोव को ऐसा करने से रोकने में अपनी सारी सामर्थ्य लगा दूंगी। यद्यपि वह जानती थी कि ऐसा करना अत्यन्त कठिन होगा।

भूमि को किसानों को दे डालने वाली बात से वह इतनी अधिक प्रभावित नहीं हुई थी किंतु उसका पति अत्यन्त कुपित था तथा वह अपनी पत्नी से इस बात की आशा करता था कि वह अपने भाई पर अपना प्रभाव प्रयोग करे।

रागोभिन्स्की कहता कि ऐसा कार्य विरोध-चपलता एवम् गर्व का उच्च शिखर है, जिसका एक मात्र अर्थ है मौलिक लगने, दिखावा करने तथा ख्याति कमाने की इच्छा।

"किसानों को इस शर्त पर भूमि देने का क्या अर्थ हो सकता है कि वे अपना किराया स्वमेव वसूल करें?" वह बोला "यदि उसे ऐसा कुछ करना ही था तो किसानों को बैंक की मध्यस्थता से भूमि क्यों नहीं बेच दी? उसका तो कोई अर्थ भी था। वास्तव में यह कार्य तो उसके उन्माद को इंगित करता है।"

और रागोभिन्स्की गंभीरता से इस बात पर विचार करने लगा कि नेखलूदोव का कोई वैधानिक संरक्षक नियुक्त कर दिया जाय, तथा उसने अपनी पत्नी से कहा कि तुम नेखलूदोव से उसकी इस विचित्र इच्छा पर बातें कर लेना।

३२

सायंकाल अपने निवास स्थान पर लौटते ही नेखलूदोव ने अपनी बहिन का पत्र मेज पर रखा देखा तो वह उससे मिलने चल दिया। वे दोनों माँ की मृत्यु के पश्चात से एक दूसरे से नहीं मिले थे। उसे होटल में अकेली नतालिया मिली; उसका पति दूसरे कमरे में आराम कर रहा था। नतालिया ने बिल्कुल तंग काली ड्रेस पहिन रखी थी, जिसके कि सामने उसने एक लाल बो लगा रखी थी। उसके काले बाल घूंघर पड़े हुए तथा आधुनिकतम सज्जा से सज्जित थे।

अपने पति के सम्मुख, जिसकी वय उसके ही बराबर थी, युवती दिखलाई देने की चेष्टा मे किए गए उसके प्रयत्न नितान्त स्पष्ट थे।

अपने बन्धु को देखते ही वह उछल पड़ी तथा उसकी ओर शीघ्रता से बढी, उसकी ड्रेस खर खर कर उठी। उन्होंने एक दूसरे का आलिंगन किया तथा दोनों ने एक दूसरे की ओर विहंसकर देखा। उन दोनों के मध्य उन भावपूर्ण मुद्राओं का आदान प्रदान हुआ जिनको कि शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। तब शब्दों का आदान प्रदान प्रारम्भ हुआ जो कि अपेक्षाकृत सत्यता से दूर था।

"तुम हृष्ट पुष्ट और युवा हो गई हो।" वह बोला, और नतालिया के ओठ आनन्द से संकुचित हो उठे।

"और तुम अपेक्षाकृत दुर्बल।"

"अच्छा? तुम्हारे पतिदेव प्रसन्न तो हैं?" नेखलूदोव ने पूछा।

"वे आराम कर रहे हैं; उन्हें रात भर नींद नहीं आई।"

कहना बहुत कुछ था—कुछ तो शब्दों में व्यक्त किया गया, किंतु उनकी दृष्टियों ने वह सब भी कह दिया जिसको प्रगट करने में शब्द असमर्थ थे।

"मैं तुम्हारे निवास स्थान पर गई थी।"

"हाँ, मुझे मालुम है। मैंने उसे इसलिए छोड़ दिया है कि मेरे लिए वह बहुत बड़ा है। मैं वहाँ अकेला था और मेरी तबियत नहीं लगती थी। मुझे उन सब वस्तुओं की आवश्यकता नहीं, सो अच्छा हो कि तुम उन्हें ले लो। मेरा तात्पर्य फरनीचर आदि वस्तुओं से है।"

"हाँ! अग्रफेना पेत्रोव्ना ने मुझसे कहा था। मैं वहाँ गई थी। धन्यवाद, किंतु···"

तबहीं होटल का नौकर चाँदी के टी सैट में चाय लेकर अन्दर आया।

जब तक वह मेज लगाता रहा वे दोनों चुप रहे। तब नतालिया मेज पर बैठ गई और चुपचाप ही चाय तैयार करती रही। नेखलू ोव भी कुछ नहीं बोला।

अन्त में नतालिया ने दृढ़ता से कहना आरम्भ किया।

"अच्छा दिमीत्री! मुझे सब ज्ञात है।" और वह उसकी ओर देखने लगी।

"तो क्या हुआ! यदि ज्ञात है तो मुझे प्रसन्नता ही है।"

"जैसा जीवन वह व्यतीत कर चुकी है उसमें तुम किस भाँति सुधार ला सकते हैं?" वह बोली।

नेखलूदोव एक छोटी-सी मेज पर बिल्कुल सीधा तना बैठा हुआ उसकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था तथा उसकी बात समझकर उचित उत्तर देने की चेष्टा कर रहा था। ऐसी मानसिक अवस्था में उसे माशलोवा के साथ की अपनी अंतिम भेंट स्मरण हो आई जिससे उसकी आत्मा शांतिमय आनन्द एवं अखिल संसार के लिए सद्भावना से भर उठी।

"मैं सुधार उसका नहीं वरन् अपना करना चाहता हूँ।" उसने उत्तर दिया।

नतालिया ने लम्बी साँस ली।

"तब फिर विवाह के अतिरिक्त अन्य उपाय भी हैं।"

"किंतु मेरे विचारानुसार यह सर्वश्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त इस कार्य द्वारा मेरे लिए एक ऐसे संसार का द्वार खुल जाता है जिसमें कि मैं कुछ लाभप्रद सिद्ध हो सकता हूँ।"

"मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम प्रसन्न रह सकोगे।" नतालिया बोली।

"मेरे सुख का प्रश्न नहीं है।"

"ठीक है, किंतु यदि वह हृदयहीन नहीं तो वह प्रसन्न नहीं रह सकती—इसकी कामना भी नहीं कर सकती।"

"उसे कामना है भी नहीं।"

"मैं समझती हूँ; किंतु जीवन..."

"हाँ, जीवन ?"

"कुछ अन्य ही कामना करता है।"

"उसे कोई कामना नहीं; यदि है तो इतनी ही कि हम सत्मार्ग पर चलें।" नेखलूदोव ने उसके मुख की ओर देखकर कहा जो कि अभी तक सुन्दर था; जिस पर केवल नेत्रों और ओठों के आस पास कुछ हल्की-सी झुर्रियाँ पड़ी थीं।

"मैं नहीं समझी।" उसने दीर्घ निःश्वास लेते हुए कहा।

"देखो बेचारी कितनी बदल गई है ?" उसने अपने मन में सोचा और उसे नतालिया का उसके विवाह से पूर्व का स्वरूप स्मरण हो आया तथा उसके प्रति नेखलूदोव के हृदय में करुणा के भाव पैदा हो गए जिनमें बाल्यावस्था की असंख्य स्मृतियाँ मिश्रित थीं।

इतने ही में सिर पीछे की ओर झुकाए, वक्ष उभारे, हल्के कदम रखते हुए रागोभिन्स्की कक्ष में प्रविष्ट हुआ। उसका चश्मा, गंजी खोपड़ी तथा काली दाढ़ी सब ही चमक रहे थे।

"कहिए प्रसन्न तो हैं ?...प्रसन्न तो हैं ?" उसने शब्दों पर अस्वाभाविक बल देते हुए कहा।

उन्होंने हाथ मिलाए और रागोभिन्स्की एक आराम कुर्सी में धँस गया।

"मैं आपके वार्तालाप में विघ्न तो नहीं डाल रहा ?"

"नहीं ! मैं जो कुछ करता हूँ अथवा कहता हूँ उसे किसी से छिपाना नहीं चाहता।"

बालों युक्त हाथ देखते ही तथा आत्मविश्वास एवं अभ्यस्त स्वर सुनते ही क्षण मात्र में नेखलूदोव की विनम्रता भाग गई।

"हाँ ! हम भैया की धारणाओं के विषय में वार्तालाप कर रहे थे।" नतालिया बोली "क्या आप एक कप चाय लेंगे ?" उसने चायदानी उठाकर पुनः कहा।

"धन्यवाद। वे कौन-सी विशेष धारणाएँ हैं ?"

"बंदियों के दल के साथ साइबेरिया जाने की जिसमें कि एक स्त्री है जिसके प्रति मैं स्वयं को दोषी अङ्गीकार करता हूँ।" नेखलूदोव बोला।

"मैंने सुना है कि केवल साथ जाने की ही बात नहीं है, उससे कुछ और अधिक है।"

"जी हाँ, उससे विवाह भी कर सकता हूँ—यदि वह चाहे तो।"

"सच ! किंतु यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो क्या आप अपने निमित्त को समझाकर बतलाएँगे ?"

"मेरे निमित्त हैं कि वह स्त्री......कि उस स्त्री का अपने पतन की ओर पहिला पग..." नेखलूदोव उचित उत्तर न मिलने पर स्वयं अपने ऊपर क्रुद्ध हो उठा "मेरा निमित्त है कि अपराध मेरा है और दण्ड वह पा रही है।"

"यदि उसे दण्ड मिला है तो वह भी निर्दोष नहीं हो सकती।"

"वह कतई निर्दोष है।"

और नेखलूदोव ने सम्पूर्ण गाथा अनावश्यक उत्तेजना से सुना दी।

"हाँ ! यह प्रेसीडेन्ट की लापरवाही थी, जिसका परिणाम हुआ कि पंचों ने अविवेकपूर्ण उत्तर दिया। किंतु ऐसे मामलों के लिए सीनेट तो है।"

"सीनेट ने अपील अस्वीकृत कर दी।"

"यदि सीनेट ने अस्वीकृत कर दिया तो अपील के समुचित आधार नहीं होंगे।" रागोभिन्स्की ने प्रचलित राय के आधार पर कहा कि न्यायाधीशों के निर्णय से सत्य की उत्पत्ति होती है। "सीनेट केस के गुणों को नहीं देखती। यदि वास्तव में कोई गल्ती है तो सम्राट् के समक्ष पिटीशन करना चाहिए।"

"वह भी कर दिया है किंतु सफलता की कोई आशा नहीं है। वे लोग मंत्रालय को लिखेंगे, मंत्रालय सीनेट की सलाह लेगा तथा सीनेट अपना निर्णय दोहरा देगी तथा सदैव की भाँति निरपराधी दंड प्राप्त करेगा।"

"पहिली बात तो यह है कि मंत्रालय सीनेट की सलाह नहीं लेगा।" रागोभिन्स्की ने तिरस्कार युक्त मुस्कान से कहा "वह लॉ कोर्ट से मूल पत्रक मँगवाएगा और यदि उनमें उसे कोई त्रुटि मिलती है तो वह उसके अनुसार निर्णय कर देगा। दूसरी बात यह है कि निरपराधों को कभी दंड नहीं मिलता है, और यदि कभी ऐसा हो जाता है तो बहुत कम, न के बराबर। दंड तो अपराधियों को ही मिलता है।" रागोभिन्स्की ने शांति से कहा तथा संतोषपूर्वक मुस्करा दिया।

"और मेरी धारणा इसके विपरीत है।" नेखलूदोव ने अपने बहनोई के प्रति दुर्भावना का अनुभव करते हुए कहा "मेरी दृढ़ धारणा है कि विधान द्वारा दंडित व्यक्तियों में अधिकांशतः निरपराधी ही हैं।"

"किस अर्थ में ?"

"निरपराधी—शाब्दिक अर्थ में। जिस प्रकार से यह स्त्री निरपराध है किसी को विष देने के मामले में, निरपराध उस किसान की भाँति जिसके विषय में मुझे ज्ञात हुआ है कि उसने किसी की हत्या नहीं की; निरपराध उन दोनों माँ बेटों की भाँति जिन्हें इस मकान में आग लगाने के मामले में दंड दिया जाने वाला है जिस मकान में स्वयं मकान-मालिक ने आग लगाई थी।"

"खैर ! न्याय में गलतियाँ तो सदा से होती रही हैं। मानवीय संस्थान कभी पूर्ण नहीं हो सकते।"

"और इसके अतिरिक्त ऐसे कितने ही लोग हैं जिनके क्षेत्र में, जिसमें वे पले हैं, अपराध माने जाने वाले कई कार्य करने में निरपराध हैं।"

"क्षमा कीजिएगा, ऐसी बात नहीं है, प्रत्येक चोर जानता है चोरी करना अपराध है, कि हमको चोरी नहीं करनी चाहिए, यह अनैतिकता है।" रागोफ़िन्स्की ने शांत, आत्म-विश्वस्त, हल्की, तिरस्कारयुक्त मुस्कान से कहा। और इस मुस्कान से नेखलूदोव क्रोधित हो उठा।

"नहीं ! वह नहीं जानता; लोग उससे कहते हैं 'चोरी मत करो।' और वह जानता है कि मेरा वेतन कम रखकर कारखानेदार मेरे परिश्रम की चोरी करता है; सरकार कर लगा कर अधिकारियों के माध्यम से लगातार लूटती रहती है।"

"यह तो राजद्रोह है।" रागोफ़िन्स्की ने कहा। उसने अपने साले के शब्दों की चुपचाप व्याख्या की।

"मैं यह नहीं कह सकता कि यह है क्या; जैसा होता है बस वही कह रहा हूँ।" नेखलूदोव कहता रहा, "वह जानता है कि सरकार उसको लूटती है, वह जानता है हम जमींदार उसे वर्षों से लूटते चले आए हैं, हमने उसकी भूमि छीन ली—वह भूमि जिस पर सब का समान अधिकार होना चाहिए; और तब यदि अपनी छिनी हुई भूमि में से वह कुछ टहनियाँ एवं शाखाएँ उठाता है तथा आग जलाने के काम में प्रयोग करता है तो हम उसे कारागृह में बंदी कर देते हैं

ग्रौर उसको फुसलाने की चेष्टा करते हैं कि तुम चोर हो। वास्तव में वह जानता है, चोर मैं नहीं वरन् वे लोग हैं जिन्होंने मुझे मेरी भूमि से वंचित कर दिया है। ग्रौर तब ग्रपने परिवार के प्रति उसका यह कर्तव्य हो जाता है वह ग्रपनी खोई वस्तु को पुनः प्राप्त करे।"

"मेरी समझ में यह बात नहीं ग्राती, यदि ग्रा भी जाए तो मैं इससे सहमत नहीं हो सकता। भूमि किसी-न-किसी की तो सम्पत्ति होनी ही चाहिए। यदि ग्रापने इसको बाँट दिया है..." रागोझिन्स्की ने यह विचार कर कि नेखलूदोव समाजवादी है तथा समाजवाद के ग्रनुसार समस्त भूमि बराबर बँटनी चाहिए कहना प्रारम्भ किया। उसका विचार था कि यह विचार मूर्खतापूर्ण है ग्रौर मैं सरलता से इसे सिद्ध कर सकता हूँ। वह शांत स्वर में बोला "यदि ग्राप इसे ग्राज समान रूप से बाँट देते हैं तो कल भूमि पुनः मेहनती एवं बुद्धिमान व्यक्तियों के हाथों मे चली जाएगी।"

"भूमि को समान बाँटने की दृष्टि नही है। भूमि किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होनी चाहिए; न वह कोई ऐसी वस्तु ही होनी चाहिए जिसे कि बेचा, खरीदा ग्रथवा किराए पर उठाया जा सके।"

"सम्पत्ति के ग्रधिकारों की भावना मनुष्य में जन्मजात होती है; उनके बिना भूमि के जोतने बोने की प्रेरणा नहीं रह जाएगी। सम्पत्ति के ग्रधिकारों की भावना के नष्ट होते ही हम ग्रादिम युग में पहुँच जाएँगे।" रागोझिन्स्की ने ग्रधिकार पूर्ण स्वर में कहा। जमींदारी के पक्ष में यह उसका पुराना तर्क था। वह इस तर्क को ग्रकाट्य समझता था। उसकी धारणा थी कि व्यक्तियों की यह इच्छा कि हमारे पास भूमि होनी चाहिए यह सिद्ध करती है कि उन्हें भूमि प्राप्त करने के ग्रधिकार मिलने चाहिए तथा इसी धारणा पर उसका तर्क ग्राधारित था।

"इसके विपरीत, जब भूमि किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं रह जाएगी तब क्या यह उपयोग में नहीं ग्राने लगेगी जैसे कि ग्राजकल माँद मे पड़े कुत्ते की भाँति जमींदार इसको स्वयं प्रयोग करने में ग्रसमर्थ होते हुए भी उन लोगों को उसका उपयोग नहीं करन देते जो कि इसका लाभ उठाने में समर्थ हैं।"

"किंतु दिमीत्री इवानोविच! ग्रापकी बात विचित्र पागलपन से भरी हुई है। क्या इस युग में जमींदारी समाप्त करना संभव है? मैं जानता हूँ कि यह

आपकी पुरानी हॉबी है। किंतु मुझे निडर होकर कहने की अनुमति दीजिए।" और रागोझिन्स्की पीला पड़ गया तथा उसकी वाणी काँप उठी; स्पष्ट था कि इस प्रश्न ने उसे झकझोर दिया था—"मेरी राय है कि आप इस प्रश्न को कार्य रूप में परिणित करने मे पूर्व भलीभाँति सोच विचार लें।"

"क्या आप मेरे व्यक्तिगत विषयों की बावत कह रहे हैं ?"

"जी हाँ ! मेरा विचार है कि जिन विचित्र परिस्थितियों में हम लोग उत्पन्न हुए हैं उनमे उत्पन्न दायित्वों को हमें वहन करना चाहिए। हम जिस वातावरण में उत्पन्न हुए हैं हमें उसको पूर्ववत बनाए रखना चाहिए क्योंकि वह हमने अपने पूर्वजों से ग्रहण किया है तथा हमें अपनी आने वाली संतति के लिए भी इसी वातावरण को सौंप देना चाहिए।"

"मेरे मतानुसार मेरा कर्तव्य है कि .."

"क्षमा कीजिएगा।" अपनी बात न काटने देते हुए रागोझिन्स्की ने कहा, "मैं अपने अथवा अपने बच्चों के लिए नहीं कहता। मेरे बच्चों का भविष्य असंदिग्ध है : मेरी कमाई सुविधापूर्वक रहने के लिए पर्याप्त है तथा मुझे आशा है कि मेरे बच्चे भी इसी भाँति रह सकेंगे। अतः आपके कार्य में मेरी रुचि का—जो कि, यदि आप मुझे कहने की अनुमति दें तो, विचार नहीं किया गया है—आधार मेरा स्वार्थ नहीं है; इसमें सिद्धान्तों का प्रश्न है जिनके कारण कि मेरा आपसे मतभेद है। मेरी राय है कि आप भलीभाँति विचार करें तथा पढ़ें..."

"कृपया मुझे अपने मामलों का स्वतः निर्णय करने तथा यह निश्चित करने को स्वतन्त्र रहने दीजिए कि क्या पढ़ना चाहिए और क्या नहीं पढ़ना चाहिए।" नेखलूदोव ने पीले पड़ते हुए कहा। यह अनुभव करते ही कि मेरे हाथ ठंडे पड़ गए हैं तथा अब मैं काबू से बाहर हो गया हूँ नेखलूदोव ने बातें करना बन्द कर चाय पीना आरम्भ कर दिया।

३२

"अच्छा बतलाओ तुम्हारे बाल बच्चे तो प्रसन्न हैं ?" संयत होने पर नेखलूदोव ने अपनी बहिन से पूछा।

उसकी बहिन ने बतलाया कि बच्चे अपनी दादी के पास रह गए हैं।

तथा मुझे इस बात पर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा और तुम्हारे जीजाजी का तर्क वितर्क समाप्त हो गया। फिर वह अपने बच्चों के विषय मे बतलाने लगी बच्चे ठीक तुम्हारी भाँति दो गुड़ियों को साथ ले यात्रा का खेल खेला करते हैं तथा एक गुड़िया को तो हवशिन कहते है एवं दूसरी को फ्राँसीसी महिला।

"क्या तुम्हें वह अभी तक स्मरण है ?" नेखलूदोव ने मुस्कुराते हुए कहा।

"हाँ। और कल्पना तो करो कि वे बिल्कुल उसी भाँति खेलते है।"

खिन्नता पूर्ण वार्तालाप समाप्त हो चुका था तथा नतालिया अपेक्षाकृत शांत हो चुकी थी किंतु वह उन बातो को अपने पति की उपस्थिति में नही करना चाहती थी जो कि केवल उसके भाई के लिए ही बोधगम्य हो सकती थी। अतः साधारण बातचीतें प्रारम्भ करने के लिए उसने कामेन्स्की की माँ की विपत्ति के विषय मे वार्तालाप प्रारम्भ कर दिया, जिसका कि एकमात्र पुत्र द्वन्द्व-युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो गया था। यह चर्चा पीतर्सबर्ग से मास्को में पहुंच चुकी थी।

रागोझिन्स्की ने उस धारणा का खंडन किया जिसमें कि द्वन्द्व युद्ध में हुई हत्या को साधारण अपराधों से अलग माना जाता है।

इस बात से इस विषय पर पुनः तर्क वितर्क प्रारम्भ हो गए। कोई भी बात पूर्णतः स्पष्ट नहीकी गई। दोनो मे से किसी भी प्रतिपक्षी ने अपने मन की पूरी बाते नही कहीं। दोनो ही अपनी बातो पर जमे रहे, जो कि एक दूसरे की बात काटती थीं।

रागोझिन्स्की को लगा कि नेखलूदोव ने मुझे नीचा गिराया है तथा उसकी इच्छा हुई कि मै नेखलूदोव की धारणा को गलत सिद्ध करूँ।

दूसरी ओर नेखलूदोव को प्रतीत हुआ कि मेरे बहिनोई ने भूमि सम्बन्धी मेरे कार्य में दखलंदाजी देकर बुरा किया है अंतरतम में व ह जानता था कि मेरे बहिन बहिनोई, तथा भांजे-भांजी उत्तराधिकारी होने के नाते आपत्ति कर सकते हैं) तथा उसे संकुचित मनोवृत्ति वाले पुरुष पर क्रोध आ रहा था जो कि नेखलूदोव के मतानुसार असंदिग्ध पाप एवं दुष्कर्म को बड़ी शांति एवं धैर्य से वैधानिक तथा न्यायपूर्ण बतला रहा था।

"कानून क्या कर सकता है ?" उसने पूछा।

"वह दो में से एक द्वन्द्व-योद्धा को साधारण हत्यारे की भाँति खानो में काम करने का दण्ड दे सकता है।"

नेखलूदोव के हाथ पुनः ठंडे पड़ गए।

"अच्छा तो उससे लाभ क्या होगा ?" उसने उग्रता से पूछा।

"यह न्याय है।"

"मानो कि विधान का ध्येय न्याय है।" नेखलूदोव बोला।

"और क्या हो सकता है ?"

"श्रेणियों के लाभों को बनाए रखना ! मेरे मतानुसार विधान तो वह अस्त्र है जो कि वर्तमान व्यवस्था को इस भाँति स्थिर रखता है जिससे कि हमारी श्रेणी के लोगों को लाभ हो।"

"यह तो नितान्त नवीन दृष्टिकोण है।" रागोभिन्स्की ने शान्त मुस्क्यान से कहा "विधान का ध्येय तो कुछ और ही माना जाता है।"

"जी हाँ, किन्तु सैद्धान्तिक रूप में व्यवहृत नहीं। मेरा अनुभव भी यही है। विधान वर्तमान व्यवस्था को स्थिर रखने की ओर लक्ष्य करता है तथा इसलिए यह उनको ही कष्ट और फांसी देता है जो कि इस साधारण स्तर से ऊपर उठकर इसे उन्नत करना चाहते है, राजनैतिक अपराधी कहे जाने वाले लोग, साथ ही उनको भी, जो इस स्तर से नीचे है, अपराधी श्रेणी में गिने जाने वाले लोग।"

"मेरा विचार आपसे भिन्न है। पहिली बात तो यह है कि मैं यह मानने को तैयार नही हूँ कि राजनीतिक व्यक्ति इसलिए दण्डित किए जाते हैं कि वे सर्व-साधारण से उन्नत स्तर के व्यक्ति हैं। अधिकांशतः वे लोग समाज के गंद होते हैं, इतने पतित, किंतु भिन्न रूप में, जितने कि अपराधियों की श्रेणी में गिने जाने वाले व्यक्ति, जिन्हें कि आप निम्न स्तर के मानते हैं।"

"मुझे तो ऐसे व्यक्तियों का सम्पर्क मिल चुका है जो कि अपने न्याय करनेवालों से कहीं अधिक उन्नत-चरित्र के है, सब साम्प्रदायिक चरित्रवान हैं, उनका..."

रागोभिन्स्की जैसा व्यक्ति, जो अपनी बात काटे जाने का अभ्यस्त नहीं था, नेखलूदोव की बात न सुन अपनी ही कहता रहा। इससे नेखलूदोव उत्तरोत्तर खिन्न होता गया।

"न मैं इस बात को ही मान सकता हूँ कि विधान का उद्देश्य वर्तमान व्यवस्था को बनाए रखन. है। विधान का ध्येय है सुधार..."

"अच्छे प्रकार का सुधार ! बन्दीगृह में !" नेखलूदोव बोल पड़ा।

"अथवा हटा देना" रागोभिन्स्की दृढ़ता से कहता रहा "कुमार्गियों एवं पाशविक व्यक्तियों को जो कि समाज को धमकाते हैं।"

"यहीतो वह नहीं करता। समाज के पास ऐसे साधन नहीं कि वह इधर या उधर एक ओर चल सके।"

"कैसे ? मेरी समझ में नहीं आता।" रागोभिन्स्की ने बलात् मुस्क्यान लाते हुए कहा।

"मेरा तात्पर्य है कि वे ही दो प्रकार के दण्ड वर्तमान हैं जो कि पुराने युगों में प्रचलित थे; शारीरिक एवं आर्थिक दण्ड, जिनका कि रीति रिवाजों की वृद्धि के साथ साथ उत्तरोत्तर गलत प्रयोग होता जाता है।" नेखलूदोव बोला।

"वास्तव में आपके अधरों से निकले ये शब्द नितान्त नए एवं आश्चर्यजनक लगते हैं।"

"हाँ, किसी व्यक्ति को इसलिए कष्ट देना तो उचित है कि भविष्य में वह उस कार्य की पुनरावृत्ति न करे जिसके लिए उसे कष्ट मिला है; तथा किसी का सिर उड़ा देना उस समय भी उचित है जब कि वह व्यक्ति समाज के लिए हानिकर एवं भयप्रद सिद्ध होता है। इन दण्डों का अर्थ बोधगम्य है। किंतु जहाँ अनुचित उदाहरणों एवं बेकारी के कारण कुमार्ग की ओर प्रवृत्त मनुष्य को कारागार में बन्द करने का प्रश्न है, उसे एक ऐसी स्थिति में रखना जहाँ उस पर अकर्मण्यता थोपी जाती है और जहां उसे अनेकानेक कुमार्ग गामियों के मध्य रहना पड़ता है...वहाँ ? जहां कि तुला से इर्कुतुस्क प्राँत अथवा कुर्स्क तक जनता के धन पर (लगभग ५०० रूबल्स प्रति व्यक्ति) लाने ले जाने का प्रश्न..."

"जी हाँ ! किंतु जनता के धन पर होने वाली उन यात्राओं से लोगों को भय लगता है, और यदि ये यात्रायें अथवा कारागार नहीं होते तो मेरा और आपका यहाँ इतनी निश्चितता से बैठना संभव नहीं होता।"

"कारागार हमारी रक्षा की पुष्टि नहीं कर सकते क्योंकि ये लोग वहाँ सदा के लिए बन्द नहीं होते वरन् पुनः मुक्त कर दिए जाते हैं। इसके विपरीत

इन संस्थाओं में व्यक्तियों की प्रवृत्ति घोर पतन एवं पाप की ओर हो जाती है जिसके कारण कि भय बढ़ता ही है।"

"आपके कहने का अर्थ है कि प्रायश्चित सम्बन्धी व्यवस्था में सुधार होना चाहिए?"

"यह सुधार हो नहीं सकता। बन्दी सुधार गृह निर्माण करने में उससे भी कहीं अधिक व्यय करना पड़ेगा जितना कि जनता की शिक्षा के ऊपर व्यय किया जाता है इससे जनता पर भार ही वढ़ेगा।"

"किंतु प्रायश्चित सम्बन्धी व्यवस्था की कमियों का अर्थ यह तो नहीं कि विधान ही व्यर्थ है।" रागोभिन्स्की ने अपने साले की बातों पर ध्यान दिए बिना ही कहना प्रारम्भ कर दिया।

"इन कमियों का कोई इलाज नहीं।" नेखलूदोव ने अपना स्वर ऊँचा उठाते हुए कहा।

"तब क्या हो? उन लोगों को मार डालना चाहिए? अथवा एक पत्रकार के अनुसार उनकी आखें निकलवा देनी चाहिए?" रागोभिन्स्की ने व्यंग किया।

"जी हाँ, यह निर्दयता तो अवश्य होगी किंतु रहेगा अधिक प्रभावी। आजकल जो होता है वह निर्दयता तो अवश्य है किंतु न केवल प्रभावहीन ही है वरन् इतना मूर्खतापूर्ण कार्य भी है कि किसी की समझ में यही बात नहीं बैठने पाती कि लोगबाग अपराध शास्त्र जैसे निरर्थक एवं निर्दयी कार्य व्यापारमें किस भाँति भाग ले पाते है।"

"किंतु मैं तो इसमें भाग ले पाता हूँ।" रागोभिन्स्की ने पीला पड़ते हुए कहा।

"वह आपकी अपनी बात है किंतु मेरे लिए तो यह अगम्य है।"

"मेरा विचार है कि आपके लिए तो अनेकों बातें अगम्य हैं।" रागोभिन्स्की ने कांपते स्वर में कहा।

"मैंने एक पब्लिक प्रोसीक्यूटर को देखा था जो कि एक अभागे लडके को बुरा सिद्ध करने में अपनी पूरी शक्ति लगा रहा था। वह बेचारा लड़का अपनी अदूषित अवस्था में सहानुभूति के अतिरिक्त किसी से कुछ नहीं माँग सकता था। मुझे मालुम है कि एक दूसरे ने किसी साम्प्रदायिक से किस भाँति तर्क वितर्क किए और किस भाँति उसके बाइबिल पढ़ने को अपराध सिद्ध कर दिया। वास्तव में

लॉ कोर्ट का समस्त-कार्य व्यापार इसी भाँति के निरर्थक एवं इसी प्रकार के निर्दयी कार्यों से भरा पड़ा है।"

"यदि मेरा भी विचार आपके ही अनुसार होता तो मैं तो काम ही नहीं कर पाता।" रागोफ्निस्की ने उठते हुए कहा।

नेखलूदोव ने अपने बहनोई के चश्मे के नीचे एक विचित्र सी चमक देखी। "क्या आँसू आ गए ?" उसने सोचा। वास्तव में वे आहत गर्व के अश्रु ही थे। रागोफ्निस्की ने खिड़की के पास जाकर अपना रूमाल निकाला और खाँसते खखारते अपने चश्मे को पोंछा। फिर चश्मा उतार कर उसने अपने नेत्र भी पोंछ डाले।

सोफा पर पुनः बैठने के पश्चात् उसने सिगरेट जला ली और फिर नहीं बोला।

नेखलूदोव इस बात से लज्जित हो उठा और उसे ठेस पहुँची कि जब मैं कल जा ही रहा हूँ तथा यहाँ पुनः इनसे मिलने की कोई आशा नही तब मैने अपने बहनोई और बहिन को इतनी ठेस क्यों पहुँचाई।

उसने उनसे खिन्नता में विदा ली तथा गाड़ी पर बैठकर अपने घर चल दिया।

"जो मैंने कहा है वह सत्य हो सकता है; कुछ भी हो उसने मुझे उत्तर नहीं दिया। किंतु यह सही ढङ्ग से नहीं कहा गया। यदि मैं इस दुर्भावना से ग्रस्त हो बातें करता कि मुझे अपने बहनोई को पराजित करना है तथा इस भाँति बेचारी नतालिया को ठेस पहुँचानी है तो मुझमें कितना-सा अन्तर और आता।" उसने सोचा।

३४

बंदियों के जिस दल के साथ माशलोवा जाने वाली थी वह दल तीन बजे मास्को से रेल द्वारा जाने वाला था। अतः दल की रवानगी देखने तथा बंदियों के साथ स्टेशन पर जाने के लिए नेखलूदोव बारह बजे से पूर्व ही बन्दीगृह पर पहुँच जाना चाहता था।

रात में इधर-से-उधर चहल कदमी करते तथा अपने कागजातों को छाँटते समय उसने अपनी डायरी देखी तथा इधर-उधर से कुछ अवतरण पढ़े। पीतर्सबर्ग से चलने से पूर्व का अन्तिम अवतरण था :

"कातूशा मेरा त्याग स्वीकार करना नहीं चाहती, वह स्वयं त्याग करना चाहती है। वह जीत गई तथा इसी भाँति मैं भी। यद्यपि इसमें विश्वास करने से मुझे भय होता है किंतु मुझे लगता है कि उसके अन्दर परिवर्तन हो रहा है और इससे मुझे प्रसन्नता होती है! यह विश्वास करते मुझे भय होता है किंतु फिर भी उसमें जीवन का पुनः संचार हो रहा है।"

उसके बाद उसने पढ़ा :

"मैं किसी अत्यन्त कठिन एवं अत्यन्त आनन्द पूर्ण अवस्था में रह चुका हूँ। मुझे ज्ञात हुआ है कि उसने चिकित्सालय में अत्यन्त अनुचित व्यवहार किया है। मुझ में एकाएक अत्यन्त तेज टीस उत्पन्न हो गई। मैंने कभी सोचा भी न था कि इससे इतनी टीस उत्पन्न हो सकती है। मैंने उससे घृणा एवं तिरस्कार से बातें कीं; तब मुझे एकाएक स्मरण आया कि कितनी बार पहिले, यद्यपि केवल विचारों में, मैं स्वयं उसी बात के लिए दोषी रह चुका हूँ तथा अब भी हूँ जिस बात के लिए मैं उससे घृणा कर रहा हूँ; और तुरन्त ही मैं अपने आपको धिक्कारने लगा, मैं उस पर तरस खा गया तथा पुनः प्रसन्न हो उठा। काश! हम अपने नेत्रों में पड़ा लट्ठा देख पाते तो कितने दयालु हो जाते।"

इसको पढ़ने के पश्चात् उसने लिखा :

"मैं नतालिया से मिलने गया था। आत्मसंतुष्टि ने पुनः मुझे क्रूर एवं विद्वेषी बना दिया। अब मेरा हृदय भारी हो उठा है। खैर, अब क्या हो सकता है। कल से नया जीवन प्रारम्भ हो रहा है। पुराने को अन्तिम नमस्कार! अनेक नए प्रभाव एकत्रित हो चुके हैं, किन्तु मैं उन्हें संगठित नहीं कर सकता।"

अगले दिन प्रभात में सोकर उठते ही नेखलूदोव को सबसे पहिले अपने बहिनोई के साथ हुए कल के विवाद पर दुख उत्पन्न हुआ।

"मैं इस भाँति नहीं जा सकता।" उसने विचार किया "मुझे जाकर पहिले उनसे समझौता करना चाहिए।"

जब उसने घड़ी देखी तो जाने का समय ही नहीं रह गया था। उसे बंदी-गृह जाने की शीघ्रता थी अन्यथा दल रवाना हो जाता और वह उस समय तक

वहाँ नहीं पहुँच पाता। शीघ्रता से उसने सब वस्तुएँ तैयार कर लीं तथा अपने नौकर एवं फेदोशिया के पति के साथ, जो कि दल के साथ स्वयं जा रहा था, सब सामान स्टेशन भेज दिया और जो उसे सबसे पहिले मिली उसी गाड़ी में बैठकर बन्दीगृह को रवाना हो गया।

बन्दियों की ट्रेन नेखलूदोव की गाड़ी से, जिसमे कि वह जाने वाला था, केवल दो घंटे पूर्व ही जाती थी अतः उसने होटल के बिल का भुगतान कर दिया और चल दिया।

जुलाई का महीना था, गर्मी बहुत तेज थी। पत्थरों से, दीवालों से तथा छतों के लोहे से, जिसको कि कष्टकर रात्रि ने भी ठण्डा नही कर पाया था, गर्मी निकलकर स्थिर वायु में विलीन होती जा रही थी। कभी-कभी हल्की वायु चलती तो उसमें गंदी गर्म वायु का झोंका आता जिसमें धूल एवं दुर्गन्ध व्याप्त होती।

गलियों में बहुत कम व्यक्ति थे और जो थे भी वे छाया में ही चलने की चेष्टा करते। धूप में तो केवल वे ही धूप से तपे कसकुट के समान रङ्ग वाले नंगे पाँव किसान बैठे थे जो सड़क की मरम्मत कर रहे थे तथा तपती रेत में पत्थरों को कूट रहे थे; जब कि अपने हौलेंडी ब्लाउजों के ऊपर नारंगी रंग की डोरी से पिस्तौलें लटकाए चिड़चिड़े पुलिस वाले सड़क के बीच पैर बदलते हुए खड़े थे; तथा सड़क के धूप वाले भाग पर घंटियाँ बजाती हुई ट्रामें इधर-से-उधर आ रही थीं। हौलेंड के बने वस्त्रों से ढके घोड़े चल रहे थे जिनमें कि कानों को बाहर निकालने के लिए छेद बने हुए थे।

बन्दीगृह में पहुँचकर नेखलूदोव ने देखा कि दल अभी आँगन में ही है। बन्दियों को देने लेने का श्रमपूर्ण कार्य, जो चार बजे प्रभात में आरम्भ हुआ था, अभी तक चल ही रहा था। दल में छः सौ तेईस पुरुष एवं चोंसठ स्त्रियाँ जानी थीं। उनकी गणना होनी थी, पंजीकृत सूची के अनुसार उनको लेना था, रोगग्रस्त एवं दुर्बलों को अलग करना था तथा सबों को पथ-रक्षकों को सोंपना था। अपने दो सहायकों के साथ इन्सपैक्टर, डाक्टर तथा, छोटा डाक्टर, पथ-रक्षक-अधिकारी तथा उसका लिपिक बन्दीगृह के आँगन में दीवाल की छाया में लगी मेज के पास बैठे थे। मेज पर कागजात एवं लेखन सामग्रियाँ भरी पड़ी थीं। एक-एक बन्दी का नाम लेकर पुकारा जाता, उसकी जाँच होती, प्रश्न किए जाते और कुछ बातें लिखी जातीं।

धीरे-धीरे कर सूर्य की किरणें मेज के पास तक पहुँच गईं तथा हवा बन्द होने एवं पास खड़े बन्दियों की भीड़ की श्वासों के कारण गर्मी और घुटन और भी अधिक बढ़ गई थीं।

"हे भगवान्! यह कभी समाप्त भी होगा?" लम्बे, मोटे, लाल चेहरे वाले, वृषभ-स्कन्ध एवं छोटी बाहों वाले पथ-रक्षक-अधिकारी ने कहा। अधिकारी अपनी मोटी मूँछों में सिगरेट का धुँआ बारबार फेंक रहा था। उसने एक लम्बा कश खींचा। "आप तो मुझे मारे डाल रहे हैं, यह सब कहाँ से पकड़ लाए? क्या अभी बहुत बाकी हैं?"

लिपिक ने सूची की ओर देखा।

"स्त्रियों के अतिरिक्त अभी चौबीस बन्दी और शेष हैं।"

"वहाँ खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? यहाँ आओ।" पथ-रक्षक-अधिकारी ने एक के पीछे एक कर पंक्ति-बद्ध बन्दियों को पुकारते हुए कहा, जिनकी कि अभी तक जाँच नहीं हुई थी। वे बन्दी तीन घन्टे से सूर्य की प्रखर धूप में अपनी पारी की प्रतीक्षा करते हुए पंक्ति-बद्ध खड़े थे।

जब कि अन्दर यह सब हो रहा था तब द्वार के बाहर (संतरी के अतिरिक्त जो कि सदैव की भाँति राइफिल लिए खड़ा था) लगभग बीस गाडियाँ आईं। इन गाडियों में बन्दियों के बिस्तरे, पेटी तथा वे बन्दी लदने थे जो कि इतने दुर्बल थे कि पैदल नहीं चल सकते थे। एक कोने में बन्दियों से मिलने को उनके सम्बन्धीगण इसलिए खड़े थे कि यदि कोई अवसर हाथ लग जाए तो कुछ बातें करलें एवं कुछ सामान उनको दे दें।

नेखलूदोव भी इस दल में सम्मिलित हो गया।

उसे खड़े हुए लगभग एक घंटा हो गया तब शृङ्खलाओं की खड़खड़ाहट, पदचापों का शोर, अधिकारियों के स्वर, खाँसने खखारने की ध्वनि, भारी भीड़ भी मरमर की धीमी आवाज सुनाई देने लगी।

लगभग पाँच मिनट तक यह चलता रहा तथा इस कालांतर में कुछेक वार्डर द्वार से अन्दर-बाहर आए गए। अन्त में आज्ञा दी गई।

विशाल शब्द करते हुए द्वार खुल गए, शृङ्खलाओं की खड़खड़ाहट तीव्रतर हो गई तथा सफेद ब्लाउज पहिने पथ-रक्षक-सैनिक द्वार के सम्मुख वृहद् गोला-

कार रूप में अपनी राइफिलें लिए खड़े हो गए। यह उनकी पूर्व अभ्यस्त परिपाटी थी। तब दूसरी आज्ञा सुनाई गई तथा बन्दीगण जोड़े से बाहर निकलने लगे। बन्दियों के घुटे सिरों पर लिहीनुमा टोपियाँ तथा कंधों पर बोरे थे। वे अपने श्रृङ्खलायुक्त पाँवों को घसीटते तथा एक हाथ से बोरों को थामे तथा दूसरा हाथ हिलाते हुए चल रहे थे।

पहिले तो वे पुरुष निकले.जिनके लिए कठोर परिश्रम का दंड प्राप्त हुआ था। उन सबने एक से ही भूरे पाजामे तथा पीठ पर चिह्नित लबादे पहिन रखे थे। वे सब-के-सब—युवक एवं वृद्ध, स्थूल एवं कृशकाय, पीले, लाल एवं काले, दाढ़ी हीन एवं दाढ़ी युक्त, रूसी, तातार, यहूदी—अपनी श्रृङ्खलाओं को खड़खड़ाते हुए तथा बाँहों को हिलाते हुए इस भाँति निकले मानो किसी लम्बी यात्रा के लिए सन्नद्ध है; किंतु दस कदम चलकर रुक गए और एक-एक के पीछे कर चार पंक्तियों में विभक्त हो गए। तब उनके पीछे निकले पंक्तिबद्ध अधिक घुटे लोग। उनकी ड्रेस भी उसी भाँति की थी किंतु उनके पांवों में श्रृङ्खलाएँ न होकर उनकी बाहें एक दूसरे से बंधी हुई थीं। इनको निष्कासन का दंड प्राप्त हुआ था। ये भी उसी भाँति चलते आए और उसी भाँति एकाएक रुक कर चार पंक्तियों में विभाजित हो गए। फिर वे लोग आए जिन्हे कि उक्रेन प्रान्तों से निष्कासित कर दिया गया था।

तब उसी प्रकार से स्त्रियाँ आईं: पहिले वे जिनको कठोर परिश्रम का दंड दिया गया था तथा जिन्होने कि भूरे लबादे तथा रूमाल ओढ़ रखे थे; फिर निकलीं निर्वासित स्त्रियाँ तथा वे स्त्रियाँ जोकि स्वेच्छा से अपने पतियों के साथ चलने को अपने नागरिक अथवा ग्रामीण वस्त्र पहिने आईं थी। कुछ स्त्रियों ने अपने लबादों के सामने अपने बच्चे गोद में ले रखे थे।

स्त्रियों के साथ लड़के लड़कियाँ इस भाँति चल रहे थे जैसे कि घोड़े घोड़ियों के समूह में बछेड़े चला करते हैं। वे बालक बन्दियों के बीच चिपके से चल रहे थे।

पुरुष चुपचाप अपने स्थानों पर जा खड़े हुए, बस कभी-कभी खाँसते और बातें करते।

स्त्रियों की बातचीतें बन्द ही नहीं होतीं। नेखलूदोव ने उनके बाहर आने के समय सोचा कि मैंने माशलोवा को बाहर निकलते देखा है किंतु वह तुरन्त ही

इस विशाल समुदाय में विलीन हो गई अब। उसे केवल भूरे प्राणिमात्र दिखलाई दे रहे थे—प्रतीत होता था कि उन सब में से मानवता निकल चुकी है अथवा कम-से-कम उनमें स्त्रीत्व नाम की तो कोई वस्तु है ही नहीं—उनकी पीठों पर बोरे लदे थे तथा चारो ओर बालक खड़े थे। ये स्त्रियाँ पुरुषों के पीछे जाकर खड़ी हो रही थीं।

यद्यपि समस्त बन्दी बन्दीगृह के अन्दर गिने जा चुके थे फिर भी पथ-रक्षकों ने सूची से गिनती का मिलान करते हुए उन्हें दुबारा गिना। इसमें बहुत समय लग गया विशेषतया इसलिए कि कुछ बन्दी अपने स्थानों से हटकर अन्य स्थानों पर खड़े हो गए थे। इससे पथ-रक्षकों को गणना में भ्रम उत्पन्न हो गया।

पथ-रक्षक सैनिक बन्दियों पर चिल्लाए, उन्हें धक्का दिया (जिन्होंने कि आज्ञाओं का पालन किया, यद्यपि क्रोध में) तथा उनकी दुबारा गणना करने लगे। गणना समाप्त होने के पश्चात् पथ-रक्षक-अधिकारी ने कोई आज्ञा दी तथा भीड़ में हलचल उत्पन्न हो आई। दुर्बल स्त्री, पुरुष एवं बालक एक-दूसरे से तेज भागते हुए गाड़ियों की ओर दौड़े तथा उनमें अपने बोरे रखकर चढ़ने लगे। प्रसन्न लड़कों एवं रोते हुए बच्चों को लेकर स्त्रियाँ तथा उदास एवं निराश बन्दी गाड़ियों में चढ़ गए।

अपनी टोपियाँ उतार कर कुछ बन्दी पथ-रक्षक अधिकारी के पास कुछ प्रार्थना करने आए। नेखलूदोव को यह पीछे ज्ञात हुआ कि वे लोग गाड़ियों में स्थान पाने के लिए प्रार्थना कर रहे थे। नेखलूदोव ने देखा कि किस भाँति अधिकारी ने बन्दियों की ओर देखे बिना ही सिगरेट का कश खींचकर यकायक एक बन्दी के सम्मुख अपनी छोटी बाँह हिलाई और किस भाँति बन्दी अपने घुटे सिर को अपने कंधों में पीछे फेंक उछलकर पीछे हट गया मानो वह उस धुएँ की फँक से डरता हो।

"मैं तुम्हें ऐसी लिफ्ट दूँगा कि तुम याद करोगे। तुम पैदल ही ठीक पहुँच जाओगे।" अधिकारी चिल्लाया।

केवल एक बन्दी की प्रार्थना स्वीकृत हुई। वह वृद्ध था तथा उसके पाँवों में शृङ्खलाएँ पड़ी थीं। नेखलूदोव ने उसे अपनी लिहीनुमा टोपी उतारते, क्रॉस बनाते एवं गाड़ी के पास जाते देखा। अपने दुर्बल पाँवों में पड़ी हुई शृङ्खलाओं के कारण वह गाड़ी पर नहीं चढ़ पा रहा था। अंत में गाड़ी में बैठी हुई एक

स्त्री ने उसे हाथ से पकड़ कर ऊपर खींच लिया।

जब सब बोरे गाड़ियों में लद गए तथा जिनको गाड़ियों में चलने की अनुमति थी वे लोग गाड़ियों में बैठ गए तब अधिकारी ने अपनी टोपी उतारी अपना मुंह, गंजी खोपड़ी तथा मोटी लाल गर्दन पोंछी एवं क्रॉस बनाया।

"प्राऽचल: !" उसने आज्ञा दी।

सैनिकों की बंदूकें खड़कीं, बंदियों ने अपनी टोपियाँ उतारीं तथा क्रॉस बनाया; जो उनसे विदा लेने आए थे वे कुछ चिल्लाये; बन्दियों ने चिल्लाकर उनका उत्तर दिया। स्त्रियों के मध्य बड़ा असंतोष था। अब ब्लाउज पहिने सैनिकों से घिरा हुआ दल अपने श्रङ्खला युक्त पाँवों से धूल उड़ाता आगे बढ़ दिया। सैनिक सबसे आगे थे, उनके पीछे श्रङ्खलायें खड़खड़ाते कठोर परिश्रम के दण्ड प्राप्त बंदी; फिर निर्वासित एवं राज्य सरकारों द्वारा निर्वासित बंदीगण, जिनकी दो द व्यक्तियों की कलाइयों में १-१ श्रङ्खलाएँ पड़ी थीं; फिर स्त्रियाँ। उनके पीछे बोरों से लदी गाड़ियों पर दुर्बल बंदी। एक गाड़ी पर ऊँची बैठी हुई एक स्त्री रो चीख रही थी। वह कपड़ों से लदी पड़ी थी।

३५

यह जलूस इतना लम्बा था कि माल एवं दुर्बल बंदियों से लदी गाड़ियों को चलने का अवसर तब ही मिल सका जबकि उसका अगला भाग आँखों से ओझल हो गया। अंतिम गाड़ी के चलने के पश्चात नेखलूदोव अपनी बग्घी में चढ़ा। यह बग्घी उसी की प्रतीक्षा में खड़ी थी। यह देखने के लिए, कि इस दल में कोई ऐसा बंदी है कि जिसे मैं जानता होऊँ और माशलोवा का पता लगाकर उससे पूछ सकूं कि मैंने जो वस्तुएें उसके पास भेजी थीं वे मिल गईं अथवा नहीं, उसने गाड़ीवान से कहा कि बग्घी को जुलूस के पास ले चलो।

गर्मी बहुत तेज थी हवा बिल्कुल थी ही नहीं। तथा सड़क के बीच हजारों पैरों के चलने से धूल का एक बादल-सा उड़ रहा था। बंदी तेजी से चल रहे थे और धीमे चलने वाला बग्घी का घोड़ा बंदियों तक पहुँचने ही वाला था। बग्घी उन विचित्र एवं भयावने दिखलाई देने वाले प्राणियों की पंक्ति दर पंक्तियों को पार करती आगे निकल गई किंतु नेखलूदोव उनमें से किसी को नहीं पहिचान पाया।

वे आगे बढ़ते—एक ही ड्रैस में, एक हजार कदम एक से ढंग से पड़ते। तथा उनकी खाली भुजायें इस भाँति हिल रही थी मानो कि उनकी भावनाओं को स्थिर रख रही हों। वे इतने अधिक थे. इतने समान दिख रहे थे तथा वे सब ऐसी विचित्र एव असाधारण स्थिति में थे कि नेखलूदोव को ऐसा प्रतीत होता था मानो कि वे मानव नहीं वरन् किसी विचित्र प्रकार के भयावह प्राणी हों। उसकी यह धारणा तब ही समाप्त हुई जबकि उसने उन बंदियो के बीच चल रहे हत्यारे फ्योदोरोव को पहिचाना तथा पहिचाना निर्वासितों के मध्य ओखोतीन हंसोड़ एवं एक भिखमंगे को जिसने कि उससे सहायता की याचना की थी। लगभग सभी बंदियों ने अपने से आगे जाती हुई बग्घी एवं उसके अन्दर बैठे हुए सज्जन की ओर मुड़ मुड़कर देखा। फ्योदोरोव ने यह प्रकट करने के लिए अपना सिर पीछे झटका कि उसने नेखलूदोव को पहिचान लिया है तथा ओखोतीन ने आँख मारी किंतु दोनों में से किसी ने भी अपना सिर यह सोचकर नहीं झुकाया कि ऐसा करने की अनुमति नहीं है।

स्त्रियों के पास पहुँचते ही नेखलूदोव ने माशलोवा को पहिचान लिया। वह दूसरी पंक्ति में थी। इस पंक्ति से सबसे पहिले थी काले नेत्रों एवं छोटे पाँवों वाली डरावनी आकृति की एक स्त्री, जिसने अपना लबादा कमर से ऊपर उठाकर बाँध लिया था। इसका नाम था खोरोशावका। उसके बाद थी एक गर्भवती स्त्री जो बड़ी कठिनाई से घिसटती हुई चल रही थी। तीसरी थी माशलोवा। वह अपनी पीठ पर बोरी लादे सीधी सामने की ओर देखती चल रही थी। उसके मुखमण्डल पर शान्ति एवं दृढ़ता थी। पंक्ति में चौथी थी एक सुन्दरी युवती, जो कि हाफ-लबादा पहिने, सिर पर किसान स्त्रियों की भाँति रूमाल बांधे शान से चल रही थी। यह थी फेदोशिया।

उतरकर नेखलूदोव स्त्रियों के दल के पास माशलोवा से यह पूछने के लिए पहुँचा कि क्या मेरी भेजी हुई वस्तुएँ तुम्हें प्राप्त हो गई हैं तथा इस समय तुम्हें क्या अनुभूति हो रही है किंतु सार्जेंट, जो कि इसी ओर चल रहा था, उसे देखते ही उसकी ओर दौड़ा।

"श्रीमान जी ! आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। बंदियों के दल के पास जाना विधान के प्रतिकूल है" उसके पास आते ही सार्जेन्ट चिल्लाया।

किंतु नेखलूदोव को पहिचानते ही (उसे बन्दीगृह में सब पहिचानते थे) सार्जेन्ट ने अपनी उँगलियाँ टोपी के पास ले जाकर अभिवादन किया, उसके सामने खड़ा हुआ और बोला "अभी नहीं श्रीमन्त, रेलवे स्टेशन तक प्रतक्षा

कीजिए; यहाँ इसकी अनुमति नहीं है।" "रुको मत चलते रहो !" वह बन्दियों के ऊपर चिल्लाया और गर्व प्रदर्शित कर अपने स्थान पर वापिस भागकर चला गया। उसने गर्मी और अपने नए चमकीले जूतों की चिंता नहीं की।

नेखलूदोव पटरी पर चला गया और कोचवान को पीछे पीछे बग्घी ले चलने के लिए कहकर इस भाँति चलने लगा कि दल उसे दिखलाई देता रहे। दल का जो भाग भी उसके सामने से निकल जाता वही भाग भय एवं करुणा मिश्रित ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता। जो लोग वहाँ से निकलते अपनी गाड़ी की खिड़की में से बंदियों को देखते जाते। जो पैदल थे वे रुककर इस वीभत्स दृश्य को भय एवं आश्चर्य से देखते। कुछेक बन्दियों के लिए भिक्षा देते जिन्हें कि पथ-रक्षक सैनिक स्वीकार कर लेते। कुछेक दल के साथ इस भाँति चल पड़ते मानो कि मुग्ध हो गए हों, फिर रुक जाते, अपना सिर हिलाते और एक ओर खड़े होकर अपने नेत्रों से ही जाते हुए बन्दियों को देखते। प्रत्येक स्थान पर लोग द्वारों से बाहर आ जाते और दूसरों को भी बाहर बुलाते अथवा अपनी खिड़कियों में झुककर अचल एवं चुप होकर इस भयानक जुलूस की ओर देखते रहते। एक चौराहे पर जुलूस के कारण एक शानदार बग्घी खड़ी रह गई। एक दमकते मुखमण्डल का मोटा कोचवान पीठ पर बटनों की दो पंक्तियों युक्त ड्रैस पहिने कोच-बक्स पर बैठा था; एक विवाहित दम्पत्ति घोड़ों की ओर मुख करके बैठे थे, पत्नी पीली दुर्बल सी थी तथा हल्के रंग की स्त्रियों की टोपी पहिने एवं हाथ में एक सुन्दर छाता लिए बैठी थी। पति ने टोप तथा अच्छा कटावदार हाफ कोट पहिन रखा था। सामने की गद्दी पर उनके बालक बैठे थे—सुन्दर वस्त्रों से सज्जित, सुनहरे बालों युक्त पुष्प की भाँति स्वस्थ छोटी लड़की जिसने कि हाथ में छोटा सा छाता ले रखा था तथा पतली लम्बी गर्दन एवं नुकीली हंसली युक्त आठ वर्षीय लड़का जिसने कि फीतोंदार नाविक हैट लगा रखा था।

पिता ने कोचवान को दल के आगे से बग्घी न निकालकर ले जाने के लिए डाँटा कि उसको मौका मिला और वह क्यों यहीं खड़ा रहा। माँ अर्द्ध-निमीलित नेत्रों से घृणा प्रकट करती हुई तथा धूल एवं धूप से सिल्क के छाते द्वारा अपनी रक्षा करते हुए, जिसे कि उसने अपने मुंह से सटा लिया था, कुछ बड़बड़ा रही थी।

मोटा कोचवान अपने स्वामी की अन्यायपूर्ण कहा-सुनी पर क्रोध से भौंहें

तरेर रहा था। मालिक ने स्वयं इस सड़क से गाड़ी ले चलने को कहा था। वह बड़ी कठिनाई से चमकीले काले घोड़ों को रोके हुए था जो कि अपनी लगाम से झाग दे रहे थे तथा चलने को उतावले हो रहे थे।

पुलिस वाला दल को रोककर इस शानदार बग्घी के स्वामी को अपनी समस्त आत्मा से प्रसन्न करना चाहता था। फिर भी उसका विचार था कि इतने धनवान सज्जन के लिए भी जुलूस की गम्भीरता भंग करना अनुचित होगा। उसने उसकी सम्पत्ति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए हाथ उठाकर अभिवादन ही किया तथा बन्दियों की ओर क्रोध से देखा मानोकि वह बग्घी के स्वामी को उन बन्दियों से रक्षा करने का वचन दे रहा हो अतः बग्घी को तब तक रुकना पड़ा जब तक कि पूरा जुलूस निकल नहीं गया। वह तब ही आगे बढ़ सकी जबकि बोरियों तथा बन्दियों से लदी अन्तिम गाड़ी खड़-खड़ करती आगे बढ़ गई। दौरे के रोग से ग्रस्त स्त्री, जो कि अब शान्त हो आई थी, इस शानदार बग्घी को देखकर पुनः रोने चिल्लाने लगी। तब कोचवान ने हल्के से लगाम को स्पर्श किया तथा दुल्की चाल से चलने वाले काले घोड़े अपनी नालों से टप टपा टप करते हुए रबड़ के टायरों वाली गाड़ी को पान्थागार की ओर ले चले, जहाँ कि पति पत्नी, लड़की एवं नुकली हंसलियों वाला लड़का मनोरंजन करने के लिए जा रहे थे।

न तो माता ने ही और न पिता ने ही अपने बच्चों को इस दृश्य के विषय में कुछ बतलाया अतः बच्चों को इस विचित्र दृश्य का स्वयं ही अर्थ खोजना पड़ा।

अपने पिता एवं माता की मुख मुद्राओं को विचार में रखते हुए लड़की ने यह निश्चय कर समस्या का हल खोज निकाला कि ये स्त्री पुरुष हमारे अभिभावकों एवं परिचितों से भिन्न प्रकार के व्यक्ति हैं, कि ये लोग बुरे व्यक्ति हैं अतः इनके साथ इस प्रकार का व्यवहार किया जाता है। इसलिए लड़की को भय के अतिरिक्त अन्य कुछ अनुभव नहीं हुआ और जब ये लोग उसकी दृष्टि से दूर हो गए तब उसे प्रसन्नता ही हुई।

किंतु लम्बी पतली गर्दल वाले लड़के ने, जो कि जुलूस को निरन्तर दृष्टि गढ़ाए देखता रहा था, भिन्न प्रकार से ही समाधान सोचा। क्योंकि वह भली-भाँति तथा असंदिग्ध रूप से यह जानता था कि भगवान के यहाँ से आए हुए ये व्यक्ति भी मेरी तथा अन्यान्य व्यक्तियों की ही भाँति के मनुष्य हैं और इसलिए किसी ने

इनके साथ अन्याय का कार्य किया है, जो कि करना नहीं चाहिए था; तथा उसे उनकी अवस्था पर दुख हुआ एवं उन दोनों के कारण उसके हृदय में भय का संचार हुआ—जिनके सिर घुटे थे और जो श्रंखलाओं से आबद्ध थे तथा जिन्होंने कि उनके सिर मुड़वा दिए थे तथा श्रङ्खलाओं में आबद्ध किया था। अतः लड़के के ओष्ठ अधिकाधिक दृढ़ होते गए, तथा वह इस बातका अधिकाधिक प्रयत्न करने लग पड़ा कि कहीं मैं रो न पड़ूं क्योंकि इन बातों पर रोना लज्जास्पद कार्य है।

३६

नेखलूदोव बंदियों की तेज चाल के साथ कदम मिलाए चलता रहा। यद्यपि उसने हल्के वस्त्र पहिन रखे थे किंतु फिर भी उसे गर्मी बहुत लग रही थी तथा उस दम घोंटने वाली, स्थिर धूल से भरी गर्म लू में साँस लेना बड़ा कठिन प्रतीत हो रहा था।

लगभग दो फरलाँग चलने के पश्चात नेखलूदोव अपनी बग्घी में पुनः बैठ गया। किंतु सड़क के बीच और भी अधिक गर्मी थी। उसने अपने बहिनोई से हुए रात के वार्तालाप का पुनः स्मरण करना चाहा किंतु उन स्मृतियों ने अब उसे इतना अधिक उत्तेजित नहीं किया जितना कि प्रातःकाल किया था। वे दल की रवानगी तथा उसके प्र-चलन से उत्पन्न प्रभावों एवं विशेषतया असह्य गर्मी के कारण दब गए थे।

पटरी पर चहार दीवारी से ऊँचे निकले कुछ पेड़ों की छाया के नीचे दो विद्यार्थियों को बरफ बेचने वाले के ऊपर झुकते हुए देखा। एक विद्यार्थी तो सींघ की एक चम्मच को चूसता हुआ बर्फ का आनन्द पहिले से ही ले रहा था तथा दूसरा एक गिलास की प्रतीक्षा में था, जिसमे कि कुछ पीलापन लिए द्रव भरा जा रहा था।

"यहाँ कहीं पीने वाले को भी कुछ मिल सकता है?" नेखलूदोव ने मनोरञ्जन करने की उत्कट अभिलाषा को अनुभव करते हुए अपने कोचवान से पूछा।

"यहाँ पास ही एक अच्छा होटल है।" कोचवान ने उत्तर दिया और एक कोने की ओर मुड़कर बड़े से साइनबोर्ड से युक्त एक द्वार से बग्घी लगा दी।

मोटा ताजा दूकानदार रूसी कमीज पहिने खिड़की के पीछे खड़ा था और मेज के पास कुर्सियाँ लगाए, बैठे हुए नौकर अपनी वर्दियाँ पहिने, जो कभी श्वेत थीं, (दूकान पर कोई भी ग्राहक नहीं था) असाधारण नवागन्तुक की ओर आश्चर्य से देखकर उसकी सेवा करने के लिए उठकर खड़े हो गए। उतर कर नेखलूदोव ने सोडा वाटर माँगा तथा खिड़की से कुछ दूर हटकर एक मेज पर जिस पर कि एक गंदा कपड़ा बिछा हुआ था, बैठ गया।'

दूसरी मेज पर चाय का सामान तथा एक सफेद बोतल रखे दो आदमी बैठे हुए अपने माथों को सिकोड़े तथा मैत्रीपूर्ण ढंग में हिसाब-सा कर रहे थे। उनमें से एक काले रंग का था; दूसरा जो गंजा था उसकी खोपड़ी के पीछे रागो-झिन्स्की की ही भाँति बालों की हल्की-सी झालर थी। इसको देखते ही नेखलूदोव को अपने बहनोई के साथ हुई कल की बात तथा नतालिया से पुनः मिलने की इच्छा पुनः जाग्रत हो आई।

"गाड़ी छूटने से पूर्व यह करने में बड़ी कठिनाई होगी," उसने सोचा "अच्छा हो कि मैं पत्र डाल दूँ।" उसने एक कागज, एक लिफाफा तथा टिकट माँगे और जब वह उफनता हुआ झागदार पानी पी रहा था तब उसने सोचा कि क्या लिखूँ। किंतु उसके विचार स्थिर न हो सके और वह पत्र न लिख सका।

"मेरी प्रिय नतालिया !

"मैं उस भारीपन को लिए नहीं जा सकता जो कि कल तुम्हारे पतिदेव से वार्तालाप करते हुए आ गया है।" उसने लिखना प्रारम्भ किया......"अब क्या लिखूँ ? कल अपनी कही बातों के लिए उनसे क्षमा माँगू ? किंतु मैंने तो केवल अपनी अनुभूतियों को ही व्यक्त किया था। वे सोचेंगे कि मैं अपनी बात वापिस ले रहा हूँ। इसके अतिरिक्त उन्होंने मेरे निजी मामलों में हस्तक्षेप किया ..... नहीं...मैं नहीं लिख सकता..." और पुनः उसे अनुभव हुआ कि मेरे हृदय में उस व्यक्ति के लिए पुनः घृणा उठ रही है जो कि मेरे लिए नितांत पराया है। उसने अधूरे पत्र को मोडा और अपनी जेब में रख लिया, बिल चुका दिया, बाहर आ गया और बग्घी में बैठ गया ताकि पुनः दल के पास पहुँच जाय।

अब गर्मी और अधिक बढ़ गई थी। लगता था कि पत्थर और दीवालें

गर्म वायु की निःश्वासें छोड़ रहे हैं। फर्श पैरों को झुलसाए दे रहा था तथा जब नेखलूदोव ने बग्घी के सुनहरी वार्निश के मडगार्ड पर हाथ रखा तो उसे ऐसा लगा मानो हाथ भुरस गया हो।

घोड़ा धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था और टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर अपनी टापों से टपटपाटप करता हुआ चल रहा था। कोचवान ऊँघ रहा था। नेखलूदोव उदासीन भाव से बैठा हुआ अपने सामने देख रहा था। उसके मस्तिष्क में कोई विचार नहीं था।

एक बड़े से मकान के द्वार के सम्मुख, जहाँ सड़क से गटर के लिए मार्ग बना था, कुछ लोगों का दल एकत्रित हो रहा था तथा वहाँ एक रक्षक-सैनिक खड़ा हुआ था।

नेखलूदोव ने कोचवान को रोका। "क्या हो गया?" उसने एक पोर्टर से पूछा।

"किसी बन्दी को कुछ हो गया है।"

बग्घी से उतर कर नेखलूदोव दल के पास पहुँचा। गटर के खुरदरे पत्थर पर चौड़े कंधों वाला एक वृद्ध-बन्दी लेटा पड़ा था जिसकी दाढ़ी लाल, नाक चपटी एवं मुख अत्यन्त लाल हो रहा था। उसका सिर टाँगों से नीचा था। उसने भूरा पाजामा तथा भूरा लबादा पहिन रखा था तथा वह पीठ के बल लेटा था। उसके अशक्त हाथों की हथेलियाँ नीचे झुकी थीं एवं लाल नेत्र आकाश की ओर स्थिर थे। थोड़ी २ देर बाद उसका चौड़ा विशाल वक्ष हिलता और तभी वह कराहता। उसके पास ही खड़े थे—एक उदास सिपाही, एक फेरी वाला, एक डाकिया, एक लिपिक, हाथ में छाता लिए एक वृद्धा एवं खाली टोकरी लिए छोटे बालों वाला लड़का।

नेखलूदोव के पहुँचते ही लिपिक ने उससे कहा, "ये लोग अशक्त हैं। बन्दी-गृह में बन्द रहने पर बैठे-बैठे ये अशक्त हो जाते है और तब इनको इतनी प्रचण्ड ग्रीष्म में यहाँ से वहाँ ले जाया जाता है।"

"शायद यह बचेगा नहीं।" छाते वाली वृद्धा ने उदास स्वर में कहा।

"इसका कालर ढीला कर देना चाहिए।"

पुलिसमैन ने अपनी मोटी, काँपती हुई अँगुलियों से उसकी पुष्ट लाल गर्दन के चारों ओर कमीज को बाँधने वाले फीतों को गंवारू ढंग से खोलना प्रारम्भ

किया। स्पष्ट था कि वह उत्तेजित एवं विभ्रभित हो गया था, किंतु फिर भी भीड़ के सम्मुख कुछ-न-कुछ कहना उसने उपयुक्त समझा।

"आप लोग यहाँ एकत्रित क्यों हो रहे हैं? आप लोग यदि हवा न भी रोकें तब भी यहाँ गर्मी आवश्यकता से अधिक है।"

"किसी डाक्टर द्वारा इनकी परीक्षा करवा लेते और अधिक दुर्बलों को वहीं छोड़ देते। यह तो मरने से भी बदतर हालत में भेज दिया गया है।" लिपिक ने अपना विधि-ज्ञान प्रदर्शित करते हुए कहा।

पट्टियाँ खोलकर सिपाही उठा और उसने अपने चारों ओर देखा।

"मैं कहता हूँ, जाइए। यह आपका कार्य नहीं है, है क्या? यहाँ क्या रखा है देखने को?" वह बोला और नेखलूदोव की ओर सहानुभूति प्राप्त करने के लिए घूमा, किंतु उसके चेहरे पर सहानुभूति का चिह्न प्राप्त न करने पर वह पथ-रक्षक-सैनिक की ओर मुड़ा।

किंतु सैनिक अलग खड़ा हुआ अपने जूते की घिसी हुई एढ़ी को देख रहा था तथा पुलिसमैन की चिंता से बिल्कुल निर्मुक्त था।

"जिनका यह कार्य है उन्हें तो चिंता तक नहीं......क्या इस भाँति मनुष्यों के प्राण लेना न्याय है?...अपराधी, अपराधी है किंतु है तो मनुष्य ही।" भीड़ में से आवाजें आईं।

"इसका सिर और ऊँचा उठाओ तथा इसे पानी पिलाओ।" नेखलूदोव बोला।

"पानी मँगाया है।" पुलिसमैन बोला और बन्दी को अपनी बाँहों के ऊपर ले कठिनाई से उसने उसके शरीर को तनिक ऊँचा उठाया।

"अच्छा तो यह भीड़ यहाँ किसलिए है?" एक निश्चित अधिकृत स्वर सुनाई दिया तथा आश्चर्यजनक स्वच्छ श्वेत चमकदार ब्लाउज तथा उससे भी अधिक चमकीले जूते पहिने एक पुलिस अधिकारी एकत्रित भीड़ के पास आया।

"बढ़िए! यहाँ खड़े रहने का काम नहीं है।" यह जानने से पूर्व ही कि भीड़ किसलिए एकत्रित हुई है वह जोर से चिल्लाया।

पास आकर जब उसने मृत्यु के मुख में पड़े बन्दी को देखा तब अनुमोदन में अपना सिर हिलाया मानो इसकी तो उसे पहिले से ही कल्पना

थी और पुलिसमैन की ओर मुड़कर पूछा "यह कैसे हुआ ?"

पुलिसमैन ने बतलाया कि जब बन्दियों का एक दल निकल रहा था। तब उनमें से यह बन्दी गिर पड़ा और पथ-रक्षक-अधिकारी ने इसे यहीं छोड़ जाने की आज्ञा दी।

"ख़ैर ठीक है। इसे पुलिस स्टेशन पहुँचाना चाहिए। एक गाड़ी मँगाओ।"

"एक पोर्टर गाड़ी लाने गया है।" उँगलियों को टोपी के पास ले जाकर पुलिसमैन ने कहा।

दूकानदार गर्मी के विषय में कुछ कहने लगा।

"क्या यह आपका काम है ? जाइए।" पुलिस अधिकारी ने कहा और इतनी क्रुद्ध दृष्टि से उसकी ओर देखा कि लिपिक चुप हो गया।

"इसे थोड़ा-सा जल देना चाहिए।" नेखलूदोव बोला।

पुलिस अधिकारी ने नेखलूदोव की ओर भी क्रुद्ध दृष्टि से देखा किंतु बोला कुछ नहीं। पोर्टर पानी से भरा एक जग ले आया तो अधिकारी ने पुलिसमैन से बन्दी को पानी पिलाने को कहा। पुलिसमैन ने उसका ढुलका हुआ सिर उठाया और उसके मुख में पानी डालना चाहा किंतु बन्दी से पानी निगला नहीं गया अतः वह उसकी दाढ़ी पर बह निकला तथा पानी से उसकी मोटी गंदी लिनन की कमीज और जाकेट भीग गईं।

"इसके सिर पर डालो।" अधिकारी ने आज्ञा दी, तथा पुलिसमैन ने उसकी लिहीनुमा टोपी उतारी और उसकी लाल लटों तथा खोपड़ी के गंजे भाग पर पानी डाल दिया।

उसकी आँखें चौड़ गईं मानो भय से फट गई हों; ,किंतु उसकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया।

धूल की पतली धारें उसके धूल धूमरित मुख पर बह निकली थीं। उसका मुख उसी प्रकार से निरन्तर हाँफ रहा था तथा उसका समस्त तन हिल रहा था।

"देखो ! इसे ले लो।" पुलिस अधिकारी ने नेखलूदोव की बग्घी की ओर इंगित करते हुए कहा, "ऐ तुम, इधर लाओ गाड़ी !"

"मेरे पास सवारी है।" कोचवान ने अप्रसन्नता से उसकी ओर देखे बिना ही उत्तर दिया।

"यह मेरी बग्घी है, किंतु ले लीजिए।" नेखलूदोव ने कहा; पुनः गाड़ीवान की ओर मुड़कर बोला "मैं तुम्हें पैसे दे दूँगा।"

"हाँ, तो क्या प्रतीक्षा करते हो ?" अधिकारी चिल्लाया, "पकड़ो।"

मरणासन्न बन्दी को पुलिसमैन, पोर्टर तथा पथ-रक्षक-सैनिक तीनों ने मिलकर उठाया और उसे बग्घी के पास ले जाकर गद्दी पर रख दिया। किंतु वह बैठ नहीं सका; उसका सिर पीछे लुढ़क पड़ा तथा उसका समस्त शरीर गद्दी से नीचे सरक गया।

"इसे लिटा दो।" अधिकारी चिल्लाया।

पुलिसमैन ने सीट पर उस मरणासन्न व्यक्ति के बगल में बैठ उसकी बाँहों के नीचे से अपनी पुष्ट भुजाओं से पकड़कर कहा "अब ठीक है, श्रीमन्, मैं इस भाँति इसे पुलिस स्टेशन तक ले जाऊँगा।"

पथ-रक्षक-सैनिक ने उसके मोजेविहीन बन्दीगृह के जूतों युक्त पाँवों को उठाकर बग्घी में रख दिया।

पुलिस अधिकारी ने चारों ओर देखा व बन्दी की लिहोनुमा टोपी देख उसे उठाकर बन्दी के भीगे लुढ़के सिर पर लगा दिया।

"चलो जाओ।" उसने आज्ञा दी।

कोचवान ने क्रुद्ध दृष्टि से चारों ओर देखा, अपना सिर हिलाया और पथ-रक्षक-सैनिक के साथ वापिस पुलिस स्टेशन की ओर धीमे-धीमे गाड़ी बढ़ाई। बन्दी के पास बैठा हुआ पुलिसमैन सीट से बारम्बार सरकते हुए उसके शरीर को ऊपर खींचता रहा।

पथ-रक्षक-सैनिक, जो कि बग्घी की बगल में चल रहा था, उसके पाँवों को ठीक करता। नेखलूदोव बग्घी के पीछे-पीछे चल दिया।

३७

द्वार पर खड़े हुए संतरी की भाँति फायरमैन से आगे निकलकर बग्घी पुलिस स्टेशन के आँगन में आई तथा एक द्वार के आगे खड़ी हो गई।

आँगन में अपनी बाँहें चढ़ाए कितने ही फायरमैन एक गाड़ी को धो रहे थे

तथा उच्च स्वर में बातें कर रहे थे ।

बग्घी के रुकते ही कितने ही पुलिसमैनों ने उसे घेर लिया और बन्दी के निष्प्राण तन को बाँहों के नीचे से पकड़ कर बग्घी से बाहर निकाल लिया, जो कि उसके भार के कारण चरमरा गई थी ।

जो पुलिसमैन शव को लेकर आया था वह नीचे उतरा, उसने अपनी सुन्न बाँह को हिलाया, अपनी टोपी उतारी तथा क्रॉस बनाया । शव को द्वार में से ऊपर ले जाया गया । नेखलूदोव उसके पीछे गया । जिस छोटे एवं गंदे कक्ष में शव ले जाया गया उसमें चार चारपाई बिछी थीं । दो पर तो लबादा पहिने दो बीमार बैठे थे—एक का मुँह टेढ़ा व गर्दन पर पट्टी बँधी थी और दूसरा क्षय-ग्रस्त था । दो चारपाई खाली थीं । उनमें से एक पर बन्दी को लिटाया गया । चमकीले नेत्रों का एक ठिगना व्यक्ति अपनी भौंहें निरन्तर हिलाता हुआ केवल जाँघिया, बनियान, मोजे पहिने, तेज किंतु हल्के कदमों से चलकर आया; पहिले उसने बन्दी की ओर देखा फिर नेखलूदोव की ओर और फिर बड़े जोर से हँस पड़ा । यह पागल था जिसे कि पुलिस चिकित्सालय में रखा गया था ।

"ये लोग मुझे भयभीत करना चाहते हैं, किंतु नहीं, इसमें ये सफल नहीं हो सकते ।" वह बोला ।

जो पुलिसमैन शव को लेकर आए थे उनके साथ एक पुलिस अधिकारी तथा छोटा डाक्टर भी आया ।

डाक्टर ने शव के पास आकर पीले धब्बे युक्त हाथ को उठाया जो, यद्यपि अभी तक नरम ही था किंतु, नितांत पीला एवं ठंडा पड़ चुका था । क्षण भर पकड़े रहने के पश्चात् उसने हाथ को छोड़ दिया । वह निर्जीव हाथ शव के पेट पर जा गिरा ।

"समाप्त हो चुका ।" डाक्टर बोला; किंतु कायदे की कार्यवाही पूरी करने के लिए उसने शव की गंदी कमीज खोली और अपने घुँघराले बालों को पीछे झटककर बन्दी के पीले, चौड़े, स्पदंनहीन वक्ष पर अपने कान रखे । सब लोग चुप थे । डाक्टर पुनः सीधा खड़ा हुआ, उसने अपना सिर हिलाया, और मृतक की खुली नीली आँखों की पलकों को एक के पश्चात् एक कर अपनी उँगलियों से छूकर देखा ।

"मुझे डर नहीं लगा, मुझे डर नहीं लगा ।" पागल कहता रहा तथा

डाक्टर की ओर थूकता रहा।

"फिर ?" पुलिस अधिकारी ने पूछा।

"फिर ?" डाक्टर ने उत्तर दिया "इसको शवस्थान पर रखना चाहिए।"

"सावधानी से देख लीजिए ! पूर्ण विश्वास है न आपको ?" पुलिस अधिकारी ने पूछा।

"अब तक मुझे इस बात को सीख लेना चाहिए था" छोटे डाक्टर ने मृतक के वक्ष पर उसकी कमीज खींचकर ठीक करते हुए कहा "फिर भी, मैं मातवेई इवानोविच को बुलाए लेता हूँ, वे भी देख लेंगे। पेत्रोव ! उन्हें बुला लाना।" और छोटा डाक्टर शव से अलग हट गया।

"इसे शव-स्थान पर ले जाओ।" पुलिस अधिकारी ने कहा "और फिर कार्यालय में आकर हस्ताक्षर कर जाना।" उसने पथ-रक्षक-दल के सैनिक से कहा जो कि क्षण भर के लिए भी मृतक के पास से नहीं हटा था।

"जी श्रीमान् !" सैनिक बोला।

सिपाहियों ने शव को उठाया और पुन: ले चले। नेखलूदोव भी उनके पीछे-पीछे जाना चाहता था किंतु पागल ने उसे रोक लिया।

"आप इस षडयंत्र में नहीं हैं। इसी बात पर एक सिगरेट पिलाइए।" वह बोला। नेखलूदोव ने सिगरेट की डिब्बी निकाल कर एक सिगरेट उसे दे दी।

पागल ने भोंहें नचाते हुए कहना प्रारम्भ किया कि मुझे विचारों से प्रभावित कर बहुत तंग किया गया है।

"सब मेरे विरुद्ध हैं—सभी अपने-अपने माध्यमों से मुझे तंग करते हैं, कष्ट देते हैं।"

"क्षमा कीजिएगा।" उससे कह कर नेखलूदोव उसकी और बातों को बिना सुने ही कमरे से बाहर निकल कर यह देखने के लिए आँगन में आया कि शव कहाँ रखा जाएगा।

शव को लादे पुलिसमैन आँगन को पार कर चुके थे तथा एक कोठरी में घुसने ही वाले थे। नेखलूदोव वहाँ जाने लगा किंतु पुलिस अधिकारी ने उसे रोक दिया।

"आपको क्या काम है ?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं ? तब जाइए।"

नेखलूदोव लौट दिया और अपनी बग्घी पर गया। कोचवान ऊँघ रहा था। नेखलूदोव ने उसे जगाया और बग्घी को स्टेशन ले चलने को कहा।

अभी वह सौ गज भी नहीं पहुँचे होंगे कि मार्ग में एक गाड़ी मिली जिसके साथ बन्दूक लिए एक पथ-रक्षक-सैनिक था। गाड़ी में एक दूसरा बन्दी लेटा हुआ था जिसकी मृत्यु हो चुकी थी। बन्दी गाड़ी में पीठ के बल पड़ा हुआ था, उसकी घुटी खोपड़ी (जिस पर से उसकी लिहीनुमा टोपी खिसक कर उसके काली दाढ़ी युक्त चेहरे पर नाक के पास आ गई थी) गाड़ी के हर धचके पर हिलती और थपथप करती जा रही थी। भारी जूते पहिने गाड़ीवान गाड़ी की बगल में लगाम पकड़े चल रहा था। पुलिस का सिपाही भी पीछे-पीछे पैदल चला आ रहा था। नेखलूदोव ने अपने कोचवान के कंधे को स्पर्श किया।

"देखिए तो ये लोग कर क्या रहे हैं!" कोचवान ने घोड़े रोकते हुए कहा।

बग्घी से उतर कर नेखलूदोव गाड़ी के पीछे पीछे चलता हुआ पुनः संतरी के सामने निकल पुलिस थाने में प्रविष्ट हुआ। अब तक फायरमैनों ने गाड़ी धो डाली थी और उनके स्थान पर वहाँ खड़ा था—जेबों में हाथ डाले एक लम्बा अस्थिपंजर युक्त फायर-ब्रिगेड का कप्तान। उसकी टोपी पर नीली पट्टी लग रही थी तथा वह एक विशाल भारी गर्दन युक्त मोटे-ताजे ऐसे घोड़े को देख रहा था जिसका कि पुंसत्व नष्ट नहीं किया गया था तथा जिसे कि एक फायरमैन उसके सम्मुख इधर-से-उधर घुमा रहा था। घोड़े की सामने वाली एक टाँग लंगड़ी थी और फायर-ब्रिगेड-कप्तान पशु-चिकित्सक पर क्रोधित हो रहा था जो कि उसके पास ही खड़ा था।

पुलिस अधिकारी भी वहीं खड़ा था। उसने दूसरा शव आता देखा तो वह पथ-रक्षक-सैनिक के पास स्वयं जा पहुँचा।

"कहाँ से उठा लाए ?" उसने असंतोषपूर्वक सिर हिलाते हुए कहा।

"गोरबातोव्स्काया से।" पुलिसमैन ने उत्तर दिया।

"बन्दी है ?" फायर-ब्रिगेड-कप्तान ने पूछा।

"जी हाँ इसका आज दूसरा नम्बर है।"

"मुझे कहना ही पड़ता है कि बड़ी विचित्र व्यवस्था की गई है। कितनी भीषण गर्मी पड़ रही है।" फायर-ब्रिगेड-प्रधान ने कहा। फिर लंगड़े घोड़े को पकड़कर चलते हुए फायरमैन से चिल्लाकर बोला :

"कोने की दूकान में खड़ा कर दो इसको। और तुम कुत्ते कहीं के ! मैं बताऊँगा तुम्हें कि तुमसे भी अधिक मूल्यवान घोड़ों को लँगड़ा कैसे किया जाता है। दुष्ट कहीं का !"

उस मृतक को भी गाडी से उतार कर पुलिसमैन उसी भाँति ले गए जिस भाँति कि पहिले को ले गए थे। वे उसे सीढ़ियों के ऊपर ले गए। नेखलूदोव मन्त्रमुग्ध की भाँति उनके पीछे चला गया।

"आपको क्या काम है ?" एक सिपाही ने पूछा।

नेखलूदोव ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया और शव के पीछे चलता चला गया। एक बिस्तरे पर बैठा पागल नेखलूदोव की दी हुई सिगरेट को बड़े चाव से पी रहा था।

"ओह हो ! आप वापिस लौट आए।" कहकर वह हँस पड़ा। शव को देखकर उसने नाक भों सिकोड़ीं और बोला: "पुनः ? मैं तो परेशान हो गया। मैं कोई बच्चा तो हूँ नहीं, हूँ क्या ?" और उसने नेखलूदोव की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से मुस्कुराते हुए देखा।

नेखलूदोव मृतक की ओर देख रहा था जिसका टोपी से ढका चेहरा अब दिखलाई देने लग पड़ा था। यह बन्दी उतना ही सुन्दर एवं स्वस्थ था जितना कि पहिला असुन्दर एवं अस्वस्थ। वह अपने जीवन के चरम विकास की अवस्था में था। आधा सिर घुटा होने के उपरान्त भी निष्प्राण नेत्रों के ऊपर से तनिक घुमाव लेते हुए उसका माथा, जो कि .यद्यपि ऊँचा नहीं था फिर भी अत्यंत सुन्दर लगता था तथा इसी भाँति सुन्दर थी पतली काली मूँछों के ऊपर उसकी नासिका। उसके नीले पड़ते ओठों पर मुस्कयान थी, उसके मुख के निचले भाग में छोटी दाढ़ी थी, तथा कोई भी उसके घुटे सिर की बगल में सुघड़ कानों को देखकर उन्हें सुन्दर कह उठता। उसके मुख पर शांतता, गम्भीरता एवं दया के भाव थे।

कोई भी उसे देखकर कह सकता था कि इस व्यक्ति के जीवन को उन्नत

ढंग से व्यतीत करने की संभावनाओं को समाप्त कर दिया है। उसके हाथों एवं श्रृङ्खला-युक्त पावों की सुन्दर अस्थियाँ, उसके सुघढ़ तन की माँस पेशियाँ सिद्ध करती थीं कि यह व्यक्ति कितना सुन्दर, स्वस्थ एवं चंचल पशु-मानव रहा होगा। काश ! वह पशु ही होता तो इस लँगड़े घोड़े से भी कहीं अधिक सुन्दर एवं पूर्ण होता जिसके लिए कि फायर-ब्रिगेड कप्तान इतना क्रोधित हो रहा था।

यद्यपि उसको मृत्यु के मुख में धकेल दिया गया था, और उस पर मनुष्य की भाँति तो दूर, उसे एक कार्य करने वाला पशु समझकर भी उसके प्रति सहानुभूति रखने वाला कोई नहीं था कि एक इतना सुन्दर पशु मृत्यु को प्राप्त हो गया है, वहाँ एक ही भावना दिखलाई देती थी कि दुर्गन्ध से पूर्ण इस शव को ठिकाने से लगाने का व्यर्थ झंझट आ पड़ा है।

डाक्टर एवं उसका सहायक चिकित्सालय में प्रविष्ट हुए। उनके साथ था पुलिस थाने का इन्सपैक्टर। डाक्टर चीन के कोमल रेशमी कपड़े का कोट तथा पाजामा पहिने हुए थे। वह मोटा ताजा था तथा उसके कपड़े बिल्कुल चुस्त थे। इन्सपैक्टर का कद ठिगना तथा मुंह गेंद की भाँति गोल था जिसे कि उसने हवा भरकर धीरे २ निकालनेकी अपनी आदत से और भी अधिक लाल कर लिया था। डाक्टर मृतक के पास बैठ गया, उसने अपने सहायक की भाँति ही उसका हाथ उठाया, उसके वक्ष पर अपना कान रखा और उठकर खड़ा हो अपने पाजामे को ठीक करने लगा।

"मेरे बिना रह नहीं सकता था।" वह बोला।

इन्सपैक्टर ने अपने मुह में हवा भरी और धीरे २ निकालने लगा।

"किस बंदीगृह का है ?" उसने पथ-रक्षक-सैनिक से पूछा।

सैनिक ने बतला दिया और मृतक के पाँवों की श्रृङ्खलाओं का पुनर्स्मरण करा दिया।

"मैं उन्हें उतरवा लूगा; हमारे यहाँ भगवान की दया से लोहार है।" इन्सपैक्टर ने कहा और मुह में पुनः हवा भरकर धीरे धीरे निकालने लगा।

"ऐसा हुआ क्यों ?" नेखलूदोव ने डाक्टर से पूछा।

डाक्टर ने चश्मे में से उसकी ओर देखा।

"ऐसा क्या हो गया ? क्या आपका अभिप्राय है कि ये लोग क्यों मर

जाते हैं ? लू लगने से। ये लोग सर्दी के मौसम में बिना कसरत और धूप के बैठे रहते हैं और फिर एकाएक ऐसी तेज धूप में उन्हें ले जाया जाता है; ये लोग एकत्रित हो भीड़ भाड़ में चलते हैं तो हवा मिलती नहीं और लू असर कर जाती है।"

"तब इन्हें भेजा ही क्यों जाता है ?"

"ओह ! उसके लिए जाकर उनसे पूछिए जो कि उन्हें भेजते हैं। किंतु क्या कृपाकर आप अपना परिचय देंगे ?"

"मैं तो एक दर्शक मात्र हूँ।"

"ओह ! अच्छा, नमस्ते; मेरे पास समय नहीं है।" डाक्टर परेशान था; उसने अपना पाजामा नीचे खिसकाया और बीमारों के बिस्तरे की ओर चल दिया।

"कहो, कैसी हो अब ?" उसने गर्दन पर पट्टी बँधे, टेढ़े मुंह वाले पीले से व्यक्ति से पूछा।

इस बीच पागल एक बिस्तर पर बैठा हुआ सिगरेट समाप्त कर डाक्टर की ओर बराबर थूकता रहा।

नेखलूदोव आँगन में से हो द्वार के बाहर निकला तथा फायरमैनों के घोड़ों और मुर्गियों एवं पीतली रंग के शिरस्त्राण पहिने संतरी को पार कर निकला तथा अपनी बग्घी में जा बैठा। कोचवान को नींद आ गई थी।

३८

जब नेखलूदोव स्टेशन पर पहुँचा तब सारे बंदी रेल के डिब्बों में बैठ चुके थे जिनकी कि खिड़कियों में छड़ें लगी हुई थीं। कुछ लोग जो कि उन्हें विदा करने के लिए आए हुए थे प्लेटफार्म पर खड़े थे। उन्हें डिब्बों के पास जाने की अनुमति नहीं थी।

पथ-रक्षक-दल को उस दिन बहुत परेशानी हुई। बंदीगृह से स्टेशन तक आने में नेखलूदोव के देखे हुए दो बंदियों के अतिरिक्त तीन अन्य बंदी भी लू लग कर मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। एक तो पहिले दोनों बंदियों की भाँति पास के

पुलिस थाने पर भेज दिया गया किंतु अन्य दो रेलवे स्टेशन* पर ही मरे थे। पथ-रक्षक-दल की चिंता यह नहीं थी कि हमें सौंपे हुए बंदियों में से पांच बंदी क्यों मर गए। उनकी परेशानी तो यह थी कि कहीं कायदे कानून की बात में कोई कमी न रह जाय। उनको परेशान करने वाली बातें थीं: मृतक देहों को नियत स्थान पर पहुँचाना, उनके कागज पत्र तथा सामान देने, निजनी नोवोगोरद जाने वाले बन्दियों की सूची से उनके नामों को काटना—यह सब इतनी गर्मी में।

इस कार्य में व्यस्त थे ये रक्षक-दल के सैनिक, और इस कार्य की पूर्ति से पूर्व उन्होंने नेखलूदोव एवं अन्यान्य व्यक्तियों को डिब्बे के पास जाने की अनुमति नहीं दी। डिब्बे अट्ठारह थे तथा उनमें से एक को छोड़, जो कि अधिकारियों के लिए था, बाकी सब में बंदी ठुंसे भरे थे। डिब्बों के पास से निकलते हुए नेखलूदोव को उनके अन्दर होने वाली बातचीतें सुनाई दीं। डिब्बों से श्रृंखलाओं की खड़खड़ाहट तथा शोर-गुल की आवाज एवं गालियाँ आ रही थीं किंतु मृतकों के विषय में एक भी शब्द नहीं कहा जा रहा था। बातचीतों का विषय थे-बोरियाँ, पानी पीना तथा बैठने का स्थान।

नेखलूदोव ने एक डिब्बे में झाँककर देखा। दो पथ-रक्षक सैनिक बंदियों के हाथों से हथकड़ियाँ खोल रहे थे। बन्दी हाथ बढ़ा देते, एक सिपाही ताली से हथकड़ी खोलकर उतार लेता तथा दूसरा उनको एकत्रित करता जा रहा था।

पुरुषों के डिब्बों से बढ़कर नेखलूदोव स्त्रियों के डिब्बों के पास आया। दूसरे नम्बर के डिब्बे से एक औरत के रोने तथा कराहने की आवाज आ रही थी:
"आह! ओह! आह! हे भगवान! आह! ओह!"

इस डिब्बे से आगे चलकर नेखलूदोव तीसरे डिब्बे की खिड़की पर पहुँचा, जिसकी ओर कि एक सैनिक ने उसे इङ्गित किया था। खिड़की के पास मुख रखते ही उसे पसीने की दुर्गन्ध से पूर्ण उष्ण वायु का अनुभव हुआ जो कि उस खिड़की से निकल रही थी; एवं उसे सुनाई दी एक स्त्री के चिल्लाने की तीक्ष्ण आवाज।

सब सीटों पर लाल, पसीने से तर बतर, उच्च स्वर में बातें करती हुई सफेद जाकिट तथा बन्दीगृह के लबादों से युक्त स्त्रियाँ बैठी हुई थीं। नेखलूदोव के

---

*सन् १८८० के आस पास मास्को में बुतीर्स्काया बन्दीगृह से निजनी नोवोगोरद रेलवे स्टेशन तक जाने में पाँच बन्दी लू लगने से मर गए थे।

चेहरे को खिड़की पर देख ये उधर आकर्षित हुईं। समीपस्थ स्त्रियों ने बातचीतें करना बन्द कर उसकी ओर देखा। सफेद जाकिट पहिने, सिर खोले माशलोवा खिड़की के दूसरी ओर बैठी हुई थी। नेखलूदोव के निकट ही सुन्दरी फेदोशिया बैठी थी। नेखलूदोव को पहिचानते ही उसने माशलोवा के चुटकी नोंची और खिड़की की ओर इङ्गित किया।

हड़बड़ाकर माशलोवा उठी और रूमाल को अपने काले बालों पर पीछे की ओर करते हुए लाल उष्ण अधरों पर मुस्क्यान बिखेरती हुई वह खिड़की के पास आई और एक छड़ पकड़कर खड़ी हो गई।

"आज तो गर्मी बहुत है।" उसने प्रसन्नता से मुस्कुराते हुए कहा।

"तुम्हें मेरी भेजी हुई वस्तुऐं प्राप्त हो गईं?"

"जी हाँ! धन्यवाद।"

"कोई और वस्तु तो नहीं चाहिए?" नेखलूदोव ने पूछा। तभी उष्ण वायु का ऐसा झोंका डिब्बे में से निकला मानो भट्टी के पास से आया हो।

"जी नहीं, धन्यवाद।"

"कुछ पीने को यदि मिल जाता।" फेदोशिया बोली।

"जी हाँ! यदि कुछ पीने को मिल जाय।" माशलोवा ने दोहराया।

"क्यों क्या पानी नहीं मिला?"

"आया तो था किंतु सब समाप्त हो गया।"

"किसी पथ-रक्षक से कह दूँगा। अब हम निजनी नोवोगोरद के स्टेशन तक एक दूसरे से नहीं मिल सकते।"

"क्यों, चल रहे हैं क्या?" माशलोवा ने उससे इस भाँति पूछा मानो उसे खबर ही न हो और नेखलूदोव की ओर प्रसन्न दृष्टि से देखा।

"इसके बाद वाली गाड़ी से आ रहा हूँ।"

माशलोवा ने कहा तो कुछ नहीं, केवल दीर्घ निःश्वास छोड़ी।

"क्यों श्रीमान् जी, क्या यह सही बात है कि बारह बन्दी मर गए?" एक वृद्धा ने पुरुषों के से स्वर में कहा।

यह कोराबिलियोवा थी।

"मैंने बारह की बात नहीं सुनी; दो को देखा है।" नेखलूदोव ने कहा।

"लोग कहते हैं कि बारह को मार डाला। और उनसे कहने सुनने वाला कौन है ? सोचिए तो इन दुष्टों के कार्य को।"

"स्त्रियों में से तो कोई बीमार नहीं पड़ी ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"स्त्रियाँ अधिक शक्तिशाली हैं।" ठिगने कद की एक अन्य बन्दिनी कहती हुई हँस पड़ी।

"एक स्त्री ऐसी अवश्य है जिसके अभी बच्चा पैदा होने को है। देखिए वह रही।" उसने अगले डिब्बे की ओर इङ्गित कर कहा जिसमें से कि कराह सुनाई दे रही थी।

"आपने पूछा न कि हमको क्या चाहिए।" माशलोवा ने अपने ओठों पर नाचने वाली मुस्क्यान को बलात् दबाते हुए कहा "कितना कष्ट पा रही है बेचारी, क्या इसे यहाँ छोड़ा जा सकता है ? देखिए न, यदि आप अधिकारियों से कुछ कहें..."

"हाँ, मैं कह दूँगा।"

"एक बात और। क्या यह अपने पति तारास से नहीं मिल सकती ?" उसने अपने प्रसन्न नेत्रों से फेदोशिया को इङ्गित करते हुए कहा "वह भी तो आपके साथ चल रहे है। चल रहे हैं न ?"

"श्रीमान् जी ! आपको बातें नहीं करनी चाहिए।" एक पथ-रक्षक सारजेंट बोला।

यह वह सार्जेन्ट नहीं था जिसने कि नेखलूदोव को आने दिया था।

डिब्बे से हटकर नेखलूदोव ऐसे अधिकारी की खोज में चल दिया जिससे कि वह तारास के विषय में तथा प्रसव वेदना से पीड़िता के विषय में कहा सुनी करे। उसे न तो कोई अधिकारी ही मिल सका और न किसी सैनिक से उत्तर ही। वे सब दौड़ धूप में लगे हुए थे। कोई किसी बन्दी को ले जा रहा था कोई अपने सामान का प्रबन्ध कर रहा था कोई अपना सामान गाड़ी में रख रहा था, एक तो एक ऐसी महिला की सेवा में था जो कि पथ-रक्षक अधिकारी के साथ जा रही थी। इसलिए इन लोगों ने नेखलूदोव के प्रश्नों का अनिच्छापूर्वक उत्तर दिया।

दूसरी घण्टी* बजने से पूर्व नेखलूदोव को पथ-रक्षक अधिकारी नहीं मिल सका।

छोटे हाथों वाला यह अधिकरी अपनी मूंछें सम्हाल रहा था तथा कन्धे मटकाता हुआ किसी सैनिक को डाँट रहा था।

"आप चाहते क्या हैं ?" उसने नेखलूदोव से पूछा।

"इस दल में एक ऐसी स्त्री जा रही है जिसके कि बच्चा होने वाला है। मेरे विचार से..."

"हो लेने दीजिए, फिर देख लेगे।" और तेजी से अपनी छोटी बाँह को हिलाते हुए वह अपने डिब्बे की ओर दौड़ा।

इसी समय हाथ में सीटी लिए गार्ड उधर से निकला; प्लेट-फार्म पर खड़े एवं डिब्बे में बैठे स्त्री पुरुषों का रुदन सुनाई दिया।

नेखलूदोव तारास के पास खड़ा हुआ देख रहा था कि छड़ लगी खिड़कियों से युक्त डिब्बे, जिनमें से घुटी खोपड़ी दिखलाई दे रही थीं, किस भाँति एक के बाद एक कर निकले चले जा रहे थे। फिर आया स्त्रियों का पहिला डिब्बा जिसकी खिड़कियों से दिखलाई दिए स्त्रियों के सिर, कुछ रूमालों से ढके कुछ उघड़े। उसके पश्चात दूसरा डिब्बा आया जिसमें से कि अभी तक कराहट आ रही थी। इसके बाद आया माशलोवा वाला डिब्बा। वह खिड़की के पास अन्यान्यों के साथ खड़ी हुई देखलूदोव की ओर करुण मुस्कयान से देख रही थी।

३९

जिस पैसेञ्जर गाड़ी से नेखलूदोव को जाना था उसके चलने में अभी भी दो घण्टे का समय था। उसने सोचा कि इस बीच मे अपनी बहिन से मिलकर समय का सदुपयोग करलूं; किन्तु अब तक के दृश्यों से वह इतना थक गया था कि प्रथम श्रेणी के जलपान-गृह मे एक सोफे पर बैठते ही उसके नेत्र झँपने लगे। उसने निक बदन सीधा किया ही था कि तुरन्त ही अपने हाथ पर सिर रखकर सो गया।

---

*रूस में बड़े स्टेशनों पर साधारणतया गाड़ी चलने से बीस मिनट पूर्व पहिली घण्टी बजती है, दस मिनट पूर्व दूसरी घण्टी तथा ठीक चलते समय तीसरी घण्टी बजती है। छोटे स्टेशनों पर कालान्तर कम रहता है।

हाथ में तौलिया लिए एक वेटर ने' जो कोट पहिने हुए था, आकर उसे जगा दिया।

"श्रीमान् जी ! प्रिन्स नेखलूदोव आप ही तो नहीं हैं ? एक महिला आपको खोज रही हैं।"

नेखलूदोव ने आश्चर्य में अपनी आँखें मलीं व स्मरण किया कि मैं हूँ कहाँ और मैंने प्रभात में क्या-क्या देखा।

बन्दियों का जुलूस, मृतकों के शव, छड़दार खिड़कियों युक्त डिब्बे, तथा उनमें बन्द स्त्रियाँ, जिनमें से एक को यद्यपि कड़े परिश्रम ने क्लांत कर दिया था किंतु उसे सहायता कोई नहीं मिल रही थी; जबकि दूसरी करुणापूर्ण मुस्कान से मेरी ओर मुस्कुरा रही थीं—यह सब कल्पनाएँ उसके मस्तिष्क में घूम रही थीं।

और जो कुछ भी सत्य उसके सम्मुख था वह नितांत भिन्न था: फूलदानों से युक्त मेज, मोमबत्तियाँ, क्रोकरी इधर-से-उधर घूमते हुए चपल वेटर तथा कमरे के अन्त में एक कप-बोर्ड, बोतलों की सजधज, फलों की तश्तरियाँ, एक होटल वाला, तथा होटल पर खड़े लोगों की पीठें।

नेखलूदोव जागकर बैठा हुआ और अपने विचारों को शृङ्खलाबद्ध करने लगा तो उसने देखा कि इस कमरे के सभी व्यक्ति द्वार की किसी वस्तु को बड़े कौतूहल से देख रहे है। उसने भी उधर देखा तो उसे किसी महिला को कुर्सी पर बैठाए लाते हुए लोगों का जुलूस दिखलाई दिया। इस महिला के सिर के चारों ओर कोई विशेष कपड़ा लिपटा हुआ था। नेखलूदोव को ध्यान आया कि मैं इस वर्दीधारी नौकर को जानता हूँ जो कि सामने से कुर्सी को सम्हाले चला आ रहा है; अपनी टोपी पर सुनहली डोर लगाए पीछे चलने वाला द्वारपाल भी मेरी जान-पहिचान का ही है। उस महिला की एक अन्य नौकरानी झालर एवं ऐप्रन पहिने थी जो कि एक पारसल, कुछ छाते, तथा एक गोल चमड़े की पेटी में कुछ वस्तु लेकर कुर्सी के पीछे २ चल रही थी। तब आया प्रिन्स कोरचागिन, जिसके ओंठ मोटे एवं गर्दन पर मूर्छा के रोग की स्पष्ट झलक थी तथा जिसके सिर पर सफरी टोपी थी; उसके पीछे थी मिस्सी, मिस्सी की चचेरी बहिन मीशा, तथा नेखलूदोव का एक परिचित—लम्बी गर्दन युक्त कूटनीतिज्ञ ओस्तन जिसकी टेंटी ऊँची थी तथा जिसका प्रसन्न मूड स्पष्ट झलक रहा

था। वह मुस्कराती हुई मिस्सी से बड़े बलपूर्वक कोई बात कह रहा था यद्यपि थी परिहास में ही। डाक्टर पीछे-पीछे क्रोध से सिगरेट का धुँआ उड़ाता जा रहा था।

कोरचागिन परिवार अपनी जमींदारी से प्रिन्सेज की बहिन की जमींदारी के पास के एक स्टेशन पर जा रहा था, जो कि निजनी नोवोगोरद के रेल-मार्ग पर था।

जुलूस—कुर्सियाँ ले जाते हुए पुरुष, नौकरानी तथा डाक्टर—स्त्रियों के प्रतीक्षालय में गायब हो गया। दर्शकों में कौतूहल एवं आदर की भावना जाग्रत हो गई थी। किंतु वृद्ध प्रिन्स मेज पर बैठा रहा, उसने वेटर को बुलाकर खाने-पीने की वस्तुओं का आदेश दिया। मिस्सी तथा ओस्तन भी जलपानगृह में रहे आए और बैठने ही वाले थे कि द्वार पर उनकी कोई परिचिता दिखलाई दी और वे उसके पास चले गए। यह थी नतालिया रागोभिन्स्काया।

जलपानगृह में नतालिया के पीछे अग्रफेना पेत्रोव्ना भी आई। कमरे में प्रविष्ट होते ही दोनों ने चारों ओर देखा तथा नतालिया ने अपने भाई एवं मिस्सी दोनो को साथ ही साथ देखा। मिस्सी के पास जाकर पहिले तो उसने भाई को केवल सिर हिलाकर अभिवादन किया पुनः मिस्सी का आलिंगन कर वह तुरन्त नेखलूदोव की ओर चल दी।

"आखिर मैंने तुम्हें खोज ही लिया।" वह बोली।

मिस्सी, मीशा एवं ओस्तन को अभिवादन करने तथा उनसे कुछ शब्द कहने के लिए नेखलूदोव उठकर खड़ा हुआ। मिस्सी ने अपने गाँव के मकान में आग लगने का समाचार सुनाया तथा बतलाया कि इसी कारण मौसी की जमींदारी में आना आवश्यक हो गया है। ओस्तन ने आग के सम्बन्ध में एक परिहास-पूर्ण कहानी कहनी प्रारम्भ कर दी।

नेखलूदोव ने उधर ध्यान नहीं दिया और वह अपनी बहिन की ओर मुड़ा।

"तुम्हारे आने से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई।"

"मुझे यहाँ आए बहुत विलम्ब हो गया" वह बोली "अग्रफेना पेत्रोव्ना मेरे साथ है।" और उसने अग्रफेना पेत्रोव्ना की ओर इंगित किया जो कि वाटर प्रूफ पहिने तथा सिर पर बानेट लगाए तनिक हटी हुई खड़ी थी तथा उसने

नेखलूदोव को सम्मानपूर्वक सिर झुकाकर अभिवादन किया। वह उनकी बातचीतों में दखल नहीं डालना चाहती थी।

"हम लोगों ने तुम्हें हर जगह खोज डाला।"

"और मैं यहाँ सोया पड़ा था। तुम्हारे आने से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।" नेखलूदोव ने दोहराया "मैं तुम्हें एक पत्र लिखने जा रहा था।"

"सचमुच ?" उसने भय से देखते हुए कहा "किसलिए ?"

मिस्सी एवं भद्रपुरुष यह देख वहाँ से हट गए कि बहिन-भाई में कोई अन्तरङ्ग बातचीतें चलने वाली हैं। मखमल बिछे कोच पर खिड़की के सहारे नेखलूदोव और उसकी बहिन बैठ गए जिस पर कि एक कम्बल, एक बक्स तथा कुछ अन्य वस्तुएँ रखी हुई थीं।

"कल तुम्हारे पास से आने के पश्चात् मेरी इच्छा हुई कि मैं लौटकर तुम्हारे पास चलूं और अपनी बातों की क्षमा माँगलूं किंतु मुझे मालूम नहीं था कि जीजाजी ने क्या समझा" नेखलूदोव बोला "मैंने उनसे बहुत जल्दी-जल्दी बातें कीं और इससे मुझे दुख हुआ।"

"मै जानती थी, मुझे विश्वास था कि तुम्हारा अभिप्राय यह नहीं था।" उसकी बहिन ने कहा ! "आह तुम तो जानते ही हो !" और उसके नेत्रों में अश्रु आ गए तथा उसने उसके हाथ का स्पर्श किया।

वाक्य में स्पष्टता नही थी, किंतु वह उसे पूर्णतया समझ गया व उसके भावों से द्रवित हो गया। उसके शब्दों का अर्थ था कि मेरे पति के प्रेम के अतिरिक्त, जो कि मुझ पर शासन करता है, मैं तुम्हारे लिए अपने हृदय के स्नेह की कीमत करती हूँ तथा उसे महत्त्वपूर्ण समझती हूँ और कि हम दोनों के बीच की गलतफहमी से मुझे बहुत ठेस पहुँचती है।

"धन्यवाद। धन्यवाद ! आह ! मैंने आज क्या देखा !" यकायक दूसरे बन्दी की मृत्यु का स्मरण होते ही वह बोला "दो बन्दियों के प्राण ले लिए गए।"

"प्राण ले लिए गए ? कैसे ?"

"हाँ, अभी प्राण ले लिए गए। मैंने खुद शव देखे हैं।"

"किंतु प्राण क्यों ले लिए ? किसने मार डाला ?" नतालिया ने पूछा।

"उन्होंने जिन्होंने कि उन्हें जाने के लिए बाध्य किया था।" नेखलूदोव

ने क्रोध में कहा। उसे लगा कि इस बात को भी वह अपने पति के दृष्टिकोण से देखती है।

"हे मेरे भगवान !" अग्रफेना पेत्रोव्ना ने कहा जो कि उनके पास तक आ चुकी थी।

'हाँ ! हम लोगों को इसका ख्याल तक नहीं है कि इन अभागों पर क्या बीतती है। किंतु हमको इसका ज्ञान होना ही चाहिए।" नेखलूदोव ने कहा और उसने वृद्ध कोरचागिन की ओर देखा जो कि अपने सामने बोतल रखे बैठा थ तथा जिसकी कि गर्दन पर तौलिया लिपटा हुआ था। उसने भी तब ही मुड़कर देखा था।

"नेखलूदोव," उसने पुकारा "क्या तुम यहाँ आकर मेरे साथ जलपान नहीं करोगे ? लम्बी यात्रा से पूर्व यह एक अच्छी बात है।"

नेखलूदोव ने मना कर दिया और उधर से दृष्टि हटा ली।

"किंतु तुम क्या करोगे ?" नतालिया ने कहना प्रारम्भ किया।

"मैं क्या कर सकता हूँ, मैं नहीं जानता, किंतु मुझे लगता है कि मुझे कुछ-न-कुछ करना चाहिए। और जो कुछ हो सकता है, मैं करूँगा।"

"हाँ, मैं समझती हूँ। और उनका क्या रहा ?" उसने मुस्कुराते हुए तथा कोरचागिन की ओर देखते हुए कहा "क्या वह सब समाप्त हो गया ?"

"बिल्कुल, और मैं समझता हूँ कि दोनों में से किसी पक्ष को किंचित भी दुख नहीं हुआ।"

"यह दुख की बात है और मुझे इस पर दुख है। मुझे वह बड़ी अच्छी लगती है। खैर, यह मान भी लिया जाए तो अपने साथ तुम उसे किस भाँति रखना...तुम किस भाँति उसके साथ रहना चाहते हो ?" उसने लजाते हुए पुनः कहा, "तुम जा क्यों रहे हो ?"

"मैं इसलिए जा रहा हूँ कि मुझे जाना चाहिए।" नेखलूदोव ने गंभीरता एवं शुष्कता से कहा मानो वह इस वार्तालाप को समाप्त करना चाहता हो।

किंतु तुरन्त ही उसे अपनी इस नीरसता पर लज्जा उत्पन्न हो आई। "क्यों नहीं मैं उसे अपने समस्त विचारों से अवगत करा दूँ। अग्रफेना भी सुन ले तो क्या अन्तर पड़ता है ?" उसने पुरानी नौकरानी की ओर देखते हुए सोचा,

जिसकी उपस्थिति ने अपनी बहिन से सब कुछ कह देने के उसके निर्णय को और भी अधिक बल प्रदान किया।

"तुम्हारा अभिप्राय कातूशा से विवाह करने के मेरे निश्चय से है? देखो, मैंने तो दृढ़ निश्चय कर लिया है किंतु वह निश्चितता एवं दृढ़ता से अस्वीकार करती है।" कहते समय उसकी वाणी काँप गई, जैसे कि जब भी वह इस बात को कहता काँपने लगती थी "वह मेरा त्याग स्वीकार करना नहीं चाहती किंतु वह स्वयं त्याग कर रही है जिसका कि उसकी वर्तमान स्थिति में बहुत महत्त्व है और मैं इस त्याग को स्वीकार नहीं कर सकता—यदि यह केवल क्षणिक भाव है तो। इसलिए मैं उसके साथ जा रहा हूँ, तथा जहाँ भी वह रहेगी मैं साथ जाऊँगा एवं जहाँ तक सम्भव होगा उसके दुर्भाग्य को हल्का करने की चेष्टा करूँगा।"

नतालिया कुछ नहीं बोली। अग्रफेना पेत्रोव्ना ने उसकी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा तथा विरोध में अपना सिर हिलाया। तब ही स्त्रियों के प्रकोष्ठ से पुनः वही जुलूस निकला। वही सुन्दर वर्दीधारी नौकर (फिलिप) तथा द्वारपाल प्रिन्सेज कोरचागिना को ले जा रहे थे। उसने ले जाने वालों को रोका और नेखलूदोव को पास आने को इङ्गित किया तथा करुणा एवं निरुत्साह प्रदर्शित करते हुए अंगूठियों से लदे अपने श्वेत हाथ को उसकी ओर डरते हुए बढ़ाया कि हाथ मिलाने में नेखलूदोव के हाथ का दबाव कठोर प्रतीत हो।

"भयंकर!" वह बोली। उसका अर्थ था गर्मी से। "मुझसे नहीं रहा जाता। मैं तो मर ली।" और रूस की जलवायु की भयंकरता पर थोड़ी सी बातें कर तथा नेखलूदोव को अपने यहाँ आने का निमंत्रण दे आदमियों को बढ़ चलने को उसने इङ्गित किया।

"देखिए! अवश्य आकर हमें दर्शन दीजिए।" जब वे उसे ले जाने लगे तब उसने अपना लम्बा मुंह घुमाकर नेखलूदोव से कहा।

प्रिन्सेज का जुलूस सीधा प्रथम श्रेणी के डिब्बों की ओर मुड़ गया। नेखलूदोव, पोर्टर, जो कि उसका सामान लेकर चल रहा था, एवं अपनी बोरी लिये तारास बाँयी ओर मुड़े।

"यह मेरा साथी है।" नेखलूदोव ने अपनी बहिन से तारास को इङ्गित करते हुए कहा। तारास की कथा वह नतालिया को पहिले ही सुना चुका था।

"तीसरी श्रेणी में तो नहीं जाओगे ना?" नेखलूदोव को तीसरी श्रेणी

के एक डिब्बे के सामने रुकते एवं तारास तथा पोर्टर को उसमें सामान रखते देखकर नतालिया ने पूछा ।

"हाँ ! मुझे यही पसन्द है । मैं तारास के साथ जा रहा हूँ ।" वह बोला "एक बात और" उसने पुनः कहा—"अभी तक मैंने कुजमीन्स्कोये की जमींदारी किसानों को नहीं दी है अतः यदि मेरी मृत्यु हो जाय...... ।"

"दिमित्री, ऐसी बात मत कहो !" नतालिया बोली ।

"यदि मैं उसे भी दे डालूगा तो मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि बाकी जितनी वस्तुऐं बचेंगी वे सब उनकी होंगी । क्योंकि मेरे विवाह की कोई संभावना नहीं; और यदि विवाह हो भी जाता है तो सन्तान नहीं होगी । अतः ..."

"दिमित्री, ऐसी बातें मत कहो !" नतालिया बोली । किंतु नेखलूदोव ने देखा कि इस बात को सुनकर बहिन प्रसन्न हो उठी है ।

उधर दूर प्रथम श्रेणी के जिस डिब्बे में प्रिन्सेज कोरचागिना चढ़ी थीं, लोगों की भीड़ खड़ी उसी में देख रही थी । अधिकाँश यात्री बैठ चुके थे । विलम्ब से आने वाले कुछ यात्री फटाफट प्लेटफार्म पर इधर से उधर घूम रहे थे, तथा यात्रियों से डिब्बों में जाकर बैठने तथा उनमे मिलने के लिए आए हुए व्यक्तियों से बाहर आने को कह रहे थे ।

नेखलूदोव धधकते हुए दुर्गन्धियुक्त डिब्वे में प्रविष्ट हुआ किंतु तुरन्त ही बाहर प्लेटफार्म पर उतरकर डिब्बे के अन्तिम द्वार पर खड़ा हो गया ।

फैशनेबुल बोनट तथा कैप पहिने नतालिया अग्रफेना पैत्रोव्ना की बगल में डिब्बे के ही पास खड़ी हुई सोच रही थी कि अब क्या बातें करूँ ।

वह "पत्र लिखना" शब्द भी नही कह सकी क्योंकि वे सदैव इस पर हँस पड़ते थे, जो कि विदा होने वालों के स्वभाव में आ चुका था । धन की बातचीतों ने क्षण भर में ही बन्धुत्व एवं भगिनीत्व की कोमल हार्दिक भावनाओं को नष्ट कर दिया था । वे एक दूसरे से अपरिचित से हो गए, इसलिए गाड़ी के चल देने पर नतालिया को प्रसन्नता ही हुई और उदास एवं स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए सिर हिलाकर वह केवल इतना ही कह सकी "नमस्कार! दिमित्री नमस्कार ।"

किंतु गाड़ी के जाते ही उसके हृदय में विचार उठा कि मैं इस वार्तालाप को अपने पति के सम्मुख किस भाँति प्रस्तुत करूँ और वह उदास एवं गम्भीर हो उठी ।

नेखलूदोव के हृदय में अपनी बहिन के प्रति यद्यपि बड़ा स्नेह था और उसने अपनी कोई बात उससे छिपाई भी नहीं थी किंतु फिर भी इस समय उसे बहिन का पास होना अजीबोगरीब-सा लगने लगा था और गाड़ी चल देने पर भी उसे प्रसन्नता ही हुई। उसे लगा वह अब मेरी प्रिय नतालिया नहीं रही, उसके स्थान पर केवल रह गई है उस विचित्र, मनहूस, काले बालों वाले पुरुष की दासी। उसने स्पष्टतया देखा कि जब उसने वह बात कही जो कि उसके पति में विशेष रुचि उत्पन्न करेगी—भूमि को किसानों को दे देने की तथा उसके बच्चों के उत्तराधिकार की—तब उसके चेहरे पर कितनी उत्साहयुक्त प्रसन्नता उमड़ पड़ी थी।

और इससे वह उदास हो गया।

४०

तृतीय श्रेणी के लम्बे डिब्बे में, जो पूरे दिन धूप में तपा था, इतनी अधिक ऊष्मा थी कि नेखलूदोव से बैठा नहीं गया और वह उठकर पीछे लगे छोटे तख्ते पर जा खड़ा हुआ। यहाँ भी वायु स्वच्छ न मिल सकी, और जब गाड़ी मकानों को पार कर आगे निकल गई तब कहीं जाकर उस तख्ते पर स्वच्छ वायु का एक झोंका आया।

"हाँ, प्राण हर लिए।" अपनी बहिन से कहे हुए शब्दों को उसने मन-ही-मन दोहराया। उसके नेत्रों के सम्मुख अन्यान्य विचारों के होते हुए भी स्पष्ट रूप से मुस्क्यान-युक्त ओठों, भौंहों के गम्भीरभाव, नीले से रङ्ग की घुटी खोपड़ी की बगलों में छोटे दृढ़ कानों युक्त दूसरे बन्दी का चेहरा नाच उठा।

"और जो भयानक लगने वाली बात है वह यह है" उसने सोचा "उसकी हत्य तो कर दी गई किंतु कोई यह नहीं जान पाया कि हत्यारा है कौन? उसे अन्य बन्दियों की ही भाँति मेलिन्कोव की आज्ञा से लाया गया था। संभवतया मेलिन्कोव ने छपे कागज पर हस्ताक्षर कर स्वाभाविक रूप से आज्ञा प्रसारित कर दी और सम्भवतया है वह अपना दोष स्वीकार नहीं करेगा। उससे भी कम करेगा बन्दीगृह का डाक्टर जिसने कि बन्दियों की परीक्षा की थी। उसने अपना कर्तव्य पूर्णरूपेण निभा दिया तथा दुर्बलों को अलग छाँट दिया था। उसे

इस भीषण गर्मी का अथवा इस बात का पूर्वाभास कैसे हो सकता था कि इनको इतने विलम्ब से इस प्रकार भीड़भाड़ में ले जाया जाएगा ? बन्दीगृह का इंसपैक्टर ? किंतु इंसपैक्टर ने तो उस आज्ञा का पालन मात्र किया था कि अमुक दिन अमुक-अमुक निर्वासित एवं बन्दी स्त्री-पुरुष बाहर भेजे जाने हैं। पथ-रक्षक-अधिकारी को भी दोष नहीं दिया जा सकता क्योंकि उसका तो कार्य ही था अमुक स्थान से अपने बन्दी लेकर अमुक स्थान पर पहुँचाने का। वह उन्हें पहिले की प्रणाली के ही अनुसार लेकर चला था और उसे यह कल्पना भी नहीं हो सकती थी कि दो इतने स्वस्थ व्यक्ति, जिन्हें मैंने स्वयं देखा था, इस गर्मी को सहन नहीं कर पाएँगे और मृत्यु को प्राप्त हो जाएँगे। दोष किसी का भी नहीं है और फिर भी इन लोगों द्वारा, जिनके ऊपर उनकी हत्या का दोष नहीं है, दो व्यक्तियों के प्राण हर लिए गए।

"यह सब इसलिए होता है" नेखलूदोव ने विचार किया "कि ये सब गवर्नर, इन्सपैक्टर, पुलिस-अधिकारी तथा पुलिसमैन सोचते हैं कि ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं जबकि मानव का मानव से संबन्ध-विच्छेद हो जाना आवश्यक हो जाता है। यदि ये सब व्यक्ति—मेलेन्कोव, इन्सपैक्टर पथ-रक्षक अधिकारी, गवर्नर, इन्सपैक्टर, आदि नहीं होते तो इतनी गर्मी में इतने लोगों के समूह को भेजने से पूर्व बीस बार विचार करते...बीस बार मार्ग में रुके होते और किसी को दुर्बल होते अथवा हाँफते देखते तो उसे छाया में ले जाते, पानी पिलाते और आराम करने देते तथा यदि फिर भी कोई दुर्घटना हो जाती तो सहानुभूति प्रगट करते। इतना ही नहीं कि इन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया किंतु अन्य व्यक्तियों को भी ऐसा करने से रोक दिया क्योंकि इनको मनुष्यों का तथा उनके प्रति अपने कर्तव्यों का विचार नहीं था; विचार था तो केवल अपने कार्यालय के आदेशों को पूरा करने का, ये सब उस कार्यालय के प्रति मानवीय संबन्धों से भी अधिक कृतज्ञ थे। यह है सारी बात।" नेखलूदोव सोचता रहा "यदि हम केवल एक बार स्वीकार कर लेते हैं—चाहे वह एक घण्टे के लिए ही अथवा किसी विशेष मामले में—कि अपने साथियों से प्रेम के ऊपर भी कोई बात महत्त्वपूर्ण हो सकती है तब ऐसा कोई भी पाप शेष नहीं रह जाता जिसे कि हम स्वयं को निर्दोष समझकर सरलता से न कर सकें।"

अपने विचारों में नेखलूदोव इतना अधिक तल्लीन था कि उसे ऋतु-परिवर्तन का भी ज्ञान नहीं हुआ। नीचे बादल के एक छितरे ने सूर्य को आच्छन्न

कर लिया था तथा दूसरा हल्के सफेद रङ्ग का घना बादल तेजी से पश्चिम दिशा से बढ़ता आ रहा था। दूर कहीं जंगलों एवं खेतों में मूसलाधार वर्षा हो रही थी। मेघों की तरलता वायु में विलीन होती जा रही थी, कभी-२ तड़ित की कौंध से बादल फट जाते एवं उसकी गड़गड़ाहट रेलगाडी की खड़खड़ाहट से मिलकर एक साथ सुनाई पड़ती। वर्षा अधिकाधिक समीप आते-आते तख्ते तथा नेखलूदोव के कोट को भिगोने लगी। नेखलूदोव गाड़ी के तख्ते से दूसरी ओर हट गया। धान एवं उस भीगी पृथ्वी की उसाँस से परिपूर्ण ठंडी वायु में श्वास लेता नेखलूदोव खड़ा हुआ तेजी से निकलते हुए बाग-बगीचों, जंगलों, राई के पीले खेतों, ओट के हरे मैदानों, आलू के पौधों की गहरे हरे रङ्ग की पंक्तियों को देखता रहा जोकि दीर्घ काल से वर्षा की प्रतीक्षा कर रही थी। लगता हर वस्तु को वारनिश कर चमका दिया गया है: हरी अधिकाधिक हरी, पीली पीली एवं काली और भी काली हो गई थीं।

"और बरसो! और बरसो!" नेखलूदोव ने बाग-बगीचों एवं खेतों को देख प्रसन्न होकर कहा जिनमें कि इस कल्याणकर वर्षा से प्राणों का पुनः सचार हो उठा था।

तेज वर्षा अधिक देर तक नहीं रही। कुछ बादल बरस गए, कुछ उड़ गए फिर पृथ्वी के ऊपर अन्तिम सुन्दर बूंदें सीधी गिरती हुई दिखलाई देने लगी। सूर्य पुनः निकल आया, हर वस्तु चमकने लगी तथा पूर्व में क्षितिज के तनिक ऊपर, एक कोने पर टूटा हुआ इन्द्र-धनुष निकल आया था जिसका बैंगनी रङ्ग बिल्कुल स्पष्ट था।

"हाँ! मैं क्या सोच रहा था?" नेखलूदोव के मन में उस समय प्रश्न उठा जबकि प्रकृति के ये परिवर्तन समाप्त हो चुके और गाड़ी कटे हुए पहाड़ के अन्दर घुसी जिसके दोनों ओर ढालू चट्टानें दिखलाई दे रही थीं।

"ओह! मैं सोच रहा था कि ये सब लोग—इन्सपैक्टर, पथक-रक्षक आदि जो कि नौकरी में है—व्यक्तिशः सहृदय व्यक्ति है क्रूर तो केवल इसलिए है कि ये नौकरी कर रहे हैं।"

उसे स्मरण आया कि जब मैंने बन्दीगृह में होने वाले कार्य-व्यापार से मेलिन्कोव को अवगत कराया तो यह कितना क्रुद्ध हो उठा था, तथा इन्सपैक्टर एवं पथ-रक्षक-अधिकारी कितने क्रुद्ध एवं निर्दय हो उठे थे उन लोगों के प्रति जिन्होंने कि गाड़ियों में बैठने का स्थान माँगा था; इन लोगों ने इस बात पर भी कोई ध्यान नहीं दिया कि ट्रेन में एक स्त्री प्रसव-वेदना से पीड़ित है। इन सब

व्यक्तियों में दया की साधारण सी भावना भी इसलिए प्रवेश नहीं कर पाई थी कि इन सब को नौकरी की फिक्र थी। "अधिकारियों के नाते ये लोग मानवीय भावनाओं में उसी भाँति अगम्य हैं जिस भाँति कि पत्थरों से पटी यह भूमि वर्षा के लिए अभेद्य है।" नेखलूदोव ने उस कटान के उन रंग-बिरंगे पत्थरों की ओर देखते हुए विचार किया, जो कि पानी को मोख नहीं पा रहे थे किन्तु जिन पर होकर कि पानी धाराओं में बहकर नीचे चला जा रहा था। किंचित भूमि को पत्थरों से पाटना आवश्यक हो सकता है किंतु हरियाली-विहीन पृथ्वी को देखना भी दुख की बात होगी जबकि यह धान, घास, झाड़ियाँ, अथवा वृक्ष उसी भाँति उत्पन्न कर सकती है जिस भाँति कि इस पहाड़ी के ऊपर उग रहे हैं।

"और ऐसा ही मनुष्यों के भी साथ है।" नेखलूदोव ने सोचा "किंचित गवर्नरों, इन्सपैक्टरों, पुलिसमैनों की आवश्यकता हो; किंतु यदि मानवता का प्रमुख लक्षण, एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सहानुभूति, ही अदृश्य हो जाय तो बहुत भयंकर बात होगी।"

"बात यह है" वह सोचता रहा "कि ये लोग कानून उसे मानते हैं जो कि कानून नहीं है; ये भगवान द्वारा प्रत्येक मानव के अंतरङ्ग में लिखे हुए अचल स्वर्गिक अभिस्ताव को कानून के रूप में स्वीकार नहीं करते। इसीलिए इन लोगों के बीच आने पर मुझे इनसे इतनी अरुचि होती है। मैं केवल इन्हीं से भय खाता हूँ। वास्तव में ये लोग अत्यन्त भयंकर हैं, लुटेरों से भी कहीं भयंकर। लुटेरे के हृदय में दया का प्रादुर्भाव हो सकता है किंतु इनके हृदय में नहीं; ये लोग करुणा के विरुद्ध इतने ही अभ्यस्त हैं जितने कि हरियाली के प्रति ये पाषाण। यही कारण है कि ये लोग इतने भयंकर हैं। कहा जाता है कि पुगाचोव और राझीन* दल के लोग भयंकर हैं। किंतु वास्तव में सहस्रों गुने भयंकर तो ये लोग हैं।" वह अपने विचारों में बहता रहा।

"यदि इस काल के व्यक्तियों—क्रिश्चियन, मानवीय, सहृदय व्यक्तियों के सामने योग्य बनाने के साधनों की मनोवैज्ञानिक समस्या रखी जाय कि वे किस भाँति स्वयं को निर्दोष समझते हुए भयानक अपराध करते हैं तो एक ही हल निकलेगा कि जैसा अब हो रहा है उसी अभ्यास को स्थिर रहने दिया जाय। यह है मात्र आवश्यकता। ये गवर्नर, इन्सपैक्टर, पुलिसमैन रहने ही चाहिए; इन लोगों को इस बात से पूर्णतया प्रभावित किया जाय कि सरकारी नौकरी

---

*रूस के किसानों में जागृति उत्पन्न करने वाले नेता। राझीन सत्रहवीं तथा पुगाचोव अट्ठारहवीं सदी में हुआ था।

नाम का एक ऐसा व्यवसाय है जो कि मानव को मानव से बंधुत्वपूर्ण सम्बन्धों की उपेक्षा कर व्यवहार करने की आज्ञा प्रदान करता है; तथा कहता है कि इस सरकारी नौकरी से सब इस भाँति एक-दूसरे से सम्बन्धित हो जाँय कि उनके कार्यों के परिणामों का दायित्व किसी एक पर आकर नहीं पड़े। जितना भयानक कांड मैंने स्वयं देखा है! ऐसे कांड इन अवस्थाओं के अभाव में असंभव हो जाएँगे। यह सब इसलिए है कि मनुष्य सोचता है, कुछ परिस्थितियों में व्यक्ति, व्यक्ति से बिना प्रेम के भी व्यवहार कर सकता है। किंतु ऐसी परिस्थितियाँ नहीं होतीं। हम वस्तुओं से प्रेम के बिना व्यवहार कर सकते हैं—हम वृक्षों को काट डालते हैं, ईंटें बनाते हैं, लोहे को बिना प्रेम के हथौड़े से ठोकते हैं—किंतु मानव के साथ ऐसा नहीं कर सकते, जिस भाँति कि मक्खियों के साथ कोई सावधानी बरते बिना नहीं रह सकता। यदि कोई उनसे सावधानी नहीं बरतता तो उन्हें हानि पहुँचाएगा और स्वयं भी हानि उठाएगा। और यही बात मानव के साथ है। इसमें कोई चारा नहीं क्योंकि आपसी प्रेम ही मानवीय जीवन का मूलभूत आधार है। यह सत्य है कि मनुष्य किसी को इसके लिए बाध्य नहीं कर सकता कि तू मुझसे प्रेम कर, जिस भाँति कि वह किसी को भी काम करने के लिए बाध्य कर सकता है किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य प्रेम के बिना किसी मानव से व्यवहार कर सकता है विशेषतया जबकि कोई व्यक्ति उससे कुछ अपेक्षा करता है। यदि तुम्हें प्रेम की अनुभूति नहीं होती तो चुपचाप बैठ जाओ।" नेखलूदोव ने सोचा "अपने चारों ओर वस्तुएँ एकत्रित कर लो, अपने में व्यस्त हो जाओ, इच्छा आए जिस वस्तु को ले लो, बस केवल मानव को छोड़ कर। जिस भाँति भूख लगने पर तुम स्वयं को हानि पहुँचाए बिना भोजन कर सकते हो उसी भाँति तुम केवल उसी अवस्था में लाभप्रद ढंग में हानि पहुँचाए बिना, मानव के साथ व्यवहार कर सकते हो जब कि तुम :उसे प्रेम करते हो। किसी भी व्यक्ति से बिना प्रेम के व्यवहार करने की स्वतन्त्रता ले लो, जैसे कि कल मैंने अपने बहिनोई के साथ ली थी, तो फिर वह पाशविकता एवं क्रूरता अनन्त हो जाएगी जोकि तुम अन्य व्यक्तियों पर प्रदर्शित करोगे, जैसी कि मैंने आज देखी थी, और तुम्हारे लिए भी अनन्त दुख उत्पन्न हो जाएँगे जिसका उदाहरण है मेरा समस्त जीवन। हाँ! हाँ! यही बात है।" नेखलूदोव ने विचार किया—"यह सत्य है। हाँ! यह सत्य है।" नेखलूदोव ने पुनः मन-ही-मन कहा। भयानक ग्रीष्म के पश्चात् उसे कुछ स्वस्थता प्राप्त हुई तथा उसे ज्ञात हुआ कि इतने समय से उठी हुई समस्या का मुझे बिल्कुल स्पष्ट समाधान मिल गया है।

जिस डिब्बे में नेखलूदोव बैठा था वह आधा भरा हुआ था। उसमें नौकर, कारखानों मे काम करने वाले, रसोइए, कसाई, यहूदी, व्यापारी, मजदूरों की स्त्रियाँ, एक सिपाही, दो महिलाएँ (एक नवयुवती तथा नंगे हाथों में बाजूबंद पहिले एक वृद्धा) एवं कठोर आकृति का एक पुरुष बैठा था जो कि अपनी काली टोपी में फीते की एक गाँठ लगाए हुए था।

उनके बैठने-बाठने का कोलाहल बहुत पहिले ही शाँत हो चुका था, अब वे सब चुपचाप बैठे हुए थे; कुछ लोग बीजों को छील तथा खा रहे थे, कुछ सिगरेट पी रहे थे तथा कुछ बातचीतें कर रहे थे।

तारास संकुचित मार्ग के दाहिनी ओर बैठा हुआ बडा प्रसन्न दिखलाई दे रहा था तथा नेखलूदोव के लिए स्थान खाली रखे हुए अपने सामने वाले हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति से, जो सूती कोट पहिने हुए बैठा था, बड़े उत्साह से बातें कर रहा था। नेखलूदोव को बाद में मालूम हुआ कि यह व्यक्ति माली था जो कि किसी नए स्थान पर जा रहा था। तारास के पास जाने से पूर्व नेखलूदोव नानकीन का कोट पहिने हुए पादरी-से लगने वाले एक वृद्ध के पास रुक गया जो कि किसानी वस्त्र पहिने एक युवती से बातें कर रहा था। स्त्री की बगल में एक छोटी सात-वर्षीया कन्या बैठी थी जो निरन्तर बीजों को छील रही थी। वह भी नया किसानू लिवास पहिने हुए थी एवं उसके अत्यन्त सुन्दर केशों के ऊपर रूमाल बँधा हुआ था।

नेखलूदोव की ओर मुडकर वृद्ध ने देखा और अपने कोट को चमकदार सीट से समेटते हुए उसके लिए स्थान रिक्त कर मैत्रीपूर्ण स्वर में बोला :

"श्रीमान् जी ! यहाँ बैठने का स्थान है।"

नेखलूदोव ने उसे धन्यवाद दिया और वहाँ बैठ गया। उसके बैठते ही स्त्री ने अपनी बात पुनः आरम्भ कर दी।

वह अपने गाँव वापिस जा रही थी और बतला रही थी कि मेरे पति ने, जिससे मैं मिलने गई थी, किस भाँति नगर में मेरा स्वागत किया।

"कार्नीवाल में मैं गई थी और अब भगवान की कृपा से मैं वहाँ दुबारा

गई।" वह बोली "और यदि भगवान चाहेगा तो बड़े दिनों में मैं वहाँ फिर जाऊँगी।"

"ठीक है।" वृद्ध ने नेखलूदोव की ओर देखकर कहा "यह सबसे अच्छा मार्ग है कि वहीं जाकर नगर में उससे मिल लिया जाय अन्यथा नगर में रहते हुए व्यक्ति भ्रष्ट मार्ग पर पड़ सकता है।"

"आह ! नहीं श्रीमान्, मेरा पति ऐसा नहीं है। उसके विषय में कोई भी गलत बात नहीं सुनी गई—उसका जीवन तो कुमारियों की भाँति रहा है। जितना भी धन वह कमाता है पाई-पाई मेरे पास भेज देता है। और इस लड़की को देखकर तो वह इतना प्रसन्न हुआ कि शब्द नहीं मिलते।" कहकर स्त्री मुस्कुरा दी।

बीजों को छीलती तथा छिलकों को थूकती हुई बैठी लड़की अपनी माँ की बातों को सुनती हुई चुपचाप एवं गंभीरता से नेखलूदोव तथा वृद्ध की ओर देख रही थी मानो कि वह उन बातों की पुष्टि कर रही हो।

"खैर, यदि वह इतना समझदार है तो यह और भी अच्छी बात है।" वृद्ध बोला। "उस प्रकार की कोई बात नहीं है ?" पुनः कहकर उसने एक फैक्टरी में काम करने वाले एक युग्म की ओर देखा जो कि डिब्बे के दूसरे सिरे पर बैठा था।

पति अपना सिर पीछे किए अपने गले में वोदका की बोतल उंड़ेल रहा था तथा पत्नी उस थैले को पकड़े, जिसमें से उन्होंने बोतल निकाली थी, उसकी ओर ललचाई दृष्टि से देखती हुई बैठी थी।

"नहीं, मेरा पति न तो सिगरेट ही पीता है और न मदिरा ही।" वृद्ध के पास बैठी हुई स्त्री इस समय अपने पति की प्रशंसा का एक और अवसर पाकर प्रसन्न हो बोली, "नहीं श्रीमान्, संसार में उसकी भाँति के पुरुष बहुत कम हैं।" और नेखलूदोव की ओर मुँह कर उसने कहा "इस प्रकार का व्यक्ति है वह।"

"इससे अधिक सुन्दर क्या हो सकता है ?" वृद्ध ने कारखाने के मजदूर की ओर देखते हुए कहा।

पति ने वोदका पीली और बोतल अपनी पत्नी को दे दी। वह हँसी, सिर हिलाया तथा फिर उसने भी बोतल को मुँह से लगा लिया। नेखलूदोव तथा वृद्ध को अपनी ओर देखते पाकर मजदूर ने नेखलूदोव से कहा :

"यह क्या बात है श्रीमान् ? क्योंकि हम लोग पी रहे हैं ? आह ! यह

कोई नहीं देखता कि हम लोग कार्य कितना करते हैं। मैंने इतने पैसे कमाए है कि इसे पी रहा हूँ, अपनी पत्नी को पिला रहा हूँ और बस यही बात है।"

"हाँ ! हाँ !" नेखलूदोव नहीं समझ पाया कि इसके अतिरिक्त वह कहे तो क्या कहे।

"सच बात है, श्रीमान् ! मेरी पत्नी बड़ी परिश्रमी है। मैं अपनी पत्नी से संतुष्ट हूँ क्योंकि यह मेरी देखभाल करती है। मावरा, क्या मैं सही कह रहा हूँ ?"

"यही बात है, यह लो, मुझे और अधिक नहीं चाहिए।" पत्नी ने उसे बोतल लौटाते हुए कहा "और तुम यह क्या गाली-गलौज कर रहे हो ?" उसने पुनः कहा।

"देखा न ! कितनी अच्छी है, कितनी भली ! और अब यह एकाएक उस पहिए की भाँति चीखने लगेगी जिसमें कि तेल की कमी होती है। मावरा ! क्या मैं ठीक नहीं कह रहा ?"

मावरा हँस पड़ी तथा शराबी की भाँति उसने अपना हाथ हिलाया।

"हे मेरे..., यह फिर उस पर आ गया।"

"देखा न ! कितनी अच्छी है, कितनी अच्छी; किंतु लगाम से बस इसे पूँछ निकाल लेने दीजिए फिर आप नहीं बतला सकते कि इसको क्या हो गया है। क्या जो मैं कह रहा हूँ सही है ? क्षमा कीजिएगा श्रीमान्, मैंने थोड़ी-सी पी ली है ! किया क्या जाय ?" मजदूर बोला और सोने की तैयारी में उसने मुस्कुराती हुई पत्नी की गोद में अपना सिर रख लिया।

थोड़ी देर तक नेखलूदोव वृद्ध के पास बैठा रहा जो कि उसे अपने विषय में सब कुछ बतलाता रहा। वृद्ध था भट्टी बनाने वाला, जो तिरेपन वर्षों से यह कार्य कर रहा था। उसने इतनी भट्टियाँ बनाई थीं कि उसे उनकी गिनती भी स्मरण नहीं थी। अब वह आराम करना चाहता था किंतु आराम को समय ही नहीं मिल पाता। नगर में अपने बच्चों के लिए काम से लगाने वह गया था और अब लोगों से मिलने के लिए गाँव वापिस जा रहा था। उसकी कथा सुनकर नेखलूदोव उठा और तारास द्वारा सुरक्षित रखे हुए स्थान पर बैठ गया।

"ठीक है श्रीमान् जी, विराजिए, विराजिए। हम इस बोरे को यहाँ रख लेंगे।" तारास के सामने बैठे हुए माली ने नेखलूदोव के मुख की ओर देखते हुए मैत्रीपूर्ण स्वर में कहा।

"स्थान तङ्ग तो अवश्य है किंतु कोई बात नहीं क्योंकि हम लोग तो मित्र हैं।" तारास ने मुस्कुराते हुए कहा। तथा पाँच स्टोन से ऊपर के भार के बोरे को, इस भाँति उठाते हुए मानो कि वह पङ्ख हों, खिड़की के दूसरी ओर ले गया।

"स्थान ही स्थान है; इसके अतिरिक्त लोग खड़े भी रह सकते हैं अथवा सीटों के नीचे भी बैठ सकते हैं। हम लोग पूर्ण सुविधा में है। झगड़ा करने की कोई आवश्यकता नहीं।" उसने मैत्रीपूर्ण एवं दयापूर्ण मुस्क्यान से कहा।

अपने विषय में तारास कहा करता था कि मैं जब तक पी नहीं लूं बातें नहीं कर सकता; वह कहता था कि मदिरा मुझे सही शब्द प्राप्त करने में सहायता देती है, तब मैं सब कुछ कह सकता हूँ। और वास्तव में जब तक वह गम्भीर रहता तारास चुप रहता; किंतु जब उसे पीने को मिल जाती, जो यदा-कदा विशेष अवसरों पर ही होता था, तब वह बड़े आनन्द में बातें ही बातें करता जाता। तब वह बहुत बोलता, ढंग से बोलता तथा बड़ी सादगी एवं सत्यता से तथा विशेषतया बड़ी दया से बोलता जो कि उसके ओठों तथा उसके मृदुल नीले नेत्रों से कभी न विलग होने वाली मैत्रीपूर्ण मुस्क्यान में स्पष्ट चमकती रहती।

आज वह ऐसी ही अवस्था में था। नेखलूदोव के आने से उसके वार्तालाप में भंग पड़ गया था, किंतु जब तारास ने बोरा उठाकर रख दिया और वह फिर बैठ गया तब उसने अपने बलिष्ठ हाथों को गोद में रखकर एवं माली की ओर सीधे देखते हुए अपनी कथा पुनः आरम्भ कर दी। वह अपने नए मित्र को अपनी पत्नी के विषय में सविस्तार बतला रहा था कि क्यों तो वह साइबेरिया निर्वासित कर दी गई है और क्यों मैं उसके साथ जा रहा हूँ।

नेखलूदोव ने इस कथा को कभी सविस्तार नहीं सुना था इसलिए सुनने में उसे रुचि उत्पन्न हो गई। जब वह वहाँ आकर बैठा तब तक तारास की कथा वहाँ तक पहुँच चुकी थी जब कि उसे विष दिया जा चुका था और कुटुम्ब के लोगों को ज्ञात हो चुका था कि विष फेदोशिया ने दिया है।

"मैं अपनी परेशानियों को कह रहा हूँ।" तारास ने नेखलूदोव से विनम्र मैत्रीपूर्ण ढंग से कहा "मुझे भाग्य से इतने सहृदय सज्जन मिल गए और हम लोगों की वार्ता प्रारम्भ हो गई तथा मैं इन्हें सब कुछ बतला रहा हूँ।"

"अच्छा !" नेखलूदोव बोला।

"इस प्रकार, मेरे मित्र, रहस्य खुल गया। माँ ने रोटी ले ली। 'मैं थाने जाती

हूँ' वह बोली । मेरे पिता वृद्ध हैं । वे बोले 'रुको तो । यह तो वेचारी निरी बच्ची ही है तथा स्वयं नहीं जानती कि मैं कर क्या रही हूँ। हमें इस पर दया करनी चाहिए । इसकी बुद्धि ठिकाने आ सकती है ।' किंतु मेरे प्रिय मित्र, माँ ने एक न मानी । वह बोली 'यदि हम इसे यहाँ रखेगे तो हम सबको यह कनखजूरे की भाँति खा जायगी ।' अस्तु मित्र ! वह पुलिस अधिकारी के पास चली गई । वह तुरन्त हम पर टूट पड़ा, और लगा गवाह माँगने ।"

"अच्छा और आप ?" माली ने पूछा ।

"और मैं ! मैं तो, भाई साहब, पेट की पीड़ा से तड़प रहा था तथा उल्टियाँ कर रहा था। सारी अंतड़ियाँ मुह को आ गई थीं । मुझसे तो बोला भी नहीं जाता था ! तो पिता जी उठे, घोड़ी कसी, फेदोशिया को घोड़ी पर विठलाया तथा थाने में गए, फिर वहाँ से मजिस्ट्रेट के पास चल दिए । और फेदोशिया ने, आप समझिए, आरम्भ से अंत तक जैसा उसने किया था सब मजिस्ट्रेट के सम्मुख बतला दिया कि कहाँ से संखिया मिला और किस भाँति उसने उसे रोटी में मिलाया। मजिस्ट्रेट ने पूछा 'तुमने यह किया क्यों ?' वह बोली 'क्यों ? क्योंकि मुझे उससे घृणा है । मुझे उसके साथ जीवन बिताने की अपेक्षा साईबेरिया में रहना अधिक पसन्द है ।' वही मैं हूँ ।" और तारास मुस्कराया ।

"खैर ! उसने सब स्वीकार कर लिया। तब स्वाभाविकतया बंदीगृह ही था तथा पिताजी अकेले ही घर लौट आए। फसल काटने का समय समीप आ रहा था, घर पर माँ ही अकेली स्त्री थी, और वह थक भी चुकी थी । इस लिए हमने सोचा कि करना हमें ही पड़ेगा । क्या हम उसे जमानत पर नहीं छुड़ा सकते ? इसलिए पिताजी गए और एक अधिकारी से मिले। वह बोला 'नहीं, चले जाओ ।' तब दूसरे के पास गए । मेरे विचार से वह पाँच अधिकारियों के पास जा चुके थे । हमने सोचा, नहीं होता है तो छोड़ो । तब हमें एक लिपिक मिल गया—इतना बुद्धिमान दूसरा नहीं मिलेगा । वह बोला "मुझे पाँच रूबल दो तो मैं उसे छुड़ा लाऊँगा ।' तीन पर वह सहमत हो गया। अच्छा तो क्या सोचते हैं आप ? मैं गया और उसके ही द्वारा बुना हुआ शाल मैंने गिरवी रखा, तब कहीं उसे रुपये दिए। इधर उसने कागज लिखा" तारास ने एक साँस ली मानो वह कोई गहरी बात कहने जा रहा हो 'उधर वह आ गई । तब तक मेरी तबियत ठीक हो चुकी थी । मैं स्वयं उसे लिवाने गया ।"

"तो मित्र ! मैं नगर गया, घोड़ी बांधी, कागज लिया और बन्दीगृह में

गया। 'तुम्हें क्या चाहिए ?' 'यह चाहिए।' मैंने कहा 'यहाँ, आपके यहाँ बन्दीगृह में मेरी पत्नी है।' मैंने उसे कागज दे दिया। उसने उस पर एक दृष्टि फेंकी। 'ठहरो' वह बोला। इसलिए मैं एक बेंच पर बैठ गया। सूरज ढल चुका था। एक अधिकारी बाहर आया। 'क्या तुम्हारा ही नाम बिरयूकोव है ?' 'हाँ, मेरा ही है।' 'अच्छा तो इसे लिवा ले जाओ।' द्वार खुले और उन्होंने उसके अपने ही कपड़ों में उसे बाहर निकाला। 'अच्छा चलो।' 'तुम पैदल तो आए नहीं होगे ?' 'नहीं, मैं घोड़ी पर आया हूँ।' अतः मैं गया और सईस को रुपए दिए तथा घोड़ी कसी, बची-खुची घास अन्दर डाली, उस पर बोरियाँ पटक कर उसके बैठने के लिए ठीक किया। अपना शाल ओढ़ कर वह अन्दर घुसी और हमने गाड़ी हाँक दी। न वह बोली, न मैं। जब हम लोग घर के पास आए तब वह बोली 'और माँ की तबियत कैसी है, क्या वह जिन्दा है ?' 'हाँ वह जिन्दा है।' 'और पिताजी ? क्या वह भी जिन्दा हैं ?' 'हाँ वह भी हैं।' 'ताराम मुझे क्षमा करना।' वह बोली 'मुझे स्वयं नहीं मालूम था कि मैं क्या कर गई।' इसलिए मैं बोला 'शब्दों से मामला नहीं सुधर सकता, मैंने तो तुम्हें बहुत पहिले से क्षमा कर दिया।' आगे वह कुछ नहीं बोली। हम लोग घर पहुंचे और वह माँ के पाँवों पर गिर पड़ी। माँ बोली 'भगवान तुझे क्षमा करेंगे।' और पिताजी बोले 'कहो मजे में तो हो ? जो हो गया सो हो गया। जितनी भली प्रकार रह सको रहो। अब उस सबके लिए समय नहीं है। फसल कटने का समय है।' फिर वे बोले, 'खाद दी हुई एकड़ों जमीन पर भगवान की कृपा से राई की इतनी फसल हुई है कि हँसिए से नहीं कट सकती। यह सब उलझी तथा लदी पड़ी है, और धरती उसके वजन से दबी पड़ी है; इसे काट देना चाहिए। तुम और ताराम कल जाकर उसे देख लेना।' तो मित्र ! उसने उस दिन से काम प्रारम्भ किया और ऐसा किया कि प्रत्येक आश्चर्य करने लगा। हमने तीन डेस्टाइन भूमि किराए पर ली और भगवान की दया से ओट और राई की खूब फसल हुई। मैं हँसिए से घास काटता था और वह पहिए में गडारी बांधती थी और कभी-कभी हम दोनों ही फसल काटते थे। मैं खूब काम करता हूँ और इससे मुझे डर नहीं लगता। किंतु वह मुझसे भी बाजी मार ले गई, चाहे जिस काम को ले लो। वह बहुत चुस्त, जवान और जीवन से भरी स्त्री है। और जहां तक काम की बात है वह इतनी उत्सुक रहती थी, मित्र, मुझे उसे रोकना पड़ता था। हम घर लौटते, हमारी उँगलियाँ सूज जातीं, बाहें दर्द करतीं और वह आराम करने के बजाय खलिहान भाग जाती और अगले दिन के लिए पहिए में की गडारी बाँधती।

कितनी बदल गई थी वह !"

"अच्छा ! और क्या तुम्हारे प्रति भी वह नरम पड़ी ?" माली ने पूछा।

"यह तो निश्चित था। वह मेरे पीछे ऐसे भागती मानो दो प्राण एक देह हों। जो भी मैं सोचता वह समझ जाती। माँ भी, जो उससे क्रुद्ध थी, कहे बिना नहीं रही 'ऐसा लगता है मानो हमारी फेदोशिया बदल गई है; यह तो अब बिल्कुल बदल गई है।' एक बार हम दो गाड़ियों को ले जा रहे थे। वह और मैं पहिली में थे। मैं बोला 'फेदोशिया, तुम्हें जहर देने की सूझी क्या ?' और वह बोली 'मुझे क्या सूझी ? ऐसे सूझी, मैं तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती थी। मैंने सोचा तुम्हारे साथ रहने की बजाय मुझे मर जाना चाहिए !' मैं बोला 'और अब ?' और वह बोली 'अब तुम मेरे हृदय में बस गए हो।" तारास रुका और प्रसन्नता से मुस्कुराया तथा उसने अपना सिर हिलाया मानो उसे आश्चर्य हुआ हो "मुश्किल से हम फसल को काट कर घर लाए होंगे, मैं चारा भिगोने गया, और जब मैं घर पहुँचा"—वह क्षण भर के लिए रुका—"एक सम्मन आया, उसको मुकदमे में पेश होना है। और सोचो, हम तो यह भूलभाल ही गए थे कि उस पर मुकदमा चलना है।"

"यह सब शैतान ने किया होगा।" माली बोला "क्या कोई आदमी स्वयं किसी जीवित आत्मा को नष्ट करने का विचार कर सकता है ? हमारा एक साथी था..." माली अपनी कथा प्रारम्भ करने वाला ही था कि गाड़ी की गति धीमी पड़ने लगी।

"लगता है कि कोई स्टेशन आ रहा है।" वह बोला "मैं उतर कर पीने जाऊँगा।"

वार्तालाप रुक गया और माली के पीछे-पीछे नेखलूदोव भी डिब्बे से निकल कर स्टेशन के भीगे प्लेटफार्म पर पहुँचा।

४२

उतरने से पूर्व नेखलूदोव ने स्टेशन यार्ड में कुछ शानदार बग्घियाँ देखीं। उनमें से कितनों में ही तीन, कुछेकों में चार खूब खाए पीए घोड़े जुते हुए थे तथा उनकी गर्दन में घंटियाँ बज रही थीं। जब वह अँधेरे भीगे प्लेटफार्म पर उतरा तो उसने देखा कि प्रथम श्रेणी के एक डिब्बे के सामने कितने ही व्यक्ति खड़े थे

जिनमें थी: उत्कृष्ट वाटर प्रूफ पहिने एक हृष्ट-पुष्ट महिला जिसके टोप में कीमती पर लगे हुए थे तथा पतली टाँगों वाले साइकिल सूट पहिने एक सज्जन ! युवक की बगल में था एक बड़ा, खूब तन्दुरुस्त कुत्ता जिसके गले में बहुमूल्य कॉलर पड़ा था। उनके पीछे खड़ा था रस्से तथा छाते पकड़े एक वर्दीधारी नौकर तथा एक कोचवान—जो कि गाड़ी पर मिलने आए थे।

मोटी महिला से लगाकर कोचवान तक, जो कि लम्बा कोट पहने खड़ा था, सारे समूह पर धन तथा पूर्ण आत्मविश्वास की मुहर लगी हुई थी। इस समूह के चारों ओर जिज्ञासुओं एवं चापलूसों की भीड़ तुरन्त ही एकत्रित हो गई—लाल टोपी लगाए स्टेशन मास्टर, एक सिपाही, रूसी सज्जा में गर्दन में माला पहिने एक पतली दुबली महिला (जिसने कि सारी गर्मी भर स्टेशन पर ठहरने वाली गाड़ियाँ देखने का निश्चय कर लिया था), एक तार-बाबू तथा स्त्री-पुरुष यात्रीगण।

कुत्ते को लिए खड़े नवयुवक में नेखलूदोव को कोरचागिन की झलक मिली, वही जो जिमनेजियम का विद्यार्थी था। मोटी महिला प्रिन्सेज की वही बहिन थी जिसकी जमींदारी में कोरचागिन परिवार जा रहा था। सुनहरी डोरी तथा पालिशदार जूते पहिने चीफ गार्ड ने रेल के डिब्बे का द्वार खोला और आदर प्रदर्शित करने के लिए उसे तब तक पकड़े खड़ा रहा जब तक कि फिलिप तथा एक सफेद ऐप्रन पहिने पोर्टर ने लम्बी मुँह वाली प्रिन्सेज को उसकी फोल्डिंग कुर्सी सहित उतार न लिया। बहिनों ने एक दूसरे को अभिवादन किया फिर उनमें फ्राँसीसी भाषा में बातें उड़ने लगीं। प्रिन्सेज बन्द गाड़ी में जाएँगी या खुली में ? अन्त में जुलूस बाहर की ओर चल दिया तथा महिला की नौकरानी घुघराली झालरों, छातों तथा चमड़े की पेटी के साथ उसके पीछे-पीछे चल दी।

नेखलूदोव उनके सामने इसलिए नहीं पड़ना चाहता था कि फिर विदा लेनी पड़ेगी अतः वह यह प्रतीक्षा करता हुआ द्वार पर ही रुक गया कि जुलूस निकल जाय।

प्रिन्सेज, उसका लड़का मिस्सी, डाक्टर तथा नौकरानी पहिले निकले तथा फिर निकले वृद्ध प्रिन्स तथा उनकी साली। नेखलूदोव इतना पीछे था कि फ्राँसीसी भाषा में कहे हुए कुछ वाक्यों के अतिरिक्त उसे कुछ भी सुनाई न दे सका। जैसा कि साधारणतया हुआ ही करता है प्रिन्स का कहा हुआ एक वाक्य न जाने किस कारण नेखलूदोव. के मस्तिष्क में उसकी अभिव्यक्ति के समस्त

स्वरों तथा ढंग से जम गया।

"ग्रोह! वह सर्वश्रेष्ठ समाज में रहने वाला है, सर्वश्रेष्ठ समाज में रहने वाला है, सर्वश्रेष्ठ समाज में।" प्रिंस ने किसी के विषय में उच्च एवं ग्रात्मविश्वस्त स्वर में उस समय कहा जब कि गार्ड एवं पोर्टरों से घिरा हुग्रा वह ग्रपनी साली के साथ स्टेशन से बाहर निकला।

इसी समय एकाएक स्टेशन के कोने से फटे जूते पहिने मजदूरों की भीड़ उमड पड़ी। वे लोग भेड़ की खालों के ग्रपने कोट तथा बोरे कन्धों पर लाद कर ला रहे थे। मजदूर सबसे पास वाले डिब्बे की ग्रोर हल्की किंतु दृढ चाल से गए ग्रौर उसमें चढ़ने लगे किन्तु गार्ड ने उनको तुरन्त ही वहाँ से भगा दिया। वे रुके नहीं, भागते टकराते दूसरे डिब्बे में चढ़ने लगे कि गार्ड ने दूर से ही देख उन्हें डाँट मारी। वे फिर उसी हल्की किंतु दृढ़ चाल मे ग्रगले डिब्बे की ग्रोर बढे जिसमें कि नेखलूदोव बैठा हुग्रा था। एक गार्ड उन्हें फिर रोकने जा रहा था कि नेखलूदोव ने उससे कहा कि डिब्बे में ग्रन्दर स्थान बहुत है ग्रौर उन्हें ग्रन्दर जाने दीजिए। मजदूर ग्रन्दर चल दिए, उनके पीछे-पीछे नेखलूदोव भी चढ़ गया। जब वे बैठने लगे तो फीते लगी टोपी पहिने सज्जन तथा दो महिलाग्रों ने इस बात को ग्रपना व्यक्तिगत ग्रपमान समझा ग्रौर क्रुद्ध होकर उन्हे बाहर निकालने की बातें करने लगे। मजदूर जो कि युवक वृद्ध मिलाकर लगभग बीस के रहे होंगे तथा जिनकी थकी, धूप से तपी एवं रुक्ष ग्राकृतियाँ थी, डिब्बे में सीटों को लपकने लगे तथा ग्रपने बोरों को सीटों, दीवालों, द्वारों—जहाँ भी स्थान मिला, रखने लगे। उनको लग रहा था कि गल्ती उनकी ही है। वे दुनियाँ के किसी भी छोर पर जाने को सन्निद्ध थे, कहीं भी बैठने को—नुकीले काँटों पर भी।

"ग्ररे ढोरो! वहाँ कहाँ धँस रहे हो? यहीं बैठ जाग्रो।" एक गार्ड उन पर चिल्लाया।

"यह नई बात है।" छोटी महिला ने नेखलूदोव का ध्यान ग्रपनी ग्रोर ग्राकर्षित करने के लिए ग्रच्छी फ्राँसीसी भाषा प्रयोग की।

बाजूबन्द वाली महिला नाक-भौं सकोड़ती तथा मुंह बनाती रही ग्रौर उसने गंध-युक्त किसानों के साथ बैठने पर कुछ व्यंग कसा।

मजदूरों ने उन मनुष्यों की भाँति ग्रानन्द एवं शान्ति ग्रनुभव करते हुए, जो कि किसी भय से बच निकले हों, ग्रपने भारी बोरे उठाए ग्रौर उन्हें सीटों के नीचे घुसेड़ने लगे।

माली, जो कि तारास से बातें करने के लिए अपना स्थान छोड़कर चला गया था, अपने स्थान पर वापिस चला आया इसलिए दो स्थान तो तारास के सामने तथा एक उसकी बगल में रिक्त हो गया। तीन मजदूर वहाँ बैठ गए, किंतु जब अच्छे वस्त्रों को पहिने नेखलूदोव वहाँ आया तो वे इतने भ्रम में पड़ गए कि स्थान छोड़कर उठ खड़े हुए; किंतु उन्हें वहीं बैठने को कह नेखलूदोव स्वयं संकुचित मार्ग के पास वाली सीट के हत्थे पर जा बैठा।

लगभग पचास वर्षीय एक मजदूर ने अपने कम वय वाले एक साथी की ओर भय एवं आश्चर्य से देखा। गाली-गलौज करने अथवा उन्हें अपनी सीट से भगाने की अपेक्षा नेखलूदोव ने भले आदमियों का स्वाभाविक कार्य कर उन्हें अपने स्थान पर बैठने दिया। इस बात से वे चक्कर में पड़ गए तथा आश्चर्यान्वित हो गए थे। उन्हें भय भी था कि कहीं इसका कोई बुरा परिणाम न निकले।

कुछ भी सही, जब उन्होंने देखा कि नेखलूदोव तारास से बड़े सरल ढंग से बातें कर रहा है तो उन्हें आश्वासन हो गया कि दाल में कुछ भी काला नहीं है। थोड़ी देर बाद उन्होंने एक लड़के से अपने बोरे पर बैठने के लिए कहा और नेखलूदोव से अपनी सीट पर बैठने का आग्रह किया। पहिले तो एक वृद्ध मजदूर ने, जो कि नेखलूदोव के सामने बैठा था, अपनी टाँगें इस भय से सिकोड़ ली थीं कि कहीं इन सज्जन से छू न जाँय। किंतु थोड़ी ही देर में वह बिल्कुल मैत्रीपूर्ण ढंग में आ गया और नेखलूदोव तथा तारास से बातें करता हुआ नेखलूदोव के घुटनों को भी हिला बैठा क्योंकि वह अपनी बात पर नेखलूदोव का ध्यान आकर्षित करना चाहता था।

उसने उनसे अपनी सब बातें कहीं, लकड़ियों के दलदल में किए हुए अपने कार्य भी बतला दिए जहाँ से कि अब वह अपने घर को लौट रहा था। वह वहाँ ढाई महीने से काम कर रहा था तथा अपनी आय लेकर जा रहा था जो कि केवल दस रूबल थी क्योंकि कुछ रुपये तो उसे नौकरी से पूर्व ही एडवान्स में मिल गए थे। उसने बतलाया कि हम लोग किस भाँति सूर्योदय से सूर्यास्त तक घुटनों तक पानी में कार्य करते थे जब कि हमें भोजन के लिए दो घण्टों का अवकाश मिलता था।

"यह तो सच है कि जो उस काम के अभ्यस्त नहीं हैं उन्हें वह कठिन लगता है।" वह बोला "किंतु जब उसका अभ्यस्त हो जाता है तब कोई बात नहीं, केवल भोजन अच्छा मिलना चाहिए। पहिले भोजन अच्छा नहीं मिलता था।

जब लोगों ने शिकायत की तो खाना अच्छा मिलने लगा, तब काम सरल हो गया।"

तब उसने बतलाया मुझे अट्ठाईस वर्ष काम करते तथा सारी आय घर भेजते हो गए; पहिले तो अपने पिता को, फिर सबसे बड़े भाई को और अब अपने भतीजे को जो कि गृहस्थी का कर्त्ता है। मैं अपनी ५०-६० रूबल प्रति वर्ष की आय में अपने ऊपर केवल दो या तीन रूबल व्यय करता हूँ—बीड़ी माचिस पर।"

"किंतु मैं पापी हूँ; और जब थक जाता हूँ थोड़ी सी वोदका भी कभी-कभी पी लेता हूँ" उसने अपराधपूर्ण मुस्कयान से कहा।

तब उसने बतलाया कि घर पर स्त्रियाँ किस भाँति काम करती हैं, कि ठेकेदार ने उन्हें (आदमियों को) आधी बाल्टी वोदका कैसी पिलाई, कि एक आदमी तो वहीं ढेर हो गया और दूसरा बीमार लौट रहा है। जिस बीमार व्यक्ति के विषय में वह कह रहा था वह डिब्बे के एक कोने में बैठा था। वह पीले रंग तथा नीले ओठों का नवयुवक था। प्रत्यक्ष दिखलाई दे रहा था कि उसे जूड़ी बुखार था। नेखलूदोव उसके पास गया किंतु लड़के ने उसकी ओर इतने कष्ट एवं उदासी से देखा कि नेखलूदोव ने उससे प्रश्न करने उचित न समझे; किंतु उस वृद्ध से उसे कुनैन देने के लिए कहा और एक कागज पर वह शब्द लिख भी दिया। वह उसे कुछ पैसे भी देना चाहता था किंतु वृद्ध ने कहा कि मैं स्वयं खरीद लूगा।

"खैर! मैंने यात्रा तो बहुत की किंतु इतना सज्जन व्यक्ति कभी नहीं मिला। तुम्हें हटाने को मुक्का मारने के स्थान पर अपना स्थान रिक्त कर दिया।" वृद्ध ने तारास से कहा "इसका तो अर्थ यह हुआ कि सभी प्रकार के सज्जन होते हैं।"

"हाँ! यह बिल्कुल नवीन एवं भिन्न संसार है।" नेखलूदोव ने इन पुष्ट अंगों, घर के बने मोटे कपड़ों तथा धूप के तपे दयालु यद्यपि क्रोधित से दिखलाई देने वाले मुखों को देखते हुए तथा नए लोगों एवं श्रमिक जीवन की गंभीर अभिरुचियों, आनन्दों एवं कष्टों से चारों ओर से घिरे हुए सोचा।

"यह है सर्वश्रेष्ठ समाज।" नखलूदोव ने प्रिन्स कोरचागिन के शब्दों को स्मरण करते कोरचागिनों के छोटे, नीच, स्वार्थो से भरे, सुस्त एवं आरामप्रद संसार पर दृष्टिक्षेप करते हुए सोचा।

: तीन :

१

बन्दियों के जिस दल में माशलोवा थी उस दल ने लगभग तीन हजार मील की यात्रा कर ली थी। वह तथा फौजदारी अपराध में दण्ड प्राप्त अन्य वन्दी पर्म के नगर तक रेल एवं स्टीम बोट से आए थे। यहाँ आकर कहीं नेखलूदोव को अनुमति मिल सकी कि माशलोवा राजनैतिक बन्दियों के साथ यात्रा कर सकती है। नेखलूदोव को यह राय वेरा दुखोवा ने दी थी जो स्वयं राजनैतिक बन्दियों में थी।

माशलोवा के लिए पर्म तक की यात्रा शारीरिक एवं नैतिक दोनों दृष्टियों से बड़ी कष्टप्रद रही। शारीरिकतया तो इसलिए कि भारी भीड़, गंदगी एवं घृणित जुंओं तथा चीलरों ने उसे चैन न लेने दिया; नैतिकतया इसलिए कि उसके साथ पुरुष भी वैसे ही थे। पुरुष यद्यपि प्रत्येक पड़ाव के स्टेशन पर बदलते रहते थे किंतु थे जूँओं की भाँति चिपकने वाले ही। वे उसके चारों ओर उछलते-कूदते, चैन नहीं लेने देते। बन्दिनियों, बन्दियों, वार्डरों तथा पथ-रक्षक-सैनिकों में एक प्रकार की नीचता का व्यसन इतना अधिक बढ़ गया था कि यदि कोई बन्दिनी अपने स्त्रीत्व का उपयोग होने देने के लिए तैयार न होती तो उसे अपने प्रति सदा सावधान रहना पड़ता। निरन्तर भय एवं संघर्ष की अवस्था में रहना बड़ा कष्टकर था, तिस पर

माशलोवा पर विशेष आपत्तियाँ आतीं क्योंकि एक तो उसका सुन्दर स्वरूप, दूसरे उसका गत इतिहास जो किसी से छिपा नहीं था। जिस दृढ़ता से सब व्यक्तियों के आग्रह को उसने ठुकराया वह उन्हें खल उठी और इससे उनके अन्तर में उसके प्रति एक दूसरी ही भावना—विद्वेष की–जाग उठी। किंतु फेदोशिया तथा तारास की घनिष्टता के कारण उसकी स्थिति कुछ सुधर गई। तारास ने जब सुना कि मेरी पत्नी को इन कारणों से कष्ट उठाना पड़ रहा है तब वह निजनी नोवोगोरद के स्टेशन पर उसकी रक्षा के लिए स्वच्छया गिरफ्तार हो गया तथा अब उस दल में बन्दी की भाँति यात्रा करने लगा।

माशलोवा की स्थिति तब और भी अधिक सरल हो गई जब कि उसे राजनैतिक बन्दियों के साथ यात्रा करने की अनुमति मिल गई। इसके अतिरिक्त राजनैतिक बन्दियों को अच्छा स्थान एवं सुन्दर भोजन मिलता तथा उनके साथ व्यवहार भी कम क्रूरता का होता था। अब पुरुषों द्वारा तंग न किए जाने एवं अपने अतीत का पुनर्स्मरण न कराए जाने के कारण, जिसे कि विस्मरण करने को वह नितांत इच्छुक थी, माशलोवा की अवस्था में बहुत सुधार हो गया। किंतु इस परिवर्तन का सर्वप्रमुख लाभ तो उसे यह हुआ कि उसका परिचय कुछ ऐसे व्यक्तियों से हो गया जिनका कि उसके चरित्र पर निश्चित् एवं अत्यन्त लाभकारी प्रभाव पड़ा।

रुकने वाले स्टेशनों पर तो उसे राजनैतिक बन्दियों के साथ रहने की अनुमति मिल जाती; किंतु चलना उसे पैदल ही फौजदारी के बन्दियों के साथ पड़ता क्योंकि वह हृष्ट-पुष्ट थी। इस प्रकार उसे तोमस्क से चलना पड़ा। दो राजनैतिक बन्दी भी दल के साथ पैदल चल रहे थे: मेरिया पावलोव्ना शिचे-तीनिया—वही ताँमड़े रंग के नेत्र वाली सुन्दरी नवयुवती जिसकी ओर वेरा दुखोवा से बन्दीगृह में मिलते समय नेखलूदोव आकृष्ट हो उठा था; तथा साइमन्सन, वही काला, उलझे बालों तथा गम्भीर नेत्रों वाला नवयुवक जिसको नेखलूदोव ने उसी समय देखा था और जो कि अब यार्कुत्स्क जिले में निर्वासित होने जा रहा था। मेरिया पावलोव्ना पैदल इसलिए चल रही थी कि उसने अपनी गाड़ी पर बैठने के लिए गर्भवती बन्दिनी को कह दिया था, तथा साइमन्सन इसलिए कि वह अपनी श्रेणी की सुविधा को ग्रहण करना उपयुक्त नहीं समझता था। ये तीनों अन्य बन्दियों के साथ तड़के ही, राजनैतिक बन्दियों से पूर्व ही, चल देते थे क्योंकि वे गाड़ियों पर आते थे। यह व्यवस्था तब तक रही जब तक

कि एक विशेष बड़े नगर में नए पथ-रक्षक-अधिकारी ने दल का दायित्व न सम्हाल लिया।

सितम्बर का प्रभात था, पानी बरस रहा था, ठण्डी वायु के झोंके रह-रह कर आ रहे थे तथा वर्षा और हिम पारी से बरस रहे थे। रुकने के स्टेशन के अहाते में बन्दियों का पूरा दल (लगभग चार सौ पुरुष तथा पचास स्त्रियाँ) एकत्रित हो चुका था। कुछ तो पथ-रक्षक-अधिकारी के चारों ओर बैठे थे, जो कि विशेष नियुक्त बन्दियों के लिए दो दिन के लिए रुपए बाँट रहा था, ताकि उन रुपयों को वे बाकी के लोगों में बाँट दे; जब कि अन्यान्य स्त्री-हॉकरों से सामान खरीद रहे थे। बन्दियों के रुपए-पैसे गिनने की आवाज, सामान खरीदने में उनका झगड़ा और खोंमचे वालियों की चीखें चिल्लाहटें निरन्तर सुनाई देती रहीं।

कातूशा और मेरिया पावलोव्ना दोनों ही बड़े बूट व छोटे वालों के चोगे पहिने तथा सिरों पर शाल ओढ़े इस मकान से निकल कर अहाते में आई, जहाँ पर कि खोंमचे वाली उत्तरी दीवाल से हवा का बचाव कर अपना सामान— माँस की गरम टिकियाँ, मछली, दलिया, कलेजी, अंडा, दूध, सूअर का भुना मॉस— बेचने की चेष्टा कर रही थीं।

साइमन्सन रबड़ की जाकिट तथा रबड़ का ही जूता पहिने, जिसको कि उसने अपने फटे मोजे के ऊपर फीते से बाँध रखा था, वहीं अहाते में खड़ा दल के चलने की प्रतीक्षा कर रहा था। (वह निरामिष-भोजी था तथा मारे हुए पशुओं की खाल का प्रयोग नहीं करता था)। ड्योढ़ी के पास खड़ा हुआ वह अपनी नोटबुक में एक विचार लिख रहा था जो कि उसके मस्तिष्क में अभी आया था। उसने लिखा : "यदि बैक्टीरिया (सूक्ष्म कीटाणु) आदमी के नाखून को देख सकता तथा उसकी परीक्षा कर पाता तो यही कहता कि नख जीवित शरीर का अंग नहीं है; ऐसे ही हम जब इस पृथ्वी की ऊपरी सतह को देखते है तो कहते हैं कि वह निर्जीव है। यह गलत है।"

अंडे, रोटी, मछली इत्यादि खरीदने के पश्चात् माशलोवा उन्हें अपने थैले में रखने लगी तथा मेरिया पावलोव्ना खोंमचे वालियों को मूल्य चुका रही थी कि बन्दियों में हलचल होने लगी। सब शांत हो गए और अपने-अपने स्थानों पर जाने लगे। अधिकारी आया और उसने चलने से पूर्व अन्तिम आज्ञा सुनाई।

नियमानुमार बातें हुई। बन्दी गिने गए, उनके पाँवों की शृङ्खलाओं का निरीक्षण किया गया, और जिन्हें युग्म में चलना था उनके हाथों में हथकड़ियाँ पहिना दी गईं। किंतु एकाएक अधिकारी का क्रोधपूर्ण एवं अधिकृत स्वर, धमाका तथा बच्चे का रुदन सुनाई दिया। थोड़ी देर को निस्तब्धता छा गई तथा फिर भीड़ का कोलाहल आरम्भ हो गया। माशलोवा और मेरिया पावलोव्ना उस ओर गईं जहाँ से ये आवाजें आ रही थीं।

·२

मेरिया पावलोव्ना और कातूशा ने वहाँ जाकर देखा कि बडी मूँछों वाला एक अधिकारी त्यौरियाँ बदलता तथा गालियाँ देता हुआ अपने दाहिने हाथ की हथेली को रगड़ता हुआ खड़ा था, जिससे कि उसने एक बन्दी के मुँह पर तमाचा मारा था। उसके सम्मुख एक लम्बा, दुबला पतला, आधा सिर घुटाए बन्दी खडा था जो कि बहुत छोटा लबादा पहिने हुए था तथा अपने लोहू-लुहान मुख से रक्त पोंछता हुआ अपने हाथ में शाल में लिपटी हुई रोती बच्ची को पकड़े था।

"अभी देता हूँ तुम्हें (गंदी गालियाँ)। मैं तुम्हें तर्क करना सिखलाऊँगा (केवल गालियाँ)। तुम्हें यह स्त्रियों को देनी ही होगी।" अधिकारी चीखा "जाओ! दो उन्हें!"

बन्दी (जो कि गाँव की संस्था द्वारा निर्वासित हुआ था) अपनी छोटी लड़की को तोमस्क से यहाँ तक अपनी गोद में ही ला रहा था। तोमस्क में उसकी पत्नी टाइफाइड से बीमार होकर मर गई थी। अधिकारी ने अब उसके हाथों में हथकड़ी डालने की आज्ञा दी थी। निर्वासित व्यक्ति के इस कथन ने कि मैं हथकड़ियों के उपरांत भी बच्ची को ले चलूँगा अधिकारी को क्रुद्ध कर दिया। अधिकारी जो कि इस समय अच्छे मूड में नहीं था, उसने इस बन्दी को आज्ञा पालन न करने के अपराध में तुरन्त चाँटा मार दिया।*

एक सैनिक आहत बन्दी के पास खड़ा था। इसके पास ही खड़ा था काली दाढ़ी युक्त एक अन्य बन्दी, जिसके एक हाथ में हथकड़ी लग गई थी। वह

*डा० अ. लिन्येव द्वारा 'निर्वासन' में लिखी हुई एक घटना।

भयभीत हो अधोदृष्टि से कभी अधिकारी की ओर, और कभी बच्चो को लिए उस आहत बन्दी की ओर देख रहा था। अधिकारी ने सैनिक को दुबारा आज्ञा दी। "लड़की छीन लो।" भीड़ में कोलाहल बढ़ गया।

"तोमस्क से यहाँ तक तो कहीं हथकड़ी लगी नहीं।" पीछे से किसी की मोटी आवाज आई।

"बच्ची है, कुतिया नहीं।"

"यह बच्ची का करेगा क्या ?"

"यह कोई कानून नहीं है।" किसी और ने कहा।

"यह कौन है ?" अधिकारी चिल्लाया मानो कि उसे डंक लग गया हो और भीड़ में दौड़ा "मैं सिखाता हूँ तुम्हें कानून। कौन बोला ? तुम ? तुम ?"

"सभी कह रहे हैं क्योंकि......" छोटे कद व चौडे मुख के एक बन्दी ने कहा।

उस बन्दी की बात पूरी भी न हो पाई कि अधिकारी ने दोनों हाथों से उसके गालों पर तमाचे मारने आरम्भ कर दिए, "विद्रोह ? क्यों ? मैं बतलाऊँगा कि विद्रोह क्या होता है। मैं तुम सबको कुत्तों की तरह गोली से मरवा दूँगा और अधिकारी लोग प्रसन्न ही होंगे। लो लड़की !"

भीड़ में चुप्पी छा गई। एक सैनिक ने लड़की छीन ली और दूसरे ने बन्दी के हथकड़ी डाल दीं। लड़की रोती चीखती रही।

छोटी बच्ची, जिसका चेहरा बिल्कुल लाल पड़ गया था, शाल में से अपनी बाँह निकालने की चेष्टा कर रही थी तथा चीखे चली जा रही थी।

"स्त्रियों को दे दो।" तलवार की अपनी पेटी सम्हालते हुए अधिकारी चिल्लाया।

मेरिया पावलोव्ना भीड़ में से निकल कर अधिकारी के पास आई।

"क्या आप मुझे बच्ची को ले चलने की अनुमति दे सकते हैं ?" वह बोली।

"तुम कौन हो ?" अधिकारी ने पूछा।

"एक राजनैतिक बंदिनी।"

मेरिया पावलोव्ना के सुन्दर मुख तथा उसके विशाल सुन्दर नेत्रों का अधिकारी के ऊपर समुचित प्रभाव पड़ा। (उसने मेरिया पावलोव्ना को सुपुर्दगी

में लेते समय ही देख लिया था।) उसने उसकी ओर देखा, कुछ देर शांत रहा, मानो कुछ विचार कर रहा हो, फिर बोला "मुझे कोई आपत्ति नहीं; यदि तुम चाहती हो तो ले चलो। दया दिखलाना तो सरल है किंतु यदि वह भाग जाय तो कौन जवाब देगा ?"

"गोदी में लड़की लिए कैसे भाग सकता था ?" मेरिया पावलोव्ना ने कहा।

"मेरे पास तुमसे बातें करने को समय नहीं है। तुम्हारी इच्छा हो तो उसे ले लो।"

"क्या मैं इसे दे दूं ?" सैनिक ने पूछा।

"हाँ, दे दो।"

"आओ, मेरे पास आओ।" मेरिया पावलोव्ना ने बच्ची को अपने पास बुलाने के लिए बहलाते हुए कहा।

किंतु सैनिक की गोद से बच्ची अपने पिता की ओर जाने के लिए बाँहें फैलाती व रोती रही। वह मेरिया पावलोव्ना के पास नहीं जा रही थी।

"एक मिनट ठहरों, मेरिया पावलोव्ना" माशलोवा ने अपने झोले में से एक मिठाई निकाली "यह मेरे पास आ जायगी।"

बच्ची माशलोवा को पहिचानती थी। जब उसने उसे तथा मिठाई को देखा तो उसकी गोद में चली गई।

अब सब शान्त हो गया। द्वार खोल दिए गए तथा दल बाहर निकलकर पंक्तियों में विभक्त हो गया। पथ-रक्षक-सैनिकों ने बन्दियों की पुनः गणना की। सामान की बोरियाँ गाड़ियों में लाद दी गईं, दुर्बल बन्दी उनके ऊपर बैठा दिए गए। बच्ची को गोद मे लिए माशलोवा भी स्त्रियों के मध्य फेदोशिया की बगल में अपने स्थान पर चली गई। साइमन्सन, जो आदि से ही सब देख रहा था, लम्बे डग रखता हुआ अधिकारी के पास पहुँचा, जो कि आज्ञा देकर बग्घी में बैठ चुका था और उससे बोला, "आपने व्यवहार ठीक नहीं किया।"

'अपने स्थान पर जाओ, यह तुम्हारा कार्य नहीं।"

"यह मेरा कार्य है कि मैं बतला दूं कि आपने ठीक नहीं किया, और मैं कह चुका।" साइमन्सन ने अपनी घनी भौंहों के नीचे से अधिकारी की ओर सीधा देखते हुए कहा।

"सावधान प्रा-चलः!" अधिकारी ने साइमन्सन की ओर ध्यान दिए बिना कहा, और अपने कोचवान के कंधे को पकड़कर बग्घी में चढ़ गया।

दल कीचड़-युक्त सड़क पर, जिसके दोनों ओर खाइयाँ थीं तथा जो घने जंगल से होकर जाती थी, फैलता हुआ बढ़ने लगा।

३

राजनैतिक बन्दियों का जीवन यद्यपि बहुत कठोर था किंतु फिर भी कातूशा ने जब अपने ६ वर्ष के पतित, व्यसनपूर्ण एवं स्त्रीत्व के जीवन पर जिसे कि वह नगर में व्यतीत करती रही थी, तथा फौजदारी अभियुक्तों के साथ के दो माह के बन्दी-जीवन पर दृष्टिपात किया तब राजनैतिक बन्दियों का जीवन उसे कहीं अधिक अच्छा लगा। पन्द्रह बीस मील पैदल चलना, अच्छा भोजन, दो दिन चलने के बाद एक दिन का आराम—इन सबसे उसका स्वास्थ्य सुधर गया, और नव-परिचित साथियों की संगति से एक ऐसे रुचिपूर्ण जीवन का अध्याय खुला जिसकी कि वह स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर पाई थी। "इतने भले व्यक्ति, जिनके साथ कि मैं अब रहती हूँ, मुझे कभी नहीं मिले। मिलना तो दूर मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि इस संसार में इतने भले व्यक्ति भी होते हैं।" वह कहा करती थी।

"मुझे जब दण्ड मिला था मैं रो पड़ी थी" वह कहती "अब मैं चाहती हूँ कि इसके लिए भगवान को जीवन भर धन्यवाद देती रहूँ। मुझे ऐसी-ऐसी बातें मालूम हो रही हैं जो मैं वैसे कभी नहीं जान पाती।"

उसकी समझ में इन लोगों के उद्देश्य सरलता से आ गए जिनसे कि ये लोग प्रेरित थे और क्योंकि वह भी सर्व साधारण जनता में से ही थी अतः उनसे उसे सहानुभूति हो गई। वह समझ गई कि ये लोग सर्वसाधारण जनता के हित में तथा उच्चवर्ग के विरोध में हैं, और स्वयं उच्चवर्ग के होते हुए भी उन्होंने अपनी सुख-सुविधाओं एवं स्वतन्त्रता को लात मार कर अपना जीवन जनता के हित में उत्सर्ग कर दिया है। विशेषतया इस बात से प्रभावित हो वह उनका आदर एवं प्रशंसा करती।

वह अपने समस्त नव-परिचित साथियों से विशेषतया मेरिया पावलोव्ना

से प्रसन्न रहती। उसके साथ वह केवल प्रसन्न ही नहीं रहती अपितु उसे विशेष आदर एव भक्ति से प्रेम भी करती थी। उसे यह चुभ गया कि तीन भाषाओं की ज्ञाता, तथा एक धनिक जनरल की इस सुन्दर लड़की ने अपने भाई द्वारा भेजे हुए समस्त धन को लौटा दिया, वह साधारण से साधारण मजदूर लड़की की भाँति रहती रही है तथा कपड़े सादा ही नहीं तो अत्यन्त सादा पहिनती है एवं अपने स्वरूप की ओर कोई ध्यान नहीं देती। नाज नखरे, और आडम्बर के पूर्णतया अभाव के गुण ने उसे अत्यन्त आश्चर्य में डाल दिया तथा इसी कारण माशलोवा उसकी ओर आकर्षित हो गई।

माशलोवा अनुभव करती थी कि मेरिया पावलोव्ना अपने सौन्दर्य के प्रति जागरूक है तथा उसे इस बात से प्रसन्नता होती है कि मैं सुन्दर हूँ किंतु फिर भी पुरुषों में उत्पन्न अपनी सुन्दरता का प्रभाव उसे अच्छा नहीं लगता था; वह इससे भयभीत भी थी। उसे प्रेम में पड़ने से नितान्त घृणा एवं अत्यन्त भय लगता था। उसके पुरुष-साथी इस बात को जानते थे तथा उसके प्रेम में नहीं पड़ते थे—और यदि ऐसा होता भी तो वे यह छिपाते थे–तथा उसके साथ इस भाँति व्यवहार करते मानो कि वह पुरुष हो; किंतु उन अपरिचितों का जहाँ तक सम्बन्ध था जो कि उसे छेड़ते थे उनके लिए उसकी शारीरिक शक्ति बड़ी सहायता करती और इस पर वह गर्व करती थी।

"एक वार ऐसा हुआ" उसने कातूशा से हँसते हुए कहा "कि एक आदमी ने गलियों में मेरा पीछा किया और किसी भी तरह बाज नहीं आया अंत में मैंने उसे पकड़कर ऐसा झकझोर डाला कि वह डरकर भाग गया!"

उसने वतलाया—"मैं क्राँतिकारिणी क्यों वनी; क्योंकि मुझे बड़े आदमियों का जीवन बचपन से ही नापसन्द था तथा सर्वसाधारण जनता का जीवन पसन्द था। मुझे सदैव ही नौकरों के कमरों, रसोई, घुड़सालों में बने रहने पर डाँटें पड़ती रहतीं कि तुम यहाँ बैठक में क्यों नहीं बैठती।"

"किंतु रसोइयों और कोचवानों के पास मुझे आनन्द आता था तथा महिलाओं एवं श्रीमन्तों के साथ बैठना नीरस लगता।" वह बोली "और जब मैं कुछ समझने के योग्य हुई तो मुझे अनुभव हुआ कि हम लोगों का जीवन-प्रवाह गलत, बिल्कुल गलत है। मेरी माँ तो थी ही नहीं और पिताजी से मुझे प्रेम नहीं था। अतः उन्नीस वर्ष की आयु में मैं घर से निकल पड़ी और अपनी सहेली के साथ एक फैक्टरी में काम करने लगी।"

फैक्टरी छोड़ने के बाद वह एक गाँव में रही फिर नगर में आकर एक किराए के मकान में रहने लगी, जहाँ कि एक गुप्त छापाखाना था। यहीं से वह गिरफ्तार हुई तथा मुझे कठोर परिश्रम का कारावास हुआ। उससे आगे उसने कुछ नहीं बतलाया किंतु कातूशा को दूसरों से पता चल गया कि जब पुलिस तलाशी लेने आई तब किसी क्रांतिकारी ने अन्धेरे में गोली चला दी और मेरिया पावलोव्ना ने उसका सब दायित्व अपने ऊपर ले लिया।

कातूशा ने जब मेरिया पावलोव्ना को पहिचान लिया तब उसने यह बात अनुभव की कि मेरिया पावलोव्ना अपने विषय में कभी नहीं सोचती, चाहे जैसी भी स्थिति में वह क्यों न हो, किंतु सदा ही दूसरों की छोटी-बड़ी सेवा करने में तत्पर रहती है। उसका एक वर्तमान साथी नोवोदिवोरोव उसके विषय में कहा करता था कि वह तो लोक-हित रूपी खेल पर न्योछावर हो चुकी है। और यह बात ठीक ही थी। उसके समस्त जीवन की रुचि एक ही थी कि दूसरों की सेवा करने के अवसर की खोज करना। ठीक उसी भाँति जिस भाँति कि एक खिलाड़ी इसी खोज में निमग्न रहता है कि कहीं खेलने का अवसर मिले। और यह खेल उसके जीवन का स्वभाव-व्यापार बन चुका था तथा वह इतनी स्वाभाविकतया यह सब करती कि लोग उससे परिचित हो चुके थे और उसके कार्यों के प्रति कृतज्ञता प्रगट नहीं करते थे किंतु उससे तो सेवा की आशा ही करते रहते थे।

जब पहिले-पहल माशलोवा उनके मध्य आई तब मेरिया पावलोव्ना को घृणा उत्पन्न हुई थी। कातूशा उसे ताड़ गई, किंतु वह भी समझ गई कि कातूशा ने मेरी भावना समझ ली है इसलिए अपने मन को वश में करके उसके प्रति दयालु हो गई। इतने असाधारण व्यक्ति की सहानुभूति एवं दया प्राप्त कर माशलोवा इतनी अधिक प्रभावित हुई कि समस्त हृदय से उस पर अनुरक्त हो गई; तथा अनजाने में ही उसके विचारों को स्वीकार कर उनका अनुसरण करने लगी। कातूशा के अगाध प्रेम से मेरिया पावलोव्ना का हृदय पसीज गया और उसने भी उसके प्रति सच्चा प्रेम दिखलाना चाहा।

उन दोनों की मित्रता का एक कारण यह भी था कि दोनों को ही वासना से घृणा थी। एक की घृणा तो उसके अनुभवजन्य भयों के आधार पर थी और एक को कोई अनुभव नहीं था लेकिन मानसिक ढंग से वह इसे घृणित मनुष्य की शान के विपरीत तथा कल्पनातीत वस्तु प्रतीत होती थी।

४

मेरिया पावलोव्ना का प्रभाव ऐसा था कि माशलोवा ने उसे स्वयं अङ्गीकार किया था। इसका कारण था कि माशलोवा मेरिया पावलोव्ना से प्रेम करने लगी थी। उसके ऊपर दूसरा प्रभाव था साइमन्सन का—इसका कारण था कि साइमन्सन माशलोवा से प्रेम करता था।

मानव अंशतः तो अपने विचारों के अनुसार और अंशतः अन्यान्यों के विचारानुसार जीवन व्यतीत करता है। कौन कितना काम अपने मन के अनुसार करता है, कितना दूसरे के मत के अनुसार—इसी से मानव मानव में अन्तर उत्पन्न हो जाता है। कुछेकों के लिए विचार करना एक प्रकार का मानसिक खेल है। ये लोग अपनी बुद्धि को ऐसे पहिए की भाँति मानते हैं जिसमें पट्टा न लगा हो तथा इनके कार्य होते हैं दूसरों के विचारानुसार—रीति-रिवाजों, नियमों से युक्त। कुछेक अपने विचारों को ही अपने कार्यों के मुख्य प्रेरक मानते हैं, अपने तर्कों को ही सुनते तथा उन्हीं के अनुसार चलते हैं तथा दूसरों की राय को कभी-कभी और वह भी खूब नाप-तौल ही कर मानते हैं। साइमन्सन इसी श्रेणी में आता था; वह हरएक बात को अपने तर्क की कसौटी पर घिसता तथा उसी के अनुसार निर्णय करता और इस प्रकार प्राप्त किए हुए निर्णय को क्रियान्वित करता।

जब उसकी अवस्था कम थी तथा वह विद्यार्थी ही था तब वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि पिताजी का वेतन, जो कि उन्हें एक सरकारी कार्यालय में कोषाध्यक्ष के पद पर प्राप्त होता था, बेईमानी से अर्जित किया जाता है। उसने तब अपने पिता से कहा कि इस वेतन को आप लोगों में बाँट दीजिए। उसके पिता ने उसकी बात सुनने की अपेक्षा उसे डाँटा तो वह घर से निकल पड़ा—क्योंकि वह अपने पिता के साधनों की सुविधा ग्रहण करना नहीं चाहता था। जब उसका निष्कर्ष निकला कि वर्तमान बुराइयाँ लोगों की अज्ञानता के कारण उत्पन्न होती हैं तो उसने यूनिवर्सिटी की पढ़ाई समाप्त करते ही नारोदनिक्स की सदस्यता स्वीकार कर ली, देहाती विद्यालय में शिक्षक हो गया तथा अपने विद्यार्थियों एवं किसानों को निडर हो खुल्लम-खुल्ला उसी को उचित कहने लगा जिसे वह उचित समझता एवं अनुचित को अनुचित।

वह गिरफ्तार कर लिया गया और उस पर अभियोग चलाया गया।

अभियोग के मध्य वह इस निर्णय पर पहुँचा कि न्यायाधीशों को मेरा

न्याय करने का काई अधिकार नहीं है और उसने उनसे यह कह भी दिया। जब न्यायाधीशों ने उसकी बात की ओर कान नहीं दिए तो उसने निर्णय किया कि मैं इनके प्रश्नों का उत्तर ही नहीं दूँगा तथा जब वे उस प्रश्न करते तो वह बिल्कुल चुप रहा आता।

उसको आकेजिलस्क प्रान्त में निर्वासित कर दिया गया। वहाँ उसने एक नया धर्म बनाया जिसमें कि उसकी समस्त विचारधारा थी। इस धर्म का सिद्धांत था कि संसार में प्रत्येक वस्तु सजीव है, निर्जीव नहीं; तथा जिन वस्तुओं को हम मृत अथवा निर्जीव समझते है वे सब एक ऐसे अत्यन्त विशाल सजीव शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्ग है जिसे कि हम नाप नही सकते तथा इस विशाल शरीर के अङ्ग होने के नाते मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इसको तथा इसके प्रत्येक अवयव को सजीव बनाए रखे। इसलिए वह किसी के भी प्राण लेने को अपराध मानता था तथा युद्धों, फाँसियों एवं मनुष्यों ही के नहीं, पशुओं के भी प्राण लेने के प्रत्येक प्रयत्न के वह विरुद्ध था। विवाह के प्रति भी उसका अपना मत था: वह उत्पत्ति को मानव की घटिया प्रवृत्ति मानता था तथा उच्च प्रवृत्ति मानता था वर्तमान जीवित प्राणियों की सेवा करना। उसे अपने इस सिद्धान्त का समर्थन इस बात से मिला कि मनुष्य के रक्त में सफेद रङ्ग के ऐसे जीवाणु पाए जाते है जो मनुष्य की स्वास्थ्य-रक्षा के लिए रोग के कीटाणुओं को नष्ट करते रहते है। उसके मतानुसार ब्रह्मचारी इन्हीं सफेद कीटाणुओं के समान है, जिनका कर्तव्य है—शरीर के दुर्बल एवं रुग्ण अंश की रक्षा करना। जिस क्षण से वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा था, उसने अपना जीवन इसी सिद्धान्त के अनुसार बना लिया। यद्यपि अपने यौवन काल में वह बिगड़ चुका था तथा स्वयं को और मेरिया पावलोव्ना को वह मनुष्य रूपी रक्त का सफेद जीवाणु समझता था।

कातूशा के प्रति उसके प्रेम से उसका सिद्धांत अमर्यादित नहीं होता था क्योंकि वह उससे ऐसा आध्यात्मिक प्रेम करता था जिससे कि उसे विश्वास था कि उसके सफेद जीवाणु की कार्य-प्रणाली में कोई अन्तर पड़ना तो दूर, उल्टे उत्साह का वर्द्धन ही होगा।

उसने नैतिक प्रश्नों को ही अपने ढंग से नहीं सुलझाया था किंतु बहुत से व्यावहारिक प्रश्नों का भी हल निकाला था। सभी व्यावहारिक मामलों में भी उसका एक अपना मत था: उसने नियम बनाए थे—कितने घंटे काम करना

चाहिए, कितने घंटे आराम और कैसा भोजन करना चाहिए; किस प्रकार के वस्त्र पहिनने चाहिए तथा कैसे अग्नि जलानी चाहिए व मकानों को प्रकाशित करना चाहिए।

यह सब होते हुए भी साइमन्सन अत्यन्त लजालु एवं झेंपू था; किंतु जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता तब वह हिलाए भी नहीं हिल सकता था।

और इस व्यक्ति का माशलोवा से प्रेम होते हुए भी उस पर विशेष प्रभाव था। स्त्रियों की प्रवृत्ति के कारण माशलोवा शीघ्र ही समझ गई कि यह मुझसे प्रेम करता है। इस बात से वह स्वयं गर्वित हो उठी कि मैं ऐसे व्यक्तियों में भी प्रेम उत्पन्न कर सकती हूँ। नेख्लूदोव तो अपनी उदारता तथा अपने विगत को देखकर उससे विवाह करना चाहता था; किंतु साइमन्सन उसके वर्तमान को देखकर प्रेम करता था। और उसे लगा कि साइमन्सन मुझे उच्च नैतिक गुणों से सम्पन्न एक विशेष स्त्री मानता है। उसे यह निश्चित् रूप से पता नहीं था कि वह मुझमें किन गुणों का समावेश मानता है; किंतु इस विचार से कि साइ-मन्सन में मेरी ओर से निराशा न उत्पन्न हो जाय माशलोवा अपने श्रेष्ठतम गुणों को, जिनकी वह कल्पना कर सकती थी, अपनी समस्त शक्ति से जाग्रत करने की चेष्टा करती और जितनी अच्छी बन सकती, बनने का प्रयत्न करती।

यह तो तब ही से आरम्भ हो गया था जब कि वह बन्दीगृह में थी। तब मिलाई के एक दिन उसने देखा कि वह अपनी उभरी हुई भौंहों के नीचे मृदुल गहरी नीली आँखों से मेरी ओर देख रहा है। उसने तभी इस बात पर ध्यान दिया था कि यह व्यक्ति विचित्र ही है तथा मेरी ओर विचित्र ढंग से ही देख रहा है; तथा उसने उसकी आकृति में बिखरे हुए बालों और बल खाई हुई, भावों से पैदा होने वाली, कठोरता तथा बच्चों जैसी दयालुता एवं निष्कलंकता का सम्मिश्रण दिखलाई दिया था। इसके पश्चात् उसने तोमस्क में यह देखा, जहाँकि वह राजनैतिक बंदियो के साथ सम्मिलित हुई थी। यद्यपि उनमें बातचीतें आरंभ भी नहीं हुई थीं, फिर भी दृष्टि विनिमय होते ही उनको पुरानी भेंट स्मरण हो आई तथा दोनों ने यह स्वीकार कर लिया कि हम दोनों एक दूसरे के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। इसके पश्चात् भी इन लोगों में कोई गंभीरतापूर्वक बातचीत नहीं हुई। किंतु माशलोवा यह देखती थी कि साइमन्सन जब कभी उसकी उपस्थिति में कुछ कहता तो उसके वे वाक्य उसी के लिए होते थे। वह उसी के निमित्त बातचीतें करता और अपने विचारों को उसके सम्मुख प्रगट करना चाहता था। किंतु वे विशेषतया एक-दूसरे

के समीप तब आए थे जब से कि साइमन्सन ने साधारण बन्दियों के साथ पैदल चलना आरम्भ किया।

५

पर्म से चलने से पूर्व नेखलूदोव कातूशा से केवल दो बार मिला--एक बार तो निजनी नोवोगोरद में, जहाँ बन्दियों को चारों ओर से जाली लगी बड़ी नाव पर चिड़ियों की भाँति भर दिया गया था; तथा दुबारा पर्म के बन्दीगृह के कार्यालय में। दोनों ही बार उसे लगा कि माशलोवा का रुख कठोर एवं गंभीर है। नेखलूदोव के प्रश्नों का, कि किसी वस्तु की तुम्हे आवश्यकता तो नहीं तथा किसी बात का कष्ट तो नहीं है, उत्तर माशलोवा ने वक्रोक्ति तथा लजालुता से दिया। नेखलूदोव को प्रतीत हुआ कि यह उसी भाँति की विरोध-भावना है जैसी कि पहिले भी कितनी ही बार यह मुझे प्रदर्शित कर चुकी है। माशलोवा की गिरी हुई मनोदशा से नेखलूदोव को दुख हुआ जो कि केवल उन कष्टों का परिणाम थी जिन्हें उस समय उन्हे झेलना पड़ रहा था। उसे भय था कि कहीं ऐसा न हो जाय कि इस कठोर एवं पतित परिस्थिति मे पड़कर, जो इस यात्रा के बीच उसके सामने पैदा हो गई है, माशलोवा फिर उसी निराशा एव आत्मग्लानि के दलदल में फँस जाय जिसमें पड़कर इससे पूर्व भी वह चिड़चिड़ी हो गई थी तथा जिस दशा में अपने पतन को भूल जाने के लिए उसने मदिरा एवं तम्बाकू का सेवन आरम्भ कर दिया था; लेकिन यात्रा के इस भाग में नेखलूदोव उसकी कोई सहायता नहीं कर सका, क्योंकि उसकी भेंट ही नहीं हो पाती थी। किंतु जब माशलोवा राजनैतिक बन्दियों के साथ कर दी गई तब नेखलूदोव ने देखा कि मेरे भय कितने निराधार थे। जब भी वह उससे मिलता तो देखता कि वह आंतरिक उन्नति, जो कि नेखलूदोव चाहता था कि माशलोवा के हृदय में पैदा हो, दिन-पर-दिन अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है। पहिली बार जब नेखलूदोव माशलोवा से तोमस्क में मिला, उसकी वही दशा थी जो कि मास्को से चलते समय थी। नेखलूदोव से मिलकर न तो उसने त्यौरियाँ चढ़ाईं और न हकबकाई; बल्कि बड़ी हँसी-खुशी से उससे मिली और उसको अधिक सहायता करने के कारण धन्यवाद भी दिया, विशेषकर इसलिए कि उसने उसे ऐसे आदमियों में पहुँचा दिया जिनमें कि वह आजकल रह रही थी।

दल के साथ दो माह की यात्रा के पश्चात् माशलोवा के हृदय में होने वाला परिवर्तन उसके ऊपर प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगा। उसका चेहरा धूप में मुरझा गया तथा वह लट गई थी; झुर्रियाँ उसके माथे तथा मुँह के चारों ओर उभर आई थीं। अब उसके माथे पर घुँघराली अलकें नहीं थीं और उसके बाल रूमाल से ढके रहते थे। मार्ग में ही कुछ ऐसी व्यवस्था बन गई थी कि चोंचलेबाजी का कोई भी चिह्न—उसके वस्त्रों अथवा स्वभाव में—नहीं रहा था। और इस परिवर्तन से जो कि अभी भी निरन्तर हो ही रहा था, नेखलूदोव बहुत प्रसन्न हुआ।

उसके हृदय में माशलोवा के प्रति एक ऐसी अनुभूति हुई जैसी कि पहिले कभी नहीं हुई। यह भावना उसके पहिले कवित्वमय प्रेम से किसी रूप में भी सम्बन्धित नहीं थी तथा उससे भी कम उस प्रेम के पश्चात् उत्पन्न वासना से उसका सम्बन्ध था। फिर, इसका सम्बन्ध अपनी कर्तव्यपूर्ति की संतुष्टि की भावना से भी नहीं था (आत्मश्लाघा युक्त) जिससे प्रेरित होकर अभियोग के पश्चात् उसने माशलोवा के साथ विवाह करने का निर्णय किया था। इस समय तो करुणा एवं कोमलता की भावना थी। ऐसी भावना तो उसमें उस समय जाग्रत हुई थी जब कि वह सर्वप्रथम उससे बन्दीगृह में मिला था। और दुबारा तब उत्पन्न हुई जब कि उसने अस्पताल मे छोटे डाक्टर के साथ कल्पित षडयन्त्र पर अपने विरोध पर विजय प्राप्त कर माशलोवा को क्षमा कर दिया था (उसके साथ हुए अन्याय का भंडाफोड़ हो चुका था)। इस समय उसकी बिल्कुल वही भावना थी; किंतु अन्तर केवल इतना था कि पहिले तो यह क्षणिक थी किंतु अब स्थाई हो गई थी। अब वह जो भी सोचता, जो कुछ भी करता, उसमें उसके अन्दर दया एवं कोमलता की भावना झलकती और वह केवल माशलोवा के लिए नहीं वरन् प्रत्येक के लिए भी।

इस भावना ने प्रेम के द्वार खोल दिए जिसे कि नेखलूदोव की आत्मा में कोई मार्ग नहीं मिला और अब जिस किसी से भी वह मिलता, उसी को प्रेम का प्रसाद प्राप्त हो जाता।

यात्रा के मध्य नेखलूदोव की भावनाएँ इतनी उत्तेजित हो गईं कि वह कोचवान तथा पथ-रक्षक-सैनिकों से लेकर बंदीगृह इन्सपैक्टर तथा गर्वनर तक, जिनके साथ कि उसे वास्ता पड़ता, उनके हृदय को संतोष देने तथा प्रेम के साथ व्यवहार करने की पूरी-पूरी चेष्टा करता।

अब क्योंकि माशलोवा राजनैतिक बंदियों के साथ चल रही थी अतः स्वाभाविकतया वह उनमें से कितनों से ही परिचित हो गया। पहिले तो येकातरीनवर्ग में उसका परिचय हुआ जहाँ कि उन्हें बहुत कुछ स्वतंत्रता थी तथा वे सब एक बड़ी कोठरी में एक साथ ही रखे गए थे; उसके पश्चात् सड़क पर पाँच पुरुष एवं चार स्त्रियों से भेंट हुई जबकि माशलोवा की बदली उनमे हो गई थी। इस प्रकार से राजनैतिक बंदियों के सम्पर्क में आने के कारण नेखलूदोव को उनके विषय में अपने विचार पूर्णतया बदलने पड़े।

रूस में क्रांतिकारी आंदोलन के आरम्भ से ही विशेषतया पहिली मार्च से जबकि अलेक्जेण्दर द्वितीय की हत्या कर दी गई थी नेखलूदोव क्रातिकारियों को घृणा एवं तिरस्कार की दृष्टि से देखता था। उसे घृणा हुई थी उनकी क्रूरताओं एवं सरकार के विरुद्ध संघर्ष करने की गुप्त कार्य-प्रणाली से। विशेपतया उनके द्वारा हत्याओं में बरती जाने वाली क्रूरताओं से; शान और आत्मगौरव से भी, जो कि इन लोगों की एक विशेषता थी, वह असंतुष्ट था। किंतु उनसे घनिष्टता हो जाने पर और यह जान लेने पर कि वे सब लोग सरकार द्वारा सताए हुए है, उसे स्पष्ट प्रतीत हुआ कि इनके पास कोई दूसरा मार्ग है भी नहीं।

साधारण बंदियों पर होने वाले अत्याचार भयानक एवं मूर्खतापूर्ण थे, किंतु न्याय होने से पूर्व तथा दंड प्राप्त होने के पश्चात् कम-से-कम कुछ न्याय का सा दृश्य तो था ही; किंतु राजनैतिक बंदियों के मामले में वैसा दृश्य भी नहीं था जैसा कि नेखलूदोव को शुस्तोवा तथा अपने नए परिचितों के विषय में ज्ञात हुआ था। इनके साथ तो ऐसा व्यवहार होता था जैसा कि जाल में फँसी मछलियों के साथ; जाल में जो भी पड़ गया वही किनारे पर खींच लिया जाता है और बड़ी मछलियाँ जिनकी कि आवश्यकता होनी है छाँट ली जाती है तथा छोटी मछलियाँ नष्ट होने के लिए वहीं किनारे पर लापरवाही से छोड़ दी जाती हैं। सैकड़ों को बंदी कर लेने के पश्चात् जो अधिक भयकारी नहीं हो सकते तथा निरपराध होते हैं, उन्हें सरकार वंदीगृहों में वर्षों सड़ाती है जहाँ कि उनको क्षय रोग हो जाता है, मस्तिष्क विकृत हो जाता है अथवा वे आत्म-हत्या कर लेते हैं। सड़ाती केवल इसलिए है कि अधिकारियों को उन्हें मुक्त करने का कोई प्रलोभन तो होता नहीं किंतु सोचते यह हैं कि यहाँ ये सुरक्षित तो है ही और किसी भी न्यायिक जाँच के समय कुछेक प्रश्नों की व्याख्या में लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं। इन व्यक्तियों का, जो कि अधिकांशतया सरकारी दृष्टिकोण से भी निर्दोष होते हैं,

भाग्य निर्भर होता है किसी पुलिस अधिकारी, या गुप्तचर, या पब्लिक प्रोसीक्यूटर, या न्यायाधीश या गवर्नर अथवा मंत्री के बहम, खाली समय अथवा हास-परिहास पर। इनमें से किसी अधिकारी को लग रहा हो कि काम नहीं हो रहा है अथवा वह अपने में कुछ विशेषता प्रदर्शित करना चाहता हो तो अपनी अथवा किसी उच्चाधिकारी की इच्छानुसार कितनों को ही गिरफ्तार करने का आदेश दे देता है अथवा किसी को बंदी कर लेता है या मुक्त कर देता है। और यह बड़े अधिकारी इसी प्रकार के किसी अभिप्राय से प्रेरित होकर अथवा किसी मंत्री के प्रभाव मे आकर इन व्यक्तियों को संसार के दूसरे छोर में निर्वासित कर देते है, तनहाई में बंद कर देते है, कठोर परिश्रम कराने व फाँसी देने के लिए साइबेरिया भेज देते है अथवा किसी महिला की प्रार्थना पर उन्हे मुक्त कर देते है।

इनके साथ युद्ध का सा व्यवहार किया जाता और इन लोगों ने भी स्वाभाकितया उसी प्रकार के साधन अपनाए जैसे कि इनके विरुद्ध प्रयोग किए जाते। जिस प्रकार सैनिक लोकमत के ऐसे वातावरण में रहते है जिसमें कि उनके कार्यों के दोष न केवल छिपाए जाते हैं वरन् उन कार्यों की शूरवीरता के नाम से प्रशसा की जाती है।-उमी भाँति ये राजनैतिक अपराधी अपने ऐसे साथियों के दल में रहते थे जो कि ऐसा वातावरण उत्पन्न करते थे जिसमे कि भय का सामना करने मे इनके द्वारा अपनी स्वतंत्रता एव जीवन तथा उस सबके मूल्य पर जो कि मनुष्य को सर्वाधिक प्रिय होते है, किए हुए निर्दय कार्य क्रूर नही लगते किंतु महान् बन जाते है। नेखलूदाव को इस आश्चर्यजनक समस्या के समझने में यह ज्ञात हुआ कि कोमल-से-कोमलतर चित्त वाला व्यक्ति भी, जो कि किसी को कष्ट पहुँचाना तो दूर किसी प्राणी को कष्ट में देख भी न सकता हो—उसे भी मनुष्य की हत्या करने के लिए पूर्णतया सन्निद्ध रहना चाहिए; उनमे से अधिकांश लोगों को हत्या को किन्ही विशेष अवसरों पर कानूनी मानना चाहिए : उसको आत्म-रक्षा, अपने उच्च स्वार्थो की पूर्ति का साधन मानना चाहिए जो कि सर्वसाधारण के हित में है। क्रांतिकारियों द्वारा अपने तर्क को दिया गया महत्त्व, जो स्वाभाविकतया उनका भी महत्त्व हो जाता था, उस महत्त्व से उत्पन्न होता था जो महत्व कि सरकार अपनी गतिविधियों को तथा क्रातिकारियो को दड देने मे निर्दयता बरतने को देती थी। इनको अपने विषय में बहुत ऊँची राय इसलिए बना लेनी पड़ती थी ताकि इनको जो कष्ट दिए जाते थे वे उन्हे सहन कर सकें।

जब नेखलूदोव उनसे भलीभाँति परिचित हो गया तब उसकी धारणा बन गई कि ये लोग न तो पक्के बदमाश ही होते हैं, जैसा कि कुछ लोग समझते थे, और न महापुरुष ही जैसा कि दूसरों का विचार है, किंतु ये लोग भी साधारण पुरुष ही होते है जिनमें अन्यान्यों की ही भाँति अच्छे, बुरे, मध्यम श्रेणी के सब ही प्रकार के व्यक्ति होते हैं।

इनमें से से कुछ तो इसलिए क्रांतिकारी हो गए थे कि वे ईमानदारी से वर्तमान बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहते थे, किंतु इनमें ऐसे भी लोग थे जिन्होंने कि इस प्रवृत्ति को स्वार्थी महत्त्वाकाक्षाओं के कारण अपनाया था। कुछ भी हो, बहुमत ऐसे व्यक्तियों का था जो कि भय की प्यास तथा किसी के जीवन से खिलवाड़ करने के आनन्द को उपभोग करने के लिए क्रांतिकारी विचारों से आकृष्ट हुए थे। नेखलूदोव को अपने सैनिक-जीवन का अनुभव था कि ये भावनाएँ सर्वसाधारण जनता में, जब कि लोग अपनी युवावस्था में अथवा उत्साह में भरे होते हैं, आम पाई जाती हैं। किंतु साधारण-जन से इन लोगो में एक बात अच्छी होती है और वह यह कि इनके नैतिक सिद्धान्त ऊँचे होते हैं। ये लोग मानते हैं कि न केवल कठोर जीवन, सत्य, निस्वार्थता तथा आत्म-निग्रह हमारा कर्तव्य है वरन् लोकहित के लिए प्रत्येक वस्तु का, यहाँ तक कि अपने प्राणों का, भी त्याग करना हमारा कर्तव्य है। इसलिए इनमें से कुछ तो इतने महान् होते हैं कि साधारण व्यक्ति इतनी उच्चता प्राप्त नहीं कर पाता किंतु ऐसे भी कितने ही मिलेंगे जो कि दंभी, झूठे एवं अहंकारी तथा अभिमानी होते हैं। अतः नेखलूदोव ने अपने नए परिचितों में से कुछेकों का आदर करना प्रारम्भ कर दिया, कुछेकों को तो वह अपने समस्त हृदय से प्रेम भी करने लगा जब कि अन्यों के प्रति वह बेरुखा ही बना रहा।

६

नेखलूदोव को बहुत प्रिय लगा क्रीलतशोव नामक एक क्षय रोग ग्रस्त नवयुवक—जो कि उस दल में कातूशा की ही भाँति था तथा जिसे सश्रम कारावास हुआ था। येकातेरीनबर्ग में उससे नेखलूदोव का परिचय हुआ था तथा उसके पश्चात् वह उससे मार्ग में कितनी ही बार बातें कर चुका था। गर्मियों में एक बार तो किसी पड़ाव के स्टेशन पर नेखलूदोव उससे लगभग सारे दिन ही बातें करता रहा और क्रीलतशोव ने जो बातें आरम्भ की तो उसे अपनी कथा ही सुना

डाली और यह बतलाया कि मैं क्रांतिकारी क्यों बना। बन्दी होने तक की उसकी कथा शीघ्र ही समाप्त हो गई। उसके बचपन में उसके पिता की मृत्यु हो गई जो कि रूस के दक्षिण में एक धनिक जमींदार था। वह इकलौता लड़का था और उसकी माँ ने ही उसे पाल-पोष कर बड़ा किया था। वह स्कूल और विश्वविद्यालय दोनों में ही पढ़ाई में तेज था तथा हिसाब में वह प्रथम आता था। उसे विश्व-विद्यालय से वजीफा भी दिया जाना था कि वह कहीं विदेश में जाकर आगे अध्ययन कर ले; किंतु निर्णय करने में उसने विलम्ब कर दिया। वह प्रेम में फँस चुका था, तथा उसका विचार था कि विवाह करलूं एवं ग्रामीण प्रशासन में भाग लूं। वह करना सब कुछ चाहता था पर यह निश्चय न कर सका कि क्या करूँ। ऐसी दुविधा में विश्वविद्यालय के उसके कुछ सहपाठियों ने उससे लोकहित के किसी कार्य के लिए धन माँगा। वह जानता था कि उनका उद्देश्य क्रांतिकारी था। उसमें उस समय उसे रुचि नहीं थी किंतु यह सोचकर कि मित्र-गण हैं और कहीं ये लोग यह न समझें कि मैं भयभीत हो गया हूँ इस गर्व में आकर उसने रुपए दे दिए। जिन्होंने उससे रुपया लिया वे पकड़े गए और उनके पास एक कागज पाया गया जिसमे सिद्ध होता था कि रुपया देने वाला क्रील्तशोव है। उसको गिरफ्तार कर पहिले तो पुलिस चौकी ले गए, फिर बन्दीगृह :

"उस बन्दीगृह में इतनी कड़ाई नहीं थी।" क्रील्तशोव कहता रहा (वह ऊँचे पलंग पर कोहनी को घुटने पर रखे, सीना झुकाए बैठा था तथा बुखार के कारण चमकते हुए अपने सुन्दर नेत्रों से नेखलूदोव को देख रहा था)। "हम लोग दीवाल को थपथपाने के अतिरिक्त दूसरे ढंगों से भी बातचीतें करने में सफल हो जाते थे तथा बराम्दे में टहल भी लेते थे, अपना तम्बाकू और अन्य सामान भी बाँट लेते तथा सायंकाल सम्मिलित गान भी गा लेते। मेरा स्वर सुरीला था। हाँ, काश मेरी माँ न होती तो सब ठीक था—आनन्दप्रद भी क्योंकि इससे उसको बहुत दुख पहुँचा। वहाँ मैंने अन्यों से तथा सुप्रसिद्ध पेत्रोव से भी परिचय किया जिसने कि बाद में फोर्टरेस में काँच के टुकड़े से अपनी आत्महत्या कर ली। किंतु तब तक मैं क्रांतिकारी नहीं बना था। अपनी कोठरी की बगल के दो पड़ोसियों से भी मैंने परिचय कर लिया। वे भी उसी मामले में पकड़े गए थे तथा उन्हें पोलेण्ड की घोषणाओं के साथ गिरफ्तार किया गया था और उन पर इस बात का अभियोग चलाया गया था कि रेलवे स्टेशन जाते समय पथ-रक्षक-सैनिकों के पास से भाग निकलने की उन्होंने चेष्टा की थी। एक था पोलेण्ड वासी

लोजिन्स्की तथा दूसरा था यहूदी रोजोवस्की। हाँ, यह रोजोवस्की अभी नया लड़का ही था। वह कहता था कि मेरी अवस्था सत्तरह वर्ष है किंतु लगता था पन्द्रह वर्ष का ही। पतला, ठिंगना, चुस्त, प्रभावपूर्ण काले नेत्र तथा अन्य यहूदियों की ही भाँति बड़ा ही गवैया था वह। उसका स्वर अभी बदल रहा था किंतु फिर भी वह गाता अच्छा था। हाँ, मैंने उन दोनों को अभियोग चलाने के लिए ले जाते देखा। सुबह के गए जब वे शाम को लौटे तो बोले कि हमको मृत्यु-दण्ड दिया गया है। किसी को ऐसी आशा नहीं थी। उनके केस में कोई विशेष महत्त्व की बात नहीं थी। उन्होंने तो केवल इतना ही किया कि पथ-रक्षकों से बचकर भागने की चेष्टा की, उन्होंने किसी को आहत भी नहीं किया था। उसके उपरांत रोजोवस्की जैसे बच्चे को इस भाँति दण्ड देना स्पष्ट अन्याय था। तथा हम लोगों ने जो बन्दीगृह में थे, यह सोचा कि यह तो उन्हे भयभीत करने के लिए किया गया है तथा इसकी पुष्टि नहीं की जाएगी। पहिले तो हम लोगों में उत्तेजना फैल गई किंतु धीरे-धीरे वह शांत हो गई और जीवन पूर्ववत चलने लगा। और हाँ, एक दिन सायंकाल चौकीदार मेरे द्वार पर आकर मुझसे रहस्य-मय ढंग से बोला कि बढ़ई आ गए हैं और फाँसी के तख्ते तैयार कर रहे हैं। पहिले तो मैं समझा नहीं। क्या है ? कैसे तख्ते ? किंतु वृद्ध चौकीदार इतना उत्तेजित था कि मुझे स्पष्ट दिखलाई दे गया कि फाँसी हमारे ही—दोनों व्यक्तियों के लिए होने वाली है। मैं खटाखटा कर अपने साथियों से कहना चाहता था किंतु मुझे भय लगता था कि कहीं वे दोनों न सुन लें। साथी भी चुप थे। हर एक ने सुन ली। सारी शाम बरामदे में तथा कोठरियों में मौत की सी शांति छाई रही। न तो हमने दीवालें थपथपाईं न गीत ही गाए। दस बजे रात चौकीदार पुनः आया और बोला कि मास्को से जल्लाद आ गया है। यह कहकर वह लौट गया। मैं उसे वापिस बुलाने लगा। एकाएक मैंने बराम्दे के दूसरी ओर से रोजोवस्की की बुलाहट सुनी। 'क्या मामला है ?' 'क्यों बुला रहे हो ?' मैंने कहा कि तम्बाकू आदि मँगानी है। किंतु वह ताड़ गया। 'आज रात क्यों नहीं गाते हम लोग, क्यों नहीं दीवालों को बजा रहे हैं ?' मुझे स्मरण नही कि मैंने उसे क्या उत्तर दिया किंतु मैं वापिस लौट गया ताकि उससे बातें न करनी पड़ें। वह रात्रि बहुत भयंकर थी। रात भर पड़ा मैं सब प्रकार की आवाजें सुनता रहा। भोर होते ही, द्वारों के खुलने तथा कितने ही व्यक्तियों के चलने की आवाजें आईं। मैं अपने द्वार की झिरी पर गया। बरामदे में एक लैम्प जल रहा था। पहिले उधर

से इन्सपैक्टर निकला। वह पीला पड़ा हुआ था मोटा ताजा, दृढ़ और आत्म-विश्वासी प्रकृति का व्यक्ति। वह अत्यन्त उदास एवं भयभीत-सा लग रहा था। उसके बाद आया उसका सहायक। वह भी उदास था किंतु उसके चेहरे पर दृढ़ता वर्तमान थी। सबसे पीछे चौकीदार था। ये सब हमारे द्वार से निकलकर अगले कमरे के द्वार पर खड़े हो गए तथा मैंने सहायक को विचित्र स्वर से पुकारते सुना 'लोजिन्स्की उठो और साफ कपड़े पहिन लो!' हाँ, फिर मैंने द्वार के खुलने का शब्द सुना। वे लोग उसके कमरे में घुस गए। तब मुझे बराम्दे को पार करने की लोजिन्स्की की पदचापें सुनाई दीं। केवल इन्सपैक्टर ही मुझे दिखलाई दिया। वह बिल्कुल पीला पड़ा हुआ कभी अपने बटन लगाता कभी बन्द करता खड़ा हुआ था। हाँ! फिर मानो कि किसी बात से डरकर वह चला गया। उसके सामने से निकल मेरे द्वार पर लोजिन्स्की आया। आपको मालुम हो कि वह पोलिश जाति का एक सुन्दर स्वस्थ नवयुवक था। उसकी भौंहें चौड़ी-सीधी, सिर पर टोपी की भाँति घुघराले सुन्दर केश तथा उसके नेत्र नीले थे। कितना उठता हुआ, स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त नवयुवक था वह! वह मेरे द्वार की झिरी के सम्मुख रुका था इसीलिए मैं उसके सम्पूर्ण चेहरे को देख सका था। उसका मुख मुर्झाया हुआ, सूखा तथा बिल्कुल स्याह था। 'क्रील्तशोव!' उसने पुकारकर कहा 'क्या तुम्हारे पास कोई सिगरेट है?' मैं उसे कुछ सिगरेटें देने ही वाला था कि सहायक ने तुरन्त अपना सिगरेट-केस निकाल कर उसे दे दिया। उसने एक सिगरेट निकाल ली, सहायक ने तीली जलाई, उसने सिगरेट जलाई और पीने लगा। लगता था कि वह कुछ विचार कर रहा था। फिर मानो उसे वह बात याद आ गई। वह बोला 'यह अन्याय है, क्रूरता है। मैंने कुछ भी नहीं किया...मैं...' मैने देखा कि उसके श्वेत कंठ में कुछ कँपकपी-सी आई और मेरी दृष्टि उस पर जमी ही रह गई। वह चुप हो गया। हाँ, तभी मैंने रोजोवस्की को अपने यहूदी स्वर में जोर से चिल्लाते हुए कुछ कहते सुना। लोजिन्स्की ने सिगरेट फेंक दी और आगे बढ़ गया। अब रोजोवस्की मेरी झिरी पर आया। बच्चे की भाँति उसके निर्मल चेहरे की काली आँखें लाल तथा भींगी थीं। उसने भी सफेद कपड़े पहिने हुए थे। उसका पाजामा बड़ा था जिसे वह बारम्बार उकसा रहा था। वह काँप रहा था। झिरी के पास अपना दयनीय चेहरा लाकर वह बोला, 'क्रील्तशोव! क्या यह सत्य है कि डाक्टर ने मेरे लिए खाँसी की दवा लिखी है, क्यों, नहीं? मेरी तबियत ठीक नहीं है। मैं दवा और लूंगा।' किसी ने उत्तर नहीं दिया और

प्रश्नात्मक दृष्टि से वह कभी मेरी ओर तो कभी इन्सपैक्टर की ओर देखता। उसके कहने का क्या तात्पर्य था मैं आज तक न जान सका। हाँ! इन्सपैक्टर ने एका-एक अपनी आकृति कठोर बना ली और लगभग चीखते हुए सा बोला 'यह क्या परिहास है? चलो।' रोजोवस्की की समझ में नहीं आया था कि क्या होने वाला है और शीघ्रता से, लगभग दौड़ते हुए, वह बराम्दे को पार कर गया। किंतु फिर वह रुक गया और मुझे उसके रोने की आवाज तथा चीखें सुनाई देने लगीं। फिर सुनाई दी पैरों की धबधबाहट और भनभनाहट। वह चीख रहा था और रो रहा था। आवाजें मंदी होती चली गईं और अंत में द्वार खड़खड़ाया और फिर सब ओर शांति छा गई...हाँ। उनको फाँसी दे दी गई थी। दोनों के गलों में रस्सी का फंदा डाला गया था। एक दूसरे चौकीदार ने यह होते देखा था। उसने मुझे बतलाया कि लोजिन्स्की तो चुपचाप फाँसी के तख्ते पर चला गया किंतु रोजोवस्की ने बहुत देर तक आनाकानी की; इसलिए वे लोग उसे बलपूर्वक खींच कर तख्ते पर ले गए और उसके गले में फंदा डाल दिया। हाँ तो वह चौकीदार मूर्ख था। वह बोला 'लोग मुझसे कहते थे कि फाँसी बड़ी भयंकर होती है किंतु यह तो बिल्कुल भयंकर नहीं थी।' उन्हें जब लटकाया गया तब उन्होंने केवल दो बार इस तरह से कंधे झटकाए।'—उसने अपने कंधे मरोड़कर उठा और गिराकर मुझे दिखलाए—'तब जल्लाद ने थोड़ी-सी रस्सी खींची ताकि फंदा कस जाय और फिर सब समाप्त हो गया, वे न हिले न डुले।'"

और क्रील्तशोव ने चौकीदार के शब्दों को दोहराया "बिल्कुल भी भयंकर नहीं।" तथा मुस्कुराने की चेष्टा की किंतु मुस्कुराने की अपेक्षा वह फूट-फूट कर रो पड़ा। उसके बाद काफी देर तक वह कुछ बोला नहीं, निःश्वासें छोड़ता रहा तथा अपनी हिल्कियों को दबाता रहा।

"तबसे मैं क्रांतिकारी हो गया।" जब वह कुछ सम्हला तब बोला। उसने अपनी कथा थोड़े ही में समाप्त कर दी। वह नारोद्निक्स का रहने वाला था तथा उस 'भयंकर दल' का मुखिया भी था जिसका कि उद्देश्य था सरकार में आतंक उत्पन्न करना जिससे भयभीत होकर वह स्वयं शासन को जनता के हाथों में सौंप दे। इस उद्देश्य से वह पीतर्सबर्ग से कीव और वहाँ से ओदेसा तथा विदेशों तक घूमा था और प्रत्येक स्थान पर उसे सफलता प्राप्त हुई थी। उसके एक अत्यन्त विश्वस्त व्यक्ति ने उसे धोका दिया। वह गिरफ्तार हो गया, उस पर अभियोग भी चला तथा दो वर्षों तक बन्दीगृह में रखकर उसको मृत्युदण्ड दिया

गया किंतु उस दण्ड को आजीवन कठोर कारावास में बदल दिया गया।

बन्दीगृह में वह क्षय का शिकार हो गया तथा इस भाँति जिन परिस्थितियों में वह अब रहता था, कठिनाई से कुछ ही महीनों का अतिथि था। इससे वह परिचित था किंतु उस पर उसे दुख नहीं था। वह कहता था यदि मुझे दूसरा जन्म मिलेगा तो उसे भी मैं इसी भाँति व्यतीत करूँगा और इन परिस्थितियों का, जिनमें ऐसी घटनाएँ होती है जिन्हें मैंने देखा है, नष्ट कर दूँगा।

इस व्यक्ति की कहानी तथा उसके साथ की घनिष्ठता से नेखलूदोव को ऐसी बहुत-सी बातें मालूम हुईं जिन्हे कि वह अब तक नहीं समझ पाया था।

७

जिस दिन पथ-रक्षक अधिकारी की पड़ाव के स्टेशन पर बन्दियों के साथ कहा-सुनी हुई थी उस दिन नेखलूदोव, जो कि रात भर गाँव की सराय में रहा था, देर से सोकर उठा व कुछ देर तक पत्र लिखता रहा ताकि अगले स्टेशन पर डाल सके इसलिए उसे सराय से निकलने में नित्यप्रति से विलम्ब हो गया था। वह दल के पास सड़क पर नहीं पहुँच सका था; किंतु जब रात्रि का अँधकार छाने लगा तब कहीं जाकर वह अगले पड़ाव के गाँव में पहुँचा।

सराय में अपन शरीर पोंछने के बाद नेखलूदोव ने एक स्वच्छ कमरे में, जो कि कितनी ही मूर्तियों तथा चित्रों से सजा हुआ था, बैठकर चाय पी। इस होटल की मालकिन एक प्रौढ़ा थी जिसकी श्वेत गर्दन बहुत मोटी थी। नेखलूदोव वहाँ से उठकर शीघ्र ही कातूशा से भेंट करने की अनुमति प्राप्त करने के लिए एक अधिकारी के पास चल दिया।

पहिले छः पड़ावों में उसे किसी भी अधिकारी से इसकी अनुमति नहीं मिल सकी थी। यद्यपि कितने ही अधिकारी बदल चुके थे किंतु किसी ने भी नेखलूदोव को स्टेशन के अन्दर मिलने की अनुमति नहीं दी—'इस भाँति कातूशा से मिले उसे एक सप्ताह से अधिक हो गया था। यह कड़ाई इस आशंका से वर्ती गई थी बन्दीगृह का कोई बड़ा अधिकारी उधर से निकलने वाला था। जब यह अधिकारी दल की ओर देखे बिना ही चला गया तो नेखलूदोव को यह आशा हो आई जिस अधिकारी ने अब दल का दायित्व सम्हाल लिया है वह मुझे

माशलोवा से मिलने की अनुमति दे देगा जिस भाँति कि पहिले अन्य अधिकारियों ने दे दी थी।

सराय की मालकिन ने नेखलूदोव को पड़ाव के स्टेशन तक जाने के लिए अपनी बग्घी ले जाने की अनुमति दे दी क्योंकि पड़ाव गाँव के दूसरे सिरे पर था, किंतु उसने पैदल जाना ही पसंद किया। चौड़े कन्धों वाला हरकुलीस नामक एक युवक मजदूर स्वेच्छा से उसका पथ-प्रदर्शक बन गया। उसने अपने बड़े काले जूते पर हाल ही में कोलतार की पालिस की थी।

घने कुहरे से बादल छिप गया था तथा अंधकार इतना हो गया था यदि पास की खिड़कियाँ न खुली होतीं तो तीन पग आगे का युवक भी दिखलाई न देता किंतु उस गहरी दलदली कीचड़ में उसके उन भारी जूतों की आवाज सुनाई दे जाती थी। गिरजाघर के सामने के मैदान मे होकर उस लम्बी सड़क को पार कर, जिसके दोनों ओर पंक्तिबद्ध खिड़कियों से प्रकाश आ रहा था, अपने पथ-प्रदर्शक के साथ नेखलूदोव गाँव के अंधकारपूर्ण कोने में पहुँचा। किंतु वहाँ पड़ाव के स्टेशन पर रखे हुए लेम्प का प्रकाश कुहरे में से निकलता हुआ दिखलाई दे रहा था। ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा वह लाल रोशनी अधिक होती गई। अन्त में संतरी की चलती-फिरती शकलें दिखलाई देने लगीं। एक तख्ता, जिस पर सफेद और काली धारियाँ बनी थीं, और संतरी का अड्डा भी दृष्टिगत होने लगा।

उनके पहुँचते ही सदा की भाँति संतरी ने पुकारा "कौन जा रहा है ?" और यह देख कर कि ये लोग अपरिचित हैं उसने बेरुखाई से उन्हें दूर ही खड़ा कर दिया। किंतु नेखलूदोव तथा पथ-प्रदर्शक ने इस कड़ाई से साहस नहीं छोड़ा।

"अरे भई ! इतनी बेरुखाई क्यों ? तुम जाकर अपने अधिकारी को जगा दो, तबतक हम यहीं खड़े हैं।"

संतरी ने उन्हें उत्तर नहीं दिया और द्वार की ओर देख चिल्लाकर कुछ कहा फिर चौड़े कन्धोंयुक्त युवक को देखता रहा जो कि लेम्प के प्रकाश में एक पत्ती से नेखलूदोव के जूतों की कीचड़ छुड़ा रहा था। कटघरे के पीछे से स्त्री-पुरुषों की आवाजों की हम्बक सुनाई दीं। लगभग तीन मिनट में कोई वस्तु खड़की तथा कन्धों पर लबादा डाले एक सारजेंट अन्धकार से निकल कर लेम्प के प्रकाश में आया और बोला कि क्या चाहिए।

सारजेंट संतरी की भाँति कठोर नहीं था किंतु था वह बड़ा कौतूहलपूर्ण। उसने यह जानने का बहुत आग्रह किया कि नेखलूदोव अधिकारी से मिलना किसलिए चाहता है, और वह है कौन। उसका मतलब स्पष्ट था—वह कुछ इनाम चाहता था और इस अवसर को खाली नहीं निकलने देना चाहता था। नेखलूदोव ने कहा कि मैं एक विशेष कार्य से आया हूँ और इनाम देने को तैयार हूँ। क्या आप मेरा पत्र अधिकारी तक पहुंचा देंगे? सारजेंट ने पत्र लिया, सिर हिलाया और चल दिया।

कुछ देर बाद द्वार पुनः खड़खड़ाए तथा टोकरियाँ, बक्स, बोटें तथा थैले लिए स्त्रियाँ बाहर आईं। ये अपनी विचित्र साइबेरियन भाषा में जोर-जोर से बातें करती जा रही थीं। इनमें से किसी ने किसानू वस्त्र पहिन रखे थे; सबकी वेशभूषा शहरी थी तथा वे फर लगे लबादे एवं जाकिट पहिने हुई थीं। उनके गरारे ऊपर चढ़े हुए थे तथा सिरों पर उन्होने शॉल लपेटे हुए थे। उन्होंने लेम्प के प्रकाश से नेखलूदोव तथा उसके पथ-प्रदर्शक को कौतूहल से देखा। उनमें से एक तो उस चौड़े कंधे वाले युवक को देखकर प्रसन्न भी हो उठी तथा बड़े स्नेह से उसने उसे साइबेरिया की गालियों की एक खुराक पिला दी—

"तुम दानव, क्या कर रहे हो यहाँ पर? शैतान उठा ले जाय तुम्हें!" उसने उससे कहा था।

"मैं इन यात्री महोदय को मार्ग दिखलाने यहाँ तक आया हूँ।" युवक ने उत्तर दिया "और तुम यहाँ क्या लेकर आई थी?"

"दूध, दही की वस्तुएँ। और मैं सुबह और भी लेकर आऊँगी।"

"तुम्हे रात के लिए नहीं रोक लिया, क्यों?" युवक ने पूछा।

"धूर्त कहीं का। तेरा बुरा हो।" उच्च स्वर में स्त्री बोली और हँसने लगी "अहा! अच्छा तो चलो जरा गाँव तक हमारे साथ।"

युवक ने फिर कोई ऐसी बात कह डाली जिससे कि सब स्त्रियाँ ही नहीं वरन् संतरी भी हँस पड़ा; तब नेखलूदोव की ओर मुड़कर वह बोला :

"आपको रास्ता तो याद हो गया होगा? अब खो तो नहीं जायगे, खो जाओगे क्या?"

"नहीं, ठीक है, मैंने समझ लिया है।"

"गिरजाघर से निकलने पर दो मंजिले मकान के बाद दूसरा मकान है और यह लीजिए मेरी लाठी।" उसने नेखलूदोव से कहा तथा अपना डंडा, जो उससे भी ऊँचा था, उसे दे दिया; और अपने भारी जूतों मे कीचड़ उछालता वह स्त्रियों के साथ अन्धकार में अदृश्य हो गया।

स्त्रियों के साथ मिला हुआ उसका स्वर कुहरे में से सुनाई पड़ता रहा, जब द्वार पुनः खड़का तब सारजेंट आया और उसने नेखलूदोव को अपने पीछे चलने को निमंत्रित किया।

८

इस पड़ाव के भी चारों ओर साइवेरिया की सड़क के अन्यान्य पड़ावों की ही भाँति बरामदा था। नुकीले लोहों का एक कटघरा उसके चारों ओर लगा था। इसमें एकमंजिले तीन भवन थे। उनमें से जालीदार खिड़कियों युक्त एक सबसे बड़ा भवन बंदियों के लिए था, दूसरा था पथ-रक्षक सैनिकों के लिए, और तीसरा, जिसमें कि कार्यालय था, अधिकारियों के लिए था। इन तीनों मकानों की खिड़कियों में से प्रकाश निकल रहा था तथा अन्य सब प्रकाशों की भाँति प्रतीत होता था कि इनमें भी गर्मी होगी। किंतु यह बात गलत थी। मकानों की ड्यौढ़ियों पर लेम्प जल रहे थे तथा दीवालों के सहारे पाँच और भी लेम्प जल रहे थे जिनसे कि बरामदे में प्रकाश हो रहा था। नेखलूदोव को साथ लिए सारजेंट बरामदे में पड़े तख्ते पर चलकर सबसे छोटे मकान की ड्यौढ़ी पर आया। ड्यौढ़ी की तीन सीढ़ियाँ चढ़कर उसने नेखलूदोव को अपने सामने के कमरे में जाने दिया, जिसमें कि एक छोटा लेम्प जल रहा था तथा जो कि सिगरेट की गंध से परिपूर्ण था। स्टोव के पास एक सैनिक मोटे कपड़े की कमीज, टाई और काला पाजामा तथा पैर में एक बड़ा जूता पहिने समोवर में कोयले फूँक रहा था और दूसरे जूते से पंखे का काम ले रहा था। नेखलूदोव को देखते ही सैनिक ने समोवर छोड़ उसको चमड़े वाले कोट के उतारने में सहायता दी और फिर वह अन्दर चला गया।

"श्रीमान्‌जी! वह आ गए।"

"अच्छा तो उन्हें अन्दर भेज दो।" एक क्रुद्ध स्वर सुनाई दिया।

"इस द्वार से चले जाइए।" सैनिक ने कहा तथा फिर समोवर में

लग गया ।

दूसरे कमरे में, जिसमें लटकने वाले लैम्प का प्रकाश था, अधिकारी महोदय आस्ट्रियन जाकिट पहिने,जो उनके चौड़े सीने और कन्धों में तंग बैठती थी—लाल-लाल चेहरा तथा बड़ी मूछों युक्त—एक मेज के पास बैठे थे जिस पर कि दो बोतलें रखी थी तथा बचा-खुचा सामान पड़ा हुआ था । कमरे में तम्बाकू की गन्ध फैली हुई थी तथा किसी सस्ते से इत्र की सुगन्धि भी हल्की-हल्की आ रही थी । अधिकारी उठा और नेखलूदोव की ओर व्यंगपूर्ण सन्देहात्मक दृष्टि से देखने लगा ।

"कहिए क्या काम है ?" उसने पूछा । फिर उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वह खुले दरवाजे की ओर देखकर' चिल्लाया, "वरनोव ! समोवर ! तुम क्या कर रहे हो ?"

"अभी आया ।"

"मैं तेरी यह 'अभी' निकालता हूँ कि तुझे हमेशा याद बनी रहे ।" अधिकारी चिल्लाया और उसके नेत्र लाल हो उठे ।

"अभी लाया ।" सैनिक ने फिर चिल्लाकर कहा और समोवर ले आया ।

नेखलूदोव सैनिक के मेज पर समोवर रखने तक चुप रहा आया । इसके पश्चात् अपने छोटे नेत्रों से अधिकारी सैनिक की ओर तब तक कठोर दृष्टि से देखता रहा जब तक कि वह कमरे के बाहर चला नहीं गया । जान पड़ता था कि वह अपने नेत्रों से उस सैनिक के शरीर में ऐसे स्थान की खोज कर रहा था जहाँ कि उस पर आघात किया जा सकता हो ! सैनिक के बाहर चले जाने पर अधिकारी ने चाय बनाई और अपने सफरी झोले में से मदिरा पीने का एक चौखूंटा गिलास निकाला तथा कुछ बिस्कुट निकाले । ये सब वस्तुएँ मेज पर रखकर उसने नेखलूदोव की ओर देखा ।

"कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

"मैं एक बन्दिनी से मिलने की अनुमति चाहता हूँ ।" नेखलूदोव ने खड़े-खड़े कहा ।

"राजनैतिक बन्दिनी से ? इसकी कानूनन अनुमति नहीं है ।" अधिकारी ने कहा ।

'जिस स्त्री से मिलना चाहता हूँ वह राजनैतिक बन्दिनी नहीं है ।" नेख-

लूदोव बोला।

"जी, किंतु तशरीफ तो रखिए।" अधिकारी ने कहा।

नेखलूदोव बैठ गया।

"वह राजनैतिक नहीं, किंतु मेरी प्रार्थना पर उच्चाधिकारियों ने उसे राजनैतिक बन्दियों के साथ रहने की अनुमति प्रदान कर दी थी..."

"ओह, ठीक! मैं समझ गया!" अधिकारी बीच में ही बोल पड़ा— "कुछ साँवली-सी न! जी, वह हो जायगा। क्या आप सिगरेट नहीं पीयेंगे?"

उसने अपनी सिगरेट की डिब्बी नेखलूदोव की ओर बढ़ाई और दो गिलासों में चाय ढाल कर एक गिलास नेखलूदोव के सामने किया तथा बोला "आज्ञा है न?"

"धन्यवाद! मैं अभी मिलना..."

"रात लम्बी है। आपको बहुत समय मिलेगा। मैं आज्ञा दे दूंगा कि वह आपके पास भेज दी जाय।"

"किंतु क्या मैं उससे वहीं नही मिल सकता जहाँ पर कि वह इस समय है? उसे भेजने की क्या आवश्यकता है?" नेखलूदोव ने कहा।

"अन्दर राजनैतिक बंदियों में? यह नियम-विरुद्ध है।"

"मुझे कितनी ही बार अन्दर जाने की अनुमति प्राप्त हो चुकी है। यदि इस बात का कोई भय हो कि मैं वहाँ कोई वस्तु उन्हें दे दूंगा तो मैं इसे उसके द्वारा भी कर सकता हूँ।"

"आह नहीं! उसकी तलाशी ले ली जायगी।" अधिकारी ने कहा तथा भद्दे ढंग से हँसा।

"तब मेरी तलाशी क्यों न ले ली जाय?"

"ठीक है, हम इसके बिना भी कर देंगे।" अधिकारी ने मदिरा की बोतल खोलकर नेखलूदोव के चाय के गिलास की ओर बढ़ाई। "क्या थोड़ी-सी आपको दूं? नहीं? खैर जैसी आपकी इच्छा। यहाँ साइबेरिया में रहते हुए यदि कोई शिक्षित व्यक्ति मिल जाता है तो बड़ी प्रसन्नता होती है। हमारा काम बड़ा कठिन है आप जानते ही हैं और जब किसी की आदतें ही सुधरी हुई हों तो उसके लिए और भी कठिनाई हो जाती है। लोग हमारे विषय में सोचते हैं कि पथ-रक्षक-अधिकारी बड़े अक्खड़ और अशिक्षित होते हैं तथा कोई यह नहीं सोचता कि हम लोग

किसी बिल्कुल ही भिन्न कार्य के लिए भी पैदा हुए हो सकते हैं।"

नेखलूदोव को अधिकारी के लाल मुख, उसके इत्र, उसकी अँगूठियों तथा विशेषतया उसके हँसने के ढंग से घृणा हो गई। किंतु आज वह उस गंभीर और संयत मनोदशा में था, जो उसे किसी भी मनुष्य के प्रति घृणा या तिरस्कार से बातचीत करने की अनुमति नहीं देती थी वरन् उसे इस बात की आवश्यकता अनुभव करा रही थी कि मुझे प्रत्येक व्यक्ति से पूर्ण सन्तोष के साथ बातचीतें करनी चाहिए। उसकी यह अवस्था आज सारे दिन की यात्रा में रही। अधिकारी की बातें सुनकर उसने निष्कर्ष निकाला कि यह व्यक्ति अपने दायित्व में लिए हुए दुखियों को और भी अधिक कष्ट देता है।

"मैं समझता हूँ कि आपकी स्थिति में भी दुखियों की सहायता कर कुछ आराम प्राप्त किया जा सकता है।" उसने गम्भीरता से कहा।

"इनको कष्ट क्या है ? आप नहीं जानते कि ये लोग होते कैसे हैं।"

"ये कहीं अलग से आए हुए व्यक्ति तो हैं नहीं।" नेखलूदोव ने कहा "ये लोग भी ऐसे ही हैं जैसे कि अन्य लोग और इनमें से कुछ तो बिल्कुल निर्दोष हैं।"

"ठीक है; सब प्रकार के व्यक्ति होते हैं तथा स्वभावतः ही उन पर दया भी आती है। हममें से कुछ तो बिल्कुल भी रियायत नहीं करते किंतु मैं तो इनके कष्टों को, जहाँ तक सम्भव होता है, कम करने की चेष्टा करता रहता हूँ। मैं स्वयं कष्ट झेल लेता हूँ, इन्हें नहीं देता। दूसरे तो प्रत्येक बात में नियम का प्रयोग करते हैं, यहाँ तक कि गोली मारने में भी; किंतु मैं दया करता हूँ...एक प्याला और लीजिए।" उसने नेखलूदोव के लिए एक और गिलास भरते हुए कहा "और जिस स्त्री से आप मिलना चाहते हैं वह है कौन ?" उसने पूछा।

"वह एक अभागी स्त्री है जो एक वेश्यागृह में जा फँसी थी और वहाँ उसको विष देने के एक झूँठे अभियोग में फँसा दिया गया; किंतु है बहुत अच्छी स्त्री।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया।

अधिकारी ने अपना सिर हिलाया।

"हाँ ! ऐसा भी होता है। मैं आपको एम्मा के विषय में बतलाऊँ जो कि काज़ान में रहती थी। जन्म से वह हंगेरियन थी किंतु उसके नेत्र बिल्कुल ईरानियों के से थे।" इस स्मृति पर वह अपनी मुस्कान नहीं छिपा सका। वह कहता रहा "उसमें इतनी चतुराई थी कि वह क.उंटेस बन सकती थी।"

नेखलूदोव ने अधिकारी की बात काट कर अपना पहिला विषय ले लिया।

"मैं समझता हूँ कि आपकी सुपुर्दगी में जब ये लोग रहते है तब आप इनके कष्टों को कम भी कर सकते हैं और इस भांति कार्य करने में मुझे पूर्ण विश्वास हैं कि आपको बड़ा आनन्द प्राप्त होता होगा।" नेखलूदोव ने शब्दों का इतनी स्पष्टता से उच्चारण करने की चेष्टा की जितनी कि वह कर सकता था मानो वह किसी विदेशी से या बच्चे से बातें कर रहा हो।

अधिकारी ने चमकते हुए नेत्रों से नेखलूदोव की ओर देखा। वह इस बात की अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था कि नेखलूदोव चुप हो जाय ताकि वह ईरानी नेत्रों वाली हंगेरियन लड़की की बातें कह सके जो कि उसके नेत्रों के सम्मुख साकार हो उठी थी तथा जिसकी ओर कि उसका सारा ध्यान खिंच गया था।

"मुझे इसमें रुचि नहीं," नेखलूदोव बोला "और मैं आपको स्पष्ट बतला दूँ कि पहिले कभी मैं भी बिल्कुल दूसरे प्रकार से रहता था किंतु अब मै स्त्री के साथ इस प्रकार के सम्बन्ध से घृणा करता हूँ।"

अधिकारी ने नेखलूदोव की ओर भयभीत दृष्टि से देखा।

"क्या आप और चाय नहीं पिएंगे?'

"नहीं, धन्यवाद।'

"वरनोव!" अधिकारी चिल्लाया "श्रीमान्जी को वाकूलोव के पास ले जाओ। उससे कह देना कि वह आपको राजनैतिक बंदियों के अलग कमरे में पहुँचा दे; आप वहाँ निरीक्षण के समय तक रह सकते हैं।"

९

चपरासी के साथ नेखलूदोव बराम्दे में गया, जो कि लैम्पों के लाल प्रकाश से धुंधला-सा प्रकाशितथा।

"कहाँ को?" एक सैनिक ने चपरासी से पूछा।

"अलग कमरे नं०...में"

"तुम इधर से नहीं जा सकते, ताला बंद है। तुम्हें घूमकर दूसरे मार्ग से जाना होगा।"

"ऐसा क्यों ?"

"प्रधान गाँव में गए है, ताली उनके ही पास है।"

"अच्छा तो इधर से आइए !"

सैनिक ने नेखलूदोव को तख्तों के ऊपर से ले जाकर दूसरे द्वार पर पहुँचाया। द्वार पर से ही नेखलूदोव को अन्दर के स्वरों तथा हलचल का ऐसा कोलाहल सुनाई दिया जैसा कि मधु-मक्खियों के छत्ते पर बैठने में होती है; किंतु जब और भी समीप पहुँचा तब द्वार खुलते ही उसे चीखों, गालियों तथा हँसी की जोरदार आवाजें सुनाई दीं। उसने शृङ्खलाओं की खड़खड़ाहट सुनी तथा चिर-परिचित गंदी वायु का झोंका आया।

स्वरों की यह भनभनाहट, यह दुर्गंध तथा शृङ्खलाओं की झनकारें मिलकर नेखलूदोव के हृदय में एक यातनापूर्ण भावना उत्पन्न कर देती थीं और यह नैतिक घृणा ही शारीरिक घृणा उत्पन्न कर देती तथा ये दोनों भावनाएँ मिश्रित होते ही एक दूसरे को और भी अधिक बढ़ा देतीं।

घुसते ही सर्वप्रथम नेखलूदोव को एक बड़ा दुर्गंध युक्त टब दिखलाई दिया जिसके एक कोने पर एक स्त्री बैठी थी जबकि उसके सामने अपने घुटे सिर पर लिट्टीनुमा टोपी लगाए एक पुरुष खड़ा था। वे किसी विषय पर बातें कर रहे थे। नेखलूदोव को देखते ही पुरुष ने आँख मार कर कहा :

"जलप्रवाह को तो स्वयं जार भी नहीं रोक सकता।"

स्त्री ने अपना घाघरा नीचा कर लिया और शर्मा गई।

द्वार से ही एक बरामदा प्रारम्भ हो जाता था जिसमें कितने ही द्वार थे। पहिला तो पारिवारिक कमरा था, तब आया अविवाहितों का कमरा, फिर सबके अन्त में आए दो छोटे कमरे जिनमें कि राजनैतिक बंदी थे। ये कमरे सबसे अलग रखे गए थे।

इस भवन में एक सौ पचास बंदियों के लिए स्थान था, किंतु चार सौ पचास बंदियों के कारण यह इतनी बुरी तरह घिर गया था कि लोग बरामदों में भी पड़ गए थे। कुछेक तो फर्श पर बैठे या लेटे हुए थे तथा कुछ खाली केटलियों को लेकर बाहर जारहे थे अथवा उन्हें उबलते हुए पानी से भर कर लौट रहे थे।

बाद वालों में ही था तारास। वह लपक कर नेखलूदोव के पास आ गया, उसे बड़े प्रेम मे उसने अभिवादन किया। तारास का दयापूर्ण मुख उसकी नाक तथा उसके नेत्रों के नीचे चोट के निशानों से छिप गया था।

"तुम्हें क्या हो गया ?" नेखलूदोव ने उससे पूछा।

"कुछ-न-कुछ तो ही गया होगा।" तारास ने मुस्कुराते हुए कहा।

"जी हाँ ! ये लोग तो सदा लड़ते-भिड़ते ही रहते हैं।" सैनिक ने कहा।

"सब स्त्रियों के ही कारण है। तारास के साथवाले बंदी ने कहा— "अन्धे फेदका से उसका झगड़ा हो गया था।"

"और फेदोशिया कैसी है ?"

"अच्छी है ! मैं उसकी चाय के लिए पानी लाया हूँ।" उत्तर देकर तारास पारिवारिक कमरे में चला गया।

नेखलूदोव ने द्वार में से झाँक कर देखा। कमरे में स्त्री-पुरुष भरे पड़े थे—कुछ तो लकड़ी की बनी चारपाइयों के ऊपर और कुछ नीचे पड़े थे; सुखाने के लिए लटकाए गए कपड़ों से टपकते हुए पानी की धार से कमरा भींगा हुआ था तथा स्त्रियों की बातचीतों का कोई अन्त नहीं था। दूसरा द्वार अविवाहितों के कमरे में खुलता था। इसमें भी अच्छी खासी भीड़ थी। द्वार में और बाहर के रास्ते में आदमी रास्ता रोके बैठे थे और भींगे कपड़े पहिने हुए भीड़ लगाए शोर मचा रहे थे, या कुछ कर रहे थे, या किसी बात पर झगड़ा कर रहे थे। सार्जेन्ट ने समझाया कि वह बंदी, जो सामान खरीदने के लिए नियत किया गया था, खाने के पैसों में से जुआरी को दाम दे रहा था। उसने कुछ जीता था और कुछ बंदियों को उधार दिया था और उसके बदले में ताश ले रहा है। जब इन लोगों ने सैनिक तथा एक श्रीमंत व्यक्ति को देखा तो जो लोग सबसे नजदीक थे वे चुप हो गए और इन लोगों को द्वेष की दृष्टि से देखने लगे। इनमें ही नेखलूदोव ने फेदरोव को देखा, जिसको कि वह पहिचानता था और जो अपने साथ ऐसे लड़के को बराबर रखता था, जिसका चेहरा भरभराया हुआ तथा शक्ल भद्दी थी। एक नासिका-हीन और मुँहासे युक्त घृणित अवारा लड़के पर उसकी दृष्टि पड़ी जो कि इसलिए बदनाम था कि तराई में भागते हुए उसने एक साथी को मार डाला तथा उसका मांस खा लिया था। यह बदमाश रास्ते में अपने भीगे चोगे को एक कन्धे पर डाले नेखलूदोव को निर्भीकता से देखता हुआ खड़ा रहा। नेखलूदोव इसके पास से निकल गया।

नेखलूदोव को यद्यपि इस प्रकार के दृश्य देखने का अभ्यास हो गया था और पिछले तीन महीने में उसने इन चार सौ बंदियों को अनेक परिस्थितियों में कितनी ही बार देखा था, फिर भी जब कभी वह इन लोगों के पास जाता और इनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित देखता—जैसा कि आज देख रहा था—तब उनके प्रति अपने पाप तथा लज्जा की भावना से इसका हृदय व्यथित हो जाता था। लज्जा और पाप की इस भावना के साथ-साथ वीभत्सता और घृणा की एक अजेय भावना उसके हृदय में और भी पैदा होती थी। वह समझता था कि जैसी परिस्थिति में ये लोग हैं वैसी परिस्थिति में हर एक आदमी इन्हीं लोगों की तरह का बन जाता है। फिर भी वह अपनी घृणा की भावना को दबा नहीं सकता था।

जिस समय नेखलूदोव राजनैतिक बंदियों के कमरे के पास पहुँचा, उसने किसी को मोटी आवाज में कहते सुना "इस पेटू के लिए यह बड़ा अच्छा है।" वक्ता ने इसके साथ ही कुछ गंदी गालिया भी दीं तथा विद्वेष एवं अपमान से पूर्ण हँसी का ठहाका लगाया।

१०

जब वे अविवाहितों के कमरे को पार कर आगे बढ़े तब सारजेंट ने, जो कि नेखलूदोव के साथ ही आया था, नेखलूदोव से विदा माँगी और कहा कि मैं निरीक्षण से पूर्व ही लौट आऊँगा। सारजेंट के विदा होते ही अपनी शृङ्खलाओं को पकड़े हुए नंगे पाँवों एक बंदी जल्दी-जल्दी नेखलूदोव के पास आया और अपने पसीने की दुर्गंध से उसकी नाक सड़ाता हुआ बड़े रहस्यमय ढंग से बोला :

"श्रीमान्‌जी ! इस केस को आप अपने हाथ में ले लीजिए। उन्होंने लड़के को बिलकुल मूर्ख बना दिया; उन्होंने उसे धुत्त कर दिया और आज निरीक्षण के दिन उसने अपना नाम कारमानोव लिखा दिया है। इसे रोकिए श्रीमन्, हम लोग कुछ नहीं कर सकते, यह हमें तो जान से मार डालेंगे।" और सशंकित हो चारों ओर देखकर वह मुड़ दिया।

घटना इस प्रकार थी। कारमानोव नामक बंदी ने जिसको कि निर्वासन का दंड मिला था, एक ऐसे नवयुवक को, जो कि सूरत शक्ल में उससे बहुत मिलता जुलता था, फुसला लिया कि मेरा नाम बदल कर मेरे बजाय तुम खानों में काम

करने चले जाओ और मैं तुम्हारे स्थान पर निर्वासन में चला जाऊँगा।

नेखलूदोव को इस अदला-बदली के विषय में पता था। उसी बंदी ने उससे पहिले सप्ताह कह दिया था। उसने इस आशय से अपना सिर हिला दिया कि मैं तुम्हारी बात समझ गया हूँ और जो कुछ भी हो सकेगा करूँगा। और बिना इधर-उधर देखे वह सीधा चल दिया।

नेखलूदोव इस बंदी से परिचित था, जिसने कि उससे यह कहा था, तथा उसके कार्य-कलाप से उसे आश्चर्य हुआ। येकातेरीनबर्ग में इसी बंदी ने नेखलूदोव से यह अनुमति प्राप्त करने की प्रार्थना की थी कि मेरी पत्नी मेरे साथ चल सके। यह अत्यन्त ही साधारण किसान, मध्यम कद और तीस वर्ष के लगभग वय का था तथा उसे लूट एवं हत्या के अपराध में कठोर कारावास हुआ था। उसका नाम मान्कारदेवकिन था। उसका अपराध अत्यन्त ही विचित्र था। उसके विषय में उसने नेखलूदोव को बतलाया, "यह मैंने नहीं किया था किंतु शैतान ने मुझसे कराया था। मेरे पिता के घर पर एक यात्री आया। उसने गाँव से छब्बीस मील दूर के लिए हमारी स्लेज किराए पर ली। मेरे पिता ने मुझसे उस यात्री को पहुँचा आने के लिए कहा। मैंने घोड़ा कसा, कपड़े पहिने और यात्री के साथ चाय पीने बैठा। यात्री ने चाय पीते समय बतलाया कि वह विवाह करने जा रहा है और उसके पास मास्को से कमाकर लाए हुए पाँच सौ रूबल हैं। जब मैंने यह सुना तो मैं आँगन में गया और एक कुल्हाड़ा ले आया तथा उसे घास के नीचे रख दिया।

"और मैं स्वयं नहीं जान सका कि यह कुल्हाड़ा क्यों ले जा रहा हूँ।" वह बोला—" 'कुल्हाड़ा ले लो' उसने कहा और मैंने ले लिया। हम दोनों बैठ गए और गाड़ी चल दी। हम ठीक से चलते रहे। मुझे तो कुल्हाड़े की याद भी नहीं रही। खैर, हम लोग गाँव के पास पहुँचते जा रहे थे—केवल चार मील की दूरी रह गई थी। चौराहे से आगे बड़ी सड़क पहाड़ी पर जाती थी, और मैं उतर पड़ा। मैं स्लेज के पीछे चलने लगा और शैतान मुझसे बोला 'तुम सोच क्या रहे हो? पहाड़ी की चोटी पर पहुँचते ही सड़क पर लोग मिलेंगे और फिर आ जायगा गाँव। वह रुपए ले जाएगा; यदि तुम कुछ करना चाहते हो अभी कर डालो।' मैं स्लेज पर इस प्रकार झुका मानो घास को ठीक करना है और कुल्हाड़ा उछलकर अपने आप मेरे हाथ में आ गया। यात्री ने पीछे मुड़ कर देखा 'यह क्या कर रहे हो?' मैंने कुल्हाड़ा उठाया और उसे मारना चाहा किंतु वह फुर्तीला था, उछलकर जा कूदा और मेरे हाथ पकड़ लिए। 'यह क्या कर रहे हो, तुम शैतान?' उसने

मुझे बर्फ में पटक दिया और मैं उससे लड़ा भी नहीं और तुरन्त हार मान ली। उसने अपने पटके से मेरे हाथ बांध कर मुझे स्लेज में पटक लिया और सीधा पुलिस थाने ले गया। मुझे बंदी वना लिया गया और मुझ पर अभियोग चला। पंचायत ने मेरे चाल-चलन को अच्छा बतलाया और कहा कि मैं अच्छा आदमी हूँ तथा मेरे अन्दर कोई बुराई नहीं देखी गई है। जिस मालिक के यहाँ मैं नौकरी करता था उसने भी मुझे अच्छा बतलाया; किंतु हमारे पास वकील करने को रुपया था नहीं, अतः मुझे चार वर्ष का सश्रम कारावास हुआ।"

यह वही व्यक्ति था जिसने कि एक ग्रामीण साथी की रक्षा करने की भावना से, यद्यपि वह जानता था कि यह कहने में प्राणों का भय है, नेखलूदोव के सम्मुख एक बंदी का रहस्य खोल दिया। यदि इस बात का बंदियों को पता लग जाता तो वे उसका गला घोंट देते।

११

राजनैतिक बंदियों को दो छोटे कमरों में रखा गया था, जिनके कि द्वार इसी बरामदे में थे किंतु वहाँ एक दीवाल खींचकर उसे अन्य भाग से अलग कर दिया गया था। इस भाग में प्रविष्ट होते ही नेखलूदोव को रबड़ की जाकिट पहिने तथा हाथ में देवदार का एक लट्ठा लिए साइमन्सन स्टोव के पास बैठा दिखलाई दिया। लट्ठे को उसने स्टोव में दे रखा था, जिसका ढकना अन्दर की गर्मी के कारण हिल रहा था।

नेखलूदोव को देखते ही उसने उसकी ओर अपनी उभरी हुई भौंहों के नीचे से देखा और वहीं बैठे हुए उससे हाथ मिलाया।

"मुझे प्रसन्नता है कि आप आ गए। मैं आप से बातें करना चाहता हूँ।" उसने नेखलूदोव की ओर विशेष अभिप्राय से सीधे देखते हुए कहा।

"कहिए, क्या बात है ?"

"फिर कहूँगा, अभी तो मैं व्यस्त हूँ।"

और साइमन्सन फिर स्टोव की ओर मुड़ गया। वह स्टोव को अपने स्वयं के ऐसे सिद्धान्तानुसार जलाना चाहता था कि उसकी गर्मी कम-से-कम नष्ट हो। नेखलूदोव पहिले कमरे के द्वार में प्रवेश करने ही वाला था कि झुकी हुई माशलोवा

वर्च की एक झाड़ू से कूड़े-कचरे के बड़े ढेर को स्टोव की ओर झाड़ते हुए दूसरे द्वार से निकली। उसने सफेद जाकिट पहिन रखी थी, उसका गरारा ऊँचा उठा हुआ था तथा रुमाल भौंहों तक लिपटा हुआ था जिससे कि धूल उसके बालों पर न जम सके। नेखलूदोव को देखते ही वह सीधी खड़ी हो गई तथा लज्जा एवं उत्साह में उसने झाड़ू छोड़कर हाथों को गरारे से पोंछ डाला और उसके सामने आ खड़ी हुई।

"तुम यहाँ की सफाई कर रही हो, समझा।" नेखलूदोव ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

"जी ! वही पुराना धन्धा।" और वह मुस्कुराई "किंतु धूल ! आप सोच नहीं सकते कैसी होती है। हम इसे साफ पर साफ करते रहे हैं ! क्यों, क्या कम्बल सूख गया ?" उसने साइमन्सन की ओर मुड़कर पूछा।

"लगभग।" साइमन्सन ने उसे विचित्र दृष्टि से देखते हुए उत्तर दिया, जिसे कि नेखलूदोव ने ताड़ लिया।

"अच्छी बात है, मैं अभी आती हूं और उसे ले जाऊँगी तथा सुखाने के लिए लबादे लेती आऊँगी... हमारे सब लोग यहीं हैं।" उसने दूसरे कमरे में जाते हुए नेखलूदोव को पहिले कमरे की ओर इङ्गित करते हुए कहा।

नेखलूदोव ने द्वार खोला और छोटे कमरे में प्रवेश किया, जिसमें कि टीन का एक छोटा लैम्प दीवाल में फँसी आलमारी पर, जो कि चापपाई की भाँति प्रयोग करने के लिए बनाई गई थी, रखा हुआ था। कमरे में ठंड थी तथा थी धूल की (जिसको कि अभी जमने का समय नहीं मिला था), नमी की एवं तम्बाकू की गन्ध। टीन की लैम्प का तेज प्रकाश उसके पास बैठे हुए व्यक्तियों पर पड़ रहा था किंतु बिस्तरे अन्धकार में थे तथा काली छायाएँ दीवाल पर नाच रही थीं।

दो व्यक्ति, जिन्हें कि भण्डारी नियुक्त किया गया था, उबलता हुआ पानी लेने गए हुए थे किंतु अधिकांश राजनैतिक बंदी इस छोटे-से कमरे में एकत्र थे। यहाँ नेखलूदोव की पूर्व परिचिता, पहिले से पतली-दुबली पीली पड़ी हुई, विशाल-भयभीत नेत्रों से युक्त छोटे बालों वाली वेरा दुखोवा थी जिसके माथे की एक नस फूली हुई थी। वह भूरी जाकिट पहिने हुए तथा अपने सामने एक अखबार खोले बैठी हुई हाथों से सिगरेट बना रही थी।

एमीलिया रांतशेवा भी, जिसे कि नेखलूदोव राजनैतिक बंदियों में सबसे अधिक प्रसन्न मानता था, यहीं थी। वह घर का सा प्रबन्ध करती तथा कैसी भी

कठिन परिस्थिति क्यों न हो वह घर की सी सुविधा तथा आकर्षण उत्पन्न करने की चेष्टा करती। वह लैम्प के पास बाँहें ऊपर चढ़ाए बैठी हुई प्यालों और मग को धो रही थी तथा अपने कुशल, सुन्दर, धूप के तपे हाथों से आलमारी में बिछे हुए कपड़ो पर रख रही थी। रातशेवा सीधी-साधी दिखलाई देने वाली युवती थी। उसके मुख का भाव चतुर एवं विनम्र था। जब वह मुस्कुराती तब उसका मुख एकाएक प्रसन्न, उत्साहवर्धक एवं आकर्षक हो उठता। ऐसी ही मुस्कान से इस समय उसने नेखलूदोव का स्वागत किया।

"अरे! हमने तो सोचा था कि अब तक तो आप रूस वापिस चले भी गए होंगे।" वह बोली।

यहाँ एक कोने में अँधेरे में एक सुन्दर बालों वाली छोटी बच्ची को लिए, जो कि अपनी बच्चों की सी मीठी बोली में बड़बड़ा रही थी, मेरिया पावलोव्ना भी बैठी थी।

"कितनी अच्छी बात है कि आप आ गए।" मेरिया पावलोव्ना ने नेखलूदोव से कहा "क्या आपको कातूशा मिल गई? हम लोगों के यहाँ एक मेहमान भी है।" और उसने उस छोटी बच्ची की ओर इङ्गित किया।

यहाँ अनातोले क्रील्तशोव भी था। वह नमदे के जूते पहिने, झुका हुआ, दूर कोने में काँपता और अपने लबादे की आस्तीनों में हाथ छिपाए हुए पैर मोड़े बैठा था तथा अपने ज्वर-ग्रस्त नेत्रों से नेखलूदोव को देख रहा था। नेखलूदोव उसके पास जाना चाहता था किंतु दर्वाजे के दाहिनी ओर रबड़ की जाकिट पहिने, चश्मा लगाए तथा सिर पर लाल लटें फेंके एक आदमी सुन्दर मुस्कुराती हुई ग्राबेतस से बातें कर रहा था। यह व्यक्ति प्रख्यात क्रांतिकारी नोवोदिवोरोव था। नेखलूदोव ने उसे शीघ्रता से नमस्कार किया; उससे अभिवादन की शीघ्रता उसने इसलिए की कि इन समस्त राजनैतिक बंदियों में वही अकेला एक ऐसा व्यक्ति था जिसे वह पसन्द नहीं करता था। नोवोदिवोरोव के चश्मे के नीचे से नीले नेत्र चमक उठे तथा उसने भौंहें चढ़ाकर नेखलूदोव की ओर देखा और अपना पतला हाथ उससे मिलाने के लिए बढ़ाया।

"कहिए आपकी यात्रा तो सुखद रही?" उसने स्पष्ट व्यंग से पूछा।

"जी हाँ! दिलचस्प वस्तुएँ बहुत देखने में आ रही हैं।" नेखलूदोव ने उसका उत्तर इस भाँति दिया मानो कि वह प्रश्न विनम्रता से किया गया था तथा उस व्यंग को न समझ सका हो और फिर क्रील्तशोव की ओर बढ़ गया।

यद्यपि नेखलूदोव उदास दिखलाई देता था किंतु वह उदास था नहीं। नोवोदिवोरोव के शब्दों से प्रगट होता था कि वह कुछ अरुचिकर बात कहना अथवा करना चाहता था तथा इससे नेखलूदोव दया की जिस अवस्था में था उसमें अन्तर पड़ गया और वह दुखी एवं उदास हो गया।

"कहिए प्रसन्न तो हैं ?" उसने क्रील्तशोव के ठण्डे तथा काँपते हुए हाथ को दबाते हुए कहा।

"बहुत अच्छा, केवल सर्दी लग रही है; मैं बिलकुल भींग गया था।" क्रील्तशोव ने तुरन्त ही हाथों को अपने लबादे में ले जाकर कहा, "और यहाँ भी सर्दी बहुत है। देखिए सामने खिड़कियों के शीशे टूटे हुए हैं।" और उसने लोहे की छड़ों के पीछे खिड़कियों के टूटे शीशों की ओर इङ्गित किया। "और आपका क्या हाल है ? इतने दिनों से आप हम लोगों से मिलने क्यों नहीं आए ?"

"अधिकारी इतने कठोर थे कि मुझे आने की अनुमति ही नहीं मिली; किंतु आज अधिकारी महोदय कृपालु हैं।"

"कृपालु, सचमुच !" क्रील्तशोव बोला, "मेरिया से पूछिए, उसने सुबह क्या किया।"

मेरिया पावलोव्ना ने कोने में बैठे-बैठे इस बच्ची के सम्बन्ध की वह सारी घटना सुनाई जो आज पड़ाव के स्टेशन पर सुबह हुई थी।

"मैं समझती हूँ कि सामूहिक रूप से एक विरोध उठाने की नितांत आवश्यकता है।" वेरा दुखोवा ने दृढ़ स्वर में किंतु एक से दूसरे की ओर भयभीत एवं अनिश्चित दृष्टि से देखते हुए कहा, "व्लादीमीर साइमन्सन ने विरोध किया था किंतु यह पर्याप्त नहीं है।"

"कैसा विरोध चाहती हो ?" क्रील्तशोव ने क्रोध में भौंहें चढ़ाते हुए कहा। उसे वेरा दुखोवा में सरलता की कमी से, बनावटी ढङ्ग तथा घबड़ाहट से बहुत दिनों से घृणा हो चुकी थी।

"क्या आप कातूशा को खोज रहे हैं ?" उसने नेखलूदोव को संबोधित कर कहा, "वह सारा दिन काम करती रहती है। उसने पुरुषों के इस कमरे को साफ कर दिया है और अब स्त्रियों के कमरे को साफ करने गई है। बस मक्खी, मच्छर ये साफ नहीं हो सकते, ये तो आदमियों को कच्चा ही खा जाते हैं। और मेरिया वहाँ क्या कर रही है ?" उसने कोने की ओर देखते हुए कहा जहाँ कि मेरिया पावलोव्ना बैठी हुई थी।

"वह गोद ली हुई अपनी लड़की के बालों को कंघी कर रही है।" रांतशेवा ने उत्तर दिया।

"किंतु, कहीं जूँओं को तो यह हमारे ऊपर नहीं छोड़ देगी?" क्रील्तशोव ने पूछा।

"ओह नहीं; मैं बहुत सावधानी से काम करती हूँ। अब यह छोटी लड़की बड़ी साफ है। तुम लेना इसे।" उसने रांतशेवा की ओर मुड़कर कहा "तबतक मैं माशलोवा की सहायता करूँ। हाँ, मैं क्रील्तशोव का कम्बल भी लेती आऊँगी।"

रांतशेवा ने छोटी लड़की को अपनी गोद में बैठा कर उसकी उघड़ी मोटी बाँहों को अपने वक्ष पर मां की सी सहृदयता से चिपका लिया तथा उसे थोड़ी-सी चीनी दे दी।

मेरिया पावलोव्ना के कमरे से बाहर जाते ही दोनों आदमी उबलता हुआ पानी तथा सामान लेकर अन्दर आए।

१२

इन नवागन्तुकों में से एक तो ठिगना, पतला नवयुवक था जिसने भेड़ की खाल के ऊपर कपड़े की पट्टी लगा कोट पहिन रखा था तथा पहिन रखे थे लम्बेजूते। वह बड़ी सावधानी से तेजी से चलता हुआ अपने हाथों में दो केतलिया लेकर, जिनमें से भाप निकल रही थी, तथा अपनी बगल में दबाए कपड़े में लिपटी एक डबल रोटी ला रहा था।

"अच्छा तो हमारे प्रिन्स महोदय पुनः दर्शन देने आ गए।" उसने केतलियों को चाय के प्यालों के पास रख तथा रोटी रांतशेवा को देते हुए कहा। "हम बहुत सुन्दर वस्तुएँ खरीद कर लाए हैं।" अपना कोट उतार कर दूसरों के सिरों के ऊपर से आल्मारी में फेंकते हुए उसने कहा, "माइकेल ने दूध और अण्डे खरीदे हैं; अरे, आज रात अच्छा नाच गाना रहेगा। और रांतशेवा अपने सौन्दर्य की छटा छितरा रही है।" उसने कहा और रांतशेवा की ओर मुस्कुराते हुए देखा और अब आप चाय बनाएँगी।"

इस व्यक्ति के सारे व्यक्तित्व से—उसकी गतिविधियों, उसकी आवाज,

उसकी शकल—सबसे स्फूर्ति और आनन्द टपकता था। दूसरा नवागंतुक बिल्कुल उसका उल्टा था; वह उद्विग्न और उदास दिखलाई देता था। उसकी हड्डियाँ निकल रही थीं तथा गालों की हड्डियाँ बिल्कुल उभरी हुई थीं। उसका कद ठिगना, रङ्ग पीला, ओंठ पतले तथा नेत्र सुन्दर एवं हरे रङ्ग के तथा दूर-दूर थे। उसने फटा-पुराना कोट, लम्बे जूते, और उनके ऊपर गैलो पहिन रखे थे तथा दूध के दो पात्र तथा बर्च की लकड़ी के दो बक्से लेकर आया था, जिन्हें कि उसने रांतशेवा के सामने रख दिया। देखलूदोव की ओर देखते हुए गर्दन झुकाकर उसने उसे अभिवादन किया। फिर अनिच्छा से हाथ मिलाकर वह भोजन का सामान निकालने लगा।

ये दोनों राजनैतिक बन्दी साधारण वर्ग के थे। पहिला था नाबातोव नामक किसान, दूसरा मारकेल कोन्द्रेतेव नामक मजदूर। मारकेल तो जब पूरा आदमी बन गया तब क्राँतिकारी बना; नाबातोव ने अपनी अठारह वर्ष की आयु में ही सदस्यता स्वीकार ली। गाँव का स्कूल छोड़ने के बाद नाबातोव को अपनी योग्यता के कारण हाई स्कूल में जगह मिल गई। वहाँ पर दिन भर जो पढ़ता उसे पढ़कर अपनी आजीविका कमाता। पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् उसे स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। उसने विश्वविद्यालय जाने का विचार इस कारण त्याग दिया कि वह अपने उपेक्षित बन्धुओं की सेवाकर उनके कष्टों को हरना चाहता था। उसने यह निश्चय तब ही कर लिया जबकि वह नवम्, दशम् कक्षा में ही था। उसने एक बड़े गाँव में लिपिक बनते ही यह काम किया। उसको तुरन्त ही बन्दी बना लिया गया क्योंकि किसानों के उत्पादनों की उन्नति करने तथा उन्हें बेचने के लिए उसने एक सहकारी समिति बना दी थी। अधिकारियों ने उसे आठ माह तक बन्द रखने के बाद मुक्त कर दिया किंतु पुलिस की चौकसी तो उस पर बनी ही रही। मुक्त होते ही वह दूसरे गाँव में चला गया। वहाँ उसे एक स्कूल में अध्यापक नियुक्त कर दिया गया और वहाँ भी उसने वही किया जो कि पहले गाँव में किया था। उसे फिर गिरफ्तार कर लिया गया तथा चौदह महीने तक बन्दीगृह में रखा गया जहाँ कि उसके राजनैतिक विचार और भी पुष्ट हो गए।

इसके पश्चात् उसका निर्वासन पर्म के बंदीगृह में कर दिया गया, जहाँ से कि वह भाग निकला। फिर वह सात माह तक बन्दीगृह में रहा, और उसके पश्चात् उसे आर्वान्जेल्स्क निर्वासित कर दिया गया। वहाँ उसने नए ज़ार के प्रति स्वामिभक्ति की शपथ लेने से इन्कार कर दिया इसलिए उसे याकुतस्क बन्दीगृह में भेज दिया गया। इस भाँति उसका आधा जीवन तो कारा एवं निर्वासन में ही समाप्त

हो गया। इन सब घटनाओं से वह दुखी नहीं हुआ और न उसकी शक्ति ही कम हुई अपितु एक प्रकार से उसे बल ही मिला। वह बहुत प्रिय युवक था। उसकी पाचनशक्ति बहुत सुन्दर थी। वह सदा प्रसन्न, चुस्त और परिश्रमी रहता। वह किसी बात पर पश्चाताप नहीं करता, न कभी भविष्य ही की चिंता करता। वह अपनी समस्त शक्ति, अपना सारा व्यवहारिक ज्ञान वर्तमान में ही लगाता। जब अवकाश मिलता तब अपने ध्येय के लिए कार्य करता, जिसे कि उसने स्वयं नियत किया था—मजदूरों, विशेषतया गाँव के मजदूरों को संगठित करना, उनके कष्टों को कम करना। बंदीगृह में रहते हुए वह बड़े उत्साह से ऐसे सब व्यवहारिक साधनों को खोजता रहता जिससे कि बाह्य संसार से सम्पर्क स्थापित कर सके तथा अपने एवं अपने दल को उतनी सुविधाएँ दिला ही देता जितनी कि वर्तमान परिस्थितिओं में सम्भव हो पातीं। इन सबके ऊपर उसमें यह बात थी कि वह मिलनसार था—पञ्चायत का सदस्य था। लगता था कि उसे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए था, और वह बहुत थोडे ही में सन्तुष्ट हो जाता किंतु अपने साथियों के लिए वह खूब माँग करता और इस बात के लिए वह बिना कुछ खाये-पीए रात दिन शारीरिक अथवा मानसिक परिश्रम कर डालता। एक किसान के नाते वह परिश्रमी, आज्ञाकारी एवं अपने कार्य में दक्ष था। उसे अपने ऊपर बहुत नियन्त्रण था, बिना किसी श्रम के वह विनीत बना रहता तथा दूसरों की इच्छाओं के साथ-ही-साथ उनकी राय को भी बहुत ध्यान से सुनता। उसकी विधवा अशिक्षिता एवं अन्धविश्वासिनी वृद्धा माँ अभी जीवित थी और वह जब बंदीगृह से बाहर होता तो उससे मिलने जाता और उसकी सहायता करता। जब वह अपने घर पर रहता तब अपनी माँ के प्रत्येक कार्य में उसका हाथ बँटाता, अपने पुराने साथियों से बातचीतें करता, उनके साथ रहकर सस्ती सिगरेटें पीता, उनकी मुक्केबाजी में भाग लेता, और उन्हें समझाता कि तुम लोगों को किस भाँति धोका दिया जाता है, और किस प्रकार तुम्हें इस धोकेधड़ी से बचना चाहिए। जब वह यह विचार करता अथवा किसी से कहता कि क्रांति का क्या परिणाम होगा तब उसके मस्तिष्क में एक ही कल्पना होती कि क्रांति के पश्चात् वह वर्ग, जिसमें कि मैं उत्पन्न हुआ हूँ, लगभग उसी अवस्था में रहेगा जिसमें कि आजकल है, अन्तर केवल यह होगा कि इन लोगों को भूमि काफी मिल जाएगी और उच्चवर्ग तथा अधिकारीगण समाप्त हो जाएँगे। उसकी धारणा थी कि क्रांति से मनुष्यों के जीवन का मौलिक रूप नहीं बदलना चाहिए—इससे सारी परिपाटी ही न बदल डालनी चाहिए, किन्तु इससे तो समाज के सुन्दर, विशाल, प्राचीन ढाँचे की अंदरूनी दीवालों को ही

बदलना चाहिए। समाज का वर्तमान स्वरूप उसे बहुत प्रिय था। बस, इसी बात पर उसका नोवोदिवोरोव से तथा उसके शिष्य मारकेल कोन्द्रेतेव से मतभेद था।

धर्म के विषय में भी उसके विचार विचित्र ही थे। वह आध्यात्मिक प्रश्नों पर कभी विचार नहीं करता था, नविकास आदि के प्रश्न और भविष्य पर ही वह विचार करता। ईश्वर को वह (अरागो की भाँति) एक अनुमान मानता था—उसकी उसे कभी आवश्यकता पड़ी ही नहीं। उसे संसार के विकास से कोई मतलब नहीं था और न यही सोचता कि डारबिन या मूसा किसकी बात सही है। डारविन के सिद्धान्त को, जिसको कि उसके साथी बहुत महत्व देते, वह एक ऐसी ही खेल की बात समझता जैसी कि इस बात को कि संसार का निर्माण छह दिनों में हुआ है।

उसके सामने मुख्य प्रश्न था कि वर्तमान संसार में किस प्रकार सर्वश्रेष्ठ ढङ्ग से रहा जाय; इसलिए संसार कैसे बना इस प्रश्न में उसे रुचि नहीं थी। उसने भविष्य के विषय में कभी नहीं सोचा। उसके हृदय में अपने पूर्वजों से प्राप्त एवं सर्वसाधारण किसानों में प्रचलित एक दृढ़ विश्वास था कि जिस भाँति संसार में पौधे और पशु कभी समाप्त नहीं होते केवल अपना रूप बदलते जाते हैं—खाद अन्न में, अन्न मुर्गी में, मेढ़क का बच्चा मेढ़क में, अण्डा तितली में, छोटा वृक्ष ओक में—इसी भाँति मनुष्य का भी कभी अन्त नहीं होता; केवल उसके रूप में परिवर्तन हो जाता है। उसको इस बात में विश्वास था। अतः मृत्यु का सामना करने को वह सदा सन्निद्ध रहता तथा उन कष्टों का, जो कि मृत्यु की ओर ले जाते हैं, वह वीरतापूर्वक सामना करता किंतु उनके विषय में कहना-सुनना न तो वह जानता ही था और न उसकी चिंता ही करता था। वह काम से प्रेम करता था और हर समय किसी न किसी कार्य में व्यस्त रहता एवं अपने साथियों को भी इसी दिशा में प्रोत्साहित करता।

सर्वसाधारण लोगों के बीच से ही आया हुआ दूसरा बंदी मारकेल कोन्द्रेतेव बिल्कुल ही भिन्न प्रकृति का व्यक्ति था। उसने पन्द्रह वर्ष की ही अवस्था से काम करना प्रारम्भ कर दिया था तथा इस संदिग्ध भावना से कि मेरे साथ अन्याय किया जा रहा है तब ही से, मदिरा एवं सिगरेट पीना भी आरम्भ कर दिया था। अन्याय का अनुभव उसने तब किया जबकि एक बार बड़े दिन को उसके स्वामी की पत्नी ने सब मजदूर लड़कों को क्रिसमस वृक्ष के लिए आमन्त्रित किया था। वहाँ उसे एक सीटी, एक सेब, सोने के मुलम्मे का एक अखरोट तथा एक

अंजीर मिली थी जबकि स्वामी के बच्चों को ऐसी वस्तुएँ उपहार में मिली थीं, जो मानो स्वर्ग से आयी हों, तथा उनका मूल्य, जैसा उसे बाद में मालुम हुआ, पचास रुबल था। जब वह बीस वर्ष का था तब उनके कारखाने में एक विख्यात क्रांतिकारिणी मजदूरी करने आयी थी और उस क्रांतिकारिणी ने जब उसके अन्दर अच्छे गुणों का समावेश पाया तो उसे पढ़ने को किताबें एवं पर्चे देने आरम्भ किए तथा उसकी स्थिति को उसने समझाया और उसके सुधार का उपाय बतलाया। जब वह इस बात को समझ गया कि मैं तथा मेरे साथी इस निर्दयता से मुक्त हो सकते हैं तब उसे वर्तमान अवस्था के अन्याय पहिले की अपेक्षा अधिक उग्रयतर एवं क्रूरतर लगने लगे। उसकी बड़ी तीव्र अभिलाषा हो आयी कि केवल मुक्ति ही प्राप्त न की जाय वरन उन लोगों को दंड भी देना चाहिए जिन्होंने इस निर्दय अन्याय को उत्पन्न कर इसे कायम कर रखा है। उससे लोगों ने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने से इस बात की सम्भावना हो सकती है, और कोन्द्रेतेव ज्ञान प्राप्ति की ओर प्रवृत्त हो गया। उसकी समझ में यह बात नहीं आयी थी कि किस भाँति ज्ञान समाजवादी ध्येय को प्राप्त करा सकेगा, किंतु वह इस बात में विश्वास करता था कि जिस भाँति ज्ञान ने अन्याय को प्रगट कर दिया है उसी भाँति यह स्वयंमेव उसे नष्ट भी कर देगा। उसकी धारणा थी कि इसके अतिरिक्त ज्ञान मुझे दूसरों से समुन्नत कर देगा। इसलिए उसने मदिरा एवं सिगरेट को त्याग अपना खाली समय (जो कि स्टोर-रूम पर तैनात होने के बाद और भी बढ़ गया था) अध्ययन में लगा दिया।

क्रांतिकारिणी उसे पढ़ाती और उसकी प्रत्येक प्रकार के ज्ञान की पिपासा और उसकी ग्राह्य बुद्धि पर उसे आश्चर्य हुआ। दो वर्ष में उसने गणित एवं इतिहास (जिसमें कि उसे बहुत रुचि थी) को बहुत भलीभाँति पढ़ लिया तथा कविता, उपन्यास, आलोचनाओं और विशेषतया समाजवादी साहित्य से अच्छा खासा परिचय कर लिया।

क्रांतिकारिणी के साथ कोन्द्रतेव भी पकड़ा गया क्योंकि उसके पास जब्त पुस्तकें प्राप्त हुई। उन दोनों को बन्दी बनाकर वोलोग्दा कारागार में निर्वासित करके भेज दिया गया। यहाँ कोन्द्रेतेव नोवोदिवोरोव से परिचित हो गया और उसने बहुत सारा क्रांतिकारी साहित्य पढ़ डाला व याद कर लिया। अब वह अपने समाजवादी दृष्टिकोण के प्रति और भी कट्टर हो गया। निर्वासन के पश्चात् वह एक बड़ी हड़ताल का नेता बन गया। वह हड़ताल कारखाने का नाश कर बैठी तथा

डाइरेक्टर की हत्या हो गई। उसको पुनः गिरफ्तार कर निर्वासित कर दिया गया।

उसके धार्मिक विचार भी वर्तमान आर्थिक अवस्थाओं के उसके दृष्टिकोण के अनुसार अभावात्मक थे। जिस धर्म में वह पला था उसकी निरर्थकता देख कर उसने बड़े प्रयत्नों से उससे अपना पिंड छुड़ाया। पहिले तो वह इससे भयभीत होता था किंतु बाद में तो प्रसन्न हो गया था अब वह उस धोकेधड़ी का बदला लेने के लिए, जिसमें कि उसको और उसके पूर्वजों को रखा गया था, पादरियों तथा धर्म के सिद्धान्तों के प्रति विष उगलता ही रहता और उनका परिहास बनाया ही करता।

स्वभाव से वह तपस्वी था, बहुत थोड़े में संतोष कर लेता, तथा अन्यों की भाँति जो कि बचपन से कार्य करने के अभ्यस्त हैं तथा जिनकी माँशपेशियाँ सबल हो चुकी हैं, वह भी अधिक काम, फुर्ती और सुविधा से कर लेता; किंतु उसकी दृष्टि में सबसे मूल्यवान था बन्दीगृह और पड़ाव के स्टेशनों पर का खाली समय जिसके कारण कि वह अपना अध्ययन प्रारम्भ किए रहता था। इन दिनों वह कार्ल मार्क्स द्वारा लिखित पहिले भाग को पढ़ता था तथा उस पुस्तक को अपने बोरे में बड़ी सावधानी से छिपाकर रखता था मानो वह कोई बहुमूल्य कोष हो। वह नोवोदिवोरोव के अतिरिक्त अपने सब साथियों से लज्जा तथा अनुदारता से व्यवहार करता। नोवोदिवोरोव पर उसे अनन्य श्रद्धा थी और उसके तर्कों को वह अकाट्य मानता था।

वह स्त्रियों से अत्यन्त घृणा करता। उन्हें वह प्रत्येक अच्छे कार्य में रोड़ा समझता। किंतु माशलोवा पर उसे दया आ जाती थी। उसके साथ वह दयालु रहता क्योंकि उसे वह उच्चवर्गीय पुरुषों द्वारा साधारण वर्ग पर किए जाने वाले अत्याचारों का एक उदाहरण समझता था। उसी तर्क के कारण वह नेखलूदोव से घृणा करता, इसलिए उससे बातें कम करता, उससे कभी हाथ नहीं मिलाता किंतु अभिवादन के समय केवल अपना हाथ बढ़ा देता।

१३

आग जल निकली और स्टोव गर्म हो गया; चाय बन गई, प्यालों और मगों में डाल दी गई, उसमें दूध मिला दिया गया, और बिस्कुट, ताजे आटे

की रोटी, मक्खन, उबले हुए अंडे, और बछड़े का सिर तथा पैर वहाँ बिछे कपड़े पर रख दिए गए। सभी व्यक्ति पलङ्ग के उस भाग तक खिसक आए जिसे कि मेज की भाँति प्रयोग किया जाता था और वहाँ बैठ कर खाते पीते बातचीतें करने लगे। रांतशेवा एक बक्से पर बैठकर चाय दे रही थी। क्रील्तशोव के अतिरिक्त सब ही उसके चारों ओर बैठ गए। क्रील्तशोव ने अपना भीगा लबादा उतार दिया था तथा कम्बल ओढ़कर अपने बिस्तरे पर लेटा नेखलूदोव से बातें कर रहा था।

ठंडक और नमी में चलने, यहाँ की गंदगी और अव्यवस्था को ठीक करने, सब वस्तुओं को व्यवस्थित करने तथा कुछ खा कर गरम चाय पीने के पश्चात् इस समय सब लोग बहुत प्रसन्नचित्त हो रहे थे।

पैरों की धबधबाहट, साधारण बन्दियों की चीखें, चिल्लाहटें, जो दीवाल से होकर इनके कानों तक पहुँचती थीं उनको इस बात का स्मरण कराती थीं कि ये लोग किन परिस्थितियों में हैं। फिर भी इससे इनकी प्रसन्नता बढ़ती जाती थी, ये लोग थोड़ी देर के लिए कष्ट और पतन से घिरे होने पर भी अपने को अपमानित समझ रहे थे जैसे कि समुद्र में किसी छोटे से टापू पर बैठकर लोग सोचते हैं कि हम यहाँ सुरक्षित है। इससे इनकी प्रफुल्लता बढ़ी और इनमें उत्तेजना आ गई। ये लोग अपनी वर्तमान अवस्था और भविष्य को छोड़कर सब विषयों पर बातें कर रहे थे। जैसा कि साधारणतया युवक और युवतियों में हुआ करता है—विशेषतया उनमें जिनको कि इन लोगों की ही भाँति एकत्रित रहने के लिए बाध्य होना पड़े—कि आपस में उनमें प्रत्येक प्रकार के समझौते और विवाद तथा आकर्षण उत्पन्न हो जाता है उसी प्रकार इन लोगों में भी हो गया। लगभग प्रत्येक किसी-न-किसी से प्रेम करता था। नोवोदिवोरोव सुन्दरी ग्राबेतज के प्रेम में था। यह विवेकहीन नवयुवती थी। यह अध्ययन करने गई थी और क्रांति के प्रश्नों पर इसका बहुत मतभेद था किंतु न जाने किस भाँति समय के प्रभाव को इसने स्वीकार कर लिया और इसका निर्वासन हो गया। उसके जीवन का मुख्य स्वार्थ, जो कि अभियोग के मध्य, कारागृह में और निर्वासन में रहा, वह यह था कि पुरुषों पर विजय प्राप्त की जाए। यही ध्येय इसका तब था जब कि यह बंदिनी नहीं हुई थी। अब यात्रा में इसको इस बात से प्रसन्नता थी कि नोवोदिवोरोव उसे प्रेम करने लगा है और वह भी उसके प्रेम में पड़ गई। वेरादुखोवा, जो कि स्वयं प्रेम-परायण थी, दूसरों के अन्दर

प्रेम नहीं जाग्रत कर पाती थी, यद्यपि वह आशा करती थी कि कोई मुझसे प्रेम करेगा। कभी तो वह नाबातोव की ओर आकर्षित होती और कभी नोवोदिवोरोव की ओर। क्रील्तशोव को लगता था कि मुझे मेरिया पावलोव्ना से प्रेम की भाँति ही कुछ हो गया है। वह उससे पुरुष की भांति प्रेम करता था किंतु यह जानते हुए कि मेरिया इस प्रकार के प्रेम को किस दृष्टि से देखती है वह अपने प्रेम को मित्रता तथा इस आभार के प्रदर्शन के आवरण में छिपाता था कि वह आप मेरी बात को बहुत ध्यानपूर्वक सुनती हैं। नाबातोव और रांतशेवा इन दोनों में अनेक बन्धन थे। मेरिया पावलोव्ना निष्कलंक कुमारी थी, इसी भाँति रांतशेवा पतिव्रता थी।

जब उसकी अवस्था केवल सोलह वर्ष की थी तब वह पीतर्सबर्ग विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी रांतशेव के प्रेम में पड़ गई और उसने अपनी उन्नीस वर्ष की अवस्था में रांतशेव से उसके विश्वविद्यालय छोड़ने से पूर्व विवाह कर लिया था। विश्वविद्यालय के चतुर्थ वर्ष में उसका पति किसी विद्यार्थी आंदोलन के चक्कर में पड़ कर क्रांतिकारी हो गया तथा उसको पीतर्सबर्ग से निर्वासित कर दिया गया। उसने डाक्टरी का अपना अध्ययन छोड़ दिया और वह उसके पीछे चली गई तथा वह स्वयं भी क्रांतिकारिणी बन गई। यदि उसने अपने पति को सर्वाधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली न समझा होता तो वह उसके प्रेम में न पड़ी होती और यदि वह उससे प्रेम न करती होती तो उसके साथ विवाह न करती; किंतु उसके प्रेम में पड़कर तथा उससे विवाह कर, जिसे कि वह सर्वाधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली समझती थी, अपने जीवन को तथा ध्येय को स्वभावतः उसने उस दृष्टिकोण से देखा जिससे कि सर्वाधिक योग्य एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति देखा करते हैं। पहिले उसके पति का विचार था कि जीवन का ध्येय अध्ययन करना है अतः रांतशेवा ने भी अध्ययन को ही जीवन का ध्येय समझा। वह क्रांतिकारी हो गया इसलिए वह भी हो गई। वह यह बड़ी स्पष्टता से समझा देता था कि वर्तमान अवस्था स्थाई नहीं है और प्रत्येक का कर्तव्य है कि इस अवस्था से संघर्ष करे और ऐसी आर्थिक तथा राजनैतिक परिस्थितियाँ लाने का प्रयत्न करे जिनमें कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता से उन्नति करने का अवसर प्राप्त हो आदि आदि। और रांतशेवा को लगता कि यह बात बिल्कुल सही है किंतु वास्तव में उसका विचार तो यह था कि मेरा पति जो कुछ सोचता है बिल्कुल सही है। वह केवल पूरे-पूरे समझौते की, अपनी और उसकी आत्मा के पूर्णतः एकीकरण की इच्छुक थी क्योंकि केवल यही एक ऐसी अवस्था थी जिससे उसको नैतिक

संतोष पूरी तरह से प्राप्त हो सकता था।

अपने पति तथा अपने बच्चे (जिसको कि इसकी माँ ने ले लिया था) का वियोग बड़ा दुखद था किंतु रांतशेवा ने उसे अपने पति के कारण दृढ़ता से चुपचाप सहन कर लिया। वह जानती थी कि यह वियोग ऐसे काम के लिए है जिसके लिए उसके पति ने बलिदान किया है तथा जिसकी अच्छाई में तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता। उसके मस्तिष्क में पति का चित्र सदा वर्तमान रहता, किसी से भी अब उसे अधिक प्रेम नहीं था और न कर ही सकती थी। जितना प्रेम उसे अपने पति से था। किंतु नाबातोव के पवित्र एवं उत्कृष्ट प्रेम ने उसका हृदय स्पर्श कर उसे उत्तेजित कर दिया। इस दृढ़ और नैतिक पुरुष ने जो कि उसके पति का मित्र था उसे बहिन की भाँति अपनाना चाहा किंतु उसके व्यवहार में उसके अतिरिक्त रांतशेवा को कुछ और दिखलाई दिया तथा इससे वे दोनों भयभीत हो गए किंतु फिर भी उनके इस कठोर जीवन में रङ्ग आ गया।

अतः इस समस्त मंडली में केवल मेरिया पावलोव्ना और कोन्द्रेतेव इन प्रेम संबन्धों से मुक्त थे।

१४

सदा की ही भाँति चाय पीने के पश्चात् आज भी कातूशा से एकांत में बातचीतें करने का मौका मिलेगा इस आशा में नेखलूदोव क्रील्तशोव के पास बैठा हुआ बातचीतें कर रहा था। अन्य बहुत-सी बातों में उसने क्रील्तशोव को माकार के अपराध की कहानी तथा माकार की प्रार्थना बतलाई। क्रील्तशोव नेखलूदोव की ओर चमकते हुए नेत्रों से देखता हुआ उसकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था।

"जी हाँ।" वह एकाएक बोल पड़ा "मैं बहुधा सोचा करता हूँ कि हम इन लोगों के साथ-साथ ही चल रहे हैं—और ये लोग हैं कौन? ये वही लोग हैं, जिनके लिए हम जा रहे हैं और फिर भी हम उन्हें नहीं जानते और न जानने की चेष्टा ही करते हैं। किंतु इससे भी बुरी बात तो यह है कि वे लोग हमसे घृणा करते हैं और हमको अपना शत्रु मानते हैं। क्या यह बात भयंकर नहीं है?"

"इसमें कोई भयंकर बात नहीं है" नोवोदिवोरोव ने थोड़ा सा अंश सुनकर उसकी बात काटते हुए कहा "जनता सदा शक्ति की पूजा करती है केवल शक्ति

की। इस समय सरकार के हाथ में शक्ति है और ये लोग उसकी पूजा करते है व हमसे घृणा । कल शक्ति हमारे हाथ में होगी और ये हमारी पूजा करेंगे ।" वह बोला।

उसी समय शृङ्खलाओं की झनझनाहट और गालियों की वर्षा दीवाल के पीछे से सुनाई दी। मालूम होता था कि दीवाल पर कुछ थपथपाया जारहा है फिर सुनाई दीं चीखें और चिल्लाहटें । किसी को पीटा जा रहा था और कोई चिल्ला रहा था "हत्या ! बचाओ कोई !"

"सुनिए इन पशुओं की बातें ! हमारे और इनके जैसे लोगों के मध्य क्या मेलजोल हो सकता है ?" नोवोदिवोरोव ने शांति से कहा।

"आप इन्हें पशु कहते है और नेखलूदोव मुझे एक ऐसी बात बतला रहे थे " क्रील्तशोव ने उत्तेजित होकर कहा और सुनाने लगा कि माकार किस भांति अपने जीवन की बाजी लगाकर अपने गाँव के साथी को बचाने की चेष्टा कर रहा था। । "यह किसी पशु का कार्य नहीं, यह शूरवीरता है।"

"भावुकता !" नोवोदिवोरोव तिरस्कार से बोला, "इन लोगों की भावनाओं तथा उद्देश्यों को, जिनसे प्रेरित होकर ये कोई काम करते हैं, समझना बड़ा कठिन है। आपको दया दिखलाई दे रही है किंतु यह दूसरे बन्दी के प्रति ईर्ष्या भी हो सकती है।"

"यह क्या बात है कि आप किसी में कभी भलाई देखने की चेष्टा ही नहीं करते ?" मेरिया पावलोव्ना ने एकदम से बिगड़कर कहा।

"किंतु जब भलाई हो ही नहीं तो दिखाई कैसे दे सकती है ?"

"एक आदमी अपने प्राणों को भयंकर संकट में डाल रहा है—इसका अर्थ है कि इसमें सचमुच अच्छाई है।"

"एक विचार है" नोवोदिवोरोव बोला, "कि यदि हम कुछ करना चाहें तो पहिली शर्त है (इस समय कोन्द्रेतेव जिस पुस्तक को पढ़ रहा था उसने उसे रख दिया और अपने गुरु के शब्दों को ध्यान से सुनने लगा।) कि हमको अनुमान से बचना होगा और वास्तविकता को देखना होगा। हमको अपनी पूरी शक्ति लगाकर जनता के लिए सब कुछ करना चाहिए जो कि हम कर सकते हैं और बदले की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जनता तो हमारे कार्य कलापों का उद्देश्य हो सकती है-वह हमारी सहकारी तब तक नहीं हो सकती जब तक कि वह अज्ञान

की वर्तमान की अवस्था में है।" वह ऐसे बोलता रहा मानो भाषण दे रहा हो। "इसलिए जब तक कि यह उन्नति न करें, जिसके लिए कि हम लोग तैयारी कर रहे हैं, इनसे किसी बात की आशा करना है केवल भ्रम।"

"किस प्रकार की उन्नति ?" क्रील्तशोव ने लाल होकर कहा "हम लोग कहते हैं कि हम स्वेच्छाचारी अनियन्त्रित राजक्रम के विरुद्ध हैं, और क्या फिर भी यह अनियन्त्रित राज्यक्रम का सबसे भयानक रूप नहीं है ?"

"इसमें तनिक सा भी अनियंत्रण नहीं" नोवोदिवोरोव ने फिर शांति से कहा, "मैं तो केवल कह रहा हूँ कि मैं जानता हूँ कि जनता को किस मार्ग पर चलना चाहिए, और मैं उसे यह मार्ग दिखला सकता हूँ।"

"किंतु यह कैसे माना जा सकता है कि आपका बतलाया हुआ मार्ग ही सत्य है ? क्या यह उसी प्रकार का अनियंत्रण नहीं जिससे कि फ्रांस की राज्य क्रांति का आरम्भ और अन्त हुआ ? उन्होंने भी विज्ञान के द्वारा उस एकमेव मार्ग को जाना था।"

"उन्होंने गल्ती की इसका अर्थ यह नहीं कि मैं भी गल्ती कर रहा हूँ। इसके अतिरिक्त विचारों की बड़बड़ाहट में और अर्थशास्त्र पर आधारित सच्चाइयों में बड़ा अन्तर होता है।"

नोवोदिवोरोव का स्वर कमरे में गूज उठा, वह अकेला ही बोलता रहा और बाकी सब चुप हो गए।

"ये सदा ही झगड़ते रहते हैं।" मेरिया पावलोव्ना ने उस समय कहा जब कि क्षणभर के लिए चुप्पी छा गयी।

"और आपका इस विषय में क्या विचार है ?" नेखलूदोव ने उससे पूछा।

"मैं समझती हूँ कि क्रील्तशोव की यह बात सही है कि हमें जनता पर अपनी राय ठूसनी नहीं चाहिए।"

"और तुम कातूशा ?" नेखलूदोव ने मुस्कुराते हुए पूछा और इस भय मे कि वह कोई भद्दी बात कहेगी उसके उत्तर की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा।

"मैं समझती हूँ कि सर्व साधारण के साथ अन्याय किया जाता है।" कहते हुए वह लज्जा से लाल पड़ गयी "मैं समझती हूँ कि उनके साथ घोर अन्याय किया जाता है।"

"यह बात सही है, माशलोवा ने बिल्कुल ठीक कहा है।" नाबातोव ने उच्च स्वर में कहा "उनके साथ घोर अन्याय होता है—जनता के साथ—और उनके साथ अन्याय नहीं होना चाहिए तथा इसी में हमारे कार्य की सारी योग्यता है।"

"क्रांति के लक्ष्य का विचित्र दृष्टिकोण !" नोवोदिवोरोव ने क्रुद्ध होकर कहा और चुपचाप सिगरेट पीने लगा।

"मैं इससे बात नहीं कर सकता।" क्रील्तशोव ने धीरे से कहा और चुप हो गया।

"और न करना ही कहीं अच्छा है।" नेखलूदोव ने कहा।

१५

यद्यपि नोवोदिवोरोव का समस्त क्रांतिकारियों में बहुत आदर था और उसे बहुत विद्वान और बुद्धिमान समझा जाता था फिर भी नेखलूदोव उसकी गिनती उनमें करता जो कि क्रांतिकारी होते हुए भी साधारण नैतिक स्तर के व्यक्तियों से भी कहीं निम्न स्तर के होते हैं। इस व्यक्ति की—उसकी भिन्न में ऊपर की संख्या—बौद्धिक शक्तियाँ बड़ी थीं; किंतु अपने विषय में उसकी धारणा—भिन्न में रेखा के नीचे की संख्या—उससे कहीं बड़ी थी और उसकी बौद्धिक शक्तियों से कहीं आगे निकल गई थी।*

उसका स्वभाव साइमन्सन के स्वभाव से बिल्कुल विपरीत था। साइमन्सन मुख्यतः पुरुषवाचक व्यक्तियों से था जिसके कार्य तर्कों पर आधारित तथा उनसे ही निश्चित् होते थे। इसके विपरीत नोवोदिवोरोव, स्त्री-वाचक पुरुषों की श्रेणी का था, जिसका तर्क अंशतः तो कार्यों की भावनाओं से ध्येय प्राप्ति की ओर प्रवृत्त होता और अंशतः कार्यों की भावनाओं से—उनके औचित्य सिद्ध करने की ओर।

नोवोदिवोरोव अपनी क्रांतिकारी गतिविधिओं को यद्यपि बहुत सुन्दरता से, प्रभावोत्पादक ढङ्ग से समझा सकता था किंतु नेखलूदोव को प्रतीत हुआ कि

*उसका अर्थ इस भाँति समझना चाहिए नोवोदिवोरोव की—

बौद्धिक शक्तियाँ

अपने विषय में धारणा।

वे समस्त गतिविधियाँ उसकी महत्त्वाकांक्षाओं एवं महान् बनने की अभिलाषा के अतिरिक्त और किसी भावना पर आधारित नहीं हैं। दूसरों के विचारों को संग्रहीत कर उन्हें ठीक से व्यक्त करने की योग्यता ने पहिले तो उसे हाई स्कूल एवं विश्वविद्यालय के, (जहाँ कि उसके जैसे गुणवानों का बहुत सम्मान किया जाता है) अध्यापकों एवं शिष्यों के मध्य उसको उच्च स्थान प्रदत्त किया और वह संतुष्ट हो गया। किंतु अध्ययन समाप्त करने के बाद जब उसने अपना डिप्लोमा प्राप्त कर लिया और उच्चता समाप्त हो गई तो उसने क्षेत्र के व्यक्तियों पर अपनी उच्चता प्रदर्शित करने के लिए एकाएक अपने दृष्टिकोणों को बदल दिया (क्रील्तशोव ने जो उससे घृणा करता था, कहा था) और नरम दल से वह नारोदनीक्स का कट्टर अनुयायी बन गया।

नोवोद्विोरोव में वे नैतिक और कलात्मक गुण नहीं थे जो संशयों और दुविधाओं को जन्म देते हैं इसलिए वह बहुत ही शीघ्र क्रांतिकारी संसार में ऐसी स्थिति पर पहुँच गया जिससे कि उसे संतुष्टि हो गई—अर्थात् संस्था का एक नेता। एक बार कोई मार्ग चुनने के पश्चात् वह न कभी संदेह करता, न हिचकिचाता; और इसलिए निश्चित था कि कभी गलती नहीं खाता था। प्रत्येक वस्तु बिल्कुल सादा, साफ और निश्चित लगती थी। और उसके दृष्टिकोणों की संकुचितता तथा एकपक्षता ने सबको सादा और स्वच्छ कर दिया; व्यक्ति को तो केवल तार्किक होना चाहिए—वह कहता था। उसका आत्मविश्वास इतना अधिक था कि या तो व्यक्ति उसको घृणा करने लग जाते अथवा उससे हार मान लेते। उसकी सी प्रवृत्तियाँ बहुत कम उम्र के लोगों में हुआ करती थीं। वे लोग उसके आत्मविश्वास को उसकी गहराई तथा बुद्धिमत्ता समझते थे। अधिकांश लोग उसकी बात को चुपचाप मान लेते थे। क्रांतिकारी क्षेत्र में उसको बड़ी सफलता मिली। उसने एक विद्रोह की तैयारी करने और सारी शक्ति अपने हाथ में ले लेने का प्रयत्न किया। इसके लिए उसने एक अंतरंग सभा बुलाई। इस सभा के सामने उसने अपना कार्यक्रम पेश किया। उसको पूरा विश्वास था कि यह कार्यक्रम हर एक समस्या को हल कर देता है और यह अवश्य सफल रहेगा।

उसके साथी उसके साहस और दृढ़ता के कारण उसका आदर करते थे किंतु उससे प्रेम नहीं करते थे। वह किसी से प्रेम नहीं करता था और प्रत्येक व्यक्ति को अपना विरोधी समझता था। अगर उसकी चलती तो वह लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करता जैसा कि बड़ा बन्दर छोटे बन्दरों के साथ करता

है। वह अन्य सब व्यक्तियों की बौद्धिक शक्तियों, सारी योग्यताओं को छीन लेता ताकि उसकी योग्यता प्रदर्शन में कोई बाधा न डाल सके। वह केवल उन्हीं व्यक्तियों से अच्छा व्यवहार करता जो कि उससे दबते थे। अब, यात्रा में वह कोन्द्रेतेव से (जो कि उसके विचारों से प्रभावित था), वेरा दुखोवा से और ग्राबेतस से (जो दोनों ही उससे प्रेम करती थीं) मधुर व्यवहार करता था। यद्यपि सिद्धान्ततः वह स्त्रियों के आंदोलन के पक्ष में था किंतु केवल उनको छोड़ कर जिनसे कि वह प्रेम करता था (जिस भाँति कि वह ग्राबेतस से करता था अपने अन्तरतम में उन्हें मूर्खा और व्यर्थ समझता था। और ऐसी स्त्रियों को वह विशेष श्रेणी की मानता था। बस, वह स्वयं को ही उनके गुणों का निर्णय करने के योग्य समझता।

स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को 'स्वतन्त्र सम्पर्क' स्वीकार कर हाँ वह समझ लेता था कि समस्या का हल हो गया।

उसकी एक स्त्री नाम मात्र को थी और एक थी वास्तविक जिसको कि उसने इस निर्णय पर आकर, कि अब हम दोनों में सच्चा प्रेम समाप्त हो गया है, त्याग दिया था और अब ग्राबेतस के साथ स्वतन्त्र सम्पर्क में बँधना चाहता था।

नोवोदिवोरोव नेखलूदोव से घृणा करने का कारण बतलाता था कि वह माशलोवा से मूर्खता करता है किंतु विशेषतया तो वह वर्तमान परिस्थितियों में बुराइयों को दूर करने के नेखलूदोव के उपायों पर विचार करने की स्वतन्त्रता से घृणा करता था जो कि नोवोदिवोरोव के विचार करने के ढङ्ग से भिन्न थी। उसके विचारानुसार नेखलूदोव के विचार करने का ढङ्ग था शाही (अर्थात् मूर्खों का सा) नेखलूदोव उसके हृदय की भावना को समझता था और उसे दुख था, कि यद्यपि सारे रास्ते भर चारों ओर अनुकूल वातावरण मिला, फिर भी नोवोदिवोरोव को 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' सा उत्तर देना पड़ा।

१६

दूसरे कमरे से अधिकारियों की आवाजें आ रही थीं। सारे बन्दी चुप थे और सैनिकों के साथ एक सारजेंट प्रविष्ट हुआ। निरीक्षण होने वाला था। सारजेंट ने प्रत्येक को गिना, और जब नेखलूदोव की पारी आई तब उसने प्रसन्न स्वर में परिचितों की भाँति कहा :

"आपको निरीक्षण के पश्चात् नहीं रुकना चाहिए, प्रिन्स ! अब आपको चला जाना चाहिए।"

नेखलूदोव जानता था कि इसका अर्थ क्या है, वह सारजेंट के पास गया और उसके हाथ में तीन रुबल के नोट दे दिए।

"ओह अच्छा; आपका कोई क्या कर सकता है ! यदि आप चाहें तो थोड़ी देर और रुक जाइए।"

सारजेण्ट जाने ही वाला था कि एक दूसरा सारजेण्ट आया। उसके पीछे-पीछे एक बन्दी आरहा था। बन्दी पतला-दुबला था, उसकी दाढ़ी छोटी तथा उसकी आँख के नीचे चोट का एक निशान था।

"मैं एक लड़की को देखने यहाँ आया हूँ।" बन्दी ने कहा।

"डेडी आ गए !" एक बच्चे की चहकती आवाज आई, और रांतशोवा के पीछे से सुनहले केशों से युक्त एक सिर निकल पड़ा। रांतशोवा कातूशा और मेरिया पावलोव्ना की सहायता से अपने पेटीकोट में से बच्ची के लिए एक नया कपड़ा सीं रही थी।

"हाँ, बेटी मैं ही हूँ।" बन्दी बूजोवकीन ने मृदुल स्वर में कहा

"यह यहाँ बड़े मजे में है।" मेरिया पावलोव्ना ने बूजोवकीन की चोट को देखते हुए सहानुभूतिपूर्वक कहा "इसे हमारे ही पास रहने दो।"

"महिलाएँ मेरे लिए नए कपड़े बना रही हैं।" लड़की ने रांतशोवा की सिलाई की ओर इङ्गित कर कहा "अच्छी...सुउन्दर सी...ई !" वह कहती रही।

"क्या तुम हमारे पास सोओगी ?" रांतशोवा ने बच्ची से स्नेहपूर्वक पूछा।

"हाँ आँ ! और डेडी भी ?"

रांतशोवा के चेहरे पर एक मुस्कान थिरक गई।

"नहीं डेडी, नहीं। फिर यह हमारे पास रही आएगी।" उसने उसके पिता की ओर मुड़कर कहा।

"हाँ ! तुम इसे छोड़ सकते हो।" पहिले सारजेंट ने कहा और दूसरे के साथ चला गया।

जैसे ही सारजेंट कमरे से बाहर निकला, नावातोव बूजोवकीन के पास

पहुँचा और उसके कंधे को हाथ से हिलाकर बोला "मैं कहता हूँ" वृद्ध मित्र ! क्या यह बात सच है कि कारमानोव अदला-बदली करना चाहते हैं ?"

बूजोवकीन का दयापूर्ण कोमल मुख गम्भीर हो उठा और उसे प्रतीत हुआ कि किसी पर्दे ने मानो उसके नेत्रों की ज्योति मन्दी करदी ।

"हमें कुछ नहीं ज्ञात ।" उसने धीमे-से कहा और उसी प्रकार धुँधली आँखों से वह बच्ची की ओर घूमा ।

"अच्छा आक्सयूतिका ! मालुम होता है कि तुम महिलाओं के साथ बहुत आराम से हो ।" वह बोला और शीघ्र ही चल दिया ।

"अलदा-बदली की बात सत्य है, और वह भली भाँति जानता है ।" नावातोव बोला "आप क्या करेंगे ?"

"मैं अगले नगर में अधिकारियों से कह दूँगा । मैं दोनों बन्दियों को शक्ल से पहिचानता हूँ ।" नेखलूदोव ने कहा ।

सब लोग इस भय से चुप हो गए कि झगड़ा पुन: आरम्भ होगा ।

साइमन्सन जो हाथ लम्बे किए अभी तक चुप लेटा था उठा और बैठे हुए लोगों के पास से सावधानी से निकलता हुआ निर्णयात्मक रूप से नेखलूदोव के पास आया ।

"क्या अब आप मेरी बात सुनेंगे ?"

"निश्चय ।" और नेखलूदोव उठकर उसके पीछे चल दिया ।

कातूशा ने आश्चर्य से देखा और नेखलूदोव से नेत्र मिलते ही उसने लजा कर सिर हिला दिया मानो कि चक्कर में पड़ गई हो ।

"मुझे आपसे यह कहना है ।" साइमन्सन ने गलियारे में कहा । गलियारे में बंदियों की चीखों और बातचीत का कोलाहल अधिक तेज सुनाई दे रहा था । नेखलूदोव ने भौंहें चढ़ाईं किंतु साइमन्सन उससे प्रभावित नहीं हुआ । "आप तथा कातूशा माशलोवा के सम्बन्धों को जानते हुए," उसने गम्भीरता और निडरता से नेखलूदोव के चेहरे की ओर अपनी दयालु आँखों से देखते हुए कहा "यह मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ..." उसे रुकना पड़ा क्योंकि तब ही द्वार के समीप ही झगड़े की दो आवाजें सुनाई दीं ।

"मूर्ख, मैं कहता हूँ कि वे मेरे नहीं थे ।" एक ने चीखती आवाज में कहा ।

"तुम गला घोंट सकते हो, शैतान ! " दूसरा चिल्लाया ।

तब ही गलियारे में मेरिया पावलोव्ना आ गई ।

"यहाँ कैसे बातें हो सकती हैं ?" वह बोली "वहाँ चले जाइए; वेरा दुखोवा अकेली है ।" और वह दूसरे द्वार में होकर एक छोटे-से कमरे में प्रविष्ट हुई । यह कमरा तनहाई की कोठरी थी जो कि इस समय राजनैतिक बंदिनियों के लिए दे दिया गया था । वेरा दुखोवा अपना सिर तथा सारा शरीर ढके-ओढ़े लेटी थी ।

"उसके सिर में दर्द है और वह सो गई है अतः आपकी बातें नहीं सुन सकती और मैं जा रही हूँ ।" मेरिया पावलोव्ना बोली ।

"इसके विपरीत आप यहीं ठहरिए ।" साइमन्सन बोला "मेरा किसी से छिपाव नहीं और आप से तो बिल्कुल नहीं ।"

"ठीक है ।" मेरिया पावलोव्ना बोली और अपने सारे अंगों को बच्चों की भाँति इधर-से-उधर हिलाते हुए आलमारी के पीछे सुनने के लिए बैठ गई । उसके सुन्दर नीले नेत्र कहीं सुदूर में स्थिर थे ।

"खैर ! यह मेरा काम है ।" साइमन्सन ने दोहराया "आप और कातूशा माशलोवा के सम्बन्ध जानते हुए मैं समझता हूँ कि मुझे अपने और उसके सम्बन्धों को आपको बतला देना चाहिए ।"

नेखलूदोव साइमन्सन के बोलने की सरलता और निडरता की सराहना किए बिना न रह सका ।

"आपका तात्पर्य क्या है ?" उसने पूछा ।

"मेरा तात्पर्य है कि मैं कातूशा माशलोवा से विवाह करना चाहता हूँ ।"

"यह आप कहते है !" मेरिया पावलोव्ना ने अपने नेत्र साइमन्सन पर स्थिर करते हुए पूछा ।

"और इसलिए मैंने उसे अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर लिया है ।" साइमन्सन कहता रहा ।

"मैं क्या कर सकता हूँ ? यह उसके ऊपर निर्भर है ।" नेखलूदोव ने कहा ।

"हाँ, किंतु आपके बिना पूछे वह कोई निर्णय नहीं कर सकती ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि जब तक उसका और आपका सम्बन्ध क्या होगा इसका निर्णय नहीं हो जाता, वह कोई निर्णय नहीं कर सकती।"

"जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैंने अन्तिम निर्णय कर लिया है। मैं अपने कर्तव्य का पालन करना चाहता हूँ, साथ ही उसके दुर्भाग्य को कम करना भी। किंतु मैं उस पर पावंदी भी कोई नहीं लगाना चाहता।"

"हाँ! किंतु वह आपके त्याग को स्वीकार नहीं करना चाहती।"

"यह कोई त्याग नहीं है।"

"और मैं जानता हूँ कि यह उसका अंतिम निर्णय है।"

"तब फिर मुझसे पूछने की कोई आवश्यकता नहीं।" नेखलूदोव बोला।

"वह चाहती है कि आप इस बात को स्वीकार कर लें कि आप उसके विचार से सहमत हैं।"

"यह मैं कैसे स्वीकार कर सकता हूँ कि जिसे मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ उसे न करूँ? बस, मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ किंतु वह है।"

साइमन्सन चुप हो गया फिर कुछ देर विचार कर वह बोला :

"बहुत अच्छा, मैं उससे कह दूँगा। आप यह विचार न करें कि मैं उससे प्रेम करता हूँ।" वह कहता रहा "मैं उसे उस बेजोड़, महान जीव के रूप में प्रेम करता हूँ जिसने कि बहुत कष्ट उठाए हैं। मुझे उससे कुछ प्रतिदान नहीं चाहिए, मेरी तो परम अभिलाषा केवल यह है कि मैं उसकी सहायता करूँ...।"

नेखलूदोव को साइमन्सन के स्वर की कँपकँपी सुनकर आश्चर्य हुआ।

"अपनी स्थिति में सुधार करने के लिए" साइमन्सन ने कहा—"यदि वह आपकी सहायता स्वीकार करना नहीं चाहती तो उसे मेरी स्वीकार करने दीजिए। यदि वह स्वीकृति दे देगी तो मैं उसी स्थान पर जाने के लिए कह दूंगा जहाँ कि उसे बन्दी किया जायगा। चार वर्ष का समय अनन्तकाल नहीं। मैं उसके पास रहूँगा और शायद उसके दुःख हल्के कर सकूं..." और वह फिर रुक गया। वह इतना विह्वल हो उठा था कि बात जारी न रख सका।

„मैं क्या कहूँगा?" नेखलूदोव बोला "मुझे बहुत प्रसन्नता है कि उसे आपके समान एक रक्षक मिल गया—"

"यही मैं जानना भी चाहता था।" साइमन्सन ने बात काटकर कहा "मैं जानना चाहता था कि जब आप उसको प्रेम करते है, उसे सुखी देखना चाहते हैं, तो क्या आप इसे अच्छा समझेंगे कि वह मेरे साथ विवाह करले ?"

"जी हाँ।" नेखलूदोव ने निश्चयपूर्वक कहा।

"यह सब माशलोवा पर ही निर्भर है। मैं तो केवल यह चाहता हूँ कि इस दुखिया को कुछ शान्ति मिले।" साइमन्सन ने बच्चों जैसी एक कोमल भावना की भाँति कहा जिसकी कि किसी को भी ऐसे चिड़चिड़े दिखलाई देने वाले पुरुषों से सुनने की आशा नहीं हो सकती थी।

साइमन्सन उठा, नेखलूदोव के पास गया, लज्जा से मुस्कराया और उसका आलिङ्गन किया।

"ऐसा मैं उससे कह दूँगा।" वह बोला और चला गया।

१७

"आपका क्या विचार है ?" मेरिया पावलोव्ना बोली "प्रेम करता है, पूरी तरह से प्रेम करता है ! यह ऐसी बात है जिसकी कि मुझे कदापि आशा ही न थी—व्लादिमीर साइमन्सन प्रेम करता है, और वह भी इतनी मूर्खता से बच्चों की भांति ! यह आश्चर्य की बात है, और सच तो यह है कि बात बड़े दुख की भी है।" और उसने एक दीर्घ निःश्वास ली।

"किंतु वह—कातूशा ?" आपका क्या विचार है, वह इसे कैसा समझती है ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"वह ?" मेरिया पावलोव्ना रुकी। वह बिल्कुल सही उत्तर देना चाहती थी। "वह ? आपको तो मालूम ही है कि उसके अतीत के उपरान्त भी उसकी प्रकृति नितांत नैतिक है—और हैं बहुत ही सुन्दर भावनाएँ। वह आपसे प्रेम करती है, और ठीक प्रेम करती है, तथा वह इसी में प्रसन्न है कि आपके साथ नकारात्मक भलाई कर सके, अर्थात् आपको अपने साथ विवाह नहीं करने दे। आपके साथ विवाह होना उसका घोर पतन होगा—उसके समस्त अतीत से भी घोर पतन; और इसीलिए वह इसकी कभी स्वीकृति नहीं देगी। फिर भी न जाने क्यों आपकी उपस्थिति से वह बेचैन हो उठती है।"

"अच्छा तो मुझे क्या करना चाहिए ? क्या अदृश्य हो जाऊँ ?"

मेरिया पावलोव्ना अपनी बच्चों की-सी मृदुल मुस्कान से मुस्कुराती हुई बोली :

"हाँ। अंशतः ।"

"कोई अंशतः कैसे अदृश्य हो सकता है ?"

"मैं बकवास कर रही हूँ। किन्तु, जहाँ तक उसका सम्बन्ध है, मैं आपको बतला दूँ, कि शायद वह इसकी उन्मादपूर्ण प्रेम की मूर्खता को देखती है--इसने अभी उससे कहा कुछ नहीं है—और यह उससे प्रसन्न भी होता है तथा भयभीत भी। आप जानते हैं कि मुझमें ऐसे मामलों के समझने की योग्यता नहीं है; फिर भी मेरा विश्वास है कि साइमन्सन के प्रेम की भावना बिल्कुल साधारण पुरुषों की-सी है, यद्यपि है छिपी हुई। वह कहता है कि मेरा प्रेम मुझमें स्फूर्ति उत्पन्न करता है और निःस्वार्थ है। यदि यह अपवाद भी हो तो भी उसकी भूल में वही बदतमीजी है...वैसी ही जैसी कि नोवोदिवोरोव और ग्राबेतस के बीच है।"

मेरिया पावलोव्ना विषय से दूर हटकर अपने पुराने प्रिय विषय पर चली गई थी।

"खैर, मुझे क्या करना चाहिए ?" नेखलूदोव ने पूछा ।

"मेरे विचार से अपको उसे सब बतला देना चाहिए। प्रत्येक बात को साफ-साफ कह देना सर्वोत्तम रहता है। मैं उसे बुला दूंगी। उससे बात कर लीजिए। बुलाऊँ ?" मेरिया पावलोव्ना बोली।

"जी हाँ ! यह आपकी कृपा होगी।" नेखलूदोव बोला।

मेरिया पावलोव्ना चली गई।

कमरे में सोती हुई वेरा दुखोवा की हल्की श्वाँस, जो कभी-कभी कराहों के कारण टूट जाती थी, और उन दो द्वारों से, जो कि उसे बन्दियों को अलग करते थे, आते हुए कोलाहल को सुन लेने से एकाकी नेखलूदोव के ऊपर एक विचित्र भावना ने अधिकार कर लिया।

साइमन्सन की बातों ने नेखलूदोव को उसके स्वयं निश्चित किए गए कर्तव्य के भार से मुक्त कर दिया। यह कर्तव्य उसे अपनी दुर्बलता के क्षणों में बड़ा कठिन और विचित्र-सा दिखलाई देता था। फिर भी इस समय इस बात से उसका आनंद ही न नष्ट हुआ, अपितु उसे दुःख भी अनुभव हुआ। उसके हृदय में यह भावना

उठी कि साइमन्सन के इस प्रस्ताव ने उसके त्याग की विशिष्टता को नष्ट कर दिया है तथा इसलिए उसने मेरी तथा अन्यान्य व्यक्तियों की दृष्टि में उस त्याग का मूल्य घटा दिया है। यदि कोई इतना भला व्यक्ति माशलोवा के साथ किसी शर्त के बिना ही अपने भाग्य को उसके भाग्य के साथ बाँधने को सन्निद्ध हो तो उसके (नेखलूदोव के) इस त्याग का मूल्य ही क्या रह जाता था। इस भावना में साधारण द्वेष का भी कोई समिश्रण हो सकता था। वह कातूशा के प्रेम का इतना अभ्यस्त हो चुका था कि वह इस बात को स्वीकार भी नहीं करना चाहता था कि वह किसी अन्य से प्रेम कर भी सकती है।

फिर, इससे तो नेखलूदोव की माशालोवा के पास रहने की वे सब योजनाएँ ही समाप्त हो जाती थीं जो कि उसने उस समय बनाई थीं जब कि वह बन्दी-गृह में थी। यदि वह साइमन्सन से विवाह कर लेती है तो फिर नेखलूदोव की उपस्थिति अनावश्यक हो जाती है और उसे अपनी नई योजनाएं बनानी पड़ेंगी।

वह अपनी भावनाओं का विश्लेषण कर भी नहीं पाया कि द्वार खुला और उसमें होकर बन्दियों का शोर जोर से आने लगा (आज इन लोगों में कोई विशेष बात चल रही थी) और कातूशा वहाँ आ गई।

त्वरित गति से चलती हुई वह नेखलूदोव के पास आकर खड़ी हो गई।

"मुझे मेरिया पावलोव्ना ने भेजा है ।" वह बोली।

"हाँ, मुझे तुमसे एक बात कहनी है। बैठ जाओ। व्लादिमीर साइमन्सन से मेरी बातें हुई थीं।"

अपनी गोद में हाथ रखकर वह बैठ गई। वह बिल्कुल अविचलित थी किन्तु नेखलूदोव साइमन्सन का नाम ले भी नही पाया था कि लज्जा से लाल पड़ गई।

"उन्होंने क्या कहा ?" उसने पूछा।

"उसने मुझसे कहा कि वह तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता है।"

कातूशा का मुख दुख से सफेद पड़ गया। उसने अपने नेत्र नीचे कर लिए। किंतु बोली कुछ नहीं।

'वह मेरी सहमति अथवा राय माँग रहा था। मैंने उससे कह दिया है कि यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है कि तुम क्या निर्णय करती हो।"

"ओह ! इस सब का मतलब क्या है ? क्यों ?" वह धीरे-से बोली और सीधे उसके नेत्रों में उसी विचित्र कटाक्ष से देखती हुई बोली जिससे कि नेखलूदोव सदा प्रभावित हो उठता था। वे दोनों कुछ क्षण तक एक दूसरे के नेत्रों में झाँकने तक बिल्कुल शांत रहे आए और उस दृष्टि ने उन दोनों को बहुत कुछ बतला दिया।

"तुमको ही निश्चय करना होगा।" नेखलूदोव ने दोहराया।

"मुझे क्या निर्णय करना है ? प्रत्येक बात बहुत पहिले से निर्णीत है।"

"नहीं यह निश्चय तो तुम्हीं को करना है कि यदि तुम व्लादिमीर साइमन्सन के प्रस्ताव को स्वीकार करती हो।" नेखलूदोव बोला।

"मैं—एक बन्दिनी—किस भाँति की पत्नी हो सकती हूँ ? मैं व्लादिमीर साइमन्सन के जीवन को भी क्यों नष्ट करूँ ?" उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

'खैर ! यदि दण्ड क्षमा हो जाता है।"

"आह ! मुझे अकेली छोड़िए। बस, कहने-सुनने को और कुछ नहीं है।" कहकर वह कमरे से बाहर चलने को उठी।

१८

जब कातूशा के पीछे-पीछे नेखलूदोव पुरुषों के कमरे में प्रविष्ट हुआ तब उसने देखा कि वहाँ सभी उपस्थित व्यक्ति बड़ी उत्तेजित अवस्था में हैं। नावातोव जो प्रत्येक स्थान पर चला जाता था, प्रत्येक को जानता था, और प्रत्येक बात देखता रहता था, अभी-अभी एक ऐसा समाचार लाया था जिससे कि सब लोग थर्रा गए थे। समाचार यह था कि वह किसी दीवाल से चिपका हुआ एक पत्र ले आया जिसको कि क्रांतिकारी पेतलीन ने लिखा था। पेतलीन को सश्रम कारावास का दण्ड प्राप्त हुआ था और सब लोग यही समझते थे कि वह कभी का 'कारा, पहुँच गया होगा। और अब इससे सिद्ध यह हुआ कि अभी कुछ ही दिन पूर्व वह इसी मार्ग से गया था। उन साधारण बन्दियों के मध्य वही अकेला राजनैतिक बन्दी था।

"सत्रह अगस्त को।" पत्र में लिखा था "मुझे बन्दियों के साथ अकेला भेजा गया। नेवेरोव मेरे साथ था, किंतु वह काज़ान के पागलखाने में फाँसी लगाकर मर गया। मैं बहुत अच्छी तरह से और बड़े आनंद में हूँ। आशा है कि भविष्य में भी अच्छी प्रकार ही रहूँगा।"

सब लोग पेतलीन की स्थिति और नेवेरोव की आत्महत्या के कारणों पर विचार कर रहे थे। क्रील्तशोव ही अकेला ऐसा व्यक्ति था जो कि अपने सामने की ओर नेत्र स्थिर किए शान्ति से बैठा घूर रहा था।

"मेरे पति ने मुझसे कहा था कि जिन दिनों नेवेरोव पीटर और पॉल फोर्ट-रेस में रहता था, उसे एक दिवा-स्वप्न दिखलाई दिया था।" रांतशोवा बोली।

"हाँ, वह कवि था, भावुक था; ऐसे लोग तनहाई की कोठरी में नहीं रह सकते।" नोवोदिवोरोव ने कहा "जब मैं तनहाई की कोठरी में था, मैं कल्पना को अपने पास से नहीं जाने देता था; किन्तु किया यहकि उन दिनों को इतना व्यवस्थित कर डाला कि उस कष्ट को मैंने आराम से झेल लिया।"

"और आप क्यों नहीं कर सकते ? अरे, मुझे जब वे लोग बन्द करते तो मैं बहुत प्रसन्न होता।" नाबातोव ने उस मनहूसियत को दूर करने के लिए प्रसन्नता से कहना आरम्भ किया।" मनुष्य तो प्रत्येक बात से ही डरता है : गिरफ्तार होने से, दूसरों को फँसाने से, काम को बिगाड़ने से, और फिर वह हो जाय बन्दीगृह में बन्द तो उसके सब दायित्व समाप्त हो जाते हैं और वह आराम कर सकता है—आराम से बैठकर सिगरेट पी सकता है।"

"आप तो उससे भलीभाँति परिचित थे ?" मेरिया पावलोव्ना ने क्रील्तशोव के मुख के बदले हुए भाव को उत्सुकता से देखते हुए पूछा।

"नेवेरोव भावुक था ?" क्रील्तशोव ने, हाँफते हुए मानो कि बहुत देर से वह चीखता अथवा गाता रहा हो, एकाएक कहना प्रारम्भ किया। "नेवेरोव ऐसा आदमी 'जैसे कि दुनियाँ में इने-गिने ही होते हैं' जैसे कि हमारा द्वारपाल कहा करता है, उसके समान महान आत्मा कभी-कभी ही इस पृथ्वी पर अवतरित होती हैं। हाँ...उसका हृदय गंगाजल की भाँति निर्मल था, आप उसकी एक-एक बात देख सकते थे। वह झूँठ नहीं बोलता था; उसमें कपट भी नहीं था। न केवल उसकी खाल ही पतली थी अपितु उसकी एक-एक नस चमकती थी मानो कि उसकी खाल उतार ली गई हो.. वह इतनी अच्छी प्रकृति का व्यक्ति था कि उस जैसा......किंतु कहने से लाभ क्या ?" वह रुका फिर क्रोध से भौंहें चढ़ाकर बोला "हम इन्हीं बातों पर झगड़ा करते रहते हैं कि पहिले जनता को शिक्षित करना चाहिए और तब उसका सामाजिक सुधार अथवा पहिले सामाजिक सुधार; फिर हम इस पर वाद-विवाद करते हैं कि हमें किस भाँति संघर्ष करना है; शांति से प्रचार करके अथवा आतंक से ? हम वाद-विवाद करते रहते हैं। किंतु

वे वाद-विवाद नहीं करते, वे जानते हैं कि उन्हें क्या करना है; वे इस बात की चिंता नहीं करते कि कितने लोग समाप्त हो जाएँगे, दर्जनों अथवा सैकड़ों। और कैसे व्यक्ति! नहीं, वे चाहते हैं कि सर्वोत्तम व्यक्ति नष्ट हो जाँय। हाँ, हेरजेन कहता था कि जब दिसेम्बरिस्तो को समाज से अलग कर दिया गया तो हमारे समाज का औसत स्तर गिर गया। और मुझे मानना चाहिए कि वास्तव में बात ऐसी ही थी। तब हेरजेन तथा उसके साथियों को उठा लिया गया और अब कितने ही नेवेरोवों को..."

"किंतु उनको जड़ से नहीं मिटाया जा सकता" नाबातोव ने अपने प्रसन्न स्वर में कहा—"इतने तो हमेशा ही बच जाएँगे कि पैदावार में रुकावट न आए।"

"नहीं, यदि हम इन पर दया दिखलाते रहे तो एक भी नहीं बचेगा।" क्रील्तशोव ने अपने स्वर को और भी उच्च कर तथा अपनी बात को स्वयं न काट कर कहा, "मुझे एक सिगरेट तो दो।"

"ओह, अनातोले यह तुम्हारे लिए ठीक नहीं।" मेरिया पावलोव्ना बोली "कृपया धूम्रपान न करो।"

"आह। मुझे अकेला छोड़ो।" उसने क्रोध में कहा तथा एक सिगरेट जला ही ली, किंतु तुरंत ही उसे खाँसी आई और उबकाई आने लगी मानो कि वह फिर बीमार हो जाएगा। सम्हलते ही उसने पुनः कहना प्रारम्भ किया :

'जो हम लोग करते रहे हैं वह कोई कार्य नहीं है। हमें तर्क नहीं करने चाहिए, हमको संगठित होकर......उनको समाप्त कर देना चाहिए।"

"किंतु वे लोग भी मनुष्य हैं।" नेखलूदोव बोला।

"नहीं वे मानव नहीं; यदि होते तो ऐसे कार्य नहीं करते जो कि अब कर रहे हैं...नहीं...मैंने सुना है कि कुछ नए प्रकार के बम्ब और गुब्बारों का अनुसंधान, हुआ है। हाँ तो कोई गुब्बारे में बैठकर जाय और इन खटमलों पर बम्बों को तबतक छोड़ता रहे जबतक कि एक-एक न मर जाय...हाँ। ..क्योंकि..." वह अपनी बात बन्द नहीं करना चाहता था, किंतु बात कहते-कहते वह लाल पड़कर पहिले से भी अधिक खाँसने लगा और उसके मुँह से खून की उल्टी हो गई।

नाबातोव बर्फ लाने के लिए भागा। मेरिया पावलोव्ना बलेरियन का रस लेकर आई और उसे देने लगी; किंतु तेजी; से भारी-भारी साँस लेते हुए उसने

अपने सफेद हाथ से उसे हटा दिया और आँखें बन्द करलीं। जब बर्फ और ठंडे पानी से उसे कुछ आराम पड़ा और उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया, तब सबसे अभिवादन कर नेखलूदोव सारजेंट के साथ, जो कि उसकी थोड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहा था, बाहर चल दिया।

बन्दी अब शांत हो चुके थे और उनमें से बहुत से सो भी गए थे। यद्यपि बन्दीगण चारपाइयों के ऊपर उनके नीचे और उनके बीच के खाली स्थान पर लेट रहे थे किंतु फिर भी वे इतने अधिक थे कि कमरों में सारे नहीं समा सके और उनमें से कुछेक तो अपने बोरों का सिरहाना लगा सिरों को अपने भीगे लबादों से लपेटे गलियारे में जा सोए थे।

खुले द्वारों में से खर्राटे, कराहें तथा सोने की आवाजें आकर गलियारे में फैल रही थीं। प्रत्येक स्थान मनुष्यों के ढेर से पढे पड़े थे तथा वे बन्दीगृह के लबादों से ढके सो रहे थे। केवल थोड़े से वे आदमी ही जाग रहे थे जो कि अविवाहितों के कमरे में मोमबत्ती के पास बैठे हुए थे। उन्होंने सारजेंट को देखते ही बत्ती बुझा दी। एक वृद्ध जाग भी रहा था जो कि गलियारे में एक मोम-बत्ती के पास नंगा बैठा हुआ अपनी कमीज के जुएँ बीन रहा था। राजनैतिक बन्दियों के कमरे की गंदी वायु इन लोगों के यहाँ की वायु की तुलना में बिल्कुल स्वच्छ थी। लेम्प में से धुँआ निकल रहा था तथा उसका प्रकाश बहुत क्षीण था। वहाँ श्वांस लेना भी कठिन था। गलियारे में होकर जाने पर खाली जगह देखने के लिए बड़ी सावधानी करनी पड़ती थी और एक पाँव रखने के बाद दूसरे पांव रखने का स्थान खोजना पड़ता था। तीन आदमियों को गलियारे में स्थान नहीं मिला था अतः वे दुर्गन्धित टब के पास जाकर लेटे थे। इनमें से एक तो पुराना पागल था, जिसको कि नेखलूदोव ने दल के साथ कितनी ही बार चलते देखा था; दूसरा था लगभग दस वर्ष की वय का लड़का जो कि दो अन्य बन्दियों के मध्य लेटा हुआ था और उसका सिर एक बन्दी की टांग पर रखा हुआ था।

१६

आकाश निर्मल हो गया था और तारागण निकल आए थे। नेखलूदोव सराय पर वापिस पहुँचा और उसने एक अँधेरी खिड़की खटखटाई, उस समय तक

कुछेक स्थानों को छोड़कर सब जगह कीकीचड़ जम गई थी। चौड़े कन्धे वाले युवक ने आकर द्वार खोला और उसे घुसाया। दाँई ओर के द्वार से, जो कि पिछवाड़े में खुलता था, वहाँ सोए हुए गाड़ीवानों के खर्राटे के कर्कश स्वर सुनाई दे रहे थे और आँगन में खड़े घोड़े के दाने खाने की ध्वनि भी आ रही थी। अगले प्रकोष्ठ मे से, जहाँ कि ईसा की मूर्ति के सामने एक लाल लेम्प जल रहा था, पसीने की दुर्गन्ध आ रही थी तथा पर्दे के पीछे कोई स्वस्थ फेफड़ों वाला व्यक्ति खर्राटे ले रहा था। नेखलूदोव ने आकर कपड़े उतारे और अपने आइल-क्लोथ के सोफे के ऊपर सफरी तकिया रखा तथा अपना कम्बल फैला कर आज दिन की देखी-सुनी बातों पर विचार करता हुआ लेट गया। बन्दी की टाँग पर सिर रखकर सोते हुए लड़के का दृश्य, जो कि दुर्गन्धित टब से टपके हुए तरल पदार्थ पर सो रहा था, नेखलूदोव को सबसे अधिक वीभत्स लगा।

साइमन्सन और कातूशा के साथ आज शाम जो आकस्मिक वार्तालाप हुआ था वह महत्त्वपूर्ण था किंतु वह उस पर जमा नहीं। इस विषय में उसकी स्थिति इतनी गहन और अस्पष्ट थी कि उस विचार को उसने अपने मस्तिष्क से ही निकाल दिया। किंतु उन अभागों के चित्र, जो किं गंदी वायु में श्वाँस ले रहे थे और उस दुर्गन्धित टब से फैले तरल पदार्थ में सो रहे थे, विशेषतया उस बंदी की टाँग पर सोए हुए बालक का निर्दोष मुख का चित्र उसके सम्मुख उस दृश्य को और भी साकार कर गया कि वह उसे अपने मस्तिष्क से नहीं निकाल सका।

केवल इतना ही जान लेना कि कहीं, बहुत दूर, ऐसे व्यक्ति जो कि सब प्रकार के अपमानों तथा अमानवीय पतन एवं अन्यायों से दूसरों को तंग करते हैं; और तीन महीने तक लगातार इन मालिन्यों और कष्टों को देखते रहना—ये दोनों बातें बिल्कुल भिन्न हैं; और नेखलूदोव ने इस बात को अनुभव कर लिया कि इन तीन महीनों में उसने दो-तीन बार यह सोचा भीथा "जिन बातों को दूसरे नहीं देखते उन्हें देखने वाला मैं, पागल हूँ अथवा पागल वे हैं जो ऐसे काम करते हैं जिन्हें कि मैं देख रहा हूँ ?" फिर भी (वे और उनकी संख्या बहुत थी) ऐसे कार्य करते जो कि उसे अत्यन्त आश्चर्यजनक और भयानक लगते थे तथा करते इतने अधिक विश्वास से कि जो कुछ वे कर रहे हैं मानो कि आवश्यक, महत्त्वपूर्ण एवं लाभप्रद कार्य है। इसलिए यह विश्वास करना बड़ा कठिन था कि वे लोग पागल हो सकते हैं; न वह—अपने विचारों की स्पष्टता से परिचित होने के कारण—सोच सकता था कि मैं पागल हूँ। इससे वह निरन्तर भ्रम में पड़ा रहता।

इन तीन महीनों में उसकी देखी हुई बातों ने उसे इस भाँति प्रभावित किया था :

सब स्वतन्त्र व्यक्तियों के मध्य से वे ही व्यक्ति सरकारी आज्ञाओं अथवा अभियोगों के द्वारा छाँटे गए थे जो कि सर्वाधिक कायर, सर्वाधिक क्रोधी, सर्वाधिक उत्तेजित; सर्वाधिक बुद्धिमान तथा बलवान थे तथा जिनमें कमी बस इतनी ही थी कि वे चालाक अथवा सावधान नहीं थे। ये व्यक्ति उन व्यक्तियों से तनिक भी अधिक खतरनाक नहीं थे जो कि सरकार के चक्कर में नहीं फँसे थे। इन व्यक्तियों को कारागार में बन्द कर दिया गया था तथा उनका निर्वासन कर दिया गया था साइबेरिया में, जहाँ कि इनको प्रकृति से दूर, परिवारों से अलग, लाभप्रद कार्यों के अभाव में महीनों वर्षों तक डाले रखा जाता—अर्थात् इनको प्राकृतिक एवं नैतिक जीवन की समस्त आवश्यक परिस्थितियों से दूर रखा जाता था। यह रही, पहिली बात !

दूसरी, इन व्यक्तियों का इन संस्थाओं में सब प्रकार का अनादर किया जाता : शृङ्खलाएँ, घुटे सिर, और लज्जास्पद वस्त्र; अर्थात् इन लोगों को उन मुख्य उद्देश्यों से विलग कर दिया जाता था जिनके कारण पतित व्यक्ति सम्मिलित होने की चेष्टा करते हैं तथा जनता की राय का आदर, लज्जा की भावना और मानव की आदरणीय स्थिति के प्रति जागरूकता का अनुभव करते हैं।

तीसरी, बंदीगृहों में होने वाले छूत रोगों से, स्वास्थ्य के खराब होने से, मार खाने से (असाधारण स्थिति में होने वाली डूबने, जलने अथवा लू लगने की घटनाओं को कहने की आवश्यकता ही नहीं) इन लोगों का जीवन सदा भय में रहता है। ये लोग ऐसी हालतों में निरन्तर रहा करते हैं जिनमें कि सर्वश्रेष्ठ और अत्यधिक नैतिक पुरुष भी अपनी रक्षा के भाव से प्रेरित होकर सर्वाधिक क्रूर एवं भयानक कार्य करने पर उतारू हो सकते हैं (तथा अपने जैसों को क्षमा कर सकते हैं)।

चौथी, ये लोग ऐसे व्यक्तियों से मेल करने को बाध्य हो जाते हैं जो कि सबसे अधिक पतित स्वभाव के होते हैं और जिनको कि विशेषतया ये संस्थाएँ ही उस पतितावस्था तक पहुँचाती है। अर्थात् ये बलात्कारी, हत्यारे, तथा बदमाशों के सम्पर्क में आते हैं।

तथा पाचवीं, यह कि सब प्रकार की हिंसा, क्रूरता तथा अमानवीयता को सरकार न केवल सहन ही करती है वरन् जब इनसे उसका कोई कार्य बनता है

तो इनको खुली छूट भी देती है, इन सब लोगों के मस्तिष्क की गहराइयों में उन अमानवीय व्यवहारों को सहन करते करते यह बात गहरी जम जाती है और गहरी जम जाती है। बच्चों, स्त्रियों तथा वृद्ध पुरुषों को जो कष्ट मिलते हैं उनसे; बेंत और कोड़ों से मार लगाए जाने से; किसी भगोड़े को जीवित अथवा मृत पकड़ कर लाने के घोषित पुरुस्कारों से; दूसरों के पति-पत्नियों से व्यभिचार करने के लिए पति-पत्नियों के आपस के विच्छेदन और उनके परिवारों से विच्छेदन से; तथा गोली मारने और फाँसी देने से। इसलिए जिन लोगों की स्वतंत्रता अपहरण कर ली गई थी और जो कष्टों तथा अभावों में थे उनके हिंसा पूर्ण कार्य इससे अधिक सहन करने में असमर्थ प्रतीत होते थे।

ये सब संस्थाएँ, नीचता तथा पाप के उत्पादन इस और घनीभूत नीचता एवं पाप का प्रचार सारी जनता में करने के लिए ही निर्मित प्रतीत होती थीं।

"यह तो ठीक उस समस्या की भाँति है जिसमें कि अधिक-से-अधिक संख्या में लोगों को पतित करने का निश्चिततम साधन खोजना हो!" नेखलूदोव ने बंदीगृहों तथा पड़ाव के स्टेशनों पर होने वाली आंतरिक घटनाओं पर दृष्टि डालते हुए सोचा। प्रतिवर्ष सैकड़ों हजार लोग घोर पतनावस्था में पहुंचाए जाते हैं तथा जब वे उस पतन की अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं तो उनको बंदीगृह से लाया हुआ अपना नैतिक रोग प्रसारित करने के लिए उन्मुक्त कर दिया जाता है।

तीयूमेन, येकातरीनबर्ग, तोमस्क के बंदीगृहों तथा पड़ाव के स्टेशनों पर नेखलूदोव ने देखा था कि इस संस्था द्वारा जो ध्येय निश्चित किया गया है वह कितनी सरलता से इसे प्राप्त हो रहा है। रूसी समाज के, किसान, ईसाई मत के मानने वाले इन सीधे-साधे लोगों ने अपने धर्म को भूल कर बंदीगृह के अनुसार नया मत स्थापित कर लिया था, जो कि विशेषतया इस बात पर आधारित था कि यदि किसी भी प्रकार के क्रोध अथवा मानव की हत्या से हमको लाभ होता है तो वह न्यायपूर्ण है। बन्दीगृह में रहने के पश्चात इन लोगों ने अपने ऊपर बीतने वाली बातों को देखकर अपने समस्त हृदय से यह निश्चय कर लिया था कि चर्च एवं महंतों द्वारा बतलाई हुई शिक्षा की बातें, कि दूसरों का सम्मान करना चाहिए, उनसे सहानुभूति करनी चाहिए, वास्तविक जीवन में कोई स्थान नहीं रखतीं और इसीलिए वे भी उस कानून को बनाए रखने की कोई आवश्यकता नहीं समझते। नेखलूदोव ने इस बात का प्रभाव अपनी जान पहिचान के समस्त बंदियों मे देखा—फ्योदोरोव में, माकार में, यहाँ तक कि तारास में भी, जिसने

कि दो महीने के अपने बन्दी जीवन में नेखलूदोव को नैतिक ह्रास की एक बात से आश्चर्य चकित कर दिया। उसे अपनी यात्रा में मालूम हुआ कि जो पैदल चलने वाले लोग दलदलों में भाग जाएँगे वे अपने साथियों के साथ बच निकलने के लिए उनका पीछा करेंगे, फिर उन्हें मार डालेंगे और उनके गोश्त को खाएँगे। (वह इस प्रकार के अभियोग में बन्दी बनाए हुए एक व्यक्ति से मिला भी था और उस बन्दी ने इस बात को स्वीकार किया था)। और सबसे भयानक बात तो यह थी कि नर-माँस-भक्षण का यही एक मामला नहीं था किंतु इस भाँति की बातें निरन्तर होती रहती थीं।

इन संस्थाओं में चलने वाले पाप की यदि विशेष प्रवृत्ति किसी रूसी में उत्पन्न कर दी जाय तो वह इन राक्षसों की-सी अवस्था में पहुँच जाएगा। ये राक्षस जो कि नीत्सचे की नवीनतम शिक्षाओं की प्रत्येक बात को भी अधिकार योग्य समझकर तथा किसी बात को भी निषेधात्मक न मानकर उससे भी आगे बढ़ गए हैं तथा इस शिक्षा को पहिले तो बन्दियों में फैलाते हैं फिर सर्वसाधारण लोगों में।

जो कुछ किया जा रहा था उसका एकमात्र अर्थ यह था कि इसका उद्देश्य अपराधों को रोकना है, भय उत्पन्न करना है, अपराधियों का सुधार करना है, तथा उनकी "बदले की भावना को अहिंसक करना है" जैसा कि पुस्तकों में लिखा हुआ है। किंतु वास्तव में इन परिणामों से मिलता-जुलता कोई परिणाम नहीं निकला। रुकने के स्थान पर पाप बढ़ता गया; बन्दियों को भयभीत नहीं किया जा सका, उल्टे वे प्रोत्साहित हो गए (बहुत से पैदल स्वयंमेव ही बन्दीगृह में लौट आए); सुधार होने की अपेक्षा प्रत्येक प्रकार के अपराध को वैज्ञानिक ढङ्ग से व्यवस्थित कर लिया गया; बदले की भावना सरकार के कार्यक्रमों से कम नहीं हुई वरन् बूँद-बूँद कर मनुष्यों के हृदय में प्रवेश कर गई—उन मनुष्यों में जिनके लिए कि वह स्वाभाविक नहीं थी।

"तब ऐसा किया क्यों गया?" नेखलूदोव के मन में प्रश्न उठा किंतु उसका उत्तर कोई नहीं मिला।

और सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह लगती थी कि यह सब आकस्मिक नहीं हुआ था, न गलती से ही हुआ; और न केवल एक ही बार होकर रह गया था किंतु यह तो निरन्तर शताब्दियों से होता चला आया था। अन्तर केवल इतना पड़ा था कि पहिले तो लोगों की नाक छेद दी जाती थी और

कान काट लिए जाते थे; उसके बाद ऐसा काल आया जिसमें कि लोगों को लोहे की छड़ों से बाँध दिया जाता था; और अब उनके हाथों में हथकड़ियाँ डालकर गाड़ियों के बजाय स्टीम बोटों से निर्वासित किया जाता है।

सरकारी नौकरों का तर्क था कि इस असंतोष का प्रधान कारण है बन्दीगृहों की अधूरी व्यवस्था और यदि आधुनिकतम बन्दीगृह बना दिए जाएँ तो सब बातें ठीक हो जाएँगी। नेखलूदोव को इस तर्क से संतोष नहीं हुआ क्योंकि वह जानता था कि मेरा असंतोष बन्दीगृहों की अच्छी अथवा बुरी व्यवस्था का परिणाम नहीं है। आदर्श बन्दीगृहों के विषय में वह पढ़ चुका था उनमें बिजली की घंटियाँ होंगी तथा टार्डे के अनुसार बिजली द्वारा ही फाँसी दी जाएगी। इस निखरी हिंसा से उसे और भी अधिक घृणा उत्पन्न हुई थी।

किंतु सबसे अधिक घृणा तो उसे इस कारण हुई थी कि न्यायालय और मंत्रालय में जनता के पैसे से बड़े-बड़े वेतन प्राप्त करने वाले वे व्यक्ति थे, जो कि अपने जैसे ही अन्य अधिकारियों द्वारा लिखी हुई पुस्तकें देखते, उन्हीं अधिकारियों की पुस्तकें जो उनके समान ही ध्येय से प्रेरित थे, इस कार्य अथवा उस कार्य मे यह नियम उचित बैठता है, वह नियम इस प्रकार से लिखे को काटता है, और फिर उन नियमों के पालन में, फलाँ कार्य के अपराध में वह उनको ऐसे स्थानों पर भेज देते हैं जहाँ कि वे उनको देखने नहीं जाते; किंतु उन्हें वे कठोर इंसपैक्टर, वार्डर, पथ-रक्षक-सैनिकों की दया पर पूर्णतया छोड़ देते हैं जहाँ जाकर उनमें से लाखों के तन और मन दोनों नष्ट हो जाते हैं।

नेखलूदोव को बन्दीगृहों को पास से देखने का अवसर मिला था। उसने देखा कि बन्दियों के बीच पलने वाले समस्त पाप—मदिरा पीना, जुआ, खेलना, निर्दयता तथा भयङ्कर अपराध यहाँ तक कि नर-भक्षण भी—ये न तो आकस्मिक हैं, न पतन के कारण, न अपराध श्रेणी की भयङ्करता की वर्तमानता के कारण (जैसे कि सरकार की पीठ ठोकने वाले बुद्धू वैज्ञानिक समझाया करते हैं), किंतु ये तो इस अदृश्य इन्द्रजाल के अटल परिणाम हैं कि एक मनुष्य दूसरे को दण्ड दे सकता है। नेखलूदोव ने देखा कि नर-भक्षण दलदलों से नहीं प्रारम्भ हुआ। यह प्रारम्भ हुआ था मंत्रालयों, कमेटियों, तथा राज्यविभागों से। और दलदलों में तो केवल इसका फल आया था। उसने स्पष्ट रूप से देखा मेरा बहिनोई अथवा अधिकारियों से लगाकर प्रवेशक से मंत्री तक वास्तव में सभी इस बात की तनिक भी चिंता नहीं करते कि न्याय हो रहा है अथवा नहीं। उन्हें तो केवल

अपने रूबलों से मतलब है जो कि उन्हें उस कार्य को करने के लिए दिए जाते हैं जिनके परिणाम स्वरूप यह सब पतन और कष्ट उत्पन्न होते हैं। यह सब बिल्कुल स्पष्ट था।

"तो यह सब केवल गलतफहमी के कारण है क्या ? क्या यह नहीं हो सकता कि इन समस्त अधिकारियों का वेतन तथा उसके साथ प्रीमियम और मिलाकर इन्हें तब दिया जाय जब ये जो काम अब कर रहे हैं, उसे छोड़ दें ?" नेखलूदोव ने सोचा; और जबकि मुर्गों ने दुबारा बाँग दी, वह सो गया।

२०

नेखलूदोव के सोकर उठने से बहुत पहिले ही गाड़ीवान सराय से रवाना हो चुके थे। सराय की मालकिन चाय पी चुकी थी। वह अपनी मोटी गर्दन पर का पसीना पोंछती हुई अन्दर आई और बोली कि पड़ाव से एक सैनिक एक पत्र लेकर आया था। पत्र मेरिया पावलोव्ना का था। उसने लिखा था कि क्रील्तशोव का दौरा उससे कहीं अधिक भयङ्कर है जितना कि हमने सोचा था।

"हमने पहिले तो यह सोचा कि उसे यहीं रहने दें और फिर उसके साथ यहाँ रुकने की अनुमति प्राप्त कर लें, किंतु इसकी अनुमति नहीं मिली, अतः हम उसे साथ ही ले जाएँगे; किंतु हमें डर है कि उसे कुछ भी हो सकता है। कृपा करके ऐसी व्यवस्था कर दीजिए कि यदि उसे अगले नगर में रोक दिया जाय तो हममें से कोई एक उसके साथ रह जाए। यदि रुकने की अनुमति प्राप्त करने में यह आवश्यक हो कि मुझे उससे विवाह करना पड़ेगा तो मैं इसके लिए भी तैयार हूँ।"

नेखलूदोव ने युवक मजदूर को डाक बँगले पर घोड़े मँगाने के लिए भेजा तथा जल्दी-जल्दी अपना सामान बाँधने लगा। वह चाय का दूसरा गिलास पी भी न पाया था कि तीन घोड़ों की बग्घी अपनी घंटियाँ बजाती हुई सराय की ड्योढ़ी के पास आ खड़ी हुई। उसके पहिए जमी हुई कीचड़ पर ऐसे खड़खड़ा रहे थे जैसे कि पत्थर पर। नेखलूदोव मोटी गर्दन वाली महिला का बिल चुका कर शीघ्रता से बग्घी में जा बैठा, और कोचवान से कहा कि गाड़ी को तेज ले चले और बन्दियों के दल के पास शीघ्र ही पहुंचा दे। गोचर-भूमि के द्वार से आगे निकलने पर इनको बोरियों और रुग्ण बन्दियों से भरी; जमी हुई कीचड़ के जो

कि पहियों से कटती जा रही थी, ऊपर खड़खड़ करती हुई कुछ गाड़ियाँ मिलीं। अधिकारी वहाँ नहीं था; वह दल के आगे वाले भाग में चला गया था। सैनिक जिन्होंने निश्चय ही मदिरा पी हुई थी, सड़क के किनारे बातें करते हुए, प्रसन्न हो, चल रहे थे। गाड़ियाँ बहुत थीं। पहिली सभी गाड़ियों में छः छः रुग्ण बन्दी ठुँसे हुए बैठे थे। अंतिम तीन में, एक पर तीन के हिसाब से राजनैतिक बन्दी बैठे हुए थे। नोवोदिवोरोव, ग्राबेतस तथा कोन्द्रेतेव एक पर थे। रांतशेवा, नाबातोव, तथा वह स्त्री जिसे कि मेरिया पावलोव्ना ने बैठने को अपना स्थान दे दिया था दूसरी में बैठे थे। तीसरी गाड़ी में घास के बोझे पर सर के नीचे एक तकिया लगाए क्रील्तशोव लेटा था और मेरिया पावलोव्ना गाड़ी के किनारे उसके पास बैठी थी। नेखलूदोव ने कोचवान से कहा "बग्घी रोक लो।" बग्घी से उतर कर वह क्रील्तशोव की ओर बढ़ा। मदिरा में मत्त एक सैनिक ने नेखलूदोव को हाथ हिलाकर रोका किंतु उसकी ओर कोई ध्यान न दे वह क्रील्तशोव के पास चला गया और उसकी गाड़ी को पकड़कर चलने लगा। भेड़ की खाल का कोट पहिने सिर पर फर की टोपी लगाए और एक रूमाल से अपना मुँह बाँधे क्रील्तशोव पहिले की अपेक्षा पीला और दुबला दिखलाई दे रहा था। उसके सुन्दर नेत्र बड़े और चमकदार दिखलाई दे रहे थे। गाड़ी के धचकों से इधर-उधर हिलते हुए वह नेखलूदोव की ओर नेत्र स्थिर किए लेटा था; किंतु जब उससे उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा गया तो उसने क्रोध से अपना सिर हिलाया और नेत्र बन्द कर लिए; प्रतीत हो होता था कि वह अपनी समस्त शक्ति को गाड़ी के धचकों को रोकने में लगा रहा था। मेरिया पावलोव्ना गाड़ी के दूसरे किनारे पर थी। उसने नेखलूदोव की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा, जिससे क्रील्तशोव के बारे में उसकी चिंता प्रकट होती थी, और फिर वह तुरन्त प्रसन्न स्वर में कहने लगी—

"प्रतीत होता है कि अधिकारी को अपने ऊपर लज्जा आ गई।" उसने पहियों की खड़खड़ाहट के कारण चिल्लाकर कहा कि उसको सुनाई दे जाय। "बूजोवकीन की हथकड़ियाँ खोल दी गई हैं, और वह वह अपनी छोटी बच्ची को लेकर स्वयं चल रहा है। कातूशा और साइमन्सन उसके साथ हैं और वेरा भी है। उसने मेरा स्थान ले लिया है।"

क्रील्तशोव ने कुछ कहा किंतु गाड़ी की खड़खड़ाहट के कारण सुनाई न दे सका, फिर अपनी खाँसी को दबाने के प्रयत्न में उसने भौंहें चढ़ाईं तथा सिर हिलाया। तब नेखलूदोव उसकी ओर झुका ताकि उसकी बात सुन सके तथा

क्रील्तशोव ने अपने मुँह पर से रूमाल उठाकर धीमे-से कहा "पहिले से अब बहुत अच्छा हूँ। बस, सर्दी न लग जाय।"

नेखलूदोव ने सिर हिलाकर प्रसन्नता प्रकट की और पुनः मेरिया पावलोव्ना से नेत्र मिलाए।

"त्रिमूर्ति की समस्या का क्या हुआ ?" क्रील्तशोव ने धीरे-से बहुत प्रयत्न कर मुस्कुराते हुए कहा "हल कठिन है क्या ?"

नेखलूदोव समझ नहीं पाया, किंतु मेरिया पावलोव्ना ने समझाया कि इनका मतलब सूर्य, चन्द्र तथा पृथ्वी का स्थिति की परिभाषा करने वाली गणित की समस्या से है जिससे कि यह आपके, कातूशा के और साइमन्सन के सम्बन्धों की तुलना करते हैं। क्रील्तशोव ने यह प्रदर्शित करने के लिए अपना सिर हिलाया कि मेरिया पावलोव्ना ने मजाक को ठीक से समझा दिया है।

"इसका हल मेरे पास नहीं है।" नेखलूदोव बोला।

"क्या आपको मेरा पत्र मिला ? आप वह कार्य कर देंगे न ?" मेरिया पावलोव्ना ने पूछा।

"अवश्य !" नेखलूदोव ने उत्तर दिया; और क्रील्तशोव के चेहरे पर अप्रसन्नता के चिह्न देख कर नेखलूदोव अपनी गाड़ी पर वापिस जाकर बैठ गया। वह दोनों हाथों से बग्घी के दोनों बाजू पकड़कर धचकों से अपना बचाव करने लगा। थोड़ी ही देर में उसकी बग्घी बंदियों के दल तक पहुँच गई। सफेद लबादे, भेड़ के चमड़े का कोट तथा हथकड़ी और बेड़ियाँ पहिने बन्दियों का दल सड़क पर तीन चौथाई झील तक फैला हुआ था। सड़क की दूसरी ओर नेखलूदोव ने कातूशा की नीली शाल, वेरा दुखोवा का काला कोट और साइमन्सन की कढ़ी हुई टोपी और श्वेत मोजे—जो चप्पल की तरह इसके पैरों में बँधे हुए थे—देखे। साइमन्सन स्त्रियों के साथ-साथ चल रहा था और बहुत जोर से तर्क करता जाता था।

नेखलूदोव को देखते ही इन लोगों ने उसको झुककर अभिवादन किया, और साइमन्सन ने बड़ी गम्भीरता से अपना टोप उतार कर अभिवादन में ऊँचा उठाया। नेखलूदोव को कहना कुछ नहीं था, उसने कोचवान को रोका नहीं और शीघ्र ही दल से वह आगे निकल गया। आगे सड़क ठीक थी, कोचवान ने चाल तेज की, किंतु उसे बनी हुई लीक से बारम्बार इधर-उधर हटना पड़ता क्योंकि गाड़ियाँ इधर-उधर दोनों ओर से आ-जा रही थीं।

सड़क देवदार के घने जंगल में, जिसमें बर्च और लार्च के वृक्ष थे, चली गई थी। वृक्षों की पीली पत्तियाँ अभी भी वर्तमान थीं। आधा मार्ग पार करने के पश्चात् नेखलूदोव जंगल के अन्तिम भाग में पहुँच गया। यहाँ सड़क के दोनों ओर मैदान पड़े हुए थे तथा सुदूर में एक गिरजाघर के क्रॉस और गुम्बदें दिखलाई देने लगीं। बादल हट गए थे; आसमान बिल्कुल स्वच्छ हो गया था; सूर्य के प्रकाश में पत्तियाँ, बर्फ से जमे गड्ढे, और जंगल से ऊँचे उठे हुए गिरजाघर के क्रॉस तथा गुम्बदे ही चमक रही थीं। थोड़ी ही दाहिनी ओर हल्के नीलाकाश की पृष्ठभूमि में श्वेत पर्वत चमकने लगे। बग्घी एक बड़े गाँव में प्रविष्ट हुई। गलियों में रूसी तथा अन्यान्य राष्ट्रों के निवासी विचित्र प्रकार के लबादों तथा टोटियों को पहिने भरे हुए थे। मदिरालयों, होटलों तथा घोड़ा-गाड़ियों के चारों ओर मदिरा में धुत्त, तथा गम्भीर स्त्री पुरुष खड़े ये और बातें कर रहे थे। मालूम होता था कि पास ही कोई नगर है।

कोचवान ने लगाम खींच कर अपने दाहिनी ओर के घोड़े को चाबुक मारी तथा अपनी सीट के दाहिनी ओर बैठ गया जिससे कि लगाम उसी ओर झूलने लगी। अपनी कला दिखलाने की इच्छा से उसने बग्घी नदी की ओर बढ़ाई जिसे कि नाव द्वारा पार किया जाता था। एक नाव उनकी ही ओर आ रही थी और वह धारा के मध्य तक आ पहुँचा थी। पार करने के लिए लगभग बीस गाड़ियाँ पहिले से खड़ी थीं। नेखलूदोव को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। जो नाव बहुत दूर बीच में ही रुक गई थी, लहरों की थपेड़ से जल्द ही घाट पर आ गई।

. लम्बे, शांत, वृषभ स्कन्ध, दृढ़ अवयवी मल्लाहों ने, जो कि भेड़ की खाल का कोट पहिने थे, रस्सियाँ फेंकी, और अपने अभ्यस्त हाथों से नाव को घाट पर लगा दिया तथा नाव की गाड़ियों को नीचे उतारा एवं किनारे पर खड़ी पार जाने वाली गाड़ियों को उस पर चढ़ा लिया। सारी नाव गाड़ियों से और घोड़ों से, जो कि पानी को देख बिचक रहे थे, भरी थी। चौड़ी, तेज नदी की लहरें नाव से आकर टकरा रही थीं। रस्सियाँ कसती चली जा रही थीं। जब नाव भर गई और नेखलूदोव की गाड़ी, जिसमें से कि घोड़े खोल लिए गए थे, नाव पर पहुँच गई तब मल्लाह ने रास्ता बन्द कर दिया और जिन्हें नाव पर स्थान नहीं मिला था उनकी प्रार्थनाओं की ओर कोई ध्यान न देते हुए उसने रस्सियाँ खोल दीं और नाव खेनी प्रारम्भ कर दी।

नाव पर बिल्कुल शांति थी। मल्लाहों के जूतों तथा घोड़ों की टाँग बदलने की आवाज के अतिरिक्त कुछ नहीं सुनाई देता था।

२१

नाव के किनारे पर खड़ा नेखलूदोव नदी के विस्तृत पाट को देखता रहा। उसके नेत्रों के सम्मुख दो चित्र नाचते रहे। एक तो क्रील्तशोव का हिलता हुआ सिर, जो कि क्रोध में अपने प्राण दे रहा था, दूसरा साइमन्सन की बगल में सड़क पर उत्साह में चलती हुई कातूशा का चित्र। पहिले चित्र ने, जो कि क्रील्तशोव का था, मृत्यु के लिए तैयार न होने पर भी मरते हुए, नेखलूदोव के हृदय को भारी तथा उदास कर दिया। कातूशा के उत्साहपूर्ण होने एवं साइमन्सन जैसे व्यक्ति का प्रेम प्राप्त कर सन्मार्ग का सच्चा एवं निश्चित पथ प्राप्त करने पर उसे प्रसन्नता होनी चाहिए थी, किंतु फिर भी इस चित्र ने नेखलूदोव के हृदय में दुख उत्पन्न कर दिया और इस दुख पर वह विजय प्राप्त नहीं कर सका।

नगर से पीतल के बड़े घण्टे का गर्जन सुनाई दे रहा था। नेखलूदोव के कोचवान ने, जो कि उसकी बगल में खड़ा हुआ था, तथा नाव पर खड़े अन्य सब लोगों ने भी अपनी-अपनी टोपियाँ ऊँची उठाई, क्रॉस बनाए—यदि ऐसा नहीं किया तो एक ठिंगने वृद्ध व्यक्ति ने जिसके बाल बिखरे हुए थे, जो कि नाव के किनारे जंगले से सटा खड़ा था तथा जिसको कि नेखलूदोव ने इस समय से पूर्व कभी नहीं देखा था। उसने क्रॉस नहीं बनाया किंतु अपना सिर उठाकर नेखलूदोव की ओर देखा। वृद्ध ने थेगड़ी लगा कोट, पाजामा तथा फटे-पुराने जूते पहिन रखे थे। उसकी पीठ पर एक छोटा थैला था तथा सिर पर ऊँची पुरानी टोपी, जिसके कि बाल उड़ गए थे।

"अरे मियाँ! तुमने प्रार्थना नहीं की?" अपनी टोपी पहिन कर उसे सीधी करते हुए नेखलूदोव के कोचवान ने वृद्ध से पूछा "क्या तुम्हारा बपतिस्मा नहीं हुआ है?"

"प्रार्थना किसकी की जाय?" चिथड़ों युक्त वृद्ध ने तेजी से तथा दृढ़ स्वर में प्रत्येक शब्द का अलग-अलग उच्चारण करते हुए कहा।

"किसकी? ईश्वर की और किसकी?" कोचवान ने सोचते हुए कहा।

"और तुम मुझे दिखला दो कहाँ है वह—भगवान्?"

वृद्ध व्यक्ति की अभिव्यक्ति में कुछ गम्भीरता और दृढ़ता थी कि कोचवान समझ गया कि एक समझदार व्यक्ति से पाला पड़ा है वह कुछ लजा गया किंतु झेंप को छिपाते हुए तथा भीड़ के सम्मुख यह प्रकट न होने देने के लिए कि मैं झेंप गया हूँ उसने शीघ्र ही उत्तर दिया :

"कहाँ ? स्वर्ग में और कहाँ ?"

"कभी आप वहाँ गए थे ?"

"मैं गया या नहीं किंतु इतना तो प्रत्येक जानता है कि भगवान की प्रार्थना करनी चाहिए।"

"किसी भी व्यक्ति ने भगवान् को कभी नहीं देखा। केवल उसके एकमात्र पुत्र ने, जो उसकी गोद में है, उसका नाम बतलाया था।" वृद्ध ने उतनी शीघ्रता से तथा कठोरता से भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

"स्पष्ट है कि तुम ईसाई नहीं हो किंतु अंधकार के पुजारी हो। तुम अंधकार की वंदना करते हो।" कोचवान ने अपनी चाबुक की डण्डी को अपने कमरबंद में खोंसते तथा एक घोड़े की लगाम को खींचते हुए कहा।

कोई हँस पड़ा।

"वृद्ध महोदय ! आपका धर्म क्या है ?" एक प्रौढ़ ने, जो कि नाव पर उसी ओर अपनी गाड़ी की बगल में खड़ा था, पूछा।

"मेरा कोई धर्म नहीं है, क्योंकि मैं किसी को नहीं मानता—अपने अतिरिक्त किसी को नहीं।" वृद्ध ने पहिले की ही भाँति दृढ़ता एवं शीघ्रता से उत्तर दिया।

"आप अपने को कैसे मानते हैं ?" नेखलूदोव ने उससे बातें आरम्भ करते हुए पूछा "आपसे कोई गलती हो सकती है।"

"इस जीवन में तो कभी नहीं !" वृद्ध ने अपना सिर हिलाकर दृढ़ता से कहा।

"तब भिन्न-भिन्न धर्म क्यों हैं ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"इसलिए कि मनुष्य दूसरों पर विश्वास करते हैं, अपने आप पर नहीं, इसी से धर्म कितने ही हैं। मैंने भी दूसरों पर विश्वास किया और दलदल में ऐसा फँसा कि निकलने की कोई आशा नहीं रही। सनातनी, अर्वाचीनी, जुदाई, हिलिस्ती, पोपोत्सी, बेसपोपोत्सी, अवस्त्री, मुलोकान, स्काप्सी—प्रत्येक सम्प्रदाय अपनी ही

प्रशंसा करता है और इसलिए वे सब अन्धे कुत्ते की भाँति बढ़ते हैं। धर्म कितने ही हैं किंतु आत्मा एक है—मुझमें, और आपमें। इसलिए यदि प्रत्येक अपने पर विश्वास करेगा तो सब संगठित हो जाएँगे; प्रत्येक व्यक्ति आत्मचेतना प्राप्त तो सब मिलकर एक हो जाएँगे।"

वृद्ध जोर से बोलता हुआ अपने चारों ओर देख रहा था कि अधिक-से-अधिक लोग उसकी बातें सुनें।

"और आप इस धर्म पर बहुत दिनों से विश्वास करते हैं?"

"मैं? बहुत दिनों से। यह तेईसवाँ वर्ष है कि लोग मेरे पीछे पड़े हुए हैं।"

"तुम्हारे पीछे! कैसे?"

"जी, जैसे कि ईसू के पीछे पड़े थे, लोग मुझे पकड़ कर न्यायालयों में ले जाते हैं, उपदेशकों, स्क्राइबों तथा फेरीसियों के सामने ले जाते हैं। एक बार तो मुझे पागलखाने में बन्द कर दिया था; किंतु वह कर कुछ नहीं पाते; क्योंकि मैं किसी बंधन में नहीं। लोग कहते हैं 'तुम्हारा नाम क्या है?' वे सोचते थे कि मैं अपना नाम बतला दूँगा। किंतु मैं अपना कोई नाम ही नहीं रखता। मैंने हर वस्तु का परित्याग कर दिया है; मेरा कोई नाम नहीं स्थान नहीं, देश नहीं, कुछ नहीं। बस मैं 'मैं' हूँ। 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'मनुष्य।' 'तुम्हारी अवस्था कितनी है?' 'मैं कहता हूँ मैं वर्ष नहीं गिनता, और उन्हें गिन भी नहीं सकता, क्योंकि मैं सदा से हूँ और सदा ही रहूँगा।' 'तुम्हारे माता-पिता कौन हैं?' 'मेरा पिता भगवान तथा माता धरती के अतिरिक्त कोई पिता-माता नहीं है।' लोग मुझसे पूछते हैं 'और सम्राट् जार? क्या तुम जार को मानते हो?' मैं कहता हूँ 'क्यों नहीं, जार अपना जार है और मैं अपना जार हूँ।' लोग कहते हैं 'इससे बात करने का क्या लाभ?' मैं कहता हूँ 'मैं तुमसे बातें करने को कहता ही नहीं।' इस तरह लोग मुझे तंग करते हैं।"

"और अब तुम कहाँ जा रहे हो?" नेखलूदोव ने पूछा।

"जहाँ भगवान् ले जाय। जब मुझे काम मिल जाता है तो मैं काम करता हूँ अन्यथा भिक्षा माँगता हूँ।"

वृद्ध ने देखा कि नाव किनारे के पास आ गई है। उसने बातें बंद कर अपने पास खड़े हुए लोगों की ओर विजय गर्व से देखा।

नाव पार पहुँच गई। नेखलूदोव ने अपना बटुआ निकाला और वृद्ध के

लिए कुछ रुपये देने लगा किंतु उसने यह कहते हुए मना कर दिया :

"मैं इस प्रकार की वस्तुएँ नहीं लेता, केवल रोटी लेता हूँ।"

"मैं क्षमा चाहता हूँ।"

"क्षमा करने की क्या बात है ? आपने मुझे हानि नहीं पहुँचाई और मुझे हानि पहुँचाना सम्भव भी नहीं है।" और वृद्ध ने अपनी पीठ पर थैला फिर से लाद लिया।

इसी बीच बग्घी उतार ली गई तथा घोड़ों पर साज चढ़ा दिया गया।

"आश्चर्य है श्रीमान्‌जी ! आप ऐसे लोगों से बात करते हैं।" कोचवान ने नेखलूदोव से कहा जबकि वह मल्लाह को पैसे देकर बग्घी में पुनः बैठ गया। "यह कोई निकम्मा आवारा है।"

२२

जब वे किनारे से आगे बढ़ आए तब कोचवान नेखलूदोव की ओर घूमा।

"किस होटल में ले चलूँ ?"

"सबसे अच्छा कौन-सा होटल है ?"

"लाईबेरियन से अच्छा तो कोई नहीं है, किंतु दियूकोव भी अच्छा है।"

"चाहे जिसमें ले चलो।"

कोचवान फिर कोचबाक्स पर जा बैठा और तेजी से हाँकने लगा। नगर में अन्य नगरों को देखते हुए कोई विशेषता नहीं थी। वैसे ही मकान, वैसी ही खिड़कियाँ, हरी छतें, वैसे ही बड़े गिरजे, मुख्य सड़कों पर वैसी ही दूकानें-गोदाम, यहाँ तक कि पुलिसमैन भी वैसे ही थे। किंतु मकान अधिकांशतः लकड़ी के थे और सड़कें पटी हुई नहीं थीं। एक मुख्य बाजार में होटल के द्वार पर कोचवान ने बग्घी रोकी, किंतु वहाँ कमरा नहीं मिल सका इसलिए बग्घी आगे बढ़ी। आज दो माह पश्चात् यहाँ नेखलूदोव को पहिले जैसा ही स्वच्छ एवं सुविधाजनक वातावरण प्राप्त हुआ था। यद्यपि उसको जो कमरा दिया गया था वह बिल्कुल सादा था किंतु दो महीनों की बग्घियों, गाँव की सरायों और पड़ाव के स्टेशनों को देखते हुए नेखलूदोव को यहाँ बड़ा चैन मिला। सबसे पहिला काम उसके सामने था

जूँ दूर करने का जिनसे कि उसका पिंड पड़ाव के स्टेशनों को देखने के पश्चात् से आज तक नहीं छूटा था। सामान खोलकर लगा देने के बाद सबसे पहिले वह रूसी-स्नानगृह मे गया। स्नान के पश्चात् वस्त्र—कलफ लगी कमीज, पाजामा जो कहीं-कही से सिकुड़ गया था, फ्राक-कोट तथा एक ओवरकोट—पहिनकर वह उस प्रांत के गवंनर से मिलने के लिए नीचे उतरा। होटल वाले ने एक बग्घी मँगादी, जिसके खाए पिए हृष्ट-पुष्ट खिरगीज घोड़ों ने नेखलूदोव को शीघ्र ही एक अत्यन्त भव्य भवन की बड़ी-सी ड्योढ़ी के सम्मुख जा उतारा। ड्योढ़ी पर संतरी और पुलिस वाले खड़े हुए थे। उस मकान के सामने और पीछे दोनों ओर एक बगीचा था। बगीचे में ऐस्पन और बर्च के वृक्षों तथा चीड़ एवं देवदार के पेड़ों की नंगी डालियों में हरी पत्तियाँ थीं।

जनरल अस्वस्थ था और किसी से मिलता नहीं था किंतु फिर भी नेखलूदोव ने वर्दीधारी नौकर से अपना कार्ड उसे जाकर देने को कहा, और नौकर अनुकूल उत्तर लेकर वापिस आया।

"श्रीमान्जी, अन्दर पधारें।"

हॉल, नौकर-चाकर, सीढ़ियाँ, पालिश किये हुए फर्श से युक्त नृत्यकक्ष, सब पीतर्सबर्ग से मिलते-जुलते थे तथा भव्यता में तो उनसे भी अधिक थे किंतु उनकी अपेक्षा थे गंदे।

नेखलूदोव को अध्ययन-कक्ष में पहुँचा दिया गया।

जनरल आशावादी प्रकृति का फूला हुआ व्यक्ति था। नाक कुल्लेदार; माथे पर सूजन, आँखों के नीचे गढ़े तथा सिर गंजा—यह थी उसकी आकृति। वह तातारी सिल्क का ड्रेसिंग गाउन पहिने चांदी के गिलास में चाय पीता हुआ धूम्रपान कर रहा था।

"कहिए श्रीमान्जी, आपका स्वास्थ्य कैसा है? क्षमा कीजिएगा कि मैं ड्रेसिंग गाउन पहिने बैठा हूँ। आपसे न मिलने से अच्छा तो मैंने यही सोचा कि इसी को पहिने ही मिल लूँ।" उसने अपनी मोटी गर्दन पर ड्रेसिंग गाउन खींच-कर ठीक करते हुए कहा "मैं स्वस्थ नहीं हूँ और बाहर नहीं निकलता। हाँ, आप इस देहाती क्षेत्र मे कैसे पधारे?"

"मैं बंदियों के दल के साथ आया हूँ, जिसमें कि मुझसे घनिष्ट रूप से सम्बन्धित एक व्यक्ति है।" नेखलूदोव ने कहा "और मैं श्रीमान्जी की सेवा में

अंशतः तो उस व्यक्ति के लिए और अंशतः एक अन्य कार्य से मिलने उपस्थित हुआ हूँ।"

जनरल ने सिगरेट का एक कश खींचा और चाय का एक घूँट पीया तथा सिगरेट को राखदानी पर रखकर अपने चमकीले, गड्ढे में धँसे नेत्रों को नेखलूदोव की ओर स्थिर कर उसकी बात को वह गम्भीरता से बैठा सुनता रहा। केवल एक बार सिगरेट उसकी ओर बढ़ाते हुए उसने उसकी बात काटी।

जनरल उन सभ्य सैनिक व्यक्तियों में से था जो इस बात को मानते हैं कि उदारदलीय एवं मानवीय दृष्टिकोणों में उनके कार्य-व्यापार से संधि हो सकती है। किंतु स्वभाव से दयालु तथा बुद्धिमान मनुष्य होने के कारण उसकी समझ में यह बात तुरन्त आ गई कि ऐसा समाधान असंभव है। अतः जिस वातावरण में वह रहता था उससे अपने आंतरिक विरोध को भूलने के लिए वह अधिकाधिक मदिरा का सेवन करने लगा। यह आदत उन दिनों सैनिक वायुमंडल में बहुत प्रचलित थी। पीते-पीते मदिरा का वह इतना अभ्यस्त हो गया कि अपने सैनिक जीवन के पैंतीस वर्षों के पश्चात वह भी उस श्रेणी में गिना जाने लगा जिसमें कि डाक्टर व्यक्ति के लिए "अलकोहोलिक" कह देते हैं। वह अलकोहल से भरा हुआ था और यदि किसी प्रकार की भी मदिरा पी लेता तो वह मस्त हो जाता। फिर भी कड़ी मदिरा पीना उसके लिए अत्यावश्यक था—वह उसके बिना जीवित नहीं रह सकता था—इसलिए प्रत्येक दिन शाम को वह धुत्त हो जाता, किंतु इसका वह इतना अभ्यस्त हो चुका था कि कभी विशेष निरर्थक बात नहीं कहता या बकता था और यदि वह निरर्थक बात नहीं करता तो उसकी बुद्धिमत्ता मानी जाती क्योंकि वह इतने ऊँचे और महत्त्वपूर्ण पद पर था। केवल सुबह के समय ही, उसी समय जिस समय कि नेखलूदोव उससे मिलने आया था, वह समझदार आदमी की तरह कही हुई बात को ढङ्ग से समझ पाने में समर्थ रहता। वह इस कहावत को कहने का बड़ा शौकीन था कि वह 'धुत्त तो रहता है किंतु होश नहीं खोता, अतः एक साथ वह दो आनन्दों का उपयोग करता है।' यह कहावत उस पर पूरी तरह लागू होती थी। उसके विषय में उच्चाधिकारियों को यह पता था कि वह शराबी है किंतु वह बाकी सबसे अधिक शिक्षित था—यद्यपि उसका अध्ययन उसके शराबी हो जाने के समय से रुक गया था—वह साहसी था, निपुण था, उसका व्यक्तित्व भव्य था, मदिरा पिए हुए भी चतुराई की बातें कहता तथा इसीलिए उसे इतने दायित्वपूर्ण सार्वजनिक पद पर नियुक्त किया गया और वहीं काम करते रहने दिया गया था।

नेखलूदोव ने उसे बतला दिया कि मैं एक स्त्री के विषय में बातें करने आया हूँ, कि उसको गलत दण्ड दिया गया है, तथा उसकी ओर से सम्राट् को पिटीशन भी भेज दिया गया है।

"जी, फिर ?" जनरल बोला।

"पीतर्सबर्ग में मुझे यह बतलाया गया था कि उसके भाग्य का निर्णय अंतिम से अंतिम इस माह तक यहाँ इस नगर में भेज दिया जायगा—"

जनरल ने अपनी मोटी उङ्गलियाँ मेज की ओर बढ़ाईं और घण्टी बजाई। इस समय भी वह नेखलूदोव के मुख की ओर देखता हुआ, सिगरेट के कश खींच रहा था तथा बहुत जोर-जोर से खाँस रहा था।

"इसलिए मैं आपकी अनुमति चाहता हूँ जिससे कि इस स्त्री को तब तक के लिए यहीं रोक लिया जाय जब-तक कि उसके पिटीशन का उत्तर नहीं आ जाय।"

वर्दी पहने एक अर्दली आया।

"देखना अन्ना वेसीलियेव्ना सोकर उठी हैं या नहीं।" जनरल ने अर्दली से कहा "तथा थोड़ी सी चाय और ले आना।" फिर, नेखलूदोव की ओर मुड़कर बोला "जी हाँ ! और दूसरी बात ?"

"मेरी दूसरी प्रार्थना एक राजनैतिक बंदी के विषय में है जो कि इसी दल के साथ है।"

"अच्छा !" जनरल ने अर्थ सूचक भाव से अपना सिर हिलाकर कहा।

"वह बहुत सख्त बीमार है—मरणासन्न है—और शायद उसे यहीं अस्पताल में छोड़ दिया जायगा, अतः एक राजनैतिक बंदिनी उसके साथ यहीं रुकना चाहती है।"

"क्या वह उसकी कोई सम्बन्धिनी है ?"

"जी नहीं ! किंतु यदि उसे रुकने की आज्ञा मिल जाय तो वह उसके साथ विवाह करने को तैयार है।"

जनरल अपने साथ सम्भाषण करने वाले की ओर अपनी प्रभावपूर्ण दृष्टि गड़ाए देखता रहा तथा प्रत्यक्षतः उसको पराजित करने के लिए निरन्तर सिगरेट पीता हुआ उसकी बात चुपचाप सुनता रहा।

नेखलूदोव की बात समाप्त होने पर जनरल ने मेज पर से एक पुस्तक उठाई और अपनी उङ्गली को गीला कर पन्ने पर पन्ने पलटने के बाद विवाह के सम्बन्ध का कानून निकालकर उसे पढ़ने लगा।

"उस स्त्री को क्या सजा हुई है ?" उसने पुस्तक से दृष्टि उठाते हुए पूछा ।

"उसको ? सश्रम कारावास ।"

"तब फिर, जिसको यह दण्ड मिला है विवाह से उसकी स्थिति में सुधार नहीं किया जा सकता।"

"जी, किंतु..."

"क्षमा कीजिए ! यदि कोई स्वतंत्र पुरुष भी उससे विवाह करले तो भी उसे अपना दण्ड भोगना पड़ेगा। ऐसे मामलों में प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि दण्ड भारी किसको मिला है स्त्री को अथवा उस पुरुष को ?"

"उन दोनों को ही सश्रम कारावास हुआ है।"

"बहुत अच्छा। इसका मतलब हुआ दोनों ही स्वतंत्र हैं।" जनरल ने हँसकर कहा "स्त्री को भी वही दण्ड मिला है जो पुरुष को, किंतु क्योंकि पुरुष बीमार है वह यहाँ रोका जा सकता है, और उसके कष्टों को दूर करने के जो भी सम्भव उपाय होंगे किए जायगे। किंतु जहाँ तक उस स्त्री का प्रश्न है, वह उससे विवाह भी करले तब भी उसको नहीं रोका जा सकता ।"

"श्रीमती जी काफी पी रही हैं।" नौकर ने कहा।

जनरल ने सिर हिलाया और अपना कथन प्रारम्भ रखा।

"खैर, मैं इस पर विचार करूँगा। उनके नाम क्या हैं ? इस पर लिख दीजिए ।"

नेखलूदोव ने उनके नाम लिख दिए ।

नेखलूदोव ने जनरल से प्रार्थना की कि मुझे मरणासन्न व्यक्ति से मिलने दिया जाय, उसका उत्तर जनरल ने निम्न शब्दों में दिया ।

"मैं यह भी नहीं कर सकता। निस्सन्देह मुझे आप पर कोई संदेह नहीं; किन्तु आप उस बन्दी मे तथा अन्यान्यों में रुचि लेते हैं, और आपके पास धन है तथा यहाँ हम लोगों से धन से सब कुछ कराया जा सकता है। लोग मुझे बतलाते हैं "घूंसखोरी बन्द करो।' किंतु मैं घूंसखोरी कैसे बन्द कर सकता हूँ जब कि

प्रत्येक व्यक्ति घूंस लेता है। और जितना उनका पद नीचा है उतनी ही शीघ्र वह घूंस ले लेते है। तीन हजार मील से अधिक दूर बैठा हुआ व्यक्ति कैसे इसका पता लगा सकता है? वहाँ तो प्रत्येक सरकारी नौकर छोटा-मोटा ज़ार बना बैठा है, जैसे कि मैं यहाँ।" और वह हँसा "शायद आप राजनैतिक बन्दियों से मिलने गए भी होंगे। आपने रुपये दिए होंगे और अनुमति प्राप्त भी कर ली होगी? ढँह।" उसने मुस्कराकर पूछा "क्या मैं गलत कह रहा हूँ?"

"जी नहीं! आपकी बात सच है।"

"मैं जानता हूँ कि आपको करना पड़ा होगा। आपको एक राजनैतिक बंदी पर दया आती है और आप उससे मिलना चाहते हैं। तथा इन्सपैक्टर अथवा पथ-रक्षक-सैनिक इसलिए स्वीकार कर लेता है कि उसका वेतन चालीस कोपेक प्रतिदिन है, पूरा परिवार है, नहीं ले तो करे क्या। उसके या आपके स्थान पर मैं होता तो मैं भी वही करता जो उसने या आपने किया? किंतु अपनी इस स्थिति में मैं कानून से एक इञ्च भी नहीं हट सकता क्योंकि मैं भी तो मनुष्य हूँ और दया से द्रवित हो सकता हूँ। मैं कार्यकारिणी का सदस्य हूँ तथा इस विश्वसनीय पद पर किन्हीं विश्वासों के साथ नियुक्त किया गया हूँ तथा उन विश्वासों को पालन करना मेरा कर्तव्य है...खैर! अब तो काम समाप्त हो गया। अब बतलाइए कि राजधानी में क्या हो रहा है।" इसके पश्चात् जनरल ने समाचार सुनने की इच्छा से और अपनी विद्वत्ता तथा उदारता दिखलाने के अभिप्राय से प्रश्न करने आरम्भ किए और स्वयं भी कुछ सुनाने लगा।

२३

"खैर! इस समय आप कहाँ ठहरे हुए हैं?" जनरल ने नेखलूदोव से विदा लेते हुए पूछा। "दियूकोव होटल में? वहाँ तो अच्छा स्थान है नहीं। आज पाँच बजे यहीं भोजन कीजिए। आप अँग्रेजी बोल लेते हैं?"

"जी हाँ! बोल लेता हूँ।"

"यह अच्छी बात है। देखिए, अभी कुछ दिन पूर्व ही एक अँग्रेज यात्री यहाँ आया है। वह निर्वासन के प्रश्न पर अध्ययन कर रहा है तथा साइबेरिया के बन्दीगृहों का निरीक्षण करने आया है। वह आज रात्रि हमारे साथ भोजन करेगा,

इसलिए आप पधार कर अवश्य उससे मिलें। हम पाँच बजे भोजन करते हैं और मेरी पत्नी समय की पावन्द है। तब मैं आपको उस रुग्ण बंदी के साथ की स्त्री के विषय में बतलाऊँगा। शायद सम्भव हो सके कि कोई उसके साथ ठहर सके।"

जनरल से विदा ले नेखलूदोव डाकखाने गया। वह उस समय बहुत ही प्रफुल्ल और उत्साहित हो रहा था।

डाकखाने का भवन नीची महराब का था। कितने ही बाबू लोग वहाँ एक काउण्टर के पीछे काम कर रहे थे तथा उनके पास बहुत से लोग खड़े हुए थे। एक बाबू एक ओर सिर झुकाए बैठा चिट्ठियों पर, बड़ी दक्षता से उन्हें मोहर के नीचे रखता हुआ, मोहर लगा रहा था। नेखलूदोव को अधिक समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। उसने अपना नाम बतलाया तो उसके नाम के जितने भी पत्रादिक आए हुए थे सब उसे मिल गए। काफी डाक थी। बहुत से पत्र, मनीआर्डर, पुस्तकें और 'योरोपियन मेसेंजर' का आधुनिकतम अंक। इनको लेकर वह एक बेंच पर बैठ गया। बेंच पर पुस्तक हाथ में लिए एक सैनिक बैठा हुआ अपनी पारी की प्रतीक्षा कर रहा था। उसकी बगल में बैठकर नेखलूदोव अपने पत्रों को छाँटने लगा। उनके मध्य एक रजिस्टर्ड पत्र था जिसका लिफाफा बहुत सुन्दर था तथा जिस पर लाल सील लगी हुई थी।

मोहर तोड़कर उसने देखा कि यह पत्र शेलेनीन के पास से आया है और उसमें कुछ सरकारी कागज हैं। यह देखकर उसके चेहरे पर रक्तिमा छा गई, और हृदय की गति रुक-सी गई। यह कातूशा के पिटीशन का उत्तर था। उत्तर क्या होगा? खारिज तो हुआ ही नहीं होगा? नेखलूदाव ने सरसरी दृष्टि से पत्र पढ़ डाला। पत्र छोटे-छोटे दृढ़ अक्षरों में लिखा था। लिखाई समझ में कठिनता से आती थी। उसने चैन की साँस ली। पत्र अनुकूल था।

"प्रिय मित्र!" शेलेनीन ने लिखा था "हम लोगों के अन्तिम वर्तालाप ने मेरे ऊपर बहुत प्रभाव डाला। माशलोवा के विषय में आपकी बात सही थी। मैंने केस को आद्योपांत पढ़ा और मुझे लगा कि उसके साथ घोर अन्याय हुआ है। वह पिटीशन कमेटी के सामने ही हल हो सकता था, जिसके सम्मुख कि आपने उसे प्रस्तुत किया था। मैंने केस की जाँच में सहायता की और दण्ड की कमी की आज्ञा की नकल मैं आपके पास भेज रहा हूँ। आपकी मौसी काउन्टेस कातरीना इवानोव्ना ने मुझे अपका यह पता दिया है, जिस पर कि यह पत्र मैं आपको लिख रहा हूँ। असली प्रति तो वहाँ भेजी गई है जहाँ कि माशलोवा अभियोग से पहिले

निगरानी में रखी गई थी। और वहाँ से शायद वह साइबेरिया के मुख्य सरकारी कार्यालय में तुरन्त भेज दी जायगी। मै यह शुभ समाचार आपको भेजने की शीघ्रता कर रहा हूँ और आपको बड़ी प्रसन्नता से अभिवादन करता हूँ—आपका शेलेनीन !"

आज्ञा में लिखा था : "हिज इम्पीरियल मेजैस्टी सम्राट् के नाम पिटीशनों की सुनाई का कार्यालय।" (यहाँ तारीख तथा कार्यालय की विविध कार्यवाहियाँ लिखी हुई थीं) "हिज इम्पीरियल मेजैस्टी सम्राट् के नाम पिटीशनों की सुनवाई के कार्यालय प्रमुख की आज्ञा से दीन मध्यमवर्गीय परिवार की स्त्री कातरीना माशलोवा को सूचित किया जाता है कि हिज इम्पीरियल मेजैस्टी ने उसके सर्वाधिक वफादार पिटीशन में लिखी हुई प्रार्थना पर विचार कर आज्ञा दी है कि उसका सश्रम कारावास का दण्ड समाप्त कर उसे साइबेरिया के सबसे पास के जिलों में से किसी में भी केवल निर्वासन का दण्ड दिया जाता है।"

यह प्रसन्नता देने वाला एक महत्त्वपूर्ण समाचार था। नेखलूदोव की कातूशा तथा अपने लिए जो भी आशा हो सकती थी पूरी हो गई। यह बात सत्य थी कि उसकी नई स्थिति के साथ-साथ नई-नई चिंताएँ भी उत्पन्न हो गई। जब वह बंदिनी थी तब उसके साथ विवाह करना केवल एक आडम्बर ही होता और सिवाय इसके, कि वह उसकी स्थिति को कुछ हल्का कर सकता, कोई अर्थ नहीं निकलता। किंतु अब उसके साथ रहने में कोई बाधा नहीं थी; और नेखलूदोव इसके लिए अभी तैयार नहीं था। इसके अतिरिक्त साइमन्सन के साथ उसके सम्बन्धों का क्या होना था ? माशलोवा के कल के शब्दों का क्या अर्थ था ? और यदि वह साइमन्सन के साथ विवाह करने को तैयार हो जाती है तो यह अच्छा रहेगा अथवा बुरा ? वह इन प्रश्नों का हल नहीं निकाल सका तथा उसने उन पर विचार करना त्याग दिया।

"यह पीछे सब स्पष्ट हो जाएगा।" उसने सोचा "मुझे इन प्रश्नों पर अभी विचार नहीं करना चाहिए और जाकर शीघ्र-से-शीघ्र उसको यह शुभ समाचार सुना देना चाहिए तथा उसे मुक्त कराना चाहिए।"

उसने सोचा कि आज्ञा की प्रतिलिपि जो मुझे मिली है इसी से काम चल जाएगा। इसलिए डाकखाने से उठकर उसने बग्घी वाले से कहा "बन्दीगृह ले चलो।"

यद्यपि सुबह गवर्नर ने बन्दीगृह में मिलने की उसे आज्ञा नहीं दी थी,

किंतु वह अपने अनुभवों के आधार पर जानता था कि सहकारियों से वे आज्ञाएँ, जोकि उनके अधिकारी भी नहीं देते हैं, कितनी आसानी से प्राप्त हो जाती हैं। और अब वह बन्दीगृह में जाकर वहाँ कोशिश कर माशलोवा से मिलकर उसे यह शुभ सम्वाद सुनाना चाहता था तथा चाहता था कि यदि सम्भव हो सके तो उसे मुक्त करा ले, साथ ही क्रील्तशोव के स्वास्थ्य के विषय में पता कर उसे तथा मेरिया पावलोव्ना को गवर्नर की कही हुई बातें बतला दे।

बन्दीगृह का इन्सपैक्टर लम्बा, मूछों तथा गलमुच्छों से युक्त, जोकि उसके मुँह के कोनों पर मुड़े हुए थे, एवं भव्य आकृति का व्यक्ति था। वह नेखलूदोव से बड़ी कठोरता से मिला और उसने उससे स्पष्ट रूप से कह दिया कि मैं किसी भी बाहरी व्यक्ति के लिए अपने चीफ की विशेष अनुमति के बिना बंदियों से मिलने की आज्ञा नहीं दे सकता। नेखलूदोव की इस बात का कि राजधानी तक में बंदियों से मिलने की उसे अनुमति मिलती रही है, उसने उत्तर दिया :

"हो सकता है कि आपकी बात सच हो, किंतु मैं इस प्रकार की अनुमति नहीं देता।" और उसके स्वर से स्पष्ट होता था "तुम नगर के महानुभावा हमको आश्चर्यान्वित करना तथा भ्रम मे डालना चाहते हो, किंतु पूर्वी साइबेरिया के निवासी हम लोग भी कानून जानते हैं और तुम्हें भी सिखला सकते हैं।

सम्राट् के कार्यालय से आई हुई आज्ञा की प्रतिलिपि भी इन्सपैक्टर को न पिघला सकी। उसने नेखलूदोव को बन्दीगृह के अहाते के अन्दर कदम रखने से दृढ़ता से मना कर दिया। वह नेखलूदोव के इस विचित्र विचार पर तिरस्कार से हँसा कि प्रतिलिपि ही माशलोवा को छुड़ाने के लिए पर्याप्त होगी तथा बोला कि हमारे उच्चाधिकारियों द्वारा हमको भेजी गई आज्ञा के अभाव में कोई भी मुक्त नहीं हो सकता। बस, एक बात उसने मानी कि मैं माशलोवा को उसके दण्ड की कमी का समाचार सुना दूँगा और अपने उच्चाधिकारियों से उसका मुक्तिपत्र प्राप्त करने पर एक घण्टे के ही अन्दर उसे मुक्त कर दूँगा।

क्रील्तशोव का कोई समाचार उसने नहीं दिया। वह बोला कि मैं इतना भी नहीं बतला सकता कि ऐसा कोई बन्दी भी बन्दीगृह में है। अतः कुछ भी करने में असमर्थ हो नेखलूदोव बग्घी में आ बैठा और वापिस होटल आ गया।

इन्सपैक्टर की कठोरता का विशेष कारण यह था कि बन्दीगृह में जितने व्यक्ति रहने चाहिए उससे दुगने होने के कारण वहाँ छूत का रोग 'टाइफस' फैल गया था। नेखलूदोव का बग्घी वाला बोला "बन्दीगृह में नित्य प्रति निरे व्यक्ति

मरते जा रहे हैं। कोई महामारी उनमें फैल गई है। एक-एक दिन में बीस-बीस व्यक्ति दफनाए जाते हैं।"

२४

बन्दीगृह पर सफलता न प्राप्त होने पर भी नेखलूदोव उसी उत्साह, फुर्ती और तेजी से गवर्नर के कार्यालय में यह देखने चल दिया कि शायद माशलोवा को मुक्त करने की असल आज्ञा आ गई हो। आज्ञा नहीं आई थी अतः होटल में लौट कर तुरन्त ही उसने शेलेनीन तथा एडवोकेट को इस विषय में पत्र लिख डाले। पत्र समाप्त कर उसने घड़ी की ओर देखा तो जनरल के यहाँ डिनर में जाने का समय हो आया था।

मार्ग में वह पुनः इस बात को बड़े आश्चर्य से सोचने लगा कि कातूशा को जब दण्ड कम करने का समाचार मिलेगा तो वह क्या सोचेगी। उसे कहाँ रहना पड़ेगा? मैं उसके साथ किस भाँति रहूँगा? साइमन्सन का क्या होगा? माशलोवा के और उसके क्या सम्बन्ध रहेंगे? उसने माशलोवा के अन्दर होने वाले परिवर्तनों को स्मरण किया, और इससे उसे माशलोवा का अतीत ध्यान आ गया।

"खैर, अभी तो यह सब अपने मस्तिष्क से निकाल देना चाहिए।" उसने सोचा और फिर अपने मस्तिष्क से माशलोवा का विचार निकाल डाला। "समय आएगा तब देख लूँगा।" उसने मन-ही-मन कहा और यह विचार करने लगा कि मुझे जनरल से क्या बातें करनी चाहिए।

जनरल के यहाँ डिनर उसी उत्तम ढङ्ग से दिया गया था जिसका कि नेखलूदोव अभ्यस्त था, तथा जैसे कि धनिकों एवं उच्चाधिकारियों के यहाँ हुआ ही करते हैं। इस डिनर में उसे इतने दिनों से सुख-सुविधाओं से वंचित होने पर बड़ा आनन्द आया।

मकान की मालकिन थी पीतर्सबर्ग की एक पुरानी पाठशाला की ग्रान्दे दामे, निकोलस प्रथम के न्यायालय की आदरणीय कुमारी, जोकि फ्रांसीसी भाषा को बहुत स्वाभाविकता और रूसी भाषा को अस्वाभाविकता से बोलती थी। वह तन कर खड़ी होती तथा हाथ हिलाते समय अपनी कुहनियों को कमर के पास रखती। वह अपने पति के प्रति शांत तथा उससे कुछ दुखी थी एवं आगंतुकों के

प्रति बहुत दयालु थी। इतना अवश्य था कि जैसे लोग होते उनके ही अनुसार वह उनको बरतती थी। उसने नेखलूदोव का उन्हीं व्यक्तियों की भाँति स्वागत किया तथा उसकी श्रेष्ठ चापलूसी ने, जोकि चापलूसी-सी बिल्कुल नहीं लगती थी, उसके अन्दर गुणों की अनुभूति उत्पन्न करदी जिससे कि उसे कुछ संतोष प्राप्त हुआ। उसने उसे यह अनुभव करा दिया कि वह उस ईमानदार किंतु अकेले प्रयत्न को समझ गई है जिसके कारण कि वह साइबेरिया तक आया है तथा वह जान गई है कि वह कोई साधारण पुरुष नहीं है। इस उत्कृष्ट चापलूसी तथा जनरल के मकान की शांत और सुख-सुविधाओं ने, उस सुन्दर वातावरण, सुन्दर भोजन तथा अपनी श्रेणी के शिक्षित व्यक्तियों के साथ मधुर वार्तालाप ने उसे इतना आकर्षित कर लिया कि पिछले महीनों की समस्त घटनाएँ उसे स्वप्नवत प्रतीत होने लगीं जिससे कि जागकर मानो वह अभी उठा हो।

इन सब घरेलू लोगों—जनरल की लड़की, उसके पति तथा एक अङ्गरक्षक के अतिरिक्त वहाँ थे—एक अँगरेज, सोने की खानों में रुचि रखने वाला एक व्यापारी तथा दूर के साइबेरियन नगर का एक गवंनर। नेखलूदोव को ये सब व्यक्ति अत्यन्त अच्छे लगे।

अँगरेज स्वस्थ तथा गुलाबी रङ्ग का व्यक्ति था। वह फ्रांसीसी भाषा बहुत ही गलत बोलता था किंतु अपनी भाषा पर उसे अच्छा अधिकार था। उसके बोलने का ढङ्ग आकर्षक था उसने बहुत दुनियाँ देखी थी तथा अमरीका, भारत, जापान एवं साइबेरिया के विषय में जब वह बोलता तो बड़ा अच्छा लगता।

सोने की खानों में रुचि रखने वाला युवक (एक किसान का लड़का) लंदन की सिली शाम की पोशाक पहिनता, तथा कमीज में हीरे के बटन लगाता था वह फिलेन्थ्रोपिक साहित्य को बहुत दान करता, बहुत बड़ा पुस्तकालय रखता, तथा उसके विचार योरोपियन उदारदल के से थे। नेखलूदोव को वह सभ्यता की बिल्कुल नई और अच्छी श्रेणी का व्यक्ति लगा तथा उसे वह एक स्वस्थ किसान लेकिन योरोपीय सभ्यता के आवरण के नमूने के रूप में बहुत पसन्द आया।

साइबेरिया के किसी दूर प्रात का गवर्नर सरकारी विभाग का वही भूतपूर्व डाइरेक्टर था, जिसके विषय में उन दिनों पीतर्सबर्ग में बहुत चर्चा चल रही थी। उन दिनों नेखलूदोव वहीं था। वह स्थूल शरीर का था तथा उसके बाल पतले घुँघराले थे, उसके नेत्र हल्के नीले तथा सफेद हाथों की उँगलियों में अँगूठियाँ थीं एवं मुख पर एक प्रसन्न मुस्कान, तथा उसके शरीर का निचला भाग बहुत मजबूत

था। इस मकान का स्वामी इस गवर्नर का बहुत आदर करता था क्योंकि घूँस लेने वालों से घिरा होने पर भी वही अकेला ऐसा था जो घूँस नहीं लेता था। इस मकान की स्वामिनी भी जोकि संगीत की बहुत शौकीन थी तथा स्वयं पियानो बजाना जानती थी, इस व्यक्ति का सम्मान करती क्योंकि वह भी एक अच्छा संगीतज्ञ था और उसके साथ दोगाना गाने गाया करता था। नेखलूदोव इतना प्रसन्न चित्त था कि यह व्यक्ति भी उसे बुरा नहीं लगा यद्यपि वह उसके पापों के विषय में सुन चुका था।

प्रसन्न उत्साही अङ्गरक्षक ने निरन्तर सेवा करते रहने के कारण नेखलूदोव को अपनी सेवाओं से प्रसन्न कर दिया था।

किंतु सबसे अधिक प्रसन्न तो वह जनरल की लड़की और दामाद के आकर्षक व्यक्तित्व से हुआ था। लड़की सीधी-सादी और भोली थी। वह अपने दोनों बच्चों से बहुत प्रेम करती थी। उसे अपने पति से प्रेम हो गया था तथा अपने माता-पिता से बहुत संघर्ष करने के पश्चात कहीं जाकर वह उनको इस बात पर सहमत कर सकी कि उन दोनों का आपस में विवाह हो जाय। उसका पति उदारदलीय था तथा मास्को विश्वविद्यालय से ऑनर्स कर चुका था। वह स्टेटिस्टिकस विभाग की सरकारी नौकरी में लग गया था। वह बड़ा लजीला तथा बुद्धिमान था। उसे मूल निवासियों से बहुत सहानुभूति थी। वह उनके विषय में अध्ययन करता तथा उनके प्राणों की रक्षा करने को सदैव तत्पर रहता था।

ये सब व्यक्ति नेखलूदोव के प्रति दयालु अथवा जागरुक ही न थे अपितु एक नए तथा अच्छे परिचित को प्राप्त कर उससे अत्यन्त प्रसन्न भी थे। यूनीफार्म पहिने तथा उस पर सफेद क्रॉस लगाए हुए जनरल ने डिनर में आते ही नेखलूदोव का मित्र की भाँति अभिवादन किया तथा अतिथियों से 'साइडटेबिल' से एक-एक गिलास वोदका का लेकर पीने एवं अपनी भूख उत्तेजित करने के कुछ पदार्थ खाने को कहा। जनरल ने नेखलूदोव से पूछा कि सुबह यहाँ से जाने के पश्चात अब तक आप क्या करते रहे। नेखलूदोव ने बतलाया कि मैं डाकखाने गया और वहाँ मुझे उस स्त्री के विषय में जिसकी बावत कि मैंने सुबह आपसे कहा था एक समाचार मिला है कि उसका दण्ड कम कर दिया जायगा। फिर उसने माशलोवा से बन्दीगृह में मिलने के लिए छुट्टी माँगी।

जनरल ने भौंहें चढ़ा ली किंतु कुछ बोला नहीं। वह इस विषय को डिनर के समय छेड़े जाने से क्रुद्ध हो गया था।

"वोदका का गिलास पिग्रोगे ?" उसने ग्रँग्रेज से, जो कि मेज के पास ग्रभी ग्राया था, फ्रांसीसी भाषा में पूछा।

ग्रँगरेज ने वोदका का गिलास लिया ग्रौर बोला कि मैं गिरजाघर ग्रौर फैक्टरी देखने गया था किंतु मैं निर्वासन के उस बड़े कारागार को भी देखना चाहूँगा।

"ग्रोह, बिल्कुल हो जायगा।" जनरल ने नेखलूदोव से कहा "ग्राप दोनों साथ जा सकेंगे। इनके लिए 'पास' दे दो।" ग्रपने ग्रङ्गरक्षक की ग्रोर मुड़कर उसने कहा।

"ग्राप कब चलना चाहेंगे ?" नेखलूदोव ने पूछा।

"मै बन्दीगृह सायंकाल देखना पसन्द करता हूँ।" ग्रँगरेज ने उत्तर दिया "सब बन्दी ग्रन्दर होते हैं ग्रौर कोई नई तैयारी नहीं की जाती तो जैसे लोग होते हैं उसी ग्रवस्था में देखने को मिल जाते हैं।"

"ग्राह, तो ग्राप उसको उसके पूर्ण वैभव में देखना चाहते हैं ? देखिए। मैंने इसके विषय में लिख दिया है—किंतु वे लोग ध्यान नहीं देते हैं। इसलिए ग्रब विदेशी पत्रों को पढ़कर उन्हें मालुम हो जायगा।" जनरल बोला ग्रौर डिनर की मेज पर गया, जहाँ कि ग्रातिथेया ग्रतिथियों को उनके स्थान बतला रही थी।

नेखलूदोव ग्रपनी ग्रातिथेया तथा ग्रँगरेज के बीच बैठ गया। उसके सामने थी जनरलकी लड़की ग्रौर विभाग का भूतपूर्व डाइरेक्टर। डिनर पर बातचीतें होतीं ग्रौर रुक जातीं: कभी भारत के विषय में ग्रँगरेज कहता; कभी टोनकीन एक्स-पेडीसन के, ग्रौर यह सब जनरल को पसन्द न था। कभी साइबेरिया में फैली सार्व-भौमिक घूंस तथा भ्रष्टाचार की बातें होतीं। इन सब विषयों में से किसी में भी नेखलूदोव ने विशेष रुचि नहीं ली।

किंतु डिनर के पश्चात काफी पीते समय नेखलूदोव, ग्रँगरेज तथा ग्रातथेया के बीच ग्लेडस्टन के विषय में ग्रत्यन्त रुचिपूर्ण वार्तालाप प्रारम्भ हो गया ग्रौर नेखलूदोव को प्रतीत हुग्रा कि मैं बुद्धिमानी की बहुत सी बातें कह रहा हूँ जो कि उसके सामने वालों का ध्यान ग्रपनी ग्रोर ग्राकर्षित कर रही हैं। खूब खा-पी चुकने के बाद ग्रब ग्राराम कुर्सी पर बैठे हुए उच्च कुल के हँसमुख व्यक्ति के मध्य घूँट-घूँट कर काफी पीने में उसे बहुत ग्रानन्द ग्रा रहा था। ग्रौर जब ग्रँगरेज की प्रार्थना पर ग्रातिथेया भूतपूर्व डाइरेक्टर के साथ उठकर पियानो पर गई ग्रौर

चिर अभ्यस्त ढङ्ग से वे दोनों बीथोवन की पाँचवी सिम्फनी बजाने लगे, तब नेखलूदोव को पूर्णतः आत्मसंतुष्टि हो गई। इस अवस्था में तो वह अभी भी न पहुँच सका था। उसे लगा, उसे अभी-अभी ही यह ज्ञात हुआ है कि मैं कितना अच्छा व्यक्ति हूँ।

पियानो बहुत सुन्दर था तथा सिम्फनी अच्छे ढङ्ग से गाई गई। कम-से-कम नेखलूदोव को, तो जो कि उस सिम्फनी को जानता तथा पसन्द करता था, ऐसा ही प्रतीत हुआ। उस सुन्दर गाने को सुनकर वह इतना द्रवित हो उठा था कि उसकी नाक में गुदगुदाहट होने लगी।

नेखलूदोव ने अपनी आतिथेया को धन्यवाद दिया और उससे बिदा माँगने जा ही रहा था कि जनरल की पुत्री आई और निर्णयात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए लज्जित-सी बोली :

"आपने मेरे बच्चों के विषय में पूछा था न; क्या आप देखेंगे ?

"यह सोचती है कि मेरे बच्चों को सब कोई देखना चाहता है।" उसकी माँ ने अपनी पुत्री में दूसरों को प्रभावित करने की आयोग्यता पर मुस्कुराते हुए कहा "प्रिन्स, सभी बातों में रुचि नहीं लेते।"

"वह प्रिन्स को अपने बच्चे दिखलाने के लिए ले जा रही है।" जनरल ने ताश खेलते हुए, जहाँ कि उसके पास उसका दामाद, स्वर्ण खान वाला, तथा अङ्गरक्षक बैठा था, चिल्लाकर कहा "जाइए ! जाइए ! अपना स्नेह प्रदर्शित कीजिए।"

इस विचार से उत्तेजित हो, कि मेरे बच्चों के विषय में निर्णय दिया जाने वाला है, युवती तेजी से अन्दर के कमरे में चल दी। नेखलूदोव उसके पीछे-पीछे गया। सजे हुए तीसरे कमरे में, जिसमें सफेद कागज लगाया हुआ तथा शेड युक्त लेम्प जल रहा था, दो छोटी चारपाइयाँ बिछी हुई थीं। वहाँ कंधों पर सफेद केप रखे एक नर्स बैठी हुई थी। नर्स का साइबेरियन दयालु मुख मण्डल था तथा उसके गालों की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। उसने उठकर अभिवादन किया। माँ पहिली चारपाई के ऊपर झुकी जिसमें कि दो वर्ष की एक लड़की अपना छोटा मुँह खोले शान्ति से लेटी हुई थी तथा उसके लम्बे घुँघराले बाल तकिए पर उल्टे पड़े थे।

"इसका नाम कात्या है।" माँ ने ओढ़ने के सफेद और नीले वस्त्र को नीचे

से सीधा करते हुए कहा। बच्चों की टाँग उससे बाहर निकली हुई थी, माँ ने उसे अन्दर कर उसके ऊपर से उस वस्त्र को ही सीधा किया था।

"क्या यह सुन्दर नहीं है ? अभी दो वर्ष ही की तो है !"

"आकर्षक !"

"ओह, यह है वासयूक। इसके बाबा इसी नाम से पुकारते हैं इसे। बिल्कुल ही भिन्न। साइबेरियनों की भाँति। क्यों, नहीं ?"

"अद्भुत लड़का है।" नेखलूदोव ने उस छोटे-मोटे बालक को पेट के बल लेटा हुआ देखकर कहा।

"जी !" उसकी माँ ने प्रसन्न एवं गर्वित मुस्कयान से कहा।

नेखलूदोव को शृङ्खलाएँ, घुटे सिर, लड़ाइयाँ तथा नीचताएँ, मरणासन्न क्रील्तशोव, कातूशा तथा उसके समस्त अतीत का स्मरण हो आया, और उसे ईर्ष्या उत्पन्न हो आई तथा जो उसने यहाँ देखा उसे प्राप्त करने की कामना उत्पन्न हो गई, जो कि उस समय उसे विशुद्ध एवं उत्कृष्ट प्रसन्नता प्रतीत हो रही थी।

बच्चों की कितनी ही बार प्रशंसा कर उनकी माँ को, जो कि उनकी प्रशंसा की प्यासी थी, अंशतः संतोष प्रदान कर, वह उसके साथ-साथ बैठक में लौटा, जहाँ कि अंगरेज उसके साथ बंदीगृह को पूर्व निश्चयानुसार देखने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था। अपने अतिथियों, वृद्धों एवं युवकों से विदा होकर अंगरेज और नेखलूदोव बाहर निकलकर ड्योढ़ी पर पहुँचे।

मौसम बदल गया था। बर्फ की मोटी परतें पड़ रही थीं तथा सड़कें, छतें, बगीचे के वृक्ष, ड्योढ़ी की सीढ़ियां, बग्घी के पर्दे तथा घोड़ों की पीठें सब बर्फ ढक गई थीं।

अँगरेज की अपनी बग्घी थी, उसने कोचवान से बन्दीगृह ले चलने को कहा। नेखलूदोव ने भी अपने बंघी वाले को आवाज दी और वह अन्दर अकेला जा बैठा। अरुचिकर कर्तव्य के पालन का दायित्व अनुभव करते हुए वह अँगरेज की गाड़ी के पीछे-पीछे मुलायम बर्फ पर, जिस पर पहिए मुश्किल से चलते थे, वह रवाना हो गया।

२५

अपने संतरी तथा अपने सिंहद्वार के नीचे जलते हुए लैम्प-युक्त बन्दीगृह का उदासीन भवन अपनी ड्योढ़ी, छतें तथा दीवालें सभी बर्फ से ढके होने के उपरांत भी अपनी प्रकाशित खिड़कियों की लम्बी कतारों से सुबह से कहीं अधिक उदासी का भाव उत्पन्न कर रहा था।

रोबीला इन्सपैक्टर द्वार से बाहर निकला, नेखलूदोव तथा अँगरेज को दिए गए अनुमति-पत्र को लैम्प के प्रकाश में उसने पढ़ा तथा अपने सुन्दर कंधों को आश्चर्य में हिलाया; किंतु आज्ञा पालन करने के लिए उसने दर्शकों को अपने पीछे आने को कहा। वह उन्हें आँगन में लेकर आया, फिर दाहिनी ओर के एक द्वार में से ले जाकर सीढ़ियों पर होता हुआ कार्यालय में ले गया। उसने उन्हें बैठने के लिए कुर्सियाँ दीं और बोला कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ। यह सुनकर कि नेखलूदोव माशलोवा से तुरन्त मिलना चाहता है उसने एक वार्डर उसे बुलाकर लाने को भेजा, तब वह अँगरेज के प्रश्नों का उत्तर देने लगा। नेखलूदोव ने दुभाषिए का काम किया।

'इस बन्दीगृह में कितने बन्दियों के लिए स्थान है ?" अँगरेज ने पूछा। इसमें कितने बन्दी हैं ?...कितने पुरुष ?...कितनी स्त्रियाँ ?...बच्चे ?...कितनों को सश्रम कारावास का दण्ड प्राप्त हुआ है ?.. कितनों को निर्वासन ?...कितने रोगी हैं ?..."

नेखलूदोव ने अँगरेज तथा इन्सपैक्टर के शब्दों के अर्थ की ओर ध्यान दिए बिना ही उनका अनुवाद कर दिया और उसके हृदय में होने वाली भेंट के सम्बन्ध में बेचैनी उत्पन्न हो गई, जिसकी कि उसे तनिक भी आशंका नहीं थी। वह अँगरेज के एक वाक्य का अनुवाद कर रहा था कि उसे किसी के आते हुए कदमों के चाप सुनाई दिए तथा कार्यालय का द्वार खुला और जैसा कि पहिले भी कितनी ही बार हो चुका था, वार्डर आया। उसके पीछे-पीछे उसने देखा कि जाकिट पहिने तथा सिर पर रूमाल बाँधे कातूशा चली आ रही है। उसका सारा शरीर काँप-सा गया।

"मैं जीवन चाहता हूँ, मैं परिवार, बच्चे और मानवीय जीवन चाहता

हूँ।" माशलोवा के कमरे में तेजी से नीची दृष्टि किए हुए आने के साथ ही नेखलूदोव के मस्तिष्क में विचार कौंध गए।

वह उठा और उसकी ओर बढ़ा। उसे लगा कि उसका मुख कठोर एवं अप्रसन्न था—वैसा ही जैसा कि पहिले था जब माशलोवा ने उससे तिरस्कारयुक्त बातें की थीं। वह लजा उठी, फिर पीली पड़ गई; उसकी उङ्गलियाँ जाकिट के एक कोने को मरोड़ने लगीं। उसने एक बार नेखलूदोव की ओर देखा, फिर अपनी दृष्टि नीची कर ली।

"तुम्हें मालुम हो गया होगा कि तुम्हारा दण्ड घटा दिया गया है ?"

"जी हाँ ! वार्डर ने मुझे बतला दिया था।"

"इसलिए ज्यों ही असल आज्ञा आ जाएगी तुम मुक्त हो जाओगी और यह निर्णय कर सकोगी कि कहाँ रहा जाय। हम लोग तब विचार......"

उसने शीघ्र ही उसे टोक दिया।

"मुझे क्या सोचना है ? जहाँ भी व्लादीमीर साइमन्सन जाएँगे, वहीं मैं जाऊँगी।"

उत्तेजित होते हुए भी उसने अपने नेत्र उसकी ओर उठाए और इन शब्दों का स्पष्टता तथा शीघ्रता से उच्चारण किया मानो उसने अपना -उत्तर पहिले से ही तैयार कर रखा हो।

"सच ?"

"दिमीत्री इवानोविच ! आप जानते ही हैं कि वह मुझे अपने साथ रखना चाहते है ..." वह भयभीत होकर रुकी। उसने अपनी बात सुधारी, "वह मुझे अपने पास रखना चाहते हैं। इससे अधिक मैं क्या आशा कर सकती हूँ ? मुझे इसको प्रसन्नतापूर्वक मानना चाहिए। इसके अतिरिक्त मेरे लिए क्या हो सकता है ?..."

"दो में से एक बात है" नेखलूदोव ने सोचा, "या तो यह साइमन्सन से प्रेम करने लग गई है और इसे उस बलिदान का तनिक भी आभास नही है जो कि मैं समझता था कि मैं इसके लिए कर रहा हूँ, अथवा यह मुझसे अब भी प्रेम करती है और मेरे हित के लिए ही मुझसे दूर हट रही है तथा साइमन्सन से विवाह कर अपने झोंपडे में स्वयं ही आग लगा रही है।" वह लज्जित हो उठा तथा यह समझ गया कि मैं लज्जित हो रहा हूँ।

"और तुम, क्या स्वयं तुम उससे प्रेम करती हो ?" उसने पूछा।

"प्रेम करूँ या न करूँ, इससे क्या अन्तर पड़ता है ? वह सब बीती बातें हैं। और फिर व्लादीमीर साइमन्सन एक असाधारण व्यक्ति हैं।"

"हाँ ! निश्चित ही।" नेखलूदोव ने कहना प्रारम्भ किया "वह बड़ा प्रतिभाशाली व्यक्ति है। और मैं समझता हूँ..."

किंतु उसने फिर उसकी बात काट दी, मानो उसे डर हो कि वह बहुत-सी बातें कह डालेगा और मैं कुछ न कह पाऊँगी।

"नहीं दिमीत्री इवानोविच !, यदि मैं आपकी इच्छानुसार कार्य नहीं कर सकती हूँ तो आप मुझे क्षमा करेंगे।" और उसने उसकी ओर अपनी अगाध तिरछी आँखों से देखा, "ऐसा ही होना चाहिए। आपकी भी तो ज़िंदगी है।"

कातूशा ने वही कहा जो थोड़ी देर पहिले नेखलूदोव अपने मन में सोच रहा था। किंतु अब नेखलूदोव के ये विचार नहीं थे, इस समय तो उसका विचार तथा अनुभूति बिल्कुल ही भिन्न थी। वह न केवल लज्जित हो उठा था वरन् दुखित भी था। उसे लगा कि कातूशा के साथ ही मैं न जाने कितनी वस्तुएँ खो रहा हूँ।

"मुझे इसकी आशा नहीं थी।" वह बोला।

"आप यहाँ रहकर क्यों कष्ट उठाएँ ? आपने पर्याप्त कष्ट उठाए हैं।" उसने एक बेढङ्गी मुस्कान से कहा।

"मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ। यह तो मेरे लिए अच्छा हुआ, और मैं यदि कर सका तो तुम्हारी सेवा करता ही रहूँगा।"

"हम..." ज्यों ही उसने 'हम' कहा उसने नेखलूदोव की ओर देखा— "हम लोगों को कुछ नहीं चाहिए। आपने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। यदि आप नहीं होते..." वह और भी कुछ कहना चाहती थी किंतु उसकी वाणी काँप गई।

"तुम्हें मुझे धन्यवाद देने का कोई कारण नहीं है।" नेखलूदोव ने कहा।

"यह हिसाब लगाने का क्या लाभ ? भगवान ही हमारा हिसाब किताब करेगा।" वह बोली और उसकी काली आँखें चमकने लगीं, उनमें अश्रु आ गए।

"कितनी अच्छी स्त्री हो तुम।" नेखलूदोव ने कहा।

"मैं और अच्छी ?" उसने आँसुओं के मध्य कहा तथा एक दुख भरी मुस्कान उसके चेहरे पर छा गई।

"क्या तुम तैयार हो ?" अँगरेज ने पूछा।

"बिल्कुल।" नेखलूदोव ने उत्तर दिया और माशलोवा से क्रील्तशोव के विषय में पूछा।

उसने अपनी भावुकता पर विजय प्राप्त कर ली और उसे शांति से इतना सब बतला दिया जितना कि वह जानती थी। क्रील्तशोव बहुत कमजोर था, और उसे चिकित्सालय में भेज दिया गया था; मेरिया पावलोव्ना बहुत उत्सुक थी तथा उसने चिकित्सालय में नर्स की भाँति काम करने की अनुमति के लिए प्रार्थना की थी किंतु उसे अनुमति नहीं प्राप्त हुई।

"क्या मैं आऊँ ?" उसने अँगरेज को प्रतीक्षा करते हुए देख कर कहा।

"मैं तुमसे नमस्कार नहीं करूँगा, मैं फिर मिलूंगा।" नेखलूदोव ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"मुझे क्षमा कीजिएगा।" वह इतनी धीरे से बोली कि उसका स्वर भी नेखलूदोव को बड़ी कठिनता से सुनाई दिया। किंतु उनके नेत्र मिले तथा तिरछे नेत्रों में विचित्र दृष्टि तथा दयनीय मुस्कान थी जिसके साथ उसने "अन्तिम विदा" नहीं बल्कि "क्षमा कीजिएगा" कहा था। नेखलूदोव समझ गया कि अपने निश्चय पर अटल रहने के दो कारणों में से, जिन्हें कि वह समझता था, दूसरा ही असली कारण है। वह उससे प्रेम करती थी और उसने सोचा कि नेखलूदोव से विवाह करने का अर्थ होगा उसके जीवन को नष्ट कर देना। साइमन्सन के साथ जाने से उसने सोचा था कि नेखलूदोव स्वतन्त्र हो जाएगा और इस पर उसे प्रसन्नता हुई कि मैंने जो सोचा था वह हो गया किंतु फिर भी उसे नेखलूदोव से अलग होने पर दुख ही हुआ।

उसने नेखलूदोव से हाथ मिलाया, शीघ्र ही मुड़ी और फिर कमरे से बाहर चली गई।

नेखलूदोव चलने के लिए तैयार हो गया, किंतु यह देखकर कि अँगरेज कुछ लिख रहा है उसने उसे टोकना उचित नहीं समझा किंतु दीवाल के सहारे एक लकड़ी की बेंच पर जा बैठा; और एकाएक उसको थकान की सत्य भावना

ने आविर्भूत कर लिया। थकान उसे रात्रि के जागरण, यात्रा अथवा उत्तेजना के कारण व्याप्त नहीं हुई थी, यह थकान थी अपने जीवन से जिससे कि वह बहुत अधिक उदसी का अनुभव कर रहा था। वह बैंच की पीठ पर झुक गया, आँखें बन्द करलीं और क्षणभर में सो गया—निद्रा, प्रगाढ़ निद्रा में।

"क्या आप कोठरियों का निरीक्षण करना चाहेंगे ?" इन्सपैक्टर ने पूछा।

नेखलूदोव ने सामने की ओर देखा और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैं कहाँ हूँ। अँगरेज अपनी लिखाई समाप्त कर चुका था तथा उसने कोठरियां देखने की इच्छा व्यक्त की।

थका और दुखी नेखलूदोव उसके पीछे-पीछे चल दिया।

२६

गलियारे तथा गन्दे, दुर्गन्धित बरामदे में, जहाँ कि इन्हें दो बंदियों को फर्श पर पेशाब करते देखकर आश्चर्य हुआ, होते हुए अँगरेज, नेखलूदोव, तथा वार्डरों सहित इन्सपैक्टर पहिले वार्ड में प्रविष्ट हुए, जहाँ सश्रम कारावास के दण्ड प्राप्त बन्दी बन्द कर दिए गए थे। बन्दी लकड़ी के तख्तों की बनी चारपाइयों पर पहिले से ही लेटे हुए थे। इनसे वार्ड का मध्य भाग घिरा हुआ था। ये लोग लगभग सत्तर थे तथा सिर-से-सिर और बगल-से-बगल मिलाए एक पंक्ति में लेटे हुए थे। दर्शकों के अन्दर प्रवेश करते ही समस्त बन्दी उछलकर चारपाइयों से नीचे शृङ्खलाओं को झनझनाते खड़े हो गए। खड़े नहीं हुए केवल दो—एक तो युवक जिसको कि बहुत तेज बुखार था व दूसरा वृद्ध जो कराह ही कराह रहा था।

अँगरेज ने पूछा कि क्या यह युवक बहुत दिनों से बीमार है। इन्सपैक्टर ने उत्तर दिया कि युवक को तो सुबह ही बुखार आया है किन्तु वृद्ध के पेट में बहुत दिनों से दर्द चल रहा है। इसे यहाँ से चिकित्सालय इसलिए नहीं भेजा जा सका कि चिकित्सालय में कोई स्थान रिक्त नहीं था। अँगरेज ने सन्तोष से अपना सिर हिलाया और बोला "मैं इन लोगों से कुछ कहना चाहता हूँ।" और नेखलूदोव से अपनी बात को इनकी भाषा में समझाने को कहा। पता यह चला कि अँगरेज

महोदय का उद्देश्य निर्वासन के स्थान तथा साईबेरिया के बन्दीगृहों के निरीक्षण के अतिरिक्त यह भी था कि वह धर्म तथा प्रायश्चित द्वारा मुक्ति का भी प्रचार करते थे।

"इनसे कहिए।" वह बोला "ईसामसीह ने इन पर करुणा की, इनको प्रेम किया तथा इनके ही लिए उसने अपने प्राण दे दिए। यदि ये लोग इस भाँति विश्वास करेंगे तो इनकी मुक्ति हो जायगी।" जब वह बोल रहा था सब बन्दी हाथों को बगल से सटाए चुपचाप खड़े थे "इस पुस्तक में, इनसे कह दीजिए।" वह कहता रहा, "इसके विषय में सब कुछ लिखा हुआ है। क्या इनमें से कोई पढ़ सकता है?"

ऐसे बन्दियों की संख्या बीस से अधिक थी जो कि पढ़ सकते थे।

अँगरेज ने हैण्ड-बैग में से जिल्द-बँधी कितनी ही बाइबिलें निकालीं तथा मोटी कमीजों से सख्त काले नाखूनों वाली कितनी ही बलिष्ट भुजाएँ, एक दूसरे से लड़ती हुई, उसकी ओर बढ़ने लगीं। इस वार्ड में उसने दो बाइबिलें दीं।

यही बातें दूसरे वार्ड में हुईं। वहाँ भी दूषित वायु, खिड़कियों के बीच लटकी हुई वैसी ही मूर्तियाँ, द्वार के बाँयी ओर वैसा ही टब; वे सब एक से एक सटे लेटे हो गए थे, तथा उसी भाँति कूद कर, सीधे तनकर, बगल से एक हाथ सटाये खड़े हुए—केवल तीन को छोड़कर, जिनमें से दो तो बैठे हुए थे और लेटे हुए ने नवागन्तुकों की ओर देखा तक नहीं। ये भी तीनों बीमार थे। अँगरेज ने वहीं भाषण दिया तथा फिर दो बाइबिलें दीं।

तीसरे कमरे से शोर और चीखें आ रही थीं। इन्सपैक्टर ने द्वार खटखटाया और चिल्लाया "खामोश!" जब द्वार खुला तब दर्शकों ने पुनः बन्दियों को अपनी लकड़ी की चारपाइयों के पास खड़े देखा—केवल थोड़े से लोगों को छोड़कर जो कि बीमार थे या वे दो जो कि लड़ रहे थे। इन दोनों के चेहरे क्रोध से तमतमा रहे थे और वे दोनों एक दूसरे को पकड़े हुए थे--एक ने तो बालों को पकड़ रक्खा था दूसरे ने दाढ़ी को। वे तब ही हटे जब कि इन्सपैक्टर उनकी ओर दौड़ा। उनमें से एक, जिसकी नाक पर घूँसा लगा था, खून, थूक तथा लार डाल रहा था, जिसे उसने अपने कफटान की बाँह से पोंछा। दूसरा उन बालों को बीन रहा था जो उसकी दाढ़ी से टूट गये थे।

"मानीटर!" इन्सपैक्टर ने क्रोध में चीखकर पुकारा।

एक सुन्दर तथा स्वस्थ व्यक्ति बाहर आया।

"श्रीमान जी ! मैं इनको अलग नही कर सका।" उसने आँखों में मनोहर मुस्कान से कहा।

"मै बतलाऊँगा इन्हे !" इन्सपैक्टर ने भौहें चढ़ाते हुए कहा।

"ये लड़े क्यों ?" अँगरेज ने अँगरेजी मे पूछा।

नेखलूदोव ने मानीटर से पूछा।

"एक ने दूसरे का कम्बल चुरा लिया।" मानीटर ने अब भी मुस्कुराते हुए कहा। "इसने एक घूँसा मारा उसने भी उत्तर दिया।"

"मैं इन लोगों से कुछ कहना चाहता हूँ।".इन्सपैक्टर से अँगरेज बोला।

नेखलूदोव ने अनुवाद किया।

"जी हाँ कहिए।" इन्सपैक्टर ने कहा। तथा अँगरेज ने चमड़े की जिल्द की एक बाइबिल निकाली।

"कृपया इसका अनुवाद कर दीजिए।" उसने नेखलूदोव से कहा : "तुममें वाद विवाद हुआ और तुम घूँसेबाजी पर आ गए, किंतु ईसू, जिसने हमारे लिए प्राण दिए, अपने झगड़ों को सिलटाने का दूसरा उपाय बतलाता है। इनसे पूछिए कि यदि इन्हें मालूम हो कि ईसू की धारणा के अनुसार हमें उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जो हमारे साथ बुराई करते हैं ?"

नेखलूदोव ने अँगरेज के शब्दों तथा उसके प्रश्न को अनूदित कर दिया।

"प्रधान से शिकायत कर दीजिए, वह मामले को तय कर देगा, यही मतलब है ना ?" एक लड़ाके ने इन्सपैक्टर के रोबीले चेहरे की ओर दृष्टिपात करते हुए पूछा।

"उसका जबड़ा तोड़ दीजिए, तब वह दुबारा आपके पास झांकेगा भी नहीं।" दूसरे ने कहा। सारे कमरे में अनुमोदन स्वरूप सिर हिल उठे।

नेखलूदोव ने दोनों के उत्तर अनुवाद कर सुना दिए।

"इनसे कह दीजिए कि ईसामसीह के विचारों के अनुसार उन्हें बिल्कुल उल्टे ढंग से व्यवहार करना चाहिए; यदि तुम्हारे एक गाल पर चाँटा पड़े तो दूसरा भी उसकी ओर कर दो।" अँगरेज ने कहा।

नेखलूदोव ने अनुवाद कर दिया।

"इन्हें स्वयं ही उसकी परीक्षा करने दो।" एक स्वर सुनाई दिया।

"और यदि वह गाल पर चाँटा न मारकर कहीं और मारे तब उसकी ओर क्या करना चाहिए।" एक बीमार बन्दी ने पूछा।

"तब वह तुम्हें एड़ी से लेकर चोटी तक सीधा खड़ा कर देगा।"

"इन्हें ही उसकी परीक्षा करने दो!" किसी ने बड़ी जोर से हँसते हुए कहा।

सारे कमरे में हँसी का ठहाका गूंज उठा—यहाँ तक कि जिसकी नाक से खून गिर रहा था वह भी हँस पड़ा तथा बीमार बन्दियों ने भी उस हँसी में सबका साथ दिया।

किंतु अँगरेज झेंपा नहीं। उसने नेखलूदोव से उन लोगों को यह बतलाने के लिए कहा कि जो कार्य करना असम्भव प्रतीत होता है सम्भव बन जाता है और जो सच्चे हृदय से विश्वास करते हैं उन लोगों के लिए वह एक आनन्द की वस्तु हो जाता है।

"इनसे पूछिये कि क्या ये मदिरा पीते हैं।" वह बोला।

"वे लोग नहीं।" एक आवाज आई जिसके साथ ही छींक तथा फिर हँसी।

इस कमरे में चार बंदी बीमार थे। जब अँगरेज ने पूछा कि सब बीमार एक कमरे में क्यों नहीं रखे जाते तब इन्सपैक्टर ने कहा कि ये लोग ऐसा स्वयं नहीं चाहते, कि इनको छूत के रोग नहीं, कि डाक्टर आकर देख जाता है तथा जो आवश्यक होता है सब करता है।

"उसने तो यहाँ पन्द्रह दिन से शकल नहीं दिखलाई।" फुसफुसाहट में किसी ने कहा।

इन्सपैक्टर ने उत्तर नहीं दिया और दूसरे वार्ड में उन्हें लिवा ले गया। फिर द्वार खुला, सब उठ खड़े हुए, तथा अँगरेज ने फिर बाइबिलें दीं। पाँचवें, छठवे, दाहिनी ओर वाले तथा बाँयी ओर वाले सब ही वार्डों में इसी प्रकार हुआ।

सश्रम करावास के दंड प्राप्त बन्दियों से चलकर वे निर्वासन के दण्ड प्राप्त बन्दियों में पहुँचे, वहाँ से फिर पंचायतों द्वारा निर्वासित बंदियों एवं उनमें पहुँचे जो स्वयं अपनी इच्छा से दल के साथ चल रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति भूखा, उदास, सुस्त,

बीमार, पतनोन्मुख तथा वन्द जंगली पशुओं की भाँति दिखाया गया।

जितनी बाइबिलें अँगरेज को देनी थीं देकर उसने देनी बन्द कर दीं तथा भाषण देना बन्द कर दिया। हृदय को पस्त करने वाले दृश्य, विशेषतया श्वास अवरुद्ध करने वाले वातावरण, ने इस अँगरेज की शक्ति को भी थका दिया और वह प्रत्येक कोठरी में जाकर इन्सपैक्टर की रिपोर्ट सुनकर केवल इतना ही कहता "ठीक।"

स्वप्न की भाँति नेखलूदोव पीछे-पीछे चलता रहा। न तो वह जाने से अस्वीकार ही कर सका और न वहाँ से बाहर ही जा सका तथा उसी थकान एवं नैराश्य की भावना से भरा रहा।

२७

निर्वासितों के एक वार्ड में नेखलूदोव यह देखकर आश्चर्यचकित हो उठा कि सुबह नाव में नदी पार करने वाला विचित्र वृद्ध भी यहाँ बन्दी है। चिथड़ों से लदा हुआ झुर्रियों युक्त वृद्ध केवल भस्म के से रङ्ग की एक मैली कमीज, जो कि एक कंधे पर से फट रही थी, तथा वैसे ही मोजे पहिने नंगे पाँवों बिस्तरों के पास फर्श पर भूमि में बैठा था। उसने नवागंनुकों की ओर कठोर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा। उसकी कमीज के छेदों से उसका तन अत्यन्त कृशकाय दिखलाई दे रहा था किंतु उसके मुख पर गम्भीरता तथा प्रोत्साहन की भावना उस समय से भी अधिक थी जब कि नेखलूदोव ने उसे नाव पर नदी को पार करते हुए देखा था। अन्य वार्डों की ही भाँति यहाँ भी अधिकारियों के प्रविष्ट करते ही सभी बंदी उछल कर सीधे खड़े हो गए, किंतु वृद्ध बैठा ही रहा। उसके नेत्रों में चमक थी और माथे पर क्रोध में चढ़ी हुई भोंहें।

"खड़े हो जाओ!" इन्सपैक्टर ने उससे कहा।

वृद्ध नहीं उठा, तिरस्कार से मुस्कुरा कर रह गया।

"तेरे सामने नौकर खड़े तो हैं, मैं तेरा नौकर नहीं। तेरे तो मुहर लगी है..." वृद्ध ने इन्सपैक्टर के माथे की ओर इंगित करते हुए कहा।

"क्या...आ...?" इन्सपैक्टर ने धमकीपूर्ण स्वर में कहा और उसकी ओर एक कदम बढ़ाया।

"मैं इस व्यक्ति को जानता हूँ।" नेखलूदोव ने शीघ्रता से कहा 'इसको किसलिए बन्दी बनाया गया ?"

"पुलिस ने इसको यहाँ इसलिए भेज दिया है कि इसके पास पारपत्र नहीं था। हम उनसे ऐसे लोगों को भेजने को मना करते हैं किंतु वे हैं जो मानते ही नहीं।" इन्सपैक्टर ने वृद्ध की ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि डालते हुए कहा।

"और तू भी ईसू-विरोधी सेना का ही प्रतीत होता है ?" वृद्ध ने नेखलूदोव से कहा।

"नहीं, मैं तो दर्शक हूँ।" नेखलूदोव बोला।

"क्या यह देखने आया है यहाँ पर कि ईसू-विरोधी किस भाँति मानव को त्रस्त करते हैं ? देखले यहाँ। इसने सबको, इनकी पूरी सेना को, एक पिंजड़े में बन्द कर रखा है। आदमियों को एड़ी चोट एक कर परिश्रम कर भोजन करना चाहिए। लेकिन इसने इन्हें बन्द कर रखा है और काम कुछ नही है, तथा सूअरों की तरह खिलाता है ताकि ये भी पशु बन जाएँ।"

"यह क्या कह रहा है ?" अँगरेज ने पूछा।

नेखलूदोव ने उसे बतलाया कि वह वृद्ध व्यक्ति इन्सपैक्टर को दोष दे रहा है कि उसने इतने लोगों को बन्द कर रखा है।

"इससे पूछिए कि नियम भंग करने वालों के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए।" अँगरेज बोला।

नेखलूदोव ने प्रश्न का अनुवाद कर दिया।

अपने दाँतों को यथास्थिति दिखलाते हुए वृद्ध विचित्र ढङ्ग से हँस पड़ा।

"नियम ?" उसने घृणा से कहा "पहिले तो उसने सबको लूट लिया, सारी भूमि पर अधिकार कर लिया, तथा मनुष्यों के सब अधिकार छीन लिए— सब अपने हाथों में ले लिया—जो भी उसके विरुद्ध था उसे जान से मार दिया और तब उसने बनाए ये नियम 'चोरी मत करो' 'प्राण मत हरो।' काश उस सबसे पहिले लिखे होते ये नियम।"

नेखलूदोव ने अनुवाद कर दिया। अँगरेज मुस्कुराया।

"खैर, इससे पूछिए कि अब हत्यारों एवं चोरों के साथ क्या व्यवहार होना चाहिए ?"

नेखलूदोव ने उसके प्रश्न का अनुवाद कर दिया।

"इससे कह दो कि पहिले ईसू-विरोधी मुहर यह अपने सिर से हटा दे।" वृद्ध ने कठोरता से भोंहें चढ़ाते हुए कहा, "तब इसे ज्ञात हो जाएगा कि न तो कोई हत्यारा है और न कोई चोर। कह दो इससे।"

'यह सनकी है।" अँगरेज ने नेखलूदोव के अनुवाद को सुनकर कहा और अपने कंधे हिलाता वहाँ से चल दिया।

"तू अपना काम कर, दूसरों को छोड़। हर एक को अपने ऊपर छोड़। भगवान जानता है हमारे बस में नहीं कि फाँसी किसको दी जाय, क्षमा किसको किया जाय।" वृद्ध बोला "अपने स्वामी स्वयं बनो, तब स्वामियों की आवश्यकता नहीं रहेगी। जा जा!" उसने क्रोध में त्यौरियाँ चढ़ाते हुए क्रोध से नेखलूदोव को, जो वार्ड से जाते झिझक रहा था, देखकर कहा। "क्या तुझे अभी तक नहीं मालूम हुआ कि ईसू-विरोधी मानव-रक्त पीने को जूंऐ पालते हैं? जा! जा।"

नेखलूदोव कमरे से बाहर निकल अँगरेज के पास गया, जो कि एक खुले द्वार के पास इन्सपैक्टर के साथ खड़ा पूछ रहा था कि यह कोठरी किस काम में आती है।

"यह मृतक-गृह है।"

"ओह!" अँगरेज ने कहा और जाने की इच्छा व्यक्त की।

मृतक-गृह एक छोटी-सी साधारण कोठरी थी। दीवाल पर एक छोटा-सा लैम्प लटका हुआ था। उसके धुंधले प्रकाश में कुछ बोरे और लट्ठे, जो एक कोने में एकत्रित किए हुए थे, दिखलाई भी दे रहे थे। दाहिनी ओर चारपाइयों पर चार लाशें पड़ी हुई दिखलाई दे रही थीं। पहिला शव, मोटी सूती कमीज और जाँत्रिया पहिने किसी लम्बे आदमी का था, जिसके दाढ़ी थी तथा जिसका सिर आधा घुटा हुआ था। शव काफी कड़ा हो चुका था। नीले हाथ, जिन्हें मोड़ कर उसके वक्ष पर रख दिया गया था, हटकर अलग हो गए थे। दोनों पैर भी तन गए थे और नंगे बाहर निकले हुए थे। उसके पास ही एक नंगे पाँव, उघड़े सिर की वृद्धा का शव पड़ा था जिसने कि सफेद गरारा और जाकिट पहिन रखी थी। इसके बालों की पतली पाटी खुली हुई थी। इसका चेहरा पीला और नाक नुकीली थी। इस स्त्री के दूसरी ओर बनफशई रंग का कपड़ा पहिने एक अन्य व्यक्ति का शव था। इस रंग को देखकर नेखलूदोव को कुछ स्मरण हो आया।

वह शव के पास आया और उसकी ओर देखने लगा।

छोटी नुकीली दाढ़ी ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी। दृढ़, सुन्दर आकृति की नाक, ऊँचा श्वेत माथा, पतले घुँघराले बाल—नेखलूदोव ने पूर्व परिचित अङ्ग पहिचान लिए किंतु उसे अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं हुआ। कल ही उसने इस मुखाकृति को क्रोधित, उत्तेजित और कष्ट में देखा था, इस समय यह बिल्कुल शांत, निश्चल तथा अत्यन्त सुन्दर लग रहा था।

हाँ, यह क्रील्तशोव ही का शव था, या यों कहिए कि उसके सांसारिक अस्तित्व का एक चिह्न—जो अब शेष रहा था।

"इसने यातनाएँ क्यों झेलीं? अपने जीवन का उद्देश्य क्या अब समझ गया?" नेखलूदोव ने सोचा। शायद इसका कोई उत्तर ही न था, मृत्यु के अतिरिक्त कुछ और ही दिखलाई देता था और उसे मूर्छा-सी आने लगी।

अँगरेज से विदा लिए बिना ही नेखलूदोव ने इन्सपैक्टर से आँगन का मार्ग बतलाने के लिए कहा और यह सोचकर कि मुझे एकांत में सायंकाल की समस्त घटनाओं पर विचार करने की नितांत आवश्यकता है वह बग्घी में सवार हो अपने होटल को लौट दिया।

२८

होटल जाकर नेखलूदोव बिस्तर पर लेटा नहीं किंतु बहुत समय तक कमरे में इधर-से-उधर चहलकदमी करता रहा। कातूशा वाला मामला समाप्त-प्राय था। कातूशा को अब उसकी आवश्यकता नहीं थी, इस बात से वह बहुत दुखी एवं लज्जित हो उठा था। किंतु वह इससे परेशान नहीं हुआ था। उसका दूसरा कार्य न केवल अभी अपूर्ण ही था किंतु उसके कारण उसकी परेशानी पहिले से भी अधिक बढ़ गई, उसमें दौड़धूप की भी जरूरत थी।

जिन भयङ्कर कुरीतियों को उसने पिछले दिनों देखा था और जिनका ज्ञान प्राप्त किया था तथा जिस कुरीति ने प्रिय क्रील्तशोव का प्राणांत कर दिया था और जो कि इस भयानक बन्दीगृह में राज्य कर रही थी, जिसे कि उसने आज देखा था, वे सब कुरीतियां विजयी सिद्ध हो गईं। और नेखलूदोव को इन कुरीतियों पर विजय प्राप्त करने की कोई संभावना दिखलाई नहीं दी और न किसी ऐसे मार्ग के दिखलाई देने की संभावना ही प्रतीत हुई जिससे कि इन पर विजय प्राप्त की जा सके।

उसके मस्तिष्क में उन सैकड़ों, हजारों पतनोन्मुख व्यक्तियों की कल्पना उत्पन्न हुई जिनको कि निकम्मे जनरलों, प्रोक्योररों, तथा इन्सपैक्टरों ने इन दुर्गन्ध-युक्त बन्दीगृहों में डाल रखा था। तब उसे उस विचित्र वृद्ध का ध्यान आया जो अधिकारियों पर दोषारोपण कर रहा था तथा इस कारण जिसे पागल करार दिया गया था। फिर क्रील्तशोव का सुन्दर मुख स्मरण आया जिसने कि क्रोध में ही अपना प्राणान्त कर लिया था। उसके मस्तिष्क में यह प्रश्न पहिले से भी अधिक बलपूर्वक उठा कि क्या मैं पागल हूँ, अथवा पागल हैं वे लोग जो इन सब कार्यों को करते हुए सोचते हैं कि हमारा मस्तिष्क सही है। और उसके मन ने इस प्रश्न का उत्तर माँगा।

चहलकदमी तथा विचारों के भार से थककर वह लैम्प के पास सोफे पर जाकर बैठ गया और उसने अँगरेज द्वारा उपहारस्वरूप दी हुई बाइबिल को दुखी हो खोला जिसको कि उसने आते ही अपनी जेबें खाली करते समय मेज पर पटक दिया था।

'कहा जाता है कि प्रत्येक प्रश्न का उत्तर इसमें मिल सकता है।" उसने सोचा और बाइबिल को एकदम से खोलने पर संत मैथ्यू का अध्याय १८ सामने आया, वह उसे ही पढ़ने लगा—

'१. उसी समय ईसू के पास उसके शिष्य आकर बोले, स्वर्ग की राजधानी में सबसे बड़ा कौन है?

'२. और ईसू ने एक छोटे बच्चे को बुलाकर उनके बीच में खड़ा कर दिया।

'३. और कहा, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक तुम लोग अपने को बदलोगे नहीं, तथा छोटे बालकों के समान नहीं बनोगे तब तक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाओगे।

'४. इसलिए जो भी इस छोटे बच्चे के समान विनीत बनने में सफल हो जायगा, वही स्वर्ग की राजधानी में सबसे बड़ा माना जायगा।'

"हाँ! यह बात सही है।" वह बोला और उसे स्मरण आया कि जब मैंने अपने को विनीत बना लिया था तभी मैं जीवन के सच्चे आनन्द एवं शान्ति का अनुभव कर सका था।

'५. और जो भी ऐसे बालक को मेरे नाम से ग्रहण करेगा वही मुझे

ग्रहण करेगा।

'६. किन्तु इनमें से भी जो किसी ऐसे बच्चे को, जो कि मुझमें विश्वास करता है, चोट पहुँचाएगा उसके लिए तो यही सुन्दर होगा कि उसके गले में चक्की का पाट लटकाकर उसे समुद्र के रसातल में डुबो दिया जाय।'

"यह किसलिए ?—'जो कोई ग्रहण करेगा।' ग्रहण करेगा कहाँ ? और 'मेरे नाम से' का क्या अर्थ है ?" उसने यह सोचकर मन-ही-मन विचार किया कि इन शब्दों का अर्थ कुछ समझ में आया नहीं। "और उसके गले मे चक्की का पाट क्यों ? और समुद्र के रसातल में क्यों ? नहीं, इसका अर्थ यह नहीं है; यह सही नहीं है, स्पष्ट नहीं है" और उसे स्मरण आया कि मैंने अपने जीवन में कितनी ही बार बाइबिल पढ़नी प्रारम्भ की और मुझे इन वाक्यों के अर्थ की अस्पष्टता पर कितनी घृणा हो आई थी। वह सातवीं, आठवीं, नवीं तथा दसवीं आयतों को पढ़ता रहा। इन आयतों में लड़खड़ाने के अवसरों के विषय में लिखा था और यह कि ऐसे अवसर आने ही चाहिए; तथा दण्ड के विषय में लिखा था कि लोगों को जहन्नुम भेजकर दण्ड दिया जाता है तथा कुछ फरिश्ते होते हैं जो कि स्वर्ग में पिता के दर्शन कराते हैं। "कितने दुख की बात है कि यह सब इतना असम्बद्ध है," उसने सोचा "फिर भी लोग सोचते हैं कि इसमें कुछ-न-कुछ अच्छाई है।"

'११. क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए आया है कि जो खो गया था उसे बचा सके।'...वह आगे पढ़ता रहा।

'१२. तुम्हारा क्या विचार है ? यदि किसी के पास एक सौ भेड़ें हैं और उनमें से एक भटक जाती है तो क्या वह नब्बे और नौ भेड़ों को छोड़ नहीं देता तथा उस भटकी हुई भेड़ को खोजने पहाड़ों में नहीं जाता ?

'१३. और कहीं उसे वह भेड़ मिल जाती है तो मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि वह उस भटकी हुई भेड़ की प्राप्ति पर जो आनन्द मानता है वह उन नब्बे और नौ भेड़ों पर नहीं मनाता, जो कि भटक कर कहीं चली नहीं गई थीं।

'१४. इसी भाँति तुम्हारे पिता की, जो कि स्वर्ग में है, यह इच्छा नहीं कि इन बच्चों में से एक का भी नाश हो।

"हाँ ! यह पिता की इच्छा नहीं कि इन लोगों का नाश हो, और यहाँ ये सैकड़ों, हजारों लोग नष्ट होते जा रहे हैं। और इन्हें बचाने की कोई सम्भावना नहीं है।" उसने सोचा और आगे पढ़ने लगा।

'२१. तब उसके पास पीटर आया और बोला, 'प्रभु मेरा भाई मेरे साथ कितनी बार पाप करेगा और मैं उसे कबतक क्षमा करता रहूँगा ? सात बार तक ?'

'२२. ईसू बोले, 'मैं कहता हूँ तेरे साथ ही नहीं और सात बार ही नहीं, किंतु सात के सत्तर गुने तक।'

'२३. इसलिए स्वर्ग की राजधानी उस राजा के समान है जो कि अपने नौकरों का हिसाब किताब लेना चाहता था।'

'२४. और जब वह लेखा लेने लगा तब एक व्यक्ति उसके पास लाया गया जिसने कि उससे दस हजार तोड़े ऋण लिए थे।'

'२५. किंतु चुकाने को उसके पास इतना नहीं बचा था, उसके स्वामी ने उसको, उसकी पत्नी को, उसके बच्चों को तथा उस सबको जो कुछ भी कि उसके पास था बचा कर ऋण चुकाने की आज्ञा दी।'

'२६. इसलिए नौकर उसके चरणों में गिर पड़ा और अपने स्वामी की यह कहते हुए उसने आराधना की कि प्रभु, धैर्य धारण कर और मैं तेरी पाई-पाई चुका दूँगा।'

'२७. तब उस नौकर का स्वामी दया से द्रवित हो उठा और उसे छोड़ कर उसने उसका सारा ऋण क्षमा कर दिया'।

'२८. किंतु वही नौकर बाहर गया और अपने एक सह-कर्मचारी, को जिस पर कि उसकी एक सौ दीनारें ऋण थीं खोज लाया : और उसने उस पर हाथ छोड़ा तथा उसके गले को पकड़ कर बोला, 'मेरा रुपया जो तेरी ओर निकलता है उसे चुका'।'

'२९. और उसका सह-कर्मचारी उसके चरणों में जा गिरा और यह कहते हुए प्रार्थना करने लगा, 'धीरज रख, मैं तेरा पाई-पाई चुका दूँगा'।'

'३०. और वह नहीं माना, किंतु गया और उसे बन्दीगृह में तबतक के लिए बन्द करा दिया जब तक कि ऋण नहीं चुके।'

'३१. इसलिए जब उसके सह-कर्मचारियों ने इस कृत्य को देखा तो उन्हें बड़ा दुख हुआ और अपने स्वामी के पास आकर उसे सब घटना सुना दी।'

'३२. फिर उसको बुलाने के पश्चात् उसके स्वामी ने उससे कहा, 'हे निर्दयी नौकर, मैंने तेरा सारा ऋण इसलिए क्षमा कर दिया कि तू मुझसे ऐसा चाहता था।'

'३३. क्या तुझे भी अपने सह-कर्मचारी पर दया नहीं दिखलानी चाहिए जिस भाँति कि मैने तुझ पर दया की थी ?"

'और क्या बस यहीं है ?" नेखलूदोव एकाएक बोल पड़ा तथा उसकी आत्मा ने पूरी शक्ति से कहा "हाँ ! इतना ही है ।"

और नेखलूदोव के साथ भी वैसा ही हुआ जैसा कि आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वालों के साथ बहुधा होता है। पहिले जो विचार विचित्र, असत्य और यहाँ तक कि हास्यप्रद भी लगता था वही अधिकांशतः जीवन के अनुभवों से पुष्ट होने पर एकाएक नितांत सरल एवं प्रमाणित सत्य सिद्ध हो गया। इस ढङ्ग से यह विचार उसकी समझ में साफ आ गया कि उन भयानक बुराइयों से, जिनसे कि मानव पीड़ित है, मुक्ति पाने का एक मात्र उपाय है कि मानव को सदैव प्रभु के सम्मुख स्वीकार कर लेना चाहिए कि मैं अपराधी हूँ इसलिए कोई भी मनुष्य को दण्ड देने अथवा उसका सुधार करने में असमर्थ है। उसकी समझ में यह बात स्पष्ट आ गई कि जितनी भी भयानक बुराइयों को तथा इन बुराइयों के करने वालों के मूक आत्म-विश्वास को मैं जेलों अथवा बन्दीगृहों में देखता रहा हूँ वे सब असंभव को संभव करने वाले मनुष्यों की चेष्टा के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई हैं। दुराचारी व्यक्ति दुराचारियों का सुधार करने की चेष्टा कर रहे थे और सोचते थे कि हम यांत्रिक साधनों से सुधार लेंगे। इसके परिणाम स्वरूप हुआ यह कि लालची और स्वार्थी व्यक्ति इस दण्ड के आडम्बर तथा दूसरों के सुधार का नाटक रचकर स्वयं भयङ्कर रूप से भ्रष्ट हो गए तथा उनको भी निरंतर भ्रष्ट करते रहे जिनको कि वे कष्ट देते थे। अब उसे स्पष्ट दिखलाई दे गया कि मुझे जिन भयों से साक्षात्कार हुआ था वे आरम्भ कहाँ से होते हैं, और उनको समाप्त करने के लिए क्या किया जाना चाहिए। जो उत्तर वह प्राप्त नहीं कर सका था वही उत्तर ईसू ने पीटर को दिया था कि प्रत्येक को सदैव क्षमा करना चाहिए—एक बार नहीं असंख्य बार क्षमा करना चाहिए क्योंकि ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जो स्वयं अपराधी नहीं है इसलिए कोई भी व्यक्ति न तो दण्ड दे सकता है और न सुधार ही सकता है।

"किंतु यह तो निश्चित है कि इतना सरल नहीं हो सकता।" नेखलूदोव ने सोचा; और फिर भी यह उसे उतना ही सुनिश्चित् दिखलाई दे रहा था जितना कि पहिले उसे आश्चर्यजनक लगा था, कि यह शास्त्रीय बात ही नहीं वरन् उस प्रश्न का व्यवहारिक हल भी है। अब वह साधारण विरोध समाप्त हो गया

कि "अपराधियों से किसी को कैसा व्यवहार करना चाहिए ? क्या उन्हें अदंडित जाने देना चाहिए ?" इस विरोध का तब तो कोई अर्थ होता भी जबकि यह सिद्ध हो जाता कि दण्ड से अपराध कम हो जाता है अथवा अपराधी में सुधार हो जाता है; किंतु क्योंकि सिद्ध होता है इसके बिल्कुल विपरीत, और क्योंकि यह स्पष्ट है कि किसी के बस में किसी को सुधारना नहीं है। इसलिए करना केवल यही उचित है कि उन कामों को करना बन्द कर दिया जाय जो कि न केवल व्यर्थ किंतु हानिकारक, अनैतिक तथा निर्दयी भी हैं। कितनी ही शताब्दियों से अपराधी समझे जाने व्यक्तियों को फाँसी दी जाती रही है। अच्छा तो क्या वे नष्ट हो गए ? नष्ट होना तो दूर रहा उनकी उल्टी संख्या बढ़ गई; दोनों की ही—दण्डों से भ्रष्ट अपराधियों की तथा उन कानूनी अपराधियों की भी—न्यायाधीशों, प्रोक्योररों, मजिस्ट्रेटों, तथा जेलरों की—जो कि मनुष्य का न्याय करते हैं तथा उन्हे दंड देते हैं। नेखलूदोव की समझ में अब आया कि समाज, तथा साधारण रूप से व्यवस्था का अस्तित्व इन कानूनी अपराधियों के कारण नहीं, जो कि दूसरों का न्याय करते है तथा इन्हें दण्ड देते हैं, वरन् इसलिए है कि इनके कलुषित प्रभाव के उपरांत भी मनुष्य दया करते हैं तथा एक दूसरे से प्रेम करते हैं।

अपने इस विचार की पुष्टि प्राप्त करने की आशा से नेखलूदोव ने बाइबिल को प्रारम्भ से पढ़ना आरम्भ किया। जब उसने पहाड़ पर हुए सदुपदेश को पढ़ लिया, जिससे कि वह सदैव प्रभावित होता रहा है, उसने अपने जीवन में पहिली बार देखा कि यह उपदेश कोई सुन्दर भावपूर्ण सिद्धान्तों का समूह नहीं, जिसमे कि अत्युक्तिपूर्ण और असम्भव बातों की माँग की गई हो वरन् यह सरल, स्पष्ट, व्यवहारिक नियमों का समूह है, जिनको कि यदि व्यवहार में लाया जाय (और यह बिल्कुल सम्भव है) तो वे नियम सामाजिक जीवन को बिल्कुल नए तथा आश्चर्यजनक मोड़ पर लाकर खड़ा कर सकते हैं, जिसमें कि हिंसा, जिसने कि नेखलूदोव में इतनी घृणा उत्पन्न करदी थी, स्वयं ही समाप्त ही न हो जाएगी वरन मनुष्य द्वारा प्राप्त करने की सबसे बड़ी वस्तु—पृथ्वी पर स्वर्ग की राजधानी—तक भी पहुँचा जा सकेगा।

और वे पाँच नियम ये हैं।

पहिला नियम है, (मैथ्यू अध्याय ५,२१-२६) कि मनुष्य को अपने भाई की हत्या नही करनी चाहिए, उससे क्रोधित भी नहीं होना चाहिए; किसी को भी "राका" निकम्मा नही समझना चाहिए; और यदि वह किसी से लड़ पड़ा हो

तो उसे ईश्वर के सम्मुख अपनी भेंट प्रस्तुत करने से पूर्व अर्थात् प्रार्थना से पूर्व ही उससे समझौता कर लेना चाहिए।

दूसरा नियम है (मैथ्यू अध्याय ५, २७-३२) कि मनुष्य को व्यभिचार नहीं करना चाहिए, और किसी स्त्री के सौन्दर्य के आनन्दोपभोग की कामना भी नहीं करनी चाहिए; और यदि वह स्त्री के सम्पर्क में एक बार भी आ जाय तो उसे उसके प्रति विश्वासघात कभी नहीं करना चाहिए।

तीसरा नियम है (मैथ्यू अध्याय ५, ३३-३७) कि मनुष्य को कभी शपथ के बंधन में नहीं बँधना चाहिए।

चौथा नियम है (मैथ्यू अध्याय ५, ३८-४२) कि मनुष्य को आँख के बदले आँख नहीं माँगनी चाहिए, किन्तु जब उसके एक गाल पर तमाचा पड़े तो दूसरा भी उसकी ओर बढ़ा देना चाहिए, चोट लग जाय तो उसे विनम्रता से सहन कर ले और मारने वाले को क्षमा कर दे तथा किसी की भी अपने से अपेक्षित सेवा करने से इन्कार नहीं करना चाहिए।

पाँचवाँ नियम है (मैथ्यू अध्याय ५,४३-४८) कि मनुष्य को अपने शत्रुओं से घृणा नहीं करनी चाहिए; न ही उनसे लड़ना चाहिए, किन्तु उनसे प्रेम करना चाहिए, उनकी सहायता तथा उनकी सेवा करनी चाहिए।

संत मैथ्यू के पाँचवे अध्याय में ५, २१-५८ आयतों में निम्न भाँति संदेश दिया गया है :—

तुमने सुना है कि अगलों को कहा गया था कि खून न करना और जो कोई खून करेगा वह कचहरी में दण्ड-योग्य होगा। पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा और जो अपने भाई से कहे 'अरे निकम्मा' वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा और जो कोई कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। सो यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए और वहाँ स्मरण करे कि मेरे भाई के मन में मेरे प्रति कुछ विरोध है तो अपनी भेंट वहाँ वेदी के सामने छोड़कर चला जा। पहिले अपने भाई से मेलकर तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है झट मेल कर। ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे और हाकिम तुझे पियादे को सौंपे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाय। मैं तुझसे सच सकता हूँ कि

जब तक तू कौड़ी २ न दे तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा।

तुमने सुना है कि कहा गया था कि व्यभिचार न करना। पर मैं तुमसे कहता हूँ जो कोई बुरे मन से किसी स्त्री को देखे वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकालकर फेंक दे क्योंकि तेरे लिए यह भला है कि तेरा एक अङ्ग नाश हो और तेरा सारा शरीर नर्क में न डाला जाय और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काटकर फेंक दे क्योंकि तेरे लिए यह भला है कि तेरा एक अङ्ग नाश हो और तेरा सारा शरीर नरक में न जाय। यह भी कहा गया था कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे वह उसे त्याग पत्र दे। पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई व्यभिचार को छोडकर और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागे वह उससे व्यभिचार करता है और जो कोई उस त्यागी हुई से व्याह करे वह व्यभिचार करता है।

फिर तुमने सुना है कि अगलों से कहा गया था कि झूठी किरिया न खाना, पर प्रभु के लिए अपनी किरियाओं को पूरी करना। पर मैं तुमसे कहता हूँ किरिया कभी न खाना, न स्वर्ग की खाना क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है, न धरती की क्योंकि वह उसके पाँवों की चौकी है, न यरूशलोम की क्योंकि वह महाराजा का नगर है। अपने सिर की भी किरिया न खाना क्योंकि तू एक बाल को न उजला न काला कर सकता है। पर तुम्हारी बात हाँ की हाँ या नहीं की नहीं हो; जो कुछ इससे अधिक हो वह बुराई से होता है।

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत। पर मैं तुमसे कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना पर जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। जो तुझपर नालिश करके तेरा कुर्ता लेना चाहे उसे दोहर भी लेने दे। जो कोई तुझे कोस भर बेगार ले जाय उसके साथ दो कोस चला जा। जो कोई तुझसे माँगे उसे देदे और तुझसे कर्ज लेना चाहे उससे मुँह न मोड़।

तुम सुन चुके हो कि कहा गया था कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने वैरी से वैर। पर मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने वैरियों से प्रेम रखना और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करना। इससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर सूर्य उदय करता है और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है। यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो तो क्या फल पाओगे? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा ही

नहीं करते ? और यदि तुम अपने भाइयों को ही नमस्कार करो तो कौन-सा बड़ा काम करते हो,क्या अन्य जाति वाले भी ऐसा नहीं करते ? सो जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है वैसे ही तुम भी सिद्ध हो जाओ।

नेखलूदोव लैम्प की ओर घूरता हुआ बैठा रहा, उसका हृदय स्तब्ध था। उसके सम्मुख उस जीवन की दारुण अव्यवस्था चित्रित हो उठी जो हम व्यतीत कर रहे हैं। उसके सम्मुख वह दृश्य भी उपस्थित हो गया कि यदि इन नियमों का पालन करना सिखला दिया जाय तो क्या-से-क्या हो जाय। उसकी आत्मा ऐसे आनन्द से परिपूर्ण हो उठी जिसका अनुभव उसने उससे पूर्व कभी नहीं किया था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि थकावट तथा कष्टों के बहुत लम्बे काल के पश्चात् उसे एकाएक आराम तथा स्वतन्त्रता मिल गई हो।

वह रात भर नहीं सोया, और जैसा कि अनेकों के साथ होता है जो कि बाइबिल पढ़ते हैं, उसे भी पहिली ही बार अपने पूर्व के कितनी ही बार पढ़े गए शब्दों का अर्थ समझ में आ गया जिनका कि पहिले कभी नहीं आया था। उसने इस सब आवश्यक, महत्त्वपूर्ण तथा आनन्दपूर्ण नवीन ज्ञान को इस भाँति पी लिया जैसे कि स्पंज पानी को सोख लेता है। और जो भी उसने पढ़ा सब उसे परिचित तथा चैतन्य देने वाला लगा; तथा उसे लगा कि मैं इसको जानता तो बहुत पहिले से था किंतु मैंने इसकी सत्यता को पूर्णतया स्वीकार नहीं किया था और न इस पर विश्वास ही पूर्णरूपेण किया था। अब उसने उसकी सत्यता स्वीकार की तथा उस पर विश्वास कर लिया; और न केवल यही स्वीकार किया अथवा इस पर ही विश्वास किया कि यदि मनुष्य इन नियमों का पालन करे तो वह सबसे बड़े वरदान को प्राप्त कर सकता है किंतु उसने यह भी स्वीकार किया तथा इस पर भी विश्वास किया कि प्रत्येक मनुष्य का एकमेव कर्तव्य है कि वह इन नियमों के अनुरूप कार्य करे कि इसमें जीवन का एकमात्र उचित अर्थ निहित है तथा यह कि इन नियमों की एक भी भूल ऐसी गल्ती है जिसके बाद तुरन्त ही प्रतिकार आता है। सारी शिक्षा का यही निचोड़ था तथा अंगूर के बागीचे वाले दृष्टांत में इसका स्पष्ट एवं बलपूर्वक चित्रण किया गया था।

माली यह समझते थे कि जिस अंगूर के बागीचे में अपने स्वामी के लिए कार्य करने को हमें भेजा गया है वह हमारा ही है, और यह कि इसमें जो कुछ भी है वह सब हमारे लिए बना है, तथा हमारा कार्य ही यह है कि बागीचे में हम आनन्दोपभोग करें, अपने स्वामी को विस्मरण कर दें तथा जो भी उसकी

सत्ता का स्मरण कराए उसकी को मार डालें।

"और क्या तब हम लोग भी वैसा ही नहीं करते" नेखलूदोव ने सोचा "जब हम अपने आपको अपने जीवन का स्वामी समझते हैं, तथा सोचते हैं कि जीवन आनन्दोपभोग के लिए ही है? क्योंकि, प्रत्यक्षतः वह मूर्खता है। हमको यहाँ किसी की इच्छा पर तथा किसी उद्देश्य से भेजा गया है। और हमने यह निश्चित् कर लिया है कि हम आनन्दोपभोग के लिए ही जीते हैं, ऐसी अवस्था में सचमुच ही काम बिगड़ना आवश्यक भी है, जैसे कि उन मजदूरों का बिगड़ गया जिन्होंने अपने स्वामी की आज्ञा नहीं मानी। स्वामी की इच्छा इन नियमों में व्यक्त कर दी गई है। जब मनुष्य इन नियमों का पालन करने लगेंगे तभी स्वर्ग की राजधानी पृथ्वी पर स्थापित हो जाएगी, और मनुष्य उस सबसे बड़ी भलाई तक पहुँच जाएँगे जिसको कि वे प्राप्त कर सकते हैं।

"किंतु पहिले तुम भगवान के राज्य को ढूँढ़ो तथा उसके पुण्य मार्ग की खोज करो; फिर ये सब वस्तुएँ तुम्हें स्वतः मिल जाएँगी।"

हम इन वस्तुओं को खोजते हैं किंतु प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं।

"और इसलिए अब यही मेरे जीवन का उद्देश्य है। मेरा पहिला कार्य समाप्त भी न हो पाया कि दूसरा प्रारम्भ भी हो गया।"

इस रात्रि ने नेखलूदोव के लिए बिल्कुल नवीन जीवन का प्रभात दिया—इसलिए नहीं कि वह जीवन की नई परिस्थितियों में प्रविष्ट हुआ था किंतु इसलिए कि जो कुछ भी उसने उस रात्रि के पश्चात् किया सबका उसके लिए बिल्कुल नया तथा भिन्न अर्थ था।

केवल समय ही सिद्ध करेगा कि उसके जीवन का यह नया मोड़ कहाँ जाकर समाप्त होगा।